

गांधी-साहित्य—१

प्रार्थना-प्रवचन

पहला खंड

•

दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गए
१ अप्रैल १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तक के
महात्मा गांधी के प्रवचन

•

५ गोपाल बुक डिपो जयपुर

१९४८

सस्ता साहित्य-मंडली • नई दिल्ली

प्रमाण
मार्नेट उपाध्याय, मनी
रम्भा माहिङ-मज्ज
मद दिन्नी

पत्रदी धार दिमवर १९४८

मून्य

अहिद गा॥ मजिद २)

५५' ८

मुन
२० ५० ८५
मार्नेट उपाध्याय
मद दिन्नी

प्रकाशककी ओरसे

पूज्य गांधीजी भाषा सा-महलके कारावाससे मुक्त होनेके बादसे सच्चाकी प्रार्थना-समार्थ नियमित-रूपसे प्रवचन किया करते थे। यह परंपरा उनके महाविधिषिके एक दिन पहलेतक, यानी २६ जनवरी १९४८ तक, बराबर चमती रही।

इस पुस्तकमें बिल्सीकी प्रार्थना-समाधीमें, १ अप्रैल १९४७ से २६ जनवरी १९४८ तक, किये गए प्रवचनोका संग्रह किया गया है।

ये गांधीजीके अंतिम उच्चार है और बिल समस्माधीपर हुए हैं उनमें बहुत-सी भाषा भी मौजूद है। इन प्रवचनोमें गांधीजीने संक्षेपमें सर्वसामान्यके समझने-योग्य भाषामें बहुत कानकी बातें कही हैं। और बहुत जगह तो अपनी हासिक बेला जगताके सामने रख दी है। गांधीजीके अल्प 'सेखों और भाषणोंसे इनका एक अलग और महत्वका स्थान है।

इसलिए 'गांधी-साहित्य'के पहले दो भागोंमें (लगभग १००० पृष्ठोंमें) हम ये प्रवचन प्रकाशित कर रहे हैं।

इनमेंसे अधिकांश प्रवचन गांधीजीकी भाषामें ही हैं। श्री प्रमोदास गांधीने तथा 'हिन्दुस्तान'के उप-संपादकोने समय-समय पर 'हिन्दुस्तान'के लिए उनकी रिपोर्टें दी थीं। गांधीजीके बादके प्रवचनोंके रेकार्डें 'भारत इंडिया रेडियो'ने लिये थे। उनमेंसे कुछ प्रवचन 'माइवो और बहनों'के नामसे बार छोटी-छोटी पुस्तिकाओंमें सरकारकी ओरसे छपे हैं। इस संग्रहमें उन सबकी हमने मदद की है। इसके लिए हम इन सबके विशेष कृतज्ञ हैं।

प्रार्थना-प्रवचन

: १ :

१ अग्रेष १९४७

बायसराय-मदनसे बेरसे बीटनेके कारण कम गापीबी ग्रामकी प्रार्थनामे शामिल नहीं हो सके थे। आज एधियाई सम्मेलनसे समयपर बीटे और प्रार्थना ठीक समयपर आरम्भ हुई, लेकिन कुरानकी आयत शुरू होते ही कुछ घोर हुआ और प्रार्थना गोकनी पड़ी। इससे पहले प्रार्थनामे ऐसा कभी नहीं हुआ था।

(गापीबीकी प्रार्थनामे छ चीजे होती है (१) बीटनेका आपानी भाषाका मन्त्र, (२) सस्कृतमे मगवद्गीताके श्लोक। (३) अरबी भाषामे कुरानसे एक कसमा। (४) फ़ारसी भाषामे खरबुस्त वर्मका मन्त्र। (५) हिंदी या हिन्दुस्तानी या किसी भी प्रांतीय भाषामे मन्त्र और (६) राम-नाम या नारायण नामकी जुन)।

आज पहली दो चीजोंके बाद कुमार मनु गापीके मुखसे ज्यो ही कुरानके कसमेका पहला शब्द निकला कि प्रार्थनामेंसे एक युवक खड़ा होकर घोर मचाने लगा, “बस-बस, बंद कीजिए, बहुत हो गया। अब हम यह नहीं बोलने देंगे। बहुत सुन लिया।” प्रार्थनासभामे और लोगोंके जमे बैठनेको कहनेपर भी यह नहीं बैठा। आगे बढ़ता हुआ बिलकूल गापीबीके मचके पास आकर खड़ा हो गया और कहने लगा, “आप यहाँसे चले जाएँ। यह हिन्दू-मन्दिर है। यहाँ मुसलमानोंकी प्रार्थना हम नहीं होने देंगे। आपने बहुत बार यह कह लिया, पर हमारी मा-बहिनोनी हत्यापर हत्या हो रही है। हम अब यह सब सहन नहीं कर सकते।”

जब उसने गाबीचीकी चले जानेके लिए कहा तो गाबीचीने उससे कहा, "आप जा सकते हैं। आपको प्रार्थना न करनी हो तो दूसरोंको करने दें। यह बगल आपकी नहीं है। यह ठीक तरीका नहीं है।"

परन्तु पन्नीस-छब्बीस वर्षकी उम्रका वह बच्चा चुप नहीं हुआ। सब लोग उसे बेरकर "चुप हो जाओ", "बैठ जाओ" की आवाज जमाने लगे। इसपर गाबीची माईफोफोन नीचे रखकर आसनसे उठकर मन्के बिलकुल किनारे जा खड़े हुए। वह बच्चा वहीं गाबीचीके बिलकुल पास आ गया। लोग उसे पीछेकी ओर खींच रहे थे और वह बड़ा हुआ अपने बात और भी आगेसे मोड़पटा जा रहा था।

गाबीचीने लोगोंसे उस बच्चेको छोड़ देने और खासिसे बैठ जानेके लिए कहा। इसरमचपरसे एक महिला गाबीची की सहायसार्थ उनके और उस बच्चेके बीच खड़ी हो गई। गाबीचीने उनको भी हट जानेके लिए कहा। बोले, "मेरे और इसके बीच कोई न आवे।" इसने परिश्रमसे गाबीची थकसे गये। उनकी आवाज भीरी पड़ गई। उन्होंने अपने सारे विश्वासियों, जो कि प्रार्थनामें विघ्न आनेके कारण उनके चेहरेपर झलक रहा था, सावधानीसे दबा बिना और बहुत ही खासिसे इस मामलेको निपटानेका प्रयत्न करने लगे। लेकिन उस बच्चेने तो गाबीचीके साथ बहुत ही छेड़ डी। यह देखकर लोगोंको बीरज न रहा और सबने मिलकर उसे प्रार्थना-सभासे बाहर कर दिया।

यह देखकर गाबीचीने कहा, "मैं आपने ठीक नहीं किया। उस बच्चेको आपने बरखस्तीसे निकाल दिया। ऐसा नहीं करना चाहिए था। अब यह यही कहेगा कि मैंने विघ्न पाई है। वह मुझे नहीं था। प्रार्थना नहीं मनुना चाहता था, पर मैं जानता हूँ कि आप सब तो प्रार्थना सुनना चाहते हैं। मैं किसीका विरोध करके प्रार्थना नहीं करना चाहता। अब आपकी प्रार्थना मैं छोड़ देना चाहता हूँ। जो प्रार्थना मैं करता हूँ वह आप सब जानते हैं। गोपाखाची आपसे पहले भी आपने प्रार्थना सुनी है। उसमें इस मुसलमानी प्रार्थनाके बाद पारसी प्रार्थना है। आपने यह सबकी आपकी बहुत भजन सुनायी और फिर रामबुन होती। मैं अब रामबुन भी छोड़ता हूँ, पारसी प्रार्थना भी छोड़ता हूँ। 'मोक्ष अधिस्ता'

भरखी भाषाने कुरानके एक मजका पहला खज है। इसे कहनेसे, आप यह समझने हैं कि हिंदू धर्मका अपमान होता है, पर मैं एक सम्मा सनातनी हिंदू हू। मेरा हिंदू धर्म बताता है कि मैं हिंदू प्रार्थनाके साथ-साथ मुसलमान प्रार्थना भी करू, पारसी प्रार्थना भी करू, ईसाई प्रार्थना भी करू। सभी प्रार्थनाएं करनेमें मेरा हिस्सा है, क्योंकि 'हूही' भ्रष्टा हिंदू है जो भ्रष्टा मुसलमान भी है और भ्रष्टा पारसी भी है। यह सबका जो कह रहा था कि वह हिंदू-मंदिर है, वहां ऐसी प्रार्थना नहीं की जा सकती, सो यह बहुधियाला बात है। वह मंदिर तो भविष्यका मंदिर है। अगर वहां तो एक भकेला सबी मुझे वहांसे उठाकर फेंक दे सकता है। लेकिन वे मुझसे प्रेम करते हैं, वे जानते हैं कि मैं हिंदू ही हू। अगर जुगलकिशोर बिडला मेरा भाई है। मैंने वह बटा है, पर वह मुझे अपना बड़ा मानता है। उसने मुझे एक भ्रष्टा हिंदू समझकर वहां टिकाया है। उसने जो बड़ा मारी मंदिर बनवाया है उसने भी वह मुझे जे जाता है। इसनेपर भी वह सबका अगर कहता है कि तुम वहांसे चले जाओ, तुम यहाँ प्रार्थना नहीं कर सकते तो यह बमब है। लेकिन आप लोगोको उसे प्रेमसे भीतना चाहिए था। आपने तो उसे बबर-बस्ती निकास दिया। ऐसी बबरबस्तीसे प्रार्थना करनेमें क्या फायदा ? वह सबका तो गुस्सेमें था और गुस्सेके मारे वह बहुधियाला बात कर रहा था। ऐसी ही बातोंसे तो पचावने यह सब कुछ हो गया। यह गुस्सा ही तो बीबानेपनका आरम्भ है।

अभी इस सबकीने जो श्लोक सुनाए उनमें यह बात बताई गई है कि जब भावभी बिषयोका ध्यान करता है—विषय माने एक ही बात नहीं, पर पाचो इन्द्रियोके स्वादोका ध्यान करता है—तो वह कालने फसता है। फिर वह शोध करता है और सब उसे सम्मोह गानी बीबानापन बेर लेता है। ऐसी ही बीबानेपनसे बेहतरियोने बिहारने ऐसी बात कर डाली कि मेरा चिर झूठ गया। मोघाबासीने भी ऐसे ही बीबानेपनसे लोभने ब्यावसिया की, पर बिहारने मोघाबासीसे ब्याबा बगचीपन हुआ और पचावमें बिहारसे भी ब्याबा। अगर आप लोग समझे हिंदू हैं तो ऐसा नहीं करना चाहिए। कहीं कोई सच्चा हो रही हो और वह कहीं

धानेवासी बात हम नहीं मूलना चाहते हो तो हमें उठकर चले जाना चाहिए। पीछे-पीछानेकी जरूरत नहीं है। फिर यह तो धर्मकी बात है। धर्म-वर्षाकी बात छोड़ो, यह तो प्रार्थना भी नहीं करने देना चाहता। इस तरह एक सबकेको प्रार्थनामें बसल नहीं देना चाहिए। ऐसी बातोंमें कुछ फायदा नहीं निकल सकता।

पञ्चावमें जो लोग मर गए उनमेंसे एक भी वापस धानेवासा नहीं है। घटने तो हम सबको भी यहीपर जाना है। यह ठीक है कि उनकी कल किना गया और वे मर गए, पर हमरा कोई हँसे मर जाता है या और निनी तरहसे मरता है। जो पैदा होगा वह मरेगा ही। पैदा होनेमें तो किनी अद्यमें मनुष्यका हाथ है भी, पर मरनेमें सिवाय ईश्वरके किनीका हाथ नहीं होता। गीत किनी भी तरह टाली नहीं जा सकती। वह तो हमारी भाषी है, हमारी मित्र है। अगर मरनेवाले बहा-दुरीने मरे हैं तो उन्होंने कुछ खोया नहीं, बचामा है। लेकिन बिन लोगोंने हम्बा की उनका क्या करना चाहिए, यह बड़ा सवाल है। बात ठीक है कि आदमीने भूल हो जाती है। इसलिये तो भूलोंकी पोछनी है, लेकिन हमें उन भूलोंको बोला चाहिए। खुदा हमारे कामकी नहीं भूलेंगा। जब हम उसके पास जायेंगे, वह हमारा हृदय देखेगा। वह हमारे हृदयको जानना है। अगर हमारा हृदय बदल गया तो वह सब भूलोंको माफ कर देगा।

पञ्चावमें बहुतने मित्र हैं, जो अपनेको मेरे भक्त भी जानते हैं। पर मैं बोलू कि वे मेरे भक्त कहाए। उन सब मित्रोंका साथ है कि जब मैं दिल्ली तक आ गया हूँ तो कम-से-कम एक रातको पञ्चाव भी गऊ, जिसमें बड़ा भोगोंको कुछ लगली मित्रों। हवाई जहाजमें जाने-में तो कुछ भी घटे मंगेंगे। लेकिन मैं किनीके कहनेपर मैंने जाऊँ ? मैं तो ईश्वरके कहनेपर, ईश्वर नहीं तो अपने हृदयके कहनेपर ही बड़ा आऊँगा। भोग्यानी मैं किनीके बुझानेपर नहीं गया था। मैंने यहने जाने स्वयं ही गहा था कि मैं स्वयं मुझे बड़ा जानैको कह रहा है। बिना-में मैं बहुत समय मग लीम मुझे बुझाने गे, पर मैं किनीके बुझाने-पर बग नहीं गया। यह गऊदर महमूद आहने बिना कि मुम था आमी ली तमाग दिम आन ने मरेगा मैं विहाग बना गया।

विहार ऐसा सूना है, वहाँ हिन्दू-मुसलमान एक साथ मिलकर रह सकते हैं। वहाँ भी धीरज-बन्धोपर कम अत्याचार नहीं हुआ। क्रोधमें भरकर लोगोंने मासूम बन्धोको मार डाला और धीरजोंको मारकर कुयोने डाल दिया। यह मैं हवाई बातें नहीं करता, ये सब सिद्ध हो सकने-वाली बातें हैं। तब मुसलमान बरुद कहेंगे कि हम यहाँ नहीं रहनेवाले हैं, परन्तु जब उनको यह भरोसा हो जाय कि अब हमारे साथ बुधारा ऐसा बर्तान नहीं होगा तो वे लौटकर आ जायेंगे। इस बातको विहारके मुसलमान करीब-करीब समझ ही गए थे, यहातक कि मुझे विश्वास हो गया था कि हम भरोसा दिला सकें तो आसनसोल और सिंग गए हुए मुसलमान भी वापस आ जायेंगे। उनके आनेकी नीवत भी आ गई थी, पर क्या अब पञ्जाबका बबला विहार जेने जाय ? फिर मद्रास जेना ? और यह बात कहा पहुँचेगी ? इस तरह क्या जगती बन जायेंगे ? कांग्रेसने अयेबेकि साथ अहिंसाकी लड़ाई लड़ी। अब क्या हम अपने भाइयोकी हिंसा करने बैठ जाय ? ठीक है कि वे अत्याचार करते हैं, पर क्या हम भी वैसा ही करें ? अयेबोने कौन-सा अत्याचार नहीं किया था ?

लेकिन अब अयेब तो आ रहे हैं। बामसरामने मुझसे कहा कि भाव-तक हम लोग कहींसे नहीं हटे हैं, पर यहासे हम अहिंसाकी लड़ाईकी बबहसे आ रहे हैं। आप जायब कहेंगे कि उनको तो जाना ही था, इसलिय ये बनाकटी वालें कर रहे हैं। पर अगर कोई भावनी शराफतसे हमारे पास आता है तो हम क्यों उसकी शराफतको खैतानियत बताने ? जबतक बुरा अनुभव नहीं होता तबतक शराफतको मान जेना ही मैं सीखा हू। क्या हम इस नीकेपर, जब कि वे आ रहे हैं, ऐसा नबारा पेक्ष करेगे कि 'आप तो आ रहे हैं, पर हमने गोरे सिपाही तो चाहिए ही।' पञ्जाबने भाव-उन्हीकी बबहसे हमारा रक्षण है। लेकिन यह क्या रक्षण है ? मैं चाहता हू कि मुट्ठी भर भावनी रह जाफुतो भी अपना रक्षण करे। मरनेसे न डरे। मारेंगे तो आखिर हमारे मुसलमान भाई ही तो मारेंगे न ? क्या धर्म-परिवर्तनसे भाई भाई न रहेगा ? और वे वैसा करते हैं वैसा हम नहीं करते क्या ? विहारने हमने धीरजोंके साथ क्या नहीं किया ! हिन्दुओंने किया, याने मैंने किया। यह शरमिदा होनेकी बात है। क्या मैं

एक पालीके बससेमें दो गालियां हूँ ? पर ऐसी ही बाने हिंदू और मुसलमान दोनों छिप-छिपकर करते हैं और फिर ऐसा पागलपन उनके दिमाग-पर सवार हो जाता है।

यह बावनाह खान मेरे पास बैठे हैं। इन्होंने कौन हटा सकता है ? मैंने उस मूढके कारण किसी प्रार्थना छोड़ दी ? कारण मैं सबको बताना चाहता हूँ सबसे कहना चाहता हूँ कि मैं अच्छा पाली हूँ, अच्छा मुसलमान हूँ, सभी अच्छा हिंदू भी हूँ। अलग-अलग वर्गको गालियां देना क्या बर्ब हो सकता है ? मेरे सामने अलग-अलग वर्ग बैसा कुछ नहीं है।

ये लोग जो एशियाके सभी मुल्कोसे बहा वाप करने आए हैं, बवाहरखानसे फिनने ज़ेम्से बाते करते हैं ? सब उसपर फिदा है। ईश्वरकी कृपासे हमारे पास ऐसा बवाहर पडा है, जो सारी दुनियाको अपना बना रहा है। क्या उसको सुभोगित करनेके लिए जी होने चाहिये नहीं रहना चाहिए ?

अब मैं थोड़ी बाइसरायकी बात भी बता दूँ। कम मैं उनके पास दो बटेसे ज्वाबा रहा और आपनी प्रार्थनामें न आ सका। यह अच्छा हुआ, जो इस मजकीने प्रार्थना बूट कर दी, क्योंकि मैं कह गया था। आप दो बटिसक बाइसरायने बाते की। उन्होंने कहा कि मैं सबमुच कोशिश कर रहा हूँ। उन्होंने बकील बिनाया कि 'मैं आखिरी बाइसराय हूँ। मैं तो हिंदुस्तान आना नहीं चाहता था, समुद्रने ही रहना चाहता था पर अब मजबूर कर दिया गया सब जाना हूँ।'

मजबूर मरकारने आरत छोड़ना सब किया सब इनको जेब दिया, क्योंकि यह राजाके खानदानके हैं। असेब लोग सभी तरहसे आरत छोड़ना चाहते हैं। वे कहते हैं कि हिंदू क्या, मुसलमान क्या, अगर एक पाली भी हिंदुस्तान देनेकी तैयार है तो वे ज़ेम्से छने देनेकी तैयार हैं। इन तरह जो आदमी मरकारने मेरे पास आता है उसकी बात मैं क्यों न मूँ ? अरेबीने अबतक हमारा काफी बिगाडा है, परमुइसने (सॉर्टे मॉडर्नइजने) तो कुछ नहीं बिगाडा। वह तो कहता है कि यदि

! एशियाई कान्फ्रेंस (२३ मार्च '४७से २ अप्रैल '४७ तक) के अवसरपर।

हो सके तो मैं आबहीसे बिचलतगार बनना चाहता हूँ। लेकिन जब आप सडले-भिडने हैं तब उसका भाग खाना अच्छा नहीं। आखिर वह बहादुर कौमका है। उसे भागनेकी क्या जरूरत? वह सोच रहा है कि किस तरह बहासे जाऊँ? वह काफी कोमिल कर रहा है। वह सराफतसे चलता है। यदि हम भी सराफतसे चलेंगे तो दुनियामें जो कमी नहीं हुआ वह होनेवाला है। अगर कोई सराफत न करे, बहुसियाना काम करे, तो भी उसको कैसे अपनावा जाय, वह जो जीवना जाहे मुझसे सीखे।

बाइसरायने मुझे कुछ तक बाध रखा है। बवाहर भी मुझे रैबी बनाना चाहते हैं। तीन दिन बाध मैं सब बातें बता चुका। छिपाना कुछ नहीं है, पर होना क्या है? मेरे कहनेके मुताबिक तो कुछ होगा नहीं। होना वहीं जो कांग्रेस करेगी। मेरी आज चलती कहा है? मेरी चलती सोपबाब न हुआ होता, न बिहार होता, न नोआबाली। आज कोई मेरी मानता नहीं। मैं बहुत छोटा आदमी हूँ। हाँ, एक दिन मैं हिंदुस्तानमें बड़ा आदमी था। तब सब मेरी मानते थे, आज तो न कांग्रेस मेरी मानती है, न हिंदू धीर न मुसलमान। कांग्रेस आज है कहा? वह तो सितर-वितर हो गई है। मेरा तो अरम्य-रोकन चल रहा है। आज सब मुझे छोड़ सकते हैं। ईश्वर मुझे नहीं छोड़ेगा। वह अपने भक्तकी परख कर लेता है। अयोध्यामें कहा है कि वह 'हाउस ऑफ बी हेवन' है, वह बर्गका पृत्ता है, यानी बर्गको झूठ लेता है। वही मेरी बात सुनेगा तो काफी है। वह ईश्वर जब आपके हृदयमें आ जायेगा तो आप वहीं करेंगे जो वह करायेंगा। इसलिये हमें विचारशील प्राणी रहना चाहिए। बीबी-नी बातपर वकवास कुछ नहीं कर लेनी चाहिए।"

१ २ १

२ मार्च १९४७

"आइयो धीर बहनो,

कसकी तरह प्रार्थनाके बीचमें आज भी कोई अगड करनेवाले हो तो

अनीसे मे अपना इरादा मुझे बता दें, ताकि मैं खुदसे ही प्रार्थना स्थिति कर दू। किसीका विरोध करके मैं प्रार्थना करना नहीं चाहता।” प्रार्थना-स्थान पर बैठने पर गांधीजीने पूछा।

वो व्यक्ति खड़े हुए और बोले, “आपको यदि प्रार्थना करनी ही है तो हिंदू-मंदिर से बाहर आकर बैठे और इस दूसरे मंदिर में अपनी प्रार्थना करें।”

गांधीजी—यह मंदिर जमिंदारों का है। मैं भी जमीन हू। ट्रस्टी लोग आकर रोकेंगे तब समय बात है। आप मुझे नहीं रोक सकते। अगर आप लोग करने देंगे तो प्रार्थना नहीं करना।

मुक्त—यह मंदिर पब्लिक है। हमने देखा किया कि पचासमें क्या हुआ। हम आपको यहां प्रार्थना हरमिन नहीं करने देंगे।

गांधीजी—मैं बहुत नहीं चाहता। मैं बड़े धैर्यसे कहना चाहता हू कि आप लोग जमिंदारी तरफसे नहीं बोल सकते। मैं जमीन बना हुआ हू। मैंने पाखाना उठाया है। अगर मैं कहूंगा तो आप बोलीमें-से कोई भी पाखाना उठाने का काम करनेवाला नहीं है, फिर भी आप रोकेंगे तो मैं रुक जाऊंगा। प्रार्थना नहीं करना।

जोगीने पिटवाकर कहा—हम प्रार्थना सुनेंगे। हमें प्रार्थना चाहिए।

गांधीजी—उन द्वारा आपमियोंके बीच केवल आप बो ही जाने वाला बात रहे है। वह आपके लिए सोमाकी बात नहीं है। मैं जानता हू कि आप मुझे नहीं मर गए है। आप बात हो जायेंगे तो अपने आप ममक जायेंगे और तभी मैं बहुत प्रार्थना करना।

मुक्त (पीछे हटते हुए)—आप मस्जिदमें आकर गीताके श्लोक बोलिए। क्या वे बोलने देंगे ? हमने पचासमें सब कुछ देखा किया।

गांधीजी—पीछेनेकी बकरा नहीं है। इस तरह आप हिंदू धर्मकी रक्षा नहीं कर रहे है, बल्कि उने मारनेकी कोशिस कर रहे है। मैं किसीने अगर प्रार्थना मूसवी नहीं कर रहा हू। कोई मुझे बीचमें रोकना तो प्रार्थना धुक करनेके बाद मैं करनेवाला नहीं हू, बाहे कल भी क्यों न हो जाऊ। और उन समय भी आप देखेंगे कि मेरी आखिरी बात

कूटसी होगी तब भी मेरे मुहसे 'राम-रहीम' 'कृष्ण-करीम' का धाप चलता होगा। मैंने बताया किया कि मैं भगी हूँ, ईसाई हूँ, मुसलमान हूँ और हिन्दू तो हूँ ही। मेरे साथ यहाँ बाबसाहू खान भी तो हैं, मुझको धाप कैसे रोक सकते हैं? लेकिन धाप रोकें। एक बच्चा भी मुझे रोक सकता है।

युवक—आप पचाव जाइए।

गांधीजी—मैं वहाँ जाकर क्या करूँगा? मुझने तो बितनी कष्ट है वह पचाव, बिहार और नोमाजालीकी सेवामें वहाँ रहते हुए कर्ष कर ही रहा हूँ।

कई लोग उस युवकको हटाने लगे कि हम प्रार्थना सुनेंगे।

गांधीजी—आप लोग इसे बरका न दें। छातिसे काम लें।

युवक—हम लोगोंको आप चार मिनट बीबिए, हम आपसे बातें करेंगे।

गांधीजी—मेरे पास समय नहीं है और बहसकी जरूरत भी नहीं है। सबसे मैं इतना ही कहूँगा कि आप मुझे 'हाँ' या 'ना' कहें।

युवक—हम आपको प्रार्थना नहीं करने देंगे।

गांधीजी—सब लोग छातिसे बैठे रहें। मैं जा रहा हूँ। इन भाइयोंको कोई न छेड़ें। मैं जैसे ही अपनी विजय मान लें, पर वह क्या विजय है? कोई पीछे कुरा भोक दें तो उसमें क्या बहादुरी है। मैं इतना ही कहूँगा कि यह हिन्दू-धर्मका कल हो रहा है। आप लोग सोचिए और समझिए। कम भी भाकर मैं नहीं प्रवचन करूँगा और आप प्रार्थना करनेको मना करेंगे तो मैं चला जाऊँगा।

'नोमाजालीसे लौटनेपर गांधीजीने "भब मन प्यारे सीताराम" की जगह "भब मन प्यारे राम-रहीम, भब मन प्यारे कृष्ण-करीम" की शुरुआत की थी।

बाइयो भीर बहनों,

कल तो बोनील ही बाइबी ने जो प्रार्थनाएँ रक्काबट डालना चाहते थे, पर भाव बाव भीर बड गई है। मेरे पास सिखा हुआ पत्र आया है जो किमी मेहतर मुनिमनके प्रेसिडेंटका है। उसने लिखा है कि मुझको बहा खूना ही नहीं चाहिए। अब आप देखिए कि मेरे जैसे बूढ़े बाइबी-पर बीसी पुनर रही है। लेकिन महाकी मुनिमनके प्रेसिडेंट तो भीर ही कोई नहीं है। मैं भी तो मेहतर ही हूँ भीर बहा जो मेरे मेहतर नहीं है वे मेरी मुनते हैं। मैं उनके साथ फैसला करके बहा रहा हूँ भीर खूना। फिर बहाके कर्तव्य तो कुतबिओर बिबहा है। उन्होंने मुझे बहा टिकाया है। अब टिकानेवाले बागेको नहीं कहते तो फिर मेरे बागेकी क्या बकरल ?

मैं आप बी पूछूंगा कि मैं प्रार्थना कर वा न कर ? पर वह पूछनेसे पहले मैं एक बात भीर पूछूंगा कि आप कलकी मेरी बात समझे हैं वा नहीं ? अगर समझे हैं तो आपकी पता लग गया होना कि मैंने प्रार्थना क्यों रोक दी। अगर कोई कहे कि आप प्रार्थना न करें वा करे तो कुतबकी न करें तो क्या मैं अपनी बीस कटवाकर प्रार्थना कसगा ? मेरा बिर मने बसा बाव, पर मैं प्रार्थना छोड़नेवाला नहीं हूँ। जो इस तरह प्रार्थना रोकते हैं वे डिहू बर्मको कटाते नहीं हैं, काटते हैं। ऐसा करनेवाले कल बोनील ही थे, भाव आया है।

भाव जो बात मैंने मुनी वह मुने कटक रही है—मैं चाहता हूँ वह बात नहीं न हो—वह वह कि वे जो बरबन डालनेवाले लोग हैं वे पुर बदे नपके हैं।

परतु जो लोग रोज नबरे बहा कबाबड-ब्याबाय करते हैं^१ भीर

^१ बाइबी-बिरके पानके बहावेमें नित्य जाल काल राष्ट्रीय स्मरनिबक नपके बीकडो मुनक ब्याबाय बादि करते हैं।

जो उनके मेम्बर हैं वे तो मुझसे मुहब्बत रखते हैं। अगर वे सब मुझे यहाँ रहने देना नहीं चाहते तो मेरा यहाँ रहना फिज्ब हो जाता है। मुझे यहाँ रहना ही नहीं चाहिए, लेकिन उनके नेतासे मेरी बात हुई। उन्होंने कहा कि हम किसीका कुछ बिगाड़ना नहीं चाहते। हमने किसीसे दुश्मनी करनेके लिए सब नहीं बनाया है। यह सही है कि हम ओगोने आपकी आहिंसाको स्वीकार नहीं किया है, फिर भी हम सब कांग्रेसकी कैबने रहने-वाले हैं। कांग्रेस जबतक आहिंसाका हुक्म करेगी हम चाँहिसे रहेंगे। इस तरह उन्होंने बड़ी मुहब्बतसे गीठी बाँधे की।

इसनेपर भी अगर आप मुझे रोक देते हैं तो फिर कलसे आप महा न आप। मैं इस तरहकी प्रार्थना करना नहीं चाहता। मैं श्रीर ही किस्मका बना हुआ हूँ। मैं हिंदू हूँ तो मुसलमान भी हूँ और सिक्ख तो करीब-करीब हिंदू ही हैं। मैंने सब साहबको देखा है। उसमें काफ़ी हिस्से ज्यों-के-त्यों हिंदू धर्मके हैं—उसी धर्मके, जिस धर्मका मैं पालन करने-वाला हूँ। इसलिए आपसे अवयवके साथ मेरी निगती है कि एक जन्मेके कहनेपर भी अगर मैं प्रार्थना रोक देता हूँ तो आप बात रहिए। यदि आपको ज़गरा करके ईश्वरका नाम सेना है तो वह नाम तो ईश्वरका होगा, पर काम जैतानका होगा। श्रीर मैं कभी जैतानका काम नहीं कर सकता। मैं ईश्वरका ही भक्त हूँ।

आप इसे चुनदिली न समझे। जब आप बड़ी ताबादने होते श्रीर सब कहते कि प्रार्थना मत करो तो मैं ज़रूर करता। तब मैं कहता कि आप मेरा पला काटिए, मैं प्रार्थना करता हूँ, पर यहाँ आप सबके बीचमें दो-माच आदमी मुझे रोकना चाहते हैं। आप उन्हें दबा से श्रीर मुझसे कहें कि प्रार्थना करो तो वह जैतानी होगी। श्रीर जैतानके साथ मेरी निगती नहीं। जो बूढ़ाका जानी ईश्वरका दुश्मन है वह राक्षस है। उस राक्षसके साथ मेरी बन नहीं सकती। मेरा सबनेका तरीका तो राम-जैसा है। राम-रावण-युद्ध जब चल रहा था तब किसीपने रामसे पूछा कि आप बिना लपके हैं, आप कैसे लटेने ? तब रामने सच्चाई, नीयं आदि गुणोंके आचारपर कैसे सड़ाई सदी जाती है यह बताया। राम ईश्वरका भक्त था, इसलिए बात भी बनी ही करता था। समनी

मैंने भगवान नहीं माना है, नक्त ही माना है । फिर भक्तमेंसे वह भगवान बन गया । तुलसीदासने भी रामको भक्तरीरी बताया है । वह भक्तरीरी सबके शरीरमें भरा है । उसीको हम भजते हैं । मैं उस रामका पुतारी हूँ । रावणकी पूजा मैं कैसे कर सकता हूँ ? चाहे आप मुझे मार डालें, आप मुझपर बूढ़े, मैं मरते वम तक 'राम-रहीम,' 'कृष्ण-करीम' कहूँगा । और फिर उस भक्त जी जब आप मुझपर हाथ बढाते होयें तो मैं आपको बोध न दूँगा । मैं ईश्वरसे भी यह नहीं कहूँगा कि वह हूँ मेरे ऊपर क्या कर रहा है ? मैं उसका भक्त हूँ । मैं उसका किया स्वीकार दूँगा ।

लेफ़िन आप एक बच्चा कहेंगे कि आप प्रार्थना न करें तो मैं न करता । मैं क्या जाऊँगा । आप चाँहिसे बैठें रहें, बहुत न करे । चाँहि भी प्रार्थना ही है, क्योंकि मेरी प्रार्थना जगत्की दिवानेके लिए नहीं है । मेरी प्रार्थना जगत्की चाँहिसे लिए है, बिलकी सफ़ाईके लिए है । इस समय जोबनरे बिससे प्रार्थना करनेमें बिलकी स्वच्छता नहीं हो सकती । इसलिये चाँहिकी ही प्रार्थना समझें ।

अब सब भिन्नकर मुझे बताते हैं, प्रार्थना करनेसे रोकते हैं, और ऐसे नीकेपर भारसे डरते मैं प्रार्थना न कर तो वह बर्न न होगा, भर्न होना । उससे बिलकी सफ़ाई न होगी । फिर मैं जोआवाजीके हिंदुओंके पास फिर मुझसे जाकर कहूँगा कि आप डरिए मत, राम-भान बेंते रहिए । इसलिये मैंने कहा कि आप मेरा वह चाँहिका तरीका समझें । सब भिन्नकर अगर रोकते हैं तो मैं प्रार्थना क्या कर सकता हूँ, पर राम बुल बेंता रहूँगा, 'राम-रहीम, राम-रहीम' और सबकेके कहने-पर क्या जाऊँगा ।

अब मैं पूछता हूँ, मुझे 'हा' वा 'न' में उत्तर दें । बहुत न करें । मैं प्रार्थना करूँ ?

करीब तीस भावकी सहे हो गए और हममें हाथ हिलाते हुए बोले—अब कीलिये प्रार्थना । हम नहीं चाहते आपकी प्रार्थना ।

गाथीजी—अच्छा, तो सब मुखासिफ है ?

करीब सी-बो-सी लोगोकी आवाज आई—नहीं, सब मुन्हालिक नहीं है। आप बरकर प्रार्थना कीजिए।

गांधीजी—नहीं, वे बहुत हाथ है। मैं हार गया और आप जीत गए। कम और भी लोग हाथ उठाए। इस वक्त भी आपकी आवाज बहुत काफी है। मैं अब प्रार्थना कर सकता हूँ, पर इस समय मैं आपके हाथों भरना नहीं चाहता। मुझे अपनी काम करनेके लिए बिदा रहना है।

सोच—सब नहीं है, बोले है।

गांधीजी—ठीक है, ज्यादाके आनेकी जरूरत नहीं है। छतने भी पाहे तो मुझे मार सकते हैं।

इसके बाद दोनों तरफकी आवाजें बड़ी और बहुत जोर होने लगी। गांधीजी उनके किनारे खड़े होकर कहने लगे

“सुनिए, ऐसा गुस्सा मत कीजिए। आप हिंदू हैं। हिंदूको चाहिए कि वह खानोशीसे सोचे, खूब विचारे और समझकर बोले। आप पर जीट जाइए और सोचिए कि पचासका जर्मन कैसे मिट सकता है। मैं भी कबितभर सोच रहा हूँ, पर गुस्सा करनेसे तो वह जर्मन मरनेवाला नहीं है।”

इतना कहकर गांधीजीने आपस सन्नाप्त किया, पर सीढीमें आवाज आई, “एक प्रश्नका उत्तर देते जाइए। आपने नोआवालालीमें रामबुन कैसे बंद कर दी थी?” आप कहा भी बंद कीजिए। अपनी कोठरीमें बैठे प्रार्थना कीजिए।”

गांधीजी—मैं यहापर कुछ जबाब नहीं देना चाहता। आप अब जाए और बाहर जाकर भी न मर्हें।

गांधीजी इसके बाद जाने लगे। इस बीच पुलिसने व्यवस्था कायम करनेका प्रयत्न किया। इसपर समाने यकबहु शुरू हो गई। तब

‘नोआवालालीमें किसी भी प्रार्थनाने रामबुन बंद नहीं हुई थी। हाँ, रामबुन होनेपर कुछ मुनसमान जाई उठकर खते गए थे। प्रार्थना नहीं रुकी थी।’

भावीजी फिर अपने किनारे पर आए। लोगोंने उनसे कहा कि आप प्रार्थना भी किए। और मरनेवालोंकी हम बात किए देते हैं। सब बैठ जायेंगे। आपके साथ हम सब मरनेकी तैयार हैं। आप प्रार्थना न छोड़ें।

भावीजीने कहा—आप मरे तो मेरी जगहें मरें, अपनी जगहें नहीं। मरनेका इत्थन मैं जीवनभर मिताता आत्मा हूँ और सीख रहा हूँ। मरना हो तो इन तरह मुझे सीखने हुए नहीं मरना चाहिए। ठीकी ताकतसे मरना चाहिए। इन समय में लोग मतलफ़हीमें हैं। वे समझते हैं कि भावी ही वह सब कुछ बियाबता करता है। इसलिए इस वक़्त तो भाविकों ही मेरी प्रार्थना समझिए। मैं जानता हूँ कि पचावके कारण मरका पूरा उमर रहा है। क्या मेरा खून नहीं उबल रहा है? मेरे दिलमें भी तो आप बसक रही हैं। मैं पचावकी समस्या सही-सही समझता हूँ। पचावी सब मेरे जाई है। वे इस समय मुझे हैं। उन्हें बात होना चाहिए। बिहार भी मुझे बर बना था। उसका गुस्ता मैंने रोना है। इस समय मुझे रोककर ही हम आगे बढ़ सकते हैं।

उन बीमार भावमियोंकी प्रशिक्षण हटा ले गई है। उनकी हटाने-के बाद मैं कैसे प्रार्थना कर सकता हूँ? वे सब गद्दा फिर आने, धानिसे बैठें और सब हम सब मिलकर प्रार्थना करें।

और इन समय भी सब रहा है उसे रोकनेकी बात सोचनेमें ही तो मैं बलित गया रहा हूँ। क्या मैं बाइसरायके पास जाना जानेके लिए जाना हूँ? हम दोनों मिलकर इसमें उस्ता निकाल रहे हैं। इन मारी मउमडको रोकनेके लिए मुझे क्या सब परेशान है और उन्हें परेशान होना भी चाहिए। बाहिर मैं फिर कहता हूँ, आप जात हो जाइए। भावि ही प्रार्थना है। उनको सबल रोकना बाव, वह मुझे नहीं पड़ता।

इनका कहना भावीजी जाने सब तो बीमारी बार लोगोंने फिर उन्हें गैरा भी कहा, “आप उन बीजोंसे भावमियोंकी बात बनो मुझे है, मैं बीजों रोना मउता नहूँ है? इसमें उन लोगोंने कुछ भुगत भी नहीं है। इन बीजों है, बिजने पचावमें भुगत है, बिनके ऊपर बिसम

बाधा गया है। हम तो आपकी नहीं रोकते। हम आपसे विनती करते हैं कि आप प्रार्थना कीजिए। बोबी-सी ही सही।”

गांधीजी—आपकी बात तो सही है, पर उन लोगोंको समझनेका मौका देना चाहिए।

लोगोंने कहा—आप हमारे सवालका जवाब देने ?

गांधीजी बोले—आप सोचें तो सही, मैं बुद्धिमान था। क्या मैं खड़े-खड़े बात करने लायक हूँ ? बाइसराय तकसे मैं माफी माहता हूँ कि मुझे खड़े रहकर बोलनेको वह न कहे। मुझमें इतनी ताकत कहा है ? पर ईश्वर मुझे बुझवाता है। वह क्षमिन् दे देता है। आजकल मुझे खूनका जवाब भी रहता है। तब भी वह मेरी गांधी जीने से जा रहा है। कम अगर कोई मुखाभिरुही नहीं होगा तो मैं भीर बाधे करूँगा।

जो इस मुखाभिरुही करने हैं वे मुझे भिन्न तो सही। अगर मैं यही चाहते कि मैं यहाँ न रहूँ तो मैं जमा जाऊँगा। मुझे तो अपने यहाँ रहनेके लिए बहुत लोग बुला रहे हैं, पर मैं जमी हूँ और जमीनानेमें पड़ा हूँ। मुझे तो यहाँ इतनी जगह भी भिन्न गई है। उनके पास छोटे मुलक (घरने) है। मुझसे वह बर्दाश्त नहीं होता। मुझे सफाई चाहिए। ईश्वर ताकत दे देगा तो मैं उन मुलकोंमें ही रहूँ जगूँगा।

ईश्वर सबका जमा करे और भारतको आजादी दे।

१ ४ १

४ अगस्त १९४७

“भाइयो और बहनो,

क्या आज भी आप लोगोंने नहीं करला है जो आपने कम या परलो किया था, या आज शान्ति रहेगी ?”

बादो औरसे आवाजे आई—आज शान्ति है। आज कुछ न होगा। आप प्रार्थना कीजिए।

गाबीरीने कुबारा पूछा—आप लोगोंने अपनी भाषाओं में एम्-डी-सी प्रार्थनाओं को क्या तो नहीं दिया ? एक भी भाषनी ऐसा तो नहीं है जो विरोध करना चाहता हो ?

साजने एक हाथ ऊपर उठा था। गाबीरीने कहा—डी-सी ?। सब भाषा की प्रार्थना नहीं होती। एक आदमी की उदयन समझना नहीं है या यहसे उठकर अपने आप बना नहीं जाना मदनन में प्रार्थना नहीं करना। अगर सिपाही लोग उसे पकड़कर से जमाने बहनों कोर्ट-बात नहीं हुई। बहुत-से आदमियोंको मिलाकर इस तरह थोड़े-से आदमियोंको बनाया नहीं चाहिए। थोड़े आदमी की अगर जिज्ञास करने है तो उन्हें समझना चाहिए। महा मोर्त बात उन्हें पन्द्र नहीं कहाने उन्हें सब जाना चाहिए। उन्हें स्फाट नहीं जाननी चाहिए। अगर वह बात सब एक आदमीकी समझ में आती है तो वह उठकर बना आप सब से प्रार्थना कर लूँगा, या वह शान्तिमें प्रार्थनामें बैठे।

एक पवित्रवी उठकर गाबीरीके पास आए और बहुत शान्ति और विनयके साथ बोले, 'आम आप प्रार्थना करने ही चाहें। आप हमारे नहनु नेता हैं। आपकी प्रार्थना हमने दिनोदि कर रही है, यह इस दिवसीकी बहुत बड़ी बखानी है। मैं आपसे केवल एक निवेदन चाहता हूँ।'

गाबीरीने उनको बोझेलकी इजाजत दे दी। पवित्रवीने लोगोंको समझाया और शान्ति उठनेकी प्रतीति की। इसके बाद उन्होंने गाबीरीसे प्रार्थना शुरू करनेके लिए अनुरोध किया। सब लोग शान्त रहे।

गाबीरीने फिर पूछा—आम आप सब शान्त हैं ? वह भाई बता गया जो प्रार्थना नहीं चाहता या ? मैं सबसे कहूँगा कि उन आदमियों हमारी ओरसे डरना या बनना नहीं चाहिए। अगर सिपाही उसे से जाना है तो उन सेवारेजना करा होगा। वह अपनेको सच्चा भी समझे, मैं तो उससे बेचारा ही कहूँगा। अगर उसकी रजा मैं नहीं करता तो और और करेगा ? एक आदमी अगर अपनेकी हिंसा बताता है या अपनेको मुसलमान बताता है और मुझे प्रार्थनाने रोचना चाहता है तो उसपर आत्मनय क्या करता !

वह कहता है कि आप इन मंदिरमें प्रार्थना मत कीजिए । लेकिन मंदिर तो मेहतरोका है । मेहतरो जाई मेरे पास आकर रोते हैं कि हमारे मंदिरमें आकर ये दूसरे लोग ऐसी बाधा क्यों डालते हैं ? इन छोटे भाइयोंकी मैं क्या दिखाता हूँ ? मैं उनका बडा भाई हूँ । मैं खाता भगी हूँ । मैं बाहरकी सफाई करता हूँ, बाहरके पाखाने उठाता हूँ, लेकिन हमारे सबके दिलमें भी मैसा भर चुका है । इसली भगीको भीतरकी भी सफाई करनी होती है, जो मैं कर रहा हूँ । अगर इस मैसेको हमने अपने बिससे नहीं निकाला, अगर ऊन-नीचकी यह बात हमसे नहीं हटी तो हिंदू धर्म बचनेवाला नहीं है । साथसक यह क्या हुआ है, क्योंकि यह बहुत बडा धर्म है । यह मरते-मरते नी टिका है । फिर भी अगर हमने ऊन-नीचका भावन छोडा तो यह बडा होनेपर भी कमबोर हो जावेगा । मेरी इस बातका जा० मुझे समर्थन भी किया है । उन्होंने बिट्टी लिखी है कि मैं आपकी और बातें तो मानता नहीं हूँ—मैं उसबारकी राजीम मानता हूँ—पर कृपाकृत और ऊन-नीचके इस मैसको मिटानेमें पूरा-पूरा आपके साथ हूँ ।

इसलिए जो मेरी प्रार्थनाका विरोध करते हैं, वे हिंदू धर्मको नार रहे हैं । उन्हें समझना चाहिए कि मैं बिट्टना हिंदू हूँ, सतना ही पारसी हूँ, ईसाई हूँ, मुसलमान भी हूँ । 'धोख भविस्वा'का धर्म भी कितना सुंदर है । मैंने तो यजुर्वेद नहीं पढा है, लेकिन एक भाईने लिखा है कि इनमें सारी बातें वे ही हैं जो यजुर्वेदमें हैं । फिर आप लोग इसका विरोध क्यों करें ? धर्मकी बातें प्ररखीयें हो, संस्कृतमें हो या चीनी भाषामें हो, सब अच्छी ही हैं । इसलिए मैं उस भाईसे पूछूंगा कि वे इसे समझ गए हैं या नहीं ?

अगर वे हिंदू नहीं हैं, और मजहब है, तो प्रार्थनाने न आवें । मुसलमान बोले ही आते हैं । मुसलमान भी मुझसे कहते हैं कि तुमको क्या हक है कि तुम कुरानकी आज्ञा बोलो । फिर भी लोगाबागीमें उन्होंने मुझे नहीं रोका । क्या वे रोक नहीं सकते थे ?

लेकिन हिंदू धर्ममें किसीको बिकायत नहीं हो सकती । हमारे यहा १०८ उपनिषद् हैं । उनमें एक उपनिषद्का नाम 'अस्तोपनिषद्' है ।

यही तो हिन्दु-धर्मकी बुझी है कि वह बाहरसे आनेवालोंको अपना चेता है। लेकिन उसमें जो कमी है वह है असत्यता वा ऊप-नीचका भेद। वह बाहर उसमें पैदा गया है। उसके भिन्न बानेसे ही वह बनेगा। वे लोग उसबारसे हिन्दु धर्मकी बचानेकी बात करते हैं। वे उसबार लेकर कयालव करते हैं। वह सब क्यों? मारनेके लिए? इस तरह हिन्दु-धर्म बढ़नेवाला नहीं है।

उत्पत्ति ही धर्म बढ़ता है और वह बात तो मैंने हिन्दु-धर्मसे ही सीखी है। 'सत्याचास्ति परो धर्मः' और 'अहिंसा परमो धर्मः' भी हिन्दु-धर्ममें सिखाया है। जगवान पतञ्जलि है जिन्होंने अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि पाच ब्रह्मको हिन्दु-धर्ममें विज्ञानका स्थान दिया। और धर्मोंमें जो वे बातें हैं, लेकिन इनका विज्ञान हिन्दु-धर्मने ही रखा है।

(इसके बाद पापीजीने ब्रह्मचर्य मारनेके हरिजन सत सम्प्रदाय और अर्वादिनाईकी कहानी सुनाते हुए बताया कि अर्वादिनाईके पैर किसी देवमन्दिरके सामने थे। सब कोई हिन्दु उससे झगड़ने लगे। अर्वादिनाईने उसने कहा कि मैसा, बिबर जगवान नहीं है ऊपर मेरे पैर कर दो। कहा-कहा पैरोंको पूजाया गया, कहा तो जगवान के ही।)

पत्थरकी मूर्ति पूजाका एक तरीका ही तो है और बिलम्बे जगवान है तो फिर बाहे पैर फिर भी हो। पैरोंसे आसनी पूजा भी कर सकता है और बात भी मार सकता है। मगर कहीं ज्वालामुखी-सी आग बमक रही हो तो वह पानीमें बुझ नहीं सकती। जने में पत्थरसे दबाऊ और उसके ऊपर सड़ा होकर साबो आसनिवोली जान बना मूर्ति वह पत्थरसे और पैरोंमें ईश्वरकी पूजा ही तो हुई। पूजा पैरसे हो सकती है, हाथसे हो सकती है और बिज्जामे हो सकती है। पूजाका तरीका कुछ भी हो, पूजा सच्ची होनी चाहिए।

इसलिए मगर वह जाई बहुत है तो मैं उससे विनय करना चाहता हूँ कि वह आसनिमें आर्चना करने दें।

इतना मैं बता देना चाहता हूँ कि उन बासकोपर मुझे क्या भी रोव नहीं है। ऊपर पूजा क्या कर? नीचा मुत्सा करना नहीं

बिनासी । और मैं तो बसिब भक्तिकसे ही प्रार्थनामें गीताके लोको बोधता आया हूँ । मैंने बहीसे गीताकी इस नवाईकी सीखको अपना लिया है और उसे लेकर यहाँ आया हूँ । जो इसका विरोध करते हैं वे समझते नहीं हैं कि हिन्दू-धर्म क्या चीज है । न समझकर हैवानका काम करते हैं और भगवानको मूर्ख जाते हैं ।

इसके बाद सब चुप हो गए और गांधीजीने सातिपूर्वक प्रार्थना की ।
आत्मका मन्त्र वा 'हरि तुम हरो जनकी पीर', और रामधुन

रघुपति रामचन्द्र रामाराम । पतितपावन सीताराम ॥
ईश्वर भक्ता तेरे नाम । सबको सम्मति दे भगवान ॥
सातिविधायक रामाराम । पतितपावन सीताराम ॥
रघुपति रामचन्द्र रामाराम । पतितपावन सीताराम ॥

प्रार्थना समाप्त हो जानेके बाद गांधीजीने कहा—

मैं ईश्वरका नाम जगदगुरु मानता हूँ कि आज भीमे रोष उसने सातके धाव हनें प्रार्थना करने की । और वह भी कहता हूँ कि पिछले तीन दिन प्रार्थना नहीं हुई, ऐसा कोई न जाने । जब आप यहाँ आए, मैं यहाँ आया और इन सब बात खे तो वह प्रार्थना ही थी, क्योंकि हमारे बिलोमें प्रार्थना थी ।

किर बिल जाइयोंने बजल देनेकी कोसिद की उनका भी मुझपर उपकार हुआ है । मैं उनका सम्बोध मानता हूँ, क्योंकि मुझे अपना बिल देखनेका मौका मिला । इस तरह प्रार्थनाके बारेमें अपना अंतर जाननेका मौका मुझे पहले नहीं मिला था । मुझे अपने भीतर यह एहसास पड़ा कि मैं कहता हूँ । मेरे अंदर उन सोमोपर रोष तो नहीं है । मेरी प्रार्थनामें कहीं झुंझी बात तो नहीं है । भगवान तो तरह-तरहसे अपने भक्तकी परीक्षा लेना चाहता है । और बाहिर वह हरिजनकी पीडा करता है, ब्रह्मा कि अमीके भजनमें आपने सुना । इसपरसे हमें यह धिक्का लेनी है कि हमपर जो कुछ बीतता है वह भगवानकी मिया-मत ही होती है । भगवानकी कृपा है, जो मैं आज इस परीक्षामें उत्तीर्ण हुआ हूँ ।

उस नाईको नी, जो शास्त्रीजीके कहनेपर नमज गया, बन्दगद । भगवानने श्रीर कठिन कमीटीमें मुझे बना लिया है । एक बार प्रार्थना शुरू कर देनेके बाद प्रवर बार ही सादसी मुझमें कहते कि प्रार्थना मत करो तो मैं उनमें कहता, 'आप मेरा गला काट सकते हैं, मैं 'राम-रहीम' 'राम-रहीम' करता रहा श्रीर उस समय भी अपने दिममें रोष न लाकर, अपनी जैसे धुनमें कहा गया है, दिममें नोबूला— 'भगवान उन्हें मन्गति दे ।'

आपको नोबूलाधीनी एक बात बना दू । वहा बडे कष्टमें राम-धुन शुरू हुई । मैं जो यात्रा करता था उनमें प्रारम्भमें रामधुन होनी थी और वहा पहुच जाते थे वहा राम-भवेमने समय की रामधुन होती थी । हम वहा लोगोंको बताते थे कि राम रहीम, खुदा ईश्वर सभी भगवानके नाम हैं, बल्कि उसमें तो हम करोड नाम हैं ।

श्रीर 'श्रीर अस्तिना'का अर्थ मैं धर्म मुझको तो आपकी पठा एक गद्दी बसेगा कि वह अरबीमें लिया गया है । तो क्या मैं अरबीमें प्रार्थना करू, वह गुनाह हो जायेगा ? आप लोग हिन्दू-धर्मकी हम तरह निकम्मा न बताइए । वह धर्म बहुत बड़ा धर्म है, बहुत पुराना धर्म है । सोफनाम सिनकने इने १० हजार वर्ष पुराना धर्म बताया है, पर मेरी समझमें यह बात बरमाने की व्याख्या पुराना है । यह अनादि है । वेदों की बातें बताई हैं वे धर्मका निचोड है और धर्म अनूप्य प्राणीके धर्ममें साथ-साथ पैदा हुआ है । इसलिए वेद अनादि हैं । और वे बातें जब अनुप्योने वाली सबसे कठिन रानी । बहुत दिनों बाद वे मिली गई, क्योंकि अनुप्यने बिछना बादमें सीखा । उन बिछी हुई बातोंमें भी बहुत-सी मान्य हो गई हैं । बाइबिलका भी हम तरहसे बहुत सारा हिस्सा बिस्मृत हो गया है । पुरानका भी ऐसा ही हुआ है । बाइबिलके जानने-बाने कई लोग कहते हैं कि उनमें काफी श्रेयक है । उस तरह मान्य धर्म हैं । धास्वोका यानी वेदका निचोड इतना ही है कि ईश्वर है और वह एक ही है । पुरानका और बाइबिलका भी नहीं निचोड है । कोई यह न कहे कि बाइबिलमें हीन भवना बताए है । वहाँ भी भगवान एक ही है ।

मैं बाइसरायके पास बार-बार जाता हू। वहाँ काफी समय बेटे रहा हू, पर वह समय व्यर्थ नहीं जाता। वहाँ बिहार, पंजाब, नोआ-खाली सभी जगहका काम कर रहा हू। मेरे सामने मेरा छोटे-से-छोटा काम भी बड़े-से-बड़ेके बराबर ही होता है। मेरी दृष्टिसे मनु-परमात्मों में जो है, वही ब्रह्मात्मरत्न है—‘यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे’। इसी सूत्रका मैं माननेवाला हू। पंजाब और बिहार या नोआखालीको छोड़कर मैं हिन्दुस्तानका कुछ काम नहीं कर सकता। मेरे लिए हिन्दुस्तान उन्हीं-वैसी जगहोंमें है।

आज बहुत-सी बातें आपको समझाई नहीं हैं। यह अच्छा लगा है। आपकी शक्तिके लिए बन्धुवाद।

: ५ :

१ अगस्त १९४७

“माइयो और बहूतो,

“बुझकी बात तो है, लेकिन अभी दो-बार बिलतक मुझे पृच्छना ही पड़ेगा कि कुरानकी आयत पढ़नेके बारेमें किसीकी ओरसे शिकायत तो न होगी ? अगर होगी तो उसमें न आपका कायदा है, न धर्मका। जैसे अनेक नाम होनेपर भी ईश्वर एक ही है, वैसे ही अनेक नाम होते हुए धर्म एक ही है, क्योंकि सारे धर्म ईश्वरसे आए हैं। अगर वे ईश्वरसे नहीं आए हैं तो वे निष्कम्मे हैं। जो धर्म ईश्वरका नहीं है वह शैतानका है और वह किसी कामका नहीं हो सकता। इसलिए आप समझ लें कि जैसा तीन बिलसे होता रहा है वैसा ही जलेश तो धर्मका नाश हो जायगा।

“अगर मैं हिंदू हू तो कुरान क्यों नहीं पढ़ सकता ? जेन्दावस्ता क्यों नहीं पढ़ सकता ? और हिंदूकी प्रार्थनामें भी तो भेद कम नहीं हैं ! कोई कहेगा, वेद नहीं उपनिषद् कहो, उपनिषद् नहीं गीता कहो, यजुर्वेद नहीं अथर्ववेद कहो। यानी सभी अपने-अपने ढंगकी प्रार्थना करनेके

हकदार है। यदि आप मुझे गौरवा पाए भी न पाए भी तब भी मानकर आपकी विज्ञानकी सेवाएं हैं। यदि आपमें कोई बात भी मुझे वह जहरा प्यासा दे सके हैं। तो मैं ऐसा भी न उभे मुझे मुनी पीना चाहता थीर आप भी उभे नभ रीति। पगारों पीना नहीं है, पर आप उनके नाथी बनें। आप मुझे न तो योग करने दिनें समझे कि वह बुद्धा जो नभ ना रंगी न कीर नी ना रंगी।

"आप लोग अपनी मर्यादाएं साधें हैं, नभ मर्यादा ना है, पर आपमें एक आदमी की 'मोल्ड प्रबिन्ना' ना पाठ न पाएगा तो मैं प्रार्थना छोड़ दूंगा और आपकी भागिने नष्ट जाना होगा।"

लोगोंके विश्वास दिनांश पर नारी प्रार्थना भागिपूर्ण हुई। अन्तर गांधीजीने प्रवचन करने हुए कहा

आप लोगोंने जो अपनी भागि रंगी दसके लिए आपकी कल्पना है। पहले इसकी भाति नहीं हुआ करती थी। हमने नाक है कि पिछले तीन दिन जो हुआ हमने हमने बने नहीं गीया है। यदि आदमी सावित्रे न रहे, कभी अपने विश्वासीकी भीतरने न देते, भीषमतर बीच-दमनमें ही रहे और हर बल गरम बना रहे तो वह उन भागिनों सेवा नहीं कर सकता, बिने भीनतप्रसी पाए 'छडी ताकत' कहा करते थे। मुहम्मदप्रसी साहब भी कहते थे कि हमने अपनेमें लटकर स्वराज्य लेना है और हमारी मटाई होनी तकलीफी तोहोने और कुकटिबोंके गोसोसे। वह तो विज्ञान विज्ञान था, उसना ही कल्पनाएं बीजनेवाला था।

और वह उन आपकी दिलीकी ही बात है। उन दिनों मैं नैट स्टीफेन कालेबमें स्र साहबके घर टिका हुआ था। आपका तो वह कालेब कही बडे मकानमें बना गया है, पर उन पुराने कालेबमें ही पहली बार मैं श्री० अबुलकलाम आजादसे मिला था। श्री० अबुल नारी भी वहींपर मिले थे। और भी कई बड़े-बड़े नीजालाखोंसे मेरी मुलाकात हुई और वहींपर वह बात कासी बहुत-मुवाहितोंके बाद लग हुई कि बिनाफलेक भागसेमें फाउंडर लगी सत्य के सचती है जब बिना-फलका सारा काम बननेसे होता। सबने ईश्वरकी हाविर-बाविर

करके यह ठहराया जा कि सिताफतका कोई काम बर्रबर अमनके न होगा। वहा ईश्वर यानी खुदाकी कसम लेनेकी बात थी। ईश्वर और खुदामे भेद न था। उन दिन जो यह काम किया गया उसका ही यह अज्जा नतीजा थाव हम पाने जा रहे हैं।

यह बात मैंने इसलिए बताई कि कलसे राष्ट्रीय सप्ताह शुरू हो रहा है। कलसे ही दिन हिंदुस्तानने अपने आपको पहचाना। हिंदुस्तानने तब जाना कि वह इस बिल्ली या भवई या साहोरामे नहीं है, बल्कि सात लाख बेहातोंमे बसा हुआ है। अगर कल कोई जबरजस्त भूकंप हो जाता है और सारे सहरोकी समान आबादी नेस्तनाबूद हो जाती है तब भी हिंदुस्तान नहीं नरेगा। सहरोकी कृष मिताकर दो करोडकी आबादीके खतम हो जानेके बाद भी अठतीस करोड बेहाती, जो सात लाख गावोंमे हैं, बने ही रहेंगे। पठमार्गे इतना भारी भूकंप हुआ तब भी बिहारके बड़े-बड़े सहरोको ही हाणि हुई, छोटे-छोटे बेहात बच ही गये। हा, गीताके स्यारहवे अध्यायमे बताया हुआ विराट् ईश्वर सबको निगलना चाहे तब तो कोई भी न बच सकेगा। फिर भी यह स्पष्ट है कि हिंदुस्तानका जीवन बेहातोंके जरिये ही है।

मे सात लाख बेहात सन् १९१९ के अग्रेसकी छठी तारीखको अमानक जासस हो उठे थे। जब पाच अग्रेसको मैंने ऐलान निकाला था तब मुझे सपनेमे भी खयाल नहीं था कि हिंदुस्तान इतना जग उठेगा। उस दिन मैं आपके भावके मिनिस्टर राजगोपालाचार्यजीके यहा सेसन-में था। दिनभर मैं सोचता रहा कि सत्पात्रह कुछ कैसे किया जाय। श्रीबिजयरायवाचार्य—जो भाव इस दुनियामे नहीं रहे हैं—और दूसरे लोग भी नहीं मिले। मुझे जब विचार आया, मैंने महादेवसे—वह भी भाव उठ गया है—कहा कि राजाजीको बुलाओ। राजाजी सहमत हुए और हमने अपील निकाल दी। छतनेपरसे ही हिंदुस्तान इतना जग उठा कि मैं तो हीरान हो गया। उन दिनों कांग्रेसके पास न स्वयंसेवक बल थे, न खेसबाहक, फिर भी मागो त्रिजली दीब गई।

हमने छठी अग्रेसको उपवास और प्रार्थना करनेके लिए कहा था। हिंदुओंका उपवास तो छत्तीस घंटेका होता है, पर मुसलमान २४ घंटेका

रोना ही कर सकते हैं। हिंदू की २४ घंटेका प्रयोग करते हैं। हमने भी यही २४ घंटेका उपवास उलगाया ताकि हिंदू-मुसलमान दोनों ही कर सकें। हममें धन, दूध, मक्खी कुट नहीं दिया जाता चाहिए। सरपेंट पानी भी नकते हैं। मेरे-मेरे बूटें व तमजोर फन में मॉने, ऐसा मैंने उन दिन कहा था। पर आप धन जब काया नरें सब घंट भरनेवाले बने-जैसे फल व सं। ऐसा करना तो मेरी माना जैसे मुझे फलाहार करवाती थी और बिलमर कूटकी पूरी और गुलाबजामुन आदि बिताती थी मैंनी ही पीब हो जायगी। मैं अपनी भाकी तरह आपका बात करना नहीं चाहता। जो गिरा उपवास बर्दान व कर सकें वे फलका रख ले सकते हैं।

कटी धर्मलका आप सबेज है हिंदू-मुस्लिम ऐश्व, माही और देहाणका काम, पर प्राब इसे कीज करेगा? आज हिंदू-मुस्लिम ऐश्व है तो मेरे हृदयमें है। जहाँ भी मेरे ही पास पड़ा है। अगर आप लोग भी इसे अपनाया चाहें तो कम अपनाइए। ऐसा करनेके लिए आपको दुगनी बार्त भूज वाली चाहिए। जैसे ही पचावमें मुमलमानोंने और बिहारमें हिंदुओंने किया तो आक्रमण किया, दोनों ही इस बातकी भूल जाए और भाई-भाई बननेकी बात खोजें। अगर ऐसा नहीं करने तो क्या आप यह प्रार्थना करने कि हे भगवान, हमको ऐसा ही दीवाना बना दो जैसा बिहार या पचावने लोग बन गए थे? क्या ऐसा करके आप अपनेको और वर्मको बना लेगे? इसीलिए आप उपवास तनी करे जब आपके दिलमें सन् १९१९ की बात कायम हो, और यह तनी कायम हो सकेगी जब आप समन और शांति बारन करने।

शांति कैसे आयी? आप रोज एक बटा जहाँ कासिए और आपको शांति व मिले तो मुफ्त कहिए। भावनपरकी कीचितके प्रमुख और राख-अपीकी कीचितके बैर खुशी साहबको जब मैंको मुत्तोंति नीब नहीं आती थी तो राखको एक बटा जहाँ कासनेपर आ जाती थी।

शांति ही हिंदू-मुस्लिम एकता कायम हो सकेगी। मैं जानता हूँ कि यह बड़ा कठिन काम है। हमारे दिलने ज्वालामुखी बहक रहा हो तब भी ठंडा रखने हमारी जिज्ञाकी परीक्षा है।

धीर साति रखनेसे अगर सब तर भी जायने तो क्या बिगड़ेगा? अगर मुसलमान मुझे मार भी मारेंगे तो मेरा भाई ही तो होगा। अगर हमने साति नहीं रखी थीर बबरन देशको एक बना रखा तो वह पाकिस्तान हमारे मनमें भर जायेगा। थीर जब पाकिस्तान हमारे दिलमें रहेगा थीर हम किसी भी तरह अपने भाइयोंके साथ अमनसे रहनेको तैयार न होने तो मैं आगाह करता हू कि हिंदुस्तान आजाद रह ही नहीं सकेगा।

हा, पाकिस्तान एक तरह अमृतमय हो सकता है। लेकिन उसके लिए पिस्तील, माजा, सबवार क्यों होनी चाहिए? इस तरह बबर-बस्तीका पाकिस्तान तो बहरीला होगा। ऐसा बहर हम सबको क्यों खिलाए? दूसरोंके दिलोंमें बहर पैदा न कर, अपने दिलमें भी बहर न रख, थीर सबसे ज्यादा से नू थीर लड़ते-लड़ते मारे जानेपर भी परमा न कर सब वह पाकिस्तान अमृतमय होगा थीर वैसा ही अमृतमय हिंदुस्तान होगा। अमृतमय हिंदुस्तान वह है जो केवल हिंसा नहीं है, पर साथमें मुसलमान, पारसी, ईसाई थीर सिक्का भी उतना ही है जिसना हिंदुओंका। थीर अमृतमय पाकिस्तान भी बड़ी है जिसमें सभी कौमोंके लिए जगह हो थीर किसीके बारेमें कहा बहर न हो। चूकि मैं ऐसे ही हिंदुस्तान थीर पाकिस्तानका माननेवाला हू, इसलिए अब गायत्री थीर गीता पढ़ना चाहूंगा सब 'ओज अधिस्ता' भी बोलूंगा। सब एकूच साहबजी सातवीं पुण्य-तिथि है। उनके गुणोंको हमें याद करना चाहिए। उनका जीवन बहुत साधा था। हम दोनों बने भिन्न रहे हैं। उनकी कमड़ी गोरी थी, लेकिन वह इतने सादे थे थीर देहा-तियोंसे भिन्नसे-भुलते थे कि वह अशेष है, ऐसा पहिचानना कठिन हो जाता था। उनको कपड़े पहननेका भी लज्जर न था। मोटेसे बदनपर डीली-डाली गोरी किसी तरह लपेट लेते थे। उनको ऊपरके दिवालेसे काम न था। उनका दिल सोनेका था।

: ६ :

६ अर्घ्य १६४७

नाइयो की-ग बहो,

बस मे यह मन्त्र' और बुन' मूल रहा था तब नोआवासी-
वाशने मनमका सारा वृत्त नेरी भावनें सामने लावा हो आवा । वहा-
पर यही मन्त्रही और यही भाव-रूप ने जो प्रात काव थावा धुक होने-
पर पहले काव नीसतम बनते दे ।

हने जो मन्त्रा है वह तो एक ही बात है कि हमें अपनी मन्त्राई नहीं
छोड़नी चाहिए । अगर मन्त्र-के-मन्त्र नूनसनाम मिलकर हमें मन्त्र है कि
हम किमुके नाव दिवी नी विस्मय वास्ता नहीं रहना चाहने, उनमे
मन्त्र रहना चाहने है तो क्या हमें मुस्तेमें भरकर मारकाट धुक कर
देनी चाहिए ? अगर हमने ऐसा भिया तो भारी और ऐसी भान कम
जायगी कि हम सब उनमें मन्त्र हो जायगे, कोई भी नहीं बनेगा ।
मन्त्रावृत्त वृत्त-मन्त्र और काव बचानेमे बेमन्त्रमें बरबादी ही फैलेगी ।
मे तो मन्त्रा कि वाक्यवा जो योशा मोग करते हैं उनमे नी भिनाम
ही होता है, हाव मन्त्र नी नहीं आता ।

हमारे महामन्त्रमें जो बात कही गई है वह किंक किमुके
कामकी ही नहीं है पुनिवानके कामकी है । यह क्या पावन-औरवकी
है । पावन रामने पुनारी वाली मन्त्राणि पुनवेवाले रहे और औरव

'बले बले बले सबे सत बीजा बेजु रहे,

सात सावार सत मन्त्रा, बेळ सातम सबे ।

मने महान् होने कने महान् होने ।

मन्त्र दिन मन्त्र उदिने सावार ॥

"सकडों बनरीकी मन्त्र उनमे साव सब मिलकर बीसो कि
विद्वन्-मन्त्रों इन मन्त्र मन्त्र उक्त काव प्रहृष करेगा । वह मने और
मने महान् बनेगा । इनमे मन्त्रमने मन्त्र मन्त्र मन्त्राणा ।"

'मन्त्र मन्त्र मन्त्र राम रहल, मन्त्र मन्त्र मन्त्र करल ।

रावणके पुजारी बानी बुराईको अपमानेवाले रहे, वैसे तो दोनों एक ही जानबालके भाई-भाई थे । आपसमें जड़ते हैं और धाँहसा छोड़कर हिंसाका रास्ता खेते हैं । नतीजा यह कि रावणके पुजारी औरव तो मारे ही गए, पर पाखबोने भी पीसकर हार ही पाई । मूढ़की कबा सुननेमरको इने-तिने खोंग बच पाए और आखिर उनका जीवन भी इतना किरकिरा हो गया कि उन्हें हिंसात्मकमे जाकर स्वर्ग-रोहण करना पडा । भाव हमारे बेजमे जो बन रहा है, वह सब ऐसा ही है ।

भावसे राष्ट्रीय सन्ताहका आरम्भ हुआ है । मैं मानता हू कि थाप लोगोने भीबीस बटेका बत रखा होगा और प्रार्थनामय दिन बिताया होगा ।

भाव तीसरे पहर तीन बजेसे चार बजेतक यहाँ बर्सा-कटाई भी गी गई, जिसमे 'राष्ट्रपति,' उनकी पत्नी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, आचार्य जगन्निधोर और दूसरे भी बहुतसे थे, जिनके नाम मैं कहातक निगाह । इस तरह क्साई-यन्त्र पूरी क्षमिसे और जूनसूखीसे पूरा हुआ और अब यहासे बालेके बाव आपका उपवास भी खत्म हो जायगा, परंतु किताना अच्छा हो यदि राम-रहीमके सम्ब तथा उषा मचनका सबेरा सबके लिए सबके बिलोपर अमिस्त हो जाय । लेकिन यह सब भाव तो हिंदुस्तानके लिए स्वप्नकह हो गया है । मेरे पास सार और बात बरस रहे हैं, जिनमे शामिलवा भरी रहती है । इससे पता चलता है कि कुछ लोग मेरे विचारोको किताना गलत समझते हैं । कुछ यह समझते हैं कि मैं अपनेको इतना बडा समझता हू कि सोचोकि पत्नीके उत्तर नहीं देता तथा कुछ भुझर यह धारोप लगाते हैं कि पचाव बच बन रहा है तब मैं बिल्कीने जीव उठा रहा हू । ये लोग कैसे समझ सकते हैं कि मैं यहा कहींपर भी हू उन्हीके लिए दिन-रात काम कर रहा हू । यह ठीक है कि मैं उनके आसू न पोछ सका । केवल भगवान ही ऐसा कर सकता है ।

^१ आचार्य कुमलानी ।

रवाबा मनुसमयीय बाब मुग़ल मीठा क़मज़ा करनेके लिए थाए थे । वह धर्मीगढ़ मूनिवसिटीके इस्ती है । उनके पास काफी बड़ी बाग़बाद है, फिर भी उनका मन सो फ़कीर है । मैं जब वहा जाता था उन्हेंकि यहा खाला खाता था । उस ज़मानेमें स्वामी सत्यदेव—परि-वाजक—मेरे साथ रहते थे । उन्होंने हिमालयकी बाबा की थी । ईश्वरने बाब उनकी भाखें छीन ली है । उस समय वह बहुत काम करनेवाले थे । उन्होंने मुग़ल क़हा, “अ तेरे साथ भ्रमण क़र्या, पर तू मुसलमानके साथ जाता है, तो मैं तो नहीं साक़ना ।” वह चुनकर रवाबा साहबने क़हा, “अगर उनका बर्न ऐसा क़हता है तो मैं उनके लिए भ्रमण इतबार क़र्या ।” रवाबा साहबके दिलमें यह नहीं था कि वह स्वामी बाबीके साथ जाता है तो क्यों नहीं मेरे यहा जाता । पुराने दिन फिर वापस आएने जब हिन्दू-मुसलमानोंके बिचोंमें एकता थी । रवाबा साहब जब भी राष्ट्रीय मुसलमानोंके प्रेसीडेंट है । दूसरे भी जो राष्ट्रीय भावनावाले मुसलमान जबके उन दिनोंमें प्रजी-गलसे निकलें वे वे बाब बाबियाके मच्छे-मच्छे विचारों और काम करनेवाले बने हुए है । ए सब सहायके रेगिस्तानमें हीपसमान है । रवाबा साहब ऐसे है कि उनको कोई नार डालेगा तो भी उनके मुह से बहुतसा न निकलेगी । ऐसे लोग जले बोडे ही हो, पर हर्नें तो अपना-पन कायम रखना ही चाहिए । बरमासकी देखकर हमें भी बुराईपर नहीं ख़र धाना चाहिए । लेकिन बिहारमें हमने वह भूख की । यहा हिन्दुोंने राष्ट्रीय मुसलमानोंकी हत्या की और मुसलमानोंके हिन्दु भिचोंकी हत्या दूसरे मुसलमानोंने की ।

हमें धार्मिकपूर्वक यह विचारना चाहिए कि हम क़हा बहे बा ख़े है ? हिन्दुओंको मुसलमानोंके विरुद्ध श्रेय नहीं करना चाहिए, बाहे मुसलमान उन्हें मिटानेका विचार ही क्यों न रखते हो । अगर मुसलमान सग़ीनो नार डालें तो हम बहादुरीसे भर जाए । इस दुनियामें ज़बे उन्हीका राज हो बाब, हम नई दुनियाके बसनेवाले हो आएने । कम-से-कम मरनेसे हमें बिरुद्धनहीं डरना चाहिए । जन्म और मरण तो हमारे मनीषमें लिखा हुआ है, फिर उबने हर्ष-भोक क्यों करे । अगर हम

हैंसते-हैंसते मरेगे तो सचमुच एक नए जीवनमें प्रवेश करेंगे—एक नए हिन्दुस्तानका निर्माण करेंगे। नीताके दूसरे अध्यायके अंतिम श्लोकोंमें बताया गया है कि भगवानसे करनेवाले व्यक्तिको कैसे रहना चाहिए। मैं आपसे उन श्लोकोंको पढ़ने, उनका अर्थ समझने तथा मनन करनेकी प्रार्थना करता हूँ, तभी आप समझेंगे कि उनके क्या सिद्धांत थे और आप उनमें कितनी कमी पा गई है। आबाबी हमारे करीब आ गई है तब हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनेसे पूछें कि क्या हम उसे पाने तथा रखनेके योग्य भी हैं ? इस सप्ताहमें जबतक मैं यहाँ रहूँगा तबतक चाहता हूँ कि आप लोगोंको वह बुराक दे दूँ जिससे हम उस जायक बनें। अगर फलवत्ते ही रहे तो आबाबी आकर भी हाथमें नहीं रहेगी।

१ ७ १

शनिवार ७ अप्रैल १९४७

(आप शनिवार होनेके कारण प्रार्थना-सभामें गांधीजीका लिखित संदेश सुनाया जानेवाला था, किन्तु नवीनवर्ष प्रार्थना प्राय वटे बाद शुरू हुई। तबतक महात्माजीका मीन समाप्त हो गया था। इसलिये संदेश सुनाए जानेके बजाय उन्होंने नीचे लिखा वाक्य दिया)

आइयो और बहनी,

मेरे पास बराबर ऐसे पत्र आ रहे हैं जिनमें मुझपर यह इलजाम लगाया जाता है कि मैं बिना साहबका गुनाह और पापके बस्तेवाला बन गया हूँ। कोई पत्र-लेखक कहता है, मैं कम्युनिस्ट बन गया हूँ। लेकिन मैं इन चीज़ारोने नहीं बबरता। आप जोय हर रोज़ गीताके वो श्लोक सुनते हैं वे हमेंछा मेरे साथ रहते हैं और इन बातोंके सहनेकी क्षमता देते हैं। अगर मुझपर इलजाम लगानेवाले इन श्लोकोंका मतलब समझते तो ऐसी बात न करते। मैं समाप्तनी हिंदू हूँ, इसलिये ईसाई, बौद्ध और मुसलमान होनेका दावा करता हूँ। कुछ मुसलमान भाई भी यह महसूस करते हैं कि मुझे कुरानकी सराही

आपमें पड़नेका अधिकार नहीं है। वे समझते हैं कि कसमा पड़कर मैं मुसलमानोंको जोसेमें डालता हू। ऐसे मील बह नहीं जानते कि जबहू आया थीर सिपिकी सीमासे बाहर है। मैं कोई कारण नहीं देखता कि मैं कसमा क्यों नहीं पड़ सकता थीर मुहम्मदको रमूब बानी अपना पैयबर क्यों नहीं मान सकता। मैं तो हर जबहूके पैयबर थीर सबोंने विश्वास रखलेवाला हू। मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता कि मुझपर इसबाब जगानेवालोंपर मुझे गुस्सा न आए। इतना ही नहीं, बल्कि मैं उनके हाथों नरनेके लिए भी तैयार रहू। मेरा विश्वास है कि अगर मैं अपने मकीनपर सबबूतीले काम न रहा तो मैं सिर्फ हिन्दू-धर्मकी ही नहीं, इस्लामकी भी सेवा करता।

आज राबबपिडीका एक हिन्दू बहाकी नटमाओका दुखजनक विवरण सुनाने आया था। जबहू हिन्दू होनेके कारण उसके ५५ साली मार डाले गए थे थीर वह बूब तथा उसका एक लड़का मर गया है। राबबपिडीके पास-पासके बाब तो मरन कर लिए गए हैं। वह किसी दुखकी बात है कि किस राबबपिडीके बारेमें मुझे याद है कि किस तरह बहाके हिन्दू, मुसलमान थीर सिख मेरा थीर मसीहमूथोका उत्कार करनेमें आपसमें एक-दूसरेसे होठ लगाते थे, बड़ी फाव किनी थी मरमुसलमानके लिए सबारेकी जगह बन गया है। पयाबके हिन्दुओंके धिओंमें गुस्सेकी भाव बन रही है। सिख कहते हैं कि वे मूब गोविन्दसिंहके बनें हैं, सिन्होंने उन्हें सबवारका इम्तेआ सिखाया है। लेकिन मैं हिन्दुओं थीर सिखोंसे बार-बार नहीं कहूंगा कि वे बरसा न जे। मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि बरसा लेनेकी पापना डोडकर अगर सब हिन्दू थीर सिख अपने मुसलमान भाइयोंके हाथों धिमें गुस्सा जाने बिना मर भी जाय तो वे सिर्फ हिन्दू थीर सिख जबहूकी ही नहीं, इस्लाम थीर दुनियाकी भी रक्षा करेंगे।

तीस सालमें मैं आपकी ग्रहिवा थीर कसका उपवेश सेवा आया हू। मैंने दक्षिण अफ्रिकामें बीस सालतक डनी तरह किया था। मेरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रिकामें हिन्दुस्तानियोंने मेरी बात मानकर फाववा डी उठाया है थीर बहा भी जो सब थीर ग्रहिवाके रास्तेपर

बले हैं उन्होंने कुछ बचाया नहीं है। ठीक है कि हमारे सत्याग्रहियों ने अपना सब कुछ जुटा दिया। लेकिन उसमें क्या हुआ ? रत्नको उन्होंने हाथों कर लिया और निकम्मी चीज फेंक दी। अगर मैं पचाव गया तो मैं बहा क्या करूँगा इसकी मेरे दिलमें हिचकिचाहट हो रही है। बहा क्या मैं बदला लेने जाऊँ ? बदला लेनेकी बात मीठी तो लगती है, लेकिन ईश्वर कहता है बदला लेनेका काम मेरा है। मुझसे काफी लोग कहते हैं कि बहा आओ तो सही। मैं उनसे कहता हूँ कि मैं बहा बदला लेनेकी बातका प्रचार करनेवाला नहीं हूँ। ऐसा करना तो हिंसा, सिखा और मुसलमान सबकी कुसेवा करना होगा।

मैं मुसलमानोंसे भी कहना चाहता हूँ कि हिंदू और सिखोंके साथ लड़कर पाकिस्तान लेनेकी बात निरा पागलपन है। पाकिस्तानमें तो अमनसे रहनेकी बात है। कायदे आचमने कहा है कि हमारे बहा हरदम इन्साफ होगा। आच बहा क्यो इन्साफ नहीं दीखता ? कायदे बह पूछेंगे कि बिहारमें भी क्या हुआ ? पर बिहारके प्रचाल मंत्री तो आच रो रहे हैं। बह कहेंगे, आचकी कायेस कहा गई थी ? उसने क्या किया ? बह सवाल बडा है। कायेसका राज्य हिंदू-मुसलमान दोनोंपर बतना चाहिए। लेकिन आच ऐसा नहीं है। मैं ऐसे पाकिस्तानकी कल्पना ही नहीं कर सकता बहा कोई गैरमुसलमान जाति और कुरआनके साथ न रह सके। न ऐसे हिंदुस्तानका ही बयान करसकता हूँ बहामुसलमान बतरेने हो। मैं बिहार गया और बहाके हिंदुओंके गुस्सेको ठंडा करने और मुसलमानोंमें हिंदुओंके प्रति विश्वास पैदा करनेकी कोशिश की। सुषीकी बात है कि बहुतसे हिंदुओंने अफसोस बाहिर किया और भावें बैसा न होने देनेका विश्वास दिलाया। उसी तरह मैं मुस्लिम नेताओंसे अपील करूँगा कि बिन प्रादोंमें उनकी आबादी ज्यादा है, बहाके अपने मुस्लिम भाइयोंसे वे कहें कि वे अपने बहासे गैरमुसलमानोंको मिटानेकी कोशिश न करें।

पचावके हिंदुओं और सिखोंने फ़ितीही ही उत्तेजक सापाका प्रयोग क्यो न किया हो, फिर भी बिन इसाकोने मुसलमान ब्याबा साबाबमें वे बहा उन्होंने गैरमुसलमानोंके साथ जो बेरहमी और पाक्षिकता की उसकी कोई बबह न थी।

पिछले दो दिनों में मोमालाजीसे फिर बुरी खबरें आ गयीं हैं, लेकिन सब कुछ होनेपर भी पुलिस या फौजवादी मदद मागना गमती और कायमना है। जो लोग गड़बड़ मचानेपर रोते हैं, वे मुसाम हैं और जो फौजवादी सहायता चाहते हैं वे मुसाम बने रहेंगे। लोग न तो गृह-मुद्रम पढ़ेंगे, न गृहाम रक्षना ही पसंद करेंगे। नुस्खे मटीम बाबू व प्यारेमातजीने पर मित्रपर पूछा है कि बाबू-पूजके ओपडोके दरवाजे बंद करके, जिसमें बंद-बीस धाकनी हो, बसा दिया बाबू तो वे क्या करें? हुन बाबूने बीमूहानीने ऐसी ही बात लिखी है और बताया है कि साम्रित लोग जाना चाहते हैं पर समझानेपर रुक गए हैं। मैंने बगामके प्रधान मंत्रीको तार दिया है कि यह खतरनाक बात है। लोगोंको मैंने नदेश भेजा है कि बिनने साहम हो, हिम्मत हो, वे बस जाए, मिट जाए। अगर अपनेमें इसकी मजबूती के महसूस नहीं करते तो वे बहाते हियरु करें। बड़े-बड़े लोगोंने हियरु की है। मुहम्मद बाबूने भी की है। कुछ भी करें, बिन अगेबोको यहां मैं हन भगाना चाहते हैं जगकी पीओको लोग हरमिज न बुझावे। पिछली सडाईमें इसीउके और बापानके फितने धाकनी भर गए, पर उसकी वे शिकायत नहीं करते। वे बहादुर जादिया हैं। हमको अगेबोका राज धच्छा लवे, यह हमारे लिए धर्मनाक बात है।

जो जुमि धमर हियासयसे बिरी हुई है और गणाकी स्वास्थ्यप्रद काराधेति निमित्त होती है क्या यह हियासे अपना नाश कर लेगी? जे धन्य करमने धाना करछा ह कि बड़ी-बड़ी फौजें रखनेका खयाल हम अपने बिलने निकाल लालेंगे। इन फौजोने हमारा कुछ भी नशाना नहीं होनेवाला है और उनके रहते हमारी धाकालीकी कोई कीमत न होगी।

१ ८ १

८ अगस्त १९४७

भाईयो और बहनों,

मेरे बेटा ह कि अब आपने इसकी जाति अपनाली है कि

रोज-रोज मन्यवाद देनेकी आवश्यकता नहीं रहती । भाव में अपनी दुर्बधापर ही बोलना चाहता हूँ और मुझे उम्मीद है कि आपके कानों-तक इसका एक-एक शब्द पहुँचेगा तथा इसकी एक-एक बात आपके हृदयका भेदन करेगी, यानी हृदयकी गहराईमें पहुँचकर वह अपना असर डालेगी ।

कल अखबारमें आपने सतीश बाबू और हरेन बाबूके सार देखे ही होंगे । भाव सतीश बाबूने प्रत्युत्तरमें जो सार मेला है उसमें वह लिखने हैं कि बीनसिंहजी, प्यारेमानजी और दूसरे जो आपके साथी महा आकर काम कर रहे हैं उन सबने मरते दम तक यहीपर बने रहनेका निश्चय किया है और सभी यह बात मजबूर करते हैं कि आपका कहना सही है । महाके हिंदू ऐसा कर सकते हैं वैसे आपने लिखा है । खतरा तो पूरा है, मारे जानेका डर बढ़ता जा रहा है । वे रोते हैं, छतनेपर भी वे मजबूतीके साथ बात और तैयार हो रहे हैं । अब उनके मारे भाग जाना वे पसंद नहीं करते । वे सोचते हैं कि अगर मौत आने ही वाली है तो उसे ईश्वरका प्रसाद समझकर मजबूर कर लेना ही अच्छा है । यह कृषीसे मरनेकी बात है, मारकर मरनेकी बात नहीं है । यह सब आवश्यक किए गए कामका तरीका है ।

मैंने उन लोगोंसे पूछवाया था कि आप वह तो नहीं चाहते कि मैं महाका काम छोड़कर आपके पास चला आऊँ ? मुझे दूसरे जरूरी काम हैं । मुझे विहार जाना है । फिर पचास भी पठा है । उन लोगोंने मुझे लिखा है कि 'तुम महा आनेका जरा भी खयाल न करो ।'

वे सारे लोग अलग-अलग जगह फँसे हुए हैं । सतीश बाबू एक ओर हैं तो हरेन बाबू दूसरी ओर और चौमुहानीमें बड़ा भारी काम कर रहे हैं । अमृतसनाम, प्यारेनाम, कलु और आना-जैसे हरेकने एक-एक गांव चुन लिया है । मुझे मरोसा है कि सभी लोग मेरी उम्मीदके 'मुताबिक मनीभाति' काम करने । मेरी वह उम्मीद क्या है ? मेरी उम्मीद तो है कि अगवानसे सबको मुमति मिलेगी, जैसा कि यह सबकी रामचुनने सुनाती है, 'सबको सन्मति दे अगवान' । मैं यह उम्मीद

कम्मा ही जम्मा कि बे मम्मम मेवे कि जक्कणी चींग माचीट्ठे
कुछ भी शामिल होनेवाला नहीं है। अगर जिम्मेने माचीट्ठा कूट
ले लिया या डूबरेने कूट तरका निता या बाट टिमनेननी गल नहीं
होगी। ऐसा तो भोग-आनू करने है। डूबरे चींग द्वारा जग भी क्या
हम भी डाकू बन जायेंगे ? नहीं, हम उनो 'जम्मीव' नहीं बनने।
वे हमें माग्गा चाहते हैं जो हम भर जायें।

हमारे बीच इस तरह मरनेवाले बहादुर नीच भीड़ है, पर
देखकर अच्छा लगता है। उनकी बहादुरीमें उनका चींग देखा जाता
होगा। वे मरते-मरते भी मारनेवालोंकी शिकायत नहीं करेंगे।
न उन्हें सजा मिलवानेकी बात भीखें। मारनेवाने मजामेमे दृष्टनेवाने
नहीं है। ईश्वर उन्हें सजा देगा, हम मज देनेवाले कीम टूटें ?
हम ईश्वरने भी नहीं कहेंगे कि हे भगवान, उन्हें सजा दे, क्योंकि ईश्वर
तो स्वभाव है। हम तो उनमे अपने लिए और दुस्मनोंके लिए भी
रखम ही मारेंगे और अतृप्त लक्षका, मारनेवालोंका भी सजा चाहनेकी
कोशिश करते हुए मरेगे। इसनेपर भी भगवान जो मरेगा उनमें सजा
ही नहीं होगी।

लेकिन ऐनोमेंसे कोई क्या भर बाध तो क्या मैं यह कहूँगा, 'हम
क्या हुआ ?' मैं ऐसा नहीं कहूँगा। मैं तो कहूँगा, अच्छा ही किया जो
उन्होंने इसकी सही सेवा की। मुसलमानोंकी भी सेवा की है और ऐसा
करके ईश्वरका काम किया है।

लेकिन जो मरनेको तैयार हो जाते हैं, बहादुर बनते हैं, उनसे भीत
हट जाती है। हम जम्मीव करें कि उन्हें मरना नहीं पड़ेगा। बहा
दुरावर्गों साहब हैं, छोटे-बोटे मफ्फर हैं। जो जाने डालनेवाले भी हैं
उनको ईश्वर क्षमासे सेवा और डाका डालनेवाले की पेट जायेंगे तथा
दुस्मनोंकी बचनूर करनेकी बात छोड़ देंगे। मैं तो यहातक जम्मीव
करता हूँ कि वहाके सब मुसलमान बाई इकट्ठे होकर अपने हिस्से
बाइनोंकी रखावती अपने बिम्मे से लेवे और जगह-जगहसे मुसलमान
बाइनोंके मिलकर तार मेरे पास आयें कि 'आप फिर न करें, हमारे
महा सतनेकी कोई बात नहीं है।' और सबमें नाचूँगा।

एक भाईने पूछा है कि 'मैं क्यों कहता हूँ कि मैं हिंदू हूँ, इसलिए मुसलमान हूँ?' यह तो साफ बात है। वह मैंने गीतासे सीखा है। गीतामें बताया है

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च नमि पश्यति ।

तस्याहं न प्रणम्यामि स च मे न प्रणम्यति ॥

यानी जो मुझे, हर जगह देखता है, उसका मैं नाश नहीं करता और वह मेरा नाश नहीं करता। योमा दुरात्माने, बेबाबस्तामें बाइबलमें, सबमें राम है और ईसाई, पारसी, सिख, मुसलमान जिस पाँचको, जिस दुरात्माको और जिस कुशाको मजते हैं वह ईश्वर ही है और मैं इस धर्मका माननेवाला सच्चा हिंदू हूँ, इसीलिए मैं मुसलमान हूँ और ईसाई भी हूँ। यह सिर्फ विभागकी या कहनेकी बात नहीं है। यह हकीकत है। ईश्वरनिबद्धने भी ऐसा ही लिखा है कि 'मैं सब चीजमें हूँ और सारा मुझमें ही है।' और फिर लिखा है कि 'वह बीबता भी है, वह स्मिर भी है।' ईश्वरके बारेमें इस प्रकार कई तरहकी बातें गीता-उपनिषद्में कही गई हैं।

दूसरे पक्षमें कहा है कि 'अगर आप अपनेको शिवमतगार कहते हैं और राम और ख़ीम एक ही हैं तो दोनोंसे एकको क्यों नहीं चुन लेते? इस बातका ज़ुलासा दीजिए।' मैं शिवमतगार हूँ, इसलिए यह ज़ुलासा देता हूँ। विष्णुके सहस्र नाम हैं। पर ईश्वरके केवल हजार ही नाम नहीं हैं, एक लाख भी हैं। मैं तो कहता हूँ कि ईश्वरके आसीस करोट नाम हैं। इसलिए क्या बजह है कि मैं केवल राम ही कहूँ या ख़ीम ही कहूँ? और फिर किसीने पूछा है, क्या मैं मुसलमानोंकी ज़ुलामके निश ऐंसा कहता हूँ?

तो मेरा उत्तर है—नहीं। मैंने कोई सोच-समझकर प्रार्थना नहीं बनाई है। अज्वाब तयबबीकी सटकी देहाना, जो पक्की मुसलमान भी हैं और हिंदू भी हैं, उसने मुझसे कहा, 'ओज अविष्मा' सिखा दूँ? मैंने कहा, ठीक है, सिखा दे, पाहे तो मुझे मुसलमान भी बना दे। जो बड़ बोली, नहीं, आप मेरे पिता हैं, मैं आपकी भटकी हूँ। आप धक्के हिंदू हैं, आपको मुसलमान बनानेकी कोई जरूरत नहीं। पर उसने मुझे यह 'ओज

सोचता हूँ कि मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है।

(इसके बाद प्रार्थना) : (इसके बाद प्रार्थना) : (इसके बाद प्रार्थना) :

प्रश्न—आपकी प्रार्थना में जो कुछ है, वह सब मैंने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है।

उत्तर—आपकी प्रार्थना में जो कुछ है, वह सब मैंने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है।

(यहाँ पर प्रार्थना के कुछ भागों को उद्धृत किया गया है, जो कि प्रार्थना के अन्तर्गत हैं।)

प्रश्न—आपकी प्रार्थना में जो कुछ है, वह सब मैंने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है।

उत्तर—आपकी प्रार्थना में जो कुछ है, वह सब मैंने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है।

प्रश्न—आपकी प्रार्थना में जो कुछ है, वह सब मैंने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है।

उत्तर—आपकी प्रार्थना में जो कुछ है, वह सब मैंने आगे रखा है, मैंने जो कुछ किया है, वह सब तुम्हारे सामने आगे रखा है।

पास रहकर बहादुर बन गई है। मैंने उसे कह दिया, तेरा पति तेरे साथ नहीं जायगा। वह अब अपने ही खतरे की सब जगह पर चली जाती है। तो बना वह बुद्धिमान है? वह निहत्थी जाती है। यह भी नहीं कहती कि मुझे खबर दिसवाओ तब जाऊंगी। उस बेचारीके पास तो सबी काटनेकी कुटी भी मुस्किमते रहती है। मैंने वह कभी नहीं कहा कि आप लोग खतरेकी सीटी सुनते ही सब भाग निकले। हमें मरना है, और मारकर नहीं मरना है। अहिंसा हिंदू-धर्मका अमली सार है। आपकी पीढ़ाने अहिंसा सिखाई है। मैं तो कहता हू कि मुसलमान धर्मका सार भी अहिंसा है और ईसाई धर्म भी अहिंसा सिखाता है।

, : ६ :

६ मार्च १९४७

भाइयो और बहनो,

सुनेतावेनीने आज जो सचन सुनाया है वह आप लोगोने पिछली बार, जब मैं यहा था तब भी, सुनाया। उसके साथ मिलने सुबर है उसने ही मीठे स्वरसे वह गाया गया है। आज भी जब मैं उसे सुन रहा था मुझे वह वैसा ही भावा और नया-सा लग रहा था। क्या ही अच्छा हो, यदि हमारा देश ऐसा ही बन जाय और हम कह सकें कि यहापर शोक नहीं है, आह नहीं है। लेकिन हम जानते हैं कि आज देश ऐसा नहीं है-। एक-एक करके हरेक भाइसी अगर इस सचनके मुताबिक अच्छा बन जाय तो देश भी ऐसा ही जायगा। समुद्रकी क्या ताकत है? एक-एक बुदबुदे ही तो वह बना है। उसी तरह देश भी एक-एक भाइसीसे बनता है। आज हम लोग ऐसे नहीं हैं कि इस सचनको सच्चे दिलसे या सकें। ऐसा देश बनने चले तो वह कौन-सा होगा? वह देश है हमारा शरीर और उस शरीरका निवासी है हमारे शरीरमें रहनेवाला आत्मा। आत्माके जो गुण होने चाहिए वह इस सचनमें बताए हैं। हमें चाहिए कि उन गुणोंको अपनाए। अगर हम लोग ऐसे बन जाय तो फिर हमारे देशका

नाम चाहे हिंदुस्तान रहे या पाकिस्तान, वह सुबह ही होगा, उसे ही फिर उसमें ११ प्रातः हों या २१, या चाहे बित्तने। सबको ऐसा होना चाहिए कि हर कोई आरामसे रह सके, कोई मुफ़सिख न रहे, न कोई किसीपर आक्रमण कर सके।

अपने बेटोंको ऐसा बनानेके लिए मापको बिबा रहना है, स्व मबको बिबा रहना है, मुसको भी बिबा रहना है। लेकिन पाप को हो रहा है वह उससे उमटा ही हो रहा है। मेरे पास को डेरो भिट्ठियां आ रही हैं उनमें गालिया भी रखी हैं और स्तुति भी होती है। हमें चाहिए कि वो गालिया मिलती हैं और वो स्तुति होती है उन सबको कृपार्थक्य करके हम बरी हो जाय।

मैं समझता हू कि इन भिट्ठियोंके मिलनेवालोंसे कुछ भोग इस मजमेमें होने ही। मुझे यह अच्छा लगता है कि वे मेरी बात चुनने हैं; क्योंकि चुननेने वे समझने और मुसको कायदा पहुँचावने।

हम अपनी मो आबादी पा रहे हैं। अपनी हमने वह पाई नहीं है। अगर हम मिल-जुलकर काम करें तो पाप ही बाइसराय बसे पाप या सब बानबोर हमें नीपपर वह बैठे रहे अथवा हम को काम बसाने वह अपने दिनबहनाबके लिए करले ग्ये। वह खाली बैठनेवाले आदमी नहीं है। बाइनाही जानबानके है, बडे बसुर है। उनकी बीबी भी बसुर है। उनमें हम काम ने करले है। लेकिन पाप को हावत है उसमें नहीं से बनने। अपनी तो वह बीबट महीने तक बैठे रहेंगे और हिंदुस्तानको प्रभावपन देंगे कि वह कैसा अच्छा या बुरा है। हिंदुस्तानको ही देखनेके लिए एजियाई गार्डनमें एजियाके गेन आए थे, लेकिन वे यह जवान मेजर गए जि बग हिंदु-मुसलमान सब रहे हैं। वे क्यो लड रहे है, वह जिनीरों पना नहीं। दम-ने-दम मुझे तो पना नहीं है कि क्यो लड गे है।

ता पाकिस्तानके गि मड -हे है ? वे कहने है कि हम पाकिस्तान के-के गेये। क्या वे हमें मजबूर करके सेये ? अगरइस्तीने सेये ? अन्-दमीने तब जब जमीन भी नहीं ने करले। मजबूर-मुसलमान तो पाग हिंदुमान मने ही ने से। मुझे तो यह अच्छा लगेगा

कि हमारे आजाब हिन्दुस्तानके पहले प्रेसीडेंट बिना साहब बने और वह अपनी कैबिनेट बनावे । लेकिन इसमें एक ही शर्त होगी कि वह बुद्धको हाथिर-नाथिर समझे मानी हिंदू, मुसलमान, पारसी सबको एक समझे ।

चिट्ठिया भेजनेवालोंमें एक आबसी लिखता है, 'तुम्हें 'मुहम्मद ग़ासी' क्यों न कहा जाय ?' और फिर बड़ी खुबसूरत गालिया भी हैं, जिन्हें महा बुद्धानकी जरूरत नहीं है । ग़ासी देनेवालेको आबाब न दिया जाम तो वह एक, दो, तीन या अधिक बार ग़ासी देकर बक जायगा । बककर या तो मृग हो जायगा, या और गुस्सेमें आकर मार डालेगा । पर मारनेके बाद फिर क्या होगा ? हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा । कोई कहे कि फिर हमारे बीबी-बच्चोंकी रक्षाभी कौन करेगा ? तो उसे समझना चाहिए कि उनकी रक्षाभी करनेवाला तो ईश्वर बैठा है । फिर हम परेशान क्यों हो ?

बग़ाल-विभाजनके आन्दोलनको बात करनेका सबसे भयानक तरीका उस वारेने हिंदुओंके साथ बर्ताव करके उन्हें समझाना होगा और धर्मीसे उन्हें यह बताना होगा कि वह उनसे कोई बात बबरबस्ती नहीं करना चाहते । अपने सर्वथा निष्पक्ष व्यवहारसे वह सिद्ध करना होगा कि पाकिस्तानमें हिंदुओंको निष्पक्षता और न्यायके बारेमें किसी तरहकी आशंका नहीं रखनी चाहिए । मुसलमानोंके साथ केवल मुसलमान होनेके कारण ही पक्षपात न किया जायगा और सरकारी बीकरीके भिड़ आबसी खुले समय केवल उसकी बोधिताका ही ध्यान रखा जायगा । अगर सुहराबर्षी साहब ऐसा करे तो समूचा बग़ाल एक आजाब सूबा बन जाय । फिर उसके दो या चार टुकड़े करनेकी बात न होगी । भ्रष्ट मसजिदोंकी खुशामद करके उनके बिलकी इस तरह पीस लेना चाहिए—हिंदुओंके साथ उन्हें इस तरह पेश माना चाहिए—कि वे यही कहे कि 'हमारे प्रधान तो सुहराबर्षी ही होंगे । हमारा जरोसा सन्धीपर है ।'

लेकिन धर्मी बैसा नहीं है । मेरे पास आब ही बुझाका, जो पहले राजकोटने स्कूल बनाती थी, बत भाया है । उसने बहके हावात

हिंदू-मुसलमान दोनों हीवान बने हुए हैं। दोनों सकते हैं। क्या इसमेंसे कोई रास्ता नहीं है ? रास्ता तो है। दोनोंमें एक जानवर न बने यही इसमेंसे निकलनेका सीधा रास्ता है। पर पत्र-लेखकने एक बात और कही है कि 'तीसरे लोग क्या करते हैं, यह बड़ा सवाल है। बाइसराय साहब हिंदुस्तानकी सत्ता हिंदुस्तानियोंकी सौंपने आए हैं। माना कि वह सच्चे दिलसे आए हैं, धर्मबोले अपने बाइसाहबके कटुवके बड़े मोटाको यहा फँसी हुई अपनी सत्ताको समेट लेनेके लिए ही भेजा है और उनको बड़ा भेजनेवाले ब्रिटिश मिनिस्टर लोग भी दिलके सच्चे हैं। फिर भी सवाल यह है कि जो अंग्रेज व्यापारी बनने बरसोले हुये बूस-बूसकर आते रहे हैं वे ठीक तरहसे रहेंगे या अपनी कारगुबारियोंको बलता रखेंगे ? भावसक हमारा कुछ व्यापार उनके हाथोंसे रहा है। अब आते वे क्या करेंगे ?' यह प्रश्न सही पूछा गया है। हिंदू-मुसलमान मिलकर उन्हें रकना चाहें तब वे बोलाकी तरह रहेंगे या उनके न चाहनेपर भी बबरबस्ती हमपर वे अंग्रेज व्यापारी बने रहेंगे। दूसरी तरह सिविल सर्विसका जोर है। उसने तो हम लोगोपर इसका काबू जमाया है कि हम यह जान नहीं पाते कि हमने कभी आबादी मिल भी सकेगी या नहीं। यह तो ईश्वरकी क्या है कि हमारे हाथ दो-एक ऐसी तरकीबें आ गई और हमारा ऐसे बन गए कि अंग्रेज जानेको कहते हैं। लेकिन अभी तो सिविल सर्विस भी है, उनके सोल्जर (मोटा) भी है। उनका खाना-धाना बड़ा बड़ा रहेगा तो वे कौी जायने ?

ऐसा तो न होगा कि बाइसराय साहबकी ही हुई चीज यूही वापस छीन भी जाय ? ऐसी सफापर मुझे नहीं कहना है कि अभी जो हालत है उसने हम कुछ भी नहीं कह सकते। अभी स्वराज्यका प्रयोगव्य ही हुआ है, सूरज नमका नहीं है। हमें पता नहीं कि उस सूरजने गरमी किसनी है। इस समय तो हम बरबर काप रहे हैं। हमारे दिनोंमें सबेह बड़ा हुआ है। सूरज नमकेला अभी हमें उसकी सही गरमीका पता चलेगा।

इस बारेमें मैं आप लोगोसे तो कुछ नहीं कहना चाहता, लेकिन उन अंग्रेज लोगोसे, व्यापारी, सिविलिजन और सोल्जर सभी लोगोसे

कहना चाहता है कि अगर आपको अग्नेबोका नाम काम्य रखना है तो आप यहाँसे भ्रम रवाना हो । आमतक आप हमारे बचोपर बैठे रहे, यह धन्य नहीं किया, लेकिन भ्रम आप उतरनेको तैयार हो साथ तो धन्य होना ।

उन लोगोंने यही काम करनेके लिए माउटबेटन साहब यहाँ आ गए हैं और वह धकेले नहीं है । इन्तेजवालोकी सारी ताकत अपने साथ लेकर वह आए हैं । ऐसा करनेमें उन्हें कुछ मुकदाम भी उठाना पड़ेगा, पर इसके लिए वह तैयार हैं । इसका कुछ सबूत भी उन्होंने दिया है । हमने कहा कि सिविल सर्विस जानी चाहिए तो वह सिविल सर्विस का रही है और ऊँहके सिरपर का रही है । यानी उनको वैभव चाहिए ब्रिटेन ही देगा ।

अगर माउटबेटन साहबने वर्नरोको और उनके सब सेक्रेटारियोंको भी बुलाया है—सही बात समझनेके लिए बुलाया गया है । अगर बचिस और उनकी पार्टी भी बोर्डाँ लिए बिना न जानेगी । इतनेपर भी माउटबेटन साहबका कहना है कि हम ब्रिटिश प्रजाके नामसे यहाँ आए हैं और ऊँकी रायसे भ्रम हमें यहाँसे बाँट जाना है । माउटबेटन साहबके इन काममें वर्नरोको, अग्नेव व्यापारियोंको और सिविल सर्विसमालोंको सहयोग देना चाहिए । उन सबको यहाँसे बसा जाना चाहिए । यहाँ रहना चाहें, वे सुधीये रहें । पर आमतक जो किया उससे सतटा करें, यानी हमें बूसनेके बचने हमें फूसने-मालनेमें मदद दें । ऐसा करने तो उनकी नामवरी हो जायगी ।

लेकिन सब कहते बात का रही है कि बिजना बगान-मसाव हो गया है उनमें उनकी मरफक बरी थी । इस बातकी माउटबेटन साहबकी भी बूझा रही है । उनके दिलमें एक हो गया है कि लोगोंकी वह बात नहीं सही न निकल जाय । भ्रम यहाँके अग्नेबोको वह रोचना है कि हिन्दू-मुसलमान जो बात मानते थे कि इन बचोंमें अग्नेबोका ही हाव है वह सही मानित न हो । अगर वह बात सही है तो इतिहास किन्तीका विहाय रखनेवाला नहीं है । यानी इतिहास कहना कि वे सुंदरे लोग थे ।

परंतु वे कह सकते हैं कि जो हुआ सो हुआ । अब हमने नया पन्ना खोल दिया है । मासटवेटन साहब तो मर चुका करना चाहते हैं ही, पर उनकी कामयाबी अश्वेत व्यापारी, अश्वेत सोल्जर और अश्वेत सिग्नलि-यनके हाथोंमें ही है । उन सभीकी नेकनीयत न होनी तो बाइसरायका किया-कराया खतम हो जानेवाला है । इसलिए हमको प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर उन लोगोंको सुमति दे । हिंदुस्तान छोट जानेमें उन्हें चाहे किस्ती ही परेशानी क्यों न हो उनके सामने अपने अधिपत्यके बारेमें अश्वेत ही क्यों न खया हुआ हो, फिर भी मैं उनको कहना चाहता हूँ कि उनकी उन्नति इन्हींमें है कि वे यहाँसे जानेकी बात पक्की कर लें ।

इसके बाद हमारा अगला निपटानेमें वे हमें मदद दे सकते हैं । ऐसा करनेमें वे सफल भी हो पावेंगे । फिर उनको बड़ा मर्माभिलाषा । मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि वे यहाँसे दुश्मनकी तरह न जाकर दोस्ती की तरह भलाइके साथ जाय और हमारे दिनोंमें उनकी दोस्ती बनी रहे ।

: ११ :

११ अप्रैल १९४७

भाब्यो और बहूनी,

आपको खबर डेरी हुए मुझे सकोच होता है कि भाब मेने एका-एक बिहान आनका निश्चय कर लिया है । भाब जानते हैं कि मेरा क्षेत्र नोआखानी और बिहार है । इनको मेने चुना है, ऐसा नहीं है । नोआखानी तो मैं दैवयोगसे जानी ईश्वरकी पुकार धुनकर चला गया । सभी सिग्नलिमें मेरा बिहार जाना भी हुआ । नोआखानीमें मैं थितने बिन रहा, उसमें मेने काफी काम कर लिया । वहाँ जो हिंदू आसक्तसे विद्वान हो गए वे उन्हें कुछ खाति मिली । पर जिस तरह वहाँ हिंदुओंके लिए काम हुआ उसी तरह मुसलमानोंके लिए भी हुआ । भाब उसकी

कीजिए व गरीब पर अपने चरित्र का जरा उजड़ती नज़र न डालें।
 मानना मुझ ईश्वरी सम्बन्ध का है। जैसे जो पात्र भी बना है उसे
 ओमिनेन्टा का बना बना प्रान्त है। पात्र भी बना है सम्बन्ध का
 हिस्सेजोमीने विभक्त बाँट सम्बन्ध का है, व-धर्म ऐसे मोगीनी
 गायक बननी नहीं बनी है जिसकी बनी बाँट। फिर भी बना जो
 बना हो रहा है हमने सबिपर्व व-धर्म का होना बना है सम्बन्ध बना नहीं।

हम सम्बन्ध के रास्ते हमने अपना मोटा-पानी में नहीं है जिसका विभाग
 है। विहारने एक सम्बन्ध का बाँटना नार काया है जिसे बाँट कर हमने
 एक विहारने बाँट रहे, सब बाँटने का नोट काया बाँटिए। आप
 बाँटने नहीं हमारे दिनों समझती विनेति। सब डीन है जिसे विहार
 बाँटने मित्र-व-धर्म का बाँटने नार नहीं विभा है, पर सब के रा दिन नहीं
 बना हुआ है, अर्थात् जैसे जो बना रहा है जिसे का बना।

सम्बन्ध का सम्बन्ध कर है जिसे विहारने हिन्दु-मुसलमान काय विभक्त
 बाँट-बाँटती रख रहे हैं। विहारने बाँट बाँट सब बाँट हमारे
 ही नो व-धर्म रहे ही सब भी बना हिन्दु-मुसलमानों की विभक्त
 सम्बन्ध काय रख है। विहारने व-धर्म नीच है जहाँ बाँटली
 बाँटली सब नहीं पड़ता है। विहारने ही नहीं, ऐसे मोटा-पानी में
 भी है और व-धर्म का बना बना सब बना है जहाँ भी ऐसे बाँट व-धर्म
 बाँट सब विभक्त बाँटने और एक-मुसलमान व-धर्म रहे हैं। ऐसे
 बाँट नारे हिन्दु-मुसलमानों में विभक्त बाँटने।

आप पूछ सकते हैं कि व-धर्म की भी हमने क्या बाँटली बाँट की
 की, जैसे एक और बाँट सब विहार जहाँ बना बाँटने हो ? और
 बाँटने बाँट करके फिर भी बाँट बाँट व-धर्म भी बाँट बना पूरी
 हो गई ? अगर बाँटने बाँट बाँट ही भी गई हैं तो बाँटने उसका
 क्या बाँट बना है, अर्थात् बाँटने फिर भी व-धर्म। पर मैं बाँटने
 बाँट व-धर्म ? बाँट बना जैसे हमनी बाँट ही है नहीं। हम
 बाँटने विभक्त बाँटने बाँटने हैं। मुझे बाँटने बाँटने बाँट ही नहीं
 बाँट व-धर्म। जैसे बाँट बाँट व-धर्म विभक्त बाँटने बाँटने बाँटने
 बाँट है, एक बाँटने बाँट और बाँटने बाँटने बाँटने बाँटने।

मेरे पास राखें बाबू भाए बे । उनसे मैंने बातचीत कर ली है और नेहरूजीके पास भी सबेला भेंट दिया है । सबने मिलकर मुझे इजाजत दे ली तब मैंने विहार जानेका निश्चय किया ।

विहार जाना मेरा स्वर्ग्य है । मैं गीताका सेवक हूँ । गीता सिखाती है कि स्वर्ग्यका प्राप्तन करो और अपने ही क्षेत्रमें बने रहो । गीताने साफ-साफ कहा है कि स्वर्ग्यमें और स्वर्ग्यमें मरना अच्छा है, परवर्ग्यमें जाना भयावह है । इसीलिए दिल्ली-जैसे परवर्ग्यमें रहना भयावह हो जाता है ।

अगर पचाव जानेके लिए ईश्वरकी आवाज आती तो मैं जरूर ही चला जाता । आप पूछेंगे कि क्या ईश्वर तुम्हसे कहनेको आता है ? वैसा कोई ईश्वर मेरे पास नहीं आता । लेकिन भीतरसे आवाज तो आती है ही । जो कोई ईश्वरका भक्त बन जाता है वह अपने भीतर बैठकर ईश्वरकी आवाज सुन लेता है । पचावके बारेमें मुझे वैसी आवाज नहीं सुनाई थी ।

पर इसना मैं कहूंगा कि पचाव जानेकी बातपर मैंने काफ़ी गौर किया और इस तलीवेपर आया कि आप कहा जानेसे कोई बात मत-मतन पूरा होनेवाला नहीं है, क्योंकि कहा हमारा राज नहीं है । अगर कहा जीवका भी राज होता तो वह हमारा ही राज कहा जाता, क्योंकि अगर जीववाले भाते हैं तो वे बोटके भरिये भाते हैं और तब वह हमारा राज हो जाता है । जोगीके बोटसे जो राज आया वह जोगीका ही राज कहलाया । वह राज सुख देनेवाला हो वा दुःखायी हो वह देखना हमारा काम है ।

फ़र्न कीजिए कि हमारी कमनवीसीसे हमारे बेजने एक हिंदू राज्य हो गया और दूसरा भुसलमानोंका पाकिस्तान बन गया । अगर दोनों ही ऐसे बन जाय कि, कहा दूसरी जीववासे सुख-आसिमे न रह सके, तो वह हिंदू राज्य नरक हो जायगा और वैसा पाकिस्तान नापाकिस्तान हो जायगा । सच्चा पाकिस्तान नहीं है, बहापर अक्स इन्साफ—सही-सही न्याय—हो, कहा मारपीटके सहारे कुछ भी करवानेकी बात न हो और जो कुछ करना-करना है वा पाना है वह दूसरोंके हृदयपर प्रसर डालकर ही करने-करवानेकी बात है । परंतु आज हमने अपना यह आदर्श भुला दिया है ।

पर मैं पचास बाक बा न बाक, बहाक काम तो करता हूँ । जो बहा बाकर मुझे कहा है वह बहा पचासके बाहर बाहर भी मैं सुना सकता हूँ । और मेरे सिलसिले तो एक ही बात है, जो मैं बोलूँ उसे हुए बोलनेवाला नहीं हूँ । वह बात यह है कि एक-एक हिंदू न एक-एक सिव यह निश्चय कर ले कि वह घर बायबा पर मारेगा नहीं । मास्टर सापसिंह कहते हैं, 'हम मारेंगे ।' उनका यह कहना मेरी समझसे ठीक नहीं है । उन्हें तो नहीं कहा चाहिए कि 'हम जो चाहते हैं, वह थाप नहीं लेते तो हम बाहे मुस्लीमर बायबी ही क्यों न हों, नर मित्तें, नर बेकर ही रहेंगे । मारलेकी बात उन्हें नहीं करनी चाहिए । इसी बात मुझसे विद् मुझे पचासतक बालेकी बकरत नहीं है ।

विहारकी भी मैं बाहरसे सुना सकता हूँ, पर मैं अनुभव करता हूँ कि बहा कुछ लोगोंको समझना सकती है । जोमाबासीमें भी मैं इसी बोलते सुना । जोपोली कहा, 'मुझे नार डालेंगे ।' पर मैं कहता हूँ, आप नव-के-बच रक्षा करेंगे तो भी मुझे भीतसे बचा नहीं सकते । मास्टर हरीज भी बैठे रह जायेंगे । बाय जो नवल बाबा बहा उसमें हकीम मुकमानने भी हाथ मकर मिराज हो कहा कि जिसकी भी बहार नव रोमकी ही है । तो फिर हम भीतसे क्यों बचें ? हमें बहादुरीके साथ मरना चाहिए । हम सब हमें बचना चाहिए कि हमपर हाथ बलाने-बालीपर दुनिया बालक बालने । सारी दुनिया उन जोमसि कहें कि आप बालिम हीपर बालिबाल नेना चाहते हैं जो कैसे से सकते हैं ?

सत्याग्रहका रहस्य ही यह है कि (सत्याग्रही सभी दुनियाका मत अपनी ओर कर लेता है ।) मैंने मुझे कहा था कि हमें अमेरिका या इन्डियन प्रचारक भीमकि निकलेकी बावनाकता नहीं है, यही बड़े-बड़े हमारी बचाई बलनेकी और सारी दुनिया बलने बायबी । बलिब बलीराने भी मैंने इन्ही प्रचार दुनियाकी हमबली कमाई की औरप्रवेश नया अमेरिजनी जाने मेरी बायकी नहीं बलाया था ।

: १२ :

१२ अग्रेष १६४७

माइयो धीर बहो,

कलका दिन राष्ट्रीय सप्ताहका साक्षरी दिन है। ७ अग्रेषका दिन चात्रिका दिन था। उस दिन हमने देखा कि सारा हिन्दुस्तान एक ही गया था। सहृदय एक होते ही हैं, क्योंकि एकताके बिना उनका व्यापार नहीं बन सकता, पर हिन्दुस्तानके सभी देहात एक हैं, यह अनुभव हमें उसी दिन हुआ।

देहातका एक होना बहुत बड़ी बात है। ७ अग्रेषके दिन जोगीसे मैंने उपवास रखनेको कहा धीर सारे देशमें यह बात मान ली। मैं कौन सीध था ? पर यह ईश्वरकी पुकार थी। सभी मन्नाससे लेकर पञ्जाबतक, और पञ्जाबसे लेकर आसामके त्रिपुण्ड्रतक सभी देहात हिन्दु उठे। हिन्दुस्तान सब रोब जाग उठा। कलकी १३ अग्रेषकी रातीख हिन्दुस्तानके कलकी रातीख है। उस दिन हिन्दू, मुसलमान, सिख सभी एक साथ जमियावाला बागमें कल हुए। वह कोई जगीबा नहीं था। चारों ओर बीमारोंसे भिरा हुआ एक भहाता था। उस घेरेमेंसे जालनेके लिए गुंजाइश न थी। एक छोटा-सा रास्ता था। वहापर निहत्थे जोगीनी कल किया गया धीर कम-से-कम दो हजार—साथब पाच हजार—आसमी मारे गए। उस जगह हिन्दू-मुसलमान-सिख सबके खून आपसमें मिल गए। कोई नहीं बता सका कि वहापर कितनी मानाने किसका खून बहा था। सीमीमें भरकर धगर किसीका खून भेजा था तो बड़े-बड़े डाक्टर भी उसे जाचकर नहीं बता सकते कि वह खून हिन्दूका है, सिखका है या मुसलमानका। मतलब यह कि जमिया-वाला बागमें सभी हिन्दुस्तानी एक साथ कहीर हुए।

आप यह न कहें कि वे बड़ा मरनेके इरादेसे तो गए नहीं वे फिर उन्हें जहीद क्यों कहा थाय ? सब है कि वे मरनेके लिए नहीं गए थे, पर वे सब निर्दोष थे। बेगुनाह लोगोंका मारा जाना बड़ी भारी बात होती है। वह भुला देनेकी बात नहीं है। हमारा काम है कि हम उन्हें

याद रखें । वह काह इतना जीवन् था कि उससे सारा देग बेचन हो गया । उसीको देखकर नुस्तेब—रबीन्द्रनाथ ठाकुर—ने सरकारको पत्र लिखा और वह हमारे साम आ गए । इसलिये कम आपको तेरह प्रमैसका दिन मनाया है । कम ने कहा आपके साम शरीर नहीं रूखा । वह मुझे अच्छा नहीं लगता, पर अब मैंने विहार जानेका निश्चय कर लिया है ।

यह समाप्त हो सकता है कि एक दिनके लिए क्यों न एक आरु ? लेकिन मैं विहार भी अपनी मौज-मौकके लिए तो नहीं जा रहा हू । कहा जाकर भी हिन्दुस्तानीकी, जो बन पड़ेगी, सेवा करना । उपवास तो रोजवासीने भी हो सकेगा । इसलिये मैं आज बाइया । आप कम उपवास करें और तेरह प्रमैस उसी तरह बनावे जिस तरह पिछले इतबारको ६ प्रमैसका दिन आपने मनाया था ।

अगर आप सोचते हैं कि साथ दिनोंकी सारी बातें ठीक तरह समझ-झौ हैं तो आप जिसने वादगी कहा साते रहे हैं उसने ही कम निश्चय कर ले कि हम नर जानवें; पर मारेंगे नहीं । ऐसा हम क्यों कहें कि मारकर मरेंगे ? ऐसा भी क्यों कहें कि हमारे हाथने सजवार या बड़क होनी उसी हममें बरनेकी हिम्मत आसनी । बड़कके सहारे मैं नहीं उठना और उसके बिना डर बाइना, ऐसा कहनेसे हमारी कौन-सी सोचा है ? हम बाड़ी, सजवार, बड़क सब छोड़ें और ईश्वरको अपने साम लेकर चल दें । फिर सब बपहु निबर होकर भूने और वह ऐसा कर दें कि हम हिन्दू-मुसलमान कभी भी आपसमें नहीं लड़ेंगे ।

लेकिन आज तो हम गुरी तरहसे सब रहे हैं । बिदेसी लोग जो मिलने आते हैं उनके सामने मैं अरुमिदा हो जाता हू । फिर भी उन्हें तो मैं बचाव दे देता हू कि बीचाने मनेवादे पर काम ही हैं, बाबीस-कै-बाबीस करोड़ बीचाने नहीं मने हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन यह आसना अब हिन्दुस्तानके सब लोग यह निश्चय कर लेंगे कि हम अपनी बात बुझिके मने हासिल करेंगे, उनवारके बसते नहीं । हिन्दुस्तान अगर सच्ची आबादी पाइया है तो सभीको वह सबक सीख लेना चाहिए ।

दूसरी बात मुझे यह बतानी है कि कोई कितना ही चीखे, हमारे भगवान् दुस्त होते ही नहीं हैं । आज एक भगवान् तो यह तक बिना दिया है कि पापी इसलिए जा रहा है कि बर्किंग कमेटीके साथ उसका झगडा हो गया है और बर्किंग कमेटीके साथ अब उसकी कलह नहीं है । और यह किसी छोटे-मोटे मामूली भगवान् ने नहीं बिना है । यह बड़ा प्रतिष्ठित और काफी बिकनेवाला भगवान् है । इसे देखकर मुझे धरम आती है कि हमारे देवके भगवान् कितने गिर गए हैं ।

अपने जानेका कारण मैंने यहाँ कब बिना जा और यह कुछ सत्य ही बताया जा । फिर भी भगवान् जानेने जो यह बिना है वह बिल्कुल निकम्मी बात है । मैं जा तो रहा हूँ, पर हमने झगडा बोले ही हो गया है । हम तो एक-दूसरेसे पूरी मुहम्मद करते हैं । अभी मौलाना साहब आए थे, राजा-जी थे, सरदार थे, नेहरूजी थे और कृपलानी जी थे । सभी लोग आपसमें बड़े प्रेमसे बातें कर रहे थे । सिर्फ़ राबर्ट बाबू यहाँ नहीं आए थे, तो क्या उनका मुझसे झगडा हो गया था इसलिए वह नहीं आए ? कौसी बाहियात बातें हैं ये सब । हा, ऐसा कह सकते हैं कि हमारे बीच मतभेद है । पर मतभेद कब नहीं थे ? मतभेद तो सदा रहे हैं । आप-मेरेके बीच भी मतभेद रहता है, पर वहाँ तो भगवान् बालेका मतभेदपर हमारा नहीं है । वह तो साफ बिना है कि हम आपसमें झगड पड़े हैं ।

अगर झगडा होनेके कारण मैं जाता तो बाइसरायसे जानेकी इजाजत देने क्यों जाता ? नेहरूजी और कृपलानीजीकी इजाजत क्यों मागता ? जो ही बिना कहे-सुने न जाता जाता ।

इतना ही नहीं, सरदारने तो अभी मुझसे पूछा कि सीटकर कब आओगे ? तो मैंने उत्तर दिया, "जब आप बुझने देंगे ।" सभाके ही बात होती तो क्या मैं ऐसी बात कहता ? मैं जब बागी बन जाता हूँ बड़ा पक्का बन सकता हूँ और बड़ा ही खूबसूरत बागी बनता हूँ । मैं किसीकी सुनूँगा नहीं तो किसीको मास्ना भी नहीं, न किसीको सताऊँगा ।

लेकिन लोगोंकी इस तरह बबराहटने जालकर अपने भगवान् की बिग्री बहाना, वह उनका पेसा है । पापी पेटको भरनेके लिए ऐसा करना बड़ी बुरी बात है । मैं भी पुराना भगवान् जैसा हूँ और मैंने उस अमीरका-

के बगलमें धरती-जानी अन्नहारकीनी भी है, कहापर हिन्दुत्वानियोंकी कोई छूटनेवाला भी न था। अगर वे नोम अपना पेट पालनेके लिए अन्न-हारके पत्रे भरने हैं और उनमें हिन्दुत्वानका विचार होता है तो उन्हें चाहिए कि वे अन्नहारका नाम छोड़ दें और कोई दूसरा काम गुबारेंके लिए दूट दें। अन्नहारको धरतीमें रखनी भीवी गमिन बताया गया है। इनमें बहुत-सी बानें विषादी या कण्डां जा सकती हैं। यदि अन्नहार पुष्प नहीं रहेंगे तो फिर हिन्दुत्वानकी यात्राही किस कामकी रहेगी ?

एक सोम भी ऐसे हो गए हैं कि नवरे लड़ते ही कुरानके बिना हमें बसेवा नीता-रामायणके बिना भी बस जाएगा, लेकिन अन्नहारके बिना हमारा काम बिलम्ब ही नहीं चलेगा। बड़े-बड़े सोम भी अन्नहारके पुष्पाव बन गए हैं। अगर हमारे अन्नहार न बिना तो 'हाम-तीवा' न बन पाती है। अन्नहारपालने भी हुआई जलें कर-करके नवको गुप्तान बना जाता है, लेकिन वे सारी बानें करीब-करीब विकम्पी ही होती हैं।

मैं कहूँ कि ऐसे विकम्पे अन्नहारको आप बँक दें। कुछ खबर मुगनी हो तो कुरासे जान-मुक्त हैं। अन्नहार न बट्टें तो आपका कोई गुरुत्व होनेवाला नहीं है। अगर पत्ता ही बाहूँ तो सोम-समझकर ऐसे अन्नहार पुन से भी हिन्दुत्वानकी नेबानें लिए बसाए जा रहे हैं, जो हिन्दु-मुसलमानोंको बिल-मुक्तकर रखा दिखाते हो। फिर ऐसे अन्न-हारवालोंकी भी इसनी बाबतोंमें पड़नेकी जरूरत नहीं रहेगी कि उन्हें रातभर जलते रहना पड़े और भिन्न भी नैन न से लकें। और ऐसी बेवृत्तियाँ खबर आपनेकी पीठ भी नहीं बगानी पड़ेगी।

मैंने अन्नहारवालोंको चाहिए कि अगर वे कुछ बात सुन दें कि पापी-नेहके वा उपसानी और आवासे बीच झगड़ा हो गया है तो उसे आपनेसे पहले पापीसे वा नेहके पूछ दें। अगर ऐसा वह पूछने काते हो हम उन्हें बात बताकर कहें कि ऐसी बेकारकी बात क्यों करते हो ?

पाप एक मुसलमान नाईने कहा पत्र जेना है और एक हिन्दुने भी बकिया बात लिख जेयी है। मुसलमान नाईने लिखा है कि सातसोकरकी-ने ईशोपनिषद्के मन्त्रका जो अर्थ किया है वह सही मुसलमान है। उनी

तबहका धर्म 'ओज धविस्सा' का भी है । दोनोंने कोई अंतर नहीं है, कोई धरती है तो कोई अस्तुत मायाका है ।

हिंदू भाईने पूछा है कि आप कुरानको धर्मपुस्तक मानते हैं तो मुसलमान क्यों गीता और उपनिषद् धार्मिको धर्मपुस्तक नहीं मानते ? वे क्यों मस्जिदमें सन्ने नहीं पढ़ते ?

उत्तर सीधा है । सच्चे हिंदूके नाते मैं कुरानको धर्मग्रन्थ समझता हूँ, क्योंकि कुरानमें बुद्धाकी शरीफ सिद्धी है । लेकिन यह कौन-सा न्याय है कि मैं मुसलमानसे भी बलपूर्वक मनवाने जाऊँ कि हमारे अस्तुत ग्रन्थों-को तुम भी धर्मग्रन्थ मानो ? वह तो कोई असमनसाहस नहीं हुई ।

भाषा है, हम फिर मिलेंगे । अब बवाहरतान, कपलानीजी या बाइसराय बुलामने सब आ जाऊंगा । बिहारसे और गोआवालीसे भी मैं आपका और पचावका काम करवा चुका । जिस समयसे आप इतने दिन प्रार्थनामें आते रहे हैं, इसी समयसे आप हरबन प्रार्थना करते रहें ।

१ १ ३ १

१ मई १९४७

भाइयो और बहनो,

पहासे गए मुझे बीस ही दिन हुए हैं । अब मैं गया या लखी मुझे बुलवाया कि शायद बस्ती बँटकर आता पड़े । लेकिन मेरा स्थान बिहार और गोआवालीमें या और मैं पत्रह दिनोंके लिए भी यहाँ रुक नहीं सकता था । इस वजहसे मैं बिहार चला गया । मैंने कहा था कि मैं बवाहरतानका कैदी हूँ और उनके बुलानेपर आ जाऊंगा । उनका और कपलानीका हुक्म मिलनेपर मैं यहाँ आ गया हूँ ।

यह जानकर आप खुश होंगे कि अब मैं यहाँसे बिहार गया सब लोगोंने मुझे बड़ी आशिष दी । रास्तेमें किसीने नहीं सताया । मैं

१ १५ अगस्तसे २० अगस्त तक गाँधीजी बिहार-प्रवासमें रहे ।

प्राणमने जोश, बका नहीं और काम भी कर सका । बीटनेमें ऐसा नहीं हुआ । जोशने जगह-जगह खोर मचाया । उन्होंने यह नहीं सोचा कि मून-जैसे कईक धावनीको शांति देनी चाहिए, उसकी नींदमें खलल नहीं डालना चाहिए । जो न सकनेके कारण धाव में बका-बका-सा रहा । फिर भी बिनमें मने काम तो किया ही, क्योंकि काम ही मेरा जीवन है । बिना काम किए मैं जी ही नहीं सकता, पर कम काम हुआ । लेकिन जो बात मुझे सहन नहीं होती वह है लोगोकी चिन्ता-हट और किस्म-किस्मके गारे । आप सोचेंगे द्वारा मैं सभी लोगोको मुनासा चाहता हूँ कि आपने वे ऐसा खोरखान न करें, गारे न लगावे । स्टेशनोपर जोर बना हो काम तो अभी ही बात है, क्योंकि आपने तो दो-चार रने हरियन-बदेदे दे बाकरी । लेकिन उन्हें सघाति नहीं बिनानी चाहिए ।

मैं आपकी बलाया चाहता कि मैंने बिहार जाकर क्या किया ? क्या काफी काम हुआ है । बचत बाह्यबाह्य एक छोटी-सी जगहपर बैठ गए हैं । उनकी अपने काममें अब फल मिलने लगी है । जो मुसलमान लोग दु-उठे गारे धावनमोख बने गए वे भी अब बापल धा गए हैं । धावनमोखमें उन्होंने बहुत ज्यादा दु-ध पामा और समक गए कि धाउन तो अपनी जगहपर ही बित सकता है । उनमें बाह्य-बचने बिन्दुन ही मून गए थे, उनकी हड्डी-बसनी निकल पाई थी, उनकी दिनी दिम्बनी पगलियन कहा नहीं हो पाई थी । अब उन्हें दूध दिया जाता है । धारा दूध तो बिनमा अब समक हो गया है, क्योंकि हमारा धाग धाउन मष्ट हो सका है । इसलिए उन बच्चोंको मूत्रा दूध दिया जा रहा है । मूत्रा-दूध दु-धमें बिदायित नहीं रहते और वह जीवन-रत्न नहीं दिम्बा, जो गारे दु-धमें बिम्बा है । लेकिन दूधमें जो कफना एक मोन-मूत्रा है वह मूत्रा दु-धमें भी कफना-कफना जयम रहा है । बासन-मोने मोने मूत्रा-मूत्रा मूत्रा दूध दि-जानेके बाद अब वे सहुकन हो रहे हैं, उनकी पगलिया नर पाई है ।

दुमरा मरान का जमीन मालका । अब उन्हें धावनी मोटर का मष्टा उन मालका मालका मने ही ? उन उन्हें मनाया गया

या वहाँ खुद तो वे बाजारमें राजन खेनेके लिए बाते डरते थे। सरकारने उनके पास राजन खेनेकी व्यवस्था की, पर उनके हिन्दु-पड़ोसियोंने कहा, यह हमारे मेहमान है। उनका राजन हम पहुँचायेंगे। सरकारी लोगोंको इसके लिए परेशान होनेकी जरूरत नहीं है।

एक दूसरी जगहकी बात है। वहाँ बहुतने मुसलमान मारे गए थे। जो बने थे वे बड़ा लौटकर जानेमें किम्मतते थे। उनकी किम्मत मिटानेके लिए उनके साथ आबाद हिंदू फौजके कुछ भाइयोंको भेजा गया। उनकी बाते देखकर हिंदुओंने उन आबाद हिंदू फौजके मिपाहियोंने कहा कि आप क्यों जा रहे हैं। हम लोग हैं इनकी सेवा करनेके लिए। हम मर जायेंगे तब भी इनकी हिफाजत करेंगे। आबाद हिंदू फौजके लोगोंने कहा कि हमें जनरल माह्वका हुकम है। हम नहीं लौट सकते। तब हिंदुओंने कहा, 'हम लोग हमेशा पागल छोटे रहेंगे ? हम उस बार तो पागल ही हो गए थे। बस हजार आखी मिलकर एक हजारको मार जाने इनमें बहादुरी ही कौन-सी है। अब हम कभी ऐसा नहीं करेंगे।'।

इस प्रकार हिंदुओंने मुसलमानोंका डर मिटा दिया और उन्हें अपनी जगहपर जानेका प्रोत्साहन दिया। मसीहा यह हुआ कि जन्ही मुसलमान भाइयोंने खुद उन मिपाहियोंको लौटा दिया। मुझे बरोखा है कि अगर बिहार जगहा उत्तरगा है तो हिंदुस्तानभरमें जगह-जगह जो बातें हो रही हैं वे सब बातें हो जायगी। मेरा कहना यही है कि हम सभीको बहादुर होना है, लेकिन मेने सुना है कि अब जो बिल्लीने भी कायरताके काम हो रहे हैं। मुक-छिपकर रोज-न-रोज कुछ हो रहा है। सबर डेराइस्माइलजार्में भी बहुत बुरी बातें हो रही हैं। अभीतक वे बंद नहीं हुईं।

लोग पूछते हैं, तुम लोगोंने जो वस्तुवस्तु^१ किए थे वे क्या गए ?

^१आपसी मारकाट बंद करने और जेलके साथ शांतिपूर्वक रहनेके लिए हिंदू और मुसलमानोंके साथ एक असील निकाली गई थी जिसपर गांधीजी और जिन्ना, दोनोंने हस्ताक्षर किए थे।

जाति क्यों नहीं होती ? वो बल्लबल मैंने सिए वह कोई जिज्ञा साहब-
से मिलकर धीर उनसे बातचीत करके नहीं सिए । बाइबलपढ़ने छात्र
जिज्ञा कि तुम बल्लबल देवो । मैंने उनसे कहा कि मैं जानूँ देवेवाला ?
जात्रेज्या तो मैं बल्लबल मैंने बल्लबल नहीं हूँ । मेरे बल्लबलपढ़ने छात्र
क्या होता ? मैं तो बल्लबल छोटा भाइया हूँ । ही कानवे छात्रन बने
भाइया हैं, उनके बल्लबलपढ़ना बल्लबल बनार होता । लेकिन बाइबलपढ़ने
मुझे कहा कि तुम्हारे बल्लबल जिज्ञा साहब चाहते हैं । इसने जिज्ञा वह
बल्लबलपढ़ने सिए तैयार नहीं होने । तुम बल्लबल कर दो तो हमें पता तो
बल्लबल कि बाइबल जिज्ञा साहब करना क्या चाहते हैं । मैंने उस
बल्लबल कर सिए । इसके बादकी बातें मैं छोड़ देता हूँ ।

मेरे सिए वह बल्लबल नहीं बात नहीं है । जिज्ञाकर मैंने यही
जान लिया है धीर कर रहा हूँ । लेकिन जिज्ञा साहबके बल्लबल जारी
बात है । बाइबलपढ़ने केबल्ले मेरे बल्लबलपढ़ना है तो उन सब मुमलनामोंने
जिज्ञा साहबकी बात जलनी चाहिए, क्योंकि उन्होंने मुमलनामोंने
धोरके बल्लबलपढ़ने सिए हैं । मैंने जिज्ञा हीमिलसे बल्लबलपढ़ने नहीं सिए हैं ?
मेरी केबल्ले कोई नहीं है । मैं जिज्ञा जी पारसिका नहीं हूँ । मैं बल्लबल हूँ ।
बनार बिहारमें हिंदू फिर बाइबल करने तो मैं जाना करके नर जाऊँगा ।
उसी तरह बनार भीमाबाड़ीमें मुमलनाम बीजाने होने तो कहा भी मुझे
बल्लबल है । मैंने वह हर हासिल कर लिया है । मैं बल्लबल सिएका है,
उन्होंने बल्लबल मुमलनामोंने नहीं ह । बल्लबल, पारसी, ईसाईना भी मैं उनका
ही हूँ । मैंने ही बीज मेरी नमूने, बल्लबल मैंने बल्लबल बल्लबल धोरने कहा
धीर बल्लबल कि बल्लबल ।

लेकिन जिज्ञा साहब तो बल्लबल बली बल्लबलके प्रेमीहैं । उनके
बल्लबलपढ़ने जो बल्लबल फिर क्या बात है जो मुमलनामोंने हाथमें एक भी
हिंदू जाना जाता है ? हिंदूने मैं बल्लबल कि मुमलनाम बाइबल हैं तो
नर जाते । बल्लबल मैंने मेरे बल्लबलपढ़ने बनार है धीर बल्लबल-बल्लबल मैंने
बल्लबल बल्लबल कि मैंने बल्लबल बल्लबल बल्लबल मैंने तो मैं बल्लबल पायी हूँ ।
मुझे जिज्ञा रोनेके बल्लबल चाहिए । पर मुमलनाम बल्लबल बाइबल ही क्यों,
जब उन्हें देना बल्लबलको कहा गया है ?

[illegible]

'बीबी, तैयार हो जाओ, मैं बीबी बनना चाहती हूँ।' 'आपकी माँ ने
 तो ईश्वर का चित्र बनाया था, वह एक पक्षी है।' 'तब तो मैं छोट्टी
 मछली बनूँ, उस मछली को मैं भी प्यार करूँगी।' 'यह तो ऐसी मछली है जो
 पानी में नहीं रहती, वह पानी के बाहर रहती है।' 'यह तो एक पालतू
 पक्षी है, जो पालतू पक्षी है।' 'तब तो मैं भी पालतू पक्षी बनूँगी।'
 'तो तब तो मैं भी पालतू पक्षी बनूँगी।' 'तब तो मैं भी पालतू पक्षी
 बनूँगी।' 'तो तब तो मैं भी पालतू पक्षी बनूँगी।' 'तो तब तो मैं भी
 पालतू पक्षी बनूँगी।' 'तो तब तो मैं भी पालतू पक्षी बनूँगी।'

परतु मैं राजगणमैं भी गुप्ता जाता हूँ। आपमें सब हम दोनोंके
द्वन्द्व में मिल, मैं आप किन् धर यहाँ रहूँ नहीं रह पाऊँ ? आप
मेगडेंद्रा जी की जाती ? जिनाबा डेंद्रा जी की जाती ? ऊपर
मैं प्रण निम्न-भूतमान चले जाऊँ है, फिर जाती है भी प्रदीप्तो
प्रण जी जाया जायिग ।

मैंने उन भ्रष्टाचारियों को आप क्या करेंगे ? आप करेंगे कि हम उनका पैसा, वह भ्रष्टाचार के पैसा भ्रष्टाचार में ही खर्च करेंगे । आप भी मैं आपकी देने की जो बात है मैं भी उनका पैसा काटने का नहीं करूँ । उनका पैसा है कि जिसका मैंने दुनिया की नया गन्ता बताया है । यही हमारी आशा की बात है । मैं तो दुनिया में सबका बदला लेना चाहता हूँ । मैंने जाना बहुत होता है । बदला क्या, मैं तो एक के बदले में हजारों बदले की बात कर रहा हूँ । मैं कहता, हम नहीं एक के बदले में भी बातें, फिर भी जानि न होगी (मारकर मरने में कोई बहादुरी नहीं है वह झूठी है । न मारकर मरने वाला ही खूबा महीन है ।

१. यज्ञार्थिक ।

आप पूछेंगे, तब क्या छगी हिन्दू, सभी सिख भर जाय ? ने कहुया, हा । ऐसी प्रहासत कभी बेकार नहीं जानेवाली है ।

मेरी इस बातपर आप बाहे मुझे बन्धनाह दे, पाई याहिना दे, ने तो अपने दिलकी ही बात आपसे कहुया । जब आप बाहिरी चुन रहे हैं तब दिलका बर्त ही आपके सामने खूबा और कहुया कि आप बहादुर बनें, हरे नहीं । हमको बराबर कोई लेना चाहेंगा तो हम कुछ भी, एक कीड़ी भी नहीं देवे । समझकर लेने चाहें तो करोब भी दे लें । अगर आप ऐसी बहादुरी नहीं अपनाते और हिन्दू, मुसलमान, सिख सभी पामन हो जाते हैं तो सबसे हिन्दुस्तानके लिए कुछ भी करें, कुछ भी दें, वह हमारे हाथने रहनेवाला नहीं है । हमें भी कुछ हासिल करना है वह समझ-मुझकर हासिल करना है । इसका इस्तेमाल अगर हमने सीक लिया तब तो हमारी सौभाग्य है, नहीं तो हिन्दुस्तानका साधना है, इसमें मुझे बरा भी मका नहीं है ।

१ १४ १

२ मई १९५७

आज कुरानकी भाषनका एक हिस्सा बोला जा चुका था तब एक नीयतमानने भाग लगाया—'बद करो, बद करो, हिन्दू-धर्मकी बद बद करो, हिन्दू-धर्मकी बद ।' मुनकर पाबीजीने प्रार्थना रोक की और बत—'ठीक है, आज कभीके भगनी होवे हो ।' पाबीजीने उसे भाव होनेकी बत; लेकिन वह निश्चलता रहा । उसी बीच पुलिसवाले उनके पास गये थे। वह पाबीजीको ठीक न गया । उन्होंने कहा—'पुलिस-वालोंन अब मेरी बात बहुत बारी है तो ने कहुया कि क्या करके वे उन प्रार्थनीको आ-दे और बरा गाने दें । प्रार्थनामें धमन रखनेके लिए धुनिम रीनमें आन, यह मुझे दिलचस्प नहीं मूहता । रोब पुलिस बहा दिग्दर्शिका नम्बरी — सी-उमने बराबर ने प्रार्थना बर तो वह तो प्रार्थना नहीं है । मैं तो अभी प्रार्थना करने जाता हूँ अब नवी लोग अपनी

खुशीसे उसे करने दें। आपने देखा कि इस जगानने प्रार्थना बंद करनेको कहा तो मैंने बंद कर दी। कम भी अगर वह बंद करनेको कहेगा तो मैं बंद कर दूंगा, लेकिन उसने भी कहा 'हिंदू-धर्मकी जग' तो धर्मकी जग इस तरह नहीं हो सकती। उसे समझना चाहिए कि इससे धर्म डूब रहा है। इसरोको प्रार्थना न करने देनेसे धर्म-रक्षा कैसे हो पायगी? पर इसमें तमका दोष नहीं है, दूषा ही ऐसी यथी है। आचकस सब बीच तमटी निगाहसे देखी जाती है, कोई चीची बात तो समझता ही नहीं। इसलिये अगर कोई मुझे प्रार्थनासे रोकता है तो मैं गम ना लूंगा।

परन्तु मुझे इस बातका ज्वाबा बर्न है कि उसने बीचमें छोर मचाया। अगर बूटसे ही वह कह देता तो मैं पहले ही रुक जाता। इसने पुलिसको बीचमें घानेकी क्या बात थी? इसनी पुलिस महा प्रार्थनामे शांति रखनेके लिए प्यही है, इससे मैं घमिषा होता हू। मेरे धर्मकी रक्षा पुलिस कैसे कर सकती है? मैं खुद करूंगा तभी मेरे धर्मकी रक्षा होगी। बलिक 'मैं धर्म-रक्षा कट्या' ऐसा कहना भी बगड है। मेरे धर्मकी रक्षा ईश्वर करेगा। साथ मेरे बिलने प्रार्थना से तो ईश्वर मेरी रक्षा करेगा ही। बाहरली प्रार्थना न हुई तो क्या हुआ?

लेकिन आप जोग क्या कर सकते हैं? आप तो शांतिसे बैठे हैं। ईश्वरका ज्ञान करने, अपनेको कुछ अच्छा बनानेके लिए आप महा प्राए हैं। एकके कारण आप सबको भुगतना पड़ता है। पर उस एकको इसने सब भिखार बना दे धीर फिर प्रार्थना करे तो उससे ईश्वरका धर्मन होनेवाला नहीं है। वह तो अपना ही धर्मन होगा।

मैं चाहता था कि वह लडका बात रखकर मेरी बात चुनता। मैं उसें समझाता। अगर वह धाम न समझता तो कम समझता। कम न सही, परतो समझता। कुछ भी हो, हमें वह बाब रखना है कि धर्मका पालन धोर-बजरबस्तीसे नहीं हो सकता। धर्मका पालन करनेके लिए मरणा होगा। सखारजे ऐसा कोई धर्म पैदा नहीं हुआ जिसमे मरणा न पडा हो। मरनेका इत्म भीखनेके बाब ही धर्ममे ताकत पैदा होती है। धर्मके भुसको मरनेवाले ही सीधते हैं। धर्म उन लोगोंके कारण बढता है जो ईश्वरका नाम लेते हैं, ईश्वरका काम करते हैं, ईश्वरका स्तवन करते हैं,

उपवास और उन करने के और उनमें शान्ति करने का है कि वह उपवास, हमें वास्तव में दीया, वृत्ति दिया। अब जो कहते हैं कि वह तो नम है और हमने पीछे चले हैं। उन्हें तो लग्न करना है। शान्ति को हम नहीं अपना, मरणा तो हमें करना है। वही हमें तो कर है। बिना हमें ऐसे ही रहा है।

परन्तु मोक्षमार्ग में भी जिना उनके विचारों की ओर हमारे दुःखोंके हाथों उनको भी शान्ति करने की ओर आगे बढ़ाने काया, योगी जीवन में मुक्त करने का ही मोक्षमार्ग में आत्मिक एक समान की।

द्वैतवादका उद्दिष्ट भी ऐसा ही है। द्वैत धर्मों की ओर हमें हिन्दु-धर्ममें अवस्था में ही वह भी सभी बातें जो हमें मिल गई। जिसमें हमें है उनमें एक ही है ऐसा नहीं था कि जिसमें हमें कुछाली न हुई हो। अब हमें वह जाना है कि वह हमें उनमें कुछ भी चीजें या बातें हैं और नम्र धर्मिकता पैदा हो जाता है। अब तो हिन्दु-धर्मधर्म की ओर-काठपर उतर पाए हैं, जबकि हिन्दु-धर्ममें कभी उन्नी-काठों करना नहीं सिखाया गया है।

आज तो हमें जानने की अवसर ही उठे हैं। लोगोंको न जाने उल्टा समझने को क्या जाता है? हिन्दु क्या, सिन क्या, साध पचाव व्याप्त हो रहा है। अब तो क्याही चीज मुझमें है। लोग कहते हैं—पचाव व क्याकरने को दुकने करो। अगर दुकने करने ही है तो मैं बाहरपक्षके पास क्यों जाते हैं? मेरे पास क्यों नहीं जाते? या तो लोगोंके पास क्यों नहीं जाते? पाकिस्तान क्या जा रहा है तो क्या वह हिन्दुओंको और सिखोंको मरिदासोट कर देनेके लिए है?

जिना साहबने तो कहा है कि पाकिस्तानमें अन्य मतवाले हिन्दु और सिख पूरे सुरक्षित होंगे, उन्हें परेशान नहीं किया जाएगा; पर धार्मिकता क्यों नहीं है? पचाव व क्याकरने को ही रहा है वहीं तो मैं उनको पाकिस्तानकी ओर देखता हूँ? अगर उपन्यासों पाकिस्तान ऐसा नहीं है तो जिना साहब क्या करते हैं बना करके क्यों नहीं बताते?

मुस्लिम बहुमतवादी व्यवहारे सिख और हिंदू-जातिके एक-एक प्रायश्चीकी हिफाजत क्यों नहीं होती ?

सिख, जहाँ हिंदू केवल पञ्चीस ही थीं सही है, वहाँ उन्हें क्यों दत्तना करना पड़ रहा है ? क्या पाकिस्तानका मतलब यह है कि उसमें सिखा मुसलमानके समी हिंदू, समी सिख, समी ईसाई और दूसरे धर्मवालोंको गुलाम बनकर रहना है ? ऐसा हो तो वह पाकिस्तान नहीं है । और हिंदुस्तान भी समी सही हिंदुस्तान कहा जा सकता है जब उसके हिंदू बहुमतवाले इलाकोंमें मुसलमानके मामूख बच्चे तकको बरा भी प्राय न पावें ।

बिना साहब पूछ सकते हैं कि हिंदुओंमें क्या किया ? बिहारमें हिंदुओंमें भी तो ऐसा ही किया है ? ठीक है कि उन्होंने समी की, पर प्राय बिहारके हिंदू पछता रहे हैं । प्रधान मंत्रीक कहते हैं कि मैंने गुनाह किया है । अगर समी जगह ऐसा हो तो मैं समझूँ कि कुछ बना । लेकिन प्राय तो सबने अपने धर्मका पालन छोड़ दिया है और दूसरा कोई पालन करता है तो कहते हैं कि हम उन्में मारेगें । यह ठीक बात नहीं है । मुसलमान भाइयोंको भी अपने कम साबाब पड़ोसियोंसे कह देना चाहिए कि समी अपने धर्मका पालन करे, हम बीचमें न पावेंगे ।

आखिर हमारे हाथमें एक बीच आ रही है, उसे क्यों छोड़े ? लेकिन समी उसे छोड़नेकी कोशिश कर रहे हैं । हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई समीको आपसके झगड़ोंके इस पापसे छूटना चाहिए और छूटनेका एक ही तरीका है । वह यह कि हम ईश्वरसे डरे । फिर हथियारकी माग नहीं होती, तब कोई नहीं कहेगा कि हमें मिमिटरी चाहिए, राइफल चाहिए, बंदूक चाहिए । पर प्राय तो सब जगहसे आवाज आ रही है कि हमें सिखों-जैसी कृपाव चाहिए । वह भी छोटी है, इसलिए बड़ी चाहिए । वह सब किमकी मारनेके लिए ? अगर सबके बरने ऐसे हथियार रहेंगे तो प्राय उसके बीच मुझे न पावेंगे ।

मेरे पास तो एक ही उपाय है, जिससे हम धर्मोंकी उस बड़ी ताकतको भी बिलकुल मिटा दे सकते हैं, जो इस समय बनी पड़ी है । वह तरीका है—'ना' कहना, असहयोग करना । आतिपूर्व असहयोगसे वे

उसका बापने । यह चीज बड़ी ही दुःख है । इसको अपने-आपके हाथ फिर होने की ओर लाना बेनी नहीं पड़ेगी ।

३ १५ ३

३ मई १९४७

“माइनों और बहनों,

“रोबकी तरह आपकी बात हो जाना चाहिए । आप प्रार्थनाके लिए आते हैं, इसलिए जानेके बाद बात ही बैठे रहे । बातें तो हरदम होती ही रहती हैं । प्रार्थनासे जीटकर बात सब बातें कर सकते हैं । इससे पहले नील रहनेमें ही प्रार्थनाका महत्त्व है ।”

प्रार्थनामें सुपानकी आत्मिकता के पाठको एकले फिर डोका । गांधीजीने प्रार्थना रोक दी थीर बोले—ऐसा मामूला होता है कि गांधीजी प्रार्थना तो ठीक करने की जाती है और सिर्फ सुपानकी आत्मिकता ही प्रार्थना ही नहीं करने की जाती । इसलिए हमसे ‘मोव प्रविस्ता’ से ही मैं प्रार्थना शुरू करता हूँ । अतः तो प्रार्थना बौद्ध मतसे शुरू होती थी । यह आपानी आपका मत है । सेवाश्रममें मेरे पास एक आपानी नाम रहने थे । वे निरुपद्रव का एक बड़े-से आत्मिकता प्रवर्धन करते हुए अपने विमर्शकी आत्मिकता के साथ बड़ी दुःख आत्मिकता और मधुरतासे इस मतका बोध करते थे । उस आपानी काहीही इच्छा अपने प्रार्थनामें सुनानेकी हुई तो मैंने उनकी बात मान ली थीर प्रार्थनामें अपने पहले यह मत कहा जाने लगा । पर हमसे मैं ‘मोव प्रविस्ता’ से प्रार्थना शुरू करता हूँ और अपने विमर्शमें नहीं जाता तो अपने प्रार्थना होती, अथवा आप नील नील रहकर विमर्श प्रार्थना करने की ओर आदिसे सीट आने ।

इसका मैं आपसे कहूँ कि आप सीटें सब सभी वर्गोंकी प्रार्थना अपने दिलमें लेकर जाए । आप इसका मतलब है कि सभी मतलब अपने हैं । विन्यास करें कि विन्यास की धर्म है, सब-के-सब अपने हैं । धर्ममें कसर

नहीं है। कमर है तो उनके आबमियोमे है। हरेक बर्गमें कुछ-न-कुछ गवे आबमी पैदा हो गए हैं। ऐसी बात नहीं है कि किसी एक बर्गमें ही गवे आबमियोका ठेका ले रखा हो। इसीलिए हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उन गवे आबमियोकी ओर न देखकर उनके बर्गकी अन्धकारों देखें। हरेक बर्गमें जो रत्नकी-सी बात हाथ आने उसको ले ले और अपने बर्गकी अन्धकारों बढाते चलें।

अब जो बात मैंने आब कहनेको सोची थी वह भी कह दू। आबकन हमारी हालत बड़ी ही नाशुक है। हमारा हिन्दुस्तान इसना बड़ा मुल्क है कि सारी दुनिया हमारी ओर देख रही है। जवाहरलालने जो एशियाई कांग्रेस बुलाई उसमें आपने देखा कि सबकी निगाह हिन्दुस्तानकी ओर लगी थी। अहरियार साधारण आबमी नहीं है। वह काफी बन्ना आबमी है। लेकिन उसकी भी जबर आप सोपोपर आनी हिन्दुस्तानपर ही है। जबर भरजवाले भी हमको ही देखते हैं कि अगर हिन्दुस्तानमें कुछ होना तभी एशियाके मुल्क कुछ कर पायगे। आपान भी कुछ न कर सका। इसने कन नहीं कि आपालने बहुत ही बहादुरी दिखाई। कना भी बहुत बतार्ई, पर आब वह कहा है? वह एशियाकी नाक नहीं बन पाया है। उसकी हालत पिछड़ गई है। उसे देखकर दिलमें खेद होता है।

हम तो अभी आजादी लेकर भी नहीं बैठ पाए हैं। इसपर भी दुनिया हमारी बात देखना चाहती है, क्योंकि हमने जगई ही ऐसी थी कि आबकन आजादीके लिए ऐसी जगई और किसीने नहीं की। बर्गके नामसे तो ऐसी जगईवा बड़ी गई है, पर आजादीके नामपर तो ऐसी जगई पहुँची नहीं है। सन् १९१९ के अग्रेलकी छठी तारीखको हम सोचोने ऐसा कदम उठाया कि अब आजादी करीब-करीब हमारे हाथोंमें आ गई है और सबको उम्मीद बच गई है कि अगर हिन्दुस्तान आजाद होता है तो सारा एशिया आजाद होता है और फिर अफ्रीका भी। इसका मतलब होना कि सारी दुनियामें नया बन्म पा सिया।

एशियाई कांग्रेसके प्रतिनिधि महामे गद्दी सजक लेकर गए हैं। वे अब यहाँ आए तब बड़ाका सारा वातावरण भाण नहीं जा, पर उन्होंने

तो हमारे यहाँ का मीस नहीं बेचा। बाबाजी बेची। समझनेवाले मनमोही हैं कि जब महीने बाढका पानी आता है तब वह गवसा होता है। वैसे ही हमारे यहाँ स्वतन्त्रताकी बाढका पानी आता है तब वह गवसा होता है। हमारे यहाँ स्वतन्त्रताकी बाढ आई है तो कुछ बदलमनी हो सकती है; पर अब हमारा काम है कि जेने बावनें नवाका पानी निखार बाता है वैसे ही हम भी अपनी बाबाजीको नगावसकी-सी स्वच्छ और पवित्र बनावें।

यह कैसे होगा? अमर्नको जर्म जावनेसे हिन्दुस्तानकी रक्षा होने-वाली नहीं है, न जर्मकी बाबाजी ही उस तरफसे मिल पावगी। लेकिन साथ हो क्या रहा है? डेराइस्वाइसबार्ने क्या हुआ? ह्वारणें क्या हुआ? सारे नीमाप्रायने यह कैसा ऊबम है? उसबार जाधो, भासे जाधो, बहूक जाधो। बाहिरा सीरले भी जाधो और खुफिया सीरले भी जाधो। जबके योने भी चुपके-चुपके बनाधो। क्यों कहा जा रहा है कि मार-पीट करने, बमकाफर और डराकर मममाना करायने ?

इन सबने हम न अपनी रक्षा कर सकेंगे, न सीरोकी। न भारत आजाद हो सकेगा, न एशिया। और दुनिया भी आबादीसे बर्धित रह जावगी।

इसलिए हम सब प्रार्थना करें और कुछ भावसे समझें कि सब मजहब एक है। हम एक-एक अण्डे खनेने तो भी बहुत बड़ा काम हो जावगा।

दुमरी बात मुझे बताली है असबारीके बारेमें। एक असबाराने हमारे बनीरेके साथ बाइसराय साहबकी क्या बातें हुई यह बताया है। बर्किंग कमेटीमें क्या हुआ इसका खाल भी उसने खाया है। यह छोटा असबारनही है। हमारे दुष्मनने कथनें यह नहीं बसता। यह तो कातेसके हिनमें बसता है। उस असबारने अनुमान बताया है कि बाइसरायने क्या तजवीवीं सोची है? वे इस तरफ अनुमान करें यह जारी गलतीकी बात है। बाइसरायने धुपकी ही कहने देना या कि उसने क्या करना बिचार है। बर्किंग कमेटीके कामकी भी अटकस क्यों लगाई जाय? बर्किंग कमेटीकी तरफसे भी बयान दे दिया जाय उसीकी प्रकाशित किया जाना चाहिए और कुछ नहीं होना चाहिए।

मैं जानता हूँ कि बहुतसे प्रसवारनवीस ऐसे होते हैं जो थोड़ा उभर पूछते हैं, थोड़ा उभर पूछते हैं और बात गढ़ लेते हैं। लेकिन मैं कहूँगा कि वे लोग उच्छिष्ट जीवन खाते हैं। उच्छिष्ट जीवन करना प्रसवारनवीसका धर्म नहीं है।

अग्नेवोंने अपने एक अच्छे प्रायमीको महा भेष दिया है। वह इंग्लैंडकी नाक रखनेके लिए आया है। जिस खूबीसे उसे भेषा गया है उसी खूबी और नीयतसे वह काम कर रहा है।

फिर क्या हक है कि उसकी बात बिना उससे पूछे बाहिर की जाय। क्या हक है किसीको कि वह भीठी-भीठी बातें करता हुआ सबको फुस-जाता फिरे और कुछ बात उससे निकाल ले, कुछ मुँहसे निकाल ले और प्रसवारमें छाप दे ?

मैं भी तो पिछले पचास वर्षोंसे प्रसवारनवीस रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि प्रसवारोमें क्या चलता है। इंग्लैंड और अमरीकाके प्रसवारोमें क्या-क्या चल रहा है, इसका भी मुझे पता है। पर हम इंग्लैंड-अमरीकाकी पक्षीका अनुकरण क्यों करे। अगर दूसरीकी गद्दी बानोका हम अनुकरण करेंगे तो मर जायगे।

मैं नहीं कहता कि इसने चलत ही लिखा है। उसमें जो-जो बातें हैं कुछ सही हैं, कुछ ग़ैर सही हैं। खिचड़ी पकाकर बे दी है। ऐसी प्रसवारनवीसी मैं बिलकुल पसंद नहीं करता।

आप लोगोंके मार्फत मैं उसी प्रसवारनवीसीको सुनाना चाहता हूँ कि इस तरह जैसे पैदा करनेकी वे कोशिश न करें। सीने डगसे अगर पेट नहीं भरता तो गले ही वह फूट जाए, पर वे ऐसी बात क्यों करें कि हिंदुस्तानका पेट फूटे। और इसने तो धीर्यक भी ऐसा दे दिया है जो किसीके स्वाधर्म भी नहीं आया है।

अच्छा हो कि हम लोग इंग्लैंड-अमरीकाकी गद्दी बातको छोड़कर अपनी बातको ग्रहण करें।

इस सिससिलेमें आज क्याहुरमास मेरे पास अपना कुछ बत्ता रहे थे। किसे-किसे वे अपना कुछ कहें। मैं भी उन्हें क्या दिलाया हूँ ?

हमने धर्मका कुछ किया है। धर्मसे ही हम आजादी पानेवाले हैं। अखबार-
नवीस भी उसने हमें मरव दिये, यही प्रार्थना है।

: १६ :

४ मई १९४७

“माइयो धीर रहनो

“आप प्रार्थना कुरानसे ही शुरू की जायगी, पर इससे पहले मैं
पूछना कि कोई ऐसा भी है जो इसने सारे मजमेको प्रार्थना न करने
बेना माह्ला हो। अगर प्रार्थना शुरू होनेपर कोई रोकेगा तो वह
बक जायगी, पर वह बहुत असम्भवा होगी। इसलिए आप कोई
रोकना चाहते तो शुरूसे ही रोक सकते हैं। आपने है कोई ऐसा?”

समाके बीचमेंसे एक आदमी बोला, “नहीं है।”

“क्यों?” गांधीजीने पूछा।

“मधिरने कुरानका पाठ नहीं हो सकता।”

“इतने बड़े मजमेको क्या आप रोकना चाहते हैं?”

“जी हाँ।”

गांधीजीने लोगोंको संबोधित करते हुए कहा—“आप लोग धुनें,
मैं इससे बात करूँगा। देखूँ तो सही, उसने सनकी क्या कहा है?”

फिर उस आदमीको संबोधित करते हुए गांधीजी बोले, “आपको
गुस्ता करनेकी जरूरत नहीं है। आप चाँहते मुझे समझाइए कि जब मैं
रोक हूँ मधिरने प्रार्थना करेगा तब तो आप क्यों न रुकें?”

“मधिर पब्लिकका है। पब्लिकके मधिरमें आप न करें।”

“हैं तो मधिर पब्लिकका, लेकिन मधिरके धुआरी या ट्रस्टी तो मुझे
रोक नहीं रहे हैं। फिर आप भगवानका नाम लेनेवाले इसने आधमियोंको
क्यों रोकना चाहते हैं? यह मेरी समझने नहीं आता।”

“क्योंकि मैं भी पब्लिकका आदमी हूँ।”

“सँद, तो आप प्रार्थना नहीं करने देंगे?”

“नहीं।”

“अच्छा, तो प्रार्थना बंद करता हू। लेकिन मैं आप लोगोंको यह बात बताना चाहता हू कि बर्मेने सम्मताका और अहिंसाका क्या स्थान है। आप लोग रोक ही मेरी प्रार्थना रोकते रहें तो उसमें सीढ़ीन मेरी नहीं है, आपकी है। तरीका तो यह होना चाहिए कि एक आदमी अगर उसने आदमीकी बात सुनना नहीं चाहता है तो वह बाहर जाता था। उसनी बड़ी समझने कैसे हो सकता है कि एक आदमी उसे रोक वे। वह धीर कही नहीं हो सकता, मेरे पास वाली अहिंसा बगलमें ही हो सकता है। मरिद सबका है, इसका मतलब यह नहीं होता कि एक आदमी बीसा जाई रोका अटकाता फिरे। ऐसा हो तब तो मरिदका सारा काम ही रक जाव। मैं अकेला होता और वह रोकता तो बात और भी, पर यहा इसने लोगोंमें यह नीबता रखे और मैं प्रार्थना कर तो आप खुत्सेमें आ जायगे। उसको गाली देंगे और पुलिससे उसे पकडवा, देंगे। इसमें हमारी कौन-सी खोना होनी। ऐसा होनेपर दुनिया हमें क्या कहेगी।

“इसलिए मैं प्रार्थना रोक रहा हू। पर ‘श्रीव भविस्ता’ तो मैं नहीं रोक सकते। वह तो मेरे मनमें है ही। इस आप उसे न कहेंगे, केवल दो निमित्त नीम बैठेंगे और उसने आप वही प्रार्थना करेंगे। ठीक है कि ‘श्रीव भविस्ता’ आपको कठान नहीं है, पर नीम रहते हुए राम-रहीम बीनो एक ही है, ऐसा आप मनमें समझें। सानी हिन्दू-बर्म और मुसलमान-बर्म बीनो महान् है। बीनो बर्मोंमें कोई भेद नहीं है। मेरी समझने यह बात ही नहीं जाती कि वो बर्म आपसमें एक दूसरेको दुश्मन क्यों मानें और किस बचहसे जाने। इसलिए मैं चाहता हू कि साक्षिमें आपका यही मन हो कि ‘तू ईश्वर है, तरे हजार नाम है।’ मैंने बताया था कि हमारे बर्मोंमें विष्णुसहस्रनामका बडा बजान है, बल्कि मैं तो जानता हू कि बुनियातमें जिसने आदमी है उसने ईश्वरके नाम है। ईश्वर, भगवान, खुदा, गॉड, होरमसबी कुछ भी कह जो उसीके नाम है। और इस सब नामोंसे भी वह कहावा है। इसने बडे ईश्वरको, बिसे कोई पहचान नहीं सकता, उसका नाम जेनेसे रोकनेकी बात जोई कैसे कर सकता है? ऐसा करना तो निरा अधिवेक है, असम्भवा है, हिंसा है।

“मीनके नाव आप आब नूकर बैठ सकें तो भीर भी भण्डा। इसगी देखें अगर उस भाईको समझ या जाएगी भीर नहू रोक्ता नही भाईयाही भीर आर्चना करेगे, नही तो मुझे वो बातें बतानी हूँ बसार्क्या।”

इसके बाद सारी बचवा गापीनीके साथ आब बर करके वो विनिट-एक मीन बैठी रहीं। आतावरम परमस सात भीर पवित्र बा।

वो विनिट समाप्त होनेपर गापीनीने कहा—

आब मुझको बाइसरामके पास जाना पडा बा, नहू आप जानते ही हूँ। डेढ घंटेक हम बैठे थीर हमारे बीचमें बहुत धन्डी-धन्डी भीर कामकी बातें हुई। सभी बातें मैं नहू नही मुता भन्या, पर एक बात बताऊया।

बाइसरामने मुझे कहा कि मुम नेरी धोरने सोनीको कहू वो बा मुम्हार मित्रता विवरात हो तो अपनी ही धोरने कहू वो कि ‘मैं विटिस हनुमन्तको यहावे ले जाने थीर इस मुस्कने विटिसका राज खत्म करने आया हू। एक दिनमें वो इसनी बड़ी हनुमन्त समेटी नही बा सकती। इसनी बड़ी पीप भूटकी बताते-बताते हटाई नही बा सकती। लेकिन नहू नरोटा रखो कि ६० बूज (घण्टा १२५८) के बाद हम गंगा बिसफुल रहनेवाले नही हूँ। मैं इस कामकी करनेके लिए यहा आया हू। भीर बिचना बन पडता है, जने कर रहा हू।

लेकिन मुम सोनोले पक्षकारोंमें कभी-कभी बातें जाती हैं, इसे देखकर मैं ईरान हो जाता हू। मेरा काम खत्म जाता है। एक तो मुम सोप आपसमें मलते हो भीर फिर उसमें मग्नेबोका बोप सूखते हो भीर उन्हें बचाना पड्यो हो। जाला कि मग्नेबी कस्तमवने आबवे पहले मूल बीर है, पर अब मुम्हारें मग्नेबोंमें मग्नेबोका बिचवा हिस्सा बा इस बातको मुम सोन नूब जानी। मग्नेबोंने ‘ऐसा किया, वैसा किया’ ऐसी बात रटते रहनेपर कुछ भी सही काम बनेका नही है। ऐसी बातें मत कहो। आपके काममें पिछती बातोपी पर्वा छोडो।

पर मुम्हारें पक्षकार ऐसा ही करते हैं भीर उनकी हल हरकतोंसे नो सारी बात बिचक जाती है। मैंने तो किसीसे कोई बात ऐसी नही कही थी, बिचने पक्षकारवाले कुछ जान लें। मेरे पासके रहनेवालोंमेंसे भी किसीने ऐसी बात नही कही है।

हिंदुस्तानके लोगोको बोधी-धी तो सम्मता रखनी चाहिए। अपने भक्तवारोने सुनिया नी वे ऐसी वे बेते हैं कि वे बातको बहुत ठोकरोड बेती हैं। यह किस आधारपर सिद्ध किया है कि सीमाप्राप्तमें खान-साहबका भ्रमन बर हो जायगा और फिर राष्ट्रवादी भक्तवार ऐसा सिद्धते हैं तो मुसलमान भक्तवार उसने भी बर-बढकर सुनिया बेते हैं।

इस तरह तो आपसी जहर और नी बढ जायगा। मैं यहा जहर बढानेके लिए नहीं आया हू। आप लोग हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी, ईसाई सब मिल-जुलकर रहने लगेगे तो उसमें हम ब्रिटेनवासोका नाम भ्रमन ही कहलाएगा कि जब छोडा तब सबको एक करके, मिलाकर छोडा।

बाइसरायने यह भी कहा—“मैं क्या देना चाहता हू कि हिंदुस्तानके लोग अगर आजादी चाहते हैं तो उन्हें कुछ सामोखीसे रहना चाहिए। ऐसा करना हम नहीं चाहते कि हम बने जाय और आप लोग आपसमें लठते रहे। इसलिए सब बात सुनानेकी मैं भरसक कोशिश करता हू, गतीया कुछ भी हो। तीस जून '४८ को हमें जाना ही है, इसमें कोई शक नहीं है, उस बातको ध्यानने रखकर मैं बलता हू।

“मेरा एसवार करोगे तो मैं कहना चाहता हू कि मैं अपने अंतःकरणको पूछ-पूछकर हरेक काम करता हू। यह ठीक है कि मैं जहाजी बेटेका कमाडर हू और हिंसा-अहिंसपर विश्वास करता हू, पर जैसे आप ईश्वरको मानते हैं वैसे मैं भी अपनी अहिंसपर ईश्वरको मानता हू और मैं बरी करता हू, जो मेरी अन्तरात्मा मुझे सही बताती है। कुदामे मुझे जैसी भक्त वे रखी हैं उनीके मुताबिक चलनेवाला मैं हू। इसके अलावा मैं दूसरी तरहने सिटिजनकी सेवा कर नी नहीं सकता।

“मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा कि तुम सब लोग मिल-जुलकर काम करो। मैं ऐनी कोई बात करना नहीं चाहता, जिससे अल्पसंख्यकोके साथ अन्याय हो जाय। बरना लोग कहेंगे कि हमने मुसलमान, पारसी, सिक्ख आदिको बढाकर बहुसंख्यक हिंदुओको सब कुछ दे दिया।

“हमारे आनेके बाद तुम जडना चाहोगे तो बीच-बिबाध करने कील आयगा ? अभी तो मैं खानोजीने समाधानका प्रयत्न कर रहा हू, पर जब मेरा बीरज अंतम हो जायगा तब मैं चुप न रहूंगा। अब तो रक्षा-संस्थ

नी आपका ही है। लेकिन उम्मे नी बाग बनती बीज न पड़ेगी तो प्रती यहाँ का कबाडर तो प्रयोग है। गोरी जल नी छोटी नहीं है और उम्मे निबाए प्रान्ती नी है। इन सबको लेकर मैं अपने धर्म का पावन प्रस्ताव, लेकिन मैंने ही आप लोग मेरी बात नाब मैं तो मेरा काम कुछ प्रान्त ही प्रान्त है।

तो बाइमरान महारका काम कठिन ही है, पर अग्रेज लोग कठिन बाइसे बाइनेबासे नहीं होते।

आप लोगों को वह कहनेकी बात नहीं थी; पर मुझे मया कि हम इनने जब निसे है तो बाब यही कहूँ और आप लोगोंकी भारभर अक-बारबाओं नी कहूँ।

अब ही मैंने आप लोगोंके कहा था कि जबकि हमने नाउंमैटन साहबका निमाव सोचा नहीं है तबकि उनमें बाइने हमें कुछ नी इतर-उतरकी बात कहनी नहीं चाहिए। हम ठीक सबसे फिर नी अगर यह कुछ न करेंगे तो हम अग्रेजोंके कहेंगे कि आपके बाइसरान एकके बाब एक प्रान्ते नी है आबादी सेनेने लिए, पर वे हमें बताते ही बसे बताते हैं।

यह सब हमें असम्य बाधानें कहनेनी जरूरत नहीं है। हरेक बात नीकी आपाये नहीं या कहती है। अगर हम असम्यता बराते हैं तो अपना ही पचा काट सेते हैं।

अगर हम आपनमें नी बराते ही रहने हैं तो उनका बागा कठिन ही बाता है। उनमें बाइने बिनेत तो है, पर उससे तो वे बाइसे हमसा-बरीको रोम मक्ते हैं। अब हम आपनमें कर्ते सब वे किता उए हमें रोके ? वे तो कहेंगे कि मुसलमानोंको बुरे बताते हैं और मुसलमान हिंदुओंको। उनमें मैं क्या करूँ ? उनकी तो बागा है। हम बराते ही रहने और ३० पूरा आबादी और उनमें कुछ होनी मनेया तो हम कहेंगे अब आपका अधिकार नहीं, आप बाइसा।

अगर वे यह बाते हैं तो फिर वे हिंदुओं नी और मुसलमानों नी दोनोंनी बाइ-बाइर बना करके रोके मक्ते हैं और उन्होंने यह करने निमाया नी। एक अग्रेजके बारे जानेपर हमार-हमार बाइनीकी नीने बाइ उएर बिदा मया है। पर जाने मय मे ऐसा नहीं कर सकने।

हमनिम्ह ह्मारा कर्तव्य है कि उनके घराने जानेका काम हम अपने बिन्दायने आमान करें। उनकी मृगीयन करावे गयी।

एक राजा गया है। गाना नही मिनना, कमज नही मिनता, मुझे और आपकी नीमि आना है, पर कौनो ऐसे लोग मुल्कभर में पड़े हैं जिन्हें कुछ भी गाना नही मिनना, न कमज मिनता है। आज मद्रासके बगीच आएं थे। उन्होंने बताया कि वहाँ बाड आ गई है और कमज आने गई है। गानेकी चिन्मत्त है। अगर हम आपसमें न मज्जे तो गरीबोंको गाना पढुवा सकते हैं। गाना-गीता देनेके लिए हिन्दू-मुसलमान नही देने आने—मुल्कके सभी लोगोंको यह देना होना है।

पर आज तो सबका एक ही काम हो गया है—बस, काटो और मारो, बच्ची नहयिवाला तरीकेंसे। जो हिन्दू मिले उसे मुसलमान मारे, जो मुसलमान मिले उसे हिन्दू।

अगर हम ऐसे जगली बन जाए और कहें कि अंग्रेजोंके आनेके बाद हम अच्छे बन जायेंगे तो यह भारा गलत गवाह है।

एक बाल और बनाया है। कमरल साहूनाज आज आए थे। बिहारमें मेरे बने जानेपर जी वे वहाँपर काम करते हैं। वेतन नही लेते। फिर भी बाकायदा पन्द्रह दिनकी छुट्टी लेकर घर जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि बिहारमें जो मुसलमान लौटकर नही आते वे और जिन्हें हिन्दू पालने घराने में वे जी अब नीट आए हैं, क्योंकि समझनेपर हिन्दू अपना बर्तन मजबूत गए और उन्होंने मुसलमानोंके स्वागतके लिए सवासार दो दिनका परिश्रम करके उनका रास्ता माफ किया और जो भोजिया बाट गई थी उनके बनानेमें जी योग दिया। दूसरे बेहासोंमें जी ऐसा ही अच्छा काम हुआ है।

अगर ऐसा ही बसता रहेगा तो बिहारके आगे हुए सभी मुसलमान नीट आयेंगे। उन्हें पीनेकी जगह तो सरकार देती है, पर हिन्दुओंको चाहिए कि उन्हें घरानेवासी, रोडा घटकावेवालोंको वे समझावे। सब यह काम बन जायगा।

भार यह कि आबकल जो 'काटो-काटो' की पृकार नहीं है उसके

बीच भी धक्के खावनी पड़े है। हरेक मुसलमान, हरेक सिख, हरेक हिंदू खराब नहीं है।

बिना तरह बिहारमें धमन हुआ है इनी तरह डेराइस्माइलसाथे भीर नीमाग्रासमें नी धाति होनी ही है।

धगर बिना साहबने जो सिखा है, सही सिखा है, तो उन्हें कहाकी हुस्नइबाबीको रोकना ही है। बीबके रोकनेसे यह हुस्नइबाबी रूने-बाबी नहीं है। बीबीको समझनेपर ही यह एक सफ़ती है। गरी झट्टी तो उसका मतलब है या तो बीब बिना साहबकी मानते नहीं, या बिना साहब उसे रोकना नहीं चाहते।

लेकिन हम बिना साहबके बारेमें ऊँची बातें क्यों सोचें ? क्या काम होता नहीं बीबसा तो किसमें एक पैदा हो ही जाता है। धगर में किसी बातपर बसबस एक भीर करते उठता ही काम कर बैठ तो यह धक्की बात हो ही जायगी। इस तरह कहा नी एक हो जाता है। लेकिन हमें आखिरतक देखना होता कि बिना साहब क्या करते हैं।

१ १७ १

६ मई १९४७

प्रार्थनाके समयतक बाबीकी बिना साहबके कहासे जीठकर नहीं आ सके थे। उनके आदेशानुसार ठीक साठे छ बने प्रार्थना कुरु की गई और बग़राने पूछा गया कि आज कुरुकी आज्ञा बीबी आज या नहीं ? इसपर सिर्फ एकआवाज आई कि 'नहीं।' सब हो विनिवृत्तक नीम प्रार्थना हुई। तत्पश्चात् बाबीकीक कसका सिखा हुआ यह सबसे नुनाना गया, जो बपति कारण कल नहीं गया था सका था।

नै पापतना भीतानके हाथेनि—अपनेको—बचावके लिए परमात्माकी शरण चेता हू।

हे प्रभो ! तुम्हारे नामकी ही स्मरण करके मैं सारे कामोंको धारन करता हू। तुम क्याके सागर हो। तुम क्यामय हो, तुम अखिल विश्वके

सच्चा हो, तुम ही भाविक हो। मैं तुम्हारी ही मदद मांगता हूँ। आखिरी न्याय देनेवाले तुम्ही हो। तुम मुझे सीधा रास्ता दिखाओ, उन्हींका चलनेका रास्ता दिखाओ जो तुम्हारी कृपादृष्टि पानेके भाविक हो गए हैं, जो तुम्हारी प्रसन्नताके योग्य ठहरे, जो गमल रास्तेसे चले हैं, उनका रास्ता मुझे मत दिखाओ।

ईश्वर एक है, वह सनातन है, वह निरात्मक है, वह अज है, अद्वितीय है, वह सारी सृष्टिको पैदा करता है, उसे किसीने पैदा नहीं किया है।

यह कुरानकारीफकी आयतोंका सरभूना है जो कि प्रार्थनामें नहीं पाती है। उसे पढ़नेकी शिक्षायत्त कोई कैसे कर सकता है, समझने नहीं आता है। मैं तो कहूँगा कि इस प्रार्थनाको हम हृदयमें प्रकित करें तो वह बेझुहर ही हो सकता है।

इससे अधिक आज नहीं कहूँगा।

१ १८ १

७ मई १९४७

प्रार्थना-समामें आते ही बाबीजीने सबसे पहले भीमती उमादेवीके बारेमें पूछा कि क्या वे आई हैं ? वे बहा बी। बापूजीके कहनेसे उन्हें मज-पर उनके पास बैठाया गया। भीमती बिबावरी आई बेसपाडेको भी बाबीजीने अपने पास बुलावा और कहा कि इन दोनों बहनोंने कुरान-कारीफकी आमतें पढ़नेका विरोध किया है। बीच आदमियोंकी सहीवाले एक पत्रका कि जो-एक आदमियोंने विरोध करनेपर सारी प्रार्थना रोक दी नहीं जानी बाहिए सरलेख करते हुए बाबीजीने कहा—ऐसा कहनेवाले बीच ही आदमी थोड़े हैं। मैं तो समझता हूँ कि आप सब लोग (दो तीन हजारके करीब) जो विरोध नहीं करते और आम्नेबीके साथ रोब यहा बैठते हैं उन सभीके मनकी बात यही है, जो इनबीस आदमियोंके बसबसत वाली पिट्ठीमें लिखी हुई है।

लेकिन मैं आपसे पूछना कि आपकी धर्म रचना चाहिए । धर्मका प्राप्तन धर्मसे ही किया जा सकता है । हिन्दू-धर्ममें सहिष्णुताको बड़े महत्त्वका स्थान दिया है । सरकारभार्य महाराजने तो धीरे-धीरे रखनेकी बात ज्यादाक सचार्ड है कि 'एक दिनकेकी नोकमर बिहु-बिहु करके समूचे महाराजका सारे-का-सारा सब निकालकर उसे दूसरे गहनें भर देनेमें जो धर्म चाहिए उसने बहुतकर धर्म मोक्ष पानेके लिए हमें प्रारण करना चाहिए ।' धन आप कल्पना कीविए कि तिनकेसे नहीं सही, छोटा भर-भरकर ही अगर एक धावनी प्रभु आती करने बैठता है, और दूसरी ओर उसना बड़ा बड़ा उस पानीको भरनेके लिए उसे मिश्र भी जाता है और वह धावनी सैकड़ों-हजारों वर्षतक बिना भी रुकता है तो प्रार्थन उस प्रकार बचराविको वह नोक सकता है, लेकिन फिर भी जो नया पानी समुद्रमें आपना उसका क्या होगा ? फिर प्रभु सोचनेमें उनके पास निरुत्तना धर्म चाहिए ? धर्मों सरकारभार्यकीने मुमुक्षुके लिए प्रसीध धीरे-धीरे बनाए रखनेकी बात कही है । उनका कहना यह है कि हमारा एक पैर तो हिन्दू-हिन्दुओं को देने की प्रार्थनामें लगा हो, दूसरेमें हम धीमे-धीमे उन्नत प्रार्थना ही करते हैं और मुमुक्षुके कहे कि 'धर्म, प्रार्थना, ब्रह्म क्या है, क्या बता दो कीविए' तो वह प्रार्थना नहीं जाना जा सकता । वह हम सब को माय है, विज्ञान बनकर आए है, बाली हम लोग मुमुक्षु है । पर क्या इसना धर्म प्रार्थन करनेकी क्षमता हमारे पास है ? अगर नहीं है तो भी प्रार्थनामरके लिए तो हम धर्म प्रार्थन करें । इसमें हमारी क्या सम्झाई होगी कि एक ओर तो बालक भीकता रहे और दूसरी ओर हम प्रार्थना करें । हमारेको तो अपनी प्रार्थना चाहिए । मुझकी बातकी ही बात लेने-बैठा वह मोक्ष नहीं है । प्रार्थनाका मतलब यह नहीं है कि बिहारे को उन्मार जान उसे ही प्रार्थना कहा जाय । और उन्मारका आग्रह भी हम सब को रखे, जब हमपर किसी प्रकारका खराब हो । क्या हम इसने धावनी एक बालकको बचाकर, उसे उन्मार-बनकर धर्मका प्राप्तन करेंगे ? धर्मका प्राप्तन तो बालककी बातको सब लेनेमें ही होगा । मुझे इस बातकी खूबी है कि आपने इसकी बड़ी बड़ी संख्यामें होठे हुए भी नाति रखकर धर्मका प्राप्तन किया है और प्रार्थन बालककी बातको महत्व दिया है ।

परंतु आज तो बासकी बात नहीं, एक बहनकी बात है । मैं देखता हूँ कि वह मेरी स्वीकृत तककीसे भी कुछ छोटी है । वह एक नयी महात्म्यकी धर्मपत्नी है । उनमें जो भिद्दी^१ नेनी है, उसीकी धर्मा मैं आज पहले कहना ।

इस भिद्दीमें जो सिखा है उसमें हिंदू-धर्मका ज्ञान नहीं है, कोरा ज्ञान मरा है । इस तरह धर्मकी बचानेकी जो चेष्टा की है वह वास्तवमें धर्मके पतनकी ही चेष्टा है । मैं सभी हिंदू और सभी सिख भाइयोंसे कहना चाहता हूँ कि वे ऐसे गलत रास्तेको न अपनावे । मैं एक-एक करके इन बहनोंके प्रश्नोंका उत्तर दूंगा ।

(१) मंदिरमें कुरान पढ़नेसे वह अपवित्र हो जाता है, यह कहना ठीक नहीं है । मंदिरमें ईश्वरकी स्तुति करना, धर्ममें कैसे हो सकता है ? कम बड़ापर हिंदीमें 'धोब धबिल्वा' का धर्म सुनाया तो किसीने उसका विरोध तो नहीं किया । क्या गीताका अनुवाद कोई घरकीमें सुनाने से यह धर्म ही थायवा ? ऐसा कोई कहता है तो वह झगलाती है । सीमा-प्रायमें एक नियम बनाया कि कुरानका सरजुमा नहीं किया जा सकता, किंतु यहा धर्म का० जामसाहब प्रधान मंत्री है, जो समझदार है । उन्होंने

^१ 'जीसुस महात्माजी, मैं आपकी यह सूचित कर देना चाहती हूँ कि जलदाताजी प्रेरणासे मैं आपके साथ धार्मिकाने कुरान पढ़नेका नियम कारखोसे विरोध करनी : (१) मंदिरमें कुरान पढ़नेसे उसकी पवित्रता और मर्यादा नष्ट होती है । (२) कुरानकी धर्मग्रन्थ मानने-वालोंने कहात, यसाब धार्मिके राजसी कथाधार किए हैं, उसे देखते हुए कुरान पढ़ना-महाना हिंदुओंके लिए ये महान् पाप समझती हूँ । (३) किसी मस्जिदमें गीता का रामायण पढ़नेका साहस जायजक आपने किया है, ऐसा मानूँ नहीं देता ।

हिंदूधर्मसिधिका

उदाहिनी

धर्मपत्नी कथासक दैनिक राजस्थान समाचार
और मंत्री अखिल मा० देवी राज्य हिंदू महासभा ।

कहा कि कुरानका तरजुमा करनेसे तो उसका फैसाब होया। उसे क्यास सोय पढ़ेये धीर नमस्में। यहाँ डनी मदिरने खानसाहब नमाज पढेते हैं तो क्या यह मदिर अपवित्र हो गया ? नमाजमें तो कुरानकी पाठसे बोली जाती है तो क्या उनका बोसना पाप कहाएगा ?

(२) यदि आप कहें कि मुसलमानोंने पाप किया है, तो हिन्दुओंने कौन-सा कस पाप किया है ? बिहारमें जो हिन्दुओंने किया वह आप सोचोतो जानना चाहिए । कहा उन्होंने श्रीरामोंको मार डाला, बच्चोंको मार डाला, उनके मकान बसा दिए धीर उन्हें अपने बरोंसे भगा दिया। इसपरने अगर कोई मुसलमान छाजे धीर कहे कि अवबधूषिता पढ़ने-बानोंने पाप किया है तो वह किसी शकस बात होगी। छोड़े धर्मसक मैं यह नूननेको रैवार हो जाऊंगा कि मुसलमानोंने भस्माचार किए हैं, पाप दिया है। बेरिन मेरी समझमें यह नहीं जाता कि कुरानको पढ़ने-पाना पापासा है, इसलिए वह बीब भी पापमय है। इस तरहसे तो बीगा, उपनिषद्, वेद आदि सब-कै-सब धर्मग्रन्थ पापके ग्रन्थ साबित हो जाते हैं। बीसामेंसे भी अमय-असय धर्म निकलने हैं। मैं जो धर्म करता हूँ अपने कई-नौग विनमून ही बुरमय धर्म लगाते हैं। मुझे नीतामें आहिंसाकी ही बात बीडनी है बीग बुरने कहने हैं कि बीसामें आसतावीको मारनेका उपदेश दिया है। मैं क्या उनमें मुह बंद करने जाऊ ? मैं उनकी बात मुन मेना हूँ धीर मुझे जो नहीं लगना है, करता हूँ।

(३) मैंने मन्त्रिदमें बीता नहीं पसी है, कहा मैं ऐसा नहीं करता, यह कहनेका मतलब तो यही हुआ कि मैं बुजबिल हूँ ? मान लिया कि मैं बुजबिल हूँ धीर मन्त्रिदमें मुसलमानोंके मानने अपनी प्रार्थना करनेमें उम्मा हूँ। मैगिन अगर मैं एक जगह बुजबिल हूँ तो हर जगह क्या बुजबिल बनूँ ? क्या आप चाहते हैं कि मैं महा भी बुजबिल बनूँ ?

जब आपने यह मानून बीगा चाहिए कि मैं कई जगह मुसलमानोंके पापें उम्मा हूँ। कहा बड़े मारामेंसे धीर बिना नकोषके नियमिन प्रार्थना उम्मा हूँ। धीर कहा, नीमात्तावीमें, जब मैं घूम रहा था तो मान मन्त्रिद तो गरी; पर किनमून ही मन्त्रिदके पाल मेंने अपनेक मार उम्मा, मैं मैं । यह बात तो मन्त्रिदके म्हातेमें ही—मन्त्रिदने म्हाते

मकानमें भी—मैंने प्रार्थना की है। वहा तो मेरे साथ पूरा साथ-साथ रहता था। डोसकी भी बबली भी धीर ताबियोंके साथ रामचुन भी होती थी। मस्बिकके अहातेमे जब प्रार्थना हुई तब मेरे पास डोसक तो नहीं थी, परंतु वहा भी ताबियोंके साथ रामचुन हुई थी। मैं वहाके मुखसमान भाइयोंमे कहता था कि मैंने आप रहीमका नाम बोले है जैसे ही मैं वहा रामनाम बुगा। रहीमका नाम जो कहते हैं उन्हें रामनाम सेनेवालो-नो रोकना नही चाहिए धीर उन्होंने मुझे रामनाम सेनेसे रोका नहीं था।

आप अत्याचारकी बात करते हैं। नोआखासीमे काकी अत्याचार हुएहैं, पर मैं कहूंगा कि नोआखासीमें मुखसमानोंने इतने अत्याचार नहीं किए हैं कितने बिहारमे हिंदुओंके हाथों हुए हैं। मैं इस बातका गवाह हू। मैं नोआखासी भी गया हू धीर बिहारमे भी गया हू।

मुखसमानोंके पास जाकर मैं प्रार्थना नहीं कर सकता, ऐसा जो कई बह भाषीको नहीं जानता। यह बेबारी उमावेसी क्या जानती है कि गांधी किस मसालेका बना है। मैं अपने लिए नहीं, उसकी बातपर लक्षित होता हू। उस भनी महाशयके लिए लक्षित होता हू कि वह हिंदू-जर्मनको मनी होकर ऐसे बोर अज्ञानको अपनाए हुए हैं। जब समुदरमें आग लगेगी तो उने भीन बुझावगा ?

पर वही बात तो यह है कि इनका विरोध उस प्रार्थनासे नहीं है, परवी भापासे है। कल जब आपकी कुरानकी आयतका अनुबाव सुनाया गया था तब आपमेंसे किसीको यह चुना नहीं था। (फिर अनुबाव सुनाकर) लीजिए, मैं सारी प्रार्थना (प्रोब अमिल्ला) पढ गया धीर वह इन बहलकों में चुनी नहीं। इसमें उन्हें कोई पाप नहीं दीखता। अगर दीखता तो वे मुझे क्यों पढने देती, रोक न लेती कि “चुप हो जाओ, हम यह सुनना नहीं चाहती।”

वह मुझे रोकेगी भी कैसे। ईश्वरकी मैं धीर प्रार्थना कर ही क्या सकता हूँ ? क्या वह यह चाहती है कि मैं ईश्वरको ‘अब’ कहकर न पुकारूँ ? उसको अमर न मानूँ ? उसको निराश्रय भी न कहूँ ? या यह न कहूँ कि तू ही मासिक है ? फिर मैं प्रार्थनामें कहूंगा ही क्या ? तब वही बात जो हम प्रार्थनासे कहना चाहते हैं वह अवर अरबीमें कही

बाती है, तो वह पाप हो जाता है, ऐसा कहना किसने भ्रमानकी बात है। हमें इस और धबरेमेंसे बचना ही होगा।

तो हम ईश्वरसे प्रार्थना करें कि हे भगवान्, तू हमें धबरेसे बचा ले। हमारे हिन्दु-धर्मने तो प्रार्थनाके शब्द भी ऐसे ही रखे हैं कि 'तु मुझे धबरेसे उबासेमें ले चले' (तमसो मा ज्योतिर्गमय)। ऐसे अनुपम धर्मको हम न समझें और उसे भस्म समझकर फेंक दें, यह मुझे बहुत बुरा लगता है। और यह बात किमें तब और भी ज्यादा दुमती है जब एक धर्मनेवक्की पत्नी इस तरहसे धर्मको बिबाहनेपर तुक जाती है। हमारे महात्मा पतिका धर्म बहुत ऊंचा जाना गया है। पत्नीके बिबाहोको गलत रखते रहने न देना उसका कर्तव्य है। इन महासमने तो अपनी पत्नीको भारी बसहिष्णुताकी छातीन दी है। फिर धर्म कौने टिक सकता है ?

अगर हम सोच ऐसे ही बने रहें तो हिन्दु-धर्म तो टिकनेवाला है ही नहीं, हिन्दुस्तान भी नहीं टिक सकेगा। अथवा इसे छोड़कर चले जायें तो भी हम हिन्दुस्तानको नहीं बचा सकेंगे। आजाद हिन्दुस्तानमें तो हमें जाई-जाई बनकर रहना है। आजादके दुश्मन कम होस्त बनें। तब क्या आप अपने मुसलमान पड़ोसीको यह कहेंगे कि 'दुरान मत पडो ?' क्या ऐसा कहनेमें ही हिन्दु-धर्मका बरबाद बड जायगा ?

इसलिए मैं आपसे तीन प्रार्थना करनेके लिए कहता हू। यदि उत्तरे सारे आदमी ज्ञात बैठकर प्रार्थना करते हैं, एक-ही व्यक्तिपर गुस्सा नहीं आते तो हमारी सुखि ही जाती है, हम पवित्र बन जाते हैं।

आप लोगोंको मान्य है कि कल में जिज्ञा साहबसे मिलने गया था। उनके साथ मेरी जो बातें हुई वह सब-सी-सब तो बताई नहीं जा सकती। हम लोगोंसे आपसमें निर्णय कर लिया है कि हमारी बातें निर्भर हमारे बीच ही रहेंगी, और कही नहीं कही जायगी। फिर भी बादमाह जालपो, पब्लिश बवाहुरजालको और जो हमारे नेता हैं, उनको तो मैंने उन जालोका सार बता दिया है। यहां भी मैं उसका बोझ-ना उत्तेज कल्या। हम लोगोंने एक ही बस्तावेजपर दस्तखत किए हैं। जमने हो जाते हैं। पहली यह कि राजनैतिक उद्देश्यकी पूर्तिके

लिए हम किसीको धीर-जबरदस्तीसे मजबूर नहीं करेंगे। हरेक पक्ष अपनी बात एक-दूसरेको समझानेकी कोशिश करेगा और उठाने-बमकानेका सहारा कभी भी नहीं लिया जायगा।

दूसरी बात लोगोंको मार-काट और अत्याचारोंसे रोकनेकी है। कम धनदारने बिना साहबके महासे जो विद्रोहि निकली है उससे थाप समझ गए होने कि हमारे बीचमें राजनैतिक मतभेद पूरा है। बिना साहब पाकिस्तान चाहते हैं। कांग्रेसवालोंने भी तय कर लिया है कि पाकिस्तानकी मांग पूरी की जाय, लेकिन उसमें पञ्जाबका हिन्दू ब सिखोंका इलाका और बंगालने हिन्दू-इलाका पाकिस्तानने नहीं दिया जा सकता। केवल मुसलमानोंका हिस्सा ही हिन्दुस्तानसे अलग हो सकता है। लेकिन मैं तो पाकिस्तान किसी भी तरह मजबूर नहीं कर सकता। देखते-दुकहे होनेकी बात बर्बाद ही नहीं होती। ऐसी तो बहुत-सी बातें होती रहती हैं जिन्हें मैं बर्बाद नहीं कर सकता, फिर भी वे सफ़्तो नहीं, होती ही हैं। पर यहाँ बर्बाद न हो सकनेका मतलब यह है कि मैं उसमें खरीक नहीं होना चाहता, यानी मैं इस बातमें उनके बनने आनेवाला नहीं हूँ। अगर वे पाकिस्तान बनाना चाहें तो वे अपने और माह्योसे चुनक जे। मैं किसी एक पक्षका प्रसिमिधि बनकर बात नहीं कर सकता। मैं सबका प्रसिमिधि हूँ। सारे हिन्दुस्तानमें बितने हिन्दू हैं, बितने मुसलमान हैं, बितने सिख और पारसी हैं, जैन और ईसाई हैं, उन सबका ट्रस्टी बननेका मेरा प्रयत्न है। अगर ट्रस्टी नहीं बन सका हूँ या बनने लायक नहीं हूँ तो भी मैं चाहता हूँ कि मैं ट्रस्टी बनूँ। इसलिये मैं पाकिस्तान बनानेमें हाथ नहीं बटा सकता। बिना साहब जो करला चाहते हैं उसको पूरी सीरसे उत्तरलाक बीच समझते हुए यह कैसे हो सकता है कि मैं उन्हें पाकिस्तानकी स्वीकृतिके बस्तपत्त दे दूँ। यह बात मैंने धीरजके साथ उनको सुना दी। हम आपसमें सहे नहीं। माधुमि ही हमने आपसमें बाते की।

मैंने बिना साहबसे अदबके साथ कह दिया कि हिंसाने बलपर वे पाकिस्तान नहीं वे सकते। वे मुझको पाकिस्तान देनेके लिए मजबूर नहीं कर सकते। मजबूर तो मुझे सिवाय ईश्वरके कोई कहीं भी नहीं कर

मुन्सा। अगर मुन्सा-मुन्सा के मेरा बाहू नो जहिलान ही ज्यो, मारा हिन्दुस्तान जी से बचने हूँ।

प्राणिजी दरगाम्में मैं उनका माझीदार बना हूँ और इनको मार-घानद करनेके लिए मैंने जिन्हा माहकने कहा है कि 'मुन्से बिगना जान घाप मेरा बाहू' मे बचने हूँ। उन्का पटेगी मो इन जानके लिए हमार हल्ले नी मैं आपके पास जाता आऊंगा।

मैं आपको यह भी बता दू कि जिन्हाके पास जानेने मनीने मुने गेला था। सबने मुन्से कहा कि जिन्हाके पास जाकर उनमें खानेने क्या ? मैं कहा मुन्से के लिए उसने पाल गया था ? मैं तो उनके दिल्ली की जान बालने गया था। मार मैं कहासे कुछ खाया नहीं हूँ तो मैंने कहा जाकर कुछ खयायाजी नहीं है। मेरा तो उनमें मित्रताका बाबा है। आशिर वे भी तो हिन्दुस्तानके ही है। मुने घरी जिन्ही हर हालतमें उनके साथ बसर करनी है। मैं भी उनके पास जानेने इन्कार कर दू ?

हमें भिन्नकर ही रखा होगा। भिन्नकर रखनेके लिए जी जिन्हीके ऊपर आपकी वन-अंगेज नहीं करना चाहिए। मैं तो कहूंगा कि वे तो पानिपताल गहने हैं तो वे हमें नमस्कारें। औरोफो जी वे समझमें कि पानिपतालमें मक्का फायदा है तो बकर ही उनकी बात जान समझा हूँ। लेकिन सबबुरकरके वे मुन्से सेना बाहू तो मैं 'हा' नहीं कह सकता।

आप पूछेंगे कि हिन्दुस्तानका बटवारा क्यों नहीं होना चाहिए ? उनमें हालि क्या है ? तो मैं बता सकता हूँ। मेरा हिमाय खासी नहीं है। उन वारेमें बहुत कुछ बाहू मेरे हिमायमें हैं। पर वे बाहू आप पड़-भूल हैं। आप मैं बहुत काफी समय आप सोचोको दे मुका।

अब मैं कलकत्ता जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि क्या जाकर मैं क्या कर पाऊंगा, निगनी बेर क्या खुगा और कब सीटूंगा। क्या मैंने कह रखा है कि अब नी जवाहरलालजी, कपसानीजी या बाइसराय जी, मुने बुलवा मेवेंगे, मैं या बाऊना और मुने बाबा है कि आपके बर्तन मुने फिर मिलेंगे।

सबसे बच्छा हो कि आप समझें कि मुने प्रार्थनासे रोकनेमें कोई फायदा नहीं हो सकता। मुने तो सामान्य रखनेका फायदा मिल जाता

है। आप जो लोग अपने मुँहसेको बजाकर सात रहे हैं उनको भी कम फायदा नहीं मिला है, पर रोडा भटकानेवाले बाटेमे ही है। आप लोगोंको चाहिए कि आप उन्हें समझावें। आपको याद होगा कि उस बार जब प्रार्थनामें गड़बड़ हुई थी हिंदू महासभाके मंत्रीने उन लोगोंको समझाकर आतफिया बा, उसी तरह अब भी इन्हें समझावे। बजाकर नहीं, मारपीट-कर नहीं, पर खालीखीके साथ समझावें कि गांधी जो प्रार्थना करेगा उसमें बर्मे ही है, अशर्म नहीं। अगर न समझें तो मुझे भीरव है। मैं मीन ही प्रार्थना कर चुका। इस मधिरमें भी अपने अकेलेमे वह प्रार्थना करता ही। परसोके दिन जब बारिश थी तब यह प्रार्थना मलीमाति हुई। वही यह मधिर या भीर वे ही हिंदुमाई वे, पर आज फिर विरोध-हो गया। यह है हमारी हालत, जो बिल्कुल ही बर्द-गुबरी है।

इसलिए मेरी विनती है कि आप लोग अहिंसक दृष्टिसे चेष्टा करके इन लोगोंको इतना समझा दें कि वे मुझसे कहे कि खुले दिलसे हमारे साथ आप यहापर प्रार्थना कर सकते हैं। चाहे अरबीमे करें, फारसीमे करें या संस्कृतमे करें।

अब आप जो भिन्न भाति रखकर मीन प्रार्थना करें। भावें भी बच हो तो अच्छा।

॥ १६ ॥

२५ मई १९४७

भाइयो भीर बहनो,

आप जानते हैं कि प्रार्थनामे साति रखनी चाहिए। आप लोगोंने यहापर सातिका जो स्थापन किया है वह आपके बरिष्से लोग सब जगह अपना रहे हैं। आपकी यह जानकर खुशी होगी कि इन बार बवासमें बहुत बड़ी-बड़ी प्रार्थना-सभाएं भी सातिसे हुई। जैसे मैं

^१ न मईसे २४ मईतक गांधीजी अंजाम और बिहार-प्रवासमें रहे।

गया और धान हो गया। वह धन्डी बात थी कि बहा पुलिसने दीवने रखन नहीं दिया था। बहा पादी-प्रतिष्ठानमें ही प्रार्थना हुआ करती थी और बहुत आदमी होनेपर भी हमेसा भाति गहरी थी।

यहा प्रार्थनामें गज़ाबटहासनेका मिनसिला बसा है। अब बहनोने थिड़ी निबना दुर किया है। आज एक बहनका पत्र मराठीमें आया है। उसमें वह भिन्नी है कि आप नदिरमें कृगनका पाठ करे वह मुझे मान्य नहीं है, बानी वह कहना चाहती है कि आप लोगोको सबको वह मान्य नहीं है, क्योंकि कुरान बोसनेवालोंने हमारो म्बिबो और वे मुनाहोपर अस्थाचार किया है।

लेकिन अब मैं इन गज़ाबटके कारण प्रार्थना छोड़ देनेवासा नहीं हू। अहिंसा कोई चीज नहीं है जो किन्ही कामरो पुरा होने ही न वे। अहिंसाके नामपर हिंसाका खेस होता रहे और मैं उने देखता रहू, वह मुझने नहीं हो सकेगा। इसलिए अब अगर वह बहन कोलाहल मचावगी तो मैं मेरी प्रार्थना बनेगी ही। मैं उस बहन और उसके पति महाभयमें, यदि वे बहा हों, जो कहता हू कि ऐसी अभिनय हमें भोना नहीं देती। एकके कारण हमारोंको हय तकलीफ हैं। उनको प्रार्थना मान्य नहीं है तो उन्हें यहा आना नहीं चाहिए। फिर भी अगर वह बहन और मचावगी तो मैं भी कोई ह्वाय न लगावता। वह निडर रहे। पुलिस भी अगर बहा हो तो वह भी उने न पकड़े। अगर उनकी या उसके बो-दीन सामियोंकी आवाजे आती रहेगी तो उनको मैं सहन कर चुगा और प्रार्थना करूंगा। आप लोगोंने भी बहुत सहन किया। मुझे उम्मीद है कि आप लोगोमें इस बहनकी-नी मान्यतावाले न होंगे। अगर आप सब ऐसी मान्यतावासे हो तो फिर मैं कहूंगा कि प्रार्थना मेरे साथके वे सटके नहीं करेंगे, मैं खुद कहूंगा और आप सब मिलकर मुझ अकेलेको मार डालें। मैं हँसते-हँसते राम-राम करते मरूंगा। जब आप उने सारे हो तब मैं अकेला आपकी मार तो नहीं मकता और न पुलिस ही आपको ऐसा करनेमें रोक सकती है। लेकिन मुझे आना है कि इस बहनको छोड़कर और कोई नहीं है जो कुरानके खिलाफ हो। मैं आपने कहूंगा कि आप उस बहनकी चीख-पुकार-पर ध्यान न दें। कोई उने झूठ तक नहीं। प्रार्थना भातिपूर्वक होने दें।

(इसके बाद प्रार्थना हुई। सारी प्रार्थना होनेके बाद गांधीजीने

कहा) मैं उस बहनको मुबारकबाद देता हूँ कि उसने इसकी बातपर सख्त कर दिया कि मैंने उसका पत्र आप लोगोंको भुना दिया। क्या भी यही सिलसिला चलेगा। विरोध करनेवालोंकी बात सुना ही जायगी, पर प्रार्थना होगी ही। लेकिन मैं प्रार्थना करता हूँ कि कल ऐसा कोई न होगा जो प्रार्थनामें बाधा डालना चाहता हो।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि विहारके हिंदुओंने कम गुनाह नहीं किया, यह आप समझ लें। वहापर गोमांसाहारीका बरबाद ही नहीं, उससे ज्यादा किया गया। और फिर यह सिलसिला ऐसा चला कि डेराइस्मा-इसका तक पहुंच गया। विहारके हिंदुओंने भी अत्याचार किए उसपरसे मुसलमान अगर कहने लगे कि हम मुसलीमानोंकी रामायण नहीं पढ़ने देंगे, बीता, उपनिषद् या वेद भी नहीं पढ़ने देंगे, अगर आप उन्हें बोलना चाहें तो अरबीहीमें बोलें तो क्या यह ठीक बात होगी? ऐसा कहनेवाले मुसलमानोंने मैं पूछूंगा कि बीता और रामायणने आपका क्या बिगाड़ा है और वेद जो प्राचीन-से-प्राचीन ग्रंथ है, उसने क्या गुनाह किया है? रामचंद्रजीने उसको क्या लूटलान पहुंचाया है? यही बात कृपण और मुहम्मद साहबके लिए भी है कि उन्होंने हमारा क्या बिगाड़ा है? इसलिए आप समझें कि चूंकि मैं रामायण तथा बीता पढ़ना चाहता हूँ इसी वास्ते कृपण भी पढ़ना जरूरी समझता हूँ।

अब आप यह भुनका चाहेंगे कि मैंने कलकत्ता और पटनामें क्या किया? कलकत्तामें क्या हुआ यह मैं अभी पूरा नहीं बता सकता। वहा मैं सुदृष्टदर्शी साहबसे मिलता और उनसे बातें की। अब बेटनाहोना कि उन बावोंका नतीजा क्या आता है। जो कुछ हो, लोगोंने इसका महसूस किया कि मेरे बहा माननेने उन्हें कुछ उलझी मिथी है। बहा धरत बाबू भी कोमिस कर रहे हैं। पर अभीतक बहा मार-काट बंद नहीं हुई है।

विहारमें भी मुबार अधिक नहीं है, सरपार्वी लोग अपने बरोपर लौट रहे हैं, पर अभी न हिंदू, न मुसलमान एक दूसरेके लिए बेनीक हुए हैं। ये सबक यह नहीं कह सकते हैं कि सब हमें डर नहीं है या सब हम कुछ ज्यादानी करते ही नहीं। फिर भी बहाकी किता मुबार ही रही है, हममें कोई शक नहीं।

अब सवाल यह है कि मैं यहाँ क्यों आया ? सच बात यह है कि मैं नहीं जानता कि क्यों आया ? लेकिन एक बात साफ है । मैंने जब बरसो-सक कायेसकी सेवा की है तब वे सोच मुझे एक सेवक के नामे याद कर लेते हैं । वे मेरी बात सुनना चाहते हैं, फिर चाहे वे उसे मानें या न मानें ।

लेकिन इसना मैं आपको कह देना चाहता हूँ कि सदन की तरफ देखनेका जो रवैया चल पड़ा है वह ठीक नहीं है । हमारी आबादी सदन से घालेबासी नहीं है । हिन्दुस्तान की आबादीका कोहेनूर भीरोके हाथोंसे मिलनेवाला नहीं है । अपने ही हाथोंसे वह भिया बा सकता है ।

मैं उस कोहेनूरकी बात नहीं करता हूँ जो सदन टावरमें रखा हुआ है, मैं अपने देशके स्वतन्त्रतास्पी कोहेनूरकी बात करता हूँ । वह कोहेनूर हमारे पास था रहा है । अब जी चाहे तो उसे हम फेंक दें, या जी चाहे तो उसे अपनाकर अपने पास रख लें । जैसा भी कुछ करना हो वह हमारे अपने ही हाथकी बात है, दूसरेके हाथकी नहीं ।

फिर हम माउटबेटन साहबकी ओर क्यों देखें ? क्या इस साकमें रहे कि वे इतनेसे हमारे लिए क्या लायने ? लेकिन हमारे प्रसन्नता तो उन्हीं बातोंसे भरे रहते हैं कि माउटबेटन साहब सदनसे यह जानेवाले हैं, वह जानेवाले हैं । हम अपने ही बसको क्यों न देखें ।

दूसरे प्रस्पसब्यकोका क्या होना ? मान लिया कि हिंदू, सिख आदि इंग्लैंडकी ओर नहीं आकला चाहते, पर मुसलमान उन्हींकी ओर देख रहे हैं तो क्या फिर हिंदू-सिख भी उस ओर देखने लग पाय ? यदि वे देखें और उनकी कुछ सुनवाई माउटबेटन साहब कर भी ले तो दूसरे हिन्दुस्तानियोंका क्या होना ? पारसी, जो सधामे बहुत मोटे हैं, उनकी बात सुननेकी माउटबेटनको क्या पड़ी है ? और हिन्दुस्तानमे दूसरे भी किसने भोग है, जिन्हें न बाइसराय पूछते हैं, न दूसरे कोई ।

इस हालतमे मेरा धर्म मुझको पासन करना है । यानी हिन्दुस्तानका धर्म हिन्दुस्तानको पासन करना है और इस तरह अपनी आबादी लेनी है ।

आज हममें बाज भोग बीवाने बन गए हैं । सच्चा बननेके लिए ही आप और हम प्रार्थनामे आते हैं । सच्चा बननेके लिए चाहिए कि हम एकमात्र ईश्वरके ही गुलाम बनें । और किसीके गुलाम

न बनें। फिर आवाही हमारी अपनी ही है। क्या हम भी बीजाने बन जायें? और जबतक यह वह बीजाने ठीक न हो जाय तबतक क्या आप यह चाहिये कि मास्टरजेटन उनपर अपना अधिकार रखें और यहाँ बने रहें?

मैं यह पसन्द नहीं करता। मैंने दूसरी ही बात भिन्नार्थ है। मैं यहाँ सन् सोमहर्षे आया और तबसे मैंने कहा है कि हर कोई अपनेको देखे। अगर हम ऐसा करने लगे हमलैड ही क्या, हमारीका और हम—दीनो मिलकर जी होने भिन्न नहीं सकते। हमारे जन्म-सिद्ध अधिकारकी जो चीज है वह हमने कोई जीव नहीं सकता। आवाही हमारी है और हम अपने बनें तो उसे हमारे पाम माना ही है।

: २० :

सोमवार, २६ मई १९४०

(विशेष प्रवचन)

मैंने आजका भाषण विश्व ज्ञान। उसके बाद करीब दोन बजे कल-वाली बहलका बात आया है कि मैंने जपनका सब करके कल प्रार्थना करवाई। मुझे ऐसा लगातक नहीं है। मैंने विनय किया, विरोधियोंकी रक्षाके लिए समयका पाठ दिया। आपने उसे स्वीकार किया। अब भी ऐसे विरोधके कारण प्रार्थना बंद करें तो विनय अविलम्ब होगी और सारासा कृपयसाग्न रूप होगी। अहिंसाका यह लक्षण कभी नहीं है। इसलिए वह बहल भाग करे। प्रार्थना होगी।

मैंने कल आपसे जो कहा था, आज नहीं बीच फिर दोहराता हूँ। सामूहिक प्रार्थना हमारा साधकर्म है। हमें कटके छोड़ना नहीं जा सकता। अगर सामूहिक प्रार्थनाके बारेमें कोई विरोध उठाता है और उसका ऐसा करना अपराध ही है—तब उसपर हमला होनेका खतरा पैदा हो जाता है तो मूल प्रार्थना भण्डी है। आप जोर लो नेरी विनय मुनकर बचकर पूरी तरह भाग रहे और उन विरोधियोंको आपने नहीं सलाया,

पर जब मैंने देखा कि हमारे इन समयका कुसंयोग होने लगा है तब मैंने बुरा रास्ता अस्तिथार किया। और मुझे यह देखकर लुमी हुई कि विरोध उठानेवाली बहुत भी बात रही। उनके मनमें कुछ भी हो, मैं आशा करता हू कि शांति जारी रहेगी। इसनी सम्यता तो हमने होनी चाहिए। भाग्यके लिए मैं मैं आपसे यह कहूंगा कि अगर कोई विरोध करे तो आप अपनी प्रार्थना जारी रखें और साथ-ही-साथ विरोध करनेवालेकी ओर उदार रहें, रोप न करें।

मैंने कल आपसे कहा था कि हमें यह सोचना नहीं देना कि हम बदलकी ओर आकर रहे। अथवा जो हमें आजादी नहीं दे सकते। वे तो हमारे कंधोंसे उतर सकते हैं। ऐसा करनेका उन्होंने बचन तो दिया ही है। आजादीको सम्हालना और उसे स्थापना देना हमारा काम है। यह हम कैसे कर सकते हैं? मैं समझता हू, जबतक हिन्दुस्तानमें अंग्रेजी राज है तबतक हम ठीक तरह नहीं सोच सकते। हिन्दुस्तानके नरमके बदलना ब्रिटिश सरकारका काम नहीं है। उसका काम तो यह है कि यह अपनी निष्पत्ति की हुई सारीसके दिन या उनके पहले वाली पाय। हो नके तो हिन्दुस्तानको अच्छी तरह अपना कारण बजावे तब छोड़कर जाए, अगर अराजकताका उत्तर हो तो भी उसे तो बला ही जाना है।

एक और कारण भी है कि आज हिन्दुस्तानकी मजलमें किसी किमका फेरफार न किया जाय। कामदे आजमने और मैंने एक अपील निकाली है कि राजनैतिक मजल हासिल करनेके लिए हिमाया दम्पमान न किया जाय। अगर उस अपीलके बावजूद लोग पागल जनवरी की हिम्मा ही हिमा करने रहें और ब्रिटिश नत्ता उनके सामने नज़र आय, यह समझकर कि एक दफा पागलपन निवस जानेपर सब ठीक हो जाय तो यह बात गनी विगमल हो जायगी और फिर हिन्दुस्तान ही नहीं, बारी दुनिया उनके गुनगार आनेगी। मैं हरेर देवरेमीने और ब्रिटिश गणामे भी, प्रारंभ करना कि किसी भी हिम्मा हो सब भी यह रिजिनेट मिशनने रिजिनेट माफे १९ जून १९४७ के अन्तर्गत गणम अन्तर हिन्दुस्तानको छोड़ दे। आज ब्रिटिश गणामे मौजूदगीमें उन,

कतल, घाय और उसने भी बुरी बातें देखकर हम नीचे गिरते जा रहे हैं। जब घरेबी मत्ता बसी जायगी तब मेरी उम्मीद है कि हममें साफ विचार करनेकी ताकत घाबेगी और तब हम जैसा ठीक समझने होंगे एक हिंदुस्तान रखेंगे या उनके दो या ज्यादा टुकड़े करेंगे। और अगर हम तब भी सड़ते ही रहेंगे तो मेरे मुँहें बकौन है कि हम घाबकी तरह नीचे नहीं गिरेंगे, हालांकि हिंसाके नाब कुछ-न-कुछ गिरावट तो होती ही है। मैं तो निराशाने भी घाबा रहता हूँ कि आबाद हिंदुस्तान दुनियाको हिंसाका और एक नया पाठ नहीं पढ़ावता। वह पहले ही बुरी तरह बेमार है।

: २१ :

२७ मई १९४७

साहसों और बहनों,

उस महापट्टीय बहाना क्या बात मान ली जाया है। हममें उसने भिन्नता ली है कि स्वयमेवकोले उसे रोककर उभित नहीं किया। उसने यह भी सिखा या कि कुरानमें गैर-मुस्लिमोंको मारनेकी बात लिखी है, इसलिए उसे नहीं पढ़ना चाहिए। कुरान में पढ़ा है और हममें कहीं भी ऐसा नहीं सिखा है, बल्कि हममें तो सिखा है कि गैर-मुस्लिमोंमें भी मुहब्बत करो। उसके पढ़नेवाले इस बातको न मानें तो कुरानका क्या बोध? हमारे यहां भी तुलसी-रामायण, बीसा, वेदमें जो सिखा है उसका पावन कौन करता है?

मैं बर्मेक नामपर शर्म करना नहीं चाहता। मैं एक-एक कदम ईश्वरने डरकर मुझे भिन्नता हू। मुझे उन बहानोंके लिए बर्ष हो रहा है कि वह जो मान जानगी नहीं वह क्यों सिखारही है? क्यों वह दूसरेको कहनेपर मान लेगी है कि कुरानमें यह सिखा है, वह सिखा है? किंतु आप अपना मन बृद्ध करो। उसके विरोध करनेपर भी प्रार्थनामें आना है। अगर आप सब उनकी तरह रहेंगे तो मैं शकबा ही मरते समस्त प्रार्थना करना।

उस पत्रमें दूसरी शिकायत यह थी कि पुत्र स्वयंसेवकोंने उसको हाथ बजाकर हटाया था। इसपर मेरा कहना यह है कि मेरी दृष्टिसे इसमें कोई हर्षकी बात नहीं है। स्वयंसेवकोंका धर्म है कि गठबन्दी मचानेवालेको, फिर वह स्त्री हो या पुरुष, रोके। हा, स्त्रीपर वे हाथ न बनावें, मारे नहीं। ठंडे दिमागसे समझावें। जब मनमें किसी किस्मका विकारका भाव न हो तब स्त्रीको कुछ बेनेमरसे कोई पाप नहीं हो जाता। मैं भी सड़कियोंके कनोपर हाथ रखकर चलता हूँ, तो क्या मैं गुनाह करता हूँ ? मेरी तो ये सब बेटी-बेटी हैं। अगर मेरे मनमें मैला बिचार पैदा हो तो वह जरूर पाप कहलायगा। स्वयंसेवक भी जब सभाकी व्यवस्था करें तो हरेकको अपनी माता या बहुत समझकर समझे मानेवाली बहनोंसे बर्याव करे। जैसे पुत्र अपनी माताको छुए, वैसे वह भी छू सकता है, यह उसका कर्तव्य है।

(इसके बाद आर्यना शुरू हुई। तब उस बहलने कहा, "बच करो आर्यना, बच करो।" चुनकर गांधीजी मुस्करा दिए और आर्यना बजाते खड़ेका आदेश दिया।)

आर्यनाके बाद गांधीजीने कहा—आज समय तो काफी हो गया है, अब मुझे भी कहना है बत्ती ही पूरा करना।

आप तो जानते हैं कि मैं विहारमें काम करता हूँ। वहाँ मुसलमान बहुत कम हैं। मुस्लिमसे बौद्ध फी-सवी होने। जबर नौआखालीमें हिंदुओंकी ताबाब इसी तरह कम है। नौआखालीके कामके सिवासिनेमें मैं विहार गया गया।

विहारमें जो आई काम कर रहे हैं उनकी तरफसे टेलिफोन आया है कि अभी बड़ा बूनकी बात चल पड़ी है। इसी तरह पहले भी जब बिनाल-परिषद् होनेवाली थी तब मैं सारीखके बारेमें डर पैदा हो गया था और डर बगहने पत्र आते थे कि हम क्या करे। नौआखालीमें तो यहा-तक कमकी ही जा रही थी कि पिछले (नवम्बरके) बनेमें कई हिंदुओंको जिया ही छोड़ दिया गया था, पर अबकी बार तो सारे-के-सारे हिंदुओं-को मुसलमान बना दिया जायगा। तब मैंने उनसे पूछा था कि आप चाहें तो मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा और वहाँपर अधिक क्या कर सकूँगा, अपनी

प्रमेयी जान ही है सकता है। पर उन लोगों ने मुझे नहीं बताया और अगर आज्ञा पाए तो उसे मेमबेको के तैयार हो गए। धनधर्म है तो जानता ही नहीं कि भारे-के-सारे हिन्दुओं की नुमस्त्राय बनानेकी बात कभी भी कामवात हो सकती है।

उसी तरह विद्यार्थों की मुमकिनगी को करने की कोई बात नहीं, वो मुमकिन ही किफ करो करे? हय करो मोने कि वाइलपय लपनई क्या ना खे है? याला कि वाइलपय आहम हमारे लिए बहाने बरहू ना खे है वो जीयैनी कहु बुका कि कहु हमारे निज कामना है। हमारे कामकी नीब तो बही होनी, वो हवने अपने आप पैदा नी होगी।

मैं पूछना हूँ, बिहारके मुख्यमन्त्राण क्यों कहें ? सिद्धांतोंकी जी, जी सम-सम रखते हैं, उन्हें अपने समझकी कूट परभाव होनी कि न होनी ?

इसी प्रकार सिक्के हिंदुओंको डालेका क्या कारण है ? क्यों करें ? बताते भेदे पाख सख थावा है कि हिंदू डर रहे हैं। डर छोड़कर वे 'राम-राम' नहीं कहते ? बताते लोग मुझे बताते हैं। मैं कई बारने सिक् नहीं कहा हू, पर मित्री जाइमेंने मेरी इसी प्रतिक्रिया रही है कि एक बार मैं अपनेलेरी सिक्की कहा करता था। दक्षिण अफ्रीकामें भी भेदे नाम मित्री लोग थे। मित्री, भारवाडी, दवाडी सभीने मेरा नाम दिया है। उनमें ऐसे भी थे जो गरामसक पीते थे और दूसरी चीज भी खाते थे। उन चीजोंको छोड़नेने वे अपनी गलबूरी गहनुस करते हुए भी अपनेको हिंदू बताते थे। उन सबने मेरी होली की। उनमेंसे एक गाई भिखते है कि क्या तुम मुझे व सिक्को भूख गय ? पर मैं जेने भूख सकता हू।

नव वर्षों में उठ रहे हैं कि दो बूतों को क्या होगा। कहा जा रहा है कि पुस्तकालय जहाँ बहुत-बहुत सवारियाँ कर रहे हैं। लेकिन वे क्या सवारी कर रहे हैं? क्या हँसान बनने की सवारी कर रहे हैं? क्या वे नम्रिष्यों जाकर उभावत नहीं करते कि बुद्ध सबको इन्सान बनाएँ? हिंदू भी कोई ऐसी खबर नहीं मिले जहाँ कि वे एकदम से बैठकर ईश्वरों कहें कि यह हिन्दुस्तान में शत्रुओं को सबेरे जाने की सुबुद्धि है और सभी मुसलमानों में भी ईश्वरों पापसम कृपा है उन्हें सत्याना बनाए।

पञ्चावने भी वे टरते हैं, क्योंकि वे ताबावने कम हैं। वहाँ हिंदुओंके साथ मिश्र भी हैं। मिश्र क्यों डरे? दोनों ओर ऐसी बात क्यों हो कि न जाने कौन पहले तलवार उठायेगा।

बिहारमें अगर हिंदू लोग मुसलमानोंको मारने लो वे मेरा कत्ल करेंगे। मैं तो कहता हूँ कि बिहारके मुसलमान मेरे सहोदर भाई हैं। वे मुझको देखकर मुग्न होते हैं। उनको यह यकीन हो गया है कि यह एक जन्म तो हमारा अपना ही है। उनको अगर कोई मारता है तो वह मुझे मारता है। अगर उनकी बहन-बेटीका अपमान करता है तो वह मेरा अपमान करता है। यह बात मैं हम मंचपरने बिहारके सभी हिंदुओंको मुना देना चाहता हूँ।

और मुसलमानोंको वहाँ डरनेका क्या कारण है? वो अच्छे मुसलमान सेवक उनकी सेवा कर रहे हैं। फिर वहाँके अभिमर्शमें भीड़जग्न मिश्र है, वो पूरे सजग हैं।

आजकल एक भक्ताह यह चल पड़ी है कि बायीं बिहारने रखकर हिंदुओंको कटवाना चाहता है, पर मैं कृपया आशासे कहता हूँ कि सब-के-सब मुसलमान पागल बन जाय तब भी हिंदू पागल न बनें।

मिश्र भाई तो मरने लिए कहते हैं कि एक सिख सवा लाखके बराबर होता है और पांच सिख छ लाखके बराबर। उनका ऐसा कहना मुझे अच्छा लगता है। अब साहब और गुरु जीने उनके हैं, बीसे मेरे भी हैं। मैं जब अपनेको मुसलमान बताता हूँ तब अपनेको सिख बतानेमें मुझे लज्जा किम बातकी? और सिखोंने तो ननकाना साहबने सत्याग्रह और गुरु-पीरसाका बड़ा काम किया है। लेकिन आज वे तलवारकी ओर देखा रहे हैं।

वे यह नहीं समझते कि कभी तलवारका जमाना था तो भी अब वह पला गया है। वे नहीं जानते कि आज तलवारके मरने में किसीको बिबा नहीं रद्द सकते। यह एटमबमका युग है।

गुरु गोविंदसिंहने जब तलवारकी बात सिखाई तबकी बात आज नहीं चल सकती। हा, उनकी सीख आज भी कामकी है कि एक सिख सवा लाखके बराबर है। लेकिन वह ऐसा तब होया जब वह अपने भाईके लिए और सारे हिंदुस्तानके लिए मरेगा।

ऐसी बहादुर धी-जों भी हूँ है। एक बनह नव मरें भारे गए
 और उनकी मरव भित्तनेकी आभा नही रही तब वे पुनर्जात होते
 बचाव हुए मर गई। यह मज्जी मत है। करीब पचहत्तर बहनों इस
 तरह मर गयीं। उन्होंने अपने हाथसे अपने मास-बच्चोंको पल्ले
 फल किया, क्योंकि वे नहीं चाहती थी कि दूसरे लोग उनके
 मासको लो सताए।

मैं कहूँ कि मुसलमान हो या हिंदू, जिसने इन तरह किया है,
 उनका ही धर्म बिबा रहा है। मित्रों! मैं कहूँ कि जब आप एक-
 एक छात्रोंके सहायक हैं तब ईश्वरका ध्यान करके 'सगरी अकाल'
 का नारा लगाते हुए आप मर जाय। इससे ज्यादा और बहादुरी क्या
 हो सकती है ?

मुझको मते कोई मुबदिल नहै, मैं मुबदिल हूँ यह तो ईश्वर ही
 जानता है। पर मुबदिल आदमी भी अगर बहादुरीका मत भिन्नता है
 तो वह जीसनी चाहिए। मैं किसीको मुबदिल बनाना नहीं चाहता।
 न मैंने किसीको मुबदिल बनाया है और न मैं मुबदिल हूँ।

: २२ :

२८ अक्टू १९४७

भाइयों और बहनों,

आप किसी बहल या भारी उपद्रव नहीं मचाया और न विरोध
 ही किया, यह मुझे अच्छा लगा। मुझे तो बचीन है कि बीजानापन
 रोज नहीं चल सकता। वही मत हिंदू-मुस्लिम भयसेके लिए भी है।
 मेरे पास इन सब ही आ रहे हैं। कुछ नये मत भी आते हैं। कई
 मुसलमान मते हैं जो कहते हैं कि हिंदू और मुसलमानका धर्म
 असा कुछा तो क्या हुआ ? इन कारण उनके धर्म तो प्रचल नहीं होने
 चाहिए। कुछ हिंदू भी ऐसे हैं जो मुझे बकमिया देते हैं कि कृपणसे
 शोषणा आप सब नहीं करेंगे तो इन आपनों से बच लेंगे। आपके यहां

कासी रुझिया लेकर हम आएं^१। और भाकर ने करने क्या ? हुआ ही ऐसी ही कि न कुछ सुनना, न कुछ देखना, बस जीबते रहना। वे भी उसी तरह प्रार्थनामें बस बने। लेकिन ऐसा होगा तो भी जबतक आप लोग जातिसे बाध रहे हैं, हमारा प्रार्थनाका सिनसिना बजना ही रहेगा और अगर आप सभी लोग कासी रुझिया लेकर आवेंगे तो फिर मैं अपने प्रार्थना करना। आप मुझे पीटेंगे तो भी मैं राम-राम करता रहा। अगर मैं आपसे बचनेके लिए प्रसन्न रहूँ, तबबार-बहुत बलाक तो भी बसीरने तो मुझे मरना ही है। तो फिर मैं राम-राम करते ही मर तो क्या बुरा है। जब मैं इस तरह मर जाऊँगा तब आप पछावने। आप अपनेसे ही कहेंगे कि हमने क्या कर बाबा, इसको मारकर कुछ पाया तो नहीं, पर यदि मैं प्रसन्न रहूँ वा आपकी पीटूँ तो आप मुझे मारकर यही कहेंगे, अच्छा हुआ जो इसे मार बाबा। लेकिन मुझे जमीन है कि आप तो जिस तरह आए हैं उसी तरह जान रहे।

बाब ने आपको कुछ प्रलोके उत्तर दूना। उनके उत्तर तो बाब नहीं दे सकता। कस एक मारने पूछा वा कि अगर कृता पावक हो बाब तो क्या किया बाब ? क्या उसे मारा न बाब ? वह जमीन प्रश्न है। पूछना तो यह बाहिए वा कि इन्सान पावक हो बाब तो क्या किया बाब ? पर बात तो यह है कि अगर हमारे दिवने राम है तो कृता भी हमारे जानने पावक नहीं बन सकता। लेकिन एक बार मेरे एक मारने मेरे पास आकर कहा, 'कृता पावक हुआ है। काटका फिरता है, उसको क्या किया बाब ?' मैंने कहा कि मेरी जिम्मेवारीपर उसे मार दिया बाब, पर वह भी कृतेकी बात। इन्सानके पावक होनेपर वह बात नहीं बनती। मुझे बात है, जब मैं बस बर्षका था, मेरा माई बीमाला बन गया था। बाबने वह अच्छा हो गया। अब तो वह नहीं रहा, पर मुझे उसका स्मरण बाब भी जतना ही ताबा है। पावकपनमें वह सबको

^१गुजरातके पाकिस्तानबिरोधी मोर्चेवालोंने गांधीजीको चेतावनी दी है कि यदि बाब दिवने आप अपना मुस्लिमपरस्तीका रवैया नहीं बदलेंगे तो हम आपके दिवनी-निबासस्थानपर कासी रुझिया लेकर आवेंगे।

बहा बने। यह पागलपन नहीं तो क्या है? मुझे भरोसा है कि आप लोग जो इसकी जातिसे बहा बैठे हैं ऐसे पागल नहीं बनेंगे। जो पागल बने हैं और हमें मारना चाहते हैं उन्हें हम मारने देंगे। हम मर जायेंगे तो उनका पागलपन अच्छा हो जायगा? आत्मकल जो पागलपन फैला है वह ऐसा नहीं है, जो बातको समझे नहीं। अगर सच्चा पागल भी छुरी हाथमें लिए आता है तो हम खतरा उठाते हैं, उससे डरते नहीं हैं। इसी तरह भूतलमान भी अगर तलवार उठाकर आते हैं और पाकिस्तान आते हैं तो मैं कहूंगा—‘तलवारके जोरसे पाकिस्तान नहीं ले सकते। पहले मेरे टुकड़े कीजिए और बादमें हिंदुस्तानके?’ यदि सब इसी प्रकार कहेंगे तो ईश्वर उनकी तलवारके टुकड़े कर डालेगा।

मैं तो मिल्कीन आदमी हूँ, लेकिन ऐन भीकेयर आप मेरी बहादुरी देखेंगे। उस समय मैं किमीकी जातीके मुकाबले जाती नहीं बलाऊंगा। मैं चाहता हूँ कि पागलके सामने हम पागल न बनें। हम समझदार रहे तो सामनेवालेका पागलपन बसा जायगा। उनका पाकिस्तान भी बसा जायगा। अगर पाकिस्तान सच्चा होता तो वह सारा हिंदुस्तान ही होता।

अगर हम पागल बनेंगे तो अनेक पूछेंगे कि क्या अहिंसा हमारे ही लिए थी? आपसमें आप तलवार खींचते हैं। कहा गई वह अहिंसा? फिर कहेंगे कि अहिंसावालोसे हम अनेक अच्छे हैं, जो मारा तो सही, पर अमन रखा। उनको तो राज बसाना है। इसलिए ऐसी बात कहेंगे। लेकिन मैं उनसे कहूंगा कि मैं ऐसा न करूँ। उन्हें तो खाना ही है और हमारी अहिंसाकी सहाईके कारण जाना है। महा करोटी जोयोंने अहिंसाकी बहादुरी बताई। आपने अनेकी कबेकी सिर नहीं झुकामा, आप खेत गए, आपने अपने घर बरबाद होने दिए। सब जाकर आप हम आबाद हो रहे हैं। पर अब उस बहादुरीके जरिएसे हम आबाद होनेकी बात नहीं करते। आज हम ऐसा काम करने लगे हैं कि हिंदुस्तान-पर सब हँसे और झूके।

ऐसा हम हरगिज नहीं करेंगे। आप किसीको मारेगे नहीं, मर जायेंगे तभी आप सच्ची आबादी पायेंगे।

माउन्टेन आ रहे हैं। वे क्या जायेंगे, यह सोचकर सब डर रहे

है। अगर वह हिंदुओंको कुछ देते हैं तो मुसलमान पागल क्यों बने ? और मुसलमानोंको वे तो हिंदु क्यों डरे ? हम उनकी घोर न देखें, २ बूनको न देखें, अपनी घोर ही देखें ।

अगर वे कुछ न दें तो क्या मज पागल बन जायेंगे ? ऐसे पागल कि बूढ़ो, बच्चों और बीरखो मयीको काट डालें ।

दुसर प्रश्न यह है कि अमरिम सरकारके अगर जो लोग हैं वे सबेवोंके नचाए क्यों नाचने हैं ? क्या हिन्दू ही कौन हैं—हिंदू, मुस्लिम और सिख ? वे पारसीको क्यों नहीं बुलाते ? क्या इसलिए नहीं बुलाते कि उनके पास उसवार नहीं है ? पारसीको भी बुला दें तो ईश्वरोंने क्या यूनाह किया है ? फिर ब्राह्मणोंको क्यों नहीं बुलाते ? ब्रह्मकर्मका निपटारा ठीक ही है। मुझे भी इस बातका चर्चा होता है। कावेस ही सबके लिए है। कावेसका डनी लोग खान देते हैं। फिर कावेस धूमिल क्यों नहीं है ? कावेस कोई जकेवे हिंदुओंकी नहीं है। सब है कि जवने बहुत बड़ी सम्मानें हिंदू हैं, पर दूसरे भी तो हैं। यदि हिंदू, मुसलमान और सिख आपसमें ईदगा कर लेंगे तो क्या पारसियोंको क्या दें ? ब्राह्मणों और दूसरे भी जो लोग हैं वे नर जायें ? उन सबका समाधान हो जायेपर श्रीरोका क्या करें ? उनको डोक दें ?

• फिर वे सब कहेंगे कि हमने जो पहले कावेसका खान दिया तो क्या इस किनके लिए ? क्या कारण है, जो बादशाह केवल अमरिम सरकारके पर भावमिमति ही सारी बातें करें ? क्या इसलिए कि बजाहरलाख बहुत बड़े आदमी हैं ? या सरकार बारजोलीके बहादुर हैं, राजेंद्र बाबू बहुत बड़े बुद्ध हैं और राजाजी बड़े बुद्धिमान हैं ?

न आपसे कहना चाहता हू कि कावेसने वे ही नहीं हैं, आप सब हैं। बिन्दुने कावेसको मकद ही और उसने लिए काम किया वे सब हैं। जो लोग डेपूटेशनमें नहीं जाते, जो बोलते नहीं हैं, वे सब लोग भी इसमें हैं। अगर टीनो कौन विचकर कुछ खन कर लें और दूसरीकी परमा न करें तो वह बड़ी बुरी हासत होगी और बाकी लोगोंकी हमपर आह पड़ेगी । इसलिए हम समझें कि कितना हम करें वह सब आदियोंके लिए करें ।

जब मुसलमान भी हम बातकी समझ जायेंगे तब सब काम अच्छा

हो जायगा। और तब हमारा—मेरा व जिन्ना साहबका—इस्तानेब ठीक मान लिया जायगा कि राजनैतिक मकसदके लिए हिंसा नहीं करनी चाहिए।

: २३ :

२६ मई १९४७

मादमो और बहनो,

जबतक प्रार्थना समाप्त न हो जाय और मैं अपनी बात कहना खतम न करूँ तबतक आप नीन रहें। मैं चाहता हूँ कि मैं जबतक यहाँ भीबूब हूँ और जिन्ना हूँ तबतक आप लोग जो रोज भक्ति-भावसे यहाँ आते हैं—जो केवल समाधा बेजने आते हैं उनकी बात जानें बीबिए—अनुका नाम सेनेसे मेरा साथ दे। और बाबने भी मेरी बात सातिसे सुनें। आप जो मैं कहनेवाला हूँ, बड़ी कामकी बात है।

प्रार्थना समाप्त हो जानेपर गाबीजीने कहा—

आजके और २ जूनके बीच बोले ही मिल रहूँ गए हैं। इन दिनों मैं रोज एक ही विषयके किसी-न-किसी पहलुपर बोलूँगा, जो आप लोगोंके दिलोंमें सबसे ज्यादा समाधा हुआ है। आप लोगोंने जाति और खतम एरावर मुझे अपनी और बीच लिया है और अपना दिल खोलकर रख देनेको बाध्य किया है। किन्तु अच्छा हो कि जो लोग अपनेको उम पेजकी सवाल मानते हैं वे ठीक तरहमें सोचें और बहादुरीमें चलें। यह भूमिकन काम जरूर है, जब कि अगवादीमें पागलपनने जरी हुई आप और मार-पीटकी जबरदस्ती देखती रहनी है।

मैं इस बातकी कोई चिन्ता नहीं करता कि २ जूनको क्या होनेवाला है। या माउण्टबेटन साहब आकर क्या सुनायेंगे। मेरी ऐसी आशा ही नहीं है कि सरकार क्या बहेगी इसकी चिन्तामें नह। १६१५ में मैं परा पागा, उसमें लेकर आजतक मैंने ऐसा ही किया है।

मेरा जन्म तो यहीरा है। २२ वर्षकी उमरमें मैं यहाँने जन्मा गया।

क्योंकि वह तो करीब-करीब मेरी भी और आप सबकी पूरी तीरसे मातृभाषा है। इसलिए उसमें मैं जो कुछ कहूँगा यह आप सही-सही समझ सकते हैं। यह (डा० सुशीला नैयर) मेरे भाषणको भरोबीमें कर तो लेती है, क्योंकि वह खासा भरोबी जानती है, फिर भी उसमें कमी रह जाती है। इसलिए आप मेने बोझा समय निकालकर भरोबीमें लिख रखा है। यहाँ मैं उसीको ध्यानमें रखते हुए बात कहूँगा। परन्तु भक्तबारीमें वही कहेगा जो मैंने लिख रखा है।

तो नुस्खें मैं उस खतकी बात बता देना चाहता हूँ, जिसमें मुझे प्रार्थना नाम्बर खतके बारेमें कोसा गया है और लिखा है कि झूठा है, ठीक तरहसे जवाब भी नहीं देता। ऐसा जो लिखते हैं वे बालक हैं। उम्रमें मने ही समाने हो गए हों, पर बुद्धिमें बालक ही रहे हैं।

उनको मेरी यह बात चुभती है कि मैं यही क्यों कहता हूँ कि 'मरो', 'मरो'। ऐसा क्यों नहीं कहता कि पहले 'मारो-काटो और फिर मरो'। वे चाहते हैं कि मैं हिंदुधर्मसे ललवारका बदला ललवारसे और धर्मका बदला धर्मसे लेनेको कहूँ। लेकिन मैं अपने सारे जीवनके विरुद्ध नहीं जा सकता और मानव-कानूनकी जगह पाश्चात्तिक कानूनकी हिमायत करनेका अपराधी नहीं बन सकता। जब कोई मुझे मारने आवेगा तब मैं यह कहते-कहते मरूँगा कि ईश्वर ऐसा नशा करे। इसके बदले उनका धाम है कि मैं पहले मारनेको कहूँ और बादमें मरना पड़े तो मरनेको कहूँ। अगर मैं ऐसा कहनेको तैयार नहीं हूँ तो वे मुझे कहते हैं कि 'तुम अपनी बहादुरी अपनी जेबमें रखो।' और यहाँसे जगमगे भाग जाओ। पर वे ऐसा क्यों कहते हैं? इसलिए कि मुसलमान सबको मारते हैं। तो क्या इसी बातपर हिंदू भी मारनेको छत्राक हो जाए और फिर दोनों बीबाले बन जायें? क्या मुसलमान बिगड़ जायें तो हम भी बिगड़ें? कहा जाता है कि सब मुसलमान खराब हैं, गंदे (बिलक) हैं। और यह भी बताते हैं कि सब हिंदू करिश्ते हैं। लेकिन मैं इस बातको नहीं मान सकता।

एक मुसलमान महिलाका जब मेरे पास आया है। उसने लिखा है कि जब आप 'मोव अविस्वा' की ईश्वरकी स्तुति करते हैं तो उसे

उर्दू नज़्मने क्यों नहीं करते ? येरा उत्तर यह है कि जब मैं नज़्म पढ़ने लग्गुवा तब उसपर खफ़ा होकर मुसलमान पूछेंगे कि धरतीका तरबुवा करनेवाले तुम कौन होते हो ? धीरने पीठने धामने तब मैं क्या कहूंगा ?

मही बात यह है कि जो चीज बिना मायामें कही गई धीर बिना पर तप किया गया उसी मायामें उसका मायुर्ब होता है। बिनामने धरती-बादबिलकी मायाको बहुत परिक्रमसे मबुर बनाया है धीर नेटिजने भी धरतीमें वह बिना तरह भीठी हो गई है। धरतीची सीखना बाहनेवानेको बादबिल तो सीखनी ही चाहिए। मैं धरतीची मायाका डेपी नहीं, उसका प्रसन्नक हूँ। पर वलत बगह जाकर वह गयी हो जाती है। सो मैं 'मोव मयिल्ला' की मायाका मायुर्ब छोड़नेको तैयार नहीं, क्योंकि हमारे पास ऐसे कबि नहीं है जो वैसी ही मबुरलासे उसका अनुवाद कर सकें।

प्राज मैं अहिनाके मायबल निबनकी बात नहीं कहूंगा। हाला कि खनपर येरा बूढ़ बिग्लास है। यहि सारा हिंदुस्तान उसे सोच-समझकर अपना से तो वह बेमक सारी दुनियाका नेता बन जायगा। यहा तो मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि कोई आदमी बिबेकने मलावा धीर किनी बीजने माये न सके।

नेबिन भावजन तो हमने बिबेक बिबिधुस ही मुला दिया है। बिबेक नवी कावम यह सफ़ा है जब हममें बहादुरी हो। भाव जो बन गहा है वह बहादुरी नहीं है। इन्सानियत भी नहीं है। हम बिबिधुस जानमनमें बन गये हैं। हमारे असवार रोज-रोज हमें दानाते है कि बरा हिन्दुनेले बरबारी कर जाती धीर बहा मुसलमानोने। क्या हिंद धीर क्या मुसलमान, दोनों ही बुरा काम करते हैं। यह मैं माननेको तैयार हूँ कि मुसलमान ज्यादा बरबारी कर रहे हैं, पर जब दोनों ही दुर्गन्ध वाले हैं तो निमने ज्यादा बुराई की धीर बिबेकने कम, यह जानना चाहते हैं। दोनों नसबीण हैं।

मजबूत फ़ाई है कि हमारे नसबीण ही मुसलामनमें कई नाब जन गए हैं। निम्ने निम्ने मरान ज्यादा हैं, ज्यादा क्या चलानेकी कोशिशमें हैं, पर महीपना मराना बदिन है। लोग कहेंगे कि अब हतने करीबने

यह सब हो रहा है तब यहाँ बैठा मैं जबी-बीबी बाते कैसे सुना रहा हूँ? जब आप लोग यहाँ आ गए हैं और हमारी बचकिस्मतीसे मुकामबने यह हो रहा है तब अपने मनकी बात मैं आपसे कहूँगा ही। और मेरा यही कहना है कि हमारे चारों ओर अगार बसते रहे तो भी हमें तो छात ही रहना है और चित्त स्थिर रखते हुए हमें भी इस अगारमें बसना है। हम क्यों बहुमतके मारे यह कहते फिरें कि दूसरी जूनको यह होनेवाला है, यह होनेवाला है? जो बहादुर होंगे उनके लिए उस दिन कुछ भी होनेवाला नहीं है। यह यकीन रखिए। सबको एक बार मरना ही है। कोई अमर तो पैदा हुआ नहीं है। तो फिर हम यही निश्चय क्यों न कर लें कि हम बहादुरीसे मरेगे और मरते वमतक अपनी ओरसे बुराई नहीं करेंगे? जान-बूझकर किसीको मारेगे नहीं। एक बार मनमें ऐसा निश्चय कर लेंगे तब आप स्थिरचित्त रहेंगे और किसीकी ओर नहीं टाकेंगे। जो डरा-बमकाकर पाकिस्तान लेना चाहेंगे उनसे कह देंगे कि इस तरह रसीमर भी पाकिस्तान मिलनेवाला नहीं है। आप इन्साफ़पर रहेंगे, हमारी बुझिको समझा देंगे, दुनियाको समझा देंगे तो आप पूरा-का-पूरा हिन्दुस्तान ले जा सकते हैं। जबईस्तीसे तो हम पाकिस्तान कभी नहीं देंगे।

और अचेबोसे क्या कहूँ। अगर वे मिशन-बोवनासे दृष्टते हैं तो वे बगाबाब हैं। हम बगाबाब न बनेंगे और न बनने देंगे। हमारा और उनका खर्च १५ मईकी घोषणाते है। उसीके आधारपर मिशन-परिषद् बनी है। उसके मुलायिक हम चलेंगे। इसके धलावा हम कुछ नहीं जानते। दूसरा कुछ तभी हो सकता है जब हम सामोस हो जाय, लडाई-यना न रहे और हम छात होकर बैठे। पर हम श्वेये नहीं।

इन बार किनोमें इतना पाठ आप सीख लें तो सब कुछ मिलनेवाला है। जलें ही वे सारे हथियार जो बटोरे हैं धावना से। जब हम इतनी बड़ी सस्तानतके मुकामलेमें उट गए और उनके इतने सारे हथियारोंसे नहीं डरे, उसके ऊँढेके सामने खिरनहीं मुकाया तो अब हम क्यों लडखडाएँ? जब कि आजादी मिलने ही बाबी है, हम यह सोचनेकी गलती न करें कि अगर हम न मुझे—माहें यह जूझना पाषाणिक क्षमिके प्रागे ही क्यों

न हो तो आवादी हमारे हमारे निकल जावगी। अगर हम ऐसा सोचें तो हमारा नाम निम्नित है।

जै मबलने मानेबासे सारीमें विस्वास नहीं करता। मैं यह माना नहीं छोड़ना कि ब्रिटेन वत वर्षके १६ मईके कोमिट मिशनके बपतिस्मानी इबासत और मानवाने बास-बराबरनी नहीं हटेगा, बबलक कि नाराजनी पाटिया अपने आप कोई फर्क करनेको रजामब न हो जाए। इन मानके लिए दोनोंको एक बगह दिवना होगा और मानने बाबक हस निकलवना पड़ेगा।

यहूके अग्रेज अपसरोंने लिए कहा जाता है कि वे बबलाम है। इन बबोने उनका हान है, वे ही हूँ बबाले हैं। वेनिन बबलक यह पनीर आरोप ठीक-ठीक साबित नहीं हो जाता बबलक हमें उनपर इस्बात नहीं लागता चाहिए। मैं तो कहता कि अगर हम सक्ता नहीं चाहते तो सबाई कौने होयी? मैं अगर आ बैठी हूँ अपनी सड़कीसे सक्ता न बाहु तो नुने कौन सडा मक्ता है?

और माडटवेटन बाहकका काम आमान नहीं है। वे बडे सेनापति है, बहादुर है पर अपनी उन बहादुरीको वे कहा नहीं बता सकते। यहापर वे अपनी सेना लेकर नहीं जाए है। यहा वे फौजी बर्तोंमें नहीं जाए हैं, विधिविनन बनकर जाए हैं और उनका कहना है कि मैं अग्रेजोने हिन्दुमान कूडवा देनेके लिए आया हूँ। अब हमें बेचना है कि वे किस तरह जाते हैं। माडटवेटन साहबको अपने पब्लिक-बनरसके पबली पोमिट करना है। उन्हें अपनी सारी बगुराई और सक्ती राजनी-सिजता बनानी है। अगर वे बरा भी बूक बाबो, बरा भी मुस्ती कर बाबो तो ठीक न होगा। इसलिए हम और आप सब मिलकर प्रार्थना करें कि कपवान उनको सन्मति दे और इतनी बात वे जानें कि नोबल मईनी बासने बासबर भी ऊन बबलस्तीसे वे नहीं कर सकते। अगर करते हैं तो वह क्या होगा और क्या फिन्कीका सगा नहीं होता। बनेका अत नबाईमें कभी आ नहीं सकता।

भाइयो और बहनों,

आप सबकी ओर न देखें, न बाइसरामकी ओर देखें। इसका मतलब यह नहीं कि इन्हींमें बितने अश्रेष्ठ हैं, सब-के-सब बुरे हैं। उनमें बहुत-से भले भी हैं। माउटबेटन साहब भी भले हैं। पर वे सब अपने घरमें भले हैं। जब यहाँ आकर बसल बैठे हैं तो वे बुरे बन जाते हैं। अब यह पुरानी बात नहीं रही कि जब अश्रेष्ठोंकी हिफाजतका बादा बटरी घमम्मा जाता था। सिविल सर्जिसमें जो अश्रेष्ठ लोग हैं उन्हें अब अपने यहाँ नौकर रखनेके लिए हम मजबूर नहीं हैं। अगर सिविलियन रखना चाहें तो रखें और अश्रेष्ठ व्यापारी भी रहना चाहें तो वे भी रहें, लेकिन उनको बचानेके लिए यहाँ एक भी अश्रेष्ठ सिपाही नहीं रह सकेगा। हिन्दुस्तानियोंकी बिचमस और उनकी मुहब्बतके लिए ही वे रह सकते हैं। अगर कोई पागलपनमें उन्हें मुकसान पहुँचाए तो उसकी बिम्बेबारी हमपर नहीं होगी। अश्रेष्ठोंके हिन्दुस्तानसे पूरी तरहसे भले जानमें कुछ देर जग सकती है। उन्होंने इसके लिए १९४८ के जूनकी ३० तारीख कायम की है। उस दिनको आधसे पूरे बारह महीने बाकी रहे हैं। अगर वे इसमें पहले जा सकें तो उन्हें जाना है। लेकिन उसके बाद तो वे एक दिन भी नहीं टिक सकते। यह तो प्रामिसरी नोट की-सी बात है। अगर प्रामिसरी नोटमें इसबारके दिन खपवा देनेका बचन दिया है तो उसे सोमवारपर नहीं टाका जा सकता। इसी तरह अश्रेष्ठ भी ३० जूनके बाद यहाँ नहीं रह सकते। अश्रेष्ठ-अजाने उन्हें जो आदेश दिया है उसका उन्हें पालन करना है। बाकिर बाइसराम उसी अश्रेष्ठ-अजानेके नौकर हैं। इस दूसरी या तीसरी जगहों यह हमें बतावने कि वह क्या करना चाहते हैं और किस तरह यहाँसे जायेंगे। यह उनका कर्तव्य है और उसे पूरा करना उनका काम है। हमको अपना धर्म खुद देखना है।

फिर मैं सोचता हूँ, मैं क्यों हूँ? मैं किसका नुमाइश हूँ?

बीने में जातेसे बाहर बिजब घासा हू। बबबीका मेम्बर नी नहीं हू। पर जातेका बाबिस हू। मेने उनकी बरसोम लेबा भी हू और कर रहा हू। इनी तरह मैं मुम्बिस बीमका नी बाबिस हू और राबामोम नी बाबिस हू। सबका बाबिस हू, पर मुनाइबा मिमीका नहीं हू। हाँ, एकका मैं मुनाइबा बकर हू। मैं जाते आबनका मुनाइबा हूँ। क्योंकि उनमे माव मेने बाबिस-कपीसपर बबबन किए हू। इन दोनोने निसकर कहा है कि हिंसने कोई राबनिक बाव इन गरी से बकते। यह बहन बही बाव है। इन कपीसपर इनरें दोनोकी सही नी सेवेकी बात दी, सेबिन बिबा माहबने कहा कि मुने तो बनेसे बादीबीकी ही सही बाबिस। इस तरह मे बिबा माहबका मुनाइबा बन गन। उनसे घलाबा मे बिबिना मुनाइबा नहीं हू।

सेबिन मेने कपीसपर हिंसनी ईसियने बलबत नहीं किए किबु हिंस मैं अपने बबब हू, कोई मुने हिंस निटा नहीं रुका। मैं मुनबनाम नी हू क्योंकि मैं कबका हिंस हू और इनी तरह बाबनी और ईमाई नी हू। यह बनेकी बहने एक ही ईमरका बाव है। उनसे बने-बाबन एक-नी बात बहने हू।

मैंने कुरान देका है और बँसा कि उस बहने बिबा बा, मैं नहीं जानता कि कुरानने बाबिरोने बबब करनेकी बात सिखी है। मैंने बाबबाह बाव और कबुम्बनका माहबने, बिहोने बाव बहिया लीमेने बाबन पटी है पूछा तो मैं नी नहीं कहते कि कुरानने बैर-मुम्बिनकी बबब करनेके लिए सिखा है। बिहारके मुसलमानोने बिबीने नहीं कहा कि क्योंकि बाव कबिनामी है, इसलिए हम बाबको बरत करेये और नोआकामीने नीबबिरोने नी देका नहीं कहा, कबिना उनहूने राम-मुनकी डोकके बाव होले बिबा। कुरानमें जो सिखा है उनका बगबन इतना ही है कि मुसा बाबिरसे पूछेगा। मुसा तो बहने पूछेगा। मुसबामाने नी पूछेगा। यह बबबने नहीं पूछेगा, बाबोको पूछेगा। बाबी जो यदा देवना बाहें हर गदह यदा देव बकते हैं। ऐसी कोई चीज नहीं बिबमें बबका ब हुन न बिबा ही। हवारी जन्मुमिनें नी बिबा है कि बहनीने कानने चीका डानी। पर मैं बहना कि हिंस-बनेबाबानी यह

भयभीति नहीं है। तुलसीदासजीने सब जासूसोंका निबोध तथा धिया कि दिया बर्गका मूल है। कोई भी बर्ग यह नहीं सिखाता कि हम किसीका बूल करें। हमको तो तुलसीदासजीके इस दोहेपर भयम करना चाहिए—

जब चेतन बून बोधमय, विश्व कीन्त करतार।

सब हस गुन यहहि पय, परिहरि बारि विकार॥

हमें तो मुसलमानोंसे कह देना होगा कि इस तरह पाकिस्तान नहीं बना जा सकता। तबतक पाकिस्तान बननेवासा नहीं है जबतक कि यह बनाना-भारना बंद नहीं होया। इसी प्रकार हिंदू भी मुसलमानोंको जबर्बस्ती पाकिस्तानका नाम देनेसे नहीं रोक सकते। पर मैं पूछता हू कि क्यामक्या आप क्यों पाकिस्तानके नामपर बटते हैं? पाकिस्तान कौन-सा मूल है? सच्चा पाकिस्तान तो यह है, जहां जन्मा-जन्मा सुरक्षित हो। चाहे पाकिस्तान हो चाहे हिन्दुस्तान हो उसमें अत्येक बर्ग और कर्मवाले समुच्चय रहने चाहिए। फिर वे चाहे ब्राह्मण, बनिया या पंडित हो सबका भयम-भयम बर्गके हो। इसलिए मैं बिना साहचर्ये कहूंगा कि प्रायः हम सारे हिन्दुस्तानमें बूमें और जोर-जबर्बस्तीकी बंद कराए।

मैं अपने साथी बिना साहचर्ये कहता हू और सारी दुनियासे कहता हू कि हम तबतक पाकिस्तानकी बात भी नहीं सुनना चाहते जबतक यह समझबुझ नसकता है। जब यह बंद हो जायगा तब हम बैठेंगे और ठहरावेंगे कि हमें पाकिस्तान रखना है या हिन्दुस्तान। इस तरह जब आर्ति-नाई होकर बैठेंगे तब हम रोजनी करेंगे और बसेबी बाटेगे। बोस्तीसे ही पाकिस्तान बन सकता है और बोस्तीसे ही हिन्दुस्तान कायम रह सकता है। अगर हम बसे रहे तो हिन्दुस्तान समाप्त हो जानेवाला है।

गत वर्षका १६ मईका निवेदन समझौतेकी जब (बुनियाद) है। उसका एक भी काना हटाया नहीं जा सकता। अंग्रेजोंको इससे बाहर कुछ भी करनेका हक नहीं है और न हम ही इससे ज्यादा कुछ मांग सकते हैं। हमको यह साफ कह देना चाहिए कि चाहे हम सब मर जाय या सारा हिन्दुस्तान बस जाय—राख हो जाय, परन्तु जबर्बस्ती पाकिस्तान बननेवासा नहीं है।

सकती है, लेकिन सस्सलतके पकड़नेपर भी जिन्ना साहब ठीक तरह फँद नहीं होगे। सही तौरपर गिरफ्तार हो वे तब होंगे जब मैं उन्हें फँद करके गद्दापर बाँधकर खड़ा कर दूँगा।

एक वक्ता मीर आलम था। सरहद्दी बापीके मुल्कका। मैंने वे पहाड़के-से हैं, वह उनसे भी ऊँचा था। पहले वह मेरा मित्र था। पर पठान तो मोने ही होते हैं। इसी कारण वे बावशाह हैं। उसको किसीने बहका दिया कि बापीने पद्म हज़ार पौंड जनरल स्मटसे से लिए हैं और कौमको बेच डाला है। वस, एक दिन वह मीर आलम मेरा बुझन बनकर आया। उसके हाथमे बड़ी-नी जाड़ी थी और उसपर सीमेकी मूठ लगी थी। उसने ठीक मेरी बरबनपर वह जाड़ी मारी। मैं विर पड़ा। नीचे पत्थरका फर्श था। मेरे दाँत टूट गए। ईश्वरकी मजूर था, इसलिए मैं बच गया। मीर आलमको बो-सीन असेजोने, जो उस रास्तेसे आ रहे थे, पकड़ लिया; लेकिन मैंने उसे यह कहकर छोड़वा दिया कि "वह बेचारा दूसरेके बोखेमें आ गया कि मैं जानपी हूँ और इसपर भीनी पठानका खून जील उठे और वह भारनेको उताक हो जान तो कोई आपत्तकी बात नहीं है।" इस तरहसे मीर आलमको मैंने फँद कर लिया। वह मेरा पक्का दोस्त बन गया।

अगर ईश्वरकी मजूर होना तो एक दिन जिन्ना साहब भी बड़ा आकर बैठेंगे और कहेगे कि मैं आपका बुझन न हूँ और न था। मैं पाकिस्तान तो मानता हूँ, पर मेरा पाकिस्तान आला बरजेका होगा। वह सबके भलेके लिए होगा। तब हम सब मिलकर रोखनी करेंगे और मिठाइयाँ बाँटने।

यह मैं बुजबिली था मुजामकी बात नहीं कह रहा हूँ। मैं बहादुर बननेकी ही बात कह रहा हूँ। सिखोंकी तरह हमें एक-एककी सवा जाबके बराबरका बहादुर बनना है। मैं बता चुका कि अलोक सिख सवा जाबके बराबर कभीकर होता है। कृपाणके जरिएसे नहीं, कृपाण तो उसके पास इसलिए होती है, जिससे वह बता सके कि वह कभी भी उसके मातहत नहीं होगा। सवा जाब मिलकर मारें या कोई अकेला मारे, तो भी वह ह्राब नहीं उठावेगा। कौन कहेगा कि इस तरह मरनेवाला बुजबिल है। सभी उसे सच्चा बहादुर बतायेंगे।

मैंने कब कहा था कि पाउ हिन्दुस्तान जब जायगा तो भी हम ताकतके जोरसे पाकिस्तान नहीं होने देंगे। बुद्धिके जरिए, हमारे दिमागपर प्रभुत्व डालकर, नभमा-भुत्ताकर आप कहेंगे और हम समझ जायेंगे कि आप तो सीबीबी बन गये हैं, आपके दिमागमें कोई छत-फरब नहीं है तो पाकिस्तान मान लेंगे, लेकिन उस समय आप हमें विस्वास दिलायेंगे कि पाकिस्तानमें किसीको भी मुसलमानोंसे डरनेकी बात नहीं रहेगी। आपने जब खुदाको हाजिर-माजिर नमस्कार सम्पन्न किए हैं और यह प्रमाण कर दिया है कि राजकीय उद्देश्यकी पूर्तिके लिए हिंसा नहीं होती चाहिए अब पाकिस्तानने लिए जोर-जबर्दस्ती कैसे उभिन हो सकती है ?

हम हिन्दुस्तानमें विस्थाका राज नहीं चाहते और नोपासक नवायका भी राज नहीं चाहते। विरता करते हैं कि हम राज करना नहीं चाहते। उनो तरह नवाय नोपास की अपनेकी रीतके दोस्त बताते हैं। वे भी रिश्तायाने बिबाह होकर राज नहीं चाहते। तो फिर राज आपका किसके हाथमें ? बहुमत बाँटोके हाथमें आयगा। आपके हाथोंमें भी नहीं, किसीलोकके हाथमें हिन्दुस्तानका राज होगा।

हिन्दुस्तानमें कई विरता है। उनकी ताकत क्या है ? वे रीते होते हैं और मजबूत मजबूत कराते हैं। अब मजबूत है कि हम काम नहीं करेंगे अब जनतालोकें करोबो अपने उनकी बेवर्ने रह जानेवाले हैं। अगर वे जानीगवाले हैं तो भी खुद तो बोलनेवाले नहीं हैं। अब उन्हें बोलनेवाला कोई न मिलेगा तो उनकी बड़ी-बड़ी जमीनें बेकार हो जायगी। इनी तरह नवाय नोपासकी बरछी, वाले और मुसलमान सभी विकम्मे हो जानेवाले हैं। मार-मारकर वे किसनोंकी मारेंगे ? अपनी रिश्तायको मारकर किसपर राज करेंगे ? वे सभी अपनी प्रजापर राज कर सकेंगे अब वे प्रजाने दृष्टी बन जायेंगे।

इनके विपरीत अगर कोई कहता है कि नवाय नोपास मुसलमान है, इसलिए वह मुसलमानका राज चलाएगा और फासीरमें मूदवीनर पकिस्तानका राज रहेगा तो वह तबिक भी बचनेवाला नहीं है।

हंदराबाबके मित्रावकी बात सीबिए। कहते हैं कि मौका पाकर वह सारे हिंदुस्तानको सर कर देनेवाले हैं, लेकिन कौन सर करेगे? महाकी सारी रिखाया सो हिंदू पसी है।

अबोध अगर सोचते हैं कि वह हिंदुस्तानसे हटकर हंदराबाब, मोपाल, राजकोट या इधर-उधर भड़के बमायने तो यह बगेकी बात होगी। मुझपर ऐसी कोई छाप नहीं है। मैं तो मानता हू कि अंग्रेजोंके जालेकी बात पूरी ईमानदारीकी है। जब उनको मारत छोड़ना है तब उनकी सार्वनीमिकता भी खत्म होती है, फिर छोटे-मोटे भड़के उनके क्या काम जानेवाले हैं? और जब अंग्रेज नहीं रहेंगे तब राजा लोग रिखायाके साथ बैठनेवाले हैं।

एक बार मालवीयजी बम्बई प्यारे थे। मैं उनके साथ था। वहाँ कुछ महाराजाओंके पास हूज बोली गए। राजाओंने हुन ऊपर आसनपर बिठाया और वे हमारे घुटनोंके पास नीचे बैठे। उस समय अंग्रेजी सत्तानत पूरे खोरले थी। अब जब वह खबरबस्त सत्तानत हट जाती है तब राजा लोग तुरंत ही समझ जानेवाले हैं कि जनताको जब जानेले सभी हूज कायम रह सकेंगे। और जनताकी माननेका तरीका यही है कि वे विधान-परिषद्ने धार्मिक। अगर वे थिद पकड़ते हैं कि हम विधान-परिषद्ने नहीं आते तो फिर वे राजा नहीं रह सकते।

हिंदुस्तानने कोई मुसलमान राजा यह नहीं कह सकता कि वह सब हिंदुओंको मार डालेगा। अगर कोई ऐसा कहता है तो मैं उससे पूछूंगा कि अबतक वह क्यों हिंदुओंका राजा बनकर रहा, क्यों हिंदू प्रजाका भय खाया? इसी प्रकार कोई राजा मुसलमान है, इसी धामार-पर यह कहनेका हकदार नहीं हो जाता कि वह पाकिस्तानमें जा मिलेगा और न हिंदू राजा हिंदू होनेके कारण यह कह सकता है कि वह कांग्रेस-का साथ देगा। प्रजा जहाँ कहे वहीं उसे जाना होगा।

असमें गांधीजीने आग्रनिवासी हरिजन युवक चक्रेयाकी डु खद मृत्युका समाचार सुनाते हुए कहा—वह सेवाश्रमका आत्मनवासी था। नई सलीमके तरीकेपर भीखा था। वहाँ परिषदी और ईस्तेकार था। मूठ, फरेद, जोब-असे दोष उसमें नहीं थे। ईजबत उसके विभागने कुछ

रोग पैदा हो गया। कुछ मिसवॉनधारने ही विश्वास करता था, पर बीसठोने और डाक्टरोंने उसका आपरेसन करनेका आग्रह किया। इस रोगसे उसकी आँखोंका सेव जाता रहा था। फिर भी उसने आपरेसन-मेजपर जानेसे पहले मुझे बड़ी कोशिशसे पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा मुझे श्रेय है, पर आपरेसनका प्रयोग करानेके लिए भी मैं तैयार हूँ और गीत ध्यायीतों राम-नाम लेता हुआ मरूँगा। बाहिर बसईके अस्पतालमें आपरेसन किया गया और आपरेसन-मेजपर ही उसके प्राण झूट गए।

उसके जानेपर रोना आता है, पर मैं रो नहीं सकता, क्योंकि मैं रोऊँ तो किन्हे लिए रोऊँ और किसके लिए न रोऊँ? आर्यमाताको खबर बच्चे चाहिए तो बकीक तुमसीबासबी, ऐसे ही चाहिए जो वा हो जाता हो, वा खूर। बकिया जाता था, क्योंकि वह नि स्वार्थ सेवक और परम स्वीयी था और खूर भी था, क्योंकि उसने अपने हाथसे मुत्सुको अपना लिया। वह हरिजन था, पर उसके दिलमें हरिजन-सपन, हिन्दू-मुसलमान-बीड़े नंद न थे। वह सबको इन्सान मानता था और स्वयं सच्चा इन्सान था।

आज मैंने नयाव गोपाल और हरिजन बालक बकियाकी बात एक नाम आपकी बुना बी। भारतमें दोनोंके लिए स्थान है। नयाव गोपाल इस्टी बनकर ही रहें और बकिया-बीड़े करोड़ों मुक्त भिक्षु आर्षे, सभी भारत सुपने रहेगा।

१ २६ १

१ जून १९४७

आज भी आर्यनाले कुरानकी आकृष्टके समय एक पठितने जाना प्रानी। नैफिल आर्यना बसती रही। थोड़ाभोलेसे दो बचानेले उस आनिना हाथ पीचकर उसे नीचे भिक्ष देने और चुप करनेकी कोशिश की तो नयावे कुछ पत्रपत्ती भव गई। जब पुसिभ उने ने जानेके लिए आर्टे एक गापीनीने रहा, "पुसिभ आर्टे। आप उने न ले जायें। वही बैठा रहने

वैं और वह ज्यादा गडबडी न भवावे, इतना भर देखाते रहें ।” इसपर सिपाही उन पंडितजीकी कमरमें बांतिसे बैठ गया। गांधीजीकी इस सहानुभूतिका प्रभाव उन पंडितजीपर भी अच्छा पडा। अब गांधीजीने कहा—“कुरानकी आयत तो खतम हो गईं। अब मजन हम तभी कहेंगे जब वह पंडितजी इजाजत देवेंगे, वरना अब मजन बंद रहेगा ।” पंडितजीने मुस्कराते हुए और अपनी कुहनी बताते हुए गांधीजीसे कहा—“देखिए, बीबादानीमें मुझे यह खुश निकल आया है। यही आपकी प्रार्थना है ?”

गांधीजीने कुछ विनोदमें कहा—“खैर, खुश निकलनेकी बात जानें दीविए। आप यह बताइए कि मैं प्रार्थना आते बसाक या बंद कर दू ? आप कहेंगे तो मजन बनेगा, नहीं तो आन न होना ।”

तब प्रसन्नतापूर्वक पंडितजीने मजन सुननेकी इच्छा प्रदर्शित की। गांधीजीने पंडितजीको समझाते हुए कहा, “आपके पास ही हिंदूधर्म नहीं है। मैं भी हिंदू हूँ और पूरा सनातनी हूँ। लेकिन हम गीता ही क्यों कहें, कुरान क्यों नहीं। मोती तो जहासे मिले जहासे ले लेने चाहिए। एक अब हमारे हावने आ रहा है। उसे हमें बेनेके लिए बाइसराय परे-खान है। तब क्या आप इस तरह खगवेंगे और अपनी भजानसा बिखारेंगे ? आपको विनय सीखना चाहिए। बाबसाह खानसे आप विनय सीख सकते हैं। अब प्रार्थनाके लिए अब जनु उन्हें बिमाने गई तब उन्होंने कहा, ‘मुझे जहापर देखकर किसी हिंदूके बिलमें चोट पहुंचेगी। इसीलिए मैं बहा नहीं आऊंगा।’ तब मैंने कहा जेबा कि ‘आप तो पहाक-भीसे है। मैं बनिवा होकर भी नहीं डरता तो आपको क्या डर। और अब वे जहा आ गए हैं तो मुझसे भी अधिक बकरी-भीसा गरीब होकर बैठ गए हैं।’ हमें भी ऐसा विनयी होना चाहिए। जाना कि कुरानमें कुछ ओछी बातें लिखी हैं, पर कौन अब ऐसा है जिसने ऐसी बातें नहीं हैं ? मैं तो सैकड़ों मुसलमान मित्रोंमें रहा हूँ, किसीने मुझे यह नहीं कहा कि तू मुसलमान नहीं है, इसलिए तुझको हम बुरा मानते हैं। एक मुसलमान मित्रने—जो अब मौजूद नहीं रहे, और जो जायके जीहरी ने तबा गुजमे भी वे-

^१ दक्षिण अफ्रिकाके सीदावर जगर कनेरी ।

बैठे ही वे—मुझमें कहा था कि “तू हम लोगोंमें डरा कर, क्योंकि हममें मनी अच्छे नहीं होते हैं।” पर मैंने उनमें कहा कि मैं किसीकी तरफ क्यों देखू ? मुझे तो आपके सनाम मने निम मिश गए इसीपर चले हैं। और वे झेलते नहीं थे। ऐसे आखी नाम मेरे पास है। एकको तो मैं अपना ही बहाना बनाया था, वह सबकी खिदमत करनेवाला था; पर ईश्वरने उसे उठा लिया। अब ऐसे-ऐसे अच्छे आदमी मुसलमानोंमें हैं सब मैं कहना हू कि अगर योहाने मुसलमान पाया तो बातें हैं तो नी हिंदुको पाया नहीं बना चाहिए। आमतक ओहोने समचारके चोरके हमें बात दशा तो क्या उनके जानेपर हम सबने जर्गे ? इसमें हमारी कोई धोना नहीं है।’

मदन जी कुछ अच्छी तरह हो जानेके बाद गांधीजीने लोगोंको तथा पहिलीकी माय राजनेके लिए सबबाद दिया और कहा—अगर लोग चरा-नी समझारीमें जहाँ तो स्वराज्य उनके हाथोंमें आ चुका है, क्योंकि हमारी सरकारने उन्-सदान बचाहरणासकी है। बाइसराय प्रभाव है नहीं पर उन्हें अब शांतिमें बैठना है। आपके मनकी बाधमाह बचाहरणा है। वे ऐसे बाधनाह हैं जो हिंदुत्वामको तो अपनी सेवा देना चाहते ही हैं, पर उनके मार्गन जारी दुनियाको अपनी सेवा देना चाहते हैं। उन्होंने मनी देनाके लोगोंमें परिचय किया है और उनके राखदूतोंका नस्कार करनेमें वह बड़े कृपण हैं। लेकिन वह अपनेसे कहातक कर सकते हैं ?

वह केनाहके बाधनाह आपने खिदमतदार हैं। तो क्या वह बदकने गणजी अवमननीको सेवा देंगे ? अगर आज एकको दबावसे तो सब हमारेकी इनी मन्ड बाला पड़ेगा। फिर वह व्यवस्था तो नहीं हुआ। बचावकी राय नी नहीं हुआ। अब आप लोग अनुशासनसे रहेंगे सभी उन्हाह-गमगी बाधनाहने अपनेकी और हमारा स्वराज्य मुक्तक होगा।

मुद उन्हाह-गमगी भी जिन तरह अनुशासनमें रहने हैं उनका उन्हाह-गमगी मुनिह। पिछने वर्ष अब वह बाधनीय चले गए वे सब वेनन भाग्यगी उनकी उन्हाह ग-वई, बीजना माहकने उन्हें बाला

‘और बालक हर्नमिया।

बाह्य धीर मेरे समझनेपर वह बहाका मजबूत होकर राष्ट्रपतिका
हुप्रा मानकर बहा पत्ते आए थे।

आज भी बजाहुरसासका पित्त काश्मीरमें है, बहा प्रबाके नेता जेब
धमकुसा सीनबोमें बस पड़े हैं। मेने बजाहुरसाससे कहा है कि तुम्हारी
भावस्थिता महापर व्याधा है। इसलिए जकरत हुई तो मैं काश्मीर
बाहना धीर तुम्हारा काम कस्मा। तुम नहीं रहो। मेने यह भी उनसे
कहा कि जबकि मैं बबनसे बिहारधीर नोभाबासीने ही करने बा मरनेके
लिए बधा हू, परतु काश्मीरमें भी मुसलमान भाइयोका ही सवाल है,
इसलिए बहा बा सक्या हू। बहा जाकर काश्मीरके राजासे निजता कस्मा
धीर मुसलमानोकी बसाईका काम कस्मा। लेकिन बजाहुरसासने अभी
इस बातकी 'हू' नहीं बरी है।

सार यह कि अब जब हमारे हानने स्वराज्य आ गया है तब हमसे
प्रत्येकको अनुशासनसे, निमसे धीर समझारीसे बजना चाहिए, तभी
हिंदुस्तानकी आजादी बोना बेगी।

जैसे कल मैंने आज लोगोंको राजासोकी बात कही थी वैसे आज मैं
आपारियोके बारेमें कहना चाहता हू। कल मैंने कहा था कि हिंदुस्तानमें
न बिजनाका राज होगा, न नबाब मोपासका, न निजामका राज होगा,
न काश्मीरके महाराजाका, राजा मोम केवल हिंदुस्तानकी रैयतके
निश्चलतागार होने।

ऐसा नहीं ही सफला कि हिंदुस्तानकी रैयत एक जगह तो आजाद
ही जाय और दूसरी जगह गुलाम बनी रहे। अब आजादी होती तो वह
बगीके लिए होती।

अब आजादी तो आ ही रही है, क्योंकि अगर अंग्रेज बरीक है और
मैं समझता हू कि मैं हू, तो उन्हें बसे जाना है। बाइसराय साहब साउथ-
वेस्ट साइन तो यह कह रहे हैं कि हमें जल्दी-से-जल्दी महासे बसा जाना
है और ये अपना बचन पालने ही।

अब ये आ रहे हैं तब हिंदुस्तानमें हमारा ही राज हो जाता है। फिर
तब उद बचना शक हो बाबना तो हम आपसमें जगडा करेगे ? क्या राजा
मोम दमरो नबाबने ? नहीं, ये सबी जगडाके दुस्ती बन जायने। यानी

ये सब बर्मेया-बर्मे जनताके सेवक बनें तभी ये हमारे राजा रह सकेंगे ।

इसी तरह हमारे ऊपर व्यापारियोंका राज भी नहीं होना चाहिए । हमें तो गव चाहिए भगिनोका । यही हमारेमें सबसे ऊंचे हैं, क्योंकि उनकी सेवा सबसे बड़ी है । तभी तो मैं खुद यही बन गया हूँ । भगिनोके राजमें मेरा मतलब यह है कि एक नैहृतरको आपने अपना अमात्य बना दिया तो फिर आपकी उसकी बात उनी तरह माननी है जिस तरह छोटे-बड़े सभीने अपना-अपना कर्तव्य पाता था । अथवा लोग कर्तव्य-पालन किता तरह करते हैं, इसका मैं गया हूँ ।

मैं कई बार बदन गया हूँ । एक बार तो बहुत सीन बरमतफ़ रश, परसब मैं लडका था । बादमें दो-तीन बार मैं लडका ही आया हूँ । बहापर लोग इसने कमलवार हैं और कमरेके पास है कि पुलिसको हानमें कभी बहुत नहीं लेनी पड़ती । जबस एक छोटा-सा डका मैं अपने हाथमें रखते हैं । लोग जानते हैं कि ये हमारे सिबमतगार हैं, इसलिए उनके कहनेके मुताबिक चलते हैं । पुलिस भी सोचोका काम पूरी कोशिशमें कर लेती है । बहापर रिश्त नही पड़ती । कोई देने काय तो भी पुलिस लेती नहीं ।

हमारे हिन्दुस्तानकी पुलिसको भी सब ऐसा ही बनना है । उन्हें चाहिए कि ये बिलकुल रिश्त न ले । अगर उनका पेट नहीं भरता तो ये सरकार साहबसे अपनी तनखाह बढ़ानेके लिए कहें, बन्देबसिलने कहें, नैहृत्बीसे कहें । जब बड़े-बड़े मफ़्दर और प्रबाल लोग हजारों पाते हैं, सब सिपाहीको क्योपाय ही सब अपने किने काय ? ये लोग इसबान करेंगे । पर रिश्त लेनी छोड़नी चाहिए ।

व्यापारियोंके लिए भी मुझे नहीं कहना है । ये सब एक ही काय और मिलकर कहें कि हम सबको उम्मा बनिवा और सल्ला मारवाही बनना है । भिन्ना बनिवा यह है जो उम्मा सोब तीवता है । हमारे यहा बिसने बसिए, बिसने मारवाही और बिसने व्यापारी हैं उन सबको दफ़्ते होकर नियम करना है कि हमने कोई भीरवाबार नही करेया, कोई रिश्त नही लेया और न देया ।

इतनी बात ने कर लेंगे हैं तो फिर राबर्ट बाबू को जो सबबूरी मजदूर होती है और उसको जाला किसानों ने उनके रास्ते में जो कठिनाइयाँ पैदा हो जाती हैं वे जाती रहेंगी। मेरे पास एक बात बाबा है कि 'भापने नमक-कर उठवा हो दिया, पर नमक अब पहले से भी ज्यादा महंगा हो गया।' ऐसा क्यों होता है? मैं जानूँ कि नमक-कर उठ जाने पर तो हमें नमक करीब-करीब मुफ्त से मिल जाता चाहिए। इसके बिना व्यापारियों को अपना व्यापार भुलकर हिन्दुस्तान के बिना ही व्यापार करना होता। उन्हें चाहिए कि वे बीरब्रह्मचारि विमल्वचन का लें। अब ऐसा होना सभी सरकारी सरकार के बीर अपना-अपना काम कर लेंगे और राजाजी, राबर्ट बाबू, बहादुरलालजी, मजदूर, गांधी और बीगले भारी बीर अपनी अपनी हर तरह की सेवा कर लेंगे। अगर इसके बाद भी हिन्दुस्तान की जाला-बीला नहीं मिलता, मुल्की कुचलाही नहीं बढती तो फिर आप लोग उन्हें निकाल बाहर कीजिए।

लेकिन आप उन्हें कैसे निकालेंगे? क्या आप बाइसरायल के हाथों उन्हें निकलवायेंगे? नहीं, बाइसरायल तो आप धारामने बैठने के लिए करेंगे। आप खुद अपने बीरों को कैद कर दें। जैसा कि कम मैंने जिन्ना बाइसरायल के कैद करके ठीक बहावा बा। और सब आप उनके अपने नमक का काम करवा लेंगे।

मैंने बहादुरलालजी से सुना है कि सबलमें लोग मूखो मर रहे हैं। यह मुनकर मुझे दुःख हुआ। बाईसरायल के हगारे बाब किदना ही युनाइ किया हो, तो भी उन्हें बाबा तो मिलना ही चाहिए।

हमारा मुल्क बहुत बड़ा है। हमारे व्यापारी ठीक से नहीं और हमने अपना ही तो हम नहें कि जबतक हिन्दुस्तान बिना है तबतक मुनिवा कैने नूनी मरेगी? हम जने जाला देंगे। मैं तो बलिवा हूँ, सिबायल बाइसरायल। यदि सब बलिवा और व्यापारी मुझे मदद दें, सरकारी सरकार भी मदद दें और सब मुसलमान मदद दें तो मैं उनको जाला दे सकता हूँ। मैं उन बाबकों बाबमें बिना कहीं तैयार नहीं हूँ कि हमारे मुल्कमें जंगी पैदावार कम है। अगर आप काफी मेहनत करें, धनसे काम लेंगे, पैदावार जैसा ठीक बाबा हो बाब हो बहादुरलाल जाला मिल

सकता है, लेकिन धकेले हाकने तो तात्बी नहीं बनती। मुझे सबसे बड़ा मिले सभी तात्बी बन सकनी है और इसकी जोरपी बन सकनी है कि आप सभी प्रसन्न होने और दुनिया भी प्रसन्न होगी।

अगर आत्माव हिन्दुस्तानमें सभी अपने वर्तमान धामन करें तो सारा हिन्दुस्तान खुश हो सकता है, यह मैं निश्चयपूर्वक आपसे कहता हूँ।”

: २७ :

गोमवार, २ जून १९४७

(लिखित संदेश)

राजनैतिक क्षेत्रमें क्या हुआ या क्या हो रहा है यह मैं आपको बता नहीं सकता। लेकिन चीन-भार रिले जो मैं कहता आता हूँ, वही आप आपको याद दिखाना चाहता हूँ, यानी आप जनताको फिक नहीं करनी चाहिए कि बाइसरायन विचारधारे क्या नाए है। हमें तो इस बातपर ही सोच-विचार करना है कि कैसा भी चीन सामने आवेगा, उनके बारेमें हमारा धर्म क्या होगा चाहिए। यह बात तो हमको साफ कर देनी चाहिए कि यह अवर्तमानमें कोई चीज कमर नहीं करेगा।

इन चीन-भार रिलेसे बिन सोच-विचारका सिद्धसिद्धा हमने बताया है उसकी लेते हुए अब हमारे सामने स्वागत आता है कि हमारे डाक्टर और वैज्ञानिक देशके लिए क्या कर रहे हैं। वे सोच विवेची मूल्योंमें तो नई-नई बातें और इलाजके नये तरीके नीबनेके जीकसे करते हैं। मैं तो उनमें बहुतों कि उन्हें अपना ध्यान हमारे मूल्योंमें साथ साथ देहासोत्रीओर देना चाहिए। फिरतो उन्हें फौरनपता चलेगा कि हमारे अब डाक्टर और डाक्टरनिया वही कामपर जुट सकने हैं। लेकिन पश्चिमके तरीकेसे वे नहीं जुट सकेगे, बल्कि हमारे अपने तरीके से देहासने जुट सकेंगे। तब उन्हें बहुतों देवी इलाओका भी पता चलेगा, बिना वे अच्छी तरह जाममें आ सकेंगे। हमारे देशमें इसकी वही-बुटिया है कि

हिन्दुस्तानकी बाहरसे बसाइया बनानेकी जरूरत है ही नहीं। लेकिन बनाने जग्यादा फायदेमन्द तो यह होगा कि ये हमारी जनताको सही जीवन शैलीका ठीक तरीका बता दें। और वैज्ञानिकोंने ये क्या कहा। क्या ये जग्यादा सुराफ पैदा करनेकी ओर ध्यान दे रहे हैं? और यह भी लफ्फी खादके बारेमें नहीं, बल्कि जमीनको बाकायदा अच्छी तरह जोत-बोकर और कुदली खाद देकर। नोबेलप्राप्तियों ने देखा कि बड़ाके लोग एक जगली घूम (बनघुमी) जो नवियोंका पानी रोक देता है, उसका भी उपयोग कर लेते हैं। ऐसे काम हमारे डाक्टर सब करने जबकि वे अपने लिए नहीं, बल्कि देशके लिए जीना सीखेंगे।

जब मैंने जवाहरलालजीके प्रमुख कामके बारेमें लिख किया था। मैंने उन्हें हिन्दुस्तानका नेताका जगनाह कहा था। आज जब अमेरज अपनी ताकत बहासे उठा रहे हैं तब जवाहरलालजी बगह कोई दूसरा नं नहीं सकता। जिसने विनायकके गहलूर स्कूल हैरो और केम्ब्रिजके विद्यापीठमें छात्रीय पाई है और जो बड़ा बैरिस्टर भी बने है उनकी आज अमेरजोके साथ बातचीत करनेके लिए बहुत जरूरत है। लेकिन अब वह समय जरूरी ही आ रहा है कि जब हिन्दुस्तानकी अपनी रिपब्लिकन पदता प्रचलन चलना होगा। जर्मिया बिना होता तो मैं उसका नाम भाव जोनोंके सामने रखता। अगर कोई महादुर मेहतर लखी हो, बिना ज्ञानकी ही और मूढ़ हो तो मैं सहेसितसे चाहूंगा कि ऐसी कन्या हमारी बहूनी प्रेमीडेंट बनें। वह कोई बेकारका स्थाव नहीं है। ऐसी लडकिया जरूर मिल सकेंगी अगर हम उन्हें बूढ़नेकी कोशिश करें। क्या मैंने गुलनार, भीलाला मोहम्मद अपनी साहबकी लखकीको नहीं मृता था? मैनिन उन रेवफूक लखकीने तो ज्वैब कुरैशी नाहबसे छापी कर ली। वह एक बका लो कलीर पी और जब अपनी पाई सेलमें ये सब मुझसे मिली थी। अब गुलनार लो कई होपियार बन्नोंकी आ है, लेकिन वह मेरी बारिदा अब नहीं बन सकती।

हमारे अदिव्यके प्रेमीडेंटको मरेबी जाननेकी आवश्यकता नहीं होती। उनकी मददके लिए ऐसे लोग जरूर होंगे जो विचारसमने होकि-दार होंगे और विदेशी जग्याह भी जानते होंगे। लेकिन यह सब स्वप्न

तो तभी पूरे हो सकते हैं जबकि हम एक दूसरेको मारनेसे बाध आए और पूरा-पूरा ध्यान बेहोशकी तरह हैं।

: २८ :

३ जून १९४७

माइयो और बहो,

हमारी सम्झने यदि सीमाने तारीफ़के बावक काम नहीं किया है तो हम कहें कि उसने तारीफ़के बावक काम नहीं किया। इसी तरह अगर कावेरने तारीफ़के बावक काम नहीं किया है तो हम कावेर-बालोचि भी कहें कि बावक काम तारीफ़के बावक नहीं है। जब ऐसा होता तभी वह पचासवीं राज बनेगा। अगर एक गिरोह अपने मनसे चलता रहे तो वह पचास राज नहीं हुआ।

जगतन वह है जिसने रास्ते चलनेवाला जो बोले वह भी सुना नाम। जब हम जगतन कायम कर रहे हैं तब हमारा राजन बाहिराजके भर्त्से नहीं है और वह जवाहरराजके घरने भी नहीं है। मैंने तो जवाहर-राजकी सेवाका बावसाह कहा है। और हम तो गरीब हैं। ऐसे गरीब कि हम पैदल चलेंगे, मोटरमें नहीं बैठेंगे। अगर कोई मोटरमें बिठाये पावे तो भी हम कहेंगे, 'आपकी मोटर आपको मुबारक हो, हम तो पैदल ही जानेवाले हैं। कुछ ज्यादा खर्चेंगी तो एक रोटी ज्यादा खा लेंगे।' पचासवीं राजने इस तरह रास्ते चलनेवालोंका ही राज होता है। हरदम जो मोटरपर ही चलता रहता है वह तो भिगड़ जाता है। मन्त्रोर्षे गहनेवाला आदमी गन्ध नहीं बना सकता। इसीलिए मैंने कहा कि अग्नेय जो बुनियातके बावसाह बने हुए हैं वे हमारे लिए कुछ भी सोचें तो उनसे हमारा काम नहीं चलता। अगर हिन्दुस्तानका बावसाह भी कुछ सोचें और हमारी मनमन्त्रे वह ठीक नहीं हैं तो हम कहें कि वह ठीक नहीं है। जब मैंने कहा था कि चोरबाजारके लिए अनिष्ट गुनहवार हैं। नामान्य साधिर और मृन्में फर्क उठना ही है कि मैं सारे हिन्दुस्तानकी जगति

करना हुआ और दूसरे ताबिर अपना घर करते हैं। जैसे राजेश्वर बाबू सारे हिंदुस्तानको खाना खिलानेकी फिकर करते हैं उसी तरह मैं भी करता हूँ।

मुझसे कहा गया है कि आबकलका व्यापार बनियोके हाथमें तो बहुत कम रह गया है। बहुत बोरे ही बनिए गोरजावार कर सकते हैं। यह सारी अबाधुबी सरकारी सेक्टेरियटकी बचहसे है, क्योंकि सारा काम सरकार करती है। खाना देना राजेश्वर बाबूके हाथमें है जो विहारके बाबूबाहू हैं और कपडा देना राजाजीके हाथमें है जो मद्रासके लोकप्रिय मंत्री रह चुके हैं। फिर भी लोगोको बीजे नहीं पहुँचती, क्योंकि सिविल सप्लिसमें बड़ा भ्रष्टाचार चल रहा है। अगर राजेश्वर बाबू और राजाजीके अगल-अगलमें बढमास सेवक हैं और उन लोकोकी बेचबाल नहीं कर पाते तो उस बुराईमें राजाजी और राजेश्वर बाबूका भी ऐव माना जायगा। मैं नहीं जानता कि सरकारी नौकरोको ऐमा बताना कहातक गमत है, लेकिन इसना बरूर कहूंगा कि हमनेसे कोई चोरबाजारका काम न करे। सरकारी अफसर अगर ऐसा करते हैं कि बिनपर उनकी मेहरबानी होती है उन्हें उनके बरके आबमियोकी सख्याने हुगुने-सिगुने राशन टिकट दे देते हैं तो वह कार्य सेनेवाला और सेनेवाला दोनों ही बढमास हैं। हो सकता है कि आमतक ऐसा जो कहा है वह बहुत कुछ अग्रेजोके रोम और बरके मारे बला है, लेकिन अब भी वह खिलसिला जारी रहता है तो फिर भगवान ही हिंदुस्तानका जसा कर सकता है। पर अब वह नहीं होना चाहिए। आप ऐसी बात नहीं रही कि साहब बहादुरने जो हुक्म दिया, वह बीसा भी हो हमें पातला ही है। अब हमपर बिबेसी मानिक नहीं है। राजेश्वर बाबू ऐसा हुक्म नहीं दे सकते। उनके पास पुलिस है ही नहीं जो बबरबस्ती हुक्म मनवा सके। राजाजी या नेहरूजी या मरदार जी अपना हुक्म इस तरह नहीं मनवा सकते। सरदार बलदेव-सिंहके पास फौज है नहीं, पर वे भी वह नहीं कह सकते कि मैं सारी फौज तुम लोपोपर छोड दूंगा और तुम्हें बचा दूंगा। अग्रेज अफसरको आप निकाल नहीं सकते थे, आप इन्हे निकाल सकते हैं। वे आपको बंध करके ही आपपर राज कर सकते हैं।

मैं आप लोगों को यह बताना चाहता हूँ कि आपके आपका पचावती राब बुरा हो गया है। पूरा राब हाथ आनेमें अब बारह महीने हैं जबतक जयवान ही जाने क्या होता है, क्या नहीं। पर आपकी पचावती बरको आपने ही अपनाया है। हमने कोई देणका नुकसान करके अपना पैट न पाये।

जो निमित्त नबिसबाजे हैं—बाजे से चोरे हो या फासे, हिंदू हो या मुसलमान, सेन्टेटेरियटमें काम करनेवाले हो या प्रुसिसमें बड़े अफसर हों—बिस्-बिसको मेरी आवाज पकचती है उनमें न कहूँ कि अब आपका फर्म बस नूना बक गया है। आप लोग सब अब साफ़ धीर सुबरे बन जाय। सभी स्वराम्यका यह सारा काम आसान हो जायगा और आवादीका सबको अनुभव मिलेगा।

: २६ :

४ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोग जानते ही हैं कि मैं इस समय सीवा बाइगरामने मिलकर आ रहा हूँ। इसका मतलब यह नहीं कि मैं उससे कोई चीज लेनेके लिए गया था, न उन्होंने ही मुझे कुछ देनेके लिए बुलाया था बल्कि हमारी जो बात बस रही थी वह पूरी भी नहीं हो पाई थी। फिर भी मैंने जस्टिसेटन साहबसे इसोबत से जी धीर कहा, 'जहाँ तक बल पड़े और जहाँ तक इन्सानके आदमी बात है, मैं प्रार्थनाका समय बचना नहीं चाहता।' उन्होंने मेरी इस बातकी बल की और कहा कि हमारी बातें जयनें हो जायगी।

मैंने आपसे कहा था कि हम मजबूर होकर पाकिस्तानके लिए एक राब भी न जाएँ देनेवाले नहीं हैं। यानी हिंसा, खीज साकर नहीं करेंगे। बुद्धिमे यानी जालिमे से अपनी बात हमें समझा दें और वह हमारी बुद्धि को बचनेगी नहीं हमें पारिम्त्यान देना है।

मैं यह नहीं कह सकता कि यह सारा नृत्तिका ही प्रयोग हुआ है। कांग्रेस बर्किंग क्रमेटी कहती है कि 'हमने उसके बारे में कुछ नहीं किया है। उसने सारे लोग मर रहे हैं या मराना, चायदाब जल रही है, यह देखकर हम डरे नहीं हैं। हिंसा के सामने हम साधारण हो गए, ऐसी बात हरगिज नहीं है। हमें धाय डरपोज्ज न लगने। लेकिन जब हमने देखा कि मुस्लिम लीग को हम और किसी भी तरीके से मना ही नहीं सकते, तब हमने यह रास्ता पसंद किया है। क्योंकि एक बार मुस्लिम लीग कुछ भी बात मान लेती है तो हमारा काम सरल हो जाता है। मगर यह कि हमने डरकर नहीं, परिस्थितिको देखकर पाकिस्तान व हिंदुस्तानका बंटवारा मान लिया है।

हम किसीको मजबूर नहीं करना चाहते। बहुत-बहुत कोशिशें की। बहुत समझाया, पर वे लोग विमान-परिपट्टे काए ही नहीं और लोग-बाने यही कहते रहे कि बड़ा आने में हमें हिंदू-मजबूतका डर लगता है।

ऐसी हालत में वाइसराय क्या करे ? वे कहते हैं कि हमें हर हालत में १९४८ की जून में हिंदुस्तान छोड़ जाना है। धाय उन्हें रोके तो भी वे उसमें ज्यादा रुकना नहीं चाहते। वे कहते हैं कि हमें हिंदुस्तानको पूरी आजादी देनी ही चाहिए। ऐसा वे क्यों कह रहे हैं, यह समझना है। धाय कहेंगे कि अब वे बुनियात में ही टाकत नहीं रहे हैं, इसलिए वे मजबूर हो गए हैं। हम तो चाहते हैं कि वे आज भी फर्स्ट क्लास पावन् (अम्बन बर्थ-की टाकत) बने रहें। ठीक है कि उन्होंने डेड भी बरसतक हमको सताया है और यह भी मुझे याद है कि आज ३२ बरससे हम उनके साथ लड़ रहे हैं। पर अब जब जानते हुए भी मैं कभी अपने बुद्धिमत्ताको बुद्धिमत्ता नहीं मानता। मैं तो तब भी ईश्वरसे कहूँ कि हे ईश्वर, तू उनका भला कर, और ईश्वर जो न्याय होगा सो करेगा।'

उसकी अमोघ शक्तिके बारे में इस समय अधिक नहीं कहूँ। इतना हम समझें कि हरेक इन्सान मनुष्यसे बराबर है। हिंदू, सिख, मुसलमान सभी। ऐसा कह सकते हैं कि मुसलमानों ने बड़ी गलती की है, पर हम अपनेको अच्छे किस आधारपर कहें ? न्याय करना ईश्वरपर ही छोड़ें।

इसका मैं कटुता कि उनका पाकिस्तान मायना नमस्त पीन बी, पर मैं हुनरा कुछ चीज ही नहीं पाते । वे कहते हैं कि हम नहीं रह ही नहीं सकते कहा गया है हिंदू हो । इससे उनका नुकसान है और मैं ईश्वरने जानता हू कि बल-से-बल वह उन्हें इस नुकसानसे बचा से । अब मेरा भाई, मेरा सहचर या मित्र भी मेरा नुकसान करना चाहे तो मैं तुम समने सहयोग नहीं दे सकता । वह सब ही उसे नुकसान न जाने, पर अब मैं उसे नुकसान समझता हूँ तो उसमें मैं उसका साथ देने दूँगा ? ऐसा करना तो मैं अपनी-की दोनों पाटोने बीच मिला जाने-भासा हूँ । मैं अपना पाट धरती ही क्यों न दूँ ?

यही सबे-की बात । इसका मैं आपको इसमीनान विचारता हूँ । बाइबलमें मायनकी देखते हुए नहीं, पर अपनी निजी बातचीतके आधारपर कहना चाहता हूँ कि इस निर्णयके पीछे बाइबलमें कोई हाथ नहीं है । सब नेताओंने मिलकर इस निश्चयकी किया है । नेता लोग कहते हैं कि हम बीबीने बात-बात बरसतक कहा, हिंदुस्तान एक है । केंब्रिज मिशनने भी अच्छा निर्णय किया; लेकिन लोग सुनर नहीं और वह रास्ता लेना पड़ा । उन्हें फिर हिंदुस्तानमें जापिन आना ही है । पाकिस्तान बन गया तो मैं आपसमें सेन-सेन बसेबा ही, आना-आना भी रहेगा । हम उम्मीद रखें कि हमारा सहयोग बना रहेगा ।

लेकिन अब यह फैसला ही क्या तो क्या मैं यह कहूँ कि हम सब फाउण्डे वाली बन जाय ? या बाइबलमें कुछ कि साथ बीबीने पढ़ो ? बाइबलमें तो कहते हैं कि मैं यह चाहता नहीं था । अबाइरबाज फाउण्डे-बी औरने कहते हैं कि उन्हें भी यह बात पसंद नहीं है; पर वे सब पॉलिथिनिक् फाउण्डे आधार बन गए हैं, उसकारके कारण नहीं, क्योंकि हिंदू, मित्र सभी कह रहे हैं कि हम अपने करने रहेंगे, उनके कहा नहीं । हिंदू, मित्रोंने समझने रहनेको तैयार है, क्योंकि सिव जमी उसकारके औरने नहीं कहें कि तुम्हें यूरोपमें जानने निर भूकाना ही पड़ेगा ।

मैंने मास्टर कारुनिहने भी, बी साथ मिलने आए थे, कहा कि आप एक नहीं बना साथ बन जान, बिना भारे करना सीख से तो पचासका सारा इतिहास बचन आया और हिंदुस्तानका भी इतिहास बचनेवा ।

मित्र साक्षात् करने का है, पर बहुत दूर है। इसलिए अनेक उनसे मिले हैं। अगर मित्र अपने बहुत दूर बने तो फिर आसपास का एक दुनियावदर हो जाय।

आपका कई मुनासिबे लिए मैंने यह सब बताया। आप जिसने कई न माने कि हिंदुस्तानके दो हिस्से हो गए। आपने क्या माना है सब कह दिया गया है। कांग्रेसने नहीं माना था। मैं तो कहा था ही नहीं, पर सर्वेसर्वाले सबकी बात मान लेती है। उसने जान लिया कि कांग्रेस ने नहीं मानते हैं और हिंदू भी। आपके हाथने कुछ कहा नहीं है। न आपके हाथने, न मुसलमानोंके हाथसे ही कुछ कहा है। बाइबलमें आता-जाता तो कहा ही है और मुझे भी विश्वास मिलता है कि 'आप सब मित्र' यह आनेसे सब इमारा सब फैसला चल रहा जायगा। आप किसी भी उम्मेद नहीं होना। वेरा (बाइबलमेंका) काम करना ही है कि अपना पता हस्ताक्षर होती है उसके आगे अनेक लोग ईमान-गरीबें जान कर और आसिने बने जाय यह देखें। हमें सबके लोग यह नहीं जानते कि उनके जालेंदर क्या कहा-मुझे क्या जाय।'

मैं न तो कह दिया था कि आप बाइबलमेंका काम न करें। मैं तो मुनासिबता करता। पर मेरी कौन सुने? आप मेरी नहीं सुने, मुनासिबता मुझे छोड़ दिया और कांग्रेसने भी मैं अपनी बात पूरी-पूरी समझ नहीं आता। मैंने कांग्रेसका मुनासिब है, क्योंकि हिंदुस्तानका है। मैं १९ बर्तों का मुनासिब पूरा प्रयत्न किया। पर सब भी हो गया। मैंने इस चीजपर कर मे। हमें यह सूची थी कि हम सब चाहें उसे मिल जायेंगे।

आज मैं उनका कहता कि आप बाइबलमेंको पूरा जान लो क्योंकि मैंने सब बातें उनका है कि हम आपसे भी भी बात न करे और गरीबों का मुनासिबता करने। जीवनाले बाइबलमेंसे कहें, मुनासिबता करने कर और गरीबों के बाइबलमेंसे कहें, वह हमें सब जानेंगे। हम मुसलमानों का भी नहीं सब कहा है। कांग्रेस का काम है, मैंने आपसे कामें मिलाने हो गए हैं। सब बाइबलमेंको मैंने आपसे मिलाने किया नहीं पढ़ी कि 'बाइबल, जोड़ा तो

‘तीने उलगडा!’ योग ऐसा करने उन्हीने यह गप्पा मिला। उसना तरल दुःखी बादमगन पहन है कि जिने दिलमे डर बना रहता है कि ‘योग बता देनेगी, फायदेम क्या देनेगी। मेरे कि ईश्वरका नाम लेकर मैं उगा ?’ तो हम उनकी उमावहारीने विस्वासाग्ने अचछप कोई दुग गमभन करी हो।

तंनिम जिना माटवने मं कशता ह, मित्रत तना इ पि गव तो भाप
 त्म गवने मीरी वात क्ते । जो इया ठीक है, पर भावेंकी सब पारंपार्य
 त्म निम । तमगय तोथन भाप भूजवाय भीर सबजो समझीने
 त्मने न । इद कर्मेने नि, भाप ह्य लोपोरों धवने पान गुता हैं, ताकि
 ट्मण गाया भात दो ।

: 30 :

७ जून १९६७

[illegible]

उन्होंने गुजरात विद्यापीठ व काशी विद्यापीठमें पाली भाषा पढाई और अपनी अगाध विद्वत्ताका ज्ञान-दान किया था ।

उन्होंने मेरे पास १०००) मेघ दिए, जो किसीने उनको दिए थे । उन्होंने मुझको सिखा था कि किसीको पाली पढनेके लिए जका मेघ देना । लेकिन मैंने उनसे पूछा कि क्या जका जाकर पढनेसे किसीको बौद्ध धर्म प्राप्त हो जायगा ? मैंने तो दुनियामें बीड़ोसे कहा है कि आपको अगर बौद्ध धर्म जानना है तो आप उसके जन्म-स्थान भारतमें ही उसे पायेंगे । जहापर वेद-धर्ममें वह निकला है, वही आपको उसे खोजना है और शक्यार्थ-जैसे अद्वितीय विद्वान् जो अन्धकार बुद्ध कहलाए उनके श्रमोंको भी आप समझेंगे तब बौद्ध धर्मका गूढ़ रहस्य आप जान पायेंगे ।

लेकिन काँसबीजीकी विद्वत्तासे मैं अपनी तुलना नहीं कर सकता । मैं तो इन्ग्लैंडमें भोज खाकर बना हुआ बैरिस्टर हूँ । मेरे पास संस्कृतका ज्ञान जरा-सा है । अगर आज मैं महात्मा बना हूँ तो इसलिए नहीं कि अंग्रेजीका बैरिस्टर हूँ, पर इसलिए कि मैंने सेवा की है और वह सेवा सत्य और अहिंसाके द्वारा की है । इस सत्य और अहिंसाकी पूजामें जो थोटी-सी सफलता मुझे मिली थी वही गई उसीके कारण आज मेरी थोड़ी-बहुत पूछ है ।

काँसबीजीकी समझमें वह समझ गया कि अब वह शरीर अधिक काम करनेके योग्य नहीं रहा है तो उन्होंने धनदान करके प्राण-त्याग करनेकी ठानी । टहनजीके कहनेपर मैंने उनका अलमल उनकी (काँसबीजीकी) धमिन्दासे तुलनाया, पर उनका हाजमा बहुत कुराब हो चुका था और कुछ भी पुराक ने ही नहीं सकते थे । तब गुजरात सेवाश्राममें वालीस गिन्तक केवस जसपर ही रहकर उन्होंने शरीरात् किया । बीमारीमें नाममात्रकी सेवा और औषधि भी नहीं ली । जन्म-स्थान बोधार्में जानेका मोह भी उन्होंने तबा और अपने पुत्र गायिको अपने पास न जानेकी आज्ञा दी । नृत्पूजे बादके लिए कह गए कि 'मेरा कोई स्मारक न बनाया जाय ।' शरीरको बसाने या दफनानेमें जो मस्ता पड़े वह किया जाय और इस तरह उन्होंने बुद्धका नाम रटते-रटते अन्तिम

गहरी निद्रा ली, जो हरेक जन्मनेवालेको कमी-अ-कमी लैनी ही है। मृत्यु हरेकका परम मित्र है, वह अपने कर्मके मुताबिक आवेगा ही। मने ही कोई यह बता दे कि अमुकका जन्म अमुक समय होगा, पर मीठ कब आवेनी यह कोई भी आमतक नही बता पाया है। नकैयाके फिस्तेमें हमने यही देखा।

आपका येने इसमें इतना समय बिता, इसलिये मैं खमा चाहता हू।

कल रात मेरे पास छार आया कि 'आपने चार-पाच दिन इतनी लबी-लबी बातें बताई कि हम एक हफ्ता भी पाकिस्तान जवाबदारीसे देना नहीं चाहते—बुद्धिने हृदयको बाधत करने मने ही जो पाहे लो लें, लेकिन वह लो बन गया। अब आप उसके खिलाफ अभियान क्यों नहीं करते ?'

धीर ने पूछते हैं कि सब आपने ऐसी बातें क्यों कही थीं धीर अब आप ठके क्यों बने हैं ? आप कावेसके वाली क्यों नहीं बनते धीर उसके वृत्तान्त क्यों बनते हैं ? आप उसके खादिय कैसे रह सकते हैं ? अब आप अनगल करके भर क्यों नहीं आते ?

ऐसा कहनेका उनका हक है। पर मुझको सब भाईपर गुस्सा करने-का हक नहीं है। गुस्सा करनेका मतलब है थोडा पालत होना। अमेजीमें कहा है—'ऐयर डब शार्ट मैडनेस' धीर भीतानें भी कहा है—'कोबा-भूपति समोह समोहात्मसुविभिन्न' लो मैं पीता सीखा हुआ आखरी गुस्सा कैसे करू ?

किमीके कहनेपर अनगल कैसे करू ? मैं जानता हू कि मेरे जीवनमें एक धीर उपवास लिखा है। आगा का बहुतके उपवासके बावले ही मेरे दिममें यह बात बनी हुई है कि वह आभिरी उपवास नहीं था। एक धीर उपवास मुझे करना होगा, लेकिन वह फिरीके कहनेपर मैं नहीं करूंगा। मुदा अब कहेंगा, करना।

मैंने यह दिया है कि मैं जिज्ञा माहयका साक्षी बन गया हू। ये चाहते हैं, देनमें भाति हो धीर मैं भी वह चाहता हू। फिर जी अमर जगह-पाह बना बनता ही रहता है धीर साग हिन्दुस्तान डावाबोल हो जाता है धीर ईश्वर मुझे करेगा है—यानी मेरा दिल मुझने कहता है कि अब

संसारसे तुम्हें उठ जाना है तो मैं वैसा करूँगा ही । श्रीविज्ञाने मुझमें दस्तखत किए कि सिपाही मामलोंमें हिंसा नहीं करनी है और माउंट-बेटनने भी मुझपर अपना बाहु बसाया और कृपमानी या नेहरूके दस्तखत न लेकर मेरे ही दस्तखत किए । मैंने जवाहरलालकी रायसे उन्हें दस्तखत वे दिए । तब हम इस बातके तीन हिस्सेदार बन गए हैं । हमारे दोनोंके दस्तखत हैं इसलिए, और माउंटबेटन—बाइसरायके नाते नहीं, पर माउंटबेटनके नाते, क्योंकि वे गवाहसे भी ज्यादा बन गए हैं ।

मतलब यह है कि सारे हिंदुस्तानको शांत रखना है । अगर वह नहीं रहता तो क्या करना है, यह बिना साहबको उनका खुदा बतायगा । माउंटबेटन साहबको उनका गॉड बताएगा और मुझे मेरा परमात्मा बतायगा ।

लेकिन आपके द्वारा मैं उन दोनोंसे कहना चाहता हूँ कि वे जब कहेंगे तब मैं उनके साथ बैबल या मबारीजें, जैसे भी वे ले जाना चाहे मैं जाऊँगा । हवाई जहाजसे मैं नहीं जा सकता । उसने बसकर नीचे क्या बीछेगा ? मैं कभी हवाई जहाजमें जाता नहीं हूँ । हा, उसे नीचेसे देखना हूँ और एक मछली-सा वह बीछता है ।

गुट्याब अभीतक बस रहा है । शापकी खबर नहीं मिली है, पर जहाज घाट और मेवोंने सामने-सामने मोर्चा लगा रखा है । इतना भ्रष्टा है कि वे ऐसा पागलपन नहीं चाहते कि बम्बो, औरतो और बुद्धोंको मारने लगे । वे सिपाहीकी तरह आपसमें टक्कर लेते हैं । पर वे लड़े ही क्यों ? यह असता है, इसमें मेरी भी जरूरत है, बिनाकी भी है और माउंटबेटनके लिए भी जरूरतकी बात है । इसी तरह सरदार बलदेवसिंह और जवाहरलालके लिए भी यह जरूरतकी बात है । वह भ्रष्टा हुआ कि २ जूनको कोई आस बात न हुई और न ४ को ही हुई ।

पर एक काम बन गया है सही । पाकिस्तान और हिंदुस्तान बन गए और उनकी विधान-परिषद् बना दी गई है । क्या अब उन्हें मिटानेके लिए मैं मरने बैठूँ ? इस तरह मैं मरनेवाला नहीं हूँ ।

मेरे लिए ज्ञान देनेको एक बहुत बड़ा काम पड़ा है। कहने हैं कि भव हिन्दुत्वान्ता धीरोनीकृष्ण होनेवाला है। मेरा धीरोनीकृष्ण नी देहावीने होने वाली दर-धरने बगना बनेगा और वाद-म-बने बगना बनेगा होगा।

अगर वे कहते हैं कि एक विरवा-मिष्ट है, उसकी हम हजार निव बनावने—विज्जाका नाम में इसलिए मना है कि वे मेरे दोस्त हैं, जन्मी मेरा न्तमक हरेक निववासेवे हैं—तो मैं यह पनव नहीं बगना। अगर नुनव हो जाय या अपने काम विरवा-मिष्ट बन जाय तो मुझे हरेक नहीं है। न मैं उन नुनवासीके लिए विरवा-मिष्ट पान एक काम गिरावना। हा, यदि कोई काम-नून्कर उनकी जिने मष्ट करने जाता है तो मैं उसे डाट बगा दूना।

ऐसा नुनव होना है कि काम कायेमे यह तय कर लिया है कि वह हिन्दुत्वान्ता बहून-नी जिने बना वे और असपुने विद्या है। और का बाहरी है कि नारे हिन्दुत्वान्ता बहून बड़ी नीव बन जाय। तो उसने मेरा हाथ नहीं है। विद्याने जो मार-काट हुई उसने मेरा हाथ बगना? और काम हिन्दुत्वान्ता नीन-नी ऐनी नीव हो रही है बिज्जे मुझे कभी हो नके। तो नी मैं पटा है क्योंकि कायेम बहून बड़ी मस्या हो गई है। उन्ने मानने में उपजान नहीं कर सक्ता—लेकिन काम में मदीने पडा है और मेरे बिजने मयार बस रहा है। फिर भी मैं बिद्या क्योई यह मेरा ईश्वर ही बनना है। बीम भी है कागिर कायेसका कादिम ही है। अगर कायेस पागलपनपर उतर जाने तो क्या मैं भी पागलपन क्ये? क्या मैं करकर यह सिद्ध करने बंदू कि मेरी ही बाव बननी है? मैं तो कायेमनी, कायनी, नुनवनावेकी और अपने सामने बिद्या काहूकी बुद्धिप कोट करन चाहना है और उनमे हुस्वर बगना करना चाहना है।

बिद्या काहूके कह्या कि अब तो बापका 'पाकिस्तान निवाबाद' हो गया है! अब बाप मल्लोटेन साहबने पार को जते है? कायेसके पान क्यो नहीं जाने? बाप मल्लोटेन काहूकी और बा० काम साहबको क्यो नहीं बुजाने? उन्ने क्यो नहीं मनज्जने कि बिदिम तो नहीं, यह

पाकिस्तान कैसा अच्छा गुलाबका फूल है ?

लेकिन पाकिस्तानके बारेमें मेरे पास शिकायते धा रही हैं । प्राय ही एक बात मिला है, जिसमें लिखा है कि एक अशेष कंपनी हथियार बनानेके लिए साहीर बायगी । यह भी कहा जाता है कि मुस्लिम जीतने कामन-वेल्थमें गहना तय कर लिया है । वह औपनिवेशिक स्वराज्य ही कायम रखेगी ।

कावेमने औपनिवेशिक स्वराज्य स्वीकारकर कोई गुनाह नहीं किया है । उनमें तो वह धारवी तीरपर तत्काल अशेषोंको छटानेके लिए स्वीकार किया । पर विधान बनते ही वह मुकम्मिल आजादी में लेगी । फिर मुस्लिम भी क्या औपनिवेशिक पक्षपर ही बनी रहेगी ? हमारे दोनों विधान एक-से होने चाहिए । दोनोंने कहा है कि हमें मुकम्मिल आजादी चाहिए । सब मुकम्मिल आजादीको ही लेनेका जिज्ञासा भी बर्न हो जाता है । आपसमें लड़कर इस बर्नका पालन नहीं किया जा सकता ।

जब कि सारे हिंदू नगासे-नगाते बक गए सब भी उन्होंने न माना तो उनकी पाकिस्तान दे दिया कि बाबने तो शांति मिलेगी ।

कोई कहे कि मैंने ऐसा क्यों होने दिया । तो क्या मैं ऐसा करू कि कांग्रेस मुझने पूछकर ही सब काम करे ? मैं ऐसा बीबाना नहीं बना हू । और मैं कांग्रेसका बानी बनूँ, इसका मतलब सारे हिंदुस्तानका बानी बनूँ, क्योंकि कांग्रेस सारे देशकी है । ऐसा मैं तभी कहूँ जब मैं देखूँ कि कांग्रेस तो पूँजीपतियोंकी हो गई है ।

लेकिन अभी तो मेरी समझसे कांग्रेस गरीबोंका ही काम करती है । जैसे ही उसका रास्ता मुझसे अलग हो, जैसे ही उसका विभाग हथियार, फौज, कारबानोंमें जगा हो । मुझे तो उनकी बुद्धिसे मनस्काना है, अनजानसे नहीं ।

अनजन भी राजसी हो सकता है । ईश्वर भी मुझे ऐसे राजसी अनजानसे बचाए, वह मुझे राजसी कार्य, राजसी उच्चार, राजसी विचार सभीने बचाए रखे । अच्छा हो कि ऐसा मैं करू, उससे पहले वह मुझे उठा ले । मैं जब कहूँ, सांख्यिक और वैबी अनजन ही करता ।

: ३१ :

६ जून १९४७

घाय फिर एक बहाने प्रार्थनामें बिरोध किया ।

पापीबीने कहा, "मेरे कमरों सबी बिदही मुनामें मेरे कमर नहीं खोजता । मेरा खयाल था कि सब लोग मुझे मरने गए हैं । पर देखता हूँ कि ऐसा हुआ घुब नहीं है । उनके नामसे भयंर हो रहा है, पर होने भयंर चला ही होता । अगर वह बहाने बीचमें बीचने सबे तो भाप उसे लग न करे । कमरों उनमें छोटे कमर बटाया है और मुझे सिखा है 'भाप भाप जी न करे ।' वह बूझ जी नहे, प्रार्थना वह न होवी और भाप जी वह न होगा । ऐसा हर कोई प्राणी करने सबे तो शिष्टान्तका राज करनेवाला नहीं है । भाप लोग घाय रहे ।"

प्रार्थना नियमपूर्वक हुई और वह नहिना बीच-बीचमें बिस्तायी रही । प्रार्थनाके बाद पापीबीने कहा—"मेरे देखता हूँ कि भापको कभी लगा रही है, लेकिन मैं सुनने और भाप मुझमें सिर्फ खयाल है, पर भाप बात रहे, सबी मुना करता हूँ । इसका मतलब यह नहीं कि भाप भाप का खयालने बीचो बहुत हवा जी न करे । गरम ही नहीं, पर हवा मुझे नो सिखा रही है । यह सबी मेरे सिर्फ पता कर रही है, तो मैं भापको कभी रोऊँ ?" अगर भाप सबी पता बतावें तो मैं नहीं कहना कि पता बताता औरतका ही काम है । भाप पता का समझे है । औरत जी तो मरने बन मरती है । वह मरने सिर्फ नहीं तो वह मरता नहीं है, 'मिटर हाज है' ।

मनमें गोपीने कहा है, 'कभी नून वह मरने जाना चाहती है'

'इसपर सारी समझें भागी सिध्दतक औरतों होंगी हई, क्योंकि पापीबीके पीछे एक बुरा पता कर रहा था- बिदे कमरोंमें खोजी बता बिदा था । पापीबी बुरा जी यह देखकर सिध्दतक कर होने और अपनी बुरा बुरापी ।

लेकिन यह मजन केवल औरतके ही लिए नहीं है। ईश्वरके सामने हम सभी गोपिया हैं। ईश्वर स्वयं न मर है, न मारी है, उसके लिए न पक्षि-भेद है, न मोनिभेद, वह 'नैति नैति' है। वह हृदयकपी बनने रहता है और उसकी वसी है अंतरनाद। हमें निर्बल बनने जानेकी आवश्यकता नहीं है। अपने अंतरने होने ईश्वरका मधुर नाद सुनना है और जब हमसे हरेक वह मधुर नाद सुनने सगेया एक हिन्दुस्तानका भला होगा।

प्राच ठीक जैसे यह जीवन सुनाया गया है। वह बहन मुझसे कहती है, 'तुम बनने जैसे बाघी, तुम्हींने जिज्ञाको बिगाडा है। पर मैं कौन होता हूँ उसे बिगाडनेवाला ? मैं अगर कुछ भाषा कर सकता हूँ तो उन्हें बुझा ही कर सकता हूँ। साठीसे नहीं, बल्कि प्रेमसे। साठी या एटम बमसे तो विनाश हो सकता है। एटम बमने नाश ही किया है, किसीको अपनी ओर खींचा नहीं है। मनुष्यको अपनी ओर खींचनेवाला अगर जगत्में कोई जसनी चुबक है तो वह केवल प्रेम ही है, इसका मैं माफी हूँ। वह कहती है, 'कुरान मत पढो, अब बात ही मत करो, जगत्में जाकर रहो।' पर मैं बनने वाला तो भी आप मुझे सीख लेनेवाले हैं। इन्सान साथ-ही-साथ रहनेके लिए पैदा हुआ है। अगर मैं वह कमा सीक पाया होता कि बनने बैठ रहा, वही आपको सीख सकूँ तो फिर मुझे न भावण देने पडते, न कुछ कहना पडता। मैं एकतरफे बैठे भीन रहता और आप मेरे मनकी बात करते। पर अभी ईश्वरने मुझे इस बोध्य नहीं बनाया।

आप जानना चाहते होते कि प्राच इतनी बेर बैठकर मैंने पाइसरायसे क्या बातें की और उनसे क्या साया। वे क्या बैठे ? वे तो बेचारे हैं। उनकी न कुछ जेना है, न बेना है। वे तो कहते हैं कि मैं 'ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि हिन्दुस्तानका हरेक भावनी—हिन्दू, मुसलमान, सिख सब—इस बातपर विम्वार करें कि मैं यहाँ झूटने या आपसमें फिसाव करनेके लिए नहीं आया हूँ। हो सके तो जाति करार, बरजा जैसे भी हो, जैसे जानेके लिए ही आया हूँ। हम १५ अगस्तके बाद यहाँ नहीं रहेंगे। अगर गवर्नर-जनरल रहेंगे तो भी आपके कहनेपर। इस समय हमारे पास

धीपनिवेशिक स्वराज्यमें अधिक कुछ नहीं है, जो हम दे सकें। हमको प्राप्त करने मार मगाया होना तो धीर बात थी, लेकिन निजताके साथ जाननेमें वही तरीका थोड़ा है।'

बाइसरायने यह भी बताया कि 'हम इसलिए भिन्नतापूर्णक जाते हैं कि हिंदुस्तानने हमें सारकर फेंकनेकी कोशिश नहीं की। सन् '४२ में रूस, तार आदि काटे सही, पर वे थोड़े मादमी थे, करोड़ों ऐसा नहीं किया, लेकिन आपने धरापन्न बरती। आपने हममें इसना ही कहा, 'आप सबे जाओ', क्योंकि आप्णो यह बुरा लगा कि हमने हिंदुमें जहर फैलाया है। लेकिन कांग्रेसने हमें जहर नहीं दिया। उसने केवल असह्योग किया और हम समझ गए कि बिना आर्मल-ताके हम यहाँ नहीं रह सकते हैं, इसलिए हमने जाना स्वीकार किया।'

अगर हमारा असह्योग बुरा-बुरा होता तो आजने बहुत पहले धीर कही धक्के तरीकेपर अनेक सबे गए होते। कांग्रेसने विचारविमर्श, नौकरसि धीर सिपाहियोंसि भी कहा था कि आप सब महादे निजता आये। लेकिन वे कमचोर गटे, उन्हें छोड़ नहीं सके। फिर भी आप सोचते यह नहीं कहा कि 'हम उन्हें मार डालेंगे। उन्हें जहर दे देंगे।' हमारी इन भविष्यकी धमकीने परब सिवा धीर इन कारण से जा रहे हैं। लेकिन बाइसराय कहते हैं कि 'अब भी सोच हमपर मरोसा नहीं करते। एक असवारमानेने विचार है कि अनेक यहाँ सत्ता बनाने आए हैं और भारतके दो टुकड़े करके जा रहे हैं, ताकि दोनों टुकड़े सबे धीर एक-न-एक अनेकका सामन सकें। तो उन्हें यहाँ रहना मिल जायगा।'

यह तो क्या होया धीर मुझे आशा है कि अनेक इस बार क्या न करेंगे। अगर करे तो भी हम बुरा बहादुर बने। बहादुर सोच बोबेसे क्यों डरेंगे? अब वे मेरे साथ अराफतने बात करते हैं तो मैं क्यों डरूँ। मुझे बाइसरायने पूछा, 'मुझे तो मुझपर विश्वास है या मुझे भी नहीं है?' सब मैंने जम्मे कहा कि 'मुझे विश्वास न होता तो मैं आपके पास जाता ही नहीं। मैं सत्यवादी हूँ, बरीक हूँ।'

बाइसरायसे ऐसी हमारी बातें चलती रही धीर यह जो पाकिस्तान बना हिन्दुस्तान बना दिया गया है उनके बारेमें मेरे बिलमैं जो परेशानी है,

वह भी मैंने बाइसरायको सुना थी। तब उन्होंने मुझे बताया कि यह अंग्रेजना किया हुआ नहीं है। कांग्रेस और बीगने मिलकर जो मांगा है वही दिया गया है। और हम तरल ही इसलिये नहीं चले जा सकते कि एक छोटे बरके मामानके बटवारेमें उसकी फहरिस्त बनानेमें कुछ देर लगती है, तो यह तो इतने बड़े मुम्कनके बटवारेकी बात है। फिर भी मैंने उनमें क्या कि अब आप आराम करें। यह बटवारे आधिका काम हम आपमें मिलकर कर लें, यही अच्छा है।

आप सोचेंकि मार्कन दो-चार दिनसे मिलत कर रहा हूँ और आप भी करता हूँ कि अब आपकी जो चाहिए या मिल गया—चाहे कुछ कम भिना, पर वह क्या है वह तो बताइए। उसका नाम-ही-नाम गुलाबका है, या उनमें जूझू भी है? सुबाइए तो नहीं और यह तो बताइए कि आपके यहाँ सिखोंको और हिंदुओंको क्या है या उन्हें गुलाम रखा है? और सीमाप्राप्तने जनमत लेकर आप क्या सीमाप्राप्तने भी जो टुकड़े करना चाहते हैं? और बलूचिस्तानके भी?

क्या आप अब भी अपनी कार्रवाईसे नहीं बतावने कि आवश्यक मुमकमानोमें हिंदुओंको अपना दुबमन भागा, पर अब नहीं मानेये? पठानका हिस्सा नहीं करेंगे? बलूचका हिस्सा भी नहीं करेंगे और हिंदू-हिंदुआ भी नहीं करेंगे? हिंदुस्तान अलग रहेगा, पर आई-आईके तीरपर हम उसमें बटवारा कर लेंगे और अंग्रेजको बिना हमारी बाड़ी बनेगी।

मेरी इन बातपर वे मुझे गाली दे तो मुझे गम नहीं है। मुझे तो कल भी गाली मिली थी कि 'तू नर क्यों नहीं खाता।' पर वे ज़ुलासा तो करें कि उनका क्या क्या है? अब भी मेरे पाल क्यों नहीं आते? आपके पास क्यों नहीं आते? कांग्रेसी या वीर कांग्रेसीको अपने पास क्यों नहीं बुलाते? एक जमाना या अब कांग्रेस-बीगका समझौता उन्होंने किया था। अब और पक्का और मजबूत समझौता क्यों नहीं करते?

हम सब मिलकर कोशिश करें कि दुबमन न रहकर आपसमें दोस्ती बने। यह काम अकेले बाइसराय नहीं कर सकते, अकेली कांग्रेस भी नहीं कर सकती। सब मिलकर ही दोस्ती बन सकते हैं।

: ३२ :

७ जून १९४७

भाइयो धीर बहनों,

मेरे दिनभरे कहता हूँ कि, शार्पनामें दखल देना बेहूदापन है। मैं शार्पना तो रोक नहीं सकता, वह बसेगी ही। पर बेचता हूँ कि रोज कोई-न-कोई गिनायत रहती ही है। इससे मेरा दिम बहुत दुबता है।

कुरानकी आयत पढ़ते समय भाब फिर बिम्ब उठाया गया, लेकिन पाबीबी इस सारे समय भाब बंद करने शार्पना करते रहे।

फिर उन्होंने कहा—भाब मुझे नहीं सिखासिखा कामम करना है, मानी बायुमकलसे गहराती बासपर ही मैं कहना चाहता हूँ, क्योंकि मुकपूर बहुत काफी बनाव पड़ रहा है कि जबतक बाइसरायका ऐलाव नहीं हुआ सबनक तो मैं मुलाकफत करता रहा धीर बार-बार मैंने कहा कि हम जबरबस्ती कुछ भी मजूर करनेवाले नहीं हैं धीर भाब मैं चुप हो गया हूँ। मुझसे यह भी कहा जाता है, ठीक कहा जाता है। मैं कबूल करता हूँ कि मुझे भी यह विषय मज्जा नहीं लगा है, लेकिन दुनियामें कई चीजें ऐसी होती रहती हैं, जो धपने मजकी नहीं होती, फिर भी हम उन्हे महम करते हैं। इनी तरह इसको भी हमें सहन करना है।

एक मसगरमें निकला है कि 'धब भी मखिल भारत-कांग्रेस-कमेटीको हक है कि वह इसे नामजूर करवे।' मैं भी मानता हूँ कि मखिल भारत-कांग्रेस-समितिको ऐसा करेका पूरा हक है कि वे इस बातको म्बीकार न करें, लेकिन जिसके प्रति भाबतक हम मफाबार रहे, जिस कांग्रेसमें दुनियामें नाम म्माया धीर बिमने काफी काम भी किया, उनको मुनामज्ज एकदमने नहीं करनी चाहिए।

बहुतने सवातनी छुपाटूनके मूतको मानते हैं धीर उनके पासममें धर्म समन्ते हैं। नैनिन हममें कौन मज्जा मनातनी है, उसका म्बाब तो उन्हर ही मुनामजा। इनी तरह मज्ज कांग्रेस भी मधमको धर्मका सिबाब मज्जा है तो हमें कांग्रेस बंद कर देने की पड़ेगी। कांग्रेसको तो कौन मार

सकता है, पर हम उसके सामने मर जायेंगे। आत्महत्या करके नहीं मरेगे, पर हम तब तक उसका मुकाबला करेंगे और उसके प्रागे धिर नहीं झुकेंगे जब तक हम उसे सही रास्ते पर नहीं लायेंगे या खुद मर नहीं जायेंगे। लेकिन ऐसा तब करेंगे जब हम देखेंगे कि कांग्रेस जान-बूझकर गलती करती है। मेरी समझसे इस समय तो वह ऐसा नहीं कर रही है। न उसने पहले ऐसी गलतिवा की है। यदि वह भ्रमोंको ही धर्म मानकर भावसक भसती तो वह बहासक नहीं पहुच पाती बहासक भाव पहुची है।

यह कहना कि कांग्रेस-कार्य-समितिको यह करनेसे पहले अखिल भारत-कांग्रेस-समितिको पूछना चाहिए वा, ठीक नहीं है। कल-कल-पर कार्य-समिति पूछने बैठे तो वह काम नहीं कर सकती। वाचनें उसे एक है कि वह कार्य-समितिका विरोध करे और चाहे तो उसे प्रणय करके नई समिति बना ले।

जब न कांग्रेसमें भाकायवा काम करता वा और कांग्रेसके विधानको भ्रमजने जानेका मुझे अधिकार वा तब भी एक पुरानी बहसमें मैंने कहा वा कि हम महासमितिके ३०० या १००० सदस्योंको बार-बार इकट्ठा नहीं कर सकते। इस तरह काम करना कार्य-समितिके लिए अभाव-हारिक हो जायगा, पर वाचने महासमिति कार्य-समितिके व्यवस्थापक-समय कर सकती है। दुबारा वह गलती न करे, इस हेतुसे उसे नालायक करार देकर हटा सकती है और नई समिति बना सकती है।

फर्न कीविए कि कार्य-समितिके अखिल भारत-कांग्रेस-समितिके नाम कई साल चपेकी हुई निकाल दी और अखिल भारत-कांग्रेस-समितिको वह पसंद न आई। वो भी उसे वह हुई सकारणी लो होनी ही, लेकिन दुबारा ऐसी गलती न हो, इसलिये वह उस कार्य-समितिको खत्म कर सकती है और नई चुन सकती है—बर्कि उसे ऐसा ही करना चाहिए।

यही कायवा इस पाकिस्तान-हिंदुस्तानके मामलेमें जानू होता है। वह बीच हो गई है। पर अभी उसमें दुस्तीकी बहुत बड़ी गुंजाइश है। हम चाहे तो हिंदुस्तान तथा पाकिस्तानको—या और

पाकिस्तानवाले अपने हिस्सेको कांग्रेसवालोंसे भी सज्जा बनावें। तो फिर दोनों मिल जाते हैं और हम सुखमें रह सकते हैं।

(अन्तमें गांधीजीने विश्वास माहृकके प्रति अपनी रोजकी अभीष्ट आज भी काफ़ी विस्तारसे बोहराई और हिंदू-मुस्लिम-पारसी सभीको अपने पास बुलाकर समझौता करने, बाइसरायको परेमानीसे और कांग्रेस नेनाग्रोको बेकारकी बीड़-भूपसे बचानेकी तथा ऐसा पाकिस्तान बनानेकी बात कही कि जिसमें मगबध्गीताका पाठ भी कुरानजरीफके बराबर ही किया जा सके और मदिर तथा गुरूद्वारेकी भी मस्जिदके समान ही इज्जत की जाय, ताकि पाकिस्तानके आज़ातकके विरोधी भी अपनी भूलपर पछतावें और आजा पाकिस्तानकी प्रशंसा-ही-अप्रशंसा करे।)

१३३।

८ जून १९४७

माइयो और बहनो,

आकाशसे गोले भी क्यों न बरसाए जाय और कैसा भी उपद्रव क्यों न हो, ईश्वरभजनके समय हमारी धाति भग नहीं होनी चाहिए। जैने गोपी बसीका नाव बनने सुनती हैं वैसे ही ईश्वरका भक्त अतर्नाव हृदयमें सुनता है। इसे अंग्रेजीमें 'बॉइस थाव साइलेंस' कहा गया है, यानी वह नाव तभी सुनाई देता है जब हम धात रहें।

आप लोगोंको मैंने कह तो दिया है कि प्रोफेसर कोसबीजी जो बड़े विद्वान थे और पानी मांथने अग्रगण्य माने जाते थे वे भग्नी-भग्नी सेवाप्राप्त आश्रममें चला बसे। उनके बारेमें बहाने सभासक बलवतमिह्ता पत्र हैं, जिसमें कहा गया है कि ऐसी मृत्यु आश्रमक जेने नहीं देखी। यह तो विस्मय ऐसी हुई जैनी कबीरजीने बताया है—

सात कबीर जलन लो मोठी,
ज्यो-की-सो बरदीनी बहरिया ।

इस तरह हम सभी लोग मृत्युही यैनी सात लें लो हिंदुस्तानका
मसा ही होनेवाला है ।

मुझने किसीने कहा कि 'आप पंच बन जाइए और इन में से और
बाटोका' जगदा गिपटा दीजिए,' पर मैं कैसे पंच बनूँ ? एक तो मेरी
जान-महिजान सब लोपोमेंसे गिनीते नहीं है । दूसरे पंच वह हो सकता
है जिसके हाथमें अपना फेसना जमानेकी शक्ति हो । मेरे हाथमें न बलूक
है, न मे अबासतकी शरण लूया, लेकिन मुझे लगता है कि अब उनको
सात ही जाना चाहिए । मसा हो बना या मुरा, अब लो जीन-कालेसमें भी
जमझीता हो गया है और अब बहालक नहीं बलते रहना चाहिए, जहा-
लक लोमेंसे एक हारकबूक नहीं करता । येव भी बहालुर है और बाड-
महीर भी ऐसे नहीं है कि अपने लिए किसीको यह कहने दें कि वे मार
जा गए । यह अच्छा है कि वे बाबक, बड़े और औरतोको नहीं मारते ।
हमिबार भी दोनोने काफ़ी बना लिए है । बीरतासे बलते है, परलु
मुक्तान होता ही है । लोपबी अब जानेसे मरीवको इतना ही दुःख होता
है जिसका राबाको महलके बलनेसे होता है), हमारे इतने मजदीक
जगई हो रही है, पर हम कुछ नहीं कर पाते । जहा मनेरा-सा का बना
है; लेकिन आप लोपोमेंसे लो उन्हें जालसे-महजानसे है वे उनके पास
मेरी आबाब पहुँचा लें लो पहुँचाने और जगई बर करानेकी
कोशिश करें ।

मुझसे कहा गया है कि बजालके जामलेको मैं गियाब रहा हूँ ।
मेरा जाना है कि मुझसे कोई काम गियलता नहीं । बजाल, बिहार या
नौमायाबीका, किसीका भी नाम मेरे हाथसे गियला नहीं है । मुझसे
लो बहार ही हो सकता है और हुआ है । अब पचासकी तरह बजालके
भी लो हिले होनेवाले हैं । बजालके हिलेमें मुसलमानोकी बससदियत है
और दूसरे हिलेमें हिंदुधोकी । कृत लारे हिंदू चाहते है कि हमारा

^१ मुक्त्याम बिलेके ।

हिस्सा तकसीम कर दिया जाय, क्योंकि कहातक मयाति बर्दास्त की जाय। अपना घर बन जायगा तो उसमें चाटिसे तो रहा जा सकेगा। बगालकी मुस्लिम सीमने इस बातको माननेसे इन्कार कर दिया है। लेकिन बह्माकी सीमकी बातको मानता कौन है? नई योजनामे बगालका बटवारा निश्चित है।

अब मुझपर बोप भयावा जाता है कि मैं बगालको तकसीम होने देना नहीं चाहता। ठीक है, मैं यह नहीं चाहता। पर मैं तो यह बरा भी पसन्द नहीं करता कि सारे मुल्कके हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान-जैसे दो टुकड़े किए जाय। मेरा चाहस तो कहातक है कि अगर मैं अकेला हिंदू रहूँगा तो भी मुसलमान अक्सरियतवासियोंके बीच बना रहूँगा। अधिक-से-अधिक वे क्या करेंगे? मुझे मार डालेंगे, हत्या ही न। लेकिन वे नहीं मारेगे। एक भावनीकी वे रक्षा करेंगे। ईश्वर ही बचाएगा। अकेले भावनीकी रक्षा ईश्वर करता ही है। इसीलिए उसे 'निर्बलके बल राम' कहा जाता है। मुझे बिलकुलही प्रिय नहीं है कि बगालको तकसीम किया जाय। लेकिन मैं ऐसा भावनी नहीं हूँ कि मैं यह कहूँ कि "हिंदू डरके मारे बच जाय" और अपने जानमालकी हिरासतके विचारसे अपनी इच्छाको छोड दे।" अगर वे मानते हैं कि अपने टुकड़ेमे वे आरामसे रह सकेंगे तो ऐसा कोई न समझें कि मैं उनके बीचने हथक देनेवाला हूँ।

परसों या गरसों मेरे पास शरत्बाबू आए थे। वे नहीं चाहते कि बगालके हिस्से हो। वे कहते हैं, सारे भारतकी एक ही सत्कृति है, एक-सा ज्ञान-मान है, तो केवल बर्नके कहाने दो टुकड़े क्यों किए जाय? पर शरत्बाबूकी बात ने बार्ने और मेरी मैं अपनी जानू। लेकिन लोगोंको पूरा हूँ कि वे अपने मनकी करें। बहुत भावमियोंकी रायके बीच मेरे एक भावनीकी राय रोडा नहीं बन सकती।

और मैं तो हुमेसा ही अच्छी बातमें साथ देता हूँ। अगर बुरा भावनी भी मुझे राधनाम निकायता है तो क्या मैं उसके साथ बैठकर रामनाम न हूँ? मैं उसके माथ करके रामनाम बुगा और करीफ कहा जानेवाला भावनी बीरानका काम करे तो क्या मैं उसका साथ बुगा? अगर ऐसा करे तो फिर मैं बाबी नहीं। बाबीमे बीरानकी पूजा कभी नहीं होगी और

जो कोई मिला काम है, प्रेमका काम है, उसमें मेरा हिस्सा है ।

मुझे पता चला है कि बाबू लो बगालका विभाजन रोम्नेके लिए देने चाह रहे हैं । मैंने कोई म्यामी चीज नहीं हो सकती । मैंने पाए गए बोट समझार नहीं होने । ऐसे काममें मेरी गिरफ्तार हरमिय नहीं हो सकती । जो काम मुझे पाने दिया जाता है उसमें फिर वह करनेवाले जा-बाय मदद पत्नी या बेटे ही क्यों न हो—न कभी जी मान नहीं है सपना ।

इसलिए मैं सदावाक्य कहना कि आपने विनमें और मेरे बिलमें बगालका विभाजन न होने देनेकी बात है; पर अभी हम उस विभाजन न करनेकी बातको मूल बात । मुझे साबित करने यह नहीं हो सकता । आपका मानसे ईश्वर नहीं पाया जा सकता और मुझे भी नहीं पानेका माय साफ नहीं हो सकता ।

३४ :

मोसबार, १ जून १९४७

-(निश्चित प्रवेश)

मेरे पास कुछ कम समय है विनमें कहा गया है कि पाल्मोपमिपद, जिसके बारेमें मैंने आपकी एक रोज बताना था, जो किसी बर्मिपमिपद के संग्रहमें नहीं है । मैंने जो सादरवाक्य ही ऐसा कहा था । इसलिए मैंने एक मित्रसे पूछा और मुझे ज्ञाने यह बताना मिला है कि जिस संग्रहका मन्त्र मुझे था उसमें पाल्मोपमिपदका चित्र है और उसमें कहा गया है कि उसमें ७ मूल हैं । वे उपमिपद बर्मिपमिपद के समान हैं । लेखकों और बहुत कुछ बताया है जो बगालका विभाजनके लिए है । इसलिए मैं आपकी सलाह यह मान नहीं मनाता ।

इसके समान मेरे पास एक बहुत भीषणपत्र विभाजनकारका भी आया है । बगलकीने कहा है कि 'महापद्म' कहने, जो राधा सांगके आवा है, सर्वप्रथम आत्मपदकारी मुम्सनामोका संघटित विरोध किया

१. श्रीरगुजरात तथा आलवाके मुस्लिम प्रवेशको भीतरकर विचीरमें एक कीर्ति-स्तम्भ स्थापित किया। उस स्तम्भपर अनेक हिंदू देवी-देवताओंके चित्रोंके साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरके चित्रके ब्यञ्जनमें ही अल्लाका नाम भी जोड़ा हुआ है। महाराणा रजबीतसिंह तथा ऊजयति शिवाजी-जैसे हिंदू-गौरवोंकी इस्लामके प्रति अच्छा प्रसिद्ध ही है। जो हिंदू-धर्म-प्रतिमानों आपकी प्रार्थनामें कुरान पढ़नेपर आपत्ति करते हैं वे विषय-स्तम्भमें, अल्लाके नामपर क्यों नहीं आपत्ति करते ?'

इसके बाद विवातकारजीने यह बताते हुए कि हिंदू-मुस्लिम-वैमनस्यका कारण गलत डबका सिखा इतिहास है, मुझे अनुरोध किया है कि मैं ठीक वगैरे इतिहास पढ़ानेकी ओर ध्यान दू, नहीं तो हिंदू-मुस्लिम-एकताके सारे प्रयत्न बागुकी नीतकी तरह बह जायेंगे।

आपका तो मेरे पास बहुत ऐसे बात आते रहते हैं, जिनमें मेरे ऊपर हमला होता है। एक मित्र लिखते हैं कि आप जो कहा करते हैं कि हिंदुस्तानका काठना तो समझो मेरे गरीबको काटना है, तो आप आपकी वह बात किसनी कमजोर पड़ गई है, और मुझे इस बटवारेका सक्त विरोध करनेको कहते हैं। मैं तो अपना इसमें कोई भी दोष नहीं देखता। जब मैंने कहा था कि हिंदुस्तानको दो भाग नहीं करने चाहिए तो उस वक्त मुझे विश्वास था कि आम जनताकी राय मेरे पक्षमें है, लेकिन जब आम राय मेरे साथ न होतो क्या मुझे अपनी राय बबरखानी लोगोंके गले मलनी चाहिए ? मैंने यह भी बरत कई बार कहा है कि असत्य और बुराईके साथ तो कभी समझौता नहीं करना चाहिए और आप मैं दावेसे कह सकता हू कि अगर समझौता और मुस्लिम लोग मेरे साथ हो तो मैं हिंदुस्तानको दो टुकड़े न होने दूंगा। लेकिन आप मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि आम राय मेरे साथ नहीं और इस कारण मुझे पीछे हटकर बैठना चाहिए। जो सबक हम ३० सालने सीखते आए हैं और जिसे आज हम भूल रहे हैं वह यह कि असत्य और हिंसापर भीत केवल सत्य और अहिंसासे ही हो सकती है। अवीरजको भीरजसे ही मारा जा सकता है और गरमीको सरसीसे। आप तो हम अपनी परछाई-

मे भी करने मने है। वो मुझे वाकिस्तानका विरोध करनेके लिए कहते हैं, उसमें और मेरेमें कोई ममालता नहीं, सिवा इसमें कि बेमका बहवार हम दोनोंको माफ़स है। मेरे और उनके विरोधमें बुनियादी फरक है। मेम और औरका मेम किस तरहसे हो सकता है ?

एक दूसरे भाई सिखाते है कि यह बाइसरायन तो दूसरे बाइसरायनलि कथावा खतरनाक है। दूसरोंने तो हमें नयी समार दिखाकर बसाया और इसने अपनी जमानने काउंसको बोला बेकर फास सिवा। मैं तो इस रायसे हरथियमहमद नहीं हो सकता। सिखनेवासेने (मेरी रायमें) बिना जाने और बिना चाहे बाइसराय साइवकी काफ़ी तारीफ़ की है और साव-ही-साव कायेनी मथियोकी समम और काबिसिबतकी मिथा। बेमक यह साफ़ सीमी बात क्यों नहीं पहचान सकते कि आम राय वाली यह सोच वो राय रखनेके बायक है, काउंसके नेताओंके साथ है। नेता मूर्ख तो है नहीं, उन्हें भी बेमका बहवार मिहामद बुरा लगता है, लेकिन वे मुस्कके मुमाहने होकर आम रायके खिलाफ़ नहीं जा सकते। उनके हाथोंमें वो बलित है वो लोगोंके हाथ ही है। मेमकके हाथमें सत्ता होती तो बायव हालत यह नहीं होती। और किसी की हालतने यह तो कपित नहीं कि बाइसराय साइवकी मिथा की बाय जब नेता हमारे मुने हुए हो या हमारे अपने सोच नूव मुस्कके साथ बेवफ़ाई करे। यह कहावत कि 'बसा राजा सबा प्रजा', उसी सत्य नहीं है जिसनी यह बात कि 'बसा प्रजा सबा राजा'।

१ : ३५ :

१० जून १९४०

भाइयो और बहनो,

। वो मुझ बचान-बिनाबलके बारेमें मैंने कहा है, उसमें मैंने किसी-पर झगल नहीं बताया है। मैंने वो बाई सुनी की नहीं बताया है। बचानका हिसा न किया था, यह जारा-का-जारा एक बना रहे यह

किसको पसन्द न आयगा । पर झूठमे, करेबमे या गिबतमे जगाल-
को एक रखनेकी कोई बात करे तो मैं उनका साथ नहीं दे सकता ।
अगर किसी बगालीने—रबाह बह हिंदू हो या मुसलमान—ऐसा नहीं
किया है तो फिर कोई बात गृही नहीं जाती । कोई व्यर्थमे मेरी बात
अपने ऊपर क्यों ले खे ?

लेकिन लोगोंको बहम पकर है कि बगालमे गलत चीज हो गृही
है । जिन्होंने मुझे जबर धी है उन्होंने नाम और पते भी दिए हैं । पर
उन्हे ज्हा खोलना मैं ठीक नहीं समझता । अगर उन्होंने मुझे
झूठी खबर दी है तो यह बुरी बात है और उन्हें सजा मिलनी
चाहिए । पर मैं किसको सजा दू ? किसीको सजा देनेकी शक्ति मैं नहीं
रखता ।

पर मेरे पास एक जुलब चीज है और वह है लोकमत । लोकमतमे
बड़ी प्रचंड शक्ति है । अभी हमारे यहा इस शब्दका अर्थ पूरे जोरसे
प्रगट नहीं हुआ है, पर अंग्रेजीमें उस शब्दका अर्थ बड़ा जोरदार है ।
अंग्रेजीमे इसे 'पब्लिक ओपीनियन' कहते हैं और उसके सामने बाबसाह
भी कुछ नहीं कर सकता । शक्ति जो इतना बड़ा बहादुर है और जो ऊंचे
खानदानका, बड़ा नारी बसा, बहुत ही विद्वान—मेरे-जैसा इनसान
बिलकुल नहीं है, वह सब कुछ होते हुए भी अपनी गृही न सम्हाल सका ।
इसका मतलब यह है कि वहाका लोकमत बहुत जामत है । इसलिए
उसके सामने किसीकी नहीं बस सकती ।

आज हमारे यहाका लोकमत इस तरह जामत नहीं है । अगर
जागत होता तो मेरे-जैसा निकम्मा व्यक्ति गृहास्था न बन बैठता । और
गृहास्था बन जानेके बाद मैं जो कुछ करूँ वह सहन न कर लिया जाता,
जैसा कि आज हिन्दुस्तानमें किसी गृहास्था कहे जानेवालेको कोई पूछता
हो नहीं—वाहे वह कुछ भी समझा-झीका करे ।

टास्टरा एक बड़ा मोटा था, पर जब उसने देखा कि लडाईं
अच्छी चीज नहीं है सब लडाईंको मिटा देनेकी ओशिक्ष करते-करते वह
मर गया । उसने कहा है कि दुनियामे सबसे बड़ी शक्ति लोकमत है और
वह सत्य और अहिंसासे पैदा हो सकता है ।

यही ध्यान में कर रहा हूँ, परन्तु यदि हमारे सोच-समर्थन सच्ची ब्रह्मदृष्टि और मन्त्राई नहीं आई तो उसने कुछ करनेवाला नहीं है।

सैमिन धाम तो ऐसा नहीं है। १५ अगस्तको जो श्रीपनिवेदिक स्वराज्य था रहा है उसको हम नहीं चाहते ऐसा मुझे लगता है। कारण यह कि हमारे यहाँ पूर्ण आजादीके लिए बरनोमि लोकमत बन गया है। देखो यह श्रीपनिवेदिक स्वराज्यकी बात चुन्ती है। यह चुनना ठीक भी है और ठीक नहीं भी। ठीक इसलिए नहीं कि हम उसकी साम्प्रतिक नहीं समझते। एक तो यह कि हमने कष्टि एग्जेंस बोर्ड की नीतिमें यहाँ के चर्चे करते हैं। दूसरे यह कि जब चाहें तब हम श्रीपनिवेदिक लोकको हटा सकते हैं। अगर हम वास्तव ही रहे तो हमने दूसरोका क्या बोध है? और, लोकमतकी बातपर ध्यान, अगर वह जाग्रत रहता है तो सबका अन्त ही होनेवाला है। अगर लोकमत या जनमे कि 'रिपब्लिक नहीं चाहें, 'बुरा काम नहीं किया' और हम हाथमें बगल एक एक्कोका उस अच्छा है तो अच्छा ही है, सैमिन हम पुष्टीमें कामर रहे हैं, मुसल रहे हैं; इसलिए हमारे यहाँ हमारे हाथमें यही नीति बन जाती है।

सैमिन अगर किसीने गया काम नहीं किया और दूसरा कोई जाऊन लगाता है तो भी क्यों बुझाया जाय? नमस्कार कि ऐसे बड़े-बड़े सोल्वेयर होते हैं जो आपाजगही होते, बोखे रहते हैं; फिर भी उनपर रिपब्लिकन अन्धकार लगाया जाता है; सैमिन वे इस बातसे परेमत नहीं होते। अगर कोई मुझे बहमास बतावे और आपाजग रहे तो क्या मैं रोने बैठूँ? किसीके अन्धकार में क्या बहमास साक्षित हो जाऊगा? यह मैं मानता हूँ कि कुछ लोकोंका गलत मिथ्यात्व करना होनाय और बुझाया गया। हमें किसीकी बुराई नहीं करनी चाहिए, जसा ही देखना चाहिए। अगर आपाजग बनना चाहते हैं तो बीरोकी बुराई न देखें, नगाईदेखें और उनका निज करे।

अब मैं ऐसा मानकर कहता हूँ कि हिन्दुस्तानके हिस्से हो गए हैं और यह कारणसे नववरीमे नबूद जिन्ना है। सैमिन हिन्दुस्तानके दुकड़े हो जानेपर अगर हम सुन नहीं रहे हैं तो हम रबीबा भी क्यों हों? हमें अपने दिलके दुकड़े नहीं होने देने चाहिए। हृदयको मूर-मूर होनेसे

बनाना चाहिए । बरना, बिना साहबकी बात सही साबित हो जायगी नि हम दो राष्ट्र हैं । मैंने कभी यह माना ही नहीं । अब कि हमारे जनक मा-बाप एक ने तो बहुत बर्न बदलनेसे क्या राष्ट्र बदल जायगा ? अब कि सिंध, पंजाब और सायब सीमाश्रित भी पाकिस्तानमें चले जायने तो क्या वे अब हमारे नहीं रहे ? मैं तो ब्रिटेन तकको वर नहीं मानता तो पाकिस्तानको बुरा राष्ट्र क्यों मानू ?

कहनेको तो मैं हिबका हू और हिबमें बर्नई प्राप्तका और उसमें मुजरतका । मुजरतने फिर काठियावाडका तथा उसने भी छोटे-मे बेहात पोरबकरका । लेकिन पोरबकरका हू, इसीलिए सारे हिबका भी हू अर्थात् मैं पंजाबी भी हू और पंजाबमें जाऊंगा तो उसे अपना ममकर बहा रहुंगा और मार डाला जाऊंगा तो मर जाऊंगा ।

मुझे कूची है कि बिना साहबने कहा है कि पाकिस्तान सहनसाहका नहीं, जनताका रहेगा और अल्पमतको भी बराबरका माना जाऊंगा । उनकी इस बातने इनका इच्छाका मैं करना चाहूंगा कि मैंना वे कहते हैं, मैंना करे भी । अपने पीरोकारोको भी मैं यह बात समझा दूँ और कह दूँ कि 'अब लडाईकी बात भूल जाओ ।'

हम भी अपने बहा अल्पमतको बचानेकी सोचेंगे नहीं । मुट्ठीभर पारसियोंका भी हमारे बहा साम्राज्य रहेगा । अगर हिंदू-मुसलमान दोनों मिलकर पारसीसे कहें कि तुम 'भराब पीते हो, इसलिए निकम्मे हो, तुम्हें हम मार डालेंगे' तो वह बुरा होगा । पारसी तो मेरे मित्र है और उन्हें मैं कहता हू कि सराब नहीं छोड़ने तो अपनी जीत मरोगे, वर हम उन्हें नहीं मारेंगे । इसी तरह पंजाबमें सिख और हिंदुओंकी हिंसाचर होनी चाहिए । मुसलमान उनसे मुहम्मदसे बरते और कहें कि आप आराममें रहें, आप हमारे भाई हैं । अगर वे जबरबस्ती करने लगे तो हिंदू-सिख मरनेसे न डरे और कहें कि मजबूरन मैं हम इस्लाम मजूर करेंगे, न मजबूरन गोस्त खावेंगे । हिंदुओंकी ऐमा नहीं मजबूत चाहिए कि एक नई प्रजा बन गए हैं जिसमें मुसलमान रह ही नहीं सकते । हम बहु-मतवाले हिंदुस्तानमें हैं । बहुमतको जायत करके मैं बहादुरीसे काय करना हूँ । बहादुरी सजवारने नहीं हूँ । हम सचमें बनेंगे, ईश्वरके बने

जैसे भीर अकारण पड़नेपर मरेगे नी। जब ऐसा करेंगे तब हिन्दुस्तान
अन्ध भीर पाकिस्तान अन्ध, अब बाग नहीं रह जायगी और ये दुनिया
हिले मिटने के बाद रहेगी। अगर हम सट्टाई करेंगे तो हमारा हो
गया इसका नामा नाशित होगा। इसलिए आप भीर मैं ईश्वरने
प्रार्थना करें कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान अन्ध भीर हूँ, पर अब
हमारे दिन अन्ध-प्रवचन न हों।

: ३६ :

११ जन १९४७

आइये भीर बहो,

अब मैं बयाजने जो दुकटे होलेवाले हैं उनके बारे में मैंने जो कहा
• कह दिया है फिर भी सीखरी बार उन बारे में कहना जरूरी हो गया
है। एक अन्धका बहुत ही मुन्नाने गरा हुआ बागवत मेरे पास
आया है। इनका मुन्ना करनेकी जरूरत ही क्या है? अभी मैंने बताया
था कि मुन्ना करना पागलपन है। हमें अपनी बुद्धि बांध रखना न
बाँधोको सम्मान चाहिए।

अब हमने आये बिचने हैं कि मैंने बयाजको कहा मुन्ना पड़ना
है। पर मैंने मैंने मुन्ना पड़ना? और क्या मुन्ना पड़ना? मैंने
मैंने तो भी बात ही रही थी वह मुन्ना ही और मैंने बताया ही कहा था कि
बयाजने दुकटे मैं नहीं चाहता, लेकिन इन्साफते बाहर कुछ नहीं होना
चाहिए। स्वाह हिंदू हो, मुसलमान हो अथवा ईसाई—अगर वह
बयाजी है और अपनी गलतीयाको कबल रखना चाहता है, अपने
मुल्को एक रचना चाहता है तो वह अच्छी बात है। लेकिन अच्छी
बातके लिए साधन भी अच्छे ही बरतने चाहिए। ठंडे रस्तेमें सीपी
बागको नहीं पड़ना या सम्मान। पूरबको जानेने लिए पश्चिमकी भीर नहीं
पड़ना चाहिए। मैं बयाजनेने कहा कि मैं अपनी बातपर कायम हूँ।
अगर बयाजने दुकटे हो तो आप ही कर सकते हैं, न हो तो आप ही उसे

रोक सकते हैं। आप भोज बाहे बहन हो, इसीमें इन्साफ़ भीर सचाई है।

आप मेरे पास केम्बेलपुरके कुछ भाई आए। वे इस बातसे बचराए हुए हैं कि पाकिस्तानमें उनकी हाबत क्या होगी? उनपर कौसी बीतेगी और भय वे बहापर कैसे रहें?

मैंने उन भाइयोंसे कहा कि आप अपने मनमें ऐसा समझ लें कि हम हिन्दुस्तानमें ही पडे हैं। जब हमारा मूवीस एक है तब महब कह बेने-भरखे पाकिस्तानवाला हिन्सा हिन्दुस्तानमें नहीं मिट सकता और मेरी रायमें आप वहीं बने रहिए।

मेरे इस जवनपर उन जोमोने पूछा—“तो हम सब मिलकर एक जगह रहें?” मैंने उनसे ऐसा करनेसे भी मनाही की और उनसे कहा कि मोघाबालीके हिन्दुओं और बिहारके मुसलमानोंसे भी ऐसा करनेकी मना किया है और यह भी कहा है कि हमें हफिबार भी नहीं रखने चाहिए।

बहापर अल्पमतवाले बोले-ये आबमिबोका रक्षण सरकार नहीं कर सकती बहापर उस सरकारको बने रहनेका कोई हक नहीं रहता। अगर हिन्दुस्तानकी सरकार जब मुसलमानोंके जानो-मानकी हिफाजत नहीं कर सकती तो उस सरकारको उमट देना चाहिए और पाकिस्तानमें अगर बोडे हिन्दू और सिक्कोंकी बैरियत नहीं रहती तो उसे भी उमटन हो जाना चाहिए। बहापर बहुमतवाले अल्पमतवालोंकी मार डालें, वह तो जातिम हुकूमत कहलायगी। उसे स्वराज्य नहीं कहा जा सकता।

तो फिर क्या हमने जो इतनी जडाई की, इतना सत्याग्रह किया सब बूझते निकलकर भट्ठीमें पकनेके लिए? लेकिन मेरी बातपर केम्बेलपुरवालोंने कहा, ‘आप गहाल्पा है। आप गहाल्पाकी-सी बातें करते हैं। हम लोग टाबिर हैं, बहा हमारा व्यापार बजता है, और हम बास-बच्चेवार हैं। हम आपकी तरह कैसे कर सकते हैं?’ तब मैंने कहा कि मेरे पास दूसरी चीज नहीं है। मैं यही कहते-कहते बुद्धा हो गया और पसीरतक नहीं कहवा। अगर कोई कहता है कि हम बहापुर नहीं बन सकते, हम डरपोक ही खेनें तो यह बल ठीक है। लेकिन इन्सान डरपोक बननेके लिए बोडे ही पैसा जुभा है? फिर यह मैंने कहा जायगा कि अनुष्य ईस्वरका सेब है—मुवाका नूर है। गाब-बीसमें ईस्वरका सेब है

ऐसा किमीने कहा है और हम मनुष्योंमें ईश्वरका तेज है, वह क्या करनेके योग्य एक दूसरेका क्या करनेके लिए है ?

पाकिस्तानको देखकर नरम जानेकी कोई बात नहीं है। मैं तो मिट्टीका पुला, हड्डी-पत्थरी जिसकी चीज रही है, ऐसा आमुली-सा घायली हूँ, और महाबुर बलैकी बात कह रहा हूँ। लेकिन जिन्ना साहब तो इतना बड़ा काम कर रहे हैं। किमीके आवाजमें भी नहीं था कि कभी ऐसा बन पायगा, पर पाकिस्तान बन गया, जिन्ना साहबने जैनेपा लिया। कांग्रेसको सबबुर होकर वह सबूर करना पड़ा। पर मैं मोचता हूँ कि कांग्रेस उसपर कुछ क्यों माने ? मैं भी क्यों चुनदिल बनूँ ? मैं क्यों मानूँ कि हमारे दुश्मने हो गए हैं। जिसको ईश्वरने एक बना रखा है उसको दो कौन कर सकता है ?

और जिन्ना साहबने बातें भी ऐसी ही की हैं। उनमें जब पूछा जाता है कि क्या पचावने हिंदू, सिख भाग जाय तो वे कहते हैं, "हमारे यहाँ सब एक ही तपबूने सोखे जायने। सबका सब एक इन्साफ होमा, वे मर्ते क्यों ?"

बाबसाह खान मेरे दोस्त हैं। बीनाला आबाद तथा अबाहुरसाके गहन छोड़कर मेरी ओपडीमें आकर टिकने हैं। यहाँ मोक्ष नहीं जागते। मेरे पास ही रोटी-फल भेटे हैं। वे पूरे फकीर हैं। उनके भाई डा० खान साहब बिना उनकी मददके काम नहीं क्या सकते। हम उन्हें बीमारता गाबी भूलने हैं, पर यहाँ गाबीको ही कोई नहीं जानता तो बीमारता गाबीको कौन जाने ? यहाँ गो यह बाबसाह कहलाते हैं और जिन्ना ओपडीमें जाकर यहाँ फल भपने हम बाबसाहपर लुप्त हो जाते हैं।

ऐसे बाबसाहके डरकेमे जम्बत-नरह भगनेकी बात सब कर बी गई है और वह भी सब सब फलका भूत घसी ठहा नहीं हुआ है, जिसका कि दुन सब गरम हो रहता गया है और बाबसाहने अपनी जिसी उन खुशगी ठहा करनेमें सपा रही है।

जहाँ सब लिया जायता सब सब-के-सब न पाकिस्तानी कहेंगे न हिन्दुस्तानी। सब क्या आप फलाने बोहफके कर डालेंगे ? इसलिए बाबसाह खानने कहा है कि यदि जिन्ना साहब आस्थासन लेकर नहीं

प्रकार समझा दे तो आप पाकिस्तानसे क्यों डरें ? सब पठान इकट्ठे होकर क्यों न रहे ?

श्रीर विद्या साहबने जब मेरे माथ अभीष्ट निकाली है—वस्तुतः किन्हीं कि मठाईने कोई राजनैतिक काम नहीं किया जायगा तो फिर वे क्यों नहीं कह देते कि अब हम जनमत-संग्रह नहीं करेंगे ? बाइसरावने तो बाबा किया है कि तीनो पार्टी मिलकर जो तय करेंगे वह मान लेंगे । तो अब कायदे आचम सबको बुलाकर समझा दें कि पाकिस्तानमें एक बच्चे तकको तकलीफ नहीं होगी । कांग्रेसवाले महात्माजी बाबाँ बतावा दें कि हम सब भाई-भाई बनकर रहेंगे और पाकिस्तानवाले भी यह बता दें कि वे बहुर नहीं फैलावेंगे ।

अगर आपसमें बहुर फैल जायगा तो वह बहुत बुरी चीज होगी । अजब यहासे तो सबे जायने, पर बाबने मुसलमान और हिंदुओंको फोसेने कि हम तो पाकिस्तान बनाना ही चाहते हैं, लेकिन अब दोनो विभाग-परिषद्में इकट्ठे बैठे ही नहीं और हमें तो जाना ही था इसलिए यहूतीसरा राम्या निकाला, फिर भी शांति नहीं हुई ।

लेकिन मुझे कुछ है कि यद्यपि माउटबेटन बुरा करनेके लिए नहीं आए, पर उनके हाथसे बुरा हो जानेवाला है । ऐसा तो कभी होता नहीं कि कोई सारी दुनियाको खुश ही रख सके, फिर वह तो महापुरुष सेनापति रहे हैं । वे पाकिस्तानवालोंसे भी और कांग्रेसवालोंसे भी कह सकते हैं कि तुम्हारी यह बात ठीक नहीं है और बीनसे अब भी वे कह सकते हैं कि आप लोगोंने जिस नेमके लिए जो जिव पकड़ी थी वह गैर आपको मिल गई । अब बताइए कि यह पाकिस्तान क्या चीज है ? उसमें कौन-सा सौध्व है ? वे इतना तो कह दें कि अब हमारा पाकिस्तान बन गया, अब हम भाई-भाई बनकर रहना चाहते हैं ।

सारी दुनिया भी यह देखना चाहती है कि हम एक हैं । हम सबके तकने कायदे आचमको तार दिया है कि आपको पाकिस्तान मिल गया । अब हमें जाना रखनी चाहिए कि दुनियामें शांति ही रहेगी । कायदे आचमने भी उत्तरने निखा हैं 'दुनियामें शांति ही रहेगी', पर वह कैसे रहेगी ? हिंदुस्तानमें अशांति होगी तो दुनियामें शांति कहाने आवेगी ?

मैं फिर बिना साहबसे कहूँ कि आपकी दोस्ताना तीरछे नवको अपनी ओर खींचना है। नवको सशोष देना है, बरना दुनियाका बुरा हाव होनेवाला है। हिन्दुत्वानका बुरा होनेवाला है, मुसलमानका बुरा होगा और हिंदूका भी बुरा होगा। मैं यह एक ही चीज कहूँगा।

: ३७ :

१२ जून १९४७

जाह्नवी और जहानो,

आप लोग देख रहे हैं कि मेरी बाहिनी और स्वाभा साहब^१ बड़े हुए हैं। इनके बारेमें एक बार मैं आपको पढ़ते सुना चुका हूँ कि किस प्रकार मैं स्वामी सत्यदेवके साथ इनके घर पहुँचा था और सत्यदेवजी मुसलमानके हावका पालीतक नहीं थी मफते थे। लेकिन तब भी स्वाभा साहबने बुरा नहीं माना और उबार स्वागत किया। उस समय मे प्रलीपक युनिवर्सिटीके ट्रस्टी थे। तबमें जसहृमोय आदीतनमें जरीक होनेके लिए इन्हीने ट्रस्टीमन छोड़ दिया। अहातक मुझे पार है, जब मैं कहा गया था तब बहू जीयकी सीटिंग हो रही थी। मैंने कहा पूछा था कि यहाँ भी कोई सत्याग्रही मिलेगा या नहीं? जी० मुहम्मदअली और जी० भीकतपणी तब नजरबब थे और उनके फँस होनेके बारेमें कहा सब मायूस हो रहे थे। तब स्वाभा साहबने मुझसे कहा था कि आपको हाई सत्याग्रही मिल सकते हैं। उनमें एक तो वे स्वयं कुरेशी, जो आपकी जग्यात और बहुमुख बवाल थे। दूसरे साहब जी जो बहू जीयके थे, उनके सत्याग्रही थे। एक बार खोयोने उन्हें मारा और उनके हावमें वो बगहू चोटें आईं, तब भी वे सात रहे और ताकत होने-पर भी मार सहल की, लेकिन बवालने हमला नहीं किया। हम दोनोंका

^१ प्रसिद्ध भारतीय राष्ट्रीय मुस्लिम यूनियनके अध्यक्ष स्वाभा प्रभुल नबीव।

परिचय करानेके बाद स्वाजा साहबने कहा था कि आत्मा सत्याग्रही नै हूँ ।
धीर सबसे स्वाजा साहब मेरे सबे भाईकी तरह बनकर रहे हैं ।

वे नहीं चाहते थे कि देशके हिस्से हो, पर हिस्से हो ही गए । तो वे
मेरे पास अपना दुःख प्रकट करने आए हैं । मैंने उनसे कहा कि हम
रोनेवाले नहीं हैं । धीर मैंने उन्हें हँसा दिया ।

चोट तो समू साहबको भी बहुत पहुंची है कि यह क्या कर दिया
गया । ठीक है कि यह धीरके मनकी चीज है, पर कांग्रेसको यह बात
पसन्द नहीं आई है । जब ऐसा है, यानी जिस बातपर दोनों राखी नहीं
है वह बात कहाँ तक बन सकती है ? मने ही भूगोलके टुकड़े हो गए
हो, पर बिजोके टुकड़े नहीं हुए तो हमें रोना नहीं है, क्योंकि जबतक
बिजोके टुकड़े नहीं होते जबतक खैर ही है । फिर बाहे मुल्कके हिस्से
पाकिस्तान-हिन्दुस्तान कुछ भी हो । हम एक ही हो जानेवाले हैं । यह नहीं
कि वे बककर धीर परेशान होकर हमें मिलने आयगे । पर हमारा
बख्ताब ऐसा होगा कि चाहनेपर भी वे हमसे मलग रह नहीं सकेंगे ।

बजाहरबागके बिलने यह बात बहुत खटकती है कि अब हम
खोप हिस्सेको हिन्दुस्तान कहे । उसका कहना ठीक ही है कि जब उनका
पाकिस्तान बन गया तब भी हमारा हिन्दुस्तान कौन बन सकता है ।
इसका अर्थ तो यही होगा कि यह हिस्सा हिन्दुओंका हो गया । फिर ईसाई,
बहुदी और बाकी मुसलमान क्या करें, वहासे हट जाय ? पतखी स्वाजा
साहबको, जो मुसलमानोंके रहनेवाले हैं, और उनके पुराने मित्र हैं, कहेंगे
कि आप मुसलमानोंसे हट जाइए ?

अगर ऐसा हम करेंगे तो जिना साहबकी बात सही साबित हो
जायगी कि 'उनके दिल पहेलेसे ही फटे हुए हैं ।'

लेकिन इतिहास ऐसा नहीं बताता है । बडे इतिहासवेत्ता जी-
जयचमकीका पत्र मैंने आपको बताया था । वे कहते हैं कि जब हिन्दू-
मुसलमान आपसमें लड़ते थे तब भी बर्मके नामसे एक बूखरेको नहीं
मारते थे । अपने बचपनमें जी हम लोग एक बूखरेको मलग अनुभव
नहीं करते थे । पुराने बमालेमें जब जैनूज आब्दीन साहब हिन्दुओंके साथ
काशीकी यात्राके लिए जाते थे तब रास्तेमें जो बहिर दूटे पाए जाते

वे, उनकी गरमजत भी कराते थे । किसीने विजय-स्तम्भ पर अस्साका नाम मिलाता है ।

फिर प्रायः हमारे विश्व ऐसे कभी विजय जाय कि न साथ बैठ सकें, न एक-दूसरेको अच्छी नजरसे देख सकें ?

माला कि बोले मुसलमान विजय भी गए-तो क्या हम भी विजय जाय ? अबाहरसाजबी ऐसा नहीं चाहते । कहते हैं, जबतक इसमें मुसलमान शामिल थे तबतक हमारे देशका नाम हिन्दुस्तान बहुत अच्छा था, क्योंकि उस समय यह धर्म निकलता था कि जो हिन्दुस्तानमें पैदा हुआ है उसका स्थान हिन्दुस्तानमें है, चाहे फिर वह किसी धर्मका हो ।

अब हिन्दुस्तानका धर्म क्याया जाता है कि वह हिन्दुओंका है । और हिंदू भी कौन ? सबर्ण । पर मैंने कहा है कि सबर्ण तो—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सभी मिलाकर हमारे जहाँ बोले हैं, बहुत बड़ी तादाद तो ग़ूर और मज़हबी तथा धारण्यकोठी है । उनकी बड़ी तादाद पर क्या बोलेने सबर्ण राय करेंगे ? ठीक है कि प्रायः उनकी चलोटी है, पर मज़हब, धारण्यक प्राधिको अलग करके सबर्ण शोध राय करेंगे तो जिसा माफ़की बात ठीक ही गावित होगी कि 'बोलेते ऊने हिंदू बाकी नमकी कुचलकर रचना चाहते हैं । तो क्या हम ऐसे पावी बनने ?' तो जिसा माहवने दो भिन्न राष्ट्रके मिठातकी स्वीकार करेंगे ? बानी अब मेरा मकका मुसलमान बना तो वह अलग राष्ट्रका हो गया ? अगर हम अपने तीन-चौदाई माह्योको अपनी कलायमे और उन्हें छोड़कर राय करेंगे तो उनका धर्म वही होगा कि सबमुम जैसा जिसाने कहा है जैसे हमारा हिन्दुस्तान बन गया ।

और सब पागनीस्तान, निजोंके सिपिन्तान, धारण्यकोकि धारण्यग्नान और मज़हबोंके मज़हबस्तानकी उत्पत्ति हो जायगी और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान न रहकर उनके टुकड़े-टुकड़े हो जायगे ।

अगर अंग्रेज हिन्दुस्तानके ऐसे टुकड़े करना चाहते हैं तो अंग्रेजोंके लिए बुनियातें स्थान रहनेवाला नहीं है ।

बानी जो बन गया है उनके लिए हमें रोना नहीं है । अबाहरसाजने इस-त नाम 'यूनियन ऑफ इंडियन रिपब्लिक' (भारतीय प्रजातन्त्र संघ)

दिया है। यानी सभी इसने भिन्नकर रखे। अगर कोई जान जाना चाहता है तो उसे हम रखनेको मजबूर नहीं करेंगे, लेकिन जो रखे उन्हें माई बनाने ही रखे। हम उन्हें इस तरह रखने कि वे महसूस करें कि हम भागेने नहीं, क्योंकि हम प्रत्यक्ष दुकड़ेने नहीं हैं। हम सबके बकाधार रखे तथा सबकी सेवा करेंगे।

आज किसीने मुझने पूछा कि अब हिंदुस्तानीका क्या काम? यह प्रश्न नहीं उठाना चाहिए। अगर हम यह सोचें कि उनके अहा उर्दू बने और हमारे यहा हिंदी तो हमपर बही भिन्नताका इल्हाम सावित हो आयगा। हिंदुस्तानीका मतलब यही है कि आसाम बोली बोली जाय और बही लिखी-पढ़ी जाय। पहले तो वह हमारे यहा चलती थी थी, अब तो फारसीकी भरमारवाली उर्दू चलती है, वह बनता समझ नहीं सकती और हिंदीने जब दूसर-दूसकर संस्कृत शब्द भरे पाते है तब वह भी बनताके कामकी नहीं होती। अगर हम ऐसी भाषाने बोले तो समू साहज-बोलीको हमें अपने यहाने निकाल देना पडे। वे हैं तो हिंदू, पर उनकी माबरी बजान उर्दू है। मैं उनने संस्कृतमरी हिंदीमें बातें बरूना तो वे सिफायत करेंगे कि तू क्या बोल रहा है? इसलिये हिंदुस्तानीका—हिंदुस्तानी समाका—काम जानू रखकर उर्दूवालीसे भी हमें अपनी मुहब्बत सावित करनी चाहिए।

मैं तो समझता हूँ, जो हो गया है उसमें ईश्वरकी मरजी है। वह हम दोनोंकी परीक्षा लेना चाहता है कि पाकिस्तानवाले क्या करते हैं और हिंदुस्तानवाले किसने जबाब दंतें हैं। हमें हम परीक्षामें सफल होना है। मैं उम्मीद करता हूँ कि हमनेने कोई हिंदू ऐसा पावल बननेवाला नहीं है जो उनकी पाक चीजकी कम इज्जत करे और उनकी घसीगड मुनिर्वसिटी-को, माधवीयबीके हिंदू-विषयविद्यालयकी तरह बढ़िया सालीमगाह न माने। अगर हम उनकी पाक जगहोको डा बेने तो हम खुद भी बह जायगे।

इसी तरह पारसियोंकी मसिबारी, बहुरियोंकी सीनेफाक और दूसरे भी सब पूजास्थानोंकी हिंदू-मदिरोंके समान ही हमें रखा करनी चाहिए और हम यह भी कहें कि अजूबोका भी हमारे यहा इतना आदर किया जानेवाला है, जिसना ऊंची-से-ऊंची जातिके सर्वर्न लोगोका। सम्मया हिंदू-धर्म बही है जिसने सब वर्गोंका समानेव हो।

इसमें हमें सी पीसदी लड़ी उठरना है। 'बैनेकी ठेसा' बाबा कामका धमकमें नही माना है। वह तो पुराना कामका हो गया। अब नया बनाना तो यह थावा है कि अगर कोई बाबी बेसा है तो उसका बचाव हम मृहव्यसे हैं। भूठके सामने सचाईका प्रयोग करें और कोई बेहूषापन और नीचपन करे तो उसके साथ हम उदार भावसे बरतें। यानी हर समय हर बातमें हमारी भाव, कान, हाथ पाक रहे। तभी हमारी और है और तभी दुनिया बिना रहनेवाली है। इसमें मुझे कोई शक नही है। ऐसा हम इच्छित न सोचें कि नवी, मुसलमानोंको जगह दे दी, अब हम अपने बहा मनचाहा बरतेंगे।

। ३८ ।

१३ जून १९४७

भाइनों और बहनों,

जब मैंने नौआबाबीके बेहातोंमें पैदल यात्रा की तब बहापर लोग बहुत ही डरे हुए थे। और डरे हुए लोग रामका नाम नहीं ले सकते। फिर हमें ऐसे बेहातोंमें और बेतोकी बेहोपरसे होकर चलना पडा कि यात्रा ही कोई नौआबाबीमें रहनेवाला स्त्री या पुरुष इस तरह चला हो। पर मैं इस पैदल यात्रामेंसे जो शिक्षा ले सका वह हमारे लरीकेसे नहीं ले सकता था। हिंदू और मुसलमान दोनोंके बेतोमेंसे हमें भ्रमरना पडता था। इसलिये बहा चलते-चलते हम दोनों 'गाम' लेते थे।

जब बहा भी ईम्बर है, बहा भी ईम्बर है और ईम्बर तो एक ही हो सकता है तब दोनों धसन-धसन यात्रा में और एक दूसरेके नाम बर्बाक न कर सकें, वह तो पागलपन-सा ही सीखता है। तभी मैंने कस कहा था कि क्या हिन्दुस्तानमेंसे—हालाकि अब हिन्दुस्तान नाम तो हमें छोड़ना

‘जब मन प्यारे राम रह्यो, जब मन प्यारे कृष्ण करीन।’

है—रहीमका नाम खेनेवालेको क्या जाना होगा ? और कहा—पाकिस्तान कहे जानेवाले हिस्सेमें—रामका नाम त्वाज्ज रहेगा ? क्या कहा कोई कृप्य कहेगा तो उसे निकाल दिया जायगा ? कहा कुछ भी हो, हमारे यहां यह नहीं हो सकता । हम कृप्यको और करीमको—बोनोको बराबर मानेंगे और दुनियाको भी बतायेंगे कि हम पायस बननेवाले नहीं हैं ।

एक भाईने मेरे पास इन घास्यका एक बहुत सस्ते पत्र भेजा है कि क्या तुम सब भी पायस ही रहोगे ? अब तो थोड़े दिनोंमें इस दुनियासे चले जाओगे तब भी कुछ भीखोंगे नहीं ? यदि पुख्तमदास टकनने यह कहा कि 'सबको तलवार खेनी चाहिए, सिपाही बनना चाहिए और धपना बचाव करना चाहिए, तो तुमको इस बातमें थोड़ा क्यों जगती है ? तुम तो पीताके पकनेवाले हो ? तुम्हें तो इन इन्नोंसे परे हो जाना चाहिए और बात-बातमें थोड़ा जगना खेने या लुप्त होनेकी कष्ट छोड़ देनी चाहिए । तुम उस लहानीवाले मोले साबू बाबा-बैसी बात करते हो जो पानीमें बहते हुए बिज्जूके डक लगानेपर भी उसे हाथसे पकड़कर बचानेकी कोशिश करता था । अगर तुमने ग्रहिसाका पीत गाए बिना खा नहीं जाता तो कम-से-कम जो बूतने रास्तेसे बाते है उन्हें तो जाने दो । उनके बीजने रोका क्यों बनते हो ?

अगर मैं स्थितप्रज्ञ रहूँ मगर तो अपनी एक सौ पच्चीस वर्षकी उम्रमें—मे एक भी वर्ष कम बिता नहीं सकूँगा । अगर हम सब स्थितप्रज्ञ बने तो हममेंसे एक भी आदमीको १२५ वर्षसे जरा भी कम जीनेका कोई कारण नहीं है । जैसे मगवाना चाहे तो जले मुझे साथ ही सठाने, पर अभी पुरत मैं चलनेवाला नहीं हूँ । मुझे अभी रहना है और काम करना है । पुख्तमदास टकन मेरे पुराने साथी हैं । हम बरसोंतक साथ-साथ काम करते आए हैं । मेरे-जैसे ही ईश्वरके ने जगता है । जब मैंने यह सुना कि वे ऐसी बात कर रहे हैं तब मुझे दुःख हुआ । मैंने कहा कि साथ तीस बरससे भी अधिक समयसे जो हमने सीखा है और जिसकी हमने जगनसे साधना की है, वह क्या इस तरह गया दिया जायगा ? बचावके लिए तलवार पकड़नेकी बात की जाती है, पर यावत्तक मुझे दुनियामें एक आदमी ऐसा नहीं मिला है, जिसने बचावसे आगे बढ़कर प्रहार न

किया हो। बच्चाबके पेटमें ही वह पटा है। जब वह मेरे बिचपर जोट मगनेकी बात। अगर मैं पूरा स्विचप्रवचन बना होता तो मुझे जोट न मगनी। जब जी जोट न लवे ऐसी कौशिल्य न कर रहा हू। कब कहा था बहावे बाब मुझ-मुझ बाबे ही बटता हू। अगर ऐसा नहीं हो तो रोम-रोम बीबानोंने स्विचप्रवचने से धोका बोलनेमें मैं बनी ठहरता हू, पर ऐसा नहीं हो सकता कि इन दोषोंसे बोलने नरसे ही कोई एक ही दिनमें स्विचप्रवचन बाब।

नै राय-राय मुझ धीर वह मेरे हूचमें एक दिनमें नहीं आता तो क्या मैं शर बाब हू? मेरा एक पचावका मित्र रायबबलत बीबरी था जो अब तो (बुनियाले) बसा गया है। कभी-कभी वह कविता बनाता था। जब टैकले बाब तब वह कविता बना बाबा था और कुछ नो था नहीं बनना था इसलिए अपनी पत्नी सरस्वतीने कहा था कि वह प्रबल मुना है। वह भीठे प्यारने मुनाली—'कभी नहीं ओ शरना, भावें बाड़ी बाब कदी। और मेने अपनेने कहा कि 'मुझे कभी नहीं शरना है।' रोम-रोम कर स्विचप्रवचन बाबा खुंदा तो कभी-न-कभी मेरे हूचमें स्विचप्रवचन प्रबल मुना बाबनी। जब ऐसा बन बाबना तब टैकनबीके बा बिनीके कुछ कहेपर मुझे रोना था हँसना नहीं प्रबल। रोना-हँसना दोनों ही स्विचप्रवचन प्रबल कर बूब-धीर हू की नहीं होऊना।

बिचूने बचानेबाबे बाब-बीबी मिनाम प्रबली ही है। उनसे जब बिनी नासिकने कहा था कि 'बिचूने बचानेके फेरमें क्यों पड़े हो, उसका तो स्वभाव ही बक-मारनेका है। उन्हें जर ही क्यों नहीं बाबने?' तब उस बाबाने बचाव दिया था, अगर बिचूने स्वभाव उक मारनेका है तो मनुष्यका स्वभाव जी नो बचाव करनेका है। बिचू जब अपना स्वभाव नहीं छोड़ता तो मैं कैसे अपने स्वभावको छोड़ू? क्या बिचू बक मारता है तो मैं जी बिचू बक बाब और उसे जर बाबू?'

अभी-अभी उस बिद्यान बाबने मुझे भीब ही है कि दू बिनी बाबनी है। अगर दू प्रहिसाकी अपनी हूठ नहीं छोड़ना तो दूसरोंको तो मत रोम? तो क्या मैं बनी बन बाब? बुनियाको जी बोबा हू? बुनिया फिरभी नहै कि शिस्तालन एक नामावरी नहाता पडा है जो प्रहिसा-

की तो बड़ी मीठी-मीठी बात करता है, पर उसके साथी मार-काट करते रहते हैं। यानी मैं ऐसा बनूँ कि 'मुझमें राम धीर बसमें छुपी।'।

एक बड़े बुद्धकी बात हो गई है। मैं तो राम-महाराजाधोका दोस्त हूँ धीर उनका सेवक रहा हूँ। बनी भोगोका भी सेवक रहा हूँ। क्योंकि मैं मिस्कीन हूँ, भगी हूँ धीर उन राधाधो धीर श्रीमतीको भगीवासमें खींच जाता हूँ ताकि वे उनकी कुछ मदद करें। वे कब भगीवासको देखते। पर मैं बड़ा मेहतर हूँ तब मेरे पास गया वे जन्मे आते हैं।

मैंने अखबारोंमें सर सी० पी० रामस्वामीका ऐलान देखा। वे बड़े विद्वान् व्यक्तित्व हैं। ऐनी वेसेटके शिष्य रहे हैं। जब मैं हरिजन-यात्रामें था तब उनके नियंत्रणपर उनके महा भावनकोरने मेहमान बनकर गया था। सबने नहीं, पर भिद्यकर काम करनेको गया था। उनसे यह बात सुनकर अच्छी नहीं लगती। अगर अखबारमें गलती हो तो वे मुझे माफ़ करें, सही हो तो मेरी बातपर गौर करें। उन्होंने कहा है कि पत्रह भगवत्से जब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होगा तब भावनकोर आभाव हो जायगा धीर उनकी वह भाषाही ऐसी है कि भाषसे ही भावनकोरकी स्टेट काउंसिलके लिए समझौदा कर दी गई है। कवर महा-तक है कि सी० पी० रामस्वामीने उन लोगोंको भावनकोर जोड़कर जले जानेके लिए कहा है जो भावनकोरकी स्वतन्त्रताकी मुकामफ्तमें हो। धीर यह भाषा वे सज्जन वे रहे हैं जो कुछ भावनकोरके नहीं, बल्कि मन्त्रासके रहनेवाले हैं। वे किस तरह ऐसा कह सकते हैं।

ब्रिटिश राजमें आमतक भावनकोरकी प्रवेश आहूँछाहीको सलामी देनी पड़नी थी। तो अब हिन्दुस्तानके प्रजातन्त्र सभमें वह मनमानी कैसे कर सकता है? वह अब हमारा राज्य है यानी भारतमें प्रजाकीय राज्यको उसे (भावनकोरको) अपना ही राज्य समझना चाहिए। मैंने बताया है कि प्रजाकीय राजमें राजा धीर मेहतरकी कीमत एक-सी रहनेवाली है। मनुष्यके नाते दोनोंकी कीमत एक ही रहेगी, पर दोनोंकी बुद्धिमत्तामें भेद हो सकता है। अगर भावनकोरके महाराजाके पास बड़ी भक्त है तो उन्हें उसे दोनोंकी सेवामें मनाता चाहिए। अगर प्रजाको कुछ करनेमें वे अपनी बुद्धि बीबाते हैं तो उनकी वह भक्त फिन्सकी है।

आप रहें, लेकिन रैयनके मेबक बनकर रहें। अगर कासेस भी रैयनकी मेबक नहीं रहेंगी तो वह भी टिक नहीं सकती।

राजा भोग यह न कहें कि कासेस कौन होती है पूछनेवाली। कासेसने राजाभोगी काफ़ी मेबकी है। मैं जब पटना या सबकी बात है कि मैसूरकी राजगद्दीका कुछ बिस्वा बिगड़ गया था और कासेसने मैसूरकी गद्दी दिसवा दी थी। कासेसने भी कुछ ऐसा ही किस्सा हो गया था। तब कासेसने महायत्ता दी थी और बड़ीबाकी भी एक बार काफ़ी मलामत होने लगी थी तब उन समयानमें उने (बड़ीबाकी) कुछबानेके लिए कासेसने कम प्रयत्न नहीं किया था। कासेसने यह बोधा था कि राजाभोगी अपना ही समझा जाय। वे हमारा क्या बिगड़ेयें ? समय आनेपर हमारे मृत्योगी बन जायगे। इसलिए कासेसने उनका विरोध नहीं किया। अब अगर राजा यह कहते हैं कि 'हम तो राजा हैं' तो यह ठीक बात नहीं है। उन्हें चाहिए कि वे बिधान-परिषद्में आने, बल्कि अपनी प्रजाके प्रतिनिधियोंकी भेंटें।

अगर वे ऐसा नहीं करने लें तो मातुम होता है कि हिंदुस्तानके मसीबने कगडा-ही-कगडा निपटा है। अभी हिंदु तथा मुसलमानका कगडा पूरा निपटा नहीं है कि क्या अब राजाभोगी सड़नेकी बात सामने आ रही है। फिर सिविल सर्विसवाले हैं। मैं समझता हू कि सिविल सर्विस ठीक तरहसे मुसकरा रहेगी और किसी कगडेकी बायस नहीं बनेगी। सड़ाई ही बढनेवाली हो तो और भी बहुतसे छोटे-छोटे फिरके पडे हैं जो कहेंगे कि हम दरबारसे आयेगे और हम दरबारसे मुल्कका हिस्सा हबपेने। लेकिन फिर हिंदुस्तानका क्या होगा ? हम तरह तो किसीके हाथमें कुछ रह जानेवाला नहीं है। मारा देस बरबाद हो जायगा।

मेरे मनीबमें जन्मसे जडाई पटी है। मैं चाहता हू कि वह और न बढ़नी पडे। फिर भी बिस्वको यह बर्बाद नहीं होता कि छोटे फिरके आपसमें मलते रहें और हम पाई हुई आबादी खो दें।

अतने मैं कहूंगा कि हम राम-रहीम और कृष्ण-करीम रहते रहें। राजाभोगीको हम वाली न बने, पर उनसे यह बकर कहें कि आप प्रजाके

सेवक बनकर ही रह सकते हैं, स्वामी बनकर रहनेकी आपकी कोई गुणादय नहीं है।

। ३६ ।

१४ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

पञ्चरात्रकी आर्यनाका यह सचन मुझे बहुत प्रिय है। गणेश-मोक्षकी कथा हमारे बड़ा बड़े ऋषि प्रकारका साहित्य है। इतना चर्चितवादी होने हुए भी जब यज्ञोद्धार जाता है और देखता है कि अपने बनने सब काम नहीं चल सकता, बाह्र उसे खुदा ही बेगा, सब वह सोचता है कि सब जनमानकी करण बेनी चाहिए।

हमारी भी ऐसी ही हालत है। इस समय हम समझ रहे हैं कि हम हार गए हैं। लेकिन हम हारे नहीं हैं। जो ईश्वरकी अपने पास समझता है वह कभी नहीं हारता।

मनुष्यको ईश्वरने बनावाही ऐसा है कि जब वह करीब-करीब बननेको होता है, जब उसका सब कुछ जुट जाता है तभी उसे ईश्वरको पुकारनेकी बात सूझती है। जब वह अमन-मनने होता है तब वह ईश्वरको नहीं पुकारता है। ईश्वरने ऐसा ही खेल रच रखा है।

कम मैंने भावनकोरके बीबाल सर सी० पी० रामस्वामीकी बात आर्यनाकोनो सुनाई थी। आजकल तो तार और रेडियोका जमाना है। उनके कानोसक मेरी वह बात पकूच गई और उन्होंने एक सवा-बीस तार मेरे पास भेज दिया है। उन्होंने बहुतसे बुलाने किए हैं, पर भावनकोर-कार्जेन-कमेटीको समा करने और बुद्धि निकासनेकी इजाजत नहीं दी है। उसके बारेमें वे कुछ नहीं बोलें हैं। इसमें मुझे बुराई नजर आती है। यह नज्ज पच्छे नहीं है। वे कहते हैं कि भावनकोर तो सवासे आयाव रहा है।

बात ठीक है, हमारे देशमें पुराने जमानेमें नौकरो राजा होते थे, पर हम हिंदुस्तानको एक मानते थे । ऋषि-मुनियोंने देशभरमें जगह-जगह तीर्थ-स्थानोंकी रचना की थीर हुमरी भी ऐसी व्यवस्थाए कर दी कि सामाजिक, धार्मिक और धार्मिक रूपमें सारे मुल्कको हम एक ही अनुभव करने दें ।

पर राजकीय क्षेत्रमें हमारा देश कभी एक नहीं रहा । चन्द्रगुप्त या अशोकके साम्राज्यमें हिंद एक हो गया था, पर तब भी एक छोटा-सा दक्षिणी कोना उसके साम्राज्यमें बाहर था । जब अशोक आए तभी पहली बार टिबुबटने लेकर करचीसक और कब्जाकुमारीसे लेकर काश्मीरतक नारा देन एक हो गया । हमारे नष्टके लिए नहीं, पर अपने राज्यकी भलाईके लिए अशोकोंने ऐसा किया । इस अशोक राजमें वह आजाद था, ऐसा नाबलकोरका कहना गलत है । राजा जोध आजाद क्या थे, अशोकके गुलाबने थे । पूरी तीरने उनकी मासहतीमें बसे हुए थे । जब जब अशोक राज जा रहा है और लोगोंके हाथमें राज था रहा है तब किसी भी राजाका यह कहना कि हम तो आजाद थे और आजाद रहेंगे, विलकुल गलत बात है और वह बरा भी सोभाकी बात नहीं है । सर सी० पी० रामस्वामी तो मेरे दोस्त रहे हैं, सब बात सही, लेकिन मेरा सडका ही क्यों न हो, सही बात कहनेसे मैं क्यों रुकू ? हिंदुस्तान जब आजाद होता है तब अगर वे यही कहते हैं कि नाबलकोर आजाद है तो इसका मतलब यह है कि वे आजाद हिंदने सडना चाहते हैं ।

मैं तो उनमें कहूँ कि आप तलपरमें नीचे उतरिए और नाबल-कोरके लोगोंके साक्षि बनकर रहिए । जब अशोकोंने आपसे एक बार राज छीन लिया और कुछ पैसे लेकर तथा अपनी रैयतको कृपलनेका आपको अधिकार देकर वह राज आपको लौटा दिया तो उसमें इतनी फलकी बात क्या थी ? फलकी बात तब है जब आप जनताको अपना नातिक मानें । जैसे तो हिंदुस्तान गिरा नहीं है और अगर वह अपनी परेजानीमें पडा है तो वह पराजितकी बात नहीं है कि आप जो आदमी गिर पडा है उसको ऊपरमें बात कर दें । हिंदुस्तानके एक-बीबाई और तीज-बीबाई ऐमें दो दुकडे होते हैं तो उन दुकडोंकी बातसे आपका कोई

सब नही। चाप मरीच कने और सनने। हिमने बेकार फसाव न बढावे।

राजसमितीके कुछ आई बाए है। उन्होंने कुछ बातें सुवाई। सुपेठा कृपलाग्नी भी बहाके दु सनरे हान भावूम हुए। पर एक बात जानकर बहुत दुःख हुआ। वह यह कि अबतक पाकिस्तानकी बात सब नहीं हुई थी अबतक तो हामात कुछ ठीक जी थे, पर अब तो बहापर मुसलमान बडा बात के रहे हैं। बहाके मुसलमान कह रहे हैं कि पाकिस्तान क्या है यह हम सब बिना देंगे, सबको मुसलमानोंके पुरान बनावने।

यहा आर्यगाने मैं इस बातकी कर्षा इसलिए कर रहा हू कि मेरी बात सनी मुसलमानोंतक पहुच जाय। बिना साहबतक तो पहुंचेगी ही। अगर मैं बस कहना हू तो सब मुसलमान आई मुने बढे और कहें कि ऐसी कोई बात नहीं है। पेगावरने आकर बेको तो सही कि सब हिंदू, सिख, औरत, कर्षे कितने आचमते है।

पर मेरे पाम नाम पडे है। दो-बार नामुनी आचमिदोने ऐसा कहा हो तो समझा जा मर्या है कि हर जगह कुछ वीर-विम्वेदार प्रावनी होने ही है, लेकिन नारे मुसलमान अगर इन तथ्य सोचते और कहने हो तो यह बहुत बुरा है।

बिना साहब तो कहने रहे हैं कि मुसलमानोंकी अक्षरियतमें सब छोटी सादादबावे बनने रहेंगे। इसके बदले यह क्या हो रहा है? पाकिस्तान अब जानेपर भी अगर देना रहा, मर्या बटवा गया तो इसका यह मतलब हुआ कि हम बेधकूक बनते रहेंगे। जानी मैं तो सब सरदार बनने और जो कोई बिधर्मी होवा उनके उनके बहा पुरान बनना होगा या नीरद दनकर रहना होगा, और यह कबुल करना पड़ेगा कि वह उनके बीधा है। अगर वह मर है तो बहुत बुरी बात है। मैं तो उनमे यह मुनेको तबीरहू कि पाकिस्तानमें सबको बटिया तरीकसे रडा गया है और मरिनी मरडी हानमने हैं। अब देना देना सब उनके प्रति मेरा मित्र मर्या। अगर देना न होवा तो समझू कि बिना साहब बसत जान मरने मैं और माइडबेटन माहकके लिए जी मेरे दिलमें एक पैदा हो जाणा कि इनमे बडे नेवारति होने हुए जी मैं समझ नहीं पाए और

उन्होंने बल्लबाची की। बार-काट होती थी तो होती रहती, पर ये यह कह सकते थे कि तलवारके सामने झुककर हम कुछ नहीं बने।

: ४० :

१५ जून १९४७

(विश्वित्त मवेस)

मुझे अफसोस है कि आज मुझे मौन बराना बसती बेना पया, क्योंकि कल तीसरे पहर कार्य-समितिकी सभा होनेवाली है। इसलिये अपना सबसे अधिकार देता हूँ। दुनियाके कई मुल्कोसे मेरे पास बिदिठना आई हैं, जिनमे मुझसे एक सवाल पूछा गया है, जिसका जबाब मैं आज आप लोगोंके मार्फत देना चाहता हूँ। वह प्रश्न मसोपमें यह है—‘आपके देशके राजनैतिक बल अपने शियासी मकसदको प्राप्त करनेके लिए हिंसाका प्रयोग क्यों करते हैं? दिन-ब-दिन आपके वहाँ हिंसा बढ़ती ही जा रही है। क्या आप इसका कारण बता सकते हैं? तीस सालतक आपने अरबोंको साथ अहिंसात्मक लड़ाई की, उसका वह नतीजा क्यों? क्या वह होने हुए, आप अभी भी बगलको अहिंसाका संदेश देने?’

इस सवालका जबाब देते हुए मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि मैं तो विचालिया हो गया हूँ, लेकिन अहिंसाका विवाला कभी नहीं निकल सकता। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि जिस अहिंसाका हमने इस तीस सालमें उपयोग किया वह निर्बलकी अहिंसा ही रही है। मेरा यह उत्तर सतोषजनक है या नहीं, वह तो आप लोग ही कह सकते हैं, पर इतना तो मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि आजकी बसती हुई हालतमें कमबोरोकी अहिंसाके लिए अवह नहीं है। सब तो यह है कि हिन्दुस्तानको आतंक बीरोकी अहिंसाके प्रयोग करनेका मौका ही नहीं मिला। अगर मैं बराबर कहता रहूँ कि महादुरोकी अहिंसाके समान दुनियामे दूसरी कोई सच्ची कल्पित नहीं है तो जमने

कोई सास फायदा नहीं हो सकता। इस सम्पत्ती का भित्त करनेके लिए तो बार-बार धीर बिस्तारने जीवनमें उसे प्रफट करनेकी जरूरत है। बहालक मुझमें बन पड़ता है मैं तो अपने जीवनमें उसे प्रफट करनेकी कोशिश कर ही रहा हूँ, लेकिन धावद मेरी काबिलियत कम हो, धावद मैं जेलबिल्ली हूँ, तो फिर मैं सोचोंको अपने पीछे चलनेको क्यों नहीं जब उसका कुछ नतीजा नहीं? यह सवाल पूछनेके बादकई धीर मेरा उत्तर तो सीधा है। मैं निश्चिन्त नहीं कहूँ कि यह मेरे पीछे चले। हर एकको अपनी अंतरात्माकी आवाजका हुक्म मानना चाहिए। अंतरात्माकी आवाज न दून सके तो बैसठठीक समझबैसा करना उचित होना, लेकिन किनी भी मूर्खसे दूसरीकी नकल नहीं करनी चाहिए।

एक दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न भी मुझमें यह पूछा गया कि अगर आपकी पत्नी रात है कि हिस्तान बहुत रातोंपर जा रहा है तो फिर आप नून करनेवालोंके साथ वास्ता क्यों रखते हैं? अपने दूते आप अपनी काफ़ा खुद क्यों नहीं कर बैठे धीर इस बातका विस्तार क्यों नहीं रखते कि अगर आपका रास्ता ठीक है तो आपके पुराने साथी बाँटकर आपके पास आ जायेंगे? यह सवाल मुझे अचकित लगता है। मैं उसके खिलाफ़ बहुत नहीं खेडूँगा। इसका ही जवाब कि मेरी अज्ञा तथा मेरा ईमान ऐसा ही है बैसा पहलेसे था, यानी मेरी समझमें उनकी ताकत कम नहीं पड़ी है। यह मुझमें है कि मेरा तरीका बहुत सही हो। मूर्खता या जलमझने पुराने मझने या कठिनाई धीर जलमझनेके समय पुराने जवाहरम धीर अनुभव काममें आते हैं, लेकिन इन्सानको यन मनके काम नहीं चलाना है।

इसलिए मैं अपने मन जलाहकारोंसे यह प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे साथ धीर रखें धीर इसने भी जवाब यह कि वे मेरी इस अज्ञामें हिस्सेदार हो कि इस हु भी जलमझनी पीडा हटानेके लिए कठिन होने-पर भी निवा अहिंसाके धीर कोई भीथा धीर साफ़ रास्ता नहीं है। मेरे-जैसे लाखों आदमी इस नालकी नसे इस जीवनमें सिद्ध न कर पाएँ, यह उनकी कमजोरी तथा नाकामयाबी होगी, न कि अहिंसाकी।

एक धीर मान मैं आपसे कहना चाहता हूँ। मेरा जीवन होने हुए भी।

भावमकोरके कुछ भिन्न भाव मुझसे मिलने आए थे । उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि जो भी मैंने उस रिवाजसके बारेमें कहा उसमें बुरा भी अस्तित्व नहीं है । यह भी बताया कि जो बत्से किए गए उनपर जाठी चार्ज हुए और कम लगभग ३५ व्यक्ति गिरफ्तार भी किए गए । महा आभ रामका गला चोट खा रहा है । जो भी हो, मुझे बुरा भी लग नहीं कि आजाद हिंदुस्तानने एक रिवाजसका अपनी आजादीका ऐलान करना एक बेहूदा बात है । इसका मतलब तो यह भी हो सकता है कि उन्होंने हिंदुस्तानके करोड़ों आजाद व्यक्तिवोंपर सजाईका ऐलान कर दिया है । यह कसई नासमझीकी बात है बासकर जब जब कि महाराजा साहबके साथ उनकी जनताका सहारा नहीं है । जबतक अंग्रेज सरकार उनके पीछे पीछे भी जबतक ऐसा करना मुमकिन था, लेकिन अब तो हाजत बिलकुल बदल गई है ।

१ ४१ १

१६ जून १९४७

माइवी और बहनो,

आज भबरे जब मेरा गीत था तो श्रीपुस्तोत्तमदास टहन आए । मैंने आपको बताया था कि जब टहनजीने कहा कि हरेक स्त्री-पुरुषको जल्मबारी बनना चाहिए और स्वयंसेवक बननी चाहिए तो यह सुनकर मुझे कैसा बुरा लगा था । एक पत्र-लेखकने मुझसे पूछा था कि गीता पढते रहनेपर भी इस तरह आपको बुरा कैसे लग सकता है ? उस पत्रसे यह भी पता चलता था कि टहनजी 'सठ प्रति श्राद्ध' का सिद्धांत मानते हैं । अब टहनजीसे मैंने पूछा कि आप क्या मानते हैं ? इसका जवाब देते हुए टहनजीने बताया कि मैं 'सठ प्रति श्राद्ध' के सिद्धांतको तो नहीं मानता हूँ, लेकिन स्वयंसेवक के लिए जल्मबारी बनना जरूरी है, ऐसा मैं मानता हूँ । गीताने भी यही सिखाया है ।

तब मैंने टहनजीसे कहा कि इतना तो थाप उस माईको सिख

बीबिए कि आप 'मठ प्रति भाद्व' ने माननेवाले नहीं हैं ताकि वे भ्रम में न रहें। धीर स्वरक्षा के लिए शिक्षा करने की बात गीता में नहीं है, यह मैं नहीं मानता। मैंने तो गीता का प्रथम ही अर्थ निकाला है। मेरी समझ में गीता ऐसा नहीं सिखाती है। गीता में या दूधरे भित्ती संस्कृत प्रथम अक्षर ऐसी बात लिखी है तो मैं उसे वर्णमाला मानने को तैयार नहीं हूँ। अथवा संस्कृत में कुछ लिख देने से कोई वाक्य भात्म-वाक्य नहीं बन जाता।

टङ्कनीने मुझे कहा कि 'तुने तो उन बबरो को मारने के लिए भी लिखा था, जो बेहूष पीका पड़वाते हैं धीर सेती उदाह देते हैं।' लेकिन मैं तो (गामीनी) किनी जी गामीनी धीर गदाहक कि पीटीतक को भी मारना पसंद नहीं करता। फिर भी सेती-गामीनी सबाल प्रलय है धीर मनुष्य-मनुष्यका प्रलय है।

तब टङ्कनीने कहा कि 'मठ प्रति भाद्व' वाली एक बात के बख्से में तो बात निकालने की बात हम न करे धीर एक बात के बख्से में एक बात तथा एक बख्से के बख्से में एक बख्से की बात भी नहीं करेंगे; परन्तु हमने कस नहीं जेंगे, अपनी मक्ति नहीं दिखावने तो स्वरक्षा किस तरह होगी?

इसके बारे में मेरा यह जवाब है कि स्वरक्षा बरकरारी बात; पर मेरी स्वरक्षा कौन होगी? कोई मेरे पास जाता है धीर कहा है कि बोल, राम-नाम सेता है या नहीं? नहीं बोला तो यह सलवार देह। तब मैं कहूंगा, बख्शि मैं हराम राम-नाम सेता हूँ, लेकिन सलवार के बख्शि मैं हराम न भूया, बाहे मारा क्यों न जाऊँ? धीर इस तरह स्वरक्षा के लिए मैं जसगा। मैंसे कसया पड़ने में मेरा कोई जर्म जानेवाला नहीं है। क्या हो गया अगर मैं ठेठ मरबी में बोलू कि अस्ताह एक है धीर जगका रसूख एक ही मुहम्मद पैगम्बर है। ऐसा बोलने में कोई पाप नहीं धीर इतने जरे में मुझे मुसलमान मानने को तैयार है तो मैं अपने लिए फटाकी बात समझूंगा। लेकिन जब सलवार के धोर में कोई जसगा पड़वाने आयेगा तब कभी भी जसगा न पड़ूंगा। अपनी जान बेकर मैं स्वरक्षा कसगा। इन गदाहुरी को सिद्ध करने के लिए मैं बिना रहना चाहता हूँ। इसके अलावा धीर तरीके में जीना नहीं चाहता।

मैंने कहा है कि भौतिक दृष्टिसे हमारी भूमिके दुकड़े नसे हो जाय पर हमारे दिलोके दुकड़े नहीं होने चाहिए, पर मेरी कौन सुने ? एक दिन था जब गांधीको सब जानते थे, क्योंकि गांधीने अंग्रेजोंके साथ लड़नेका रास्ता बताया था। और वे अंग्रेज भी किन्तु, केवल पीन जात। पर उनके पास इतना सामान था, इतनी ताकत थी कि बकील एनी बेसेंट रोडके बगल गोलीसे बिया जाता था और हमारी हिंसा चल नहीं पाती थी। तब अहिंसासे काम चलता बीजवा था, इसलिए उस समय गांधीकी पूछ थी। पर आज लोग कहते हैं कि गांधी हमें रास्ता नहीं बता सकते हैं, इस बातसे स्वरक्षाके लिए हमें अलग हाथने लेने चाहिए। तो फिर यही कहना पड़ेगा कि हमने तीस वर्ष बेकार जोए जो अहिंसाकी जबाई नहीं। हिंसाके सहारे तुरत ही उनको (अंग्रेजोंको) हटा देना चाहिए था।

लेकिन मेरे जवानने हमने तीस वर्ष बेकार नहीं गंवाये हैं। हमपर बेहद अलग छाप गये फिर भी हम अहिंसक रहे, यह अच्छा ही किया। उन्होंने अपने अलग-अलग सब हमारे खिलाफ बरसाए, पर हम बसे नहीं और इन तरह कांग्रेसका पैगाम सारे हिंदुस्तानमें फैला, लेकिन वह बात जाह बहालोंने ठीक तरहसे नहीं फैला, क्योंकि हमारी अहिंसा नामर्बकी अहिंसा थी। उस समय हमको किसीने एटम बम बनाना नहीं बताया था। अगर हम वह बिबा जानते होते तो उनीसे अंग्रेजोंको अलग करनेकी सोचते, पर दूसरा कोई चारा नहीं था, इसलिए तब मेरी बात मानी गई और मेरा सिक्का बना। पर लोग कहते हैं कि आज मेरा प्रभाव किसीपर नहीं है।

लेकिन आप लोग जो गैज यहा आर्चनाने पाते हैं तो क्यों पाते हैं ? आपपर मेरा कौन-सा और है ? आप मेनसे बचकर यहा पाते हैं और वासिसे यहा बैठकर सुनते हैं। अगर इसी तरह मेरा सिक्का आज सिर्फ हिंदुधोपर ही चले तो आप देखेंगे कि बहादुरीकी अहिंसासे दुनियामें हिंदुस्तानका सिर ऊंचा उठ जायगा। मुखसमानोसे मैं नहीं कहता। उन्होंने तो मुझे अपना जन्म मान रखा है, पर हिंदुधो तथा सिखोंने मुझे जन्म नहीं बनाया है। लेकिन हिंदु मेरी अहिंसाकी बहादुरीकी बात

मार्ने तो हमारे पास जो कुछ धन-माला होने, उन्हें नें दरियामें धीर बबईकी 'बैक नें' बाड़ीने माल बेनेको क्यूँगा और बहादुरोको नहिंसाका प्रमत्त करना सिखा दूँगा।

काब्रेन नहामिसिमैं तो मुट्ठीभर धातमी बें। उनमें जी कृष्णो दिसोमें मकुषित विचार है, यह मैंने देखा। क्योंकि मैंने दो-एक व्याख्यान सुने नी बें। बेम्बिन मुझे तो मुल्कभरकी बातका पता चलता है। मैं उन करोबोका बना हुआ हू। मैं कहूँ है कि अब मुसलमान कहा जानवा? याब बेना मुसलमान कर नकसा है उनसे कही क्याथा हम कर सन्ते है, क्योंकि हम तावाकमे क्याथा है। धंरोबोके जानेपर हम उनपर धपना एज बनायने। हम अपनेको एज करनेका हकदार इसलिये जानते है कि हम बेस बए, हमने बाडिया बाई धीर हमने कोड़े जी बाए। पर ऐसा करना हमें मोचा नहीं देता। यह सारी हिंसा है। अगर आप अहिंसाजी बात मुलवा नही चाहते धीर हिंसाकी बात ही सीखते है तो उसने हमारी धर्म है। इस तरह 'बैतेको तैसा' का न्याय करेये तो समझ लीजिए कि दोनो बर्बोका नास है। इससे इस्लाम जी नरेवा धीर हिंदू-धर्म जी।

अगर हम अबरबन्तोनी अहिंसा अपनायने तो उन्होंने जो पाकिस्तान से बिदा है वह महब शिर्कीना रह जानेवाला है। अहिंसाने हम कुछ छोएये नही।

मैं तो पाकिस्तान धीर हिन्दुस्तानको समझ जानता ही नहीं हू। मुझे पचास वाला हो तो मैं पामपोटें बेनेबाता नहीं हू। शिव जी मैं ऐसे ही बना बाऊना धीर पैरस बाऊना। कोई मुझे रोक नहीं सकेवा। भले ही मैं मुझे बुझन कहूँ, पर अब मैं बाऊना तो किनी फलेंबलीकी मेंबरी करने नहीं बाऊना, केवाने लिए बाऊना। मेरी जिन्दगीमें वह पहला शीका न होया। नोधाटाखीमें बसा ही गया था धीर अब जी कोई न समझे कि वह इन्फानिस्तानमें होनेको है, इसलिये मैं कहा नहीं बाऊना। मेरा बिस नहीं पडा है धीर वहाँ जाकर मैं हिंदुप्रति क्यूँवा नि अमर आप नम्ने हिंदू है तो—बाहे फिलवी ही मार-काट करनेवाले आपके चारो ओर क्यों न फिलो हो—आप किसीका डर न लनें।

लेकिन हम बहादुरीकी अहिंसा तभी रख पायेंगे जब हम शराब-खोरी और चोरी-बारिको छोड़ेंगे । अगर लगातार हम व्यसन-व्यभिचार-में पड़े रहे तो हिंदू आचार्य होकर भी उनकी आवादी व्यर्थ जानेवाली है ।

बहादुरी तो मुझमें सब आयनी जब मैं मारा जाऊँ । तो भी मारनेवालेके भलेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता रहूँ । ईश्वरका नाम भी मैं केवल मुहतेज नूंगा, पर उसे अपने हृदयमें जिघाँसूँ हुआ बेखूगा । मंदिर-मस्जिदमें उसे दुहने नहीं जाऊंगा । अगर सब हिंदू ऐसे हो जाय तो बहुत काफी है । वे ऐसी बहादुरीकी अहिंसा न भी सीखें और केवल बोबेसे सिख ही बहादुरीकी अहिंसा अपना वे और शासकाका एक-एक व्यक्ति तथा शासके बराबर सच्चा बहादुर बनें तो हिंदुस्तानका काम बन जाय ।

परभाव तो बाबसाह जान, जो इतने बहादुर रहे हैं, बहादुर नहीं बन सकते । वर्षों यह पठानीकी अहिंसा सिखाते आए हैं—पर भाव यह कहते हैं कि मैं नहीं कह सकता कि मैं हिंदुस्तानमें हूँ । अगर कहूँगा तो बिहीरसे बस गुना काऊ नहीं हो जायगा । लेकिन वे क्या करें ? अपने पठान भाइयोंको कहातक साहस दिखाने ? अहिंसा कोई हस्ती-मिर्च तो है नहीं जो बाजारसे मोस्र या चायनी । अगर वे सच्ची अहिंसा सिखा पाते तो अकेला भीमाप्रास समूचे हिंदुस्तानको बचा सकता था ।

मेरे पास नागपुर तथा बबलमि दो पत्र आए हैं, जो सही हो तो दुःखकी बात हैं । क्या आप अपने राष्ट्रीय मुखजमान भाइयोंको, जिन्होंने आपके साथ इतनी बातलाए जेसी, ऐसा कहेंगे कि आप हिंदुस्तानके नहीं हैं ? मैं तो कहूँगा कि जीगी मुखजमानसे भी हम न कहें कि आप बाइए । ऐसा कहना अहिंसाका न्याय नहीं है । फिर तो बिजांकी दो राष्ट्रकी बात ठीक ही कहलाएगी और दुनिया हमपर झुकेगी । इसका मतलब तो यह है कि अजी हिंदुस्तान पूरा आबाद बना नहीं है और हम उसे हाथसे खो देनेका सामान पैदा कर रहे हैं ।

मैं नहीं कहूँगा कि मुखजमान हमारे साथ सम्मेली (?) कर सकते हैं । जो कुछ अंग्रेजके राजमें था वह सब उन्हें नहीं दिया जा सकता । पूबल् निर्वाचन वे मार्ग तो हम नहीं देंगे । पूबल् निर्वाचन दो अंग्रेजोंकी कवरन

जगई हुई बहरी बर बी। पर हम उनके साथ ज्वाब तो करेंगे ही। उनके बच्चोंकी छातीमकी चहुँधियत जतनी ही देंगे बिठनी अपने बच्चोंकी, बल्कि ने बरीब हो तो वे ज्वादा चहुँधियतके हफ्तार होने भीर अगर हम ऐसा ज्वादा करने तो हम हिस्तदानमे जोम बहादुर साबित होने।

। ४२ ।

१७ जुल १९४७

मादवी भीर बहनी,

आजकल जो मकन गाने आते हैं उन्हें पसन्द करनेमे मेरा ह्रास नहीं होता। पर ठीक वही मकन आता है जो बीजेका होता है। आजके मकनमें कहा है कि अब छात्रकी सवत मिल जाती है तब हम परमापन भूख आते हैं और तब कोई बेरी ना बेनामा नहीं होता।

आजकल हमें इनी बातकी सबसे ज्वादा चकराह है। लेकिन जो मेरे पास आता है वही कहता है—‘तुम बिठना भी बीछो, वह मकन तो रहने ही जाता है। बीलो ही अपने-अपने दावरेको कस-कर मजबूत बनावे बिना नहीं चलेंगे।’ वह बात मुझे अच्छी नहीं लगती, फिर भी मुझे सबसे परेजानी नहीं है। मैं तो कहता ही रहूँगा कि जो हुआ वह भले ही हो गया, लेकिन उसपर मोहुर लगाकर हमें उसे पकका नहीं करना है।

आप जानते हैं कि कब जब हमारी शार्बंगा पूरी हुई तब एक भाईने प्रश्न किया था। मैंने उसे बिचकर जेबनेको कहा था। उसने बिना है—‘अगर पाकिस्तान नहीं टूट जाता है तो मैं भीर मेरी

‘बिचर पई सब छात्र पराई,

अब से ज़ादु ज़पत पई।

नहिं कोई बेरी नहिं बेनामा,

सकल सब हमरी अब आई—

धर्मपत्नी—दोनो फाका करके मर जाएंगे। और फाका भी यहाँ पड़े-पड़े करेगे।^१

फाका करना है तो पहले मैं करूँ। हर चीजका शास्त्र होता है, यानी उसके करनेके मानून प्रवचन पद्धति होती है। चर्च-बैसी छोटी चीजका भी शास्त्र होता है। पहिले हम उसको नहीं जानते थे, लेकिन अब उसका शास्त्र बन गया है। अब हमें चर्चोंकी गणितका पता चला है। मैं तो यहाँतक कहता हूँ कि सारी दुनिया उसके द्वारा आबाद होगी। 'एटम बम'से दुनिया आबाद नहीं होगी। दुनियामें शास्त्र दो प्रकारके हैं—एक सांख्यिक और दूसरा राबर्टी। यानी एक धार्मिक और दूसरा अधार्मिक। 'एटम बम' का शास्त्र धर्मबाना नहीं हो सकता। वह ईश्वरको नहीं मानता, बल्कि वह खुद ही ईश्वर बन जाता है।

इसी तरह फाकेका भी शास्त्र होता है। ग़ौर तरीकेके फाका करनेमें धर्म नहीं होता। अगर कोई कहे कि जबतक ईश्वर मेरे सामने नहीं आया तबतक मैं मूखो मरूँगा, तो वह मर जाने ही जाय, पर ईश्वर उसे नहीं दिखेगा।

सार्वजनिक धनधनका भी एक शास्त्र है, और उसको जाननेवाला मैं हूँ। यद्यपि मैं भी उसे पूरा नहीं जानता, पर सबसे ज्यादा मैं ही उसे जानता हूँ। गोया 'ऊबड़ बेचने में घर डूबी पेट', यानी मेरी स्थिति है। मैं इस धनधनको धार्मिक धनधन नहीं मान सकता। इसका मेरे दिल-पर कुछ असर होनेवाला नहीं है। दुनियाकी भी इसके साथ हमदर्दी नहीं हो सकती। इसलिए मैं तो दोनोंसे बचूँगा कि आप फाका छोड़ दें और अपने घर जाय।

लेकिन घर जाकर क्या करें? चुप बैठ जाय? नहीं, चुप बैठनेकी बात नहीं है। हमें अपने मनमें यह बात धाने ही नहीं देनी है कि हम धनग-धनग हो गए हैं। हम अपने दिलमें पाकिस्तान माने ही नहीं, किमीको अपना बैरी न समझें, किसीको बेगाना या पराया न मानें।

^१ धार्मिक-नविरतों।

धीर यह सब मान-मनाने ही मन्त्रेण जानी हम मनुष्य पदों, बुद्धि विचार छोड़ें। ऐसा नहीं हो मन्त्रेण अब हम अपने विनयी शुद्धि-मे जानी करते। जिसने बुद्धिमान आत्मानिने नहीं टक मने। रामरा नाम लेनेही वह खासी हो मन्त्रा है।

लेकिन ध्यानमन हमारा विन ही जिम्मे-मने उपनोलीने मोचना रहता है। हम रामको नहीं याद करें। हम विचारनेवाले करें—धीर विचारके लिए मैं क्या कर। लेकिन हालत यही है कि हमारा ध्यान गलत जानीपर जाता है। लोग धीर-मने कहें ही जानें हैं कि हम मुसलमानोंकी उबर लेंगे। धीर हम समझ हम यह पाकिस्तानको परमा बनानेकी धरणी करने हैं।

पाकिस्तान विधाने नहीं बनाया है। हमें ध्यानमें ही समझा नहीं था कि विधान पाकिस्तान बना पाया। पर वह बहादुर भावनी है। अंग्रेजोंकी मार्केन उसने पाकिस्तान प्राप्त कर ही लिया। लेकिन हम अपने अपने दिनों जाने न जानें धीर यह कहें कि मुसलमानोंकी अब हम देख लेंगे तो उनसे वह पाकिस्तान भिट नहीं जानेवाला है।

उनका मतलब यह नहीं कि मैं मुसलमानोंकी सुमानद करनेके लिए अपने कहता हूँ। हम अपने करने छोटे मार्केन कागामद नहीं करते। उनके प्रति अपना ही धर्म है उनका पासन करते हैं और उसका विधानन बना लेते हैं।

धायकी अवधारणे क्या कहा होगा कि धाय मैं बाइसरायने पास गया था। बाइसरायने मन्त्रेण पूछा कि 'मैंने अवधार देखा?' मैंने कहा, 'मैं अवधार मन्त्र देख पाता हूँ।' तब उन्होंने कहा, 'हमने धाय एक मन्त्र काय कर लिया है।'

विभावनके प्रकाशपर हिन्दुओंकी धीर मुसलमानोंकी असम-असम रिपोर्टें माननरामके पास धुन्नी-धीर बाइसरायने दोनों दलोंको बिसकर एक रिपोर्ट बनानेके लिए राखी कर लिया।

मैं तो कहता हूँ कि जब मार्केन-मार्केन बटवारा होना तब ही जब तो धीर वह उठ-धीरकर नहीं हो सकता। ऐसा नहीं हो सकता कि धरने अब एक नहीं है तो उसकी अब सोचकर बाहुकडे करके उसे बाट दें।

अगर हमारा एक-बीबाई और तीन-बीबाई बटवाग होना है तो सारे आरुटे समझवारीने निकालने होंगे ।

इसलिए एक समिति बनाकर यह जो अच्छा काम किया गया है, उसका सिगसिला बराबर चलते रहना चाहिए । केवल मुस्करा देने-भरने अच्छाई नाबिन नहीं हो जाती । अगर यह जबानी मिठास ही नहीं, पर सचमुच मिन-बुलकर काम किया जाना है तब तो मैं कहूँ कि मने पाकिस्तान आया । और तब बाइसरायको तकलीफ देनेकी बात ही नहीं रहेगी । बाइसरायको अपना दफतर बंद करना होगा । तब हम सरकारी अफसरोंसे, जो हम कामको जानते हैं, कहेंगे कि आप इकट्ठे बैठकर बोलो बगोको मतोप हो बैनी फेरिगिस्त बना दें । जहाँ हिंसावने काम बने, हिंसावसे बटवारा कर दीजिए, जहाँ हिंसावसे बटवाग ठीक न बैठे जहाँ पनी बालकर कैमना कीजिए, पर हम इस बातपर लकनेवाले नहीं हैं । मेससे ही कैमला करेंगे । बाइसरायको भी बीचमें नहीं डालेंगे ।

आमिरी बात यह है कि आप फिर मेरे पास आबनकोरके दीवान पर समझवारीका लबा-बीडा लार आया है, जिसमें मुझे समझनेकी कोशिश की गई है कि उनके नाब बहाके ईसाई आदि भी हैं । पर ऐसे लारमें मुझे बुरा लगता है । कटुबी बीचको भीठी बनानेने यह भीठी नहीं बन जाती । मुझसे ही इनकी बात बुरी है । 'आ जाओ, हम तो आजाद हैं ।' 'आप किसने आजाद है ?' रैयतने ? लोग इन तरह भारतसे आजाद होकर करेंगे क्या ? आप इस तरह बुला-फिरा कर बात न करें । सीधी बात करे कि हिंदुस्तानके साथ हम हैं, तब ही आप अपने राजाके प्रति सच्चे बकादार हैं, नहीं तो बेवफा है ।

१ ४३ :

१८ जून १९४७

भाइयो और बहनों,

आप लोगोंको कम में बता चुका हूँ कि जहाँ एक भाई और

उनकी पत्नी वात्सीकि-महिरके बाहर रास्तेपर उपवास कर रहे हैं। उन्होंने आज बिलम्बसे गरा पत्र मेरे पास भेजा है। पर मुझे खेद है कि उनमें समझदारी नहीं है। वे छोटे हैं, मैं बूढ़ा हूँ। अगर मैं कहूँ कि ज्ञानकी बात मैं कुछ जानता हूँ तो उन्हें वह मान लेनी चाहिए। वे कहते हैं कि आपकी बात हमें समझती तो ठीक है, पर हमारी अंतरात्मा नहीं मानती, इसलिए हम उपवास छोड़नेमें मजबूर हैं।

आप जोशोने शिखर महाराजकी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता-रहस्य' का नाम सुना होगा। उसमें इतना ज्ञान भरा है कि उसके अनेक पारायन करने चाहिए। मैंने यह मरमवा भेजमें पढ़ी थी। यह बात सही है कि मैं उनकी सभी बातोंसे सहमत नहीं हूँ, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि शिखर महाराज बहुत बड़े विद्वान के और उन्होंने सस्कृत साहित्यका बहुत गहरा अध्ययन किया था। उनकी यह गीता पढ़े मुझे बहुत प्रमत्त हो गया, इसलिए उनके ठीक शब्द मुझे याद नहीं हैं, पर उनके लिखनेका भावार्थ मैं बताऊँगा। यह बात मुझे बहुत ठीक लगती है।

उन्होंने एक जगह कहा है कि अर्धेजी भावाने अंतरात्माके लिए 'काम्बस' शब्द प्रयुक्त है पर जब यह कहा जाता है कि हम अपने 'काम्बस'के मृत्युविक्रम करने हैं' तब इसका सही अर्थ यह नहीं होता कि हम अंतरात्माके कहनेपर बसते हैं। हमारे वैदिक कर्मके मृत्युविक्रम 'काम्बस' सभीमें (जड़-प्रेतनमें) होता है। पर बहुतेका 'काम्बस' भीमा हुआ रहता है, अर्थात् उनकी अंतरात्मा भूट अवस्थामें होती है। तो उन अवस्थामें उन्हें 'काम्बस' कैसे कहा जाय ? हमारे कर्मके अनुसार मनुष्यकी अंतरात्मा तब जाग्रत होती है जब मन-विषयादिना पास में और दूसरी भी बहुत-सी चेष्टा धादि करे। शिखर महाराजकी इस बातकी मैंने पक्का भिना है। भास्वकी जो चीज हम पक्का सबके वही मार्गक है। मैंने बड़ी आहार हमारे लिए मार्गक बनता है किन्तु हम रत्न बनाए। तो शिखर महाराजकी इस बातकी मैंने पक्का भिना है, किन्तु जगिद तीन-भी भावाव अंतरात्माकी है और तीन-भी नहीं,

उसकी परख मैं कर लेता हूँ । कोई धीर वह कहूँ कि मेरी अतरात्माने मुझे कहा कि अमुक लड़केको मार जान, उसके हाथ-पैर काट ले और उसके चेहरा लूट ले तो वह अतरात्माकी आवाज नहीं, बबसा है । आच-कस तो हम भी बड़ बने हैं न ? हमें वही मुक्त रखा है कि हम मासूम बच्चोंको मार बलते हैं । पर वह अतरात्माकी आवाज नहीं होती ।

दूसरी बात यह कि मैं उपवास सिखानेवाला आचार्य हूँ । कुछ ब्रह्म लोग किसी चीजको न पानेतकके लिए अनशन कर लेते हैं । उन्हें समझाकर मैंने उनका अनशन टुटवाया है । स्व० बर्मनब कोसबीजीकी बात भी मैंने बताई थी कि उन-जैसे विद्वानतकने मेरे कहनेपर अनशन छोड़ दिया था और काका साहब काबेलकर जो महा भ्राष्ट्र हैं, वे कहते हैं कि कोसबीजीने अपने स्वर्णवासके पहले कहा था कि गांधीने अनशन छोड़नेकी बात ठीक ही कही थी । तो जब मैं, अनशनका आचार्य, कह रहा हूँ कि वे पति-पत्नी अनशन छोड़ दे तो उन्हें छोड़ देना चाहिए । तीन दिनका अनशन बहुत हो गया है । अब वे मान जाय ।

आपने प्रसन्नमुखों देखा होगा कि मैं कस बिन्ना साहबसे मिलता था । यह बात मैंने आपको नहीं बताई थी, क्योंकि पहलेसे मिलनेकी बात थी ही नहीं । जब मैं कहा था तब बाइसरायने मुझसे कहा कि बिन्ना साहब वहाँ आ गये हैं, उनसे मिल जा । तो मैं इन्कार कैसे करता ? मैं वह भावनी रहा जो बिन्नाके घर भी जाता था । हम मित्र और यह ठहरा कि बाबसाहूँ खान भी मित्र तो भ्रष्टा । और कस शामको तो हमें-फिर बाइसरायके पास जाना था । पर बाबसाहूँ खान तो निस्कीन आदमी उठे । वे गरीबोंकी-सी भोटरमें बैठकर डेबबब बल दिए । इसलिए जहाँसे जाँटकर आनेमें उन्हें नील बटोके बचाव पाच घंटे लग गए और हम कस शामको बाइसरायने पास नहीं जा सके ।

आज बाइसराय चले गए, पर उनके घरमें था कि हम मिलें तो भ्रष्टा । सो कार्ड इन्हेंके पास हम जाके मार बने गए । इसका नतीजा यह हुआ कि बाबसाहूँ खान बिन्ना साहबके घरपर उनसे मिलने गए हैं और अभी वह वहींपर है ।

इसपर भी हम बड़ी ज़रूरी-ज़रूरी आभास न बना लें कि सबसे अधिक बना हो गया। पर पाश्चिमात्य जो उत्पन्न हो गया है उनके पीछे भी गहरा हो जानेसे बचनेकी आभा नो हम कर सकते हैं। हमारा काम नो प्रयत्न करनेका है इसलिए बावज़ाह ज्ञान कायदे प्रायमके मन्त्रपर जाने गए हैं। स्पेसिफ़ देना ईश्वरके हाथकी बात है। हम प्रार्थना करें कि अच्छा परिणाम आ जाय।

और वह अच्छा परिचयान बनना हो चक्का है ? भीमात्रावर्मे जो सब पढ़ाने हैं वे एक हो जाय । पढ़ाने उसवारवान होता है । कोई पढ़ाने ऐसा नहीं होता जो उसवार और बहुत पढ़ाना न जानता हो । पीडी-दर-पीडी पढ़ाने सुनना चक्का होता रहा है । पर बाबासाहू साहब ने देखा कि हमियारोनी बहादुरीसे भी ज्यादा बुद्धि, मरकर स्वरवा करने हैं । बाबासाहू साहब ने देखा कि पढ़ाने लोग यह कभी बहादुरी पढ़ाने में भी एक होकर सबकी शिक्षा करें । पर यह स्वरवा पूरा होनेसे पहले बहादुरी बचाने-रहना भगवान् देना गया ।

कृष्ण नहीं कि हिन्दु पाकिस्तानमें साम्राज्य रखेंगे जोई कहेंगे कि काठेसके
नाम रखेंगे। श्रीगं गानेन तो धारु बरनाम है कि वह हिंदुओंकी हो
गई। इन बातपर पठान जमा-अस्तन होत और ऐसी यादवस्वकी
जबेकी दि दिनका इकाना खुबार होना। वे आपसमें बह जरेंगे।
बादमाह उल बातने है कि किनी नरहने कमगमनसहनी बसा-
के छठवर पठान आबाद रहे। वे खुद अपने कानून बनावें और एक
गई। किन बाहे के पाकिस्तानमें गई बाहे हिंदुस्तानमें मिलें। वे
कहनेहै कि इमाने पाम पैसा नहीं है। हमनो निष्पील आदमी हैं। हम अपना
धनधन नष्ट कल्ला नहीं चाहने, पर जिनमें मिलेंगे इसने बारेमें आपनी
जमा अिद जानेके बाद ही हम निष्पक्ष करेंगे।

जिसे जे हिंदू जाकर इस्लाम जाए हैं उह नी डा० साहब-
 नां कहल गइल है। उमरिया बादशाह बाल भीजाताके हिंदूभांगी
 मान गइल गइल हैं। भीजाताके नी अपनी कहलने हिंदू हैं जो
 मरिह हैं धीर-गुं जे मरिह कहलें। इन कहलने मल्लवी नगी मिल
 गइल हैं उह मल्लवगइल कहल जाइल गइल हो। उमरिया बादशाह

दान कायदे भावमके पास मिलनेके लिए चले गए हैं। पता नहीं जहासे गया करके साते हैं। हम इबादत करे कि भण्डा ही हो।

आमिरी बात यह कि आज फिर क्वाका अम्बुस मबीद साहब आए थे। कहते हैं कि अब गो पाकिस्तान बन गया है, तब राष्ट्रीय मुसलमानों-की अपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

रवाबा साहब अपनेकी भण्डा मुसलमान होनेकी बजहसे बैसा ही भण्डा हिंदू बताते हैं बैसा कि मैं अपनेकी भण्डा हिंदू होनेकी बजहसे भण्डा मुसलमान बताता हू। गोया हरेक भण्डा धार्मिक आदमी इनरे सभी धर्मवालोंके बीच पूरी इज्जत पानेका इकदार है। और उन्होंने यह कहा कि अब पूजक निर्वाचन चल हो जाने चाहिए। हम दुनियाकी नजरोंमें हिंदुस्तान भूनिचनमें एक बनकर रहना चाहते हैं। धर्म भगवत हो, पर कानूनकी दृष्टिमें सभी हिंदुस्तानमें रहना चाहते हैं और भूनिचनके प्रति जो बफादार रहता है उसे उसकी योग्यताके आधारपर नबी इक होने चाहिए जो हरेक हिंदुस्तानीको हो।

मैंने उनसे कहा कि आपको ये सब इक मिर्जे ही। अगर दूसरे नहीं तो हम दो तो हैं ही, जो एक दूसरेको पूरा धार्मिक और भण्डा भागते हैं। धर्मके कारण किसीका इक नहीं जीना चायगा, यह हम देखेंगे। पर यह भी हमें देखना है कि धर्मके नामसे क्वाबा रिमायत देना भी भण्डा नहीं होना।

एक बार बिजा नाहवने ऐसा ही किया था। कभी ये १४ शर्तें पेश करते थे, उससे पहले उनकी ११ शर्तें थी और फिर १४ हुईं। फिर २१ हुईं और फिर एक पाकिस्तानवासी शर्त हुई। लेकिन अब कोई ऐसा नहीं कर सकेगा। हिंदुस्तान बहुत बड़ा मुल्क है। उसमें सब आबादीमें रहें। जो हिंदुस्तानमें बफादारीसे रहना चाहें उन सबको हिंदुस्तानमें स्थान है।

: ४४ :

१२ जून १९४७

भाइयो प्रीर बहनो,

कह प्रार्थना-सभाकी न्यायिकी बाब एक मञ्चनने मुन्ने एक प्रश्न किया बा। मेंने उनने लिखक-केनेको कहा। उन्होने लिखकर जेबा। लेकिन वह पर्षी बेबने पढी रहनेके कारण कपडा जोतेके समय कुछ बर्ष और जब वह जेरे उस ज्दुनी तब वह पढी रही बा सम्वी थी। वह मेरे लिए सरनकी बात है, जे प्रलकत अहा मीजुब नहीं है, कमलिए मैं जना किन्हे मागू ?

मीन-बार किन्हे पाकिस्तानके विरोधमें जो बपति उपवास कर रहे थे, उनके बारेमें जब जब मैंने कहा कहा बा, उसे सुनकर उन्हें तो उन सीधोको बुग लगा कि मैं अपनेको उपवासके धाम्मका आचार्य कैसे कह्या हू। इसका जवाबी जना करता हू ? लेकिन मैं रातजो ना बने उनने कुछ बरेके लिए बिना और मेरे उन्हें समझाया कि जो धारणी पाक फुट गया है वह अगर बहे कि मैं पाक फुटका हू तो इसमें कमजोरी जना बात है ? उनका वह अधिक बोध बा। फिर ये समझ गए कि उपवास करनेमें यह धम्मा है कि हिन्दुस्तानके टुकड़े हो गए यह बात हम विश्वमें माने ही नहीं। उन्होने दुब-अस लेकर अपना उपवास छोड दिया। इसके लिए मैं उन्हें गुबारज्जाद होता हू। लेकिन उन्होने मुझसे पूछा, "यह सीधोताइए कि हूय-अनर्वका सम्य जेने है ?" तब मैंने कहा— 'अनर्वके जो काम मिल सकता है, उसे छोड दें।' हम किमीने साम्य जवईप्पी न करें। अनर्वके कामका कोई साम्य न उठाने, नहीं अहिंसक मुझका राजनार्य है। इप्पीका नाम धसहजोय है।

यह महज प्रश्न है कि बाबपाह काम कब जब बिना साहबके पास गए थे तब मैंने कहा बा कि हम प्रार्थना करे, तो उस प्रार्थनाका फल

'जिसे वह राजनेकी मिली अहा उनकी बेबसे असत्य है, क्योंकि पापीनी तो कपड़े पहने नहीं थे।

हमें क्या मिला ? इस सिनसिलेमे प्रसवारोमे बिना साहबने जो कुछ निकाला है उससे ज्यादा मैं नहीं बता सकता। उन्होंने जो कहा है कि दोनोकी बाते मुख्यतसे झूठ, वह अच्छा है। मुख्यतसे बात न करते तो क्या करने लगते ? पर नतीजा क्या निकला ? कहते हैं कि नतीजा तो सब निकलेगा जब बावसाह ज्ञान सरहदसे समाचार भेजेगे। वह तो कोई नतीजा नहीं हुआ। लेकिन कम जो प्रार्थना हमने की उसका नतीजा भाव मिल जाय, ऐसा बोझ होता है ? ऐसा जो कहे, वह भगवानको जानता ही नहीं। ईश्वर तो निराकार और निरजन है। उसकी प्रार्थनाका महत्त्व मैं भाव बोझ-सा आपको बताना चाहता हूँ।

ईश्वरकी प्रार्थनाका फल नहीं मांगा जा सकता और न उसकी प्रार्थना छोड़ी ही जा सकती है। जाने-पीनेका उपवास भले ही हम करे—समय-समयपर करना भी चाहिए—पर प्रार्थनाका फल नहीं हो सकता। हमें आखिरी सानतक रामको भजना चाहिए। भावके भजनमें कबीरजीने कहा है न, 'साहब भिजे सवुरीमे।' वह बीयें, वह सवुरी हमें नाम-स्मरणसे ही मिल सकती है। शरीरकी बुराक जैसे भज है वैसे शरीरने पड़ी आत्माकी बुराक राम-नाम है। गावजी-पाठ, सध्या-वचन, नयाज आदिना समय होता है। राम-नामके लिए तो समय ही नहीं होता। जिसके सासके साथ राम-नामका जाप बने उसकी मर। ऐसा करनेवाला भावगी १२५ वर्ष बिदा रह सकता है। अगर मैं १२५ वर्षसे पहले मर जाऊ तो आप कह सकते हैं कि मैं उत्त् त्वितितक नहीं पहुंच पाया हूँ, जिसे मैंने बताया है। मैं चाहता हूँ और कोशिशमें हूँ कि दिन-रात सासके साथ राम-नाम कहता रहूँ।

(इसके बाद गाजीजीने हनुमानजी और सीताजीवासी वह कथा सुनाई जिसमें हनुमानजीवं सीताजीकी बी हुई मालाके मोतीमें राम-को जोड़नेके लिए एक-एक करके उन्हें चबाकर फेंक दिया था और कारण पूछनेपर हनुमानजीने अपना हृदय भीरकर राम किया दिया था।)

इस कथाको बाद करके अगर मैं हनुमान-जैसा भी बन जाऊ तो फिर पूछना ही क्या ? तो फिर मेरा भी शरीर पहाड़-जैसा हो ? शरीर-

की बात छोड़ो, यात्या तो उनके नी उनके पहाड़के नमाल दूध डूबी चाहिए। यह सब कहना आसान है, करना कठिन है। मैंने आपने सामने वह प्रार्थना रख दिना। अगर यात्रा उससे कम है न पशुच सर्वे तो उसकी ओर कुछ-न-कुछ प्रगति नो करें। तो हम ऐसा न करें कि 'बादशाह खान गए और कुछ हाथ नहीं आया तो प्रार्थना क्यों करें?' हम फल न देखें। पृथ्वीमें कोई कार्य ऐसा नहीं होता, बिना कर्म न हो। और प्रार्थना तो सबसे उत्तम कर्म है। इसलिए अगर हम भविर जाते हैं, भासा मेरेने हैं, वो बोझ-या बोझ भी होता है, उसके पीछे भी अपने प्रच्छाई घालवानी है, वह निजगम रखें।

मैं परलो हस्ताहार बाढना। मेरे भाग बचाहरखान कामये। वे तो पुनःप्राप्तमे प्रकृतिव है। भाव तो वे सारे हिन्दुस्तानमें नी प्रकृतिव हो रहे हैं। हमारे सामने बेबीया प्रगम है। कहा ह्मारी माधित पडे हैं, उनके भिद क्या करें? बेकारमें किनीको खाना बेनेके वे विरुद्ध है। हम जो खाना खाते हैं, उसका बचका हमें चुकाना ही चाहिए। ईश्वर-का वह क्या नियम है कि नो काम करे वह खाना खाय। बिना काम किए कोई न खाय। इसलिए उन प्राधिलोकी नी मे कहना कि उन्हें काम करना बकरी है। जैसे तो विठनी बीप्रतासे हो सके, उन्हें पर जीट खाना चाहिए।

परन्तु नो बाक्ये वह शब्दों हो गए हैं उन्हें देखते हुए वे उन्हें मूलके मुहमें बालेके लिए नहीं कह सकसा।

लेकिन मुस्लिम बीगलो मैं कहना कि अपने प्राधिलोकी उन सभी लोगोंको सदा बेनेका इतकाम करें, जिन्होंने गुनाह किया है। मैं वह नहीं कहना कि बालीके बचने वाली ही बाय और पिटाकि बचनेमें पीटा जान। लेकिन हममरका फर्म है कि अपने बालेके सब लोगोंकी, बाहें वे विवर्गी ही हों, पछा करें। ऐसा तो मे कहते हैं कि भाओ। पर वे बाय और फिर भाग जानेकी बात हो तो वे कैसे जीटें? इसलिए बहाणी हममरकी ऐमान करना चाहिए कि वह गुनाह करने-वालोंकी मग्ग बेगी और अनवाधी रखाना पक्का बसोबन्दा करेगी। यह ऐसान हमनेमरका न हो। ऐसा हो बिसपर हम मग्गेमा कर

सके। वे यह कि पहले आपकी खाना गिनायने फिर हम घुद खायने। श्रीग बिषयीकी भी वे मनी हक है जो हमारे यहा मुसलमानकी है। तो फिर मैं एक बी दिन मरणाबियोंको हरिद्वारमे लके रहने लही भूगा।

जब बाइगरायने उनमे पूछा कि यह नो यतागो 'आप असग जो हो रहे हैं, तो भाईवी तरफ या दुश्मनकी तरफ?' तब उनके भागे प्रतिनिधियोने कहा था, 'हम भाई-भाईकी तरह ही असग होनेवाले हैं।' अगर यह बात सिर्फ बाइगरायके कमरेतक ही सीमित रह जायगी, इन्ना धमन रोकके कायने न होया, तो उन चारोने भीर बाइगरायने भी फरेब किया है, ऐसा कहना होगा। इसलिये वे आज ही अपना भाईपना बिखानावे। चार नहीनेके बावतक रुके रहनेकी क्या जरूरत।

(बाबसाहू खानकी बात बताने हुए गाबीजीने कहा—) आज उनके प्रानमें यह बात पैदा कर दी गई है कि दो धर्मोमेंसे एक बननेमें पर्ची डालो। चाहे पाकिस्तानवासेने, चाहे हिंदुस्तानवासेमें। और हिंदुस्तानमें उन्हें बिहारवासा हिंदुगण बचाया जाता है। इस बाबोहवाने कोई मुसलमान नहीं कहेगा कि यह मुसलमानका साथ छोडकर हिंदूके साथ जायगा। आज जगमें यह कहनेका साहस नहीं है कि यह यह प्ये कि बरमान मुसलमानसे जरीफ हिंदूकी सोहबत मन्गी है।

इस हालतमें बाबसाहू जान कहते हैं कि वे अपने सूबेको सबसे पहले स्वतन्त्र नूवा बनाना चाहते हैं। यानी हिंदुस्तान या पाकिस्तानसे न मिलकर पठान-पठान आपसमें मिस जाव और अपना कानून और अपना विधान बना लें।

कांग्रेसको पठानोमे यह कह देना चाहिए कि वे अपना कानून बनाए। आपके बनाए विधानमें हम जग-सा भी बसल नहीं देंगे। हमें उतना बसल तो रहेगा जितना कि केंद्रका बचन माननेवाले दूसरे प्रांतों में हो सकता है। बाकी अदबनी सारा काम आप अपनी खरीदतके मुताबिक चलावें।

इसी तरह सीम भी कह दे कि उसके जो दो-चार सूबे होंगे वे अपने अदबनी इतनाममें आजाव रहेंगे और सिर्फ अनुक-अनुक बात केंद्र-

की चलेगी। गोया हमारे यहाँ जो केन्द्र अलग-अलग करने की हर एक मूवा अपने लिए आबाद होना। तो फिर जन-मनसाह की जरूरत न रहेगी। और मैं भी पठानीने कहेगा कि भूमि आप सोम पाकिस्तानके पास है, इसलिए उन्हींके साथ रहें। आप मैं उन्हें यह नहीं कह सकता, क्योंकि मैं नहीं जानता कि पाकिस्तान कैसे चलनेवाला है।

ऐसी चुनवी आबोहवासे ने जन-मत लेना चाहिए तो मे, पर फिर यह पाकिस्तानके मुकाबले हिन्दुस्तानके नहीं, पर पाकिस्तानके मुकाबले में पठानिस्तानके लिए ही लिया जाय। इसनी सीधी-सी बात ही मैं उनसे कहना चाहता हूँ।

॥ ४५ ॥

२० जून १९४७

माऊनी और बहनो,

कल प्रातःकाल मैं हरिद्वार जाऊँगा और कल ही मीटिंग की इम्मीन है, इसलिए मीटरमें ही रात हो जायगी। यहाँ प्रार्थनामें मैं न रुकूँगा। आप जाना चाहिए और प्रार्थना करना चाहे तो कर सकेंगे। मुझे यहाँ सोपोनो आपवासन देनेके लिए जाना है। ज्यादा तो मैं क्या कर सकूँगा? पर मैं समझकर जाता हूँ।

आप इस छोटी जगहकी पास किसीने एक पत्र लेना दिया था कि दूँ अगर कुरानकी पासत बोलेगी तो तुमको मैं मार डालूँगा^१।

^१ दूँ मनु पायी।

^२ यहाँ बसानेपर जानूँगा हुआ कि आप सबेरे दूँ मनु पायीके पास डाकसे एक पत्र पहुँचा कि शामकी प्रार्थनामें तुम कुरानका पाठ मत किया करो। करोगी तो पीलीले उजा दी जायेगी। पायीपीने और दूसरीने इसे एक बजाक समझा और बात बात की। पर दोपहरमें दूँ मनु पायी-

इस तरहसे किसीकी बमकाना हमारी सम्मताके अनुकूल नहीं है। और फिर मनु तो छोटी-सी सड़की है। अगर वह कुरान बोलती है तो मेरे सिवानेपर बोलती है। मेरा बसा ऐसा नहीं बसता कि मैं मधुरता-से वह गा सकूँ। अगर वह विलोप ही है तो भी छोटी सड़कीने ऐसा बजाक नहीं करना चाहिए।

और कुरानकी इस फायदेके बारेमें तो मैं काफी समझ चुका हूँ। उसमें कोई ऐसी बात नहीं है जो बटफनेवाली हो। उसका सर्व मैं बता चुका हूँ। बिन मुसलमान मित्रोंके साथ मैं उठता-बैठता हूँ वे कहते हैं कि सच्चे दिलसे जो वह प्रार्थना करे तो उसे संतान नहीं सदा सकता। इसी तरह राम-नामकी महिमा बाते हुए तुमसीबासजी-ने सारी रामायण बरी है। नाबजी-मनके बारेमें भी हम लोग ऐसी भावना रखते हैं। तो जो प्रार्थना करे उसपर कोश क्या करना? बमकी क्या निश भेजना? हम तरह करनेका फायदा क्या? अगर फायदा है ही, तो इस तरह निशनेवालेको कोई फायदा होनेवाला नहीं है, होगा तो उस सड़कीको, क्योंकि वह तो अब ज्यादा निर्भवता महसूस करती है।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि हम लोग आज स्वबेचीको भूल

को डेलीफोनपर बुलाया गया और पूछा गया—“बोली, तुमने क्या विचार किया?”

“किस बारेमें?”

“प्रार्थनामें कुरान बोलोगी?”

“हा जी, वह तो नियमपूर्वक बोलूंगी ही।”

“तो गोलीसे मार दी जाओगी।”

“बस, इसका ही।”

“अच्छा, माफोगी नहीं?”

“भरजनेवाले भय कम बरखा करते हैं! पर आप अपना नाम तो बताइए?”

बस डेलीफोन बंद हो गया।

यह है। मैं धूमके बहसा प्राया हूँ कि अगर हम बिदेगी रीति-रिवाज अपनाने हैं तो स्वदेशी राजकी बात करना बेकार है। आप देशी परिषदी तरीकेकी बनकी न हों। अपनेमें स्वदेशीयन रहें। जिसमें हमें दुष्साज हो, जिसमें हम नूतने रहें वह स्वदेशी मनोवृत्ति नहीं है। वह परदेशी मनोवृत्ति है। पहले अगर कोई बरा भी परदेशी काम करना था तो मैं उसे बहुत डाँटता था। लेकिन अब मेरा राज था, बहुतका राज नहीं। पर मारे मुझमें प्रेमका राज था। अब मेरा वह सिक्का नहीं है। मैं सब बूढ़ा हो गया हूँ। हर जगह बीडर नहीं जा सकता। अगर प्राय भी मेरी आवाज हर जगह पहुँचे तो मैं बही कहूँगा जो ३२ बरग्ये कहता था। मैंने ७८ बरसका हूँ, पर बचानीमें दक्षिण अफ्रीकामें मैं बसावतन रहा। वहाँसे लौटकर मैंने जो ३२ बरस तक बात लिखाई है उसका मतीका यह है कि इस मारे कामको हम अपने हाथों मारनेपर तुम्हें कुछ है और बिदेगीयन अपना रहे हैं। स्वदेशी यह है जो आप्पाकी बात है।

मैंने नपूर्व स्वदेशीकी बात नहीं। उनका मंत्र खादी उड़ाना। उस समय हमारे पास राष्ट्रीय भाव नहीं था। सब लोग एकठा ऐसे भावना बनाया क्या जिसमें हिन्दुत्वानके मारे आधुनिकीय प्रतिनिधित्व आ गया। लेकिन इन्हें होकर करेगा? बोझते रहें? ना। 'काम करें?' 'हूँ। तो क्या काम करें?' पूछें। और ऐसा व्यवहार हमने हिन्दुत्वानकी महापतिव कर्तव्यो भोमें रखा। यह विपदा क्या प्राय नूतनाय हो गया है। अगर उसे हम हथके रहें तो बहुत कर्तव्य उठ सकने है।

लेकिन प्राय तो हम खादी पहनते हैं या खादी छोटी पहनते हैं; पर भीतरने तो पोस-ही-पोस रहती है। मैंने सब कहा था कि बाहरका कपडा ही नहीं, यहाँकी मित्रोंका कपडा भी, हमारे लिए परदेशी है। कपूर को हम अशा पैदा नहीं कर सकते और जो बहुत कामका और उपयोगी है, उसे बाणभने मगाने तो कर्तव्य परदेशीयन नहीं है। लेकिन जो यहाँ पैदा कर सकते हैं उसे बाणभने मगाने तो वह हमारे लिए गहर है। अब कि हमारे महा करीबी आदमी पहले अपना कपडा बनाते थे, खुद उनके

रहते थे और जहाजके जहाज गरकर बाहर भी भेजते थे, उन्होंने अब कौन-सा गुनाह किया है कि वे अपनी कपास तो विदेशोंमें भेज दें और उनीमेंसे विदेशोंसे जो कपड़ा बनकर आवे, वह यहायी रुईके धामोमें भी सस्ता बिके ? इसके पीछे क्या-क्या कारगुजारिया चलती है वह कोई मुने और समके तो उसके रोगटे लड़े हो जाय ।

उस जमानेमें हमने विदेशी कपड़ेके पहाट बिन-बिनकर जवा दिये थे और कोई यह नहीं कहता था कि इससे राष्ट्रकी निधि बरबाद हो रही है । श्रीमती नायडूने अपनी पेरिसकी साडी जवा दी थी और स्व० मोतीलालजीने भी अपने विद्यापती कपड़ोंमें बियासलाई जवा दी थी । उनके पास तो घालमारीकी घालमारिया फिरेली कपड़े थे । इसके बाद जब वे जेल गए तब उन्होंने मेरे पास एक बात भेजा था—आज वह पत्र मैं खोल नहीं सकता—पर उसमें था कि मैं सम्झा जीवन अपनी भी रहा हूँ, घालमालमालने मेरे पास जो समृद्धि थी उससे मुझे यह गुप नहीं मिलता था । वहा उन्हें सिगार, चराब, पोस्त कुछ नहीं मिलता था । पुरा भोजन भी नहीं मिलता था, फिर भी हममें उन्हें मुक्त मालूम हुआ । यह नहीं है कि उनकी वह जीव हमेंना नहीं बची । आदमी जो ऊँची उठान लेता है वह हमेंना टिक नहीं सकता । हम भी ऊँचे बैठकर बार-बार गिर जाते हैं । पर मनुष्यके लिए अपनी वह ऊँची उठान पुण्यस्मृति बन जाती है । कम-से-कम मेरे लिए तो ऐसा ही है । तो क्या वह जमाना चराब था ? आज वह जमाना कहा जाता गया ?

आज तो जमानेने एकदम पलटा जाना है । एक छोटेसे जल व्यापारीने मेरे पास पोस्टकार्ड भेजा है कि वह पुराना जमाना कहा गया ? आज तो हम सब स्वार्थी बने हुए हैं । इस व्यापारी तो स्वार्थी है ही, राजा भी स्वार्थी है, उनके बीवान भी स्वार्थी हैं । और वे अग्रेज भी जाते-जाते इसने लखरे और इसना स्वार्थ क्यों करते हैं, वे इसनी लडाईं कराते हैं और उसमेंसे अपने लिए पैसे पैदा करते हैं । अगर उन्हें जाना है तो मोह क्यों नहीं छोड़ते ? अपने जानेमें सुब

पैदा क्यों नहीं करते? लेकिन प्रयोजकी क्यों कहे। कायेसी भी स्वर्गी हो गए है। इन्हें क्या कहे? समूहमें भाग लगी हो तो उसे कीन बुझावना? जबकि अगर अपना समकीनपन छोड़ देगा तो उस कहेसे आयया? कायेनने इतना त्याग किया, इतनी सहाई की, वह उसका वीर्य कहा गया? अब तो वे लोग प्रभाव बनना चाहते हैं, मेन्टेरी बनना चाहते हैं। मेरी रायमें यह साफ-का-साफ पर-देसीपन है।

मैं सुन रहा हू कि देखी मिलीके कपड़ेकी बिक्रीपर हमारे देशमें प्रकृष्ट, है पर बाहरसे आनेवाले कपड़ेपर कोई प्रकृष्ट नहीं है। यह सब क्या हो रहा है? मेरी समझमें नहीं आता। यह तो हम एक हाथसे स्वराज ले रहे हैं और दूसरे हाथसे उने जोनेकी कोशिशमें लगे हुए हैं। यह बड़े ही दुर्गमकी बात है।

एक भाईने लिखा है कि पत्नियाँ पचासको कुछ प्राप्तासन की। मैंने कुछ प्राप्तासन के गी दिया, लेकिन केवल महान्भूति बतानेसे काम होनेवाला नहीं है।

आखिर पचास तो बड़ी हैं न, जहाँ पचासके मेर जाता जावपत-राज पैदा हुए थे। पचास तो मन्त्रुपेका बड़ ठहरा। जहाँ सिख पैदा हुए। मैं मिछोंकी सलवारकी बहादुरीकी सराहना नहीं कर सकता। मेरी निगाहमें मिहलने रहकर जो बहादुरी दिखाई जाय वही अपनी बहादुरी है। पर पचासके लोग भाव हृमियारकी ही बात करते हैं। मैंने पूछा था कि आपको पैनेकी आवश्यकता है क्या? तो उन्होंने (पचासियों) कहा कि हमें तो हृमियारकी बख दिववाइए। मेरी समझमें यह मनोवृत्ति भी परदेसीपन ही है।

दुःख-निवारणकी बात क्या बताऊँ? मैं तो उन्हें बड़ी कह सकता हूँ कि पचासमें बगरी नहीं, भेड़ नहीं, घेर पैदा होने चाहिए। मैं तो पचासको जानता हूँ। मैं पहाकी मियोंकी भी जानता हूँ। उन योगीश्वर मन्त्रन मगी-हीता है। पर मन भी तो मन्त्रवृत्त चाहिए। मन्त्रन उठा जो प्रवाह कह रहा है उसमें आदमी नैर-दिव नहीं बन पाये।

। बहानी स्त्रियोंको आज विशेषी और चटकीले कपड़े चाहिए। साडी भी उसनी बारीक चाहिए कि सारा बदन दीखता रहे। और पुरुष भी उनसे कम नहीं होते। वे खुद नहीं पहनते, पर स्त्रियों को पहिना-का बाव रखते हैं। मेरे पास अब पचासी बहनें आती हैं और पूछ बैठता हू कि इसने जेवर क्यों, ऐसे कपड़े क्यों? तो वे कहती हैं हमारे माई, पिता या पति का आग्रह है कि इसने जेवर तथा कपड़े तो चाहिए ही। पुरुष क्यों अपने बरफी स्त्रियोंको मुडिवा बनाते हैं?

अगर यह सब छोड़ेंगे तो फिर हम करेंगे नहीं। हमें करना किससे है? मुसलमानोंसे? वे अगर ईमान बन जाते हैं तो हम इन्सान बने। फिर वे भी इन्सान बन जायेंगे। जब मैं निकम्मा बनिया भी नहीं ब्रह्मा तो आप क्यों करें? मैं तो कहता हू कि वे मेरा क्या करेंगे? मारेगे न? भले मारें। खून पीएंगे? तो पिमें, एक दिनका भोजन बन जाएगा। और मैं मानूंगा कि मैंने सेवा की। लेकिन मैं सेवा करने-वाला कौन, ईश्वर ही सब करता है। इसलिए यह कहना सही होना कि उसने मेरा उपभोग सेवाके लिए किया। इसी तरह मैं सबसे कहूंगा कि आप भी न करें।

१४६ :

२२ जून १९४७^१

भाइयों और बहनो,

आप तो जानते हैं कि मैं पचास और बीनाप्रासके जरणार्थियों-को देखने हरिद्वार चला गया था। वहा डेराइस्ताइसवा और दूसरी जगहोंके ३२,००० आसगी आ गए हैं। वहा बहस करने-को तो समय नहीं था। मैंने उन लोगोंसे अरपेट बाते की। उनके

^१ २१ सा०को गांधीजी हरिद्वारसे देरवें लौटनेके कारण प्रार्थनामें सम्मिलित नहीं हो सके।

कौनों भी बता गया। लोगोंने मुझसे उनके बारेमें तरह-तरही बातें कही। वहा दो किस्मके लोग आए हैं। एक सम्मुख दुखी, मिस्कीन है, और दूसरे वे जो झण्डे खाते-पीते हैं, पीसेवाले हैं। पर उनमें कुछ ऐसे हैं जो बुधा बोलते हैं, शराब पीते हैं और तरह-तरहे पीसा पीवा करते हैं। मैं कहना चाहता हू कि उनका यह वर्म नहीं है कि आपसि-कामने वे ऐसा करें।

लोग वहा दुखी होकर आए हैं। अपने रिश्तेदारोंसे भसत हो गए हैं। पर अब इनका रोना क्या ? मैंने उन्हें बताया कि दुखनी बात भूल जाओ। दुखको भूलनेमें दुख मिट जाता है। तुम्हें तो दुखमें सब पीवा करना है। अपनी बड़ी दुखकी बात हो गई, हिन्दुस्तानके दो दुकने हो रहे हैं, इसका मुझे क्या रब है, पर क्या मैं रोऊ ?

मैं आपको सुनाता चाहता हू और आपके मार्फत उनको^१ कहना चाहता हू कि अब लोग दुखको भूल जाय। इन ३२,००० आरमियोंको अपना सहयोगी संगठन बना लेना चाहिए। उनको उबल करना चाहिए। बुधा नहीं बोलना चाहिए, शराब नहीं पीना चाहिए, गाथा नहीं पीना चाहिए। उन्हें कुछ-न-कुछ काम बरकर करना चाहिए। हनुमन्त उन सबको जाना देना चाहे तो भी नहीं दे सकती। भाव तो सब जगह जीक मारफेट बसता है, अगर सन्ने आदमी भी हो तो भी इस जगनेमें भयका पूरा राजन नहीं मिल सकता। लेकिन उन्हें रोना नहीं चाहिए। बिकायत करनेसे, रोनेसे, खाना नहीं मिल सकता। वे सहयोगसे काम लें।

दक्षिण अफ्रीकाकी ऐतिहासिक यत्नार्थ हम सब लोग रोब २० मील चलते थे। बहुत आदमी खाप थे। उनके देनेके लिए मेरे पास एक बीस बीनी और कुछ डबल रोटी होती थी। यह एक आदमीकी पूरी बुराक नहीं होती थी। अब २० मील चलकर पहुँचते थे तो काम हो जाती थी। मैं देखता कि वहा कुछ पका करता था।

^१ आरमियोंको।

बाप करनेपर मासूम हुआ कि वे लोग बासमेंसे कुछ पतिवा और दूसरी खाने जायक चीजें चुन लेते थे। बोझ-सा नमक लेते थे। पानी बहा होता ही था। पकाना बुरुकर लेते थे। मैं बहुत खुश हुआ कि ऐसे (उद्यमी) शान्तिमेंकि साथ तो सब यात्रा की जा सकती है। वहा उन्होंने जगत्से मजबूत कर दिया था।

हरिद्वारकी मिट्टी और भी उपजाऊ है, वहा तो वे और भी उत्थान कर सकते हैं। वे ऐसा करने तो लोग उससे बचने नहीं। जो धामित है उन्हें तो ऐसी खुबसूरतीसे रखना चाहिए कि वे दूसरोंके लिए नार न मासूम पड़े। सब साथ-साथ इस मुसीबतको काट दें।

लोगोंको कुछ-न-कुछ पैसा करना चाहिए। वहा मुझे कुछ बहने मिली जो सिगार्ड-कटाईका काम करती थी, कुछ धावनी भी ऐसे मिले, जो कुछ काम निकाल लेते थे। यह मुझे पच्छा लगा। उन्हें मिलुक नहीं बनना चाहिए। उन्हें बहाबुर बनना चाहिए और करना नहीं चाहिए।

मैं तो सब जगह जा नहीं सकता था। डा० सुधीसा नामर सब कंपोमें गईं। वहा उन्होंने बड़ी गल्ली देखी। गल्ली तो नहीं रखनी चाहिए। यह काम गवर्नमेंट नहीं कर सकती। हमें खुद अपनी सफाई करनी चाहिए। दूर-दूर रहना चाहिए। लोग कहते हैं कि वहा जानबरोका डर है। मैं कहता हू कि उन्हें जगली पशुओंसे क्या डरना? जैसे धावनी जगली पशुओंसे डरता है, वैसे ही जगली पशु स्वयं धावनीसे डरते हैं। ३२,००० धावमियोंको डर छोड़ देना चाहिए। वे तो वहा बस जायगे वहा जगली पशु भाग जायगे। इन लोगोंको प्रेमसे जैसे दूधने मिली रहती है ऐसे सबके साथ मिलकर रहना चाहिए।

मैंने एक दु खकी बात सुनी है। वह बात काबुलकी है। काबुलमें जो हिंदू रहते हैं वह बहानालोंकी मंहरबानीपर रहते हैं। उन्हें वहा एक खास रंगकी पगड़ी पहननी पडती है। मुझे यह सुनकर बड़ा बुरा लगा कि वहाके लोग पैसोंके लोभके लिए ऐसी ज्वाबती सह लेते हैं। हम अपने हक रखकर उन्हें तो रूखे, नहीं तो नहीं। मैं इसको बर्दाश्त नहीं कर

जन्म अपने आपको देनेवा एक ही ज्ञान ममके और भुक्तमान
अत्यन्तनीचीनी नीचपनेनी माननेमे माफ उल्लास बरे। हिन्दुमान
उनका भी उनका नीच है किना कि ह्याग।

उनके मन्द मानी यह यह कि देने नि-धर्ममे कातिकारी परि-
वर्तन करना होगा। हमारे ऊपर छन्दोका फनक लगाया जाता है
और यह ह्यागी कमजोरी मर है। पढ़नेमे आना है कि मुग्धिम सीगके
नेमा आज अछनोको यह कथा दे रहे है कि पाकिस्तानमे उन्हें
अलग चुनावका यह मिनेवा। क्या यह पाकिस्तानी इस्लाममे शामिल
होनेकी बाधन है ? पयर्दानीमे जो गलतमे सोचोमे मजहब बदलवाया
ऐनी और बात बली है, उनके बारेमे मैं कुछ नहीं कहना चाहत।
युक्ति मैंने अछूत आदमीमे मुह ऐनी बात मनी है। मुझे जरूर डर है
कि क्या होनेवाला है।

उन डर या उगवेका जबाब एक ही हो सकता है, वह यह कि
हिन्दू-धर्ममे अल्लाहका भूल किरतुम निकल जाय। हिन्दुस्तानमे
कोई अछूत न हो। हिन्दू सब एक हो। कोई ऊचा, कोई नीचा नहीं।
जिन गरीब लोगोंकी और, ममलन अछूत या आदिवासी, इन अछितक
बेबरकार रहे हैं, उनही हम ध्यान देयमान करे। उन्हें पढाए, उनके
रहन-महनको बेने, आदि। बीटरोकी फेहमिस्ताने सब एक ही हो।
आजकी हालत न रहे, इसमे कई बर्ष बेहतर हो। क्या हिन्दू धर्म
इतनी ऊचाईतक चढ सकेगा या कि भूठी मिथ्या बातोमे और बूझरोकी
खराबीका अनुकरण आनकन करके अपना आत्मबान करेगा ? सवाल
तो हमारे सामने यही है।

१ ४८ :

२४ जून १९४७

भादयो और महतो,

इस भवनमे ऐतिहासिक गमकी कल्प कहानी है, बिसे सुनकर

आजमें आन्ध्र भा जाते हैं। जहाँ जो जलजीवायका मिलत होनेवाला था और कहा उन्हें बलवान हो गया। इसमें अधिक बलवान बन भी और क्या हो सकती थी। वही इतिहास आज हमारी आँखों के सामने था रहा है। एक ओर तो सत्यमें हिंदुस्तानको धीपविनिधिक स्वराज्य दिए जानेपर बुद्धिमान माननेकी कर्ता है दूसरी ओर हम आज अपने वर्तनी खाके नामपर जानसमें सब रहे हैं। मेरे पास किसी ही बात आते हैं किन्तु नुम्हार तरह-तरहके कटाव दिए जाते हैं। कोई बिजता है कि 'मूले हिंदुधर्मो बर्बाद कर दिया। मू मुसलमानोंकी बुद्धिमान करता रहा है,' प्राप्ति। मेरे दिलपर हम यातनोका असर नहीं होता। मैं किसीकी बुद्धिमान नहीं करता और करता हूँ तो केवल ईश्वरकी। उसकी भी बुद्धिमान क्या, उसके ही हम सब पुमान हैं, हम सब ऊपर से हैं। वह किसीकी बुद्धिमान नहीं मानता, क्योंकि वह तो सर्वज्ञविद्यमान है। मैं हम खनीपर मुत्ता करने की क्या करूँ? यादिर मेरा मुताह क्या है? मैं वहीं तो करता हूँ कि कोई व्यक्ति पानी बलसे या करेज रखकर या दुमगीजर आत्माधार करके अपने वर्तनी खा नहीं कर सकता। यह बात हिंदु, मुसलमान सबपर लागू होती है। जलियाय बरी बीच है वह सब कोई करता है। ऐसी हालतमें कहा बुद्धिमान और बुद्धिमान माननेवाली क्या बीच है। हमारे देशके टुकड़े करने की उनको तकल्लर क्या बबाला था! हमें एक तरह से भिन्नता है और उनके की टुकड़े ही जाते हैं। इसमें उन्हें खुशी क्या माली थी? मैं ६० वर्षों, जब कि मैं इतिहासमें पढ़ता था, वहीं कहता था कि इन देशमें हिंदु मुसलमान, पारसी और ईसाई को भी रहने हैं सब बार्ड-बार्ड हैं। हमने कबोंके समझते मैं करता हूँ कि हमारी खनीके टुकड़े हो गए तो क्या हम अपने की दो टुकड़े करें? एक देशमें रहनेवाले लोग को प्रजा कैसे बन सकते हैं? क्या जहाँ हिंदु और मुस्लिम प्रजा मला-मलन होती? हिंदुधर्ममें एक ही प्रजा रखेगी और वह हिंदुधर्मी प्रजा होगी। हम क्यों इतिहास क्यों नीचे? हम नहीं करते कि हम को प्रजा नहीं है। जब मैं ऐसा करता हूँ तो लोग लालिया देने हैं। जहाँ मैं उनकी दात मानकर अपने आँखों की नींद बना

बू ? इससे मैं अपनेको ही मुक्तान पड़ना पड़ा। आत्मा ही आत्माका बन्धु और आत्मा ही आत्माका बन्धु हो सकता है। अतः हिन्दूको मिटाने-वाला हिन्दू ही हो सकता है, दूसरा नहीं।

परन्तु आध तो चारों ओर अमार फैल रहे हैं। इस भागसे बचोमें सभी बर्ग बच सकेगा। मैं कहा-कहा बाढ़, यह मुझे नहीं मान्य होता। मेरी व्यक्ति जीव होती जाती है। मेरा जरीर इस गर्मीको सहन करने लायक नहीं रहा। मैंने जो कहा है वह सत्य है। वह सबपर लागू होता है। वह सर्वसाधारण दुनियाका नियम है और सत्यकी हमेशा बच है और झूठकी बच होती है। मैं जो कह रहा हूँ वह हरषोक और कृष्ण-दिलके लिए नहीं, बल्कि उनके लिए जो बहादुर हैं और निस्वार्थ हैं, जो अपनी माँकी, लड़कीकी और अपने बर्गकी रक्षा करते हुए मरना जानते हैं, दूसरोंको मारना नहीं। जो आधमी खुशीसे भर जाता है वह मारनेवालेसे कहीं ज्यादा बहादुर होता है। मैं चाहता हूँ कि इस बहादुरीके स्तरतक सारा हिन्दुस्तान पहुँचे।

मैं तो वह सब देखकर काप उठता हूँ। किसको मैं जाकर समझाऊँ। मैं तो बीरब रत्नकर वहाँ बैठ गया हूँ। हम अनेकोंकी ओर देख रहे हैं। ऐसे हम कबतक देखेंगे ? १५ जनस्तके बाद, जब कि सब कुछ हमारे हाथोंमें आ जायगा, तब हम किसीकी ओर देखेंगे ?

पचासमें मार्शल-ना जानू करनेकी बात कही जाती है। वहाँ एक मार्शल-ना जानू हुआ मैं देख चुका हूँ। मैं जानता हूँ कि मार्शल-ना क्या चीज हो सकती है। मार्शल-ना दिनोंको नहीं बल सक्ता।

मैं तो यही कहूँगा कि मुसलमानोंको इस्लाम, हिन्दुओंको हिन्दु-धर्म और सिखोंको गुरुद्वारा बताया है तो वे सब मिलकर वह फैसला कर लें कि हम आपसमें लड़ेंगे नहीं। यदि किसी चीजके लड़नेपर ज्यादा नी हो तो उसका फैसला लड़नेसे नहीं, पक्षद्वारा कराएँगे।

(भावनकोरेके बीजान सर सी० पी० रामस्वामी अय्यरके साथ बक्तव्यकी आलोचना करते हुए) सर सी० पी० कहते हैं कि बाबी

^१ साहू, अनूसर और गुरुद्वाराके अप्रत्यक्ष।

[illegible]

प्रायश्चीन शालग्राम गंगा घाटी प्रवाह दोनों का एक ही है, यह जग
 था है। साष्टिकरी विमान के एक ही भी ० भी ० साष्टिकरी साष्टिकरी
 मुक्त तहो लोक भवन। उस गङ्गा के भी धर्म गङ्गा है और व धर्म
 रक्षा है। मैं तो गङ्गाधारीने गङ्गा गङ्गा कि गङ्गा भीज यही है कि
 प्रायश्चीन शालग्राम विमान-विमानों का धार।

888

२५ जून १९४७

भाइयो और बहनों,

इसकारण मुझे मुझ मरहम और बचाने क्षरणापिमीने यह बताया था कि काबुलमें जो किदू खोग रहने है उनको एक समूह रखी पगरी पहनी जाती है जिससे कि वे भ्रमन पड़ाने या घबरे। इस कारण आज भ्रमणत राजपुताने एक सवा नयाग

देते हुए उसका प्रतिवाद किया है। उनका कहना है कि काबुलमें ऐसी कोई चीज नहीं है। वे कहते हैं कि वहाँ तो हिंदुओंके मंदिर भी हैं और उन्हें मंदिर बनानेकी इजाजत है। यदि ऐसा है तो हमारे लिए यह बड़े फायदी बात है।

माहीर, अमृतसर और गुजरातके उपद्रव हिंदु, मुस्लिम और सिख तीनों कीमोंके लिए गर्मकी बात है। कुछ भी हो, ये झगड़े-फसाव बढ़ होने चाहिए। मन्चे दिनमें सब लोगोंको गिरा जाना चाहिए। आगवे अप्पगारोंमें भेजे पड़ा है कि माहीरमें कमन्ध रात्रितक नवाब अमरोत्तकी कोठीपर तीनो कीमोंके नेतागण बैठे और उन्होंने तय किया कि ये झगड़े बढ़ होने चाहिए। यह एक खुलबरी है। आखिर क्या माहीर और अमृतसरकी कन्नपर पाकिस्तान बन सकता है ? और फिर ये कोई छोटे कम्बे भी नहीं हैं ? इनको बनानेमें एक जमाना लगा है। अमृतसरमें तो सिलोकन एक हुजुरी मंदिर भी है।

आरमी अप्प करतब मूलकर हैवान बन जाय, यह बुजकी ही बात है। ये नेतागण कम फिर मिलनेवासे हैं। यदि ये सफल हो जाते हैं तो वहाँ माईल-सा पागू करनेकी जरूरत ही नहीं होगी। अतः ये नेतागण बन्धवावके पात्र हैं।

मुम्मर आल बर्म-सफ्ट था पडा है। मेरा दिल कभी बिहार जानेके लिए करता है तो कभी नोमालाभी। नोमालाभीने तो मैंने एक तरहसे अपना काम मुरु भी कर दिया है और इससे वहाँके हिंदुओंको काफी साहस मिला है। बिहार मुझे जाना ही चाहिए। मैं वहाँ आठ दिनके लिए आया था, परंतु हो गया एक महीना। मैं कहा जाऊँ और क्या करूँ, वह मुझे यादगु नहीं होता। एक ईश्वर-भक्तके लिए यह अच्छा भी है कि वह केवल आरमी भिठा करे, कसकी नहीं। कस क्या होनेवासा है यह तो ईश्वर ही जान सकता है। कुछ लोग कहते हैं कि तू आहिंसाकी इतनी लगी-लगी बात करता है तो फिर अमृतसर या मुजगाव क्यों नहीं जाता ? मैं वहाँ जाकर क्या करूँ और किसको कहूँ कि तुम लड़ो मत। मेरे दिलमें समय तो नहीं है। मैं चाहता हूँ कि आप लोग जैसा मैं हूँ वैसा मुझे

मैं इन गालियोंको ही स्तुति समझता हूँ । परन्तु वे लोग गालियाँ इसलिए नहीं बोलते कि मैं उनको स्तुति समझता हूँ, बल्कि इसलिए कि मैं ऐसा उनकी गलाहूँ होना चाहिए वगैरह नहीं हूँ । एक मर्तब बहुत था जब कि वे मेरी स्तुति भी करते थे । इसलिए गालियाँ बोलना या स्तुति करना तो दुनियाका एक खेल है । परन्तु आज मैंने एक छतनेसे दो सवाल पूछ लिए हैं जिनका मैं बड़ा उत्तर देना चाहता हूँ । एक सवाल तो यह है कि 'तुम लोग बरखोते ब्रिटिश फौजके आधी हो गए हो । जब ब्रिटिश फौज यहाँसे पसी जायगी तब तुम्हारा क्या हाल होगा ?' मैं बखिब आधीकाने भी, और यहाँसे जानेके बाद इस देशमें भी बरखी पहुँच इसका उत्तर दे चुका हूँ । आज भी मैं नहीं कहता हूँ कि ब्रिटिश फौजसे हमारा बास्ता क्या है । हमारी शक्ति उससे बढ़ती नहीं, बल्कि गिरती है । मैं तो आहिंसाका माननेवाला हूँ, परन्तु जो लोग हिंसाको मानते हैं उनके लिए भी यही बात है । यदि सब लोग सिपाही बन जाय और वे राष्ट्रका भी बचाने लगे तो फिर हमें ब्रिटिश फौजकी क्या जरूरत रह जाती है ? यदि हमें ब्रिटिश फौजके बने जानेसे सचमा पहुँचता है तो फिर हम स्वराज्यके जायक कैसे हो सकते हैं ? यदि किसी आधुनिक फेफड़ा बरख हो जाय तो उसके बिना रहनेके लिए वह दूसरेके फेफड़ेसे काम नहीं बना सकता । स्वराज्य हिंसा-खानका फेफड़ा है । अगर हमें बिना रहना है तो दूसरेकी मददसे वह नहीं बसेगा । हमें आज ऐसा लगता है कि जैसे कोई आधुनिक जमाने किसी अचरे की कोठरीमें बंद रहा हो और एक दिन उसे अचानक बाहर निकालकर छोड़ दिया जाय । सूर्यका प्रकाश देखकर उसकी आंखें कुछ समयके लिए काम नहीं करेंगी । उसी तरहसे हम यहाँ अचरेमें रहनेवाले पक्षी-जैसे बन गए हैं । एक दिन हमें ऐसा लगेगा कि जैसे हम किसी नई दुनियामें आ गए हो । एक दिनके लिए बाहे हमें ऐसा लगे, अगर सच्ची बात तो नहीं है । न हम ब्रिटिश फौजके जरिये यहाँ बचना चाहते हैं और न उससे हम अपनी रक्षा करना चाहते हैं । हमें ब्रिटिश फौज तो क्या, कोई अन्य फौज भी नहीं चाहिए ।

परन्तु आज अनूत्तर और जाहीर आधिके बनोंकी बजहसे

हमारा अपने ऊपरने विश्वास उठ गया है। हम हमने बरमाय हो गए हैं कि एक हमने डरने लगे हैं। हमारे अंदर यह सचास जोर पकड़ता जा रहा है कि यदि फीव बीचमें न रहे तो लोग एक दूसरेको का जाए। मगर हकीकत यह है कि बचनक सीमरी ताकत हमें बचानेके लिए तैयार है, तबतक हम अपनी ताकतकी मद्दा नहीं करने। स्वराज्य इच्छादि प्राथमिकीके लिए नहीं होता।

दूसरा प्रश्न यह है कि 'तु कैसा बेचकस और मूर्ख यादनी है कि तुझे अनीतक मेरी अहिंसाकी बखू नहीं आती। सब कुछ देखते हुए भी अहिंसके लिए तेरे विसमें अच्छत क्यों नहीं होती? न तो अपनी अहिंसामें तु हिंसाको बचा सकता है और न मुसलमानको बचा सकता है। तुझे इन बिदा एने देते हैं, जो तेरी अहिंसाकी जातिर नहीं, बल्कि इसलिए कि तु इस बेगनी मेवा करते-करते इनाग बूझ हो गया है, जो तुझमें हमें रहम आता है।'।

मुझको तो ऐसा लगता है कि मेरे चारों ओर जो खून बह रहा है और जो नीपण हिंसा हो रही है उनसे मुझे बखू आ रही है। उस बखूको देखते हुए मेरी अहिंसामेंसे जो बखू आती है वह मुझे और अधिक मीठी बन रही है। जो यादनी हमें अमुस-ही-अमुस पीता हो उनको अमुस उठना मीठा नहीं लगता बितना कि अहंका प्यासा पीनेके बाद अमुसकी दो बूद जी बहुत मीठी लगती है।

हमें या मुझको मेरी अहिंसाकी बखू नहीं आती थी; क्योंकि उस मेरे चारों ओरका वातावरण अहिंसामय था। लेकिन याब जब मुझको हिंसाकी बखू आती है तो उन बखूको मिटानेवासी चीज मेरे पास अहिंसा ही है। जउनमें यह भी सिखा है कि मैं बार-बार बिनासे मिलने क्यों जाता हूँ। वे हमारे दुस्मन हैं जिससे हमें डर रहना चाहिए। बखू भी हमारे दुस्मन हैं और उनसे काउंसको कोई संभव नहीं रहना चाहिए। काउंस येना कैसे कर सकती है? उसका कर्म सबकी सेवा करना है। मैं जानता हूँ कि बिना साहबने हिंसाको, और साह सीरखे सबर्ब हिंसाको, अपना अस्व बहाकर बेगमा दुप किया है। जो यादनी बुरा काम करता है वह बुरा तो लगता है,

अगर आखिर तो यह हमारा ही भाई है। हिंदू उसके पीछे पागल बोले ही हो जायेंगे। यह माना कि बिना साहबने पाकिस्तान में लिया, परंतु इसका मतलब यह नहीं कि हम आपसमें मिलना ही छोड़ दें। किसने ही और जगते है बिनको हम एक अगह बैठकर चुनका सकते हैं। मैं तो 'सर्व-धर्म एक समान' का माननेवाला हूँ। इसलिए अहिंसाके लिए मेरे दिलमें नफरत हो नहीं सकती और न मुझको हिंसासे खुशबू ही आनेवाली है। मैं मर जाऊँ तब भी नहीं आने-वाली है। उस अहिंसाकी खुशबू यदि मैं आप सोनोनों भी बिना दूँ तो मेरा काम पूरा हो जाता है। अहिंसासे अबबू कभी आ ही नहीं सकती, क्योंकि उसमें खुशबू ही नहीं पड़ी है।

३ ५१ ३

२७ जून १९४७

भाइनों और बहनों,

आज मुझको एक दुःख बत मिला है। उस जगते दिल्लीके एक भाई लिखते हैं कि पचाबसे आबकन काफी मिराभित सोन बहा आ रहे हैं। मैं बहासे इसलिए आते हैं कि उनको बहा अपने बाल-बालका बतरा बा, परंतु आखिर आकर वे जायेंगे कहा ? यदि आज यह भयनाह उठ जाए कि दिल्लीमें कम भूकप होगा तो क्या हम बहासे आग जायेंगे ? जो बहापुर भाइयों होता है वह आगकर कहा जायगा ? मैं तो हमेशा उसके पीछे पड़ी हूँ। कोई अमरपट्टा लेकर तो बहा आया नहीं। रहा आगबादका खयाल, तो वह तो आज हम पैदा करते हैं और कम बहा लेते हैं। परंतु वह भाई लिखते हैं कि मैं जो शरणाधीन परेशान होकर पचाबसे निकलकर आए हैं उनसे दिल्ली-के मकान-मालिक अपने मकान फिरायेपर लेते समय पगड़ी^१ मायते हैं।

^१ 'बजरगा'। कहीं-कहीं इसे 'सत्तागो' भी कहते हैं।

दिम्बीयों को बाल-गानि के या निरं पात्र उनीने है, व ती प्रकृ
 कहुता कि उन्हें बाहरने निगलिय गे-या था तू मेरी-या छने
 धरीमें स्वागत करण बाणि । यदि यह नही, -र कन्ने ही छने दानि
 लेकर पैसा क्या पैसा जाना । ये छने ब्यापारी छाने ही निगल
 लेकर छनोय करे जिस्सा कि छानाहीं पागलने दे छाने है । करण-
 बियोको गरण देना उताय पगलने है । उतायता ब्यापार तनेय है
 इनने मुने कोई खदेह नही है । जाना कि छुट बाल-गानि-या निगल
 मकानकि किरायेपर ही होता है, जाना ये उभिन जिगला केजे
 ही छने ब्यापारी उपाय करे । पगल जिगला है कि धनीय
 सरकारही इन मन्मथपर ज्ञान देना बाणि और ब्यापार ही छने
 यह सरकारियोरी जिगलने सन्मथो भुगत ब्यापारका बल
 करे ।

मुझे रोज सरकारी जीव जानने धानेवाले पनीके छाने
 छनेक नथान पूछे बाणि है । उन नथका उत्तर देना तो नथन नही,
 परन्तु कुछ नथानीका स्वाद देना मुमानिय है । रथानि पात्र मेने
 नीम नथान कृम भिय है । पगल नथान यह है कि जब दुमियाले रोज
 पैसोकी ही पगलदर जाल देते है तब हिज्जामने इस बारेमे क्या
 करता है ? पैसा-बल, गरीर-बल या पगु-बल ये सब उतायने छोनक
 है, परन्तु इन सबमे बला ईस्वरका दल है । जेना कि एक मजदूरने कहा
 क्या है, जब सारे सब हार जाने है तब छेरे बामदा बल ही हमारे पात्र
 पद जासा है । परन्तु आजके युगने जब धनपरा, कम और बिटेन-
 बैसे देन ही पैसोकी परमेस्वर जाल देते है तब हमारी तो जिगली ही
 क्या है ।

आज सरकारी ही बोलबाबा है और सोना पैसा समझने छने
 है कि पैसामबाब या धार्मिक बल कुछ है ही नही क्योंकि हम न तो
 हमसि छने छु छनते है और न धार्मिक देण नकने है ।

परन्तु मैं उपासनावादी हूँ और मेरे सिद्ध धार्मिक बलके सामने
 पगुबलभी कोई भीमछ ही नही है । मैं तो कह भी नही कहुता कि
 पगुबल छत्यापी है और उपासनाबल या धार्मिक बल या पैसामबाब एक

शास्त्रतः बल है। वह हमें सा रखने वाला है, क्योंकि वह सत्य है।
बलवाद तो एक विकल्पी चीज है।

दुर्भाग्यसे आज हिन्दुस्तान भी इसमें फस गया और वह समझने
लगा है कि बलवाद ही सब कुछ है। परन्तु मेरा तो वह घटल विश्वास
है कि आखिरमें तो वैतन्त्र्यवाद या आत्मवादकी ही विजय होगी।

दूसरा मसाल यह है कि जब अश्वेत यहासे चले जायने और
बोमीनियम स्टेट्स भी तभीतक चलेवा जबतक कि विधान-परिषद् अपना
विधान बनाकर तैयार नहीं कर लेती, तबतक इसके बाद आप यहा
पर्यवेक्षके पुसमन बनकर रहेंगे या बोस्त बनकर ?

इसका उत्तर यह है कि मेरी तो हमेशा यह आशा रही है कि
अश्वेत हमारे साथ चले ही चले रहेंगे। यदि कोई आदमी बुरा भी
होया है तो उसकी बुराई उसके साथ चली जाती है, केवल भलाई ही
पीछे रहती है।

परन्तु आज हिन्दुस्तान असह-नेशनलिसे गुजर रहा है। यदि इस
नेशनलिसे अश्वेत पास हो जाते हैं, अर्थात् बाइसराय और उनके अश्वेत
सलाहकार वही काम करते हैं जिससे सारे देशका भला हो तो फिर
पीछे वे हमारे पुसमन कैसे रहेंगे ?

बोमीनियम स्टेट्स भी तो हमने उनके दिन बनकर ही लिया है।
उमें मेरेके बाद हम एक बड़े कमीनेके हिस्सेदार बन जाते हैं। इस
कमीनेसे प्रभव होनेके बाद भी हम उनके साथ दोस्ताना तरीकेसे
ही रहेंगे। इसीमें हमारी और उनकी बलाई है। हमारी अस्तित्व स्र-
कारके बाइस प्रेसीडेंट अवाहरवालजीने तो पहले ही कह दिया है नि-
हिन्दुस्तानी आजादी किसीको छटकनेवाली नहीं होगी। आजाद
नारद सब देशोंके साथ मित्रताके नवब बनायगा।

तीसरा प्रश्न है कि इंडियन रिपब्लिकका प्रेसीडेंट बौन होगा ?
क्या आप किसी बड़े असेजको इस पदपर रतेंगे ? यदि किसी असेज-
को नहीं तो फिर पंडित अवाहरवाल नेहृन्ड बने क्योंकि वे बहुत पटे-
सिधे हैं, असेजी और जेब बोल सकते हैं और विदेशीय भी उनको
अच्छा समझते हैं।

इसके उत्तरने में कहना चाहता हूँ कि भारतीय प्रजातन्त्रवादी प्रेसीडेंट एक नयी मटनी बनेगी, यदि कोई पाक और बहादुर लड़की मुझे मिल गई। प्रेसीडेंट बहुत पढा-लिखा ही हो और उसे कई भाषाओं का ज्ञान हो, यह कोई बकरी नहीं है। किसी बड़े विद्वान साहब या किसी सचिव-को प्रेसीडेंट बनाकर हम दुनियाको अपना घमंड दिखाना नहीं चाहते।

एक हरिजन लड़कीको उस पत्रपर लिखकर हम अपना आत्मिक सब दिखाना चाहते हैं। हमें मसालों से यह बताया है कि यहाँ न कोई उष्ण है, न शीत है। परन्तु वह लड़की बिलकी और शरीरकी साफ होनी चाहिए। उसमें किसी प्रकारका रस न हो। यदि खरी हो तो सीता-जैनी पवित्र हो और उसकी आर्पण सेव बरसता हो। सीताजी-में इसका सेव था कि उन्हें राखन से नहीं सकता था। यह तो एक ऐतिहासिक कथा है, परन्तु इसका अर्थ यह है कि जिसमें इसकी पवित्रता हो उसे कोई झुंकेस नाहक नहीं कर सकता।

ऐसी लड़की यदि मुझे मिल गई तो वह हमारी पहली प्रेसीडेंट बननेवाली है। हम सब उसको सजानी देंगे और इस प्रकार एक नई बात प्रामाण्य करके दुनियाके सामने एक मिलाव रखेंगे।

आखिर कोई हिन्दुस्तानी बागडोरों से समझासगी है नहीं। उसका एक सचिव-मन्त्र रखेगा और वह बीसी सप्ताह देता जायगा उसीके अनुसार वह काम करेगी। उसे केवल अपने वस्तुत्व ही करने होंगे। यह किसी बड़ी नैतिक बात है जो मैंने भाव आपकी बता दी। हिन्दुस्तानमें रहनेवाले सब लोग, चाहे वे सर्वार्थ हिंदू हो या मुसलमान, या कोई अन्य धर्म, एक आवाजसे यही कहें कि जिस किसीको प्रेसीडेंट बनाया जायगा हम सब उसको सजानी देंगे। यही सच्चा नैतिक बात है और बाकी सब मिथ्या है। यदि मेरी कल्पनाकी लड़की हमारी प्रेसीडेंट बनी तो मैं भी आदिम बनकर उसका काम करना और सरकारने अपने जाने उसके लिए मैं पैसा नहीं मांगूंगा। बचाहरजालगी, सरदार पटेल और रावेंद्रनाथ आदि को मैं मैं उसके सचिव-मन्त्रमें भेजकर उसने पीकर बना दूंगा।

: ५२ :

२८ जून १९४७

माइनों और बहनों,

आज जो मैं आपको सुनाता चाहता हूँ वह एक निरासी और अनोखी बात है। आशा है, आप सब ध्यानसे सुनेंगे और उसे हृदय भी कर लेंगे। एक आदमी यदि अच्छा काम करता है तो वह उस अपने कामसे सारे जगत-को हिस्सेदार बना लेता है। जो आदमी बुरा काम करता है, उसने सारा जगत हिस्सेदार नहीं बनाता, परन्तु जगतको उससे कुछ तो पहुँचेगा ही। आज हमारी इस विधान-परिषद्में यही बात तो बल रही है कि एक सड़कीके सम्बन्ध हक क्या-क्या है? अर्थात् यह कि सड़कीके मौलिक हक क्या होने चाहिए। इकीकत तो ऐसी है कि उन मौलिक हककोके बदलेमें हम कहें कि सड़कीके फर्म क्या है। मौलिक हक यही तो हैं जिनको हमलोग जानते हैं उनका भी भला हो और उनके पीछे सारे जगतका। आज हर आदमी यही सोचता है कि उसके हक क्या हैं? परन्तु यदि आदमी जन्मपनसे ही बर्न-प्राप्त करना सीख जाए और अपने बर्न-बर्नको अध्ययन करे तो उसको अपना हक भी साब-साब मिलता जाता है। मुझे तो अपनी माताकी गोदमें ही अपना बर्न सिखाया गया था। मेरी माता तो जगती और बिना पढी-लिखी थी। अपने बस्त-जव भी नहीं कर सकती थी। छोटा-सा नाम था और वह भी लिखना नहीं सीखा था, हमको तो वह पढनेके लिए स्कूल भेज देती थी और खुद पढी नहीं थी। उन दिनों शिक्षक रक्षक कोई पढता नहीं था और यह भी काठियावाड़-जैसे जगती प्रदेशमें। वह मैं ७० साल पहलेकी बात करता हूँ। पिताजी एक बीवान तो वे अगर उस जमानेमें बीवान कोई बहुत अनेकी पढा-लिखा बोले ही होता था। वे तो एक भयरक्षा पहनते थे और पावोंमें साड़ी डूँटिया होती थी। पतनूनका तो नाम भी नहीं जानते थे। परन्तु इस हाजतमें भी मेरी मा मुझे यह सिखाती थी कि बेटा, मुझे राम-नाम लेना चाहिए। वह मेरा बर्न जानती

थी । नमस्व यह कि वचनसे ही यह जानना चाहिए कि हमारा धर्म क्या है और उस धर्मका पालन करनेमें हमारा एक भी धपने साध हो जाता है । ज्ञाना जो कुछ पिसाही थी वह कुछ पीनेसे मुझे पीनेका एक मिलता था । यदि मैं कुछ पीनेका धर्म-पालन न करू तो मैं नर बाढ्या और फिर मेरा पीनेका एक भी नहीं रहता । कच्चेको कुछ पीनेका कर्तव्य पालन करनेमें ही पीनेका एक मिलता है । यह एक बड़ी खूबीकी बात है । निचोड यह है कि कर्तव्य-पालनमें से ही एक पैदा होता है । यदि हम अपना धर्म-पालन करें तो एक उसके पीछे बीडता है । वह हम-में छूट नहीं सकता । हमसमें बड़ी एक सच्चा भी है । यदि उसकी हम खा करे तो हममें नारे नगारको अपने साथ ले सकते हैं । सत्या-प्रह भी तो ऐसे ही पैदा हुआ था, क्योंकि मैं यही नोचता रहता था कि मेरा धर्म क्या है ?

परन्तु साथ तो एक फनोकी बात दिखाई दे रही है । जो राजा है वह ऐसा मानकर बैठ गया है कि उसे ईश्वरने रससपर राज्य करनेके लिए ही राजा बनाया है । उसको किनीको फाँसी देना, किनीको बड देना और किनीको कुनता करनेका एक है । वह हर चीजका प्रजापति ही पालन कराना चाहता है । वह कहता है कि यह एक उम्मीद की ईश्वरने बना है । कारखानोंमें जल्दूर और मासिक धन-अपने एक ना रहे हैं । बर्मीका अपने एक जग रहे हैं तो फिनान अपने । क्या कोई ऐसे ही धर्म तो है नहीं कि बिनमें एक धर्मको केवल एक ही और हमरा केवल कर्तव्य-पालन ही करना रहे । जो राजा अपना कर्तव्य-पालन नहीं करता और प्रजा अपना धर्म-पालन करती रहे तो पीछे वह प्रजा गवाली जाहूँ ले लेती है ।

यदि राजा अपना धर्म-पालन करे और रससका इस्ती बनकर रहे सब नो वह यह धर्मका और यदि हाकिम बनकर रहेगा नो वह हम मुमें रहे नहीं सच्चा । आत्मिक हम धर्मोंमें पड़े से । राजा अपना धर्म नूक गया और प्रजा अपना धर्म नूक गई ।

राजा माँ धन्या धर्म छोड़कर केवल यही कहने लगे कि मैं धर्म-गनीध्र था कि धर्मकी । नो हमीकमें राजा प्रजाका नमने सासा

दर्शन सेवक होता है। सेवकका धर्म है सब कुछ स्वामीको भेंट कर देना और फिर जो कुछ बच जाए उसे खाकर निर्वाह कर लेना। रैयत भी अपना धर्म-पासन करना सीखे। प्रथा बाबूकी ताबाबमें पड़ी है, वह चाहे तो राजाको मार भी सकती है, परन्तु इससे उसीकी नुकसान पहुँचेगा। यदि हम अपनी गली साफ करते हैं, रोसनी करते हैं या और कुछ करते हैं तो उसे अपना कर्तव्य मानकर करे। हममेंसे हरएकको गली बनकर सेवा करनी चाहिए। जो मनुष्य पहले भगी नहीं बनता वह बिबा रह नहीं सकता है। और न रहनेका उसे हक है। हम सब किसी-न-किसी रूपमें भगी तो हैं ही। मानते नहीं तो क्या, हकीकतमें तो हैं। यदि रैयत महसूल देती है तो वह इसलिए नहीं कि राजाका पेट भरला है, बल्कि इसलिए कि उसके बिना राजतन्त्र बच नहीं सकता। जो मनुष्य अपने धर्मका पासन करता हो उसके पास हक अपने आप आ जाते हैं। मजदूरों और मासिकोंपर भी वही नीति लागू होती है। यहा हमारे पास ही हरिजन मजदूरोंकी एक बस्ती पड़ी है। वह जिस बरगी-में विद्यमान है, उसे देखकर मेरा दिल रोता है। हम फिरने नालायक हैं। मैं इसकी अच्छी और सुंदर जगहमें रहता हूँ और वे बेचारे ऐसी बरगीमें पड़े हैं। मासिकोंके दिमने ऐसा होना चाहिए कि मजदूर लोगोंको खाला बेकर पीछे धाप जाए। मान लिया कि मासिक अपने धर्मका पासन नहीं करते तो फिर क्या मजदूर उस मासिकका क्या काट देने ? वे काट तो सकते हैं, परन्तु इससे तो सारे-का-सारा डाया किंगड बाकया और पीछे फिर वह जायगा कहा ? मासिकको बरगी भी क्या देनी ? इस तरहसे जो मजदूर हैं वे स्वतः मासिक बन जाते हैं। मजदूरोंको यदि अपनी स्थितिको दुस्त करना है तो उनको वह मूल जाना है कि उनके जो हक हैं वे धर्म-पासनमेंसे पैदा नहीं होते। मजदूर तो धाम करोड़ोंकी संख्यामें पड़े हैं।

यदि मजदूर अपना कर्तव्य छोड़ दें तो सब्जी धराजकता और अधा-पुनी भय जाती है। वही नजारा धाम हम सारे हिंदुस्तानमें या सारे संसारमें देख रहे हैं।

मनुष्य जन्मसे ही कर्मधार पैदा होता है और शास्त्र भी वही

सिखाता है कि इस कर्मको प्राप्त करनेके लिए ही हम अन्य सेते हैं, और जन्मने ही परलोक बन जाने है। जाता यदि जाना दे तो छा भेते हैं। इन्सान कुमरोपर निर्भर रहकर ही अपने आपको इन्सान बनाता है।

: ५३ :

२६ जून १९४७

भाइयो और बहनों,

कल हमने कर्म वाली बर्म-यासनके बारेमें बात शुरू की थी। मैं जो आपको कहना चाहता था वह सब-का-सब कम नहीं कह पाया था। आज मैं उसे कह दूँगा। हमें तो सब कोई आसानी नहीं भी जाता है, उसका क्या कुछ-न-कुछ कर्म हो जाता है। लेकिन जो आसानी अपना कर्म भूलकर निकल हल्की ही दिखावट करना चाहता है, वह इन बातोंको नहीं जानता कि जो एक अपने कर्तव्य-पालनमें पैदा नहीं होता उसकी कोई दिखावट कर नहीं सकती। हिंदू-मुसलमानोंके बारेमें भी यही चीज लागू होती है। कहीं जो, हिंदू रहें या मुसलमान रहें, या दोनों रहें, वे अगर अपना-अपना बर्म-यासनभरें तो उससे एक अपने-आप पैदा हो जाता है। फिर उसके माननेकी जरूरत ही नहीं होती। जैसे बच्चा माँका दूध पीता है। दूध पीता उनका बर्म है, क्योंकि उससे उसको बिना रहनेका एक मिलता है। यह एक ऐसा मुसहरी कागून है कि उसमें कोई सच्चीभी नहीं कर सकता। यदि हिंदू मुसलमानकी अपना सहोदर सम्झकर उनमें साथ जगड़ा मलूक करता है तो मुसलमान जी बसतेमें दोन्नीका ही बर्बाद होगा। आप एक बेहतरकी विचार से नीलिए। अगर एक शायमें ५०० हिंदू और ५ मुसलमान रहने हैं तो इन ५०० हिंदुओंका उन ५ मुसलमानोंके प्रति कर्म हो जाता है और पीछे हफ्ता भी। वे अपनी गणकीमें यह न मानें कि इन तीनों हमको कुछ आसों और

भार देने। किसीको मारनेका हक तो पैदा ही नहीं होता। उसने कोई महादुरी नहीं, बुद्धिहीन है, निर्मज्जपना ग्रीक बेवर्मी है। उन ५०० हिब्रुओंका तो यह धर्म हो गया कि जो मुसलमान बहा पड़े है, वे बाहे बाडी रखते हो या पवित्रमने ममान पटते हो, उनके सुख-दुःखमे वे शामिल हो। उनका फर्म है कि वे यह देखे कि उन्हें पाना मिलता है या नहीं, पानी पीनेको है या नहीं और उनकी भ्रम्य बरुरत भी पूरी होती है या नहीं। अब ये ५०० हिब्रु अपना धर्म-पालन करते हैं तब उन्हें यह हक मिल जाता है कि वे ५ मुसलमान भी अपना फर्म पूरा करे। अगर किसी कारणसे गाबमें प्राण लग जाती है और वे ५ मुसलमान यह कहें कि गाब बनने दो और उसका गाबको बनानेमें ही मदद करें तो फिर अपना फर्म क्या नहीं करते। गाबमें प्राण लगना तो एक प्राण बात है। किसीने बीड़ी धूककर दियासलाई फेंक दी और वह किसी घासमे या रस्से या गिरी तो प्राण बनने लगी। हवाका जोर, और गाबमे घास-फूसके झोपड़े ही होते हैं और सारा गाब बन जाता है। अगर हुकीमतमें होगा ऐसा कि वे पांच मुसलमान भी यही कहें कि हम भी उसमें पानी में जान और अगारोको बुझानेका बल करे। इस तरह यदि हर एक अपने-अपने धर्मका पालन करे तो फिर उनका हक भी आप-ही-आप मिल जाता है। परंतु गाब हम लोग अपने धर्मका पालन नहीं करते। काम तो फिर भी चलता ही है, क्योंकि ईश्वरने यह बुनिया ऐसी पचरणी बनाई है जिसका काम कभी नहीं रुकता। अगर धर्म पालन करनेसे हममें एक दूसरकी पैदा हो जाती है।

यह तो मैंने आपको एक मसूला बताया। जान लो कि ये ५ मुसलमान बहमाशी करना ही चाहते हैं। प्रायः उनको जाना है, पानी भी है और अच्छे-बे-अच्छे सबूक करें और फिर भी वे जाहिया ही है, तब उन ५०० हिब्रुओंका क्या फर्म हो जाता है? उनका यह धर्म नहीं कि वे उनको काट डालें। यह तो जानबरोकी बात हुई, मनुष्यका यह धर्म नहीं। यदि मेरा कोई सवा आई है और वह बीबाणा बन गया है तो क्या मैं उसपर भार-पीट दूक कर दूना? मैं ऐसा नहीं करूंगा। उसको एक कमरेमें अलग रख दूंगा और दूसरोको भी भार-पीट नहीं करने

दुआ। यह एक इन्सानियतका मयूत दुआ। उनी मरू यदि वे मुसलमान होम्नामा नीम्ने बनना ही नहीं चाहते और कहते था कि हम तो असल नेशन है, हम पाप हैं तो क्या हुआ, उन बाहरने ५ करोड़ मुसलमान बुला सरने हैं तो वे हिंदू उन बाहरने मुसलमानों की बननी-मे टरे नहीं। वे उनमे साफ कह दें कि हम भी उनमे होम्नामा नीम्ने बननेको कहते हैं, मगर वे बनने ही नहीं। अगर आप उन्हें मदद देना चाहते हैं तो वे, मगर हम टरनेवाले नहीं हैं और इन कभी भी उनके आगे सिर नहीं झुकावेंगे। अतः बाह्यकी दुनिया भी समझ जायगी कि वे ५०० हिंदू नरीक आदमी हैं और अपना कर्म पत्तन करनेको तैयार हैं। यही चीज उस यावपर भी लागू होनी है जहा ५०० मुसलमान और ५ हिंदू रहते हो जैना कि पाकिस्तानमें बहुत जगह रहते हैं। अभी अमेनमे कुछ आदमी मुझमे मिले। उन्होंने कहा कि हुनाए कहा क्या हाल होगा? मैंने उनमे कहा कि अगर वहा मुसलमान अच्छे हैं, अपने आपपर काबू रखनेवाले हैं और अपना धर्म-पालन कर रहे हैं तो फिर आपको डरनेकी बात क्या है? और यदि वे ५ हिंदू पायी हैं तो फिर वे छारे हिंदुस्तानके हिंदू वहा बुलावे भी जी क्या बनता है? जब सब अपना-अपना धर्म-पालन करे तो पीछे उनके पास हक अपने आप आ जायगा। ईश्वरकी ऐसी सुबी है। जह में बहुत सबुर्बकी बात कहता हू और वह सबुर्बा भी एक बर्बका नहीं, बल्कि साठ बर्बोका।

आजकल हिंदुस्तानके कुछ राजा लोग बहुत भियड रहे हैं, वे समझते हैं कि वे 'यावज्जन्मदिवाकरी' राजा ही हैं। वे कहते हैं कि हमें रैयतने पीछे ही राजा बनाया है, या तो छोड़ने बताया है या सूरज और चांदने। परन्तु वह तो धर्म-पालनकी बात नहीं, बल्कि धर्म और अहंकारकी बात हुई। अबतक राजाओंपर छोड़नेका साया था। करोड़ों रुपया उन्होंने धमरीका और इर्लंडमें खर्च किया। भूख खोख खोखे। मगर अब किछ मुझने वे खोख खोखें। अब तो रैयत बाहेगी तनी वे राजा रह सकेंगे। अब तो वे रैयतके नेबक बनकर ही रह सकेंगे हैं। मगर खाना तो सेवकों की चाहिए। अबतक तो वे सूटकर खाते थे।

महलोमें भी उनको रहने दिया था, क्योंकि वे कह सकते हैं कि हम बन्धसे ही महलोमें रहना सीखे हैं, फोपड़ोंमें कभी रहे ही नहीं। तो महलोमें उनको रहने देनेसे रैयतका क्या भिन्नता है ?

परन्तु राजा यदि रैयतके पास जाता है, उसका सुख-दुःख सुनता और अपनेको रैयतका सेवक कहता है, तो फिर उस राजाको उस रैयत-पर राज्य करनेका हक मिल जाता है। यह सेवककी हैसियतसे राज-काज करे। उसे रैयतसे कर्म लेनेका भी हक मिल जाता है, क्योंकि करके बिना रियासतका काम कैसे चल सकता है ? रैयत भी स्वेच्छासे कर देती है और बड़ी खुबसूरतीसे सारा काम चलता है।

यदि राजा नौन कहे कि रैयत कौन होती है, हम उसे तोपसे उड़ा देंगे, तो वह राजाका बर्न-पासन नहीं हुआ। तब रैयत क्या करे ? ऐसी स्थितिमें रैयतका बर्न क्या है ?

तब रैयतका बर्न हो जाता है राजाका सामना करनेका और उसका राज-पाट बंद करनेका। मगर रैयतके भिन्न होनेका मतलब यह नहीं कि वह महलोमें भाग लगा वे और सब कुछ छिन्न-भिन्न कर दें। वह तो भ्रमर्न हो जाता है। राजा यदि उल्टे रास्तेपर है तो रैयतका यह बर्न नहीं कि उसे जमीनपर बसीडे। रैयत बाधक, सत्यसे और भ्रमर्नने सामना करे। सत्प्राप्त हसीमेंसे पैदा हुआ था।

रैयत अपने बर्नको छोटकर अकेले हफ्ते पीछे न मागे। जो केवल हफ्ते पीछे बीटता है उसको वह मिलता नहीं है। उसकी दशा उस कूत्ते-बैसी होती है जो पानीमें अपनी ही परछाईं देखकर उसको काट खानेके लिए जमटता है। वह उसका कात्पनिक हक है। बर्न-पासनके बाद हक तो अपने-आप उसकी गोदीमें आ पड़ता है। यह एक बड़ी खुबसूरत और मनोप्री बात मैंने आज आपको बताया है।

: ५४ :

बोम्बे ३० जून १९४७

(निश्चित संदेश)

बोम्बे की आबे आब मरली भूमेने होनेबाबे जन-मत की तरह बनी हुई है, क्योंकि सरकारी सूबा कानून कार्यसका रहा है और आज भी है। बाबसाह आज और उनके साथियोंसे कहा जाता है कि पाकिस्तान या हिंदुस्तान, दोनोंसे किसी एकको चुनो। हिंदुस्तानका आज मत मत हो गया है—हिंदुस्तानका हिंदू और पाकिस्तानका मुसलमान। बाबसाह आज इस कठिनाईसे कैसे निपटें? कांग्रेसने बतल दिया है कि डा० आब साहबकी नीची रेखा-रेखाके नीचे सरकारी भूमेने जनमत लिया जायगा। जो वह तो निश्चय सारीतर ही होगा। खुदाई बिजलसवार मत नहीं लेने। जो मुस्लिम लोगको सीपी भीत मिलेगी और खुदाई बिजलसवारोंको अपनी आत्माकी आवाजके खिलाफ काम नहीं करना पड़ेगा, बसते कि उनकी आत्माकी आवाज है, ऐसा भाग जाय। ऐसा करनेसे क्या जन-मतकी चर्चाका मत होता है? नहीं खुदाई बिजलसवार किन्हीने बहादुरीने ब्रिटिश सरकारका सामना किया, सब हारते करनेवाले नहीं हैं। हार होगी, वह उनकी तरह बातें हुए भी जन-मत बन लेन चुनाने हिस्सा लेते हैं। जब एक दल चुनाने हिस्सा नहीं लेता तब भी तो हार निश्चित ही होती है।

पठानिस्तानकी गई राय पेश करनेके लिए बाबसाह आजको साक्षात् दिया जाता है। कांग्रेसकी बचारात जननेसे पहले भी, अज्ञातक में जानता हू बाबसाह आजके लिएपर नहीं चुन सवार भी कि अपने घरमें पठानोंको पूरी आजादी हो। बाबसाह आज एक अलग स्टेट बनाना नहीं चाहते। अगर वह अपने घरमें अपना विभाग बना सकें तो वह खुदीने दोनोंमें एक सबको बचल कर लेंगे। मुझे तो समझमें नहीं जाता कि पठानिस्तानकी इन मांगके सामने किसीकी क्या उदा हो सकता है। हा, पठानोंको पाठ सिखला हो और उन्हें किसी-न-किसी तरह मुकामा

ही हो तो बात बसत है । बाबसाह जानपर एक बड़ा इस्लाम यह बताया जा रहा है कि वह अफगानिस्तानके हाथोंमें खोज रहे हैं । मैं समझता हूँ कि वह कमी किसी तरहकी बोझावाजी कर ही नहीं सकते । वह सरहद्दी सुबेको अफगानिस्तानमें बचन होने नहीं देंगे ।

उनके दोस्त होनेके बाते मैं मानता हूँ कि उनमें एक ही कमी है । वे बहुत ही सक्ती हैं, सासकर अयेबोके काम और नीयतपर वह हमें सा मुबद्दा करते हैं । मैं सबसे कहूँगा कि वे उनकी इस कमजोरीकी, जो कि सास जन्हीने नहीं है, नजरअन्दाज कर दें । यह बरकर है कि इतने बड़े नेताके लिए यह सोना नहीं देता । अगर्ब मैंने उसको एक कमजोरी कहा है और जो एक तरहसे ठीक ही है, मगर दूसरी प्रकारसे इसको एक खूबी मानना चाहिए । क्योंकि वे बाहूँ भी तो अपने बिचारोंको छिपा नहीं सकते ।

सरहद्दसे मैं आपको रामेश्वरम्की ओर ले जाना चाहता हूँ, जहासे, कहा जाता है कि रामचन्द्रजीने सिताजीका ढेरठा हुआ पुत्र बनाया था, ताकि उनकी सेना मयूत्र पार करके सका पहुँच जाए, जिसे उन्होंने पीटा, लेकिन अपने भास नहीं रखा और उन्होंने उसे रावणके भाई विभीषणको छीप दिया । यही मण्डूरमंदिर आज हरिजनोके लिए खोज दिया गया है । इस प्रकार बसिगर्ब कोपीनके मंदिरोंको छोड़कर समान मण्डूर मंदिर हरिजनोके लिए खुल गए हैं । राजाजीने सास-सास मंदिरोंकी जो सूची मुझे दी है, वह इस प्रकार है मद्रुरा, सितावेसी, बिदम्बरम्, गीराम्, पक्षनी, सिचकिरेज, सिस्सति, कापी और गुरवम्पूर । सूची इतनेपर ही खत्म नहीं हो जाती है । अज्ञात अयेम्बसीके हरिजन-स्पीकर अन्य हरिजनों और दूसरे पूजा करनेवालोंको नाव लेकर इनमें-से अक्सर मंदिरोंमें बुले हैं । भिक्षित हरिजन और अन्य लोग इस नुषार-के महत्त्वको जायद कम्जन करे, लेकिन हम इसका महत्त्व जमन करे, क्योंकि वह सुवार नौर पुन-खराबीके हुमा है । हमें सम्पीद रखनी चाहिए कि कोपीन बी नावणकोर, तामिसनाठ और सिटिज केरसकी तरह अपने मंदिरोंको हरिजनके लिए नुनका देगा ।

मन्दिर-प्रवेश-सुधार तत्काल धर्मार्थ रहेगा जबतक मन्दिर, बरूही धरतीनी सुधारने, वास्तविक रूपमें पवित्र न हो जाय।

॥ ५५ ॥

१ जुलाई १९४७

भाइयो धीर बहनों,

आप सोचने काजका भजन^१ समझ लिया होगा। यह भजन मध्य-प्रायके तुकड़ोनी महाराजने बनाया है। इसमें बायी हिन्दुस्तानी है। ऐसी हिन्दुस्तानी नहीं है जिनमें ठूस-ठुसकर बरबी और फारसी मरी जाती है। वह जो दिल्लीवालोंकी-नी हिन्दुस्तानी है। इसमें खूबी नी है, और मिठाव नी है। भजनने कहा है कि ये तीन बातें जिसने पाई राम उसको मिलता है। तीन बातें यह कि बर-बार बना गया, सब कुछ बुट गया, लेकिन वह हाथ-हाथ न करके रामका नाम बोला है। सयी-बाणी छोड़कर देते हैं, उसका धनमाल करते हैं सो नी वह ईश्वरको नहीं छोड़ता। रोग होता है, मामूली नहीं—जुलुस भयानक, फिर भी वह रामको नहीं छोड़ता। जिनने ये तीन चीजें नहीं पाई उनमें रामको नहीं पाया। जिनने ये तीन निवासते पाई हैं उसके घरमें तो राम बैठा ही है। भजननी ये तीन चीजें आज हमारे लिए बड़ी कामदेमद है। जो आज जो हम-पर गुजरणी है उसने हम हाथ-हाथ न करें।

एक भाई बिचते हैं कि नू रोज-रोज प्रार्थनामें कहा है कि हिन्दु-म्लानज जो टुकड़ा हो गया है उसे ज्मीन संहारने मिटा देना है। लोग जानने नहीं कि मैंने ऐसा नहीं कहा है। जिन चीजोंको काग्रेस धीर लोगने मजूर कर लिया धीर जूगोमने दो टुकड़े हो गए उनके पीछे सर क्या कोटना? मैं ऐसा आदमी नहीं हू। जिसने टुकड़े पीछे ही

^१ "विष्णुतमै राम मिला जिसको

उमने ये तीन चीजें पाई।"—तुकड़ोनी

हुए हैं। कावेनने वो मान लिया है उसे तो होने दो। उससे विगडता क्या है? अभीनका टुकड़ा कर लिया तो उसमें क्या बिलके टुकड़े हो गए? अगर हम एक दूसरेके साथ मिल-जुलकर काम नहीं करेंगे तो हिंदुस्तानका काम कैसे चलेगा? मान लिया कि मुसलमान लोग मिल-जुलकर काम नहीं करना चाहते तो हम क्या करें? मैं कहता हू कि बिबली एक खेन है। जेलमें हमेशा वो पाटिया चाहिए। अगर एक (पार्टी) मान ले कि टुकड़ा नहीं हुआ है तो वो टुकड़े नहीं हो सकते। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम किसीकी बुझावब करें। हमें तो अपने धर्मका पालन करना चाहिए। बीसा मैंने परसों कहा था उसी प्रकार फिर कहता हू कि धर्म सच्ची चीज है, एक झण्डी चीज नहीं। कोई धारसी अगर हमें तग करता है तो हमें मुसामब नहीं करनी चाहिए, बल्कि धर्म-पालन करना चाहिए।

मुझे एक सिख सबकेने लिखा है कि दू सिखोंसे मुस्लमत तो करता है पर उनके बारेमें करता क्या है? हिंदू धीर मुसलमान दोनों-ने कुछ-न-कुछ पाया है, लेकिन सिलको क्या? उसके लिए दू क्या कहता है? उसके लिए कुछ हमदर्दी तो बसाधो। मुझे उनसे यही कहना है कि पचाबने सिखोंका टुकड़ा हुआ उसके लिए मैं क्या करूँ? मैं कोई हाकिम तो हूँ नहीं। मैं क्या करता? मेरे नजदीक तो सिख-धर्म धीर हिंदू-धर्ममें कोई जेब नहीं। मैं तो सब पट चुका हू। सिखोंका सब साहब बड़ा आसाम है। उसने वो भरा है वही सब वैदिक-धर्ममें भी है। गुरु नानकने भी वही कहा है। लेकिन आज यह मतलब माने जाने हैं। यह कौम बहुत छोटी है, लेकिन विस्वात है। इसकी तलवार मजहूर है। आज मेरे पास कनाडासे दो आई थाए थे। वे कहते थे कि कनाडाने काफी सिख पड़े हैं और काफी काम करते हैं। भल्लीकाने भी सिख लोग हैं। जहा-जहा सब जयह मिट दिखार्ई पड़ते हैं। सिरा घेती करते हैं, डबीनियर है, रेत बनाते हैं, मोटर बसाते हैं। पर आज तो सिम बहुत ऐम-भागलमें भी आ गए हैं।

मेरे पान मुन्सिम बीगका मबुराने एक सार भाया है कि ब्रह्मा हिंदू लोग हमारे साथ बड़ी क्यावती कर रहे हैं। मैं नहीं जानता

कि यह बात ठीक है या गलत। पर यह तरीका अच्छा नहीं। अगर हम सत्पा-वन बसाए तो यह ठीक नहीं। सत्पा-वनसे गलती घटी है और गलतीसे हमारा नाम हो जाता है।

पाप जानना चाहिये कि पाप बाइसराइसे मिलने गया तो क्या हुआ? मैं तो नेहरूजी और सरकारके साथ गया था। अखबारवालोंसे मैं कहूँ कि जबतक कहासे कोई अधिकृत व्यक्ति न निकले वे अपनी गप्प न बसाए। पापकी हानतमें अखबारवालोंकी चाहिए कि वह ऐसी कोई बात न करे जिससे देशको नुस्सान हो।

एक पत्रमें लिखा है कि अशोक बरमान हैं और तु भी बरमान हैं। लेकिन अशोक फरेबी और बरमान हैं ऐसा माननेको मैं तैयार नहीं। जब वह बरमान साबित हो जायें तो मैं भी बर जाऊँगा। वह ऐसा खूबसूरत कामया ईश्वरने बना रखा है। दुनियाकी सबने हैं। हम कोई फरेब न करें। अपनेने कोई गलती न रहे। यही धर्मका मार्ग है।

: ५६ :

२ जुलाई १९४०

एक माई मुझे लिखते हैं कि 'जपतमें बहुत बस्तुएं होती हैं। कुछ ऐसी होती हैं जिन्हें लोग पसंद करते हैं और कुछ ऐसी जिन्हें पसंद नहीं करते। जिसे लोग पसंद नहीं करते उसको करना, जिसे लोग पसंद नहीं करते उस कामको डारने मेरा यह तो मूर्खताकी उक्ति है। तू तो लोगोंको सब्जी राह बसाता था। अब मुझे बुढापेमें भी ऐसा ही करना चाहिए कि लोग जिस रास्तेमें जाव उसने तुझे समर्थन देना चाहिए।'

जै-जिन मुझे यह चीज पसंदी है। जो चीज लोकप्रिय बन गई है उसे बदन (अपमर्ष) क्या देना? जो कोई नहीं करे ऐसा काम ऊँचे। अगर त अकेला है तो कुछ मराना नहीं है। जागू न तो यह है

कि यकैला है तो भी तुम्हें काम करना है। फिर लोग बाढ़ें खाती हो या गाराब। किसी व्यक्तिने ऐसा माना कि छोटे-छोटे रेतके कणोंने रस्ती बनाकर बिस्तर बाधूंगा, तो यह मूर्खता है। रस्ती तो मूचसे ही बनती है। जो काम करने लायक होता है वह तो करना ही है।

जोग कहते हैं कि तू तो बहुत दिनोंसे हिंदी-साहित्य-सम्मेलनमें था। जब कहा था तो हिंदीको बहुत बड़ी बताता था। शक्तिनने पहले हिंदी बताया था। कहा तो जोग समितिको मानते थे। कहा तूने हिंदी बनायी। तूने इतना हिंदीका काम किया वह बहुत था, फिर हिंदुस्तानी क्यों?

इसका जबाब यह है कि मेरी हिंदुस्तानी हिंदीमेंसे आई है। मैं इंदौरके हिंदी-साहित्य-सम्मेलनमें गया। मारवाड़ी-सम्मेलनमें भी जमनालालजीके प्रेमसे बना गया। कहा जानेकी इच्छा नहीं थी, लेकिन प्रेमने जाना ही पड़ता है। प्रेम मुझको बनीट ने बना। वहीं मैंने यह किया था कि मेरी हिंदी तो अजीब प्रकारकी है। जिसे हिंदू भी बोलते हैं, मुसलमान भी बोलते हैं। उसे उर्दूमें लिखो, बाहें देख-नागरीमें लिखो—ऐसी मेरी हिंदी है। मेरी हिंदी यह नहीं है जो साक्षर^१ बोलते हैं। मैं तो टूटी-फूटी हिंदी बोलता हूँ। अगर आप समझ लेते हैं। मैंने तुलसीदास पढ़ लिया है, पर मैं हिंदीमें साक्षर नहीं हुआ हूँ। उर्दूमें भी साक्षर नहीं बना हूँ, क्योंकि मेरे पास उसका वक्त नहीं है। मैंने ऐसी हिंदी बनाई, पर वह नहीं बनी तो मैं हिंदी-साहित्य-सम्मेलनमें निकल आया।

संस्कृतमयी बोली तो हिंदी हो सकती है और उर्दू भी आज ऐसी हो गई है जिसे भीमाना साहब बोल सकते हैं या सद्गु साहब। इसीलिए मैंने कहा कि न मुझे हिंदी चाहिए, न उर्दू। मुझे जग-जगताका संगम चाहिए। पर लोग कहते हैं कि तू तो मूर्ख है। कहा अन्धधुन सरस्वती-ए-उर्दू है, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन है जो हिंदीका बड़ा काम करता है, कहा तेरी बात नहीं चलेगी। और जब पाकिस्तान बन गया है तो भी तू हिंदुस्तानीकी बात करता है?

^१ शिक्षित।

लेकिन मेरा दिल तो बाली हो गया है। वह कहता है कि मैं तो हिंदुस्तानीको छोड़ूँ ? वह बीच अच्छी है तो मैं उसे क्यों छोड़ दूँ ? अब हम प्रयागमें जाते हैं और समयमें स्थान करने हैं तो पकिज हो जाने हैं। इसी तरह अगर हिंदी और उर्दू का समय बना लू तो मैं भाग्न हो जाऊंगा।

आज तो सुपसमान करने हैं कि इस्लामका सबसे बड़ा सुपसमान वाली है। लेकिन मैं कहता हूँ कि अगर मैं बिना रहा तो वे मोम मुन सुपसमानकी भी बुझानेवाले हैं। मेरी गरज तो सबकी है। लेकिन मैं कहता कि हिंदुस्तानमें जो पामसफनका घूर छाया है उसमें हम बूब न जाय। बिना मीनके न मर भाव।

अगर मैं भकेसा रहूंगा तो भी बही कहूंगा कि मैं तो हिंदुस्तानीको ही पण्डितवा मानता हूँ। मेरा पण्डित तो हिंदुस्तानमें भी है पाकिस्तानमें भी है। मुझे कोई कड़ी नहीं रोक सकता। बिना साहब रोने। मैं कोई कमजोर प्रथा मोटे ही बन गया हूँ। बिना साहब मुझे बंध करे। मैं पसपोर्ट लेनेवाला नहीं हूँ।

यही हिम्मत आयेगी भी होनी चाहिए। हमारी माता—हिंदमाता बिनाका कडा लेकर हम घूमे हैं, मुहानी की है तो क्या हम आज यह जग में कि अब उस हिंदमाताका छिर नष्ट गया है ?

कोई ऐसी वस्तु नहीं है कि ऊर्ध्वको भूलकर हिंदी ही से। जो बीच एक आदमी करेगा तो उस एकमेंसे जनेक हो सकते हैं। मैं मर जाऊंगा तो भी हटनेवाला नहीं हूँ। बीना मेरा दिल कहता है वेने ही आप बनें तो अच्छा है। हिंदमाताके लिए भी अच्छा है।

: ५७ :

३ जुलाई १९४७

भाइजी और बहनो,

आज सोचने काजना भजन तो मुन सिवा। हममें ऐसी बात है

‘बाद।’ ‘भानोंमें मील दियासी दे, मोहि सुन-सुन भावे हीसी।’

कि पानीमें मछली रहे और प्लासी रहे यह बड़ी हँसीनी बात है। हम ईश्वरकी बुनियामें पड़े हैं, पर ऊँचे जानते नहीं। ऐसी भरमसा पंथा हो जाय तो यह हँसीकी ही बात है। ईश्वर तो हमारे पास पड़ा है। जैसे माकून भगुलीसे भगत नहीं है ऐसे ही ईश्वर भी भगत नहीं है। माकून भगत होता है तब बेवना होती है, ऐसे ही ईश्वर अगर बुर रहेगा तो बेवना होगी ही।

आज हिंदुस्तानमें भी बेवना फैल रही है। लेकिन यह सब महरोमें है। • साब देहात तो महरोके ईर्ष-गिर्द नहीं रहते। हिंदुस्तान तो ११०० मील बड़ा और १५०० मील चौड़ा है। हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो गए तो नक्का बोले ही बबल गया। वह तो बीसा भाग है बीसा ही रहेगा। अगर हम सब यह बात समझें और मूल न जाए तो सब भगवा निपट जाता है।

(एक ब्राह्मणने गाबीजीको पत्र लिखते हुए पूछा था कि महाशय ! हमारा पढ़ने-लिखनेका पहला हक है अगर कानिजोने हमारे लड़कोंको स्वान नहीं भिजता, आप इसपर कुछ कहिए। गाबीजीने इसका उत्तर देते हुए कहा) एक माईने मुझे लिखा है कि ब्राह्मण तो ४० करोड़में एक मुट्ठीमर है। समुद्रमें बिबुल है। इसलिए अल्पमत है।

मैं अगर अकेला हूँ तो मैं भी अल्पमतमें हूँ। लेकिन बिबु अपने आपमें अल्पमतमें नहीं। जब वह पानीसे भगत हो जाता है तभी अल्पमतमें होता है और सूख जाता है। अगर वह साथ रहेगा है तो वह बिबु नहीं, समुद्र ही है। हिंदुमेंकि समुद्रमें ब्राह्मण अल्पमतमें कहा है ? जितना बरप्पन सबमें है वह उसमें भी है।

एक जमाना था कि ब्राह्मणके लड़के ही पढ़ने जाते थे। वह जमानेसे पहले जाते थे, इसलिए जब नई चीज पाई तो वह भी पढ़ने गये। लेकिन अब तो ब्राह्मणोत्तर भी भिजा लेते हैं। तब ब्राह्मण या बुरेका दिल यो क्यों कहे कि मेरे लड़केकी जरूरी क्यों नहीं होती ? मैं तो दो-तीन दिनसे आपको हफ्ती बात समझ रहा हूँ। हफ्तीकी कोई चीज नहीं है। अगर ब्राह्मण हफ्ते पढ़ने आता है तो मैं पूछूंगा कि यह

कहासे पैदा हुआ ? अन्तसे ब्राह्मणका हक है या किसी धीरका हक है, मैं नहीं जानता । धर्मके नाम कर्म करनेसे हक पैदा होता है । पापीको भी पाप-कर्मका फल होपनेका हक है ऐसा छाप मानते हो, लेकिन मैं तो कहूँगा कि जिसने पुण्य-कर्म किया है उसे पुण्य-फलका हक हो जाता है ।

ब्राह्मणका हक क्या है वह कोई भुक्तने पूछे तो मैं कहूँगा कि वह ब्रह्मको जाने, यही उसका हक है । ब्राह्मणके तो दो ही धर्म हैं—एक तो ब्रह्मविद्याको जाने और दूसरे उसे बालकर दूसरीको सिखाए । जो ब्राह्मण इस तरहने धर्मका पालन करता है तो उसे जिवा रहनेका हक हो जाता है ।

पहले जब ब्राह्मण ऐसा होता था तो जोब उन्हें जिवा रहनेके लिए नीचा धारि देते थे, और वे ब्राह्मण भी ऐसे थे कि जिसना उन्हें चाहिए उसना ही लेते थे, बाकी वापस कर देते थे । ब्राह्मणका हक तो ब्रह्मविद्या सिखाना है । जब ऐसा हक है तो रोगा क्या कि कामेचने नहीं जा सकते । सब कामेचमें कहा जा सकते हैं ? ७ लाख बेहोताने रहनेवाले मठके-मठकी कामेचने कहा जा पाते हैं । वह तो गई साधीममें ही भुक्तिल है । पर आज मैं उनकी बात नहीं करता ।

इसलिए मैं कहना हू कि कोई अपनेको अत्यन्तसत्यक न माने । सब एक है । हमारे धर्ममें जो सबसे नीचा है उसे सबसे ऊँचा बताया गया है । उसलिए हम सब मनी सब धाय, मेहनत सब धाय, सभी हम सबकी धीर हैं । ब्राह्मणके लिए भी धीर है, फिर उनके लिए कोई भुविवा पैदा होलेभापी नहीं है ।

३ ५८ :

४ अर्थात् १८४७

भादवी और अश्वी,

आज मैं आपकीगोने एक बहुत बड़ी बात कहना चाहता हूँ । २७

जोम मुझे सुनाते हैं कि जो कुछ हो गया और हो रहा है और जो डोमि-
नियन स्टेट्स^१ हमें मिलने जा रहा है, क्या उसमेंसे राम-राज्य पैदा हो
जायगा? पूछनेवाला मुझे ताना देने है और मुझे कबूल करना पड़ता है
कि मैं ऐसा नहीं कह सकता कि हममेंसे राम-राज्य पैदा होगा। मैं सब
बिना उसके विषय ही पाता हूँ। गर्वजोने हमारे देशके बोटुकड़े
बनाए और पीछे उनके दो डोमिनियन स्टेट्स भी बन जाते हैं। दोनों एक-
दूसरेके दुश्मन बन गए, ऐसा मानकर जब वे चलते हैं तब उसमेंसे राम-
राज्य कैसे पैदा हो सकता है? डोमिनियन स्टेट्सका मतलब अवेबॉकि
ग्राह्य तो नहीं, उनके साथ हमारा बराबरीका रिश्ता हो जाता है। वह
करीब-करीब आबादी-बैदा ही है, हमने मुझे कोई शक नहीं है। परन्तु
ब्रिटिश कामनवेल्थमें बाकी जो डोमिनियम हैं, वे सब तो ऐसी हैं जिनमें
हम एक बचीलेंके कह सकते हैं। हिंदुस्तान तो एशियाका एक देश है। तब
वह डोमिनियन कैसे रह सकता है? यदि दुनियामें बिलने भी राज्य है
तब सबका एक डोमिनियन बनता तब तो बात दूनरी भी और उसमेंसे
राम-राज्य भी पैदा हो जाता। अगर जो कुछ बना है उसमेंसे राम-
राज्य या गुसाईं राज्य नहीं निकल सकता। पहले तो ब्रिटिश पार्लमेंट-
ने यह माना था कि वह ३० जून १९४८ तक भारतीयोंके हाथोंमें सारी
सत्ता नीप देगी। अगर अब उसने ऐसा काम किया कि वह बिलगी जल्द
हिंदुस्तानसे जमी जाय उतना ही अच्छा है। अगर बल्कीसे छोड़कर
जाय कैसे? उसके लिए उन्होंने फैसला किया यदि डोमिनियन
स्टेट्स साथ वे बना वे तो उसमें कोई बाटका नहीं रहता,
क्योंकि डोमिनियन बननेपर कुछ-न-कुछ शास्त्रिक तो उनका रह ही
जाता है।

मैं नहीं चाहता कि हिंदुस्तान एक कुएके मेढकनी तरह रहे। मैंने
एक कुएका मेढक कहा है कि कुएमें तो मेरा राज्य चलता है, बाहर बाहे
कुछ होता रहे उसका मुझे पता नहीं। अगर हमारे यहां तो ब्याहुराजालची
तथा अन्य नेता लोग यह कह चुके हैं कि हम किसीके दुश्मन बनकर नहीं

^१ डोमिनियोनिक इबराज्य।

रखें, मयां दुदिनमें सबके योग्य बनकर रहें। उन्हें अंग्रेज की या दाते हैं। तो क्या वे एक विद्वान् बनना चाहते हैं? एदिगाई मन्मथनमें मने कहा था कि ऐसा विद्वान् बन सज्जा है और उन्हें किसी नृत्तको अपने यह फीज रखनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

कुछ देग साब अपने आपकी हेमेटे^१ करते हैं। वेबस कहते हैं वे हेमेटे बोले ही उन जाने हैं। कहा सोम-राज्य होता है वही फीजकी क्या जरूरत? कहा फीज राज्य होता हो कहा सोमिक वा पचायती राज्य हो नहीं मकना। फीजी राज्यों की कोई विद्वान् नहीं बन सज्जा। आपाग और बर्ननीकी बीबी हजूनतोने मन्वी बोली बहावर काल केओको अपने नाम मिलानेकी बात बबी बी नगर वह बात साबिर बबी बोले ही। बबीबा यह कि साब विद्व बनकर भी नगर साबरा हू मैं साब राम-राज्यकी कोई मित्राणी नहीं पला हू।

कुछ लोग नुम्मे कुछ रहे हैं कि पुन्ने ३२ बान्तरक बल और अहिंसा का नाम दिया। क्या उदीना यह बतिया वही देना था गरा है कि साब वेगनें हर जगह कुरो और सोसिजने मार-काट मची हुई है। इस तरफसे कौन कमतक कहा जिहा रहेगा? इसपर मैं यह कहूंगा कि साब बनकनी बेबेबी की रही है, सब यह अहिंसा तो नहीं हुई। तो क्या ३० बर्तन मेरा मूठ और अरेबना राज बसता रहा? ३२ बर्तन करोड़ों अफगिजने को नुम्मे अहिंसा की शालीन थी, क्या वे एका-एक साब मूठे और हिंसा बन गए? मैं तो यह स्पष्ट कर चुका हूँ कि हमारी अहिंसा दुर्बलोकी थी। नगर मचाई तो यह है कि दुर्बलोकि साब अहिंसा की जेब बैठा ही नहीं। अन्तः उसे अहिंसा की बजाय मिथिज प्रतिरोध कहा जाहि। अन्तः मैंने जो अहिंसा मचाई थी वह दुर्बलोकी नहीं थी, बल्कि मिथिज प्रतिरोध दुर्बलोका होता है। उन्हें बसता नहीं मारि थी। इससे असाब मिथिज प्रतिरोध सज्ज और

^१ जगतीज।

समस्त प्रतिरोधकी तैयारी होनी है। नतीजा यह हुआ कि लोगोंके दिलोंमें जो हिंसा बरी थी, वह एकाएक बाहर निकल पड़ी।

निरिक्त प्रतिरोध भी तो हमारा प्रमत्त नहीं हुआ। हमने अपनी आवाही करीब-करीब प्राप्ति कर ली। आज जो हिंसा दिखाई दे रही है, वह भी नायबोंकी हिंसा है। एक मर्दकी हिंसा भी होती है। मान लीजिए, बार-बार आदमी अपनी सलवारोंमें भड़के-भड़के भर जाते हैं। उसमें हिंसा बरकर है, परन्तु वह मर्दोंकी हिंसा है। जब इस-बारह हजार समस्त आदमी एक गांवके निहत्थे लोगोंपर हमला करके रानी-बच्चों-समेत उन्हें काट टाकते हैं तो वह नामर्दोंकी हिंसा हुई। समरीकाका एटम बम एक सफ़ और सारा जापान दूसरी तरफ़। वह नामर्दोंकी ही हिंसा थी। मर्दोंकी सहिंसा तो बेधने-की चीज होती है। उसी सहिंसा-को देखते हुए मैं मरना चाहता हूँ। उसके लिए इसमें कल होना चाहिए। वह एक बड़ा खूबीवार इतिहास है। यदि सबकोभी सहिंसाको लोगोंके जान निवा होता तो हासनं ही जो जान-मानका नाश हुआ वह कभी नहीं होता।

मगर आज तो बहुत बुरी हालत पड़ी है इस बेधनी। हिन्दुस्तान-में मुल्कमें, जहाँ ३२ सालसे मैं सत्य और सहिंसा सिखाता रहा हूँ, कपडा और अनाजका राजन करनेकी बजा आवाक्यकता भी यदि लोगों-का एक-दूसरेपर विश्वास होता। यदि हम क्यालसवारीमें बस जाए और अपना मूल्य तो हिन्दुस्तानमें बुझास हो नहीं सकता। यदि सब लोग सचाईसे रहे और अपने-आप अपनी मदद करने जयें तो हमें सिविल सर्विसकी तरफ़ देखनेकी भी जरूरत न हो। स्वर्गीय माटभूने तो सिविल सर्विसको जफ़्तीका ढांचा कहा था। वे अपनेको जनताके सेवक नहीं मानते और न वे इस मसलके लिए रहे जाते हैं। वे तो जैसे भी हो विदेशी राजको बहा बनाये रखनेके लिए होते हैं। वे केवल बपतरोमें बैठे बपरासियोंके जरिए हुकूमताने जारी करते रहते हैं। यदि आप लोग स्वयं अपनी टांगोंपर खड़े हो जाए और सिविल सर्विस-पर निर्भर रहना छोड़ दें तो फिर हमें क्या न तो किसी चीजका राजनिय चाहिए और न आवाक्यकी सिविल सर्विस चाहिए। मगर राजतन्त्र

मेरा इरादा इस बिद्दीका^१ पचाव भाव देनेका नहीं था, परन्तु मैंने ऐसा महसूस किया कि मुझे उसको कमके लिए नहीं रोकना चाहिए। पचाव-विचारनको लेकर सिखोंके बारेमें जो कुछ हुआ है, वह एक खर्नाक बात है। हिंदू और सिखमें पहले कोई भेद नहीं था, मगर मेकालेने सिखोंका जो इतिहास लिखा उससे यह सारा बहर पैदा हुआ। मुक्ति वह एक बड़ा इतिहास-लेखक था, इसलिए उनकी बातको सबने स्वीकार कर लिया। सिखोंका जो गुरु-ग्रन्थ-साहब है वह सब हिंदू-खासोंके आधारपर बना है। सिख बहादुर तो हैं मगर छोटी सावायने हैं। पचावके जो टुकड़े होनेसे बहा जो भिन्न रहते हैं उनके भी जो टुकड़े हो जाते हैं। बिद्दीने लिखा है कि पूर्वी पचावने जो सिख था गए वे तो ठीक हैं, परन्तु पश्चिमी पचावके सिखोंका क्या होगा? यदि उनके साथ कुछ हुआ तो कांग्रेस कुछ मदद करेगी या नहीं? मैं यही कहूंगा कि जो बहादुर होते हैं उनको किसीकी मददकी जरूरत नहीं होती। उन्हें केवल ईश्वरकी मदद होनी चाहिए। फिर आप ऐसा मानते ही क्यों है कि पश्चिमी पचावने सिखोंके साथ कुछ होनेवाला है। यदि उनके साथ कुछ होगा भी तो क्या हिंदुस्तानमें जो इतने लोग पडे हैं वे सब देखते ही रहेंगे? इसलिए सिख भाइयोंको कोई फिक्र करनेकी जरूरत नहीं है।

जो बिल^२ पेश हो चुका है वह जीप्रतासे कानून बन जायगा। उससे हिंदुस्तानमें जो ओमीनिजन बन जायने, अर्थात् ब्रिटिश कामनवेल्थके जो नये मेम्बर बन गए। बिलमें कुल २० कलमें^३ हैं, बिलको मैंने पढ़ा है। मैं यह नहीं कह सकता कि उसमें कोई फरोब है या असेबोने उसमें ऐसी भाषा प्रयोग की है जिसका उस्ता-सीधा अर्थ निकलता हो। आप किसी असेबका इन्हें फसालेका इरादा नहीं है। मगर बहरतो उस बिलमें है ही। उस बहरको हमने पी लिया और काँधसने भी। असेबोने वेद-सी सामंतक मष्टा हकूमत नसाई और असेबी राजने सियासी^४ टीर-

^१ जिसका भिन्न भागोंकी पक्षियोंमें है। ^२ ब्रिटिश पार्लामेंटमें उप-निम्न भारतीय स्वाधीनता बिल। ^३ बाराह। ^४ राजनीतिक।

पर यह मान लिया कि हिन्दुत्वान एक मुल्क है। उन्होंने उसे एक मुल्क बनानेकी कोशिश की थीर उसने वे सफल नो हुए। मुगल-राजने भी ऐसी कोशिश की थी, मगर उसे इसनी सफलता नही मिली।

इस मुल्कको एक बनाकर फिर उसे मिटा डालना कोई बग़ी बात नही थी। ये यह नही कहना कि उन्होंने इरादतन ऐसा किया है। कमेन्ट मिशनने भी हिन्दुत्वानको एक मुल्क माना था और उसने अपनी शर्तों पे भी थी थी। मगर आज वे सब शर्तों मिट गईं। वो आबाद थीर मजाल अधिकारवाले डोमीनियन पैदा करनेका बहर इस बिषयमें मौजूद है। यह माना कि कागज और मुस्लिम-बीच दोनोंने इस बिषयपर रजामदारी दे दी थी, मगर कोई बुरी चीज स्वीकार करनेसे वह बग़ी बोले ही हो जाती है।

कायदे आजम जो कहते थे वही चीज आज वास्तवमें हो गई। उनकी पूरी-पूरी चीज हुई है, ऐसा कहनेमें मुझे कोई हर्ज नही लगता। नेरी बुद्धिमें तो इस बिषयने तीगोली परीक्षा हो जाती है, बिषयमें अज्ञेय भी आ जाते हैं। डोमीनियन स्टेट्स तो इसने बन जाता है मगर वह तो बार बिलकी बात है, या कुछ गहीने कह सकते हैं। बिजल-परिषद् जो बिजल बनायगी उसपर गवर्नर जनरलको हस्तक्षेप होगा। वह हमने एक अल्प-विराम भी नही बहल सकता। ऐसा ही पाकिस्तानकी बिधान-मजालें होगा। बिधान बनानेके बाद यदि दोनों अपनी आबादीकी ओपना करें तो उनको कोई रोक नही लगना। दोनों करेंगे भी नहीं, ऐसा मैं मानता हूँ। मगर यह तो आगे की बात है जिसे कोई भी अभी निश्चय करने नही कह सकता, परन्तु यह तो माफ है ही कि हिन्दुत्वानने वो दुफ़्ते दिए गए और दोनोंमें मुद्दमुल्कार डोमीनियन बने। इनके आबादाओंमें एक और आगमें भी इसनी परीक्षा करवा दी है। हिन्दुत्वानमें जिनने देखा गजद पडे है वह भी हकूमत हिन्दुत्वान आगवा या नीर नोबकी होगी चाहिए। यह एक सगल गह जाता है जिसे गान्धी जीने कबल नही थी, ऐसा मैं मानता हूँ।

पाकिस्तानबादोंने उनकी इच्छासे मुग़लिक पाकिस्तान नो

मिल गया। जमीन उनको बाहू बोझी मिली हा अगर एक तो नगरवासी-
का मिल गया। कलकत्ता जब पाकिस्तानके लिए बंवाई नहीं जा
रही थी, मैं पाकिस्तानको समझ ही नहीं पाया था। समझमें तो
भाव भी नहीं आता। पाकिस्तानका रण-क्षेत्र तो सब बंवाई देना
जब उसकी विधान-सभा कायदे-कानून बना लेगी। अगर पाकिस्तान-
की अपनी परीक्षा तो यह होगी कि वह अपने महा रहनेवाले
राष्ट्रवासी मुसलमानों, ईसाइयों, सिखों और हिन्दुओं आदि के साथ
कैसा व्यवहार करते हैं। इसके अलावा मुसलमानोंमें भी तो अनेक
फिरके हैं। बिया और सुन्नी तो अलग हैं। और भी कई फिरके हैं,
बिना के साथ देखते हैं, कैसा समूह होता है। हिन्दुओंके साथ वे बंवाई
करेंगे या बोस्तीके साथ चलेंगे? क्या वे ऐसा तो नहीं मान बैठेंगे
कि हम तो सरदार हैं और बाकी सब गुलाम हैं? इन सबका बचाव
उन्हें अपनी विधान-सभा में देना होगा।

हिन्दुस्तानको भी इस विषयके बारेमें यह परीक्षा लेनी होगी
कि क्या भी मुसलमान हैं उनको वे भाई समझेंगे या दुश्मन? जेदे
मजहबमें तो सब धर्म एक ही हैं। बुद्धकी आकाश आसन-आसन
हीरी हैं, परन्तु मूल पैर एक ही होता है। सब मजहबोंमें एक ही
ईश्वर है। यूरोपमें भी पहले इस तरहके मजहबी बंवाई-अलग होते
थे मगर अब वहाँ एक दूसरा भावमय बन रहा है और लोग इन
मजहबी अलगावोंसे इतने दूर आ गए हैं कि वे अब ईश्वरत्वको
कोयले का पहे हैं। अब बुनियात यह बन गई है तो क्या हिन्दुस्तान
ही पीछे क्या रहेगा?

और लोग हिन्दुस्तानको एक नेशन मानते हैं उनके यहाँ तो बहुमत
और अल्प-मतका बचाव ही पैदा नहीं होता। इस दृष्टिसे देखा
जाय तो यह मिल सब पार्टियोंकी अतिशय परीक्षाका साधन है।
यदि हम सब अपने हस्तक्षेत्रमें अपना होते हैं तो हम अपने ईश्वरकी
सेवा कुछ भेंट मान सकते हैं और अगर समझते काय न है तो
यह फासी बन जाती है।

: ६० :

६ जुलाई १९४७

माइयो धीर बहनों,

मेरा खयाल है कि क्या चीमाप्रोतने रेफरेंसम (जबमत लेनेका कार्य) शुरू होनेवाला है। मैं तो चाहता हूँ जानकी धीर उनके मन्त्रिनिस्टरोको सलाह दे चुका हूँ कि उनके लोग किसी भी डिब्बेमें अपने मत न डालें।

(अधपर बैठे हुए एक सम्मेलनमें गांधीजीको याद दिलाई कि जनमत-ग्रहका कार्य आज शुरू हो गया है। इसपर गांधीजीने कहा—) मुझे तो ऐसा खयाल रहा गया था कि कम-से-कम ७० प्रतिशत शुरू होनेवाला है। कुछ भी हो, मैं तो यह कहने आ रहा हूँ कि वे तो समझ रखनेवाले हैं। अगर मुझे यह बेखया है कि वह धमन मुजहिदीना है या बहादुरोका। हम तरफ़ तो मैंने मजूर कर लिया कि वह मुजहिदीना धमन था।

मैंने तो उनसे यह दिला कि वे अपना मत डिब्बेमें न डालें। बीगने भी मैंने यही बात कही है। अगर वे डालें या न डालें। जुलाई विधायकपारोने तो मैं यही कहूँगा कि यह आपसकी सहाई क्यों?

कम जो दिल पैम किया गया है उसके मुताबिक हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हो जानगे—एक पाकिस्तान धीर दूसरा हिन्दुस्तान। प्रोगेजीवो के टुकड़े करनेमें क्या असर था? सारा हिन्दुस्तान एक था अगर उसके भागको टुकड़े बना दिया गए। हम तीस सालसे जो सहाई बना रहे थे वह सारे हिन्दुस्तानकी आमादीने लिए थी। उसका गतीबा यह हुआ कि बेमके दो टुकड़े हो गए। हमारा दिल टूट गया है, इसलिए हमारी जमीनके भी दो टुकड़े हो गए हैं। ३० बरसतक हमने जोर मचाया कि हम अपने बेगम्ना कम्मा खे लें। मैं अपने दिलमें पूछता हूँ कि क्या कभीलिए तु कौमियर कर रहा था? मैं १७ बरसका था, तबमें मैं

कोशिश' करता रहा हू। मगर क्या सारी सजाई इसीलिए थी कि आखिरमें बेघरके दो टुकड़े हो जाय ? तीस बरसकी सजाईका मरीजा क्या यह होना चाहिए या कि एक कैंपमें हिंदू, एकमें मुस्लिम हो जाय और सिख किसीमें भी शामिल हो जाय ?

बेघरके टुकड़े करनेके साथ-साथ हमारे जल्दकरके भी दो टुकड़े हो रहे हैं। यह क्या हमारे आपसमें सबनेके लिए ? सारी कांग्रेसका इतिहास फौजके खिलाफ आंदोलनसे भरा हुआ है। सबसे कांग्रेस बनी—धीरे उस समय बाबासाई जीरोधी, जो राष्ट्रके 'बाबा' कहे जाते थे, झुम, कीरोवसाह मेहता और सिलक जी नीलूब ने—उस जगहसे ही उसनी माय थी कि हिन्दुस्तानमें शाहीयका जो इतना है उसपर सबसे कम खर्च किया जाता है। दूसरी ओर फौजपर इतना खर्चा खर्च क्यों ?

उस फौजकी जो पैदाइश इसलिए हुई थी कि ४० करोड़ हिन्दुस्तानियोंको बसा दे। दूसरे, इस बेघरमें जैन ने और बोधी-सी जगहपर पोर्चुगीज भी थे। इनमें एक सत्ताहीन साहब थे, उन्होंने सोचा, जैन सेटिमेन्ट और पोर्चुगीज सेटिमेन्ट कायम हो रहे हैं। उनके सतरेको बचानेके लिए और अपने-आपको कायम रखनेके लिए फौज तैयार की। उस तरह अफगानिस्तानमें द्राइव (कबीले) है। यह भी उर या कि कम हमका न करे। इन सब कारणांसि यहाँ इतनी बड़ी फौज तैयार की गई थी।

इतनी बड़ी फौजके रखते हुए भी हम अंग्रेजोंके साथ निबट लिए। मगर हमारी अहिंसा महात्माजीकी अहिंसा नहीं थी, वह बुबादिलोकी अहिंसा थी। मैंने पैसिव रेजिस्टेन्स (निष्क्रिय प्रतिरोध) का रास्ता बताया था। उसको अस्तिवार करके हमने अंग्रेजोंके साथ हथियारोंकी तैयारी नहीं की। फिर भी अग्नीधरार्मी (फौज) रह ही जाती है। यह क्यों ? यह आपके लिए सोचनेकी बात है। जेरे लिए कुछ और धर्मकी बात है। मैं सोचता हू, हमारी आँखोंमें बुझावणी क्यों नहीं है ? हम आजाद हो गए हैं। हमारे बेघरके टुकड़े हो गए हैं। मगर यह टुकड़े दोस्त बननेके लिए किए गए हैं या दुश्मन बननेके लिए ?

हमारे धावके गरीबोंका मतलब तो लम्कर बटाना हो रहा है। दोनों ही लम्कर बटायेंगे। अगर एक धीर बटेगा तो दूसरी धीर भी बटेगा। पाकिस्तानवाले कहेंगे कि हम हिन्दुस्तानवालोंके बचनेके लिए लम्कर बटाते हैं, क्योंकि हम करोड़ों तो नहीं हैं। हिन्दुस्तानवाले भी इसी तरहकी बातें कहेंगे। आखिर परिणाम बढाई धावा है।

हम अपना पैसा लातीमने खर्च करेंगे, या दियाखलाग्ने, बाख्ब-में करोड़ी रुपये लगा देंगे ? फिर दोषोंमें धीर फिर बचकोंमें खर्च करेंगे ? धीर फिर अपने बीजबानोंको लातीम भी नहीं देंगे ?

पाकिस्तानने तो समझको नहीं माना। कहते हैं कि कुरानधरीय-में ऐसा नहीं लिखा। अगर मैं बूझना चाहता हू कि धाव क्या करनेवाले हैं ? क्या धाव भी नहीं करेंगे ?

अगर हमें डीपनिवेशिक स्टेच (डीपनिवेशिक स्वरूप) मिला है तो भी हमारे दो टुकड़े होते हैं। यदि हम आबाद होते हैं तो भी दो ही रहते हैं। अगर क्या हम बचनेके लिए बचग होते हैं ? अमेरोंने जो कुछ किया है उसमें मुझे बचने लिए सत्तोय या आनका कोई कारण नाबून नहीं होता। मुझे बचिय बचत ही मजबून बिबलाई पडता है। उसे बचाने हुए मैं आपने बगता हू। अगर हिन्दुस्तान धीर पाकिस्तान लडते-लडते बार-बार एक दूसरेको चिक्क-से तो इसमें बीज-सा रह है ? सब बगह यदि टपारी-ही-टपारी हो तो इसे क्या मैं आभावी नहू ? मैं नहीं आनता। बगबान् हमें अमेरेंसे उवालेये से आ।

‘उमलो या ज्योतिर्गमन।’

१ ६१ :

७ जुलाई १९४७

बाइयो धीर बहनी,

बच जानकी मैंने धाव बोधोंको बचाया या कि आनेवासी आभावी हमारे बिसोंमें खुशी बने नहीं बीबा कर रही है। धाव मैं धावको

यह मताना चाहता हूँ कि अगर चाहें तो हम बुराई से सजाई किन तरह बना सकते हैं। जो हुमा नो हुमा। उसपर जमान दीठाने-ने या किसीको बुरा-भला कहनेसे कुछ बननेवाला नहीं। कानून-की भाषाने आबादीके धानेमें अभी बीढे दिन बाकी हैं। असलमें तो अब सब पक्षोंने बात मकूर कर ली है तो वे उसपरसे वापस नहीं जा सकते। केवल मजबान ही हैं जो इन्सानकी तब की हुई बातको समझ सकता है।

मनसे आसान रास्ता मुसीबतसे निकलनेका सब यह है कि काबेस और मुस्लिम बीच आपसमें समझौता कर लें—बिना बाधमरायके बखल जा सकेंगे। ऐसा करनेमें जीवकी पहला कदम उठाना होगा। मेरा यह मतलब हरगिज नहीं है कि पाकिस्तानको मिटा दिया जाय। उसे तो एक पक्की बात और बहुसंके बाहर समझना चाहिए। लेकिन अगर काबेस और जीवके आबा-से-आबा इस मुमायदे एक मिट्टीकी सूपडीमें बैठें और निश्चय करें कि हम सहासे उठेंगे नहीं, जबतक कि हम समझौता न कर लें, तो मैं सबसे कहना हूँ कि यह फैसला उस बिल या कानूनसे जो आब ब्रिटेनकी पार्लियमेंटके सामने पेज है और जिससे दो बराबरकी रियासतें, या दो डोमीनियन बन रहे हैं, हवार बर्ने बेहतर होगा।

अगर हिंदू और मुसलमान जो मेरे पास आते हैं या मुझे लिखते हैं, मुझे बोझ देनेकी कोशिश न कर रहे हों तो मुझे तो साफ यही मकर आता है कि बटवारेसे कोई भी क्षम नहीं। उसे जाचार होकर स्वीकार किया जा रहा है।

पर यह 'अगर'का शब्द जो मैंने इस्तेमाल किया है जो जरूर असमभव-सा लगता है। मुझे कहा जा सकता है कि अब बीजने ब्रिटेन-से अपनी हकूमत कायम करना भी है तो वह फिर अपने 'इंसानोंके' पास क्यों आए और किस तरह उनके मान मर्द-मर्द और दोस्तोंके सजा समझौता करे?

एक दूसरा तरीका भी है। वह भी साबब लगना ही मुश्किल हो। जीवका बटवारा हो रहा है—उस जीवका जो आबतक एक रही,

विनका मकमल भी एक ही रहा—चाहे वह कुछ भी था। हम बटवारे-
में तो हर एक देश-प्रेमीके दिलमें उर ही पैदा होगा। वे दो मैलाएँ
फिरबिए बगार्ड का रही हैं? हमसिए नहीं कि अपने मुल्कके दुश्मन-
का नाममा करें बल्कि हम मतलबमें कि वे एक दूसरेसे सड़ें और
दुनियाकी बिसाइ कि हम सोच सिवा आपसमें लड़ने और एक-दूसरेको
मार-भिदानेके और किसी कामके धामक ही नहीं।

मैंने यह बयानक बिना आपके काममें बैठा है बैठा जान-बूझकर
मौना है ताकि आप उसे पहचाने और समझे बचें। बचनेका तरीका
तो सुझानेवाला है ही, कम-से-कम मेरी जमरोने क्या हिंदू जनता और
वे सब लोग, जिन्होंने आबादीकी सगर्भ हिंसा किया, इस उरावनी
गलबारीको समझकर धाव कर्माटीपर पूरे उतरें? क्या वे धाव
कहनेको तैयार होंगे कि अब उन्हें पीचकी जरूरत ही नहीं या कम्-
से-कम यह प्रतिज्ञा वे करें कि उनका उपयोग अपने मुसलमान भाइयों-
के बिसास करनी नहीं करेंगे, चाहे वे मरने रहते हो या पाकिस्तानमें ?
मेरी इस भावके जल्द एक ही माली भिन्न काममें यह यह कि
ऐसा करनेसे हिंदू जनता और उनके भावी ३० सालकी कमबोरीकी
एक नुबर गहासमित बना सकेंगे। जो सफा है कि मेरा जो तरीका
मसलेको हल करनेका है उसे आप मूर्खता समझें। जी नहीं हो,
इसना तो मैं जानूँ कि इसपर इंसानकी मूर्खताको बजापन या बूझि-
मानी बना सकता है। और उसके हावसि इतिहासमें ऐसा हुआ भी है। जो
सोच फौजके सतरलाक बटवारेपर तुझे हुए है ताकि आपस-आपसमें
सड़ें, इससे बचनेके लिए जो मेरी सगर्भ हुई कोशिश करनी चाहिए।

: ६२ :

= सुबार्ड १६४७

भाइयों और बहनो,

जै धाव आपने जना भावता है, क्योंकि मैं १० मिनट देरसे छाया।

आप मेरे पास इतना काम था और इतने लोग मिलने आए कि शांति नहीं मिली। आपका मैं जो कुछ बोधता हूँ सोच-विचारकर बोधता हूँ। पहले कुछ नोट लिख लेता हूँ और फिर उसे बोधता हूँ। मैं आप लिखता ही रहा और उसके बाद हाथ-मुह बोलने लगा, क्योंकि हाथ-मुह तो बोल ही चाहिए न, और इसी बीच जबकि मैं मुझे कहने भाई कि समय हो गया। किन्तु मैंने सुना नहीं। इसीलिए आप कुछ बेर हो गई।

आप मैं कुछ कठिन बात करना चाहता हूँ। एक माझी अंग्रेजीने पत्र लिखा है। वह लिखते हैं—“मैं राष्ट्रभाषा नहीं जानता। इसलिए अंग्रेजीने बात लिखता हूँ।” उन्होंने कहा है कि मैं समझ जानता हूँ—अगर मैं समझने कुछ लिखूँ तो आपको पढ़नेमें कठिनाई होगी—आप समझ कुछ जानते हैं तो भी कठिनाई होगी। आप जानते ही हैं कि मैं चाहता हूँ कि जो भाई मुझे भिदड़ी लिखे वे अपनी भाषा में लिखें। अच्छा तो यह है कि वे उत्तरी भारतीय भाषा—हिंदी और जबकि बीचकी भाषा—उर्दूभाषा हिंदुस्तानी में लिखें। उस बातके लिखने-बाधने अपने बातने अंग्रेजी लेखक बर्नार्ड शाफी कुछ पश्चिमोकी उद्धृत किया है। बर्नार्ड या अंग्रेजीको उन्हा समझते हैं। अंग्रेज समझते हैं कि उनके-जैसा बोलचाल बीन है। वे बहुत अच्छा जवाब करते हैं। कहते हैं कि अंग्रेज कुछ पसंदी नहीं करते। वे बर्नार्ड के लिए ही सब कुछ करते हैं। वे कहते हैं कि अंग्रेज बर्नार्ड के लिए बर्नार्ड करता है। जूट करता है और भी वह बर्नार्ड नामपर, क्योंकि किसीके पास अधिक पैसा क्यों रहे। हमें गुलाब बनाता है तो भी बर्नार्ड नामपर—अच्छा बनाने-के लिए। गुलाब बन करता है तो वह भी बर्नार्ड के लिए अर्थात् जगमग-के लिए। वे सब काम बर्नार्ड नामपर करते हैं।

सब लिखनेवाला बर्नार्ड शाफी जगमग करता है और इसीलिए मेरा भी जवाब करता है और कहता है कि अंग्रेज भाषावीके लिए देखको दो हिस्सेमें बांट रहा है। दो अंग्रेज किन बर्नार्ड नामपर हमें आजाब बना रहा है? लेकिन अंग्रेजीको मैं थितना जानता हूँ उतना कोई नहीं जानता, सब मैं कहूँगा कि अगर कोई इन्सान कुछ कहता है सब उसपर क्यों न विश्वास किया जाय, जबतक कि वह ठन न साबित हो?

धर्मेण भारत इसलिए छोड़ रहे हैं, क्योंकि वे समझते हैं कि अब पैनीका नाम नहीं होगा। सिवाली नामसेमें भी वे हमें गुलाम बनाकर नहीं रख सकते, यह भी वे जान गए हैं।

पश्ची महाईमें एक जगह मार्शल-ना लगाया जा। प्रकरी सडाई-के किनीमें भी बेवस साहने पारे हिंदुस्तानमें मार्शल-ना लगा दिया। लेकिन अब सब प्रवेष्टन जान गए हैं कि अब हिंदुस्तानको गुलाम नहीं रख सकते। हमने अब प्रहिंसात्मक प्राचीनता किया अब वे जान गए कि अब ज्वाला पैसा नहीं निकाला जा सकता। अब देशको कच्चेने रखने-के लिए प्रवेष्टनो ज्वाला खर्च ही करना पड़ेगा। इसीलिए वे जाना चाहते हैं।

देशको बचानेके अब भी दो तरीके हैं, जैसा मैंने कम बताया। अब भी प्रवेष्टन हावने हैं—अभी लोका बड़ा लच्छर पड़ा है। अबतक यह लच्छर नहीं पला बावला लच्छर नहीं कह सकते कि वे चले गए। प्रवेष्टन चाहें तो अब भी बुद्धि कर सकते हैं।

प्रवेष्टन देशको टुकड़ा कर जाना चाहते हैं। प्रवेष्टन हिंदुस्तानमें पवि निबन रखकर बाकायदा सबकी डीक कर जाय तो हमका मतलब यह नहीं कि बूढ़ाबाद करें, हम बाबाद होयें—बाबाकोर करें, हम बाबाद होयें—अब ऐसा अब कोई आभाव हो जायगा अब हिंदुस्तानकी प्राजाप्री नष्टा नहीं। मैं यह स्वीकार करता हू कि हालकी कुछ बदलावोंसे जोनी-को प्रवेष्टन इलाकोपर सवेह हो गया है किन्तु मैं इसे लच्छर बदलाप्री अभी यह भजना अबतक बदलाप्री सावित न हो जाय।

इतना तो ठीक है कि प्रवेष्टन रिवाजतकि वारेमें उचित काम करने-में हिंमनमें काम नहीं वे रहे हैं। लेकिन यदि प्रवेष्टन देशमें ऐनी स्थिति उपन करने छोड़ जाना है बिजने देशमें कई बाव एन बूझरेसे प्रलप हो जाय भी। वे आपनमें पड़े गे तो इसमें बहकर प्रवेष्टनो बावल-ग भी नोई नज्वा नहीं पड़ेगा।

१ ६३ :

६ जुलाई १९४७

माइयो और बहुतो,

आजका मन्त्र तो आपने सुना ही है। उसमें प्रेमकी सगई नबसे बड़ी बात कही गई है। कृष्ण तो बाबशाह बा। जो कृष्ण करना चाहता बा कर लेता बा। उन्होंने सबका पूजन किया ठगी वे बाबानुबाब कह-
साए। प्रेमके बन्नेमे यदि हम अहिंसा सम्बन्धका प्रयोग करे तो नही बात है। प्रेम कैसे पैदा कर सकते हैं यह दूसरी बात है।

आज आप लोग पूछेंगे कि मैं बाइसराम साहबके पास क्यों गया। आज्ञाही तो अभी मिथी नहीं है। अभी तो बुझनकी बात चलती है। जिस दिन बाहे वह द्राम बर कर लेता है, छूट लेता है और कुरा भोक लेता है। आज्ञाही सूर्य-वैसी है, लेकिन वह बा रही है, ऐसा मुझे नहीं लगता। बाइसराम तो मुझे मित्र कहते हैं। मैं भला उनका मित्र कैसे हो सकता हूँ—मैं तो भगीका मित्र हूँ, भरीबोका मित्र हूँ, लेकिन उनका कैसे। वे तो बाबशाह हैं, लेकिन वे मुझे मित्र मानते हैं।

आज आपको कलके जलका दूसरा हिस्सा सुनाऊंगा। वह लिखता है कि सन् १९४० में मैंने ऐसा कहा बा—उस समय मैंने लिखा बा कि मैं सब जगह अहिंसाकी बू पाता हूँ। वह जगहोंका जमाना बा। उस समय अहिंसाकी बू नहीं थी। वह पूछता है कि यदि उस समय हम-
में जलकी बबू जाती थी तो आज क्या निकलती है। उनको ऐसा पूछनेका हक है। आज हिन्दुस्तानमें निबमबद्ध काम हो रहा है, ऐसा नहीं है। जिसने आता है तो कोई रैन रोकता है, कोई आग जगाता है, कोई छूटा है और कोई कुरा भोक लेता है। इसे सम्भवस्था कहते हैं। लोग पैसे बा जाते हैं। लोग बेवर्ग होकर अनुचित रास्तेसे पैसा कमाते हैं। बेनेबाजे बुपबाप वे भी लेते हैं। कौन किसको कहे। लोगोंने जिसने

१ 'सबसे ऊंची प्रेम सगई' ।

पैना पैदा करनेकी वृत्त है, बाहे जिन्नी हमसे हो। हमने भाववत्त भूत, हिमा, गिरस्वार और अविस्वास चोरोंसे पैना है।

इन सबके ऊपर क्या जाता है, ३ भूतकी बात। भवने—हिन्दु सिद्ध व मुसलमानने—हिन्दुस्तानका दुकाना करना जान लिया है। इसने बाब रोब अस्बाबमें क्या पाते हैं कि कई स्थानोंमें चोरी हो गई, लूट हो गई, धाव लगा भी गई, हत्या कर भी गई, खबर बोक दिया—माफि। सब बिजनेवाला मुझे सावा देता है कि यही आपकी ग्रेम-मगाई है। यह पूछता है कि आप सदा सत्यके पुजारी रहे, लेकिन अब यह क्या है? सब अगह भूट-ही-भूट है। नील नीला है कौन ऊचा, यही सगाव है। सक्षिप्युवा कहा गई? यह सब कम नहीं है सब कही तो नील इसके लिए बिम्बेदार है? आप, माहमराय या और कोई? उनकी ऐसा पूछनेका हक है। ३० वर्षों काहेमियोंने जो त्याग किया, जठि-बादया सही, क्या भाव उत्कल गतीया देशका दुकाना करना है? आपका अनुसूक्त स्वराज्य कहा गया? इसका वे अबाव जानते हैं। भाते यह कहता है कि अगर इस अहमरेने अनुसूत पैदा करना है तो यह आप ही कर सकते हैं।

उमके अबावमें मैं तो कहूंगा कि यह बात सच्ची है कि देशमें सबकुछ आ रही है। मैं कहूंगा कि मैं इसके लिए बिम्बेदार हू। मैं ३० वर्षोंसे कहता आ रहा हू कि सत्य और अहिंसासे काम लो। यदि देश उसके अनुसार चलता तो भाव ऐसा पतीया नहीं होता। पेडसे ही उसका फल जाना जाता है।

यदि अश्वेव कहा जाता है तो क्या उसके बाव नियम व रहे? इसके लिए मुझे जनेसे कहना पड़ता है कि मैं इसके लिए बिम्बेदार हू। जो लोग धार्मिक कह रहे वे कि वे सत्याग्रह कर रहे वे उनके भी विर-में या कि अब इधियार मिलेया सब इधियारसे काम लेंगे। हमने पहले सत्याग्रहसे काम लिया, लेकिन अब नहीं दिखाई देता। जिस तरहके स्वराज्यकी कल्पना की जाती थी वह बहुत दूर है। हम आपसमें लड़ रहे हैं। मैं ऐसा देखना नहीं चाहता। मुस्लाम, राजपूत, ब्रह्मपूत-कर, विहार और बंगालमें क्या हुआ? मैं दिखाही हू। मैं इनके लिए पापू नहीं बहाना चाहता और न करना ही चाहता हू।

आज हम जो पागल बन गए हैं उससे न हिंसा रद्द सकता है, न भुलसमान धीर न भिन्न। उनकारके जरिए पैसा कमा सकते हैं, लेकिन बर्न नहीं।

जब मैं ३० वर्षके अनुभवके बाद कुछ नहीं बता सकता तो उससे काम नहीं मिलेगा। तब हमें भय क्या करना चाहिए। हम सत्ताग्रह करनेके लिए तैयार तो हैं, लेकिन अहिंसाको ठीक रूपमें अपनानेमें हमारी ही नहीं ससारकी सहाई है। आज इन्सानियत-का तकाबा है कि अमेक हम दोनोंमे दोस्ती करा दे—दो सफ़रोंमे दोस्ती करा दे। मैं याचा करता हू कि इसके बिना अमेकके जानेके लिए अपनी जितना दिल चाही है वह इसके लिए काफी है।

धीर रियासतका मसला पका है। हम कहें कि टुकड़ा तो हो गया, भय क्या होगा। १५ अगस्त आखिरी दिन है। वह काफी समय है और इसके बीचमें सब कुछ हो सकता है। यदि १५ अगस्ततक तय नहीं होगा अर्थात् दोनों बलोंमे समझौता नहीं होगा तो मुझे डर है कि बाबने भी वह तय नहीं होगा। अमेककी ताकत हमसे ज्यादा है। उसके पास बहुत बड़ी सैनिक शक्ति है। जो कहते हैं कि उनकी सैनिक शक्ति खत्म हो गई, वे गमतीपर हैं।

१ ६४ १

१० जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझसे हमें काई तरहके प्रश्न पूछे जाते हैं। आज भी कुछ ऐसे ही प्रश्न पूछे गए हैं। एक प्रश्न तो यह है कि आज पाकिस्तान तो बन गया, तब हम लोग यूनिनमें पड़े हैं उनका बर्न क्या हो जाता है? मैं कई बार इसपर बोल चुका हू। अगर वह इतना पेचीदा मामला है कि किसी-न-किसी तरहसे सामने या ही जाता है। या तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों एक दूसरेके दुश्मन बन जाते हैं या

ऐसा क्यों कि दोनों दुश्मन बनकर बैठ गए हैं। मुस्लिम भी तो कहती ही है कि हिंदू धीरे-धीरे भी सब कुछ हमारे दुश्मन हैं। तो क्या हिंदू भी उनके दुश्मन बन जायें ? एक तरीका तो यह है कि यदि कोई एक-दूसरेको दुश्मन जानना है तो दूसरा भी उसको अपना दुश्मन बनने। अगर हम-मे-कम भेग यह गमना नहीं है। जब सारा जीवन मैं दूसरे राज्यमें बसता रहा हूँ तो सब मैं जैसे उसे छोड़ सकता हूँ। उहा भेग सम्पन्न होनेवाला है। मेरी इमानियत मुझे यही सिखाती है कि सारी दुनिया मेरी दोस्त है। यदि वे लोग न जाने तो वे ही डोलेवाले हैं, मैं खोलेवाला नहीं। एक-दूसरेका गया जटनेमें विनीता नमा होनेवाला नहीं है। यह तो जानवरों के मान है।

बोम्बेका नरसब किनीको किनी-न-किनी गछने गवी करना नहीं है। दोस्त कनी एक-दूसरेकी सुणामद नहीं करते। यदि कुछ नब्ब कहने है तो यह भी कहने को। यह पूछा गया है कि जब आज दुश्मान नहीं करने तो १९४४ में १८ मिलियन सेब बूनें कावे भारतमें नर जाकर क्या करने रहे ? मैं कहा अपना जर्म नमकर गया वा सुणामद करने नहीं। जो चीज मैं उन्हें देने गया था, यह यदि मैं लेने लो आज इसी सुरेजी न हूँ इसी धीरे को वेदतिहा गहन फैल गया है, यह नहीं होता। उनके अलावा हम देशमें कोई नीमगी नाम नही गहरी धीरे पाकिस्तान बननेके बाद भी हिन्दुत्व एक बना गमना। यह मेरी जिज्ञा माहदमे एक दोस्ताना बातचीत थी। दुश्मानकी आज बहुत बुरे बानीमें लिया जाता है। जब जर्मनी और इंग्लैंड एक-दूसरे के विरोधी थे सब बेस्वर्गनेने, जो कि उस समय इंग्लैंडके प्रधान मंत्री व विद्वानकी मनोप देनेका तरीका समझा दिया। यह मेरी गम नहीं है अगर अनेक लोग ऐसा करने हैं कि यदि बेस्वर्गनेने हिंदुत्वको मनोप देनेका तरीका समझाया न जा सके तो इसी ही बात बनती। हममें तो दुश्मान था नहीं है। अगर मैं जब किसीको अपना दुश्मन जानना ही नहीं है मैं उस बानीमें किसीकी सुणामद करनेवाला नहीं हूँ।

मगर मेरे सामने सवाल यह है कि यूनियनमें रहनेवाले हम लोग क्या करें ? पाकिस्तानमें जो मदिर और गुल्लारे मौजूद हैं, क्या उन्हें वे नहाने उठा देंगे या नष्ट कर देंगे ? मेरा दिल तो ऐसा नहीं कहता। क्या वे हिंदुओंको मदिरोंमें जानेमें रोक देंगे ? पाकिस्तानमें वे मानी हैं ऐसा मैं कबूल नहीं करता। शायद ही तो मुस्लिम लीगमें दीसताना साहबने कहा है कि 'पाकिस्तानमें हिंदू और सिख लोग अपने-अपने मजहबके मुताबिक नहीं बल सकेंगे, यह बात तो इस्लामके बुधमन ही कह सकते हैं।' यदि वास्तवमें पाकिस्तानमें हिंदू और सिखोंको नहीं इन्साफ मिलेगा जो मुसलमानोंको मिलने-जगता है, तो मुझे कोई जक नहीं कि इस्लामकी बेमोक्की एक बहुत बुजद चीज है। यदि वे सबको एक ही आदमीकी पीसाव मतलब हैं, तब फिर कैसे हो सकता है कि दूसरे मजहबके लोगोंकी ज्वाकी उबावत करनेमें रोक दिया जाय ? दीसताना साहब ठीक करते हैं, ऐसा मुझे लगता है। मैं तो पचाव और नीमाप्राउके हिंदुओं और सिखोंसे कहूंगा कि वे डरके मारे जागते न फिरे। सिखोंका मुलहरी गुल्लारा तो अमुतमरने है, मगर ननकाना साहब कहा जायगा, बिल्के लिए सिखोंने इतना त्याग किया था ? वह तो पाकिस्तानमें ही रहेगा। हैबराबादमें फितने ही हिंदुओंके मदिर है। हैबराबाद पाकिस्तानमें जायगा यह तो मैं नहीं कह सकता। कहा तो १५ फरवरी हिंदू है ? यदि हिंदुओंको भी पाकिस्तानमें ले जायेंगे तो फिर वह पाकिस्तानमें कहाँ रहा। मुसलमानोंकी सबसे आजा बर्बकी जुमा-मस्जिद भी कहा यूनियनमें पड़ी है। क्या हम मुसलमानोंको इसमें नमाज पढ़नेसे मना कर देंगे ? प्रायराने उनका ताबिसहल है और पसीगहने मुस्लिम यूनियनसिटी है। क्या कहा मुस्लिम युवक पढ़ना छोड़ देंगे ? वह तो ईश्वरकी मेहरबानी है कि पाकिस्तान बननेके बाद हमारा दुकाना हुआ ही नहीं है। क्या वे नहासे जुमा मस्जिद उठा ले जायेंगे या उसके लिए लड़ाई करेंगे ? क्या एक और लड़ाई बाकी है ? कौन-सी जगह ऐसी है जहाँ मस्जिद और मदिर न हो ? मैं कहा जाता हूँ नहीं मैं सब मुझे मिलते हैं। तब कभी पचाव, सरहद और सिम-

आपकी जी नहीं होती। अभी ३५ दिन बाकी पड़े हैं। हम चाहे तो इन ३५ दिनों में बहुत कुछ हो सकता है। मैं केवल आर्यवा स्थापना विमर्श ही अपनी आजादी मानने वाला नहीं हूँ।

: ६५ :

११ जुलाई १९४७

माझी और बहनो,

हमने ईश्वरका नाम लेना तो छोड़ दिया,^१ परन्तु काम, कोश और मोह खाति जो हमारे ७ कुलब बन्धु हैं, उनको हम म्रिय समझकर अपने पास रखते हैं।

नोआखासीसे मेरे एक साथी लिखते हैं कि “जब तुम नोआखासी-में आए उस बड़ी लकी-लकी बात करते में और ‘कल्या वा मरणा’का प्रश्न किया था। यदि अब १५ अगस्तसे पहले यहाँ नहीं आओगे तो तुम्हें पछताना होगा।” यह मैं कबूल करता हूँ कि अगर मैं यहाँ १५ अगस्तसे पहले न पहुँचा तो मुझे पछताना ही होगा। मैं उन लोगों-के बीचमें रहूँगा और उनके साथ साक्षा-पीछा था। मैं यहाँ बिस्तीमें क्यों पड़ा हूँ? मुझे विहार या नोआखासीमें बसे जाना चाहिए। यहाँ तो मैं बेहास हूँ। यदि मुझसे कोई पूछे कि मैंने यहाँ क्या किया तो मैं अभी कह सकता हूँ कि मैंने केवल हवागत की है, जो मैं खाती कर लेता हूँ। नोआखासीमें मैं बेहास नहीं रहूँगा था। रोज पैसल बसता था, नए-नए वेशासमें जाता और नए-नए आरमियों—हिन्दू और मुसलमान-दोनोंसे मिलता था। नोआखासीमें मैं कुछ काम करता था और विहार-में भी। मेरे भीतर आज अगार बल रहा है। अगर मैं नोआखासी बसा आख्या तो यह नहीं बसेगा। अब आप लोग आर्यवा करे कि हे नयबान, दू गाँवोंकी ज़मीनसे नोआखासी लेब ले।

^१ आजका अजब था - ‘नाम अपन क्यों छोड़ दिया?’

मैंने कहा था प्रणिता की भी उम्मेदों की नहीं है। बगानों में बिहारा जाता गया क्योंकि महा नोवाग्रासीय भिन्न नोवाग्रासी की भी आत्माओं में वे बड़ा बिहाराते तो नोवाग्रासी मारे गए। उनमें नोवाग्रासी की भी बिहारा मारे लिए एक-दूसरे बन गए हैं। यहाँ जवाहर-मासकीने मुझे बुझा दिया और कृपानासीकी भी छान गया। परन्तु बड़ा धाकर मैंने निभा दिया? बहुतने नौव मुझने देगा भी बहुत है कि तुम नोवाग्रासीमें ही क्या करोगे? जब जब और हिबुस्तालने सब हो जायगी सब नोवाग्रासीने अपने-आप सब हो जायगी। अगर मैंने तो इनसे उमड़ा ही नीला है। मेरे पिता यद्यपि बिहारा नहीं थे, पर वह मुझे बहुत कष्टा चाहिए, कि इतना तो मुझे बचपनमें वह दिया गए थे कि बहुत नहीं बोलना और इन सगने जने तो रामका नाम ले लेना। 'यवा पिडे तथा ब्रह्माडे' यवादे जो पिडेने है वही ब्रह्माडेने है, वह सब सब मुझे बचपन-हीसे मिल गया था। मेरी बचपन और ब्रह्मासी आत्माने भी मुझे वही सिखाया था कि तु जो भी करे अपनी आत्माकी प्रेरणामें कर, तुम्हें बुनियादी क्या पड़ी। बुनियादी वेगनेवासा तो ईश्वर है। अब नोवाग्रासीमें मैंने जो बचन दिया उसे मुझे प्राण लेकर भी नहीं छोड़ना चाहिए।

॥ ६६ ॥

१२ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनों,

मुझे एक बातें बिलकुल है कि 'भाव हमारे बड़ा जो हो रहा है वह बहुत बुरा है।' बुरा क्यों है, वह भी उन्होंने बताया है। वे कहते हैं कि 'जो लोग सत्याग्रह आंदोलनमें जेल गए वे समझते हैं कि उन्होंने बहुत बारी काम कर लिया, बिलकुल बचपनमें उनको प्रभाव नहीं था किसी आत्म-का गवर्नर या मिलिटरी या उनका पार्लियमेंटरी सेनेटरी हो बनाना ही

चाहिए। उनके पास मोटरकार होनी चाहिए क्योंकि वे समझते हैं कि यदि बेस बने गए तो हिंदुस्तानका नाबो-करोबो कम्पेका काम उन्होंने कर दिया। मैं भी वो बफा बेस हो आया हूँ और एक दफा तो बरबसा बेसने आपके साथ भी था। परंतु मैं तो भिखारी ही रहा और किसीने मुझको पूछा तक नहीं।'

मैं कहता हूँ, यदि बेसमें कोई बत्ता गया तो क्या वह हिंदुस्तान-पर सेहुरबानी करने गया था? यदि नहीं सिचसिखा रहा तो मुझे डर लगता है कि काप्रेसका नाम मिट जायगा। काप्रेसमें वो लोग हैं उनको ऐसी बात बनावने भी नहीं सोचनी चाहिए। इस तरहसे तो कोई काप्रेसी यह कहेगा कि 'बूकि यह बेस हो आया है इसलिये उसने लकड़ी की छापी हिंदुस्तानकी सबसे अच्छी लकड़ीके साथ होनी चाहिए या उसकी लकड़ीकी छापी हिंदुस्तानके सबसे अच्छे नुबकके साथ हो। जवाहरलाल-की इमारत कबे मची या वाइस-प्रेसिडेंट नहीं बने कि वे बेस ही आए हैं। यदि उनको ये पैसे न मिले तो क्या वह नुबो भरनेवाले हैं? राजेंद्र बाबू तो पटना हाईकोर्टके चीफ जस्टिस होनेवाले थे। लेकिन उन्होंने स्नेच्चासे उसे बात बारकर फकीरकी तरह रहना पसंद किया। राजाजी भी बेस जानेके कारण मिनिस्टर नहीं बने। मैं यह नहीं कहता कि वे सब फरिश्ते हैं। वे भी हमारी तरह इसलाम हैं और इसलाम तो नुबोकी गठरी होते हैं, फिर, सरकारी बफतरमें फितने आबमी समा सकते हैं? यह तो एक निकम्मी बात है बिसे बीज ही नून जाना चाहिए। हम इस बातका खयाल भी न करे कि हमें बेस जानेके बबलेमें कुछ मिले। जो आबमी अपना कर्म पालन करता है, कर्म ही उसका बचता है।

मुझसे पूछा गया है कि कम्पे आबग बिना पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बन गए और यहाका गवर्नर-जनरल बाइसराय बनकर बैठ गया, यह कहाका हिसाब है? हिंदुस्तानकी आबादीकी सबाई तो काप्रेसने लबी, मुस्लिम बीगने उसने कोई हिस्सा नहीं लिया या ऐसा कहो कि काप्रेसने जब भी सिविल नाफरमानी या सत्याग्रह किया, बीगने उसने बिल्कुल सहयोग नहीं किया, इसपर भी यदि काप्रेसको हिंदुस्तानी गवर्नर-जनरल नहीं मिला है तो यह कोई इसाफकी बात नहीं हुई। इसका

मतलब यह हुआ कि हम अमेरिकी बुधामय करेंगे तो आरामसे रहेंगे, नहीं तो मर जायेंगे। मैं यह कहूँ कि जो चीज बनी है या जो चीज १५ अगस्तको वा-कानून बननेवासी है, उसमें गवर्नर-जनरल चाहे असेंब हो, फेंक हो, खस हो, कासी चयडीबाबा हिंदुस्तानी हो, गौरवर्ण हो या हथौड़ी हो, उनसे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि मेरे हाथमें हो तो मेल्बर इन्टीमी एक हरिजन सबकी गवर्नर-जनरल बनाकर बिठा भी जाय। परत माउंटबेटन यदि गवर्नर-जनरल बनते हैं तो वे हिंदुस्तानके सिविल-वार या नौकर होकर ही बनते हैं। आप कह सकते हैं कि यह तो बम्बो-को फूलतानेकी-नी बात हुई। जो माउंटबेटन इन्सेडके जाही गरावने में बबल रखते हैं वह क्या मुम्हारी नीकरी करनेवाले हैं, आप तो बोला बैठे हैं। मुझे आपकी बोला देकर माउंटबेटनने कोई इनाम नहीं चाहिए। मैं तो आनन्दक उनमें बहता थाया हूँ, तो आज उनकी बुधामय करनेकी मुझे क्या जरूरत पड़ी है? आप समझ यह कहेंगे कि कान्नेसी नेता उनके फूलतानेमें आ गए हैं। इनका मतलब यह हुआ कि बजाहरमानकी, सरदार धीर राजाकी ऐसे पायल हैं कि अपना सब गूर गवाकर डेढे हैं, वे बूझावणी बन गए हैं। मैं बहसक नहीं आ सकता। यह तो सही है कि मैं जो चाहता था वह नहीं बना और बहुत बख मैं यह कहूँ भी चुका हूँ। अगर मैं हर चीजका सीधा मतलब निकालता हूँ। हमसोय माउंटबेटनको गवर्नर-जनरल बनाते हैं, इनीसिए तो वह बनते हैं। यदि हम न चाहते तो वह नहीं बन सकते। परंतु बिना साहजने यह सोचा होगा कि सारी दुनिया मैंसे मालेगी कि मैंने पाकिस्तान से सिवा, इस-लिए मैं कबो न गवर्नर-जनरल बनूँ। हमने इसपर ईर्ष्या क्या करना धीर गुस्ता जी क्या करना। उनको गवर्नर-जनरल बनाकर यह सारी दुनिया-को बहला है कि इस्लाम क्या चीज है। यह देखना है कि वह बहाने खादिन बनते हैं या बाबगाह। यदि एक जी सिंधी सिंध डोडकर गला आएगा तो उसकी बिम्बोसारी पाकिस्तानने गवर्नर-जनरलपर होगी। उनको तो कभीफ़्त भवबकर या उमर धीर सलीकी तरह सबके साथ इनाम देना होगा। मैं यह नहीं कहता कि वे सब धार्मिक थे। मैं तो नेबन उनकी बहादुरी और गराफ़ानी बात कहता हूँ।

अब वारोसे मुझे मानुस हुआ कि पहले हिंदुस्तान और पाकिस्तान—
दोनोंके लिए एक ही गवर्नर-जनरल रखना सब हुआ था। अगर बाघमें
बिना साहब मुकर गए। सब कौन उन्हें पाकिस्तानका गवर्नर-जनरल
बननेसे रोकनेवाला था? मेरी नियाहमें उन्होंने ठीक नहीं किया। एक
बधा जब उन्होंने कहा था तो माउटबेटनको बनने बेते और पीछे बढि कोई
गोलमाल होता तो उनको हटा बेते। परंतु अब इस्लामकी परीक्षा बिना
साहबकी मार्फत होनेवाली है। सारी दुनियाके सामने वे पाकिस्तान स्टेटके
गवर्नर-जनरल बन रहे हैं। अब पाकिस्तानकी बुनिया ही देखनेमें आनी
चाहिए। कावेस तो हमेशा अग्रेबोसे बढती आई है। अबाहुरजालबी
तो सीधे आबमी है, अगर सरकार तो हमेशा सजनेवाले है। वे तो मेरे
साथ जट्टे वे कि तू इनका एतबार करता है। जब वही इनके बाबमें
आ गए तो आपकी तथा हमारी बात ही क्या है। जब वे यह कबूल करते
हैं कि बाइसराय गवर्नर-जनरल बनकर रहे तो हमें कबूल करनेमें क्या
सकोच है? हम बेचते हैं कि वे हिंदुस्तानके आदिम बनकर गवर्नर-जनरल
हो रहे हैं या क्या देनेके लिए। एक गवा अनुभव हमको मिलेगा।
अब इसमें डूरबेजी है और फिर हम कुछ सोते तो है ही नहीं। आखिर
डोनीमियल स्टेट्स भी हमने उनके कहनेपर स्वीकार किया है। वे एक
बहुत बडे एक्मिरल है, बडी जडाई सजनेवाले है। उनको हम रखें तो
सही। यदि कोई बुराई निकली तो हम उनसे सज लेंगे।

जब मैं बाइसरायसे मिलने गया था सब उन्होंने मुझमें कहा कि जिस
जट्टेने एमिबाबेबकी सगाई हुई वह मेरे सजके-जैसा ही है, आजा है,
कल आप आजीर्वाबके तीरपर कुछ जम्ब लिखेंगे। तो परसो जब बाइस-
रायकी सजकी यहा आई तब मैंने उसके हाथ सुबारकवाबीका एक जट
लिखकर भेज दिया। फिलती सारी सजकी है वह। प्रार्थनाके समय मैंने
उसे कुर्सीपर बैठनेके लिए कहा, अगर कुर्सीपर न बैठकर वह हमारे साथ
ही बरीपर बैठ गई। और फिर राजकुमारी समुतकीरने तो आज मुझे
यह भी बताया कि जिस सजकीकी सगाई हुई है वही इम्लैकी रानी
बनेगी, क्योंकि बाइसाहके कोई सजका नहीं है। बाइसरायके भी कोई
सजका नहीं है। और बाइसराय अगर बुरा होता तो वे आजीर्वाब लिख-

कर क्यों नेंबता ? मैं उसे बुरा नहीं मानता। उनकी जगह अगर बवाहुर-सामजी या सरदार पटेल गवर्नर-जनरल बनकर बैठ जाते तो उन्होंने बहुत सस्तरनाक काम किया होता। इसके अलावा गवर्नर-जनरलके हाथमें किसी प्रकारकी सत्ता नहीं होगी। बवाहुरसामजी या उनकी केबिनेट जो पहुँगी वही उसको करला होगा। उसको तो केवल अपने बस्तुलग देने होंगे।

मगर लार्ड माउटबेटन एक बड़ा धारमी है और धर्मज सौतानियत ही कर सकते हैं, ऐसा हम लोगोंका स्वास बन गया है। तो माउटबेटनकी भी अपनी धराकत और इन्साफ-मसवीका सबूत देना होगा। और मुझे विश्वास है कि वह इन्साफ करनेके लिए ही बहा आया है।

मेरे पास इन दिनों काफी मुसलमान मिलने आते हैं। वे भी पाकिस्तानमें जायते हैं। ईसाई, पारसी या दूसरे धर्म मुसलमान अरे यह तो नमस्ते या सलाम है, मगर मुसलमान क्यों अरे ? वे कहते हैं कि हमें भिन्नतायि^१ माना जाता है। पाकिस्तानमें हिन्दुओंको जो तकलीफ होगी हमने जगावा देने होगी। पूरी सत्ता मिलने ही हमारा काबिलके साथ रहना मज्जिनमें गुलाब माना जायगा। उम्मातके वे मानी हैं, हमें वे नहीं मानता। काबिल यदि किसी मुसलमानको अपने साथ रखती है तो क्या गुलाब उम्माती ? क्या मुसलमान नाज़िनी बननेमें गुलामार हो जाने हैं ? क्या वे मरना या मरान नहीं पढ़ने ? क्या अपनी माद्योंके जमानेके इन्साफमें आज़ग उम्मात कुछ बदन गया ? राष्ट्रीय मुसलमानोंकी तर्जिहनिग बरा ना माना ? मुझे आता है कि बिना साहब अल्ला मरकूमिना अमरकूमिना नाम करने बरा इन मुसलमानोंकी भी पूरा मरकूम है।

^१ रे-डोरी ।

: ६७ :

१३ जुलाई १९४७

ऐसा समय एक-दो बार आया है जब मैं प्रार्थनामें ठीक अवसर नहीं पहुँच सका। आसका वक्त ऐसा ही था। मैंने बहुत कोशिश की कि सात बजेके पूर्व पहुँच जाऊँ, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। मैं बाइसरायने मिलने जाता गया था। मैं यहाँ पका हुआ कुछ खाने करनी ही पकसी है। यहाँ बहुत बातें होती हैं इसलिए मेरे-बैठे आसानीको भी कुछ कहना होता है। जो-जो मैं बार-बार ही जाता गया था और आशा थी कि समयके पहले ही बीट आऊंगा। मगर दूसरे दिन भी होते हैं, इसीलिए मैं वक्तपर नहीं आ सका। मगर मुझे यह बेशक बहुत अच्छा लगा कि प्रार्थना ठीक समयपर शुरू कर भी गई है।

बिना साहबने एक प्रेस-कन्फ्रेंस की है। उसकी रिपोर्ट मेरे हाथमें आई है। उसमें उन्होंने कहा है कि पाकिस्तानमें जो अस्मत्त्वमाने हैं उनको किसी किस्मकी तकलीफ नहीं होनेवाली है। उनके साथ वैसा ही बर्ताव किया जायगा वैसा कि मुसलमानोंके साथ। हिंदू मजिरोमें जा सकेंगे, सिख मुख्तारोंमें।

पर किसी एकके कहने मात्रसे वैसा हो नहीं जाता। आस भी बून-खराबी हो रही है, मकान बस रहे हैं और वह सब पाकिस्तानमें हो रहा है। मुनियनमें^१ भी हो रहा है। यह क्यों कर रहा है? क्या मुसलमान ही कर रहे हैं? या हिंदू भी कर रहे हैं? मेरे पास बोलो प्रकारके जस आते हैं। लोग कहते हैं कि अब हम चाहिये क्यों नहीं रह पाते? मैं बिना साहबसे पूछता हूँ कि आपकी बात कब अमलमें आएगी? वह १५ अगस्तके बाद अमलमें आएगी या अगली? बिना तो पाकिस्तानका केंद्र-बिंदु होगा। वहाँ मुस्लिम जीमका बहुत जोर है। बिना साहब पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल भी बन गए हैं। ऐसा होनेपर भी हमें बड़े बावसाह तो हैं हीं। बसतक यह है उसतक अमलका कुछ-न-कुछ समय

^१ इंडियन मुनियन।

कभील अवतक लोगोको बूटते रहे है तो क्या धाने भी वे बूटते ही रहेंगे ?

इसी तरह कोई पूछ सकता है कि हमें अवतक जो परसेटेज^१ मिला हुआ था वह रहेगा या नहीं ? मैं कहूँ कि वह किसने दिया था ? कैसे दिया था ? यदि हरिजन कहे कि सरकारने हमें इतना दिया था, वह कायम रहना चाहिए, तो मैं पूछ सकता हूँ कि सरकारने पुन्हे वह क्यों दिया था ? कावेस सरकारने सब्जी भी, सरकारने कावेससे सब्जीवासीको रिपवत भी। उसे उनकी मुआमल करनेकी जरूरत थी। अब हमारी हलूमत होगी। हमारी सरकार किसीकी मुआमल क्यों करे ? हमारे लिए तो वह जरूरी है कि हम अक्षुत्पन मिटा दे। सरकारकी हिम्मत थी कि कानून बनाकर सब मंदिर खोल दे ? अगर जब मैं देखता हूँ कि मद्रासमें एकके बाद एक मंदिर खुलता जाता है, वहाँको बड़े-बड़े और पुराने मंदिर हरिजनोके लिए खूब गए है, तो मेरा पेट (?) भर जाता है। धर्मकी रक्षा ऐसे ही हो सकती है। इसी तरह ईसाइयो और पारसियोंकी बात है।

हमारी हलूमतका काम तो जो मिस्कीन है, चाहिए है, उन्हें ऊपर लाना होगा। यदि वह हरिजनोके लिए, यूरोपीयोंके लिए कुछ करती है तो ब्राह्मणोंकी बिकायत क्यों होनी चाहिए ? हा, अगर कोई कहे कि ब्राह्मणोंको कोठे जगाए जाय, उनका अपमान किया जाय, तो मैं कहूँ कि ऐसा क्यों, वह भी तो बुरा है।

मुसलमानोंकी ओरसे या क्रिश्चनकी ओरसे मैं जो कुछ कह सकता हूँ वह यही है कि सबको अवसर इ-साफ़ मिले। अगर ऐसा हो तो फिर कहनेको कुछ नहीं रहेगा। फिर बेगके टुकड़े होनेका कुछ नहीं रहेगा।

बेगके टुकड़े होनेके बारेमें लोग कहते हैं कि साब तो हिसाब हो गया—सेनाका हिसाब हो गया, नौ-सेनाका हिसाब हो गया। मैं कहता हूँ कि हमारी ताकत कम हो गई। बाहरके लोग कहेंगे कि हिन्दुस्तानके पान नौ-सेना कहा है ? अपने मतलबके लिए वे बोवेंसे किसी एक हिस्सेको

^१ प्रतिशत।

जिहादी और यह नेवला बटवारा हनेवाके लिए गृह-युद्ध का रूप बन जायगा ।

पर नुस्खे छाया है कि पाकिस्तान और दोष भारतमें फैली जा रहेगा । दोनोंमें अल्पसंख्यकोंके प्रति न्याय का व्यवहार होना चाहिए । यदि मुसलमानों ने बेवकूफ हिंदु ही रह सके तो यह पक्षपात होगा । इसी तरह यदि पाकिस्तानमें सिर्फ मुसलमान ही रह सके तो यह भी पक्षपात होगा ।

अर्थात् हमने अहिंसा का स्वयं नहीं मीठा तो भी हमें अपनी संत बन्धुओं को भोगिने यह चीज सेवा चाहिए कि हम किसीने शास नहीं करेंगे । ऐसा हम अहिंसासे करें, बाह्य हिंसासे । अहिंसा नाम तो मैंने छोड़ दिया । फिर भी, अगर हमारे पास बन का गंगा तो हम किसीकी सुनानी नहीं करेंगे । जहाँ मैं बिहारने कहा था हूँ । लोग कहते हैं कि हमें गंगावार दो, बड़का दो । मैं जल्दा हूँ, उसवार और बहुत बने मापते हो ? नहीं, हम नहीं सुनें । ऐसा ही मैंने मोघावासीयों की कहा है ।

अगर मुसलमानों और हिंदुओंके दिलमें सीधे उरलोकी भोगिगते यह का गया है कि हम किसीकी सुनानी नहीं करेंगे तो मेरे लिए इतना बन है । अगर मैंने करके हमने इतना सीधे किया है, तो यह हिंसासे हो या अहिंसासे मुझे इसकी परवाह नहीं । हा, अगर मुझे भीड़ने छापीने तो मैं कहूँ कि यह अहिंसासे ही हो गय है । एक छोटा सादसी अगर दुनियाका सामना करने बने तो यह अहिंसासे ही कर सनता है । अहिंसाके बाद ईश्वर होना है, अपने सामने सबवार बूट जायगी ।

३ दृष्ट :

१४ जुलाई १९४७

भाटनी की बहने,

जहाँ जहाँ है कि मेरे जीवन का बहुत बिगड़ा पैदा करनेवाले होते हैं ।

कृष्ण लोग तो कहते हैं कि मुझे बिनाकुस बोसना ही नहीं चाहिए। लोगोंके ऐसा कहनेसे मुझे एक बिनाकारकी कहानी याद आती है। उसने अपना बिना एक दुकानमें रखा और नुस्ताखीनी करनेवालोंकी दावत दी कि वे बड़ा-बड़ा भी उसमें बलसिया पाए बड़ा-बड़ा निशान लगा दें। नतीजा यह हुआ कि वह तस्वीर तो रही नहीं, एक भन्ना-सा हो गया। बिनाकारका मतलब यह था कि लोगोंको दिखाए कि हरेकको कुछ करना नामुमकिन है, और उसे खुद तस्वीर हो गई कि उसने एक अच्छा बिना जीया था। उसका तो काम ही था कि वह अपने मनके पसंदकी और अपनी शिवाकसके मुताबिक एक तस्वीर बनाए। मेरा भी वही हाम है। मैं केवल बोसनेके लिए कभी नहीं बोसता। मैं सिर्फ यह समझकर बोसता हू कि मेरे पास लोगोंके लिए देनेके जायक सबेदा है।

यह सब है कि आज मेरे और मेरे बने दोस्तोंमें कुछ मतभेद है। बाब बाबें जो उन्होंने की या कर रहे हैं, उनसे मैं सहमत नहीं। लेकिन किसीने यहकर मेरे लिए नीचूआ ह्यातापर अपनी राय न देना असमभव है। और असलमें मतभेद क्या है? अगर आप जानबीन करे तो आपको पता चलेगा कि मतभेदकी अब एक ही है। अहिंसा मेरा धर्म है, कांग्रेसका धर्म कभी नहीं रहा। कांग्रेसने तो उसे केवल नीतिके रूपमें स्वीकार किया था। नीति उसी वक्त तक धर्म रह सकती है जबतक कि उसे बसाया जाय। उसके बाद नहीं। कांग्रेसको पूरा अधिकार है कि जिस वक्त जरूरत न रहे उसी वक्त नीतिको बदल ले। धर्मकी और बात होती है। वह तो अमर है। वह कभी बदल नहीं सकता।

कांग्रेसके विधानमें नीति तो बही रखी गई है, लेकिन कांग्रेसवालोंके असलने नीतिको बदल दिया है। कानूनके शास्त्री भले उसपर नुस्ताखीनी करे, लेकिन आप और हम ऐसा नहीं कर सकते और न करना चाहिए। आजके कांग्रेसी क्यों न अपनी नीतिको बदलें? कानूनकी बात हो ही जायगी। और यह बात भी समझने जायक है कि कांग्रेसके विधानमें 'शांति'का शब्द इस्तेमाल किया गया है, 'अहिंसा'का नहीं।

१९४४में जब कांग्रेसकी बैठक बरईमें हुई थी तो मैंने बहुत कोशिश की कि 'अहिंसात्मक' शब्द 'शांतिमय'की जगह ले, लेकिन मैं असफल रहा।

इसलिए अगर कोई चाहे तो 'भास्ति' के मानी अहिंसा ने कुछ कम विकास सकता है। मैं खुद तो कोई फर्क नहीं पता। लेकिन मेरी गमने यह कोई मतलब नहीं। फर्क है या नहीं यह फैसला विद्वानों को करना पड़ेगा। आपको और मुझे तो इतना ही समझ लेना चाहिए कि कांग्रेस का मत आज हमें अहिंसात्मक नहीं है। अगर 'अहिंसा' कांग्रेस का धर्म होता तो किस तरह फौज को सहायता देती, जैसा आज हो रहा है। फौज अगर चाहे तो जनता को ड़ाकर फौजी-राज भी कायम कर सकती। क्या मैं यह जाना बिनाकुल ही छोड़ दूँ कि जनता मेरी बात रूमी भी नहीं सुनेगी? और अगर न सुना चाहे तो फिर मेरे ऊपर जो नुस्खाखीनी करते हैं उनका क्या विगड़ता है, और वे मुझे बोलने में क्यों रोकें?

मुझे एक बात स्पष्ट करनी चाहिए तो यह कि मैंने नाक-साफ़ कह दिया और मान भी लिया है कि पिछले तीस साल जो गड़बड़ हमने भी यह अहिंसा के बल पर नहीं की। यह तो सिर्फ़ जब विरोध या और ऐसा विरोध कमबोरोका इंतज़ार है। उसे वे लोग इस्तेमाल करते हैं जो अहिंसा का उपयोग जानते नहीं, यह नहीं कि अहिंसा का उपयोग करना चाहते नहीं। अगर हमने अहिंसात्मक गड़बड़ करने की बहादुरी होती—और उसके लिए बीरोकी बहादुरी चाहिए—तो हम दुनिया के सामने आज आभास दिएका एक और ही विषय दिखा सकते। लेकिन आज तो हम जो दुकानें फिर बना रहे हैं, एक ऐसा देश, जहाँ आई-आई आपस में लड़ रहे हैं और एक-दूसरे पर बरा भी विश्वास नहीं रखते। ऐसा होने के कारण हम खुराक और कपड़े की ज़मीन काफी खाल नहीं दे पाते और उन करोड़ों नरीनों को कुछ नहीं दिखा सकते—वे शरीर जिनका एक जगमान ही उनके सामने रोक्की बल्लेखोकी जगमग में नजर आता है—जिनका ज़बर्द-जगमग से क्या भास्ता, सिवा सिनेमाकी लस्वीरोके, कि जिनसे एक-दूसरे को गालोंकी लस्वीरके आभास वे और क्या सीख सकते हैं?

: ६६ :

१५ जुलाई १९४७

भाइनों और बहनों,

मैंने कुछ दिन हुए तामिलनाडु और मद्रास के मंदिरों के बारे में कहा था, जो हरिजनो के लिए बंद थे, और आखिरी में रामेश्वर के मंदिर का उल्लेख किया था। वह एक बहुत बड़ा मंदिर है और उसके बारे में वहाँ काफी बहुत बड़ा झगड़ा था। उनका खयाल था कि हरिजनो के प्रवेश जाने से मंदिर अपवित्र हो जायगा। परंतु आज के एक क्षण में मुझे कहा गया है कि मैंने आग्रह देखने निरुपति मंदिर का नाम नहीं लिया जो बहुत विद्यालय और प्राचीन मंदिर है। उसमें वह भी लिखा है कि यदि मैं अपनी गलती सुस्त कर दू तो आग्रह देखने लोगों को बहुत संतोष मिलेगा। मैं तो इस मंदिर की महिमा बराबर जानता था, परंतु मेरी दृष्टि में तामिलनाडु और आग्रह कुछ-कुछ सूने नहीं हैं। आज तो कुछ भावना ही ऐसी बिगड़ गई है कि सब प्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष रहना चाहते हैं। तो भी मुझे अच्छा लगा कि मैं अपनी गलती सुस्त कर दू।

अभी कुछ बचावी आई मित्रों के आए हैं। वे कहते हैं कि पश्चिमी बंगाल के कुछ ही जाने से पूर्वी बंगाल के हिंदुओं के दिल में ऐसा लगता है कि पश्चिमी बंगाल के हिंदू अब उनको भूल जायेंगे। यदि ऐसा हुआ तो मुझको बड़ा दुःख होगा। अगर इस तरह से हिंदू हिंदुओं और मुसलमान मुसलमानों को भूल जाय तो सब गोलमाल हो जायगा। हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब हिंदुस्तानी हैं और हिंदुस्तान के रहनेवाले हैं, ऐसा हमें मानना चाहिए। भगवान या भगवत तो निजी बात है। मैं ईश्वर को पूजना चाहता हूँ, उसने दुनिया की नींव टाकते मुझे रोक सकती है। परंतु यदि मुसलमान, पारसी, हिंदू और ईसाई यदि सब अपने को प्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष मानने लगे तो पीछे हिंदुस्तान रहा कहा? मैं तो कबूल करता कि बंगाल के हिंदू ही क्या करने के। मैं बंगाली मुसलमानों में रहा हूँ। गोमालाजी मैं उनके बीच पैदा हुआ था। मैंने वहाँ सबके दिलों में मोहकता पाई है। हिंदुओं को मुसलमानों में बदला क्या था? जो मुंबई और बीकानेर-

पल था गया, वह क्या हुआ ना बोले ही गये-जाला है। जेरी भयङ्गमें तो पूर्वी बंगालके हिन्दुओंके साथ दुग होनेवाला नहीं है। अगर बहुत-सी बातें न चाहते हुए भी हुई थीर हो गयी हैं। बंगालने दुकूटे हुए और हिन्दुत्व तथा पाकिस्तान भी बन गए। परन्तु जो चीज हो गई उसे बदल करके धारें बटना चाहिए और पीछे उसे दुरुस्त कर लेना चाहिए। पश्चिमी और पूर्वी बंगालके हिन्दु-मुसलमान एक साथ रहे और एक भाषा बोलते हैं। अब हिन्दुओंका बड़ा कोर्ट बियाहनेवाला नहीं है। यदि बहाका हिन्दु भी मुसलमानको अपना होना जाने लगे तो क्या पूर्वी बंगालके मुसलमान उनको मारने लगे रहेंगे ? अब एक भी हिन्दु मुसलमानको अपना दुस्मन नहीं मानेगा तो फिर वे सब दोस्त ही रहनेवाले हैं, इसमें मुझे कोई शक नहीं है।

उन्होंने यह भी पूछा है कि क्या बंगालप्रांतीय कांग्रेस-कमेटी मित्र जायगी, क्योंकि उसके भी तो दो दुकूटे हो गए। जेरी इच्छिते तो बंगाल-प्रांतीय कांग्रेस-कमेटीने हिन्दुत्वसे बंगालके दुकूटे नहीं हुए। जेरी यह आव है, जेरी ही रहनी चाहिए। यह एकलुप्तके आगमने बाहर है। अगर यह अपने दुकूटे कर लेती है तो मैं कहूंगा कि पश्चिमी बंगालने बेवकाई की है। साथ कांग्रेसकी रचना इन तरकीबी है कि देशतमें कांग्रेस-कमेटी होती है, फिर मजलमें, उसके बाव बिलेमें, मूवेमें और सबने ऊपर आशिय भारतीय कांग्रेस-कमेटी है। ऐसा हमार सिमसिमा है। अब कांग्रेस-कमेटी पूर्वी बंगालमें होयी और पश्चिमी बंगालमें थी। वे दोनों मिलकर बंगालप्रांतीय कांग्रेस-कमेटी बनावेगे। कांग्रेस-मुसलमान, ईसाई और पारसी साथ सबकी है। उनमें भावे भी कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए। इन बंगाली भाइयोंने यह भी पूछा है कि क्या पूर्वी बंगाल मिलकुल विचारों बन गया है कि उसके जमीनी भी पश्चिमी बंगालसे आए। यह तो उनके लिए और भी हितकर होना चाहिए, क्योंकि इससे पूर्वी और पश्चिमी बंगालमें सब बराबर बना रहता है। यह माना कि पूर्वी बंगालमें मुसलमान काशी पडे हें, परन्तु यह बीचे गल किया जाव कि सारे मुसलमान पडे हें। बिहारमें कितने ही मुसलमान मारे गए, परन्तु तो भी मैं कह सकता हू कि यह सबो हिन्दु नवे मिलनुव नहीं बने। कुछ लोगोंकी रायकी बजहसे साथी कीमको पदा बडाला मिलकुल पडत है। इसका मतलब तो

मह है कि हमारे अन्दर स्वयं बबयी है। हम नापाक और दुबकिल बन गए हैं। हमारे अन्दर प्रार्थनाकी बहाबुरी नहीं है। वह बहाबुरी केवल मरलेका इन्त सिखाती है, मारलेका नहीं। दुनियामें बड़े-बड़े लम्कर पड़े हैं, अगर फिर भी सारी दुनियाकी आवाबीको देखते हुए वे लम्कर मुट्ठी-भर हैं। एक ऐसा सिखसिखा-सा बन गया है कि जिससे हमारी आत्मा हमेशा टेढ़ा ही बेशरी है। जब भी कुछ हो जाता है, हम फौज भेजनेकी ही भाव करते हैं। नोआखासी, बिहार, पंजाब और सीमाप्रांत सब जगहोंसे यही भाव धाई कि फौज भेजो तो हमारी रक्षा होगी। परन्तु जो बहाबुर हो सकते हैं, वे ऐसा क्यों कहें ?

१ ७० १

१६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आजका जो मन्त्र^१ या वह मैने बचपनमें ही, जब कि मैं अंग्रेजी हाई-स्कूलमें पढ़ा गया था, तब पढ़ लिया था। वह 'बालमित्र' नामक पुस्तककी प्रार्थना-मालामें था गया था। मन्त्र अच्छा और मीठा है और बात भी सच्ची है कि हम अपने अंदरकी फिक्र क्यों करें? वह आज है और कम बसा जायगा। या तो कम जायगा या कममें बसा जायगा, राख ही जायगा या मिट्टीमें मिल जायगा, पर बात एक ही है। जब पानीमें फेंका गया तो जीव-जसु का जायने। अतएव मह कि आखिरमें सरीरका हम एक ही-सा होता है। परन्तु इस मन्त्रमें—'भाय भूय पीछे दूध गई दुनिया'—मह अच्छा नहीं लगता। भले ही यह बबीरका बनाया हुआ हो, अगर उससे क्या हुआ ? मुझे तो यह बहुत चुभता है। ऐसा माननेमें कुछ स्वार्थ काम करता है, वह मेरी छोटी बुद्धि मुझे बताती है। इसको मन्त्रमालामेंसे निकाल देना चाहिए। हमारे अन्दरके बाद दुनिया कीने बूझनेवाली है ? पहले तो यह कि हम मरते ही नहीं हैं, क्योंकि आत्मा

^१ "इस मन्त्र की नींव बहाई है।"

अनर है। फिर दुनियाका तो भ्रम ही क्या है, यह तो हमेशा बतलती रहती है। उसको तो परमात्माने एक खेल बना रखा है। अगर जिसका भवनमें कहा गया है उसको हम मानकर ही नहीं बैठ जाते हैं। यदि वह सब मान लें तो पीछे यह विमान-परिपक्व क्यों बैठती? क्यों हमारे नेता लोग फायदे-कानून बनाते। यदि वे सब गरीब मान लें कि हमारे भ्रमोंके बाद दुनिया सब जायगी तो फिर कोई किन्हींके लिए कुछ न करेगा। यह इस भाष्यमें स्वार्थकी पराकाष्ठा आ जाती है।

मूजने कुछ अक्षरारमबीस भिन्नने आए थे। उनके साथ भाष्यीयते प्राविष्ठानकी चर्चा आ गई थी। हिन्दुस्तानके विध्यालयके अधिपतों को प्रवेश पडा है उसे प्राविष्ठान कहते हैं। इस प्राविष्ठ प्रवेशमें सामिक, सेखर, भक्तवाणी और कन्नड के चार भाषाएं बोली जाती हैं। मैंने बीज-बीजा सबकी देख लिया है और मैं कह सकता हू कि इनके मूलमें सस्कृत ही पड़ी है। सेखर यदि आप सुनें तो उसमें सस्कृतके ही कन्नड सुनाई देंगे। सामिकमें सस्कृतके कन्नड तो काफ़ी हैं, परन्तु उनकी उन्होंने प्राविष्ठी सिखाव पड़ना दिया है। भक्तवाणी भी सस्कृतसे मिलती-जुलती है। कन्नडिकने कन्नड भाषाका भी गहरी हान है। भक्तव यह कि इन सब भाषाओंका मूल जोत सस्कृत ही है। मैं तो प्राविष्ठानको हिन्दुस्तानसे भ्रम मानता ही नहीं हू। भ्रमेजोने हम सबको एक कर दिया है। कास्मीरसे जेम्स कन्याकुमारीतक जो लोग पड़े हैं वे सब हिन्दुस्तानी हैं। उनमें धर्म और अनार्थ या धर्मार्थ और प्राविष्ठानका भेदभाव करना, गौरी भ्रमनता है। इस बारेमें मेरे बिलने कोई शक नहीं है।

यह प्रकट प्रवेश भाषाका यह जाता है। हमारे गुरु हिंदी और उर्दू में दो भाषाएं हैं, जो हिन्दुस्तानमें बनी और हिन्दुस्तानियोंद्वारा बनाई गई हैं। उनका व्याकरण भी एक ही रहा है। इन दोनोंको मिलाकर मैंने हिन्दुस्तानी बनाई है। इन भाषाओं करोड़ों लोग बोलते हैं। यह एक ऐसी भाषाका भाषा है जिसे हिंदू और मुसलमान दोनों समझते हैं। यदि आप सस्कृतमन हिंदी दोनों या अरबी-फारसीके जन्मने भरी हर्द उर्दू बोलें, यथा कि श्री० अण्णुल गौरी बोलते हैं, तो बहुत कम लोग उसे समझेंगे। तो क्या हम प्राविष्ठानकी चारों भाषाओंका भ्रम

कर है? मेरा मतलब यह है कि वे मातृभाषाके तीरपर अपनी-अपनी प्राचीन भाषाको रख सकते हैं, मगर राष्ट्रभाषाके नाते हिन्दुस्तानीको जरूर सीखें। यो तो हर सूबेकी अवयव-मन्त्रालय काबा है। उड़ीसा, बंगला, पासायी, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती तथा मराठी, वे सब भाषाएँ हिन्दुस्तानीसे मिल हैं। तो क्या हम ये सब भाषाएँ सीखें या अंग्रेजीको अपनी राष्ट्र-भाषा मानने लगे? यदि मैं अब अंग्रेजीमें बोल्ना शुरू कर दूँ तो आपमेंसे बहुत कम लोग समझेंगे। ८-१० वर्ष परिष्कृत करे तब कहीं लगती अंग्रेजी हम सीख पाते हैं। इस तरहसे तो सारा हिन्दुस्तान पागल बन जायगा। अब अंग्रेजी हमारी राष्ट्र-भाषा नहीं बन सकती। वह दुनियाकी भाषा या व्यापारकी भाषा रह सकती है, हालांकि दुनियाकी भाषा भी अंग्रेजी-सक कोई वा-वास्ता तब नहीं हुई है। हिन्दुस्तानी भाषा तो हिन्दुस्तानी रहनेवाली है, इसमें मुझे कोई शक नहीं है। प्राचीन भाषाएँ अपनी-अपनी जगह ली रह सकती हैं, परन्तु सबसे ज्यादा लोग जो भाषा बोलते हैं वह हिन्दुस्तानी ही है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनमें भी ये रहा है। वहाँ बिना प्रचारकी हिन्दी बोली जाती है उसे बहुत कम लोग समझ सकते हैं। उसी प्रकार जो ठेठ उर्दू है उसे बहुत बड़े लोग बोलते और समझते हैं। जन-भाषारूपी भाषा ही हिन्दुस्तानी है। चितना हमें चाहिए उतना साहित्य भी हम समझने पर्याप्त कर सकते हैं। प्राविष्टालकी मातृभाषा सामान्य या सेक्यूलर बनी रहनी चाहिए, मगर वहाँके लोगोका धर्म या फर्क यह हो जाय: है कि वे चितनी जल्दीसे हिन्दुस्तानी सीख सकें, नीच लें। यदि वे हिन्दुस्तानीको हिन्दी और उर्दू बोलो लिखिगेले सीखे तो बहुत ही अच्छा हो, क्योंकि इससे दोनों भाषाओका साहित्य उनको मिल जायगा, परन्तु यदि वे केवल बोलनेके लिए ही हिन्दुस्तानी सीखना चाहते हैं तो उसे अपनी लिपिमें सीख लें। मसलमे हिन्दुस्तानी-भाषा-मन्त्रालय हिन्दुस्तानीको उनकी अपनी लिपियोंमें लिखानेका कार्य कर रही है। यदि वहाँके लोगोको स्वतन्त्रता सच्चा अभिमान है तो उनको राष्ट्रभाषा सीख ही लेनी चाहिए। मगर ध्यान हम इसमें बलनीय हो गए है कि जहाँ एक ओर पाकिस्तान तथा वहाँ दूसरी ओरसे प्राविष्टालकी भाषा जाने लगी। यदि यही हाल रहा तो हिन्दुस्तान कहा रह जायगा। हम मुसलमानी हलचलमें तो

एक रहे, परन्तु धावादी निरुद्धे ही टुकड़े-टुकड़े ही भए, इससे बड़ी मूर्खता
 - हमारी और क्या होगी ?

जब हम आगदी सेनेको तो तैयार हो गए, परन्तु हम उसके लिए
 सामान क्या तैयार कर रहे हैं ? सब सोच अपने-अपने शौचके सुत्राधिक
 बलना चाहते हैं। यही तो मूर्खताकी सबसे बड़ी निशानी है। जबकि
 तो एक हीमरी सामान्यने हर स्त्रोको अपने नाशक रहना, परन्तु अब हमारा
 परन्तु बर्न हो जाता है कि हम खुशोते सब एक होकर रहें। हमारे यहाँ
 जो लम्बर रहनेवाला है, उसका काम किसी स्त्रोको दबाकर सबके धनीन
 रहना नहीं होगा। इसीसे जो लम्बर है वह बहा अपनेको दबाने
 लिए नहीं है। बहा जो पुसिख रही है उसके हाथों की बनी बहुत
 नहीं रही, केवल लम्बीका छोटा बहा होता है। वे मान मानवही भी
 करते हैं जो अपनेको दबानेके लिए नहीं, किसी बाहरी आक्रमणको रोकनेके
 लिए जबवा समुद्रपर अपनी सरकारी बनाए रखनेके लिए करते हैं।
 इसीसे मैना बहाके लोगोंको दबानेके लिए नहीं होती। अतः यदि हमने
 अपने लम्बरसे बही काम बिना जो अन्तर्गत सेते रहे हैं, तो वह लम्बर
 आपकी ही जा जानेवाला है। हम अपनी ही सरक सेलना सीकें, लम्बरही
 सरक नहीं। हिन्दू-मुसलमान गल्ली ईसाई आदि सब इसी सेलने
 रहनेवाले हैं। उनमें बहिर और अन्तर भय-भयन रह सकते हैं
 परन्तु हिन्दुत्वानकी जो बहा बहिर है वह लम्बर है। सब मन्दहोने
 साथ एक ही स्वरूपने दबाकर करते हैं।

दूसरी बात, जो मैं अब गुनाहना, वह सुनने लायक होगी। आदमी
 बात नी सुनने लायक की और यदि उसपर भयन न बिना गया तो
 हमारा भयन ही सत्पानाच होनेवाला है।

: ७१ :

१७ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनों,

आज जो मजल^१ आप लोगों ने मुना यह सूरदासजीका बनाया हुआ है। यह हम सबको विनम्र बनानेवाला मजल है। सूरदास कहते हैं कि मुक्त-जैसा कूटिल, सब और कामी कौन हो सकता है कि बिना गरीर दिया उसीको मैं भूल गया। इसी मजलमें मे यह भी कहते हैं कि हरिजन-को छोड़कर उसने हरि-विमुख लोगोंका साथ किया। 'हरिजन' शब्द मैंने सूरदाससे ही लिया है, वैसे तो एक गुजरती कविने भी इस शब्दका प्रयोग किया है। परन्तु क्या सूरदास-जैसा मजल कूटिल और सब हो सकता था? जबानीमें मैंने जब यह मजल पढ़ा तब मैंने यह सोचा कि ये शायद-सब लोग बहुत अधिकशोषित करते हैं। अगर पीछे मैंने इस बातको समझा कि उसने जो कुछ कहा वह अपने-आपको मानने रखकर ही कहा था। उसने अपने लिए कोई माप या गज बना रखा था जिसके मुताबिक वह यदि एक सेकेंडके लिए भी भवमानका नाम भूल जाता तो अपनेको कूटिल और सब समझता था।

आज जो जो जगते में आपसे कहा जाइता है उनपर भी यही चीज लागू होती है। जबबारी समाचारोंने जानून हुआ है कि दक्षिण अफ्रीकाने भारतीयोंके साथ गुलामाही करती था रही है। उनको हलाक किया जा रहा है। मैं २० वर्षतक कहा रहा हूँ। इसलिए मैं जानता हूँ कि कहा हिंदुस्तानीयोंके साथ क्या गुजरती है। मैं तो कहा उनके-जैसा ही हल्की बन गया था। कहा मुसलमान भी बहुत अधिक लादामने है, अगर वे सब अपने-आपको हिंदुस्तानी कहते हैं। ईश्वर, कम-अ-कम हमें इसनी सद्-बुद्धि तो दे कि बाहर दुनियामें हम अपने-आपको हिंदुस्तानी कहे। यदि कहा भी हम अपनेको हिंदू, मुसलमान या पाकिस्तानी कहने सगे तो निश्चय-से हमारा जाल्मा हो जानेवाला है।

^१ "जो सब चीज कूटिल सब कामी।"

धनी पिछले दिनों स्वल्प^१ समुदाय राष्ट्रीय सबके सामने दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंका पक्ष रखनेके लिए ब्रिटिश सरकार के सामने धमकीका बर्तन किया। उसके बाद अफ्रीकाके हिन्दुस्थानीयोंको कानूनी छोड़ने की बात नहीं भिन्ना जा रहा है, मगर बुद्धिमानोंसे आशा-नीटना शुरू कर दिया है। यदि यही हवा जारी रहा तो जो मुद्दीभर हिन्दुस्थानी हैं वे कैसे बचा रह सकेंगे? वे एक बार दासबाग बना गया था और जो हवा जोशीके साथ बहा पैदास हुआ। एक बोम्बेनी भी बहा हमको नहीं भूला। हमें तो बोम्बर बोम्ब पानी की पिता सेते थे। हमारे बहा तो पानी बहुत दूरा है, मगर बहा पानी कम मिथता है। अब बर्तन होनी है सब ने पानी बना करके रख सेते हैं और उसे टाता लगाकर रखते हैं। हम बोम्बोके साथ बोम्बो करके बहा चाहते बहा करने करते थे। परन्तु आज तो मैं एक बुरी ही समझ देखा हू। बूझ हमारे बहा अब जो सरकारें बन रही हैं, इसलिए मैं बिना साहज और बहाहरमातकी बोम्बोसे कहूंगा कि उन्हें मिलकर स्मद्धके पास आर सेचना चाहिए। स्मद्ध साहज मुझको अपना बोम्ब मानते हैं। मैं भी उनको एक बोम्बोसे मानते बहा कहूंगा कि वे बोम्बो बोम्बो कहें कि वे दक्षिण अफ्रीकाके एक भी हिन्दुस्थानीके साथ आशीष्ट न करे। यदि सब भी वे उनका कहना न मानें तो वे अपने पक्षे हस्तीका वे हैं। उन्हें माउन्टेनकी भी आनोष होकर नहीं पैटना चाहिए। वह भी-सेनाका आता बर्तन एक-मिरा है और बाही बुरका है। दक्षिण माउन्टेन तो उनके सबके समान हैं, किसी कि धापी इन्फैंटकी राजकुमारी एलिजाबेथ होने-वाली है। इसके अलावा माउन्टेन १५ अवसरों तो बाइसराय भी हैं और उनके बाद गवर्नर-जनरल रहेंगे। अब उनको अपनी इन सब बातोंसे आन उठाकर जनरल स्मद्धको कहना चाहिए कि हिन्दुस्थान की उनको अपने देशकी तरह एक डीमीनिशन बन गया है। अर्थात् एक बड़े ब्रिटिश बुरका सबस्य हो गया है। बात उनके देशमें भारतीयोंके साथ जो कुछ हो रहा है, वह बुर होना चाहिए।

^१ बोलती दिव्यलक्ष्मी पत्रिका ।

डोमीनियन स्टेट्सको आवासीय भी कहकर बताया गया है। परन्तु जबतक मैं इस फलको बख नहीं लेता जबतक कैसे कह सकता हू कि अनृत है या उसमें बाहर गया है। उसमें शायद अनृत ही होगा, मगर हमें उसको बखाने तो दो ?

दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंको मेरी यह सलाह है कि वे सब बहा भले आवासी बनकर रहे। उनमेंसे जो अच्छे पैसेवाले हैं वे अपने गरीब मुसलमान भाइयोंको न छोड़ें, जो कि बहा भक्तोंकी तरह पड़े हैं।

मुझसे यह पूछा गया है कि दक्षिण भारतमें तो हरिजनोंके लिए इतना काम हो गया और लायसनाट तथा आन्ध्रके सब बड़े-बड़े मंदिर हरिजनोंके लिए खोल दिए गए, परन्तु मुक्तप्राप्तका क्या हुआ ? मुक्त-प्राप्तमें हरिछार पड़ा है। क्या हरिछारके मंदिरोंमें भक्त जा सकते हैं ? दक्षिण भारतीय भावनकोर रियासतमें तो बहुत पहलेसे ही यह सब हो गया था। बहाके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अम्मर भाव तो हमसे बिगड़े हुए हैं, और बिगड़े हुए हैं भी या नहीं यह भाव तो मैं नहीं जानता। मगर सब जगहोंने बहाके महाराजाको समझाकर सबसे बहुत पहले ही कानूनद्वारा अपनी रियासतमें भक्तपनको मिटा दिया था। मुक्तप्राप्तमें हरिछारके अलावा कभी विस्मय भी है बहा गवासीमें लान करनेसे जोख मिलता बताया जाता है। बहाके मंदिरोंमें हरिजन जा सकते हैं, ऐसा मैं नहीं कह सकता। परन्तु मैं तो बही कहूंगा कि बहा हरिजन नहीं जा सकते वे मंदिर नापाक हैं।

आज दुनियामें सब जगहोंकी कड़ी परीक्षा हो रही है। इस परीक्षामें हमारे हिन्दू-बर्मको भी फीसवी नंबर मिलने चाहिए २२ फीसवी भी नहीं।

: ७२ :

१८ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनों,

भाबका जो भजन है, वह समझने-जैसा है, क्योंकि हम लोग भी तो बाबिर भीरों परे हुए हैं। न हमारे पास जानेके लिए भज है, न पहननेके लिए कपड़ा। तो क्या हम उसकी धिक्कावट बनाहरसावबीसे या सरदारबीसे करें, क्योंकि वही तो भाब हमारे हाकिम बन गए हैं? बाइसराम साहबने वही छोड़ दी या छोड़ने का रहे हैं। गवर्नर-जनरल तो उनको हमने बनाया है, इसलिये बन रहे हैं। पहले जो अफसर होते थे वे सबलसे नियुक्त होकर आते थे। मगर अब तो स्वाधीनता-विश्व प्राप्त हो गया है और कमके अवसरोंमें आप यह भी पकड़ें कि बाब-साहबने उस बिनापर अपने बस्तबत दे दिए। अब सारी सत्ता अब हिन्दु-स्तानकी भाव जनताके हाथमें आ गई। मगर इस भजनमें जो चीज बरी है वह यह है कि अब हमपर भीर पड़ी है सब हम दूसरोंको नहीं, बल्कि हमको, अर्थात् ईश्वरको ही पुकारेंगे। केवल वही हमारी भीर हर सकते हैं। यदि उसको नाब करके हम अपना काम बलायेंगे तो हमारा काम ठीक चलता जायगा, नहीं तो वह बिगड़ जायगा। वह दुनियाका बाबसाहू है। अब, उसके मातहत रहकर काम करनेमें ही हमारी बसाई है।

'जैन' नामका एक असेबी अवधार किसीसे निकलता है। वह बिना साहबका अवधार है और उसमें रोब कुछ-कुछ पातिना या ही जाती है। मुझको भी जाती है। मैं तो उनको देखकर केवल हँस जाता हूँ। मगर भाब तो उसको एबीटरने मेरे नामसे एक बात जाना है। बाबा बिना हुआ है। वे कहते हैं कि आप बिना साहबसे जो चीज-बीजकर कहते हैं कि आपका इच्छावान होनेवाला है, जो वह सब बंद कर दें।

क्या मैं एबीटर साहबने पूछ सकता हूँ कि कदाबीसे, जहापर कि

“हरि दुन हरी जयकी भीर।”

पाकिस्तानकी राजधानी बन रही है, जो हिंदू लोग दुखी और डरके मारे भाग रहे हैं उसकी बगल क्या है ? क्यों वे डरे हुए हैं ? सिखके हिंदू बहुत आना बर्बोके व्यापारी हैं। वे क्यों बगई, मारास या किसी और बगल भागकर जा रहे हैं ? इससे सिखकी ही हानि होगी, उनकी नहीं। मैं जानता हू कि वे जहाँ भी जायेंगे वही पैसे पैदा करेंगे। वे कहीं भी खोनेवाले नहीं हैं। दक्षिण अमरीका तकमें सिखी भिन्न जाते हैं। दुनियामें कोई ऐसी जगह नहीं होगी जहाँ सिखी न रहते हों। दक्षिण अफ्रीकामें तो उन्होंने अच्छा पैसा पैदा किया है और अब मैं जहाँ जा सब मुझे भी वे तरीकें सोचनेके हिसने कार्य करनेके लिए खूब पैसा देते हैं, परन्तु उनमें एक अवगुण यह है कि वे सराब पीते हैं। उन्हें वे जोर भी नहीं सकते, क्योंकि उसके जोरनेसे वे मर (?) भी जाते हैं।

‘जॉन’ने यह भी बिना है कि आप बिना साहब या अन्य बीगी नेताओंको ही क्यों कहते हैं ? आप मुक्तप्राप्तने क्या हो रहा है ? यह तो आपका अपना सूना है। पर सिख भी तो नेता ही सूना हैं, जैसा मुक्तप्राप्त। मैं तो सारे हिंदुस्तानको, जिसमें पाकिस्तान भी शामिल है अपना मानता हू। मैं अपनेको पाकिस्तानका भी तो बाँटिया कहता हू। इसलिए नहीं कि मैं जहाँ कोई झुंझार बनना चाहता हू। मुझे कोई हाकिमी नहीं चाहिए। मैं तो केवल पेटके लिए रोटी चाहता हू और वह ईश्वर मुझको दे देता है। मुझे तो मुक्तप्राप्तके बारेमें कुछ पता ही नहीं था। इसके अलावा मैंने किसीपर इन्शान तो लगाया ही नहीं। एबीटर बड़े आदमी हैं। वे अगर ऐसा समझते हैं कि मैं जो कुछ कहता हू वह सही नहीं है तो उनको क्या परवाह पड़ी थी ! मेरे-जैसे कितने ही कहते फिरते हैं। अगर मुक्तप्राप्तके बारेमें पतलीसे मेरी बातें हुई हैं। उन्होंने मुझे बताया कि बिलगा हमसे होता है हम मुसलमानोंको बर्बाद करते हैं। अगर हम हर जगह तो नहीं पहुँच सकते। मुस्लिम बीमियोने जब रोब हिंदुओंको गांधिया देने और उनको सतानेपर कमर कस भी हो सब कहीं-कहीं हिंदू भी भिन्न जाते हैं। हम जहाँतक होता है सबके साथ इन्साफ करते हैं। पतलीने यह कहा है कि यहमुत्तेज्वरने हिंदुओंने जो किया वह अच्छा नहीं किया। और अलबारी समानरोंने

अनुसार तो युवावस्था में मृत्यु के पीछे मैनाघोंतल के पन-प्रियमल के कामकी सगहना की है।

परन्तु मैं 'जॉन' के एडीटर माह्वरी के रत्ना बाना है कि अगर यह मान भी लिया जाय कि उनकी मृत्यु जॉन की है और जॉन के जो कुछ कहा वह कोई बेद-बाक्य नहीं है, तो भी 'जॉन' नहीं मरता कि अगर मृत्यु-प्राप्त में एक युवावस्था का मना गठना है तो जॉन के मृत्यु में निश्चय ही पञ्चाशत् वर्ष हिटलरों के काटे जाय। मैं तो यह देखने के लिए जिज्ञासु बना था कि हम उस मजहबी गुणगारी के लिए कम जाय। हमने पाते किनी भी मजहब के जन्म लिया हो, अगर हमें तब किस्मानी होना चाहिए। अब यह हो जायगा तभी हम अपने देगरी आजादी समय पर मरेंगे।

'जॉन' के एडीटर अगर सचमुच ज्वाला की निरमल बाला चाहते हैं, तो मैं जानता कि हमारा वह तरीका नहीं निरमल। ज्वाला बिना माह्वरी के रहने का मकसद है, मैं तो जॉन के माह्वरी के पीर ज्वाला-बाहरीकी भी कहता रहता हूँ। ज्वाला-बाहरी के रहने और करने के अगर फर्क हो तो वे मते ही अपने घर के पड़ते बने रहें, जैसा कि तो वे बचपना है। ऐसा कहकर मैं ज्वाला-बाहरीकी जोई वाली बोले ही जाता हूँ। अगर 'जॉन' के एडीटरने मैं इसका मकसद कहता कि उनकी कलमों को बहर है उनको वे छोड़ दें। राष्ट्रीय पत्रों में भी कभी-कभी मनी-जरी बातें आ जाती हैं। पर अगर सब मिलकर आपकी कलमों की खबरें न छापें, तो मैं कहूँ कि हमने एक बड़ा भारी काम कर लिया।

३ ७३ :

१६ जुलाई १९४०

भाइयो और बहनों,

आज सक्रिय कमेटीकी बैठक बहा हुई थी, परन्तु उसमें ऐसी कोई बात नहीं हुई जो मैं आपको बता सकूँ, क्योंकि उसमें कोई बात छपने

लायक बात ही नहीं हुई। एक बातकी ओर मैं आब आपका ध्यान दिखाना चाहता हूँ और वह यह कि कांग्रेसी लोगोंमें आब ऐसी बेसयी, या इन्ने गदबी कहना चाहिए, पैदा हो गई है कि किसी-न-किसी तरह कांग्रेसकी माफ़ी ऊपर लाने चाहें। अगर कांग्रेस केवल मुट्ठीभर लोगोंकी होती और वे ऐसी इच्छा रखते, तब तो बात समझने आने लायक थी। परन्तु कांग्रेसमें तो करोड़ोंकी तादात्म्य लोग हैं और यदि वे सब-के-सब ऐसी इच्छा करें तो हकूमत तो मर जायगी। गीकरी को ही सरफ़के सोव किया करते हैं। एक तो वे जो और सब सरफ़से नाबार हो जाय और दूसरे वे जो अपने सब स्वार्थ छोड़कर सेवाकी दृष्टिसे ऐसा करें। चूँकि कांग्रेसके हाथमें सासनकी बागडोर था नहीं है, इसलिए करोड़ों रुपयेकी आय और व्ययका हक भी उसको मिल गया है। अगर सब कांग्रेसी यह समझ लें कि कांग्रेस जो धर्म करे उसमेंसे उनके पाले भी कुछ पटना चाहिए और कर-दाता यह मान बैठें कि चूँकि कांग्रेसके हाथमें सत्ता है इसलिए अब कर देनेकी कोई बटारत नहीं, तब कोई काम नहीं चल सकेगा। इसका मतलब तो यह हुआ कि हम अपना धर्म तो भूल गए और धर्मरुकी अपना रहे हैं।

आयकल मेरे पास तार-वर-तार था रहे हैं। मैं वह नहीं कहता कि मेरे पास ही वे तार था रहे हैं। बिनके हाथोंमें हकूमत है उनके पास तो और भी अधिक तार था रहे होंगे। उनमें सिखा है कि हिन्दुस्तानमें गो-बध रकना चाहिए और वह भी ऐसी गायोंका जो दूध देती है तथा हममें बसाने लायक बैलौका। तार भेजनेवालोंको शायद यह मासूम नहीं है कि मैं जब बलिष्ठ भक्तीकाने था तब भी गायका पुजारी और उसका मत्त था, परन्तु जिसकी मक्ति हम करते हैं उसे हमारी रक्षा करनी चाहिए या हम उसकी रक्षा करें? अगर हकीकत तो यह है कि जो अपनेको गो-रक्षक कहते हैं, वही गो-भक्षक हैं। वे वही समझकर मुझे तार देते हैं कि मैं बग़ाहरलाश या सरदारसे ऐसा क़ानून बनानेके लिए कहूँ, परन्तु मैं उनसे नहीं कहूँगा। मैं तो इन गो-रक्षकोंसे कहूँगा कि आप क्यों व्यर्थ इतना पैसा तारोपर खर्च करते हैं? उस पैसेको गायोंपर ही क्यों न खर्च करें? अगर आप नहीं खर्च कर सकते तो

उमे मेरे पास भेज दें। मैं तो यह जानूँगा कि गायत्री पूजा करनेवाले भी हम हैं और उनका सब करनेवाले भी नहीं है। गायत्री तो एक काम का तो है और बैलौपण इत्यादि बहुत काम करने हैं कि उनकी गङ्गा-ही-गङ्गा बेगनेमें जाती है। सबकीमें भी बीजनी मगा लेने हैं और सब बैल नहीं समझा सब करने करने में मना देने हैं। ऐसे जो लोग हैं उनको यह करनेका क्या हक है कि गौरीजी बदलीनी चाहिए। प्राचीन योग्यता तो माता हिन्दुओंके ही करोमें बना है। वे क्यों बनायेको हक उन्हें बेच देते हैं? हिन्दू तो कम रूप देनेवाली गायत्री मरीदेगा नहीं, बाह्य पीछाभावासे अने ही छगीर हैं, क्योंकि उनके पास तो अन्तरिमा पैसा होता है। सब बाकी गाय कुछमानेमें ही जाती है। उनके अन्तरिमा बाव कोई बनाया तो करने नहीं गया है। हम जो ये बड़ी गाय है और बड़ी १५ प्रयत्नमें बाव करनेवाले हैं। जैसी दुर्बल गायें मैं मान हिन्दुमानमें देखता हूँ वेनी मैंने बुनियादे किन्ही हिस्सेमें नहीं देजी। हम तो यहा अपनेके नामपर ही अर्चन कर रहे हैं। सरसाग या अनाहस्तात कामून बनाकर इस गौरीजीको सब कर दें ऐसी नीय नहीं है। कामून तो अजार्कि निर्माण भी बनाए गए हैं, क्योंकि हम तो बाहिर उनकी भी चाहिए बा। उस वक्त भी हम देनेवाली बायोका सब सब या और वह सब अगह ही करता है। यह तो पाकिस्तानमें भी होनेवाला है, क्योंकि हम तो उनकी भी पीनेको चाहिए।

मुझे कुछ प्रश्न पूछे गए हैं जिनके जवाब इस प्रकार हैं—

प्रश्न - अभी हमने गुना है कि जो हमारा राष्ट्रीय फ्ला होनेवाला है उसके एक कोनेमें नूनिबन बैन होगा। यह केवल गुनी हुई और अन्त-बादोकी पदी हुई बात है। अगर वह सब है तो हम उस फ्लेको फल ठावेमें और उसके पीछे अपनी जान तक देंगे।

उत्तर - अगर हमारे फ्लेके एक कोनेमें नूनिबन बैन लगाया गया है तो क्या गुनाह किया? गुनाह अगर किया होगा तो अनेकोने किया। उनके फ्लेका क्या होय है? अनेकोनी खुदी भी तो माप देखिए। वे स्नेहकासे आपने हाथमें बायबोर लेकर बा रहे हैं। किसी खुदीकी बात है कि इतना बड़ा विश्व विश्वमें जारी अस्तित्वको उन्होंने फल दिया, पार्सी-

मेंदने पास करनेमें एक सप्ताह भी नहीं लगाया। एक जमाना यह था जब कि हम लोगोंके मित्रते करते रहनेपर भी छोटेसे बिल पास होनेमें भी एक-एक साल लग जाता था। उस बिलमें उन्होंने कोई सफाई की ही या नहीं, यह तो बाबने तबसे ही पता चलेगा। मगर यूनिजन बैंक रखनेमें तो हमारी शरारत ही थी। हम अपने सबसे बड़े दरवानके तीर-पर जहाँ आउटवेटनको रखा रखते हैं। वह पहले इंग्लैण्डके बाबसाहका नौकर होता था मगर अब हमारा नौकर है। जब हम उसको अपनी नौकरीमें रखते हैं, तब एक कोनेमें उसका फटा भी रक्त भेते हैं तो उससे हिंदुस्तानके साथ कोई बेवफाई नहीं होती।

पर यह तो मैंने आपको अपनी राय बताई है। मगर मैंने आज यह सुन लिया है कि यूनिजन बैंककी जो बात थी वह हमारे फटेमें नहीं होनेवाची है। मुझको तो इस बातका बर्ह होता है कि काब्रेसी नेताओंने अपनी सबाखा क्यों नहीं दिखाई? हम उससे असेबोने के साथ अपनी मित्रताका सबूत देते। आज अगर मेरी वैसी ही बजती वैसी पहले बजती थी तो मैं उन लोगोंको बाटनेवाला था। आखिर हम क्यों अपनी इन्सामियस और शरारतको क्यों छोड़ें?

: ७४ :

२० जुलाई १९४७

आइयो और बहाने,

मुझको कुछ जोब ऐसा सुनाते हैं, और सुनानेका उनको हक भी है, कि मैं आजकल ऐसी बातें कहता हूँ जिसमें लोगोंका उत्साह नहीं बढ़ता। वे कहते हैं कि जिस आजादीके लिए आप लड़ रहे थे वह तो मिल गई और राजनैतिक आजादीके साथ-ही-साथ आर्थिक आजादी भी मिल जायगी। यह सब कुछ होनेपर भी मैं आजादीके दिन, अर्थात् १५ अगस्तको खुशी नहीं मना सकता। मैं आपको बोझा देना नहीं चाहता, इसलिए मैं बाहिर यह बात कह रहा हूँ। मगर मैं आपमें यह नहीं

कह सनता कि आप भी लुगो न बनाए। अगिर नव गय बेरी नगीरे
 मुताबिक थोड़े ही होने हैं। मैं तो हिन्दुस्तानके दुकटे कगला भी नहीं
 चाहता था, अगर वे होकर गये। अब वे ही गए तो उनमें लिए रोना
 क्या? अगर हमने भी बुरी चीज हो जानी तब भी मैं नहीं रोता।
 हिन्दुस्तानके दुकटे होनेका जो दुःख आपकी है उसमें अधिक मुझमें होता।
 मेरी मारी बिदगी लटकाई मछनेमें बीबी है या यह रहित नि जंग माग
 जीवन करीब-करीब बागी रहा है। नर ऐसे आदमीको मेला कैसे था
 मरना है? अब मोघानामीमें गया नव मैंने कहा रोने हथौते धावू
 मुण दिए। मैंने उनको बताया कि दो लोग मर गए उनमें निर मेला
 क्या? परन्तु दिन नोगोते हाथोंने हमने बमटोम मीसी है वे बहुत बड़े
 आदमी हैं। वे अब कहने हैं कि 'बुरी मर्यादा वाली बाहिर सब आपकी
 वह मरानी ही चाहिए। यह न मोर्ते कि शाही क्यों नहीं खुशो बनाता।
 अगर जोई न बनाया बाहे तो कलम किमीको मजदूर नो करनी नहीं,
 परन्तु बेरी अपनी यह राय है कि वह दिन लुगो बनानेके लिए नहीं है।
 हमका मतलब यह नहीं है कि अजब बाहरे जायने नहीं। १५ अगस्त-
 तक तो बहुतने गोरे धपमर वह बंग डोड चुकेंगे। जो रहेंगे नी, तो
 वे हमारे मुआफे बनकर रहेंगे। अब उनकी भी नियुक्ति करनेमें न
 होकर महाने हथा करेंगी।

अगर एकीकन तो यह है कि आप जो आजादी हम मिली है वह
 हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनोंको आपसमें लड़ाई मछनेका मामल भी
 मान बेती है। तब हम उन दिन बिना-बणी क्या बताए? मैं तो उन
 दिन आजादी मिली समयका अब कि हिन्दू और मुसलमानोंके बिलोली
 मफाई हो जायगी। अपनी पचासके कुछ मुस्लिम-लीगी भाइयोंने यह
 बमकी बी है कि अगर नीला-बनीकले अपना फैसला, जैसा हम चाहते
 हैं, वैसा न दिया तो हम बख्तर करेंगे। निम्न जाई नी हसी तरफनी
 बमकिमा वे रहे हैं। अब हम सब किसीको अब मान खेते हैं तो वह
 जो फैसला वे खेते समूह कर लेना चाहिए। 'बकके सेंगे पाकिस्तान'
 और 'बकके सेंगे सिन्धुस्तान'—यह नीक हममेंने कम बालेवाली है?
 मैं तो नेकब एक ही बड़ाई जानता हू और वह मर्यादाही लड़ाई है।

उस जटाईसे आत्म-बुद्धि होती है। वह जटाई भगवद् बुनियादमें हमेशा चलती रहे तो भ्रष्टा ही है। मैं अपने हिन्दू, सिक्ख और मुस्लिम भाइयोंसे कहता हूँ कि जब हमने सीमा-कमीशनको अपना पक्ष मान लिया तो उसका फैसला मानना उनका बर्मे हो जाता है। अगर प्राणकी प्राणहत्याने मुझे जब वह सुगति नहीं मिलती तब दुखी किस बातकी ? असेबोका यहासे बसे जाना ही मेरे लिए काफी नहीं है।

अष्टादश भी हिन्दुस्तानकी तरह आबाद हो रहा है। वहाके नेता जनरल मू भाग-सागने आधुनिक बर्माको जन्म दिया और उसे आजादीके दरवाजेपर तालकर छोड़ दिया। वह सत्याग्रही नहीं था तो उससे क्या हुआ ? वह एक बहादुर लड़ाका था और उसीके फलस्वरूप प्राण बर्मा आजाद होने का रहा है। एक समस्त विरोधने उनको और उनके बाद अन्य साधियोंको कत्ल कर दिया, यह कोई छोटी बात नहीं है। हम चाहे उनसे कितनी ही दूर हो, अगर हमारे लिए यह बड़े खूबकी बात है। अगर ऐसी बटमाए होती रही तो दुनियाका क्या हाल होया ? हत्यारे सचमुच मुट्टेरे से, ऐसा मुझे नहीं लगता। मैं बर्माने काफी रहा हूँ। रगून और माकले प्रादि स्थान सब मेरे देखे हुए हैं। वहा बुद्ध-धर्म चलता है। बर्माके लोग अधिकांश बुद्ध-धर्मको मानते हैं। जहा बुद्ध-धर्म प्रचलित है वहा ऐसे दून-जन्मर क्यों ? इन हत्याघोर्में सुटेरपन नहीं, बल्कि उनके पीछे कुछ पाईबाबी रही है। इन तरहकी मजा-योंने दुनियाका नस्यानाम कर दिया है। इस तरहने तो जो हमारे अत्यासिक्त हैं वे छोकर हमारा दून करने लगे तो कैसे काम चलेगा। बर्मा जब आजादीके दरवाजेमें दाखिल हो गया है तब ऐसा होना बहुत दुःखदायी बात है। हम ऐसे जातिन क्यों बन जाते हैं ?

मुझे आशा है कि हिन्दुस्तान हमने मजक लेगा; क्योंकि यह न केवल बर्माके लिए बल्कि सारे दुनिया और नगरोंके लिए एक दुःखद घटना हुई है। हम सब यह प्रार्थना करें कि ऐ भगवान्, बर्माने जो नाम है वे हमारी ही तरहने आजादीके लिए सत्य गये हैं, उनको तत्त्व दुःखमें सात्वना दे और मृत व्यक्तियोंके परिवारोंको योग्य मात्र राशेरी मिले दे। जिन लोगोंने दून दिया है उनके दिनोंकी भी मन्त्रोन्नी कर।

‘ऑन’ अखबारने एहीदरने धारने माने के दो मुन्नार मान लिए हैं। यह पत्रकर मुन्नारो सज्जा गया। वे बतने हैं कि हम गांधीजी दण-मीनान दिसाने हैं कि पाकिस्तानमें हिंदू और मुसलमान सब सामाने दोस्ताना सीरण रहने। उनकोने गुरु बान और निगी ?। वे बतने हैं कि अखबारनवीनोकी एक कमेटी बना है। यह कमेटी नाप्रदायिक नवानारोंकी जाप करे और उनको बाह उले प्रकाशित रहे। मुन्नारो गवोजन करी हुए वे कहते हैं कि तु भी तो अखबारनवीन हैं। उन कमेटीका सम्पत्त बन जा। मैं उनसे कहना चाहता हू कि मैं तो लाचार हू। मेरे पास पक्का नहीं है। दूसरे, वे उल्लेख करते लायक नी नहीं रह गया हू। इसक अनाया, मैं जान गया और कल बहा, मैं नेने अपनी सदारत का सवदा हू ? अगर वे दिससे कुछ करना चाहते हैं तो वे और नवानारोंके मिलकर कर सकते हैं।

मैं अखबारें फिर कहता हू कि जब पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनोंमें रहनेवाले धारमसमक यह कह केने कि हम बड़ा बहुत गुप्त हैं, सब मैं कह्या कि अब हमारे पास अपनी आजादी का बर्त है और हमको उसकी खुशिया मगानी चाहिए।

: ७५ :

सोमवार २१ जुलाई १९४७

(निश्चित सदेश)

पाकिस्ताननिवासी एक बार्द लिखते हैं—‘जाप लोग पत्रक अगस्तका मिल मनानेकी बातें कर रहे हैं। क्या आपने नोचा है कि उसे हम हिंदू कैसे मगाने ? हम तो सोच रहे हैं कि उल्लेख हमारे हाथ कैसे होने और हमें क्या करना होगा ? इस बारेमें कुछ कहने ? हमारे लिए तो यह दिन मुसीबतका समय काजना होगा, अलब नवानेका हरमिष नहीं। वहाँके मुस्लिम जायसे ही हमें कर रहे हैं। क्या जाने हिन्दुस्तानके मुस्लिम क्या समझते होने ? क्या वे नी नवमीस नहीं होने। हम दोनोंको

यहातक डर लग रहा है कि बड़े पैमानेपर लोगोंको मुस्लिम बनानेका यत्न किया जायगा। थाप कहेँगे कि बर्मेकी रक्षा सब अपने-आप करें। यह सम्पादीको लिए नसे ही सम्भा हो, गृहस्थीके लिए नहीं।'।

बिना साहब अब तो पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बन रहे हैं। उन्होंने कहा है कि हरेक गैर-मुस्लिमके प्रति ऐसा ही बरताव होगा जैसा मुस्लिमके प्रति। मेरी सलाह यह है कि हम उनके अपमानपर भरोसा रखें और नार्ने कि बड़ा गैर-मुस्लिमको प्रति कुछ भी बुरा बरताव नहीं होगा और न मुसलमानोंके प्रति हिंस्तानमें। मेरा ख्याल तो ऐसा भी है कि अब जब वो राज होवे हैं तो हिंस्तानको पाकिस्तानसे अबाध मानना होगा।

मैं प्रसन्न बरूप मानता हू कि १५ अगस्त किसी तरह उत्सव मनानेका दिन नहीं है, वह दिन प्रार्थनाका और असाविचारका है। लेकिन अगर दोनों सनक जाए तो दोनोंको आपसे दोस्त बननेकी सखबीय करनी चाहिए। या तो १५ अगस्तको सब भाई-भाई मिलकर खुशी मनावें या मिलकूल नहीं। आभादीकी खुशी मनानेका दिन ही सब हो सकता है जब हम अपने बिससे दोस्त बने। लेकिन यह तो मेरा बिचार है और इस बिचारमें मुझे कोई साथ देनेवाला नहीं है।

फिर वह भाई पूछते हैं कि कष्टों मारे अगर सब वा बहुत लोग पाकिस्तानसे निकल जाए तो उनको हिंस्तानमें आशय भिसेगा या नहीं ? मैं तो मानता हू कि ऐसे लोगोंको जरूर आशय मिलना चाहिए। लेकिन बनिज लोग अमरपुटाने लगते रहना चाहें तो मुसीबत होती। ऐसे लोगोंको अगर मिलनी चाहिए और कामके बरने काम भी। मेरी सम्मीह तो यही रहेगी कि कोई गैर-मुस्लिम डरके मारे पाकिस्तानका अपना बतन नहीं छोडेगा, और न हिंस्तानका कोई मुस्लिम हिंस्तानका अपना बतन छोडेगा।

वह भाई यह भी पूछते हैं कि वो जमीन न मकान पाकिस्तानमें कूटेंगे उनका क्या होगा ?

मैंने तो कहा है कि जमीन न मकानका बाजार-बाज पाकिस्तानी सरकारको देना चाहिए। रिवाज तो यह भी है कि ऐसे कामोंमें दूसरी

नरकार बख्त नी वेती है। दहा तो हिंदुस्थाननी सरकार होगी। बेल्जियम ने क्यो नाह कि नाममा बहाल कर्ना। पाकिस्तान सरकारका छत्र होगा कि ऐसे लोगोंको अपनी जमीन व जमाना बामाद-बाम दे।

वही नाई फिर पूछने है कि आप तो अपनेको व्यावहारिक धार्मिक-वादी मानते हैं। काबल जो बन रहा है वो तो बहिष्मान का है। आततायीके प्रति अहिंसा कत सज्जी है क्या? यदि हा, तो कैसे?

मेरी जोगिया मो रहती है कि मैं अपने धार्मिको डक तरह बनाऊ कि वह काममें आ सके, बाहे नके ही मैं हमेशा सपना व सपना। आततायी किने कहे? नन् अहारावने मिमने आततायी माना है उन सबका सब आज नहीं होता है। आज तो सब-जायका प्रविष्ट करनेकी चेष्टा होती है। फिर मुबारक लोग यह कहते हैं कि दक-नीति हलकी चाहिए। आततायी नी बीनार माने काम धीर जैसे बीनारोका इलाक होता है जैसे इन आततायियोंके लिए नी धम्पताय बनाये जाय। कहनेका मतलब इसका ही है कि आत्मके नामने जो बनता है सबको शान्त व माना काम धीर आत्म वही माना जान किने कम-बेश हमेशा होता रहे। मृद-मृगने नीति बनती रहती है। बिमने कर्क नहीं हो सकते ऐसे जानून बहुत कम होते हैं। और आततायीको डक डेनेका काम हमेशा कमी नहीं होता है। यह काम पचायतना या हलूनतका होता है। हलूनत जानून बनाती है और डकने मुताबिक इलाक करनेके लिए अदायत बनती है। ऐसा न हो तो इन सबके आततायी बननेका डर होता है। बनने को अमानक खून हुए वे अमानक थे; बेल्जियम अब हम सबने कि वे मिमानी थे। मुने बनील है कि बिमने उन्हें खून किया वे उनके खिलाफ आततायी थे। हमारे आततायियोंने मेरा कहा नहीं माना था। ऐसा उन्होंने अपने बिलसे मुझको कहा है कि बिमका खून उन्होंने किया वे आततायी थे। अपनेको उन्होंने कभी आततायी नहीं माना था। इसी कारण मैं कहना कि जो आततायी अपने हाथोंमें जानून होता है वह गुलाम बनता है। वह जो लोगों दिया करता है। अहिंसाने अगर डक हो सकती है तो वह निरंक जोनोंकी बनाई हुई पचायतसे। आज जो बनतमें हो रहा है वह अत्याचार है, आततायीपन है।

: ७६ :

२२ जुलाई १९४७

माइयो और बहनो,

आज मेरे पास एक बात आया है। इस प्रकारकी जो चीजें मेरे पास आती हैं उनका खुसासा मैं यहाँ कर देता हूँ। जहाँ मैं जाता हूँ—“आजकल आप जार्ज माउटबेटनको बहुत बड़ा रहे हैं। वे कोई बलती ही नहीं कर सकते, ऐसा आप कह रहे हैं। लेकिन आपको याद होना कि आपने दूसरी राउंड टेबुल कान्फ़ेसमें चीख-पीसकर यह कहा था कि जब हिन्दुस्तानको आजादी मिल जायगी तब माइसराम साहबका जो घर है उसमें हरिजन वासक रहेंगे या बड़ा अस्पताल खोला जायगा। आज आपको इस तरहसे जार्ज माउटबेटनको बहाना उस चीजसे मैं नहीं आता।”

मैं कभी किसीको नहीं बहाना। मैं तो मुझे उनसे कुछ चाहिए और मैं उनको मुझसे। मुझको तो खिताब भी नहीं चाहिए, और दूसरी चीज उनके पास देनेके लिए है ही क्या? मुझपर इज्जत तो यह लगाया जाता है कि मैं अपने आशयियोंको केवल डाँटता ही रहता हूँ और उनकी कभी तारीफ़ नहीं करता। बहालक जार्ज माउटबेटनका सबब है, अभी तो उसी घरमें—घर तो क्या एक किता कहना चाहिए—उनको रहना चाहिए। अगर मैं उनको बाहर बसीट सकूँ तो मैं उनको अपने पास ही रखूँ। अगर उनको कहा राजाघोसे मिलना है और भूतकालकी गलतियोंको उन्हें सुस्त करना है। उन गलतियोंसे जो पुष्परिणाम हो सकते हैं उसको उन्हें मिटाना है। गवर्नर-जनरल भी तो उनको इसीलिए बनाया गया है कि वह बहुत तेजीसे काम करेंवाले हैं। उनको यह पद देनेका मतलब उनकी खुशामद करना नहीं है। और फिर क्या बहालकालकी और सरकार पटेल किसीकी खुशामद करनेवाले हैं? इसने मुझे कोई बलती नहीं दिखाई देती। अगर वह बहमात्र ही है तो उसका नतीजा उनको मिलनेवाला है। मेरे ६० वर्षोंका अनुभव तो यही बताता है कि जो किसीके साथ बोझ करता है, वह किसीका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह केवल

अपना ही बुरा करता है। अगर कभी मैं नहीं जानता कि जार्ज माउटेबेटन साहब उसी फिलेमें रहे थे या कहीं और, या वहाँ सम्पत्तय बनवा। उस बारेमें तो ब्रिटेन सरकार की और सरकारों ही मायूस होना। मुझे इसका कोई ज्ञान नहीं।

एक दूसरे जार्ज लिखते हैं कि जर्जरका जो विमानन हो रहा है और उसमें जो ब्रिटिश सरकार रहे बायसे उससे क्या सुम सहमत हो? इस जार्जको पहले तो मुझने यही पूछना चाहिए कि जो जर्जर रहनेवाला है, क्या उसने ये सहमत है। जर्जरको रखनेमें, चाहे वह कैसा और कितना ही व्यो न हो, येरी नबर हो ही नहीं सकती। अगर कुछ की बात तो यह है कि आज हम पुराने-बैने नहीं रहे नए। पुराना जमाना बदलकर अब नया शुरू हो गया। मैंने तो यह माना था कि हमारे लोग सब अहिंसक हैं। सबने मेरा मतलब है एक बड़े पैमानेपर।

परंतु अब ३२ वर्षके बाद येरी बातें खुली हैं। मैं देखता हू कि जनसम जो चलती थी वह अहिंसा नहीं थी, बल्कि अस-विरोध था। अस-विरोध यह करता है जिसके हाथमें हथियार नहीं होता। हम साम्राज्य-से अहिंसक बने हुए थे, अगर हमारे दिमागमें तो हिंसा नहीं हुई थी। अब अब अनेक स्थाने दृष्ट रहे हैं तो हम उस हिंसाको आपसमें लड़कर खर्च कर रहे हैं। मैं तो केषर इसका ही जानता हू कि मेरे दिमागमें कभी हिंसा नहीं थी। अगर जो दूसरे लोग हैं उनका ये क्या करू। वे कहते हैं कि अंग्रेजोंके बगल हमने अहिंसा रखी। हम अब भी अहिंसा रखें, यह पृथिवि तरफ़से अच्छा है? इसमें शोक येरा ही है। ३२ वर्षतकका जो विचार था वह शोकपूर्ण था। अगर यदि वे जार्ज मुझसे पूछें तो मैं आज भी नहीं कहूंगा कि जर्जर रखनेमें मैं मरीक नहीं हू। क्या हिन्दु-धाममें अहिंसक जीवन-राज्य होता है? बवाल, पवाल, बिहार जहाँ बेसो, नहींने लफ्फरणी मांग पायी है। कहीं हिन्दुओंको अपनी रक्षाके लिए लफ्फर चाहिए तो कहीं मुसलमानोंको। ऐने बेहास है हम आज। हमलिए लफ्फरका किस तरहसे बटवारा होता है या नहीं होता इसका मुझे कुछ पता नहीं। जिस जीवनमें येरी बिलचस्पी ही नहीं उसमें मैं क्यों अपना बगल खर्च करूँ ?

आज बार बहनें मुझको इस बातके लिए मुबारकबाद देने आई थी कि तिरंगा फडा जिसमें चर्रोंका चक्र मौजूद है, अब सारे भारतका राष्ट्रीय फडा बन गया है। मैं तो उसमें अपने लिए कोई मुबारकबादी नहीं देखता हू। मुझे बताया गया है कि उसमें चर्रोंके स्थानपर एक चक्र है। यदि वह चक्र चर्रोंका ही है तो, तब तो खैर है और अगर नहीं है तो भी मुझे उसकी क्या पड़ी है। अगर उन्होंने चर्रोंको फेंक दिया तो फेंक दे, मेरे दिलमें और मेरे हाथोंमें तो वह रहेगा ही।

एक भाईने बताया कि चर्रा उसमें है और दूसरे कहते हैं कि चर्रा तो अब खत्म हुआ और तेरे बिना रहते हुए ही वह खत्म हो गया। मैं नहीं जानता कि चर्रा है या खत्म हो गया। अगर प्रतीति जरूर जानता हू कि अगर चर्रा फड़ेमें लगा भी दिया जाता और वह लोगोंके दिलोंमें नहीं है तो मेरी दृष्टिसे फडा और चर्रा दोनों बचाने सामक है। परन्तु अगर चर्रा फड़ेमें नहीं है और लोगोंके दिलोंमें है तो मुझे फड़ेमें चर्रा न लगानेकी कोई चिंता नहीं है। मैं तो यह चाहता हू कि सारे देशका एक फडा हो और हम सब उसको सजानी दें। मुझको यह सुनकर अच्छा लगा कि आत्म विमान-परिपक्वने बीजरी सतीकृष्णमा और मोहम्मद सादुल्ला दोनोंने इस फड़ेको सजानी दी और यह भी कहा कि मुस्लिमका जो फडा होगा उसके प्रति वे अप्रभार रहेंगे। अगर दिलसे उन्होंने ऐसा किया है तो यह अच्छा लगन है।

मेकिन सिमहटसे जो सार थाया है वह बहुत खतरनाक है। वहां अनमत-समूह तो हो गया अगर पास मसीतक बस रहा है। क्यों वहांके मुसलमान अपना मिर्चाब जो बैठे हैं? वहां जो राष्ट्रीय मुसलमान हैं उनकी हत्याक क्रिया जा रहा है। सारमें मिर्चा है कि वहासे किसीको देखनेके लिए तो नेब दो। मैं किसीको नेब सकता हू। या तो कपसानी-की नेबें या जवाहरलालजी नेब सकते हैं। मैं चाहता हू कि मुझे वहासे अब नोआवासी बसा जाना चाहिए। सिमहट तो उसके नजदीक ही है। अगर मैंसे जाऊ, मैं तो वहां रूंद पड़ा हू। मैं उत्सवण करके जा भी नहीं सकता।

मैं जानता हू कि पत्रमें जो लिखा है उसमें एक सच भी छूट नहीं

है। उसने मेकनेवालोंने अपने वस्तुवस्तु भी दिए हैं। यह भी बताया गया है कि जनमतके बाद एक इस्लाम नस्तीको भी मुसलमानोंने जमा दिया। यह सब धर्मकी बात है। एक तरफ तो हम देखते हैं कि खलीफ साहब और आहुत्ता युनियनके अग्रेजी सलाही करते हैं और दूसरी तरफ पाकिस्तानमें ये बटनाए हो रही हैं।

फरानीसे एक और बात आया है जिसमें एक जगह भावनी लिखते हैं कि पाकिस्तान सरकारने उनके मकामपर कब्जा कर लिया है। यह लिखते हैं कि जब मैं खुदा कहा ? मैं तो बिना साहब या बहाके और लोगोंने कहा है कि अगर ऐसा कुछ होता है तो सब प्रार्थनाकी बात है।

ऐसे भीकेपर तो हमें खुदिया भवानेके बजाय यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे ईश्वर, हमको इस कष्टमेंसे छुड़ा दे और आवादीमें जो भिन्नता होती है उसको बखलेका मीका दे। उन आवादीका, जिसका, हम भवतक बजाव लेते रहे हैं, हमें स्थाप तो लेने दिया जान ? वास्तवमें यह प्रार्थना करनेका ही मीका है।

- -

: ७७ :

२३ जुलाई १९४७

माझी और बहो,

(आप प्रार्थना-अवयव किसी व्यक्तिने गानीबीको लिखकर यह पूछा, कि क्या आपने ईश्वरसे आशाकार कर लिया ? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—) हमारे बीच ऐसे मोठे बीजते हैं कि किसीके इतना यह देनेपर ही कि यह भावनी महत्ता है, उसे महत्ता मान लेते हैं। हमारे बेसमें महत्ता जगमा तो आसल मत हो गई है। मैंने तो आशाकार किया नहीं है, अगर कर लेता तो आपके सामने बोलनेकी कोई जरूरत नहीं रहती। मैंने तो ऐसी नस्ती की कि भवतक जो बीच बसती रही उसे भविष्य समझना रहा। जब ईश्वरकी किसीसे काम लेना होता है तो वह हमको मुँह बना देता है। मैं अपनीक जगमा बसा रहा। हमारे

बिनामे हिंसा नयी हुई थी और उसीका भाव यह नहीं था कि हम आपसमें लड़े और लड़े भी बहुत बहुविधता सीखते ।

आज जो मजदूर पाया गया है—‘साधो सनका मान साधो’—उसका मतलब है कि यदि मनुष्य काम और जीवको छोड़ दे तो उसको निर्वाण मिल सकता है । उसके भागी रामराज्य भी है । मगर वह रामराज्य ऐसा नहीं जैसा कि आज हमें मिल रहा है । आज तो हम रामराज्यसे करोड़ों मील दूर पड़े हैं । केवल अरेबोको जल जानेसे ही रामराज्य नहीं मिल जाता । आज तो रामराज्यकी मेरे जवानी कोई निशानी नहीं है ।

आज तो मैं नमकके बारेमें कहना चाहता था । कुछ लोग कहते हैं कि जमीं तो सुनने नमकके लिए खड़ी कुचलक किया था और आज नमक नहीं मिलता और अगर मिलता है तो उसके लिए बड़ा खान देना पड़ता है । मुझको यह सब सुनकर अपना सिर झुकाना पड़ता है । लोग कहते हैं कि नमकपखरे कर तो उठ गया मगर हमको तो इसका पता नहीं चलता । नमकपर कोई राकल तो नहीं है, मगर और-बाजार तो है । आपारी लोग ऐसे व्यवस्था हैं कि वे नमकपर भी जफा निकालते हैं । मगर हम लोग भी आसानी से बच गए हैं । बेहारीमें बहुत-सी जगहें ऐसी हैं जहां लोग नुस्तके बराबर नमक पैदा कर सकते हैं । इस बातकी झूट तो उस जगह की मिल गई थी जब कि मेरा जार्ज हरमिंगसे समझीता हुआ था । अगर हम आसानी से जाने तो नमक अच्छा मिले और सस्ता भी । आज जो नमक बाजारमें मिलता है वह फिटिंगा बना होता है । इसका कारण नहीं है कि लोग खेदना नहीं करते । जेसमें मुझे मेरे हिस्सेका जो नमक मिलता था उसको भी मैं स्वयं साफ कर लेता था । हम आज हमने स्वीची हो गए हैं कि लोगोंको सस्ते भावपर नमक भी जानेके लिए नहीं दे सकते । जहां नरीबोको नमक भी जानेको नहीं मिलेगा, उसे हम रामराज्य जैसे मान लेंगे । नमककी केवल मनुष्योंके लिए ही नहीं पशुओंके लिए भी जरूरत होती है । उर तो इस बातका भी है कि चूक हिंदुस्तानके दो हिस्से हो गए हैं और दोनोंको पैसकी जरूरत होगी इस-लिए वे नमकपर कर न लगा दें । मगर क्या वे इस कदर पातल बन

जायने कि लोगोंको धमक नी जानेको नहीं देने ? अगर ऐसा हुआ तो निश्चय ही हमें यह आबादी बहुत गहरी पड़ेगी ।

१ ७८ :

२४ जुलाई १९४७

माइयो और बहो,

मैं कई बार पहले भी इस बातकी ओर ध्यान दिया हुआ है कि जब हम आर्यना करने जाते हैं या कोई अन्य पवित्र कार्य करने बैठते हैं तब हम सिगरेट या बीड़ी नहीं पीते । ईसाई लोग जैसे खूब सिगरेट और मद्य पीते हैं, अगर सिगरेट-मरनें देने कभी किसी ईसाईको मद्य या बीड़ी पीते हुए नहीं देखा । मस्जिदों और कुम्हारोंमें भी नहीं निम्न पसता है । फिर इस स्थानको तो हम मथिर, सिन्धुमार, मस्जिद जो चाहें नाम मकते हैं, क्योंकि हमारी आर्यनामें सब मजहबोंसे मुम-मुम हट नीचें भी हुई है । आप बीड़ी पीना छोड़ दें तो सबसे अच्छा हो, अगर मेरे कहनेसे आप छोड़नेवाले नहीं हैं, यह मैं जानता हूँ । तो भी, जिनको बीड़ी पीना है वे मलग बाकर पी लें । उसके समाना कुछ लोग आर्यनाके बीचमें ही बैठकर चल देते हैं । आवक उनको रस नहीं आता होगा । अगर रस नहीं आता तो क्या हुआ, हमारा मतलब तो ईश्वरका नाम लेनेमें है । आर्यनाका यह नियम है कि जबतक रात न हो और रात तब होती है जब मैं करता हूँ, तबतक कोई धार्मिक बीचमें बैठकर न जाए ।

चर्चा-मधने पास जो साध रखेकी कीमतके पुराने टगके तिरने फटे गले पड़े हैं । चर्चा-मध बहुत गरीब लोगोंकी मम्मा है । उनका मैं मर हूँ । उनमें जो लोग नीचरी करते हैं उनको भी बहुत कम पैसा मिलता है । जो उन्होंने पूछा है कि जो दो साम गपकेकी कीमतके फटे उनके पास दते हैं उनका क्या होगा ? तब और पुराने फटेमें कोई अतर नहीं है, केवल पुरानेकी गटे गूबगूबनी दे ही है । हमने चर्चा या, जब कि

इसने चर्खेका चक्र तो है, मगर मांस और तन्मूत्रा नहीं है। गया मज्जा बन जानेसे पुरानेकी कीमत किसी तरहसे कम नहीं हो जाती। जिस तरहसे एक बादशाह तो मर जाता है, मगर बादशाहत कभी नहीं मरती। वह हमेशा बनी रहती है। एक सिक्का पसट्टा है तो दूसरा सिक्का भी जाता है। मगर दूसरा सिक्का जानेसे पहलेके सिक्केकी कीमतमें फर्क नहीं पड़ता। मङ्गारानी विक्टोरियाके शासनमें स्वयं कुछ और तरहका था, जार्ज पंचमके समयमें कुछ और तथा अब कुछ और किस्मका है मगर स्वयंकी कीमत नहीं सोसट जाने बनी रही। अब दोनों मज्जीकी कीमत सबसक एक ही रहेगी जबतक कि गांधी-गान्धममें एक ही पुराना तिरंगा मज्जा बाकी बचा रहेगा। अब बिन बीमोके पास पुराने रुबे हैं वे उनको फाट न डालें और गांधी-गान्धमसे भी उसी रुबेको खरीदें ताकि वो जाल स्वयंकी एकम नष्ट न हो। मगर जानेसे चर्खा-चक्र गए सिक्केके रुबे ही बनाएगा।

आज मेरे पास दो मसाले भी गए हैं। एक माई लिखते हैं कि १५ अगस्तके बाद कांग्रेसका क्या होगा और उसका प्रोग्राम क्या रहेगा ? वे यह भी लिखते हैं कि जबतक कांग्रेसमें भावनी यह सपन लेकर शामिल होला या कि यह सत्य और अहिंसाके द्वारा हिन्दुस्तानकी आजादी प्राप्त करेगा, मगर अब जब कि आजादी मिल गई तब उसके बाद क्या होगा ?

कांग्रेसका क्या प्रोग्राम रहेगा यह तो कांग्रेस ही बता सकती है। मगर कांग्रेसके एक आधिनके नाते मैं तो इतना जानता हूँ कि जबतक वो हमारा काम हकूमतका सामना करेगा या। हम हकूमतके बागी बने और उसको हमने हटाया। हमने बाहरसे तो सत्य और अहिंसाकी बनाए रखा मगर हमारे भीतर वो हिंसा बरी हुई थी। हमने बोली बनकर काम किया। उसीका फल हम आज आपसकी जडाईके रूपमें भोग रहे हैं। आज भी हम अपने दिनोंमें लडाईका सामान तैयार कर रहे हैं और अगर यही सिनसिला जारी रहा तो हमें १८५७ के बरसों की अधिक भवानक रसतपासका सामना करना होगा। तब तो हिन्दुस्तान इतना बालक नहीं था और इसके अलावा यह केवल सिपाहियोंका बलवा था।

उसमें सिर्फ प्रार्थनोंकी ही हमने काटा था। मगर अतमें प्रार्थनी सस्करों बलवाह्योका सामना किया और उन्हें शिकस्त भी थी। लेकिन ईश्वर ने करे कि आज हमारे दिलोंमें जो जबाई नयी है वह उस हृदयक नयी जाय। यह केवल सत्य और प्रहिताकी दृष्टिसे ही नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानके हिन्दूकी दृष्टिसे, जिसके लिए बाबो बीन बीन गए और अनेक कष्ट जेसे, मैं यह सवाह दूंगा कि इस प्रकारकी तैयारी न करो। उससे न केवल तुम हिन्दुस्तानकी आजादीकी सोचोने, बल्कि उसे फिर पुनर्जाय बना दोगे। प्रार्थन, स्वयं, अमरीका या चीन कोई देश हमपर हमला करके हमें पुनर्जाय बना लेया। क्या आज यह देखनेवाले हैं कि १५ अगस्तको हिंदू और मुसलमान आपसमें सवे और सिख उनके बीचमें फसकर मर जाय? इससे तो मुझे यह पसर होना कि एक भूकंप या बाव और उसने इन सब बरकर मर जाय। यह जातेस पूरि मारे हिन्दुस्तानकी है, इसलिए ऊने चाहिए कि यह हिन्दू, मुसलमानों, पारसियों तथा अन्य सब जातियोंको सटुष्ट करे। मैं यह नहीं कहता कि आप मुसलमानोंकी बुझानव करे या खुद बुझविय बन जाय। बुझविय तो मैं कभी किसीको सिखाता ही नहीं हू। हम बहादुरीके साथ सबको जात करें, यही कायेसका मुख्य मोधान होना चाहिए।

मदति मैं हिंदी-साहित्य-सम्मेलनका दो बार सपर रहा हू, अगर फिर भी मेरा यह बाबा है कि हिन्दुस्तानकी राष्ट्र-भाषा हिंदी और बेव-जागरी बिधि नहीं हो सकती। आज हमारे बहुतसे कार्यकर्ता यह कहते हैं कि भाषी तो सब ऐसी-वैसी बातें करता है। यह तो हमेंसा मुसलमानोंकी बुझानवमें ही जगा रहता है। अगर बिना जाहूने भी दो नेकनकी बात कहते समय मुख्यर उर्दू भाषाको मिटानेका इस्मान जगाया था। आज तो मैं बोली भाषाभोका दुस्मान बना हुआ हू। अगर मैं बोलीका दोस्त रहता चाहता हू। ईश्वरने समने मेरा यह बाबा मजूर होना कि अगर हिन्दुस्तानका कोई सम्पा औरत्वाह या तो यह भाषी ही था। आज मैं काफी हिंदू-भाषको ऐने बता सकता हू जो न तो हिंदी जानते हैं और न देवनागरी लिपिमें लिख सकते हैं। अगर बहा हिंदू, मुसलमान ईसाई, पारसी और सिख सबको रहता है तो हिंदी और उर्दूके समनेसे

जो भाषा बनी है उसीको राष्ट्रभाषाके रूपमें अपनाना होगा। जो शब्द आप सब लोग बोझते हैं उनसे एक बुलब भाषा बन सकती है इसने मुझे कोई सबेह नहीं है।

यह्ना इंग्लैण्डियाके नेता बाहरियार आए हैं। वे नेहरूजी और बिना साहबसे मिलेंगे। हिन्दुस्तान तो उनको नैतिक मदद दे सकता है, जो कि किसी भी फीबी मददसे अधिक प्रभावशाली होगी।

एक असेबका बात आया है कि चूकि अब हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हो गए, इसलिये अब उसका कर्ना संसारके बड़े राष्ट्रोंमें नहीं हो सकेगा। मैं इस बातको नहीं मान सकता, बसर्ते कि दोनों टुकड़े दोस्त भा भाई-भाई बनकर रहे।

१ ७३ ।

२५ जुलाई १९४७

माझी और बहूनी,

आज राजेंद्रबाबूने मुझको बताया कि उनके पास करीब ५० हजार पोस्टकार्ड, २५-३० हजार पत्र और कई हजार तार आए हैं जिनमें गो-हत्या बाकानून बर करनेके लिए कहा गया है। इन बारेमें मैंने आपसे पहले भी कहा था। आखिर इतने तार और तार क्यों आते हैं? इनका कोई असर तो हुआ नहीं है। एक तार और आया है जिसने बताया कि एक माझीने तो इसके लिए फाका भी शुरू कर दिया है। हिन्दुस्तानमें गो-हत्या रोकनेका कोई कानून बन नहीं सकता। हिन्दुओंको न्यायका बर करनेकी मनाही है, इनमें मुझे कोई शक नहीं। मेरा गो-सेवाका बर बहुत पहलेसे लिया हुआ है, अगर जो मेरा बर्न है वही हिन्दुस्तानमें रहनेवाले सब लोगोंका भी हो, यह कैसे हो सकता है? इसका मतलब तो जो लोग हिंदू नहीं हैं उनके साथ जबरदस्ती करना होगा। हम पीछ-पीछकर कहते आए हैं कि जबरदस्तीने कोई बर्न नहीं बताया चाहिए। हम प्रार्थनामें हमें सा

कृपणकी मागत पड़ने है, परंतु जड़ि यही चीज मुझमें कोई जबदस्तीसे कसवधाना चाहे तो मैं कैसे नष्टूना ? जो आदमी अपने-आप मौकूनी नहीं रोकना चाहता उसके ज्ञान में कैसे जबदस्ती करे कि वह ऐसा करे ? भारतीय युनिफनमें उनके हिंदू तो हैं नहीं। यहा तो मुसलमान, पाप्मी और ईसाई आदि नयी लोग रहते हैं। हिंदुओंका यह कहना कि अब हिंदुस्तान हिंदुओंकी भूमि बन गई है, बिल्कुल गलत है। जो लोग यहा रहते हैं उन सबका इस भूमिपर अधिकार है। अगर हम यहा गो-रक्षा रोक देते हैं और पाकिस्तानमें इसका उलटा होता है तो क्या स्थिति रहेगी ? ज्ञान बीबिए कि वे यह कहें कि पुन मंदिरमें नहीं जा सकते, क्योंकि पुन मन्दिरोंकी पूजा करते हो, जो मंदिरोंके अनुसार बनिव है। मैं मन्दिरमें भी ईश्वर मानता हूँ तो, उसमें दूसरोंका क्या शोक करता हूँ। मत. अगर वे मुझे यहा जानेसे रोकेंगे तब भी मैं यहा आऊंगा। इस तरह मैं ईश्वरका जगत बच जाता हूँ।

इसलिए मैं तो यह कहूंगा कि तार और पत्र नेबनेका सिलसिला बंद होना चाहिए। इसबापेसा इनका बेकार बँक देना मुनासिब नहीं है। आखिर हम ऐसा सोचनेका बगल क्यों करते हैं कि वो पैसिया पोस्टकार्ड नेबनेमें कीज-सी कमी या बाती है। मैं तो आपकी मार्फत मारे हिंदुस्तान-की यह मुनामा चाहता हूँ कि वे सब तार और पत्र नेबना छोड़ दें।

इसके अलावा वो बड़े-बड़े हिंदू हैं, वे खुद गोमूयी करते हैं। वे अपने झगड़े तो नायको कह नहीं सकते, परंतु आस्ट्रेलिया तथा अन्य देशोंमें यहासे वो मार्ग जाती हैं उन्हें कौन रोक्ता है ? वे यहा मारी जाती हैं और उनमें कसबेकी मूली बनकर यहा आती हैं, भिन्नें हम पहचानते हैं। एक बन्दूक बैजव हिंदुओं में धारता हूँ। यह अपने बन्नेको गो-मासका घोरमा पिताते वे। मेरे पूछनेपर उन्होंने कहा कि बनावि तीरपर उते इस्तेमाब करनेमें कोई पाप नहीं है। मत: बर्न मसबमें क्या चीज है यह तो लोग सबकसे नहीं हैं और पीछे गो-रक्षा बालागून बंद करनेकी बात करते हैं। वेहालोमें हिंदू लोग बैजवर इतना बोक बाते हैं कि वे मुसलमसे बच पाते हैं। क्या यह गो-रक्षा नहीं है, चाहे जमी-जमी ही क्यों न

हो? अतः मैं तो यह मलाह चुना कि विमान-परिषदपर इसके लिए और न जाता था।

बिस जगह बूझ अधिक होते हैं वे बावलोसे पानी अपने आप बरसा सेते हैं। पेवकी पत्तियोमे कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि पानी बूझकी चारकी तरह ऊपरसे गिरने लग जाता है। यह प्रकृतिका कानून है। बिस जूमिमें बूझ नहीं होते वह भवजूमि हो जाती है, क्योंकि पानी तो बहा बरसता नहीं, इसलिए सब रेत-ही-रेत हो जाता है। अगर वर्षा बर करनी हो तो बूझोको काट दीजिए। मैं जोहान्सबर्गमें कई वर्षतक रहा। जहाका जलवायु बहुत अच्छा है। जहा सबसे बूझारोपण हुआ सबसे वर्षा पवनी भी शुद्ध हो गई। इसलिए दिल्लीके आफसरने बूझारोपणका जो काम उठाया वह बहुत अच्छा है। बिन लोगोंके पास वाली जमीनें नहीं है वे मिट्टीके गमलोंमें बोड़ी-बोड़ी मिट्टी काबकर सब्जी पैदा कर सकते हैं।

एक भाईने यह प्रका पूछा है कि आज हमपर मुसलमानोंकी तरहसे जो ज्वाबदारी हो गयी है उनको दुष्टिमें रखते हुए हम किस मुसलमानका ऐतबार करें और किसका नहीं, यूनियनमें जो मुसलमान रहते हैं उनके साथ हम कैसा सम्बन्ध करे और पाकिस्तानमें जो गैर-मुस्लिम हैं, वे क्या करें?

इस बारेमें मैं पहले भी कई बार कह चुका हूँ और आज फिर कहता हूँ कि जब हिन्दुस्तानमें सारे वर्गोंका सम्मेलन हो रहा है। सिख, हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई आदि सब वर्ग किस तरहसे बसते हैं और कैसे हिन्दुस्तानकी भागदोर सम्हालते हैं, यह देखना है। पाकिस्तान तो जाहे मुसलमानोंका कहो, अगर यूनियन तो सबका है। अगर आप यहां बुद्धिमान रहकर सम्बन्ध बहाबुर बन जाते हैं तो आपको यह सोचना भी नहीं पड़ेगा कि आपको मुसलमानोंके साथ कैसा सम्बन्ध करना चाहिए? अगर आज तो हम सब बुद्धिमान पड़े ह। इसके लिए मैंने तो अपना चुनाव मजूर कर लिया। हमारा १० वर्षका शिक्षण सभी गलत तरीकेसे हुआ, यह मेरे लिए एक कठिन प्रश्न हो गया है। मैंने कैसे यह मान लिया कि अहिंसा बुद्धिमानोंका हथियार

हो सकती है ? अगर अब भी हम सम्मुख कहाँ होकर मुसलमानों से साथ प्रेम करें तो मुसलमानों को भी मोचना होगा कि वे आपके साथ प्रेम करने क्या सेगे। वे भी अबसे भी मोहलत ही दिखाएंगे। क्या हम मुसलमानों के करोड़ों मुसलमानों को अपना गुलाम बनाकर रख सकते हैं ? दूसरों को गुलाम बनानेवाला खुद गुलाम बन जाता है। अगर हम यहाँ सबवारफा बरखा सबवारसे, चाँदीका बरखा साठोंसे और ताँतका बरखा साठों सेने लगे तो फिर पाकिस्तानमें उससे निज नज़रकी आवाज़ रखना कियूल है। अगर ऐसा हमने किया तो निज हाथने हमने आबादी भी ज़मी हाथसे हम उसे लो देंगे। जो सीबा और सरल रास्ता है वही हमें अपनाया चाहिए और फिर हम देखेंगे कि पाकिस्तानने एक भी हिंदू या एक भी ईसाईको कोई झूनेबाबा नहीं है।

आज पाकिस्तान और भारतकी बाबी नरकारोकी धोरसे जो कस्तब्य प्रकामित हुआ है वह मुझे सम्मन तथा है। अगर मैं तो उसे प्रत्यक्षमें देखना चाहता हूँ। हम वक्त तो हम ऐसा क्यों मानें कि जो कुछ वे कहते हैं उससे निज ही पाकिस्तानमें होनेवाला है। होता भी है और हम बुझसि नहीं है तो हम उनका बचाव भी से देंगे। जबतक ऐसा नहीं हुआ है तब उसे मानकर ही हम बैठ जाय यह तो हमारी बुझसि है। इस तरहसे जाननेका मननव होगा लडाईका सामान तैयार करना। तब तो हमारे और पाकिस्तानके लडाइयोंमें आमने-आमनेकी लडाई छिड जायगी और बिना साहब लो लो नैमनकी बात करते वे यह नहीं साबित होगी। इसलिए मैं तो ईश्वरने यही प्रार्थना करता हूँ कि तू हमें उस आपसिसे बचा ले।

॥ ८० ॥

२६ जुलाई १९४७

भाऊजी और बहनो,

मैं जानता तो नहीं हूँ कि एक बीरुदरको जितना पैसा मिलता है उतना ही एक नगीनी भी मिले, परन्तु यह बात करनेमें जितनी

प्राप्त है, करने में उसी ही मुश्किल है। दूसरे, ये सब बातें हस्ताक्षर करने से पूरी नहीं होती। बेतन-कमीशनकी सिफारिशों से जो बेतन बडे हैं, पहले हमें उन्हें हक करना चाहिए और फिर बाक़ी अपने पक्ष में लोकमत तैयार करना चाहिए। हस्ताक्षर भी एक शास्त्र होता है। जो ही हस्ताक्षर कर बैठने से कोई काम नहीं।

आज तो हिन्दुस्तानमें हस्ताक्षरोंका एक वातावरण-सा बन गया है। महा लोगोकी अपनी हकूमत है महा भी हस्ताक्षर होती है। अब हमारे महा भगवन् हकूमत भी तब, बहादुर मुझे याद है, इसी हस्ताक्षर नहीं होती थी। आज कलकत्ता से तार आया है और अखबारों में भी छपा है कि महा एकाउन्टेन्ट जनरल आफ़िन्स को कर्मचारियों के समक्ष हस्ताक्षर कर दी है। इस आफ़िन्समें डाक और सार्वजनिक मामिल हैं जो किसी एक शास्त्रीकी खातिर नहीं, बल्कि सब लोगोकी अलाईके लिए चलते हैं। यह जाना कि जर्मनें कडे-कडे समझदार भी हैं बिन्हे काफी पैसा मिलता है। फिर कोटोने क्या गुनाह किया कि उन्हें थोड़ा पैसा मिले? आखिर इसका क्या उत्तर क्यो रहता है? भगवन्ने यह शास्त्र जाली, अगर हमको भी यह नीती जाली और उसे हम जारी रख रहे हैं, परन्तु इस तरहसे यदि जोम कमजोर करके बैठने लगे तो हिन्दुस्तानका क्या होगा? हस्ताक्षरोंके जरिए क्या बालकर यदि कुछ पैसे उन्होंने कमा भी लिए तो उससे क्या हुआ? अगर यह तरीका तो गलत है और इसने हिन्दुस्तानका उत्थानाच होनेवाला है।

शासकी हिन्दुस्तानकी हालत देखकर मुझे उस मुर्गीकी मिसाल याद आती है जो सोनेके घड़े बेती थी। मुर्गीवालेने सारे घड़े एक साथ निकालनेके लिए उस मुर्गीको मार डाला। अगर नसीबा यह हुआ कि सोनेके घड़े भी नहीं निकले और मुर्गी भी मर गई। आज जो हमारे हाथमें हकूमत आई है वह उसी किसमकी मुर्गी है। हम अगर यह जमीद करे कि उस मुर्गीने सब सोनेके घड़े धाव ही निकालकर जा जाव तो निश्चय ही वह मुर्गी तो मरेगी ही, उसके साथ हम भी मरनेवाले हैं।

इसके अलावा हस्ताक्षरोंको लेने शास्त्र बना रहता है। दक्षिण

पक्षीजगत् में पहले-पहल हमने इसकी हस्ताक्षर की थी। वहा हिन्दुस्तानी कुली धीर मजदूर समझे जाते थे। वहा उनका हस्ताक्षर करना कुछ नाहीं रहता था, क्योंकि धीर सरस्वत् वहा उनकी बात कोई मुचनेबाबा नहीं था। अब यह बाबनी जो हस्ताक्षर शास्त्र बाबता है, यह उन लोगोंसे जो कि बाब इतर-इतर हस्ताक्षर कर रहे हैं, यह मुचना बेना चाहता है कि जो तरीका उन्होंने अपनाया है उससे वे अपना ही शास्त्र कर लेंगे। हमारे देशके दो दुकाने तो हो गए, अगर अब भी अगर हमारे शास्त्रके लम्बे इसी तरह जारी रहे तो ईश्वर ही जानता है कि हमारा क्या हाल होनेवाला है। अब तो हमारा यह बर्त हो गया है कि हम अपना काम करते बाब, क्योंकि यह हस्त-काम है। बेसन-मनीषनकी सिफारिशोंके फलस्वरूप छोटे लोगोंका बर्बादकारी ऊंचा हो गया है। अगर हम सरस्वत् हय मागसे ही रहेंगे तब तो हिन्दुस्तानका दिवाला निकल जायगा। यह ठीक है कि हस्त-कामके पास करोड़ों रुपये पाते हैं, अगर यह अब केवल मुदलीवर लोगोंपर तो बर्बा नहीं लिया जा सकता। उस रूपका अधिक मात्र तो उन वैशाखियोंपर बर्बा किया जाना चाहिए बिनासे यह पैसा जाता है।

बनईये, हाल हीमें, मजदूरोंकी एक नाममात्रकी हस्ताक्षर हो चुकी है। बहाली सरकारने एक-बो करोड़ रुपया तो मजदूरोंको दिया, अगर उससे भी उनको सहाय नहीं हुआ धीर अपनी सामर्थ बाहिर करनेके लिए उन्होंने एक नाममात्रकी हस्ताक्षर की। उन्हें चाहिए तो यह था कि जो कुछ मिल गया उसे तो हजम करते धीर उसके बाद अपने पक्षमें नौकमल बनाते। इसके बजाय उन्होंने हस्ताक्षर करके ऐसे मजदूरोंका मार्ग अपनाया। कांग्रेसमें भी बाब किसी ही पाठिया बन गई हैं धीर उन्होंने ही एक पार्टीका इस हस्ताक्षरमें हाथ है, [पैसा मुझे बनाया गया है। अगर इस नाममात्रकी हस्ताक्षरमें तो बाहे यह दो बटेके लिए ही क्यों न हो, एक तरहका बमड भर रहता है। उससे यह पार्टी यह सिद्ध करनेकी कोशिश करती है कि उसमें मजदूरोंने किनी पक्षनी है। अच्छा इस नाममात्रकी हस्ताक्षरका क्या उद्देश्य हो सकता था? मुझका इस प्रकारकी हस्ताक्षरने कोई मता

नहीं हो सकता। इसलिए, वहाँके मजदूरोंने जो कुछ किया वह मुझे धन्य जगता है।

दूसरी सभाई तो जब होगी तब होगी, मगर क्या हम इस आपसकी सभाईमें ही कटकर मर जाना चाहते हैं? यह कोई बेवकाफ काम नहीं है, कोरा स्वार्थका काम है। एक धीर तो हमें आत्मायी मिली, अतएव यहाँसे गए धीर हकूमतका काम हमने बसाना शुरू ही किया कि दूसरी धीर हम पैसोके बटवारेपर ही सभाई करने लगे। मैं तो यहाँतक मानता हूँ कि एक बैरिस्टरको बितना पैसा मिलता है उतना ही एक बगीको भी मिलना चाहिए। मगर बैरिस्टर तो अधिक चीज लेता है और हम खुशीसे उसे दे देते हैं। मैं भी तो कभी बैरिस्टर करने लगा था, मगर मैंने कुर्सीपर पड़े रखकर ऐसे मूटना एक निकम्मी बात समझी और इसलिए बगी बन गया। मगर वे सब बातें कहनेमें तो मक्की लगती है, करनेमें मुश्किल होती है। आखिर हम ऐसे आदमी कहाँसे जाएँ जो नवर्नर-वनरज, बैरिस्टर और व्यापारी हो सकें और साथ-ही-साथ पैसा भी उतना ही जै बितना एक बगीको मिलता है। एक वर्षी भी बार-बार अपने रोक कमा लेता है, मगर बगीको कौन रोकने देने देता है? मत मान बरकरा इस बातकी है कि अनुप्य अपना स्वभाव बक्से, अनुप्यमें उधारणा पैदा होगी चाहिए। वह नहीं कि हम अपनी स्वार्थपूर्तिके लिए सबका गला काट दें। जर्मनीं जो खून हुए हैं, उनसे भी अगर हम कोई सबक नहीं लेंगे तो हिस्तान और सारी दुनियाका क्या हाल होगा? यह हिसाब आप अपने घर जाकर करें।

॥ ८१ ॥

२७ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनों,

हिस्तान बेसी राखोसे जरा पडा है। उनकी सख्या पाच-सीसे ऊपर है, जिनमें कोई बडे है और कोई छोटे है। हाल हीमें बाइसराय

माहिले राजाओंको बड़ा गुना सिखा था। अतएव तो उनपर ब्रिटिश साम्राज्यका डम था, परंतु वह तो अब उठ गया। बाइरपय माहिले उनको बहुत नज़र रखते थे जो व्याख्यान दिया वह मुझको अच्छा लगा। उन्होंने राजाओंको बताया कि भारतीय मुस्लिम धर्म पाकिस्तानके रूपमें जो दो अलग-अलग राज्य बन रहे हैं उनको उन दोनोंमें वीतराज्य है। वह बोर्ड छोटा व्याख्यान वही था। अगर उनमें जो चीज मुझे चुनी वह यह कि हमने बड़े व्याख्यानमें रियासतोंकी रीतका कहीं बिक्र नहीं था। ब्रिटिश वर्गमेंटके साथ जो करार था वह तो राजाओंको ही था। उनमें रीत कहीं प्राप्ती ही नहीं थी। इसलिए जब ब्रिटिश साम्राज्यका हट गई सब बाकायूस वे आजाद तो हो जाते हैं और ब्रिटिश सरकार उनमें कोई कानून भी नहीं वे सकती। अगर राजा सोनोका नर्म और कर्तव्य भी तो कोई चीज है। अब ब्रह्मका राजा तो बना गया जिसने किनी रियासतको नजबूर किया था उनका था। अगर ब्रिटिश साम्राज्यके माहिले जो वे सुरक्षित रहते थे वह सुरक्षितता तो अब नहीं रही। फिर कोई भी बड़ी-से-बड़ी रियासत में जीविए, मैं कोबीलको ही सेवा है, क्योंकि एक सादा बड़ा समुद्र भी उनके साथ लगता है। वह अपनी सुरक्षाके लिए सारी दुनियामें नाम तो नमकीले कर नहीं सकती। ऐसी हालतमें उनको जीव सेवा देना बाह्यसमस्या बन गई था। अगर रीतका भी अगर वे अपने व्याख्यानमें कुछ बिक्र कर देते तो मुझको बहुत अच्छा लगता। यदि मैं नाटिकाबाद राज्यमें सेवा हुआ था, इसलिए एक रीत होनेके नामें मुझे उन वारेने करनेका हक है। अबसे पहले राजा जोध पुर सीमाना भी रहते थे तो उनमें बाइरपयकी हवाबन लेते थे। वह उनको अच्छा तो नहीं लगता था। इसलिए अब कहा उनके ऊपरने ब्रिटिश-पुरजाका हट हटा उनके साथ-साथ उनका हवाब भी तो उनपरने हट गया। अगर हमारी सरकारने प्रजापत्ता हवाब अब उनपर पड़ना है। गनीना वह हुआ कि राजा जोध प्रजापत्ते नेवक बनकर गये तनी वे राजा रह सकते हैं। उनके बहा जो प्रजापत्त है उनके साथ उनको मछलिया पला चाहिए धीरे-धीरे शासन-समयमें उनका सहयोग दें। यह

बात तो ठीक है कि उन्होंने कभी राज्य तो बनाया नहीं। राज्य तो हमारे इन नेताओं ने भी पहले कभी नहीं किया था जो आज केंद्रीय सरकार में हैं। वे बाहर तो घेर बने हुए थे, मगर आज तो बकरी-जैसे बन गए हैं। इसका बड़ा मतलब नहीं है कि राजा लोग तो ही अपने राज्यों में घात-पन्नीस घातियोंको खड़ा कर दे और उनको प्रजा-मर्दन करने लगे। वे जो कुछ करे वह सम्पाद और नेकनीयतीसे करें।

बहुतक मुलियन या पाकिस्तान में शामिल होनेका समय है, उसमें नीयोधिक स्थिति का पूरा ध्यान रक्खा होगा। कुबरात या फाटिमाबादका कोई राज्य अपनेको बगल में लाय बोडे ही कह सकता है? उस रियासत में जूनोसने बगल में नहीं मिल सकता।

अनेक बातें समय क्या राजाओंको यह नहीं कह सकते थे कि जो पर्वत सत्ता उनके पास थी वह अब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के पास नहीं बर्दाई है। निश्चय ही यह बहुत बटकनेवाली बात है और हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान दोनों के लिए यह एक बेबीया प्रकाश बन गया है। मैं तो वहीं खूना कि राजाओं के लिए भी यह इतिहास का समय है। वे नाम के राजा थे, मगर असल में प्रजा के सेवक बन आए, उन तो हिन्दुस्तान की धर है।

मैंने भी आज यह क्या किया है वह इस बचहूसे नहीं कि राजाओं के विरुद्ध बाइबल पढ़ने मुझसे निकालत की हो या हमारी स्वदेशी हकूमत ने, जिसने बगल में लालची और राजेबगलू आदि है, मुझसे कुछ कहा हो। इतिहास तो यह है कि लोग आज इस बात की पुष्टि करते हैं कि हिन्दुस्तान की हकूमत क्या करती है और पाकिस्तान की क्या?

मगर ऐसी राज्यों की प्रजापर क्या नीति रखी होगी? बहाकी रीति क्या इस आबादी पर कुछ होगी? क्या बहाके लोग आबादी के उत्थान में नासिद्ध होंगे? मैं तो उस दिन उपवास करूँगा और मेरी मर्मांग भी दामनी रखें उस दिन यही होगी कि हे ईश्वर! हिन्दुस्तान यादव तो हुआ, परन्तु उसे बर्बाद न कर।

ऐसी राज्य हिन्दुस्तान का एक बीबाई हिस्सा है। क्या बहाकी बस गरीब प्रजा १५ धन्यताओं आबादी का उत्थान बना लगेगी? मगर राजा भोग कर रहे हैं हम तो सुन्दारे नीकर बनकर रहेंगे तब

तो खीर है। उस ने प्रमाने को पैसा लेने ने प्रमाणी ऊपर उठाने के लिए ही लेने। वे सब मुना करके उसे बापिस दे देंगे, पैसों के रूप में नहीं, बल्कि अपने राज्य में धिक्काके लिए म्कूल, रोगिवीके लिए प्रमत्तास, नरकों तथा बाग-बगीचों धाविके रूप में। इसलिए नुम्ने ऐसा सवा कि मैं धाव राजाओंके बारेमें इतना तो कहूँ दूँ। गाइर-राजके धावपके बारेमें जवाहरसासजी और नरसार पटेसने तो कुछ कहा नहीं। मगर विसमें तो वे भी महमूम कछे ही होंगे। विसमें फिर जहर क्या रखना था ? यह तो एक गरजूका खेन-जा है जिनमें खेसके सब सिबीने जेनपर रखे रखे बाहिए। जब हमारे विसमें किनी प्रकारका जहर नहीं होना लगी तो हम १५ प्रयत्नना विस विस खोलकर बना लकेंगे।

: ८२ :

७८ जुलाई १९४७

भाइरों और बहुलो,

धाम नै कुछ प्रसनोंके जवाब जूया।

प्रस— १५ प्रयत्नने बाद बीनो राज्योंमें दो कावेसों होगी या एक ही रहेगी ? या कावेनकी धाक्कमकता ही न रहेगी ?

उत्तर—मेरे विचारमें उस समय ऐसी संस्थानी जरूरत और भी ज्यादा होगी। बेसक, उसका काम बसक जायगा। यदि कावेर मूलसामुर्जन दो बनोंके धावारपर दो राष्ट्रीका सिद्धात जरूर नहीं कर लेनी तो सारे हिन्दुस्तानके लिए केबस एक कावेस रह सकती है।

हिन्दुस्तानके जटवारेसे धाम जम्मे समूनेपनका जटवारा नहीं होता—नहीं होता बाहिए। दो भार्बनीम राज्योंमें बाट दिये जानेके कारण हिन्दुस्तानके दो राष्ट्र नहीं होते। याव लिया याव कि कोई एक या ज्यादा प्रियासर्व दोनो राज्योंके बाहर रहती है तो क्या कावेस उन्हें भीर जनकी जनताको राष्ट्रीय कावेसने निकाल लेगी ? क्या

उनकी भाव यह नहीं होनी कि कांग्रेस उनकी ओर विशेष ध्यान दे और उनकी विशेष परवाह करे ? बकर ही पहलेसे ज्यादा सबके हुए सवाल उठेंगे । उनमेंसे कुछका हल कठिन भी हो सकता है । अगर कांग्रेसके दुकड़े कर देनेके लिए यह कोई कारण न होना । उससे अवसरकभी घबेसा अधिक बड़ी राजनीतिज्ञता, अधिक गहरे विचार और अधिक सात निर्णयको उत्तेजना मिलेगी । पगु बना देनेवाली कठिनाइयोंपर ही हमें पहलेसे विचार नहीं करते रहना चाहिए । जानसक जो करारविया हो चुकी वे काफी हैं ।

प्रश्न—क्या कांग्रेस अब साम्प्रदायिक संस्था बन जायगी ? आज जोरोंसे भाव की जा रही है कि नृकि अब मुख्यमान अपने आपको परदेसी समझने लगे हैं, इसलिए हमें भी अपने सबको हिंदू भारत कहकर क्यों नहीं पुकारना चाहिए और उसपर हिंदू-धर्मकी प्रतिष्ठा काय क्यों नहीं बना देनी चाहिए ?

उत्तर—इस सवालमें और अज्ञान गरा है । कांग्रेस कभी हिंदू-संस्था नहीं बन सकती । जो उसे ऐसा बनानेमें, हिंदुस्तान और हिंदू-धर्ममें दुश्मनी करेंगे । हिंदुस्तान करोड़ोंका मुल्क है । उनकी आबाद किसीने नहीं गूनी । अगर कोई दो प्रजाकी बातपर जोर देनेवाले हैं तो वे महदोके जोर-मुक्त मचानेवाले जोग ही हैं । हम उनकी आबादको हिंदुस्तानके बेहोतोंके करोड़ोंकी आबाद न समझें ।

तीसरी बात यह है कि हिंदुस्तानके मुख्यमानोंने नहीं कहा है कि वे हिंदुस्तानी नहीं हैं और अतमें वाद रखा जाय कि हिंदू-धर्ममें किसीही कमिया क्यों न हो, हिंदू-धर्मने कभी असह्यगीका दावा नहीं दिया । असम-असम वर्गोंके लोगोंने मिलकर हिंदुस्तानको एक प्रजा या गण्ट बनाया है उन सबका हिंदुस्तानी कहानेका समान हल है । बहुमतों दूसरोंको दबानेका हक नहीं है । बहुमतके जोरने या सतवारके जोरने मिनी हुई तागत मन्वी तागत नहीं है । दरअसल मर्दा ही मन्वी तागत है ।

प्रश्न—गीगर नयास है कि जो मुख्यमान नहीं उनका पाकिस्तानके भटके तरफ क्या राग रहे ?

उत्तर—पाकिस्तानका ऊहा धनी तो सींगका ऊहा होगा। अगर मुस्लिम सींग और इस्लाम एक चीज हैं तो मारी दुनियामें मुसलमानोंका ऊहा एक होना चाहिए और जिनकी दम्पाममें बुद्धिमी नहीं उनको उनकी दम्पत करनी चाहिए। मैं दम्पामका, हिंदू-धर्मका, ईसाई-धर्मका, या किसी दूसरे धर्मका ऊहा जानता नहीं हूँ। अगर मैंने इस्लामका गहरा अध्ययन नहीं किया तो मैं भूल कर जाना हूँ। अगर पाकिस्तानका ऊहा, चाहूँ उनका स्वरूप कुछ भी हो पाकिस्तानमें रहनेवाले सब लोगोंका ऊहा होगा, तो मैं उसकी नजामी बदला और आपकी भी ऐसा ही करना चाहिए। दूसरे सफ़्फ़ोमें उपनिवेद एक दूसरेके दुश्मन नहीं बन सकते। मैं तो बहुत रस और दुःखने देख रहा हूँ कि दक्षिण अफ्रीकाका उपनिवेद हिन्दुस्तानके उपनिवेदानी तरह क्या सब रखता है? क्या दक्षिण अफ्रीकाके लोग हिन्दुस्तानको गहरा कर सकते हैं? क्या अफ्रीकाकी दुनियाके बारे में सब भी हिन्दुस्तानियोंके साथ देखके एक दिग्दर्शन स्वरूप करनेसे इन्कार करेंगे?

१८३ :

२६ जुलाई १९४७

बाबूजी और बाबूजी,

बाबू मैं बहुत कामकी बातें कह रहा हूँ। मुझे ऐसा कहा जाता है कि मुझे काश्मीर जाना चाहिए। मुझे कहा जानेका शीक नहीं है और होना भी नहीं चाहिए। लेकिन वह खूबसूरत जगह है। वहाँ हिमालय पहाड़ भी हैं। लेकिन दुनियामें कई और भी खूबसूरत जगह हैं। तीर्थ-क्षेत्र भी काफी पड़े हैं।

एक बार मैं काश्मीर जाता चाहता था। उस समयके काश्मीर ग़ुलामाने मुझे बुलाया भी था। उस समय सर बोपाबल्लामी आगयर ग़ुलामेयीबाबू ने। लेकिन ईश्वरअब मुझको बीका से छुड़ी तो मैं जाऊँगा। अब पिछली बार पंडित जवाहरलाल काश्मीरमें रोक दिए गए

तब उनकी यहा जरूरत थी। उस समय मीलाना आन्ना के कलेसकी सवारत करने थे। वे जवाहरलालको कास्मीरछे भुलाना चाहते थे, क्योंकि यहा उनकी जरूरत थी। उस समयके बाइसराय साहब वेवेसने भी उनकी जरूरत महसूस की। वेवेस भीर मीलाना साहब दोनों परेशान थे। तब मीलानाने जवाहरलालके पास सबर भेजी कि आपने जो काम अपनाया है वह कायेसका काम है, इसलिए धनमुआसलके मुताबिक आप यहा आइए। उस समय जवाहरलालने यहा आना तो मजबूर कर लिया, लेकिन वह भी उन्होंने कहा कि बादमे फिर कास्मीर जाऊंगा। मीलानाने कहा कि बादमे वह काम किया जा सकता है और जरूरत होनी तो गांधीजीको भी आपके साथ भेज दिया जायगा। मैंने भी जवाहरलालसे कहा कि ऐसा करनेसे तुम्हें कोई नही रोक सकता।

अब तो सरकार ही बच गई। बाइसराय बच गया। मैं अब कास्मीर जानेकी तैयार हो गया, जिससे जवाहरलाल अपना काम करते रहे। बूकि यहा कई फलट थे, इसलिए मैंने कह दिया था कि यदि बाइसराय कहेंगे कि यहा जाओ तो मैं जाऊंगा। बाइसरायने कुछ समय पहले मुझसे कहा कि मैं अभी यहा जाता हूँ, आप न जायें। इसलिए मैं नहीं गया। अब सिनसिना ऐसा हो गया कि या तो मैं यहा जाऊँ या जवाहर जायें। लेकिन वह तो जा नहीं सकते। यही काम बहुत पक्का है। मैंने तो यहाकी आवश्यकता मंजूर की है। यदि यहा वह जायेंगे, तो वह तबुस्त होकर भावेंगे। लेकिन यहाके फलटको भी तो सम्हालना होगा। यदि अंतरिम सरकारके उपाध्यक्ष यहा जायें तो उसका ऐसा भी मतलब निकाला जा सकता है कि वे कास्मीरको भारतीय सभने मिलाने गए हैं—इस तरहका भ्रम पैदा हो सकता है। इसलिए मैं यहा जाऊंगा।

कास्मीरमें राजा है और रैयत भी। मैं राजाको कोई ऐसी बात नहीं कहूँगे या रहा हूँ कि वे पाकिस्तानने न सम्मिलित हो और भारतीय सभने सम्मिलित हो। मैं इस कामके लिए यहा नहीं जाऊंगा। यहा राजा तो है, लेकिन सच्चा राजा तो अज्ञात है। यदि राजा अज्ञातका सेवक नहीं है तो वह राजा नहीं है, मैं यही मानता हूँ। मैं

तो इसीलिए बायीं बना; क्योंकि अश्वमेध करनेवाले महाका राजा समझते थे, बिस्ते ने नहीं जानता था। अब वे जासूस भेज रहे हैं। वो हाकिमी करने वाला था वह अब नीकर बनना चाहता है। मजसा-बाबा-कर्मना ने अब नीकर बनना चाहते हैं। वे अब इसीलिए गवर्नर-जमरख नहीं बनने कि राजाने नियुक्त किया है; बल्कि इन—अंतरिम सर-कार—जहाँ गवर्नर-जमरख बना रहे हैं। मैं तो कहता था कि हरिजनकी एक सबकीने गवर्नर-जमरख बना देना चाहिए, लेकिन मैं यह मानता हूँ कि यही इस हालतमें हरिजनकी सबकीने गवर्नर-जमरख नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि राजाओंसे बात करनी है, और भी कई बड़े-बड़े काम पड़े हैं। हा, अब प्रजासब बन जायगा सब ऐसा हो सकता है। मैं कहना चाहता हूँ कि अश्वमेधने इस काममें फरेबी नहीं दिखाई देती। सब यह भी नहीं है कि वे ऐसा चाहते हैं—परिचयनाई तो उन्हें नीकरी हो नहीं तो वे जा रहे हैं। १५ अश्वमेधने काफी अश्वमेध करते जायेंगे; ऐसी जगहों में—बाबा और कर्मना तो ऐसा ही हैं।

अनीस वाइसरायकी समझाने काफ़ीरके महाराजा को भला करने के कर बनने के। अब तो वे रोज़गार हैं। सर्वोच्च सत्ता लोगोंके हाथमें है। मैं यह भी कहता कि मैं महाराजा साहबकी समझौते देना चाहता हूँ। महा काम करनेवाले को पंडित और मुत्ता हैं वे मुझे नामसे तो जानते ही हैं। मैंने काफ़ीरके लोगोंको काफी पैसा दिया है। उनका नमाजीका काम व दास बनानेका काम अच्छा होता है। सबों सबने भी अच्छा काम कहा किया है। वहाँके गरीब लोग मुझे पहचानते हैं।

यहाँके लोगोंसे पूछा जाता चाहिए कि वे पाकिस्तानके संघमें जाना चाहते हैं या भारतीय संघमें। मैं बीड़ा बाँहूँ करूँ। राजा तो कुछ ही ही नहीं। प्रजा सब कुछ है। राजा तो वो दिन बाद जरूर जाना लेकिन प्रजा तो रहेगी ही। कुछ लोगोंने मुझसे कहा कि वह काम मैं पद-अवधारकें खिंचे ही क्यों न करूँ? तो मैं भूला कि बीसे तो मैं पद-अवधारकें खिंचे ही नोपाखानीका काम भी कर सकता हूँ।

काफ़ीरमें मैं कोई काम सार्वजनिकरूपसे नहीं करता। मैं शार्वना

- जी सार्वजनिक समाने नहीं करना चाहता, कन् बहुत दूसरी बात है। प्रार्थना तो मेरे जीवनका एक अंग है।

अब रही बात यह कि मैं जो कहता हूँ कि १५ अगस्तको फाका करो और प्रार्थना करो, यह क्या है ? मैं कुछ तो नहीं मनाना चाहता हूँ। लेकिन दुखकी बात यह है कि हमारे पास खुदाफ नहीं है, कपडा नहीं है। आज एक आदमी बिनाक जाता है और दूसरे आदमीको मार डालता है। जाहीरमें ऐसा भय रहा है कि खरा बाहर बिकने और मार डाले गए। तो हम जीव करे और मिठाई खाए, ऐसा उत्सव ऐसे अवसरमें कैसे मनाया जाय ?

६ अग्रेज १९१९ को सारे हिन्दुस्तानमें जागृति हो गई थी। उस दिन कोई उत्सव उस तरहसे नहीं मनाया गया। मैंने हिंदुओं और मुसलमानोंसे कहा कि वे उस दिन फाका रखें, प्रार्थना करे और नर्चा बजाए। उन दिनोंमें हिंदू और मुसलमानोंमें कोई दुश्मनी नहीं थी, इसलिए सबोंने जैसे ही फाका रखकर उत्सव मनाया। ६ तारीखको बितना बड़ा उत्सव उस समय था वैसे तारीख हिन्दुस्तानके इतिहासमें आनेवाली नहीं है। आज ६ तारीखसे भी ज्यादा आवश्यकता है कि लोग फाका रखें। करोड़ों लोग मूखी नर रहे हैं। उस समय सिलक-स्वराज्य-कब्जे लिए एक करोड़ रुपये जमा करना मुश्किल था—वह जमाना ही बीता था। हमारे पास प्रता नहीं थी। आज तो करोड़ों समा हमारे हावमें आ गया है। ऐसी बिम्बेवारी आ गई है। यदि ऐसे समयमें हम मन्त्र न बनें तो क्या होगा ? अगर १५ अगस्तको खून छा-नीकर मच्चे उठाएंगे तो १६ अगस्तको राजेद्रवाबू क्या करेंगे—क्या बिनाएंगे ? इसलिए मैं कहूंगा कि उत्सव जरूर मनाए, लेकिन फाका रखकर, प्रार्थना करके और नर्चा बजाकर मनाए। हा, हमें मातम नहीं मनाना चाहिए।

: ८४ :

१० जुलाई १९४०

आज मेरा बड़ा बचीरका दिन है। कससे प्रार्थना नहीं हो सकती। अगर प्राय करने को भज्जा होना, अगर मैं तो नहीं खुवा। ईश्वरकी कृपा हो गई तो परखी भीनवर पक्षुष बाऊना। मैंने कम कहा था कि मैं बड़ा सो-सीन बिन खुवा। मुझे बड़ा कोई बास काम करना है, ऐसी बात नहीं है। मुझे बड़ा किसी सार्वजनिक समारोह हिस्सा नहीं लेना है। मैं तो जो-जोसे मिलने का रहा हू। किसी सम्मेलन नहीं। मैं बाकी हाथ भी नीटकर नहीं मानेवाला हू, लेकिन मेरे हाथ भरना या न भरना ईश्वरके हाथ है। आज तो मैं प्रतिज्ञाके बंध होकर बाठा हू। प्रतिज्ञाका पालन हो जानेपर पीछे बाथ आऊंगा। बड़ासे मैं जो-बाबासी आऊंगा।

बिहारके एक मुसलमानने पाससे मेरे पास बात आया है कि बड़ा हिंदू और मुसलमान सब लोग पहले-बीससे आई-आईके समान रहने वाले हैं। बिहारके सभी भीषकारीने भी मुझे बताया है कि अब कोई भयडा नहीं रहा। पहले बिस तरह आई-आईके-बीससे लोग रहते थे बीस ही अब फिर रहने वाले हैं। स्वेच्छा ट्रेनीसे लोग आ रहे हैं। वे बिहार-सरकारके सर्वसे नहीं आ रहे हैं। बिहार-सरकारने तो उन्हें नहीं भेजा था। बगलवाले से बड़ से। उनका काम था कि वे उन्हें भेज देते। मैं तो बिहारके हिंदुओंसे कहूंगा कि जो मुसलमान आ रहे हैं उन्हें अपनाया चाहिए। अपनेमें पहले-बीस भिन्न लेना चाहिए। हकूमतपर जरोसा किए बैठे नहीं रहना चाहिए। अवतक तो हमारे हाथमें सत्ता नहीं थी। अबजोका राज था। अब जमपर जरोसा करना पड़ता था। अब सत्तानत हमारे हाथमें आ गई है। रैयतकी हकूमत है। इसलिए अब कोई ऐसा नहीं कह सकता कि हकूमतका काम है। अगर रैयत ही नहीं है तो हकूमत कहा ? इसलिए बिहारके हिंदू ऐसी भावोहवा रखें कि बड़ाके मुसलमान ऐसा न समझें कि हमारी पीठपर पानिस्तान नहीं है। अभी तो भाग हो

गए है, मेरे क्यासे यह बुरा हुआ है। अगर बुरा वा अच्छा, सब तो ही ही क्या है। वो पाकिस्तानकी माननेवाले ने उनके मनमें तो यह भरा ही हुआ है। दोनोंने मान लिया है कि सब हम असल-असल हो गए। यदि मुसलमानोंने ऐसा समझकर किया तो मुझे बुरा लगेगा। पाकिस्तान तो कोई चीज नहीं है। उससे सिर्फ हुकूमतका बटवारा हुआ है। मैं बिहारियोंसे इतना ही कहना चाहता हू।

अब मैं बंबईके बारेमें कुछ कहना चाहता हू। बंबईकी हुकूमतने तय किया है कि कमीशनकी बंटाई हुई वृद्धिके मुताबिक तनक्याह दी जायगी। मैंने प्रतिप्रयोक्ति की थी। कह दिया था कि अभीसे कर दिया। मगर अभीतक ऐसा नहीं किया गया। मगर इससे क्या हुआ? जो तय हो गया है उसके मुताबिक किया जायगा। फिर वहाँके कर्म-चारी भूख-हडताल क्यों करें?

वहाँसे एक टार आया है कि अगर गांधी इस मामलेमें बखाल हैं तो फँसला ही सकता है। मैंने कहा, गांधीके हाथमें कोई सत्ता नहीं है। वो तो यह सब मेरे दोस्त हैं। उन्होंने मेरे मातहत काम किया है। वह कहते हैं कि गांधी वैसा कहेवा वैसा हम मान लेने। अगर वे ऐसा नहीं कह सकता। अचोक सेहता बड़ा है। वह भी कहता है कि गांधी फँसला कर दे तो हमें मजूर होगा। अगर मैं कहता हू कि मैं ऐसा नहीं कह सकता। अबतक हमारे हाथमें ताकत नहीं थी। अब ताकत आई है। क्या मैं बखाल बेकर उसे नष्ट कर दू? मुझे लोग डिक्टेटर बनाकर फँसला कराए, ऐसा बमबी मैं कभी नहीं बन सकता। परमेश्वर मुझसे काम ले सकता है। हुकूमतने अपना काम कर दिया। उसने कमीशनके मुताबिक वृद्धि करना तय कर लिया है। मैं चाहने उसमें शिरकश दू तो ऐसा हो नहीं सकता। इसलिये उनका यह कहना कि ऐसा तो ठीक नहीं और हम टोकेन स्ट्राइक^१ करेंगे, यह ठीक नहीं। मैं उनसे आदबके साथ कहूंगा कि वे ऐसा न करें। मैं उनका दोस्त हू, हुकूमतका दोस्त हू, और राजा

^१ शीकैतिक हड़ताल।

कोशिका भी दोस्त है। उन्हें मुझे अनुचित काम नहीं कराना चाहिए। सभी पार्टियोंका कर्म है कि १५ मजदूरों को जो हड़ताल बर्तनी-बासी है उसके मारफत सब काम कराए। भरोशोंके बमानेसे हम कुछ नहीं कर पाते थे। हमने कोशिश की। अहिंसात्मक मुख भिन्न। धन भी कर सकते हैं। मगर उनके लिए सामान तो चाहिए, सोझम तो बनना चाहिए।

कदाचित्तके लिए बो-रसाका गानसा है। इसमें मजदूर करने को मुसलमानोंको। हिन्दुओंको कबो नहीं? पारसियोंको कबो नहीं? इस तरह बो-रसा नहीं हो सकती। अपने बर्तनर बसनेसे सब काम बिना कामून हो सकता है। मैं तो चाहता हू कि मुसलमान भी बो-रसा न करें। वे गानका मत्त न खाए। लेकिन ऐसा करना या न करना उनकी इच्छा पर है। हमें यह बनना नहीं होना चाहिए कि हमारी हड़ताल या नई है इसलिए हम बमरल या कामून सब काम कर सकते हैं।

मैं चाहता हू कि जो स्वराज्य भिन्न है उसका डीक उपभोग भिन्न जाय। हम बर्तनी नृष्टि करे, चाकि जो स्वराज्य हम चाहते हैं वह बर्तनी या जाय।

३ ८५ ३

१० सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनों,

जब मैं बाहर पहुचा, तो मैंने अपने अपने स्वपक्षके लिए धाए हुए सरदार पडेज, राजकुमारी और बूढ़े कोशोंको देखा। लेकिन मुझे सरदारके कोशपर हमेशाकी नृष्टिपट्ट नहीं दिखाई दी। उनका मत्तस्वरूपन भी गानन ना। देखते अवसर मैं बिना पुसिचवालो और बनसके भिन्न, उनके नेहरोपर भी सरदार पडेजकी कवासी दिखाई दे रही थी। क्या हमेशा कुछ दिखाई देनेवाली किसी बात एकजम मुर्दोंका सहर बन गई है? हड़ताल सचरन भी मुझे देखा गया ना। बिना मनी-बस्तीमें गहराये

मुझे भ्रान्त होता था, वहाँ न से जाकर मुझे विडवा के आधीशान महलने से जाया गया। इसका कारण जानकर मुझे दुःख हुआ। फिर भी उस घरमें पहुँचकर मुझे खुशी हुई, वहाँ मैं पहले भ्रमसर ठहरा करता था। मैं भगी-वस्तीमें वाल्मीकि भाइयोंके बीच ठहरा या विडवा-भवनमें ठहरूँ, दोनों जगह मैं विडवा भाइयोंका ही मेहमान बनता हूँ। उनके आदमी भगी-वस्तीमें भी पूरी भजनके साथ मेरी देखभाल करते हैं। इस फेरबदलके कारण सरभार नहीं है। वह वाल्मीकि-वस्तीमें मेरी शिक्षा-व्यक्तके बारेमें किसी तरह डरनेकी कमचोरी कभी नहीं बिना सकते। भगियोंके बीच रहकर मुझे बड़ी खुशी होती है, हालांकि कई दिल्लीकी कमेटीके कमरसे मैं बिलकुल उन घरोंमें तो नहीं रह सकता, जिनमें भगी जीव मछलियोंकी तरह एक साथ दूध दिए जाते हैं।

मुझे विडवा-भवनमें ठहरानेका कारण यह है कि भगी-वस्तीमें वहाँ मैं ठहरा करता था, वहाँ इस समय निराश्रित जीव ठहराए गए हैं। उनकी जरूरत मुझसे कई गुना बड़ी है। लेकिन हमारे यहाँ निराश्रितोंका कोई भी खयाल बचा हो, वह क्या एक राष्ट्रके नाते हमारे लिए खरमकी बात नहीं है? पठित नेहरू और सरभार पटेलके साथ कामदे आचम बिना, सिवाकसमजी साहब और दूसरे पाकिस्तानी नेताओंने यह ऐजान किया था कि हिंदुस्तानी सब और पाकिस्तानमें अल्पमतवालोंके साथ वैसा ही बरखाव किया जायगा, वैसा कि बहुमतवालोंके साथ। क्या हम बोमीनियनके हाकिमोंने यह भीठी बात दुनियाको बूझ करनेके लिए ही कही थी, या इसका मतलब दुनियाको यह बखाना था कि हमारी कबनी और करनीमें कोई फर्क नहीं है और हम अपना बचन पूरा करनेके लिए जान भी दे देंगे? अगर ऐसा ही है, तो मैं पूछता हूँ कि हिंदुओं, सिखों, गोरखमरे आदिमों और आर्यमोंको अपना घर पाकिस्तान छोड़नेके लिए क्यों मजबूर किया गया? कबेटा, नबाबसाह और कराचीमें क्या हुआ है? पच्छिमी पंजाबकी बर्बररी कहाँगया, सुनने और पढ़नेवालोंके दिलोंको तोड़ देती है। पाकिस्तान या हिंदुस्तानी सबके हाकिमोंके जाचारी बिनाकर यह कहनेसे काम नहीं चलेगा कि यह सब गुंडोंका काम है। अपने यहाँ रहनेवाले लोगोंके कामोंकी पूरी जिम्मेदारी अपने सिर लेना

हूँ डोमीनियनका फर्न हैं। उनका काम 'क्या भीर क्यों' करनेका नहीं, बल्कि करने भीर करनेका है। अब वे साम्राज्यवादी कुत्तों को बाले बोम्बे नीचे बाहे या फनवाहे कोई काम करनेके लिए मजबूर नहीं किए जाते। अब वे आवासीय, जो बाहे कर सकते हैं। लेकिन अगर उन्हें ईमानदारीने दुनियाके सामने अपना मुह दिखाना है, तो इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि अब दोनों डोमीनियनों कोई कानून-कायदा रहेगा ही नहीं। क्या यूनिवर्सल मनी कण्ठा विवासिवापन बाहिर करने दुनियाके सामने बेमनीसे यह मजबूर कर देंगे कि किसीके सोय या निरा-मित कुशीसे भीर खुद होकर कानूनको नहीं पालना चाहते? मैं तो मन्त्रियोंने यह आशा करना कि वे दोनोंके पायबपनके सामने झुक्नेके बजाय उनके पायबपनको दूर करनेकी कोशिशमें अपने प्राणोंकी बाजी लगा देंगे।

बिम नकालमें मैं रहता हूँ, उसमें भी फन या फाफ-भावी नहीं मिलती। क्या यह फर्नकी बात नहीं है कि कुछ मुसलमानोंके डोमीनियन या बंधूक बर्गपने पोलीवार करनेके कारण सुन्नीमंडीमें जाक-जाकीका मिलना बंद हो गया? गहरने अपने हीरेमें मैंने यह धिक्कावत सुनी कि निराभितो-की रागन नहीं मिलता। जो कुछ दिया भी जाता है, वह जाने सामक नहीं होता। इसमें अगर सोय सरकारका है, तो उसका ही सोय निरा-भितोका भी है बिन्दोने ककरी कामकाजकी नी रोक दिया है। उन्होंने यह क्यों नहीं समझा कि ऐसा करने वे अपने-आपको नुकसान पहुँचा रहे हैं? अगर उन्होंने अपनी समान सन्नी धिक्कावतको दूर करनेके लिए सरलासर भरोसा किया होता भीर कसदा पालनेवाले नागरिकोंकी तरह बस्ताव किया होता, तो मैं जानता हूँ भीर उन्हें भी जानना चाहिए, कि उनकी ज्यादातर मुनीकतें दूर हो जातीं।

मैं हुमायूँके मन्त्रियोंके पास मेंबोकी छावनीमें गया था। उन्होंने मुझे कहा कि हमें असबद भीर मरगपु-रिमानतोंने निजामत दिया गया है। मुरगमान दोन्नोंमें जो कुछ वेग है, उनके सिवा हमारे पास जानेकी कोई भीज नहीं है। मैं जानता हूँ कि वेब जोब बड़ी बलवी उनाठे या करतें भीर मन्त्रियोंके पास कर सकते हैं। लेकिन उनका यह हसाव नहीं

है कि उन्हें न बाहनेपर भी बहासे निकालकर पाकिस्तान भेज दिया जाय। उसका सम्भावना इसका जो यह है कि उनके साथ इन्सानोका-सा व्यवहार किया जाए और उनकी कमबोखोका किसी दूसरी बीमारीकी तरह इलाज किया जाए।

इसके बाद मैं आभिया-मिलिया गया, जिसके बनानेमें मेरा बड़ा हाथ रहा है। डा० आकिफुल्लेन मेरे प्यारे दोस्त हैं। उन्होंने सम्भवतः दुःखके साथ मुझे अपने अनुभव सुनाए, लेकिन उनके मनमें किसी तरहकी कष्ट-बाह्य न थी। कुछ समय पहले उन्हें वासवर जाना पड़ा था। अगर एक सिविल केप्टन और रेजिमेंटके एक हिन्दू कर्मचारीने समयपर बहा उनकी मरबब की होती, तो मुसलमान होनेके कसूरमें मुस्सेसे पापबब बने सिखोंने उन्हें जानसे मार दिया होता। डा० आकिफुल्लेनने इन दोनोंका बहसान मानते हुए अपना यह अनुभव मुझे सुनाया। बरा क्याना तो कीबिए कि इस राष्ट्रीय सत्ताको, बहा कई हिन्दुओंने सिखा पाई है, यह बर है कि कहीं मुस्सेसे मरे निराश्रित और उन्हें उकसानेवाले लोग उसपर हमला न कर दें। मैं आभिया-मिलियाके बहातेमें किसी तरह उल्लास गए १००से ज्यादा निराश्रितोंसे मिला। जब मैंने उनकी मुसीबतोंकी बर्नमरी कहानी सुनी तो मेरा सिर बर्नसे नीचा हो गया। इसके बाद मैं बीबान हॉल, बेबेब केप्टन और किम्बेकी निराश्रितोंकी आबनियोंमें गया। बहा मैं सिविल और हिन्दू निराश्रितोंसे मिला। ये पबानकी मेरी पिछली सेबाओंकी बबसक मुझे नहीं थे। लेकिन इन सारी आबनियोंमें कुछ मुस्सेमेरे बेहरे भी बिबाई दिए, बिन्हें माफ किया जा सकता है। उन्होंने मुझे हिन्दुओंकी तरह कडोरया बिबानेके लिए कोसते हुए कहा, 'हम लोगोंकी तरह आपने मुसीबतें नहीं सही हैं। हमारी तरह आपके बाई-बेटे और सने-सबबी नहीं मारे गए हैं। हमारे-बैसे आप बर-बरके बिबारी नहीं बनाए गए हैं। आप यह कहकर हमें कैसे बीरज बबा सकते हैं कि आप बिन्नीमें बसीलिए उल्ले है कि हिन्दुस्तानकी राजबानीमें सारि और बमन काबन करनेमें बरसक सबब कर सके?' यह सब है कि मैं मरे हुए लोगोंको बापिस नहीं जा सकता। लेकिन मैं सारे प्राणियोंको—इन्सान, जानबरो बनीरा—नबबानकी बी बूई देन है। फर्क सिर्फ

समय और तरीकेना है। इसलिए यही ब्रह्माव ही जीवनका सही रस्ता है, जो उसे पीने सादक और सुदूर बनाता है।

आज दिनों एक दिन होना मुझे मिले थे। उन्होंने कहा कि वे कल्पों में किन हैं लेकिन इस आशयकी दृष्टिसे वे अपने दिव्य होनेका दावा नहीं कर सकते। मैंने उन दावेसे पूछा कि आशयों अलग-अलग क्यों ऐसा सिद्ध है? वे एक ही ऐसा मिल नहीं पाते। जब मैंने अपनी ओर से कहा कि मैं ऐसा सिद्ध होनेका दावा करता हूँ। मैं इस आशयसे आगे बढ़े अपने सिद्धका जीवन बिना किसी कोटि कर रहा हूँ। एक समय था, जब नवजात बालकने मुझे निम्नोका कृपा बोध करार दिया गया था। गुरु गानक मुकुन्दमान और हिन्दू कोई मेरे नहीं आने थे। उनके लिए सभी दुनिया एक थी। मेरा समाधान हिन्दू-धर्म ऐसा ही है। अपना हिन्दू होनेसे पहले मैं अपना मुसलमान होनेका भी दावा करता हूँ। मैं होनेका मुसलमानोंकी अहम् धारणा था, जिससे कहा गया है कि मुसलमान ही और वह किन्नास मारी दुनियाकी हिन्नास करता है।

विश्वविद्यालय मेरा कहना है कि वे कहाँ और निहरमाने रहे और नाथ ही निम्नोके वीर या नवजात न करें। मुझे मैं विना मोने-अनके नाथानी-मरे काम करते अपने दावे विनी आशयोंके मुनहमे सेव की ओर न हों।

१ ८६ ३

१२ सितम्बर १९४७

आशयों और कहने

जहाँ बात हो मैं जानो वह कहना चाहता हूँ कि आज जो कबर मेरे पास सरणी भूखे हो गई है वह सचराक बात है। मेरा विश्व तो उससे बुरी होता ही है। सरणी भूखे मैं अपनी विनोदक रहा हूँ। बाकमाह आज मेरे साथ थे। बाकमाह कामकाजसे भरपूर रहता था। बीगवाने दोस्तोंसे मुनहमेसे मित्रता था। जब मैं वह मुनहा हूँ कि यहाँ सब तो कोई हिन्दू या सिद्ध आशयोंके यही रहे सच्चा तो मुझे आश्चर्य

[illegible][illegible]

[illegible][illegible][illegible]

मनेसे करता है। यह मने कल्पनसे सीखा और इतना तबुर्बा होनेके बाद समझ सकता है कि यह सच्ची बात है। तो मैं ध्यापनी करता हूँ कि बुरेका बचवा हम मने बनकर रहे।

ये शीघ्र गतिपदों बेहास पडे थे। बुनेके रोख इतने डकट्टे हो गए, तो नाटक करनेके लिए नहीं। उन्होंने छुन लिया था, मने कसकतेमें मुक्तवालोंके लिए बूट किया, बिहारने बूट किया, मोठाकासीमें हिड्डोकि लिए बूट किया, तो उन्होंने सोचा, अच्छा यह था गया है। अपने-आपको बनातनी हिड्ड करता है और इसलिये मुसलमान, सिख, पारसी और क्रिस्टी होनेका भी दावा करता है। तो सबसे पूछो तो सही कि हमारे लिए क्या करना चाहता है ?

एक मामाने कहा मेरा बच्चा मर गया है, मैं क्या करूँ ? मेने कहा—भा, मैं तुम्हें क्या बताऊँ ? बच्चाको मार कर, ईश्वर सेरा भका करेगा। बच्चा मर गया, सब मर गए तो क्या हुआ। तु बी तो इसी रास्तेपर चालेबासी है। बुरीखे नहीं तो कामब कासरेने मर जावगी। तु हूँया बिना बोले ही रस्तेबासी है ? इसलिए बुराका नाम से और हम-ओकर क्या करेगी ?

ऐसी बत्नाए क्यों होती है ? ऐसे हम चाहित क्यों करें ? हम अपने बर्मको पहिचानें। उस बर्मने मुताबिक मे सब सोचोमो कहुंगा कि यह हमारा परम बर्म है कि हम किसी हिड्डको पामब न बनने दें, किसी भिन्नरी पामब न बनने दें। मैं करता चाहता हूँ कि सब मुसलमान जो ध्यापनी-अपनी अवहोने हट गए हैं, उन्हें बापित मेको। मेरी हिम्मत नहीं है कि मैं आज उन्हें जेब, मरर उन्हें बापित सेजगा है यह ध्याप अपने विषयें रखें। मैं तो रखता हूँ। उन्हें बापित नहीं हो सकनी है जबतक सब मुसलमान बिग बनहोने निकले हैं, वही फिर न मने बायं। हा, एक बात है। गाब मुने बोल मुतासे है कि मुसलमान आज तो अपने घरोंमें बुरा रक्ता है, मोठा-बायब रखता है, मसीनबन रखता है—मेटेन-मर, मेने तो बेनी जी नहीं है, यह सब रखता है, जैसे कि सच्ची-महीमें। मेने गब मुता है, क्या तो नहीं, लेकिन मैं सब बालनेकी तैयार हूँ। पर हमने हब क्यों टरे ? मैं तो मुसलमानोंको कहुँया और बिल्लीमें

तो नबको कहता हू कि आप एक ऐतान मिनाहें और धुवाको हाविर-
नाजिर जानकर, ईश्वरको साथी करके उसमें कहें कि पाकिस्तानमें कुछ
भी हो उस गुनाहके लिए हमको आप क्यों मारे ? हम तो आपके दोस्त
हैं, हम हिंदुस्तानके हैं और रहेंगे। दिल्ली कोई छोटी नहीं है, देवकी
राजधानी है, पायेतस्त है। यहा बड़ी आलीशान जुमा मस्जिद पड़ी है,
यहा फोर्ट भी है वह आपने नहीं बनाए है, मैंने नहीं बनाए है, हिंदुने
नहीं बनाए है। वह तो मुसलमानों ने बनाए हुए है, जो हमारे ऊपर राज्य
करते थे। मैं तो यहाके बन गए थे, हमारे रीति-रिवाज सब नीब से
थी थी। मुसलमानोंने आप हम कहें कि बराहें आधो, नहीं तो हम सबाह
कर देंगे तो क्या आपा मस्जिदका कच्चा आप बेनेवाने हैं ? और अगर
हम कच्चा लेते हैं तो उसके मानी क्या होते हैं ? आप समझें तो सही।
उस जुमा मस्जिदमें क्या हम रहेंगे ? मैं तो वह कभी कबूल नहीं कर
सकता। मुसलमानोंको वहा जानेका हक होना ही चाहिए। वह उनकी
पीठ है। हमें भी उसका कछा है। उसमें बड़ी कारीगरी भरी पड़ी है।
हम क्या उनें हा देंगे ? वह कभी नहीं हो सकता।

मुसलमानोंने मेरा कहना है कि आप साफ बिलसे कह दें कि आप
हिंदुस्तानके हैं। मुसलमानों के बफादार हैं। अगर आप ईश्वरके बफादार
हैं और आपको इस्लाम मुसलमानों रखना है तो आप हिंदुओंके मुसल-
मानी बन सकते। उनके साथ बट नहीं सकते। आपको यह कहना है।
पाकिस्तानमें जो मुसलमान हिंदुओंके मुसलमान बने पडे हैं उन्हें सुनाना है
कि आप पागल न बनें। अगर आप पागल बनें तो हम आपका साथ
नहीं दे सकते। हम तो मुसलमानों के बफादार रहेंगे। इस सिरके फटेको
समाप्त करेंगे। हकूमतका पैसा हुकूम होना, उसके मुताबिक हमें चलना
है। मैं सब मुसलमानोंको कह दें कि बिलके पास मशीनगनों हैं जो ला-
वारक हैं, वह सब हकूमतको दे दें। हकूमतका यह धर्म है कि किसीको
इसके लिए सजा न करे। ऐसा ही मैं कसकसेमें करवाकर आया हू। कसकसे-
में मेरे पास काशी इमिदार् बोलेने बना करदिए थे। ज्यादा तो हिंदुओंने
ही दिए थे। वहा मुसलमानोंके पास इमिदार् है तो क्या हिंदुओंके पास
नहीं है ? मैं हिंदुओंको तो कहता हू कि इमिदार् रखना ही न चाहिए।

रखना है तो उसके लिए साइवेंट होना चाहिए, उसके लिए परवाना होना चाहिए। पञ्जाबमें करने हैं कि सबको हथियार रखनेका हक दे दिया है। मैं नहीं जानता कि पञ्जाबमें क्या हो रहा है। अगर सबको हक है तो सब हथियार रखेंगे। उससे पञ्जाबका कोई भसा नहीं होने-वाला है। सबके पास हथियार रखेंगे तो आपस-आपसमें सौम्य लड़ेंगे और एक दूसरेको मारेंगे। सब हथियार रखें और सब सड़नेवाले हो जाएं तो विचारत कौन करेगा ? क्या आपसमें मारनेका पेंसा रह जायगा ? इसलिये मैं कहूँगा कि अगर पञ्जाबमें या पाकिस्तानमें ऐसा है तो जसमें सबकीबी कली चाहिए और कहना चाहिए कि हथियार कोई न रखेगा, हथियार सब हकूमतके पास रहेंगे। सड़नेको हथियारनी क्या जरूरत है, इसकी तो हकूमतकी जरूरत है। कुछ भी हो, भाव तो किसी सड़नेके पास हथियार नहीं होना चाहिए। मैं कहूँगा कि भितने भी हथियार मुसलमान रखते हैं, सब हथियार हकूमतको दे देना चाहिए। हिन्दुओंकी भी सब हथियार दे देना चाहिए। पीछे हिन्दू-सिख मुसलमानोंने कहा कि आप क्यों करते हैं। हम आपसे नहीं करेंगे और आप हमसे न करें। बाहर कुछ भी हो, बिल्लीमें तो हम भाई-भाई होकर रहेंगे। ऐसा कलकत्तेमें भी हुआ और हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई होकर रहने लगे। बिहारमें भी हिन्दू ऐसा करते हैं। मैं उम्मीद करता हू कि बिल्लीमें भी यही होगा जो कलकत्तेमें हुआ। आप लोग जल्दी बिल्लीमें बीसी हालत जाए जिससे मैं जल्दी बंदाब का हक और यहाँ बाहर कह सकू कि बिल्लीमें मुसलमान काटिते रह रहे हैं। उसका बला मैं नहीं जानूँगा। मेरे बला मालनेकी बात फीसी है। वह मैंने आपको समझा दिया और यही सच्चा बला है। वह बला मैं मजदूरके बलाब साहब और यहाँकी हकूमतसे जानूँगा। ईस्ट-पञ्जाबमें भी मैं भसा जानूँगा। यहाँ सिखोंको, हिन्दुओंको काटूँगा, उन्हें कभी सुनाऊँगा, क्योंकि मैं उनका आदिम हूँ, दोस्त हूँ। मैं सब मजदूरका हूँ, तो मुझे सबको कहनेका हक है और मैं कहूँगा कि आप पायल करी मतें हैं। सिख इसकी बहादुर कौम है। एक सिख

सवा सात इन्सानसे ज्यादा कहलाता है। वह क्या किसी कमजोरको मारेगा ? मारकर क्या पानेवाला था ?

मुसलमानोंको चाहिए था पाकिस्तान, उन्हें मिल गया। पीछे क्यों लड़ते हैं, किसके साथ लड़ते हैं ? क्या पाकिस्तान मिल गया तो सारा हिन्दुस्तान से जैने ? वह कभी होनेवाला नहीं। क्यों वे कमजोर हिन्दु-सिखोंको मारते हैं ? वह सब मैं उनको कहना चाहता हूँ। मैं तो भ्रमेवा हूँ। आपके पास हकूमत पड़ी है, दोनों हकूमतें आमने-सामने बाते करे कि उनके यहाँ जो अल्पमत—आइनागिरी—पड़ी है, उसकी रक्षा आपको करनी है। यहाँ जो है उनकी रक्षा हमें करनी है। नहीं तो यहाँ किस मुहसे बजाहरनाम कह सकता है, किस मुहसे सरबार पटेल कहने-वाले हैं कि हम बराबर अल्पमतकी हिफाजत करते हैं और यहाँ कोई मुसलमान जबका ऐसा नहीं है, जिसको कोई छू सकता है या उसपर जाल भाँसे निकाल सकता है। अगर कोई ऐसा मुसलमान है, जो पागल बन जाता है, अपने घरके अंदर मशीनगन रखता है तो हम उसको सजा करेंगे, मारेंगे। लेकिन जो मुसलमान यहाँ बफावार होकर रहता है, उसे कोई छू नहीं सकता। ऐसे हालात आप पैदा करें कि जिससे बजाहरनाम ऐसा कह सकें, सरबार बल्समगई ऐसा कह सकें कि दिल्ली बोर्डे बिनोके लिए पागल बन गई थी, लेकिन दिल्ली कुछ बन गई है। साथ हिंदू कहते हैं कि मुसलमान अगर हमारे बीच रहे तो मशीनगन बजाएंगे, हमारे पास मशीनगन नहीं हम क्या करें ? तो क्या हम मुसलमानोंको मार डालें, या निकाल दें ? यह जराफत नहीं। हम इस तरह उपयोग न करें।

मुसलमान भाइयोंको मैं कहना चाहता हूँ कि उन्हें एकसाटा स्टेटमेंट^१ निकालना चाहिए। दिल्लीको बिलकुल साफ कर लेना चाहिए। सिखोंने भी कुछ निकाला है, हिंदुओंने भी। बिल और विमान साफ हो जावे तो हम मेलजोल कर सकते हैं। आखिर दिल्लीकी इतनी बड़ी सिंजारात, इतनी नुबसूरत इमारतें, दिल्लीकी लहजीब वह सब हिंदू-मुसलमान दोनोंकी है, यह एककी नहीं।

^१ बयानावय ।

: ८७ :

१३ सितम्बर १९४७

महो श्रीर बन्धो,

एक बयान था, बाबर १५वीं शताब्दी, जब मैं दिल्ली में आया था, हुसैन साहबको लिया और डाक्टर भगारीको। मुझको कहा गया कि हमारे दिल्लीके बाबसाहू भरोब नहीं हैं, लेकिन वे हकीम साहब हैं। डाक्टर भगारी तो बड़े बुद्धिमान थे, बहुत बड़े चर्चन थे, वैद्य थे। वे भी हुसैन साहबको जानते थे, उनके लिए उनके दिवने बहुत काम था। हुसैन साहब भी मुसलमान थे, लेकिन वे तो बहुत बड़े मिशनरी थे, हकीम थे। यूनानी हकीम थे लेकिन सामुर्वेदका उन्होंने कुछ अध्ययन किया था। उनके बड़ा ह्वारो मुसलमान भाते थे, और ह्वारो मरीम हिंदू भी भाते थे। बाबूकार, बलिक मुसलमान और हिंदू भी भाते थे। एक दिन एक ह्वाोर सया उनको बोले थे। बहुतक मैं हुसैन साहबको पहचानता था, उन्हें सपना नहीं पड़ी थी, लेकिन सबकी शिबमसकी सातिर उनका नेमा था। और वह तो बाबसाहू-जी थे। बाबिरमें उनके बाब-बाबा तो बीममें रहते थे, बीमके मुसलमान थे, लेकिन बड़े मरीफ थे। मिलने हिंदू बीम मेंरे नाम था, उनमें पूछा आपने सरकार कहा कीम है? अडालवली? अडालवली कहा मडा काम करते थे। लेकिन नहीं, दिल्लीके सरकार भी हुसैन साहब थे। क्यों थे? क्योंकि उन्होंने हिंदू-मुसलमान भवनी नेमा ही की, शिबमस की। तो वह १५ के शताब्दी बाब मेंने नहीं। लेकिन बाबमें मेंरा सास्पुक उनमें बहुत बड गया और उनको और परामना—डाक्टर भगारीको परामना। डाक्टर भगारीके घर में बाकी दिनोनाग गहा और उनकी भवकी जोहग और उनके सामाद भीमसवाकी परामना है। पर मैंने हैं, बाब भी कहा पडे हैं। लेकिन दिल्लीमें रज क्यों है? उनको आज डर ना गया है, क्या गहा कोई हिंदू उनकी जी मानेगा? उनके घरमें तो वे रहने नहीं हैं। होटलमें जाकर रहते हैं। उनका नामें बच गए हैं, उनका सम्मान हिंदू बा। उनमें जो बीम थाए थे उनको उगा दिया। तो ऐसे बाब हम क्यों हैं? ऐसे पावस हिंदू क्यों

बनें, सिख क्यों बनें, जिसका उनको डर लगे। आप मुझको कह सकते हैं, काफी हिंदू कहते हैं, गुस्तेमें आ जाते हैं, भाव भाव करते हैं कि तू तो बगवाने पड़ा रहा, बिहारमें पड़ा रहा, पचावने आकर देख तो सही, पचावने हिंदुधोकी क्या हासत मुसलमानोंने की है, सिखोंकी क्या हासत की है, जड़फिलोंकी क्या हासत की है। मैं यह सब नहीं समझता हूँ, ऐसा तो नहीं है। लेकिन मैं उन दोनों बीबीको साथ-साथ रखना चाहता हूँ। वहा तो अत्याचार होता ही है। पर मेरा एक भाई पागल बने और सबको मार डाले तो मैं भी उसके समान पागल बनू और गुस्सा करूँ ? यह कैसे हो सकता है ? मेरे पास सब एक है, मेरे पास ऐसा नहीं है कि यह गांधी हिंदू हैं इसलिए हिंदुधोको ही बेबेगना, मुसलमानोंको नहीं। मैं कहता हूँ कि मैं हिंदू हूँ और सच्चा हिंदू हूँ और सनातनी हिंदू हूँ। इसलिए मुसलमान भी हूँ, पारसी भी हूँ, क्रिस्टी भी हूँ, जड़वी भी हूँ। मेरे सामने तो सब एक ही कूबकी डालिया है। तो मैं किस जालीको पगल करूँ और मैं किसको छोड़ दूँ। किसकी पत्निया मैं ले दूँ और किसकी पत्निया मैं छोड़ दूँ। सब एक है। ऐसा मैं बना हूँ। उसका मैं क्या करूँ। सब लोग अगर मेरे-बैसा समझने लगे तो पूरी भाति हो जाय।

आज मैं पुराने किसेमें बना। वहा मैंने हजारों मुसलमानोंको देखा। और दूसरी मुसलमानोंसे मरी गाकिया किसेकी तरफ बची आ रही थी। सारे मुसलमान आश्रित थे। किसेमें उनको रहना पड़ा, तो किसको डरते ? आपको डरते, मेरे डरते ? मैं जानता हूँ कि मैं तो नहीं डरता हूँ, लेकिन मेरे भाई डरते हैं, जो अपनेको हिंदू मानते हैं, जो अपनेको सिख मानते हैं। उन्होंने डराया तो मैंने डराया और आपने डराया। तो मुझसे तो बर-बास नहीं होता कि वे डरके मारे मालकर पाकिस्तानने जाय। पाकिस्तानमें स्वर्ग है और यहा नरक है, ऐसा नहीं। हम इस नरकमें क्यों पडे ? मैं जानता हूँ कि न पाकिस्तान नरक है और न हिंदुस्तान नरक है। हम पाहें तो उन्हें स्वर्ग बना सकते हैं, और अपने कामोसे नरक भी बना सकते हैं। पाकिस्तानमें मुसलमानोंकी बड़ी ताबाद है, वे उन्हें नरक बना सकते हैं। हिंदुस्तानने वहा हिंदू बड़ी ताबादमें है, हिंदुस्तानको नरक

बना सकते हैं। और जब दोनों मग-जैमें बन गए, तो हममें फिर फास हो
 उन्हाल तो नही रह गया। पीछे हमारे मीठे गुलाबी रंगी निगी हैं।
 यह चीज मुमनो व्याजगी है। मंग हृदय रूप उठता है जिस रातने
 किम हिमको ममकाका, किम मिनी ममकाका, किम मुमनयागरी
 ममकाका। निमने बाकी मुमनयान गुमने घा गए, हमने उन्हें
 रोका। यह भी मैंने देखा उनके दिनों में मुहब्बत थी, वह मममाने से,
 रोने से, कहने से कि यह बूटा जाया है, वह तो हमारी गिम्मत रखे
 जाया है। हमारे भानू है, उनकी पीछनेके लिए जाया है। हम भूखे हैं
 तो देखनेके लिए जाया है कि उनकी रोटीका दुकान रंगने मिल न
 तो पहुँचाए, उनकी पानी नही मिलता है, तो उनकी पानी बहने प
 चाए। मुझे पता नही है कि बहा पानी मिलता है या रोटी मिलती है
 कि नही। किनीने कहा कि हमारे पान रोटी नही है, पानी भी नही
 है। मैं तो देखने गया था। कोई चीजसे बोले ही गया था, कोई मग
 तो मुझे लेना नही था। कुछ सोचने मुझे बड़ी मोहब्बतने मुनावा।
 मुझे मन्ना मगा। घर-बार छोड़ना किनीको पन नही आया। जैसे
 वे जैसे भाव हिम प्राप्त पड़े हैं। अपना घर छोड़ा, जागदा छोड़ी, कोई
 घर गया और कोई बहा बिदा था पड़े है। पीछे बहा जाना बहा है, पीना
 कहा है, घर कहा गया है? कही भी पड़े रहते हैं। यह अच्छी बात नहीं
 है। सबके लिए जर्मकी बात है। तो मैं तो इनको भी समझाया था।
 आप सोचोनी मार्फत दूसरे बिलको मेरी धावाय पहुँच सके, उनकी भी
 पहुँचाना चाहता हूँ। आपकी बिल्दी बड़ी आलीशान नगरी है, बिलमें
 यह पुराना फिला है, वह तो इमप्रत्य कहा जाता है। कहते हैं कि महा-
 भारणके काधने पाठन यह पुराने फिलेमें रहते थे। इसको इमप्रत्य कहें,
 बिल्दी कहें, बहा हिम-मुसमाल दोनों इफ्दू होकर पसे। मुसलीनी
 यह राजधानी थी। भाव तो हिमस्तलीकी है, मुसल बाहरालका तो
 कोई है नही। मुसल बाहरले गए थे। लेकिन उनका सब कुछ
 बहा बेहलीने था। वे बेहलीके बने। उसमेंसे असादी माहल भी बने, हकीम
 साहब भी बने और कही हिम भी बने। हिमने भी उनकी पीकरी की।
 ऐसी आपकी इस बिल्दीमें, हिम-मुसमाल सब आरामसे पड़े रहते थे।

भाष बफा बढ सेते थे। वो बिलके लिए सजे पीछे एक बन गए। जिसने एक बफा किसी कासिलाने, खूनी घाबसीने हमारे अज्ञानबबीका खून किया, लेकिन उसके पहले मुसलमान अज्ञानबबीको दिल्लीकी बाना मस्जिदने मोहकतसे ले गए थे और वहा उन्होंने आपन दिया। यह है आपकी दिल्ली।

लेकिन आप क्या हो रहा है? सरकार ऊंचा सिर रखकर चलने-वाला, आप ने आपको कहता हू कि उसका सिर नीचा हो गया है। वह जबाहरलाह, वह बहादुर जबाहरलाह, हमानें उठनेवाला, किसीकी परवाह न करनेवाला, आप वह आचार बनकर बैठ गया है। क्यों आचार बना? हमने उसको आचार बनाया। अगर ऐसा ही रहता कि पक्षिनी पचावके मुसलमान बीवाने बन गए, वह भी बतरलाक बात है, नहीं बनना चाहिए। अगर एक पागल बने तो उसकी तो बचा हो सकती है, लेकिन सब पागल और बीवाने बनें तो कौन बचा करेगा? वह जबाहरलाह कोई ईस्वर तो है नहीं। सरकार ईस्वर बोले ही है। दूसरे को उनके नहीं पडे हैं, वे ईस्वर तो हैं नहीं। उनके पास ईश्वरी ताकत तो कोई नहीं है। बाहरकी ताकत, दुनियाकी ताकत भी कहा उनके पास पडी है?

ने तो बस यही बात सबको कहता हू। काफी हिंसा आ गए, मुसलमान आ गए, उनसे काफी बहस की, लेकिन आखिरमें मेरी आवाज ईस्वरकी जाती है। मैं कहता हू, मुझको महासे उठा ले लू। नहीं तो दिल्लीने वो आप बीवाने बन गए हैं वे लडते हैं, उनको लू लेने पहले वे बैठे बना वे। किसी हिंसेके दिवसें वा सिक्केके दिवसें मुसलमानोंके लिए गुस्ता न हो। मुझको सोन मुनाते हैं कि मुसलमान तो फिफा कालमिस्ट^१ है, उसका मतलब है बेवफा है, आप वो हकूमत हैं उसके प्रति वे बेवफा हैं। साठे चार करोड़ मुसलमान पडे हैं। साठे चार करोड़ अगर बेवफा बनते हैं तो उसमें खोपरा कौन? उनको ही बनाना है। वे इस्लामको गढें डालेंगे।

^१ पक्षिनी।

येकिन हिंदू धीर मिरहो के मननें नही जात माने है। मांटे पार करोड़ मुसलमान मगर तैनी बहनुमायी परें कि हकूमतरी बेवकाली कर मकने है तो उनही मंडमें गज्जा है। मगर मांटे पार करोड़ मुसलमानोंको आप न बताव। मने, नही तो के पागिमान जाव ऐसा फने, यह ठीक नही। क्या जाय? बिमारी मगधने जाय? न आपको कहता हूँ वे आपसी मगधने है, मेरी मगधने है। बम-जे-बम के बहुबल बेचना नहीं चाहता। नै अजग्यो मही नृणा कि उनमें बहुत न मुकको यहाने उठा से। काकी दिन बिबा ग्या है, कोई ७५, ७६ बरस कम नहीं है। मुझको पग मनीय है। दो मेरेमें कम मानी है वह मेबा मेने कर नी, मेदिन मगर जिदा गज्जा चाहता है तो मेरे पासने ऐसा काम से बिमने मेरी मात्मानो मसीप पहुचें। दोनो कहे दू बीनोका दोस्त है। इसलिये अब तेरी बात मुमते है धीर मुनेने। नै काकी मुसलमानोंके साथ बैठना हूँ, किने कहे कि यह बगल-बास है धीर मुकको क्या से रहा है। नै कहता हूँ कि अगर यह क्या बैठा है, तो क्या किसीका सवा नहीं हो मकता।

मुसलमानोंके पास काकी इशियार पड़े हैं, यह नै कबूल करता हूँ। बोले तो मेने से मिय, बोले-से पड़े हैं तो क्या करेंगे? मुकको मारेने? आपको मारेने? ऐसा करें तो हकूमत करा गई है? नै आपकी कहता हूँ कि अगर हम आप मन्के बच जाव, शरीक बन जाव तो हकूमतको हने इन्साफ बिबागा ही है। हकूमतको आपस-आपसमें बकने से, हम आपस-आपसमें नहीं बटे, हम आपस-आपसमें दोस्त ही रहें। हम डर न करे कि हमको मार डालेये। मारनेवाला फितना ही ममान हो, मार नहीं सकता जबतक ईश्वर हमारी रक्षा करता है। इसलिये नै कहता हूँ, बीनोसे कहता हूँ, बरको छोडो। काबरे भावम-की बहुत मुके मुरी जगी। कहते हैं, मुसलमान मुसलमानोंकी सलामा गया, इसलिये उन्हें पाकिस्तान जाला जा रहा है, उनके लिए जाला चाहिए, जमीन चाहिए। पाकिस्तान मरीब है, इसलिये बिसके पास पड़े हैं वे मेने मेब हैं। मुके उसकी शिकायत नहीं। अगर साथ ही यह क्यों नहीं कहते कि पणिनी मवाकमें हिंदुधोपर क्या हुआ?

बिहारने बुराई की तो उसका कफ़ारा किया। कसकतोये हिंदुओंने आकर मेरे सामने परमात्माप किया। ऐसे ही मुसलमान आकर कहें, हमने बुराई की, नजदी की तो वह क्षमाफ्त होगी। मैंने बेब लिया है, मैं कैसे धावें बंद कर सकता हू। हिंदू गुनाह करते हैं उसको भी क्षमा नहीं सकता हू। इसी तरह कोई मुसलमान गुनाह करे तो उसे भी मैं नहीं क्षमाऊंगा। क्षमाऊंगा तो मैं इस्लामका बेवफा बनूंगा। मैं उसका बेवफा नहीं बनना चाहता। बुद्धत्वका भी बेवफा नहीं बनूंगा। मैं सबका बफादार ही रहना चाहता हू। न मैं बुराका बेवफा बन सकता हू न इन्सानका। सबकी तरह बफादारी करना चाहता हू।

मुसलमान सब बेवफा होते हैं, ऐसा नहीं है। मैं काफी मुसलमानोंके बारेमें कहनेको तैयार हू कि वे बावफा हैं। अगर बेवफा होंगे तो ईश्वर उन्हें पूछेगा और वे अपने-आप इस्लामको छतरेमें डालेंगे। काफी मुसलमानोंने डरावा किया, इसलिय मैंने कम कहा कि मुसलमानोंका यह बर्न है कि जितने साठ-साठ लोग हैं वह कहें कि हम ऐसे निकम्मे नहीं हैं। हम हिंदुस्तानके बफादार हैं और रहेंगे, हिंदुस्तानके लिये बुनियाते करेंगे। तब तो वे अपने मुसलमान हैं नही तो वे बुरे मुसलमान हो जाते हैं। मेरी ऐसी उम्मीद है कि ऐसे बुरे मुसलमान हमारे बहा हिंदुस्तानमें हैं नही और अगर हैं तो उन्हें धक्का करनेके लिये हमको धक्का बनना है, बुरा नहीं।

१ द्द १

१४ सितम्बर १९४७

माइयो और बहनों,

जैसे कम गया था वैसे आब भी मैं बहा बना गया था, बहा हमारे मुसलमान आभित लोग रहते हैं। बहा कंपमें जो गल्ली भी वैसी मैंने देखी नहीं। मैं हिंदुओंके कंपमें भी गया और मुसलमानोंके कंपमें भी गया। हिंदुओंके कंप दूसरी जगह हैं। मुस्लिम कंपोंमें

इसकी बखूब निश्चयता है, उसकी गरमी है, कलौ बमरों नदी माफ करने ? अगर मैं उस कैपका कमांडर हू तो मैं तो उसे बरखाद नगी करूँगा। मैं तो बेपॉले रहा हू, मैंने कैप देते हैं। कैप होने पर नहीं रह सकते। मुझको बटा रब हुआ। इसने सिपाही बने हैं, उसकी मिलिटरी पढी है, तो वे इसकी गदगी क्यों बरखाद करने हैं ? वे कहेंगे कि नफाई करना हमारा काम कहा है। ठमकी तो बहुत बसानेका हुन है। जहा घाति एग्नेरी तुमारी टपूटी है। वे घावसमें लगने हैं, तो हम उनको बहुतने माफ कर देते हैं। इसका ही हमको हुन है, हुनमे बाहर हम नहीं जा सकते। ठीक है, लेकिन वह हमारी मिलिटरी है हमारे बे सिपाही है। मेरी गियाह है कि उनके हाथमें एन कूदागी भी होनी चाहिए। एक आवडा भी। कही भी गदगी हो उन्हें माफ करें। पहिले-पहल उनका काम सफाई होना चाहिए। कैपको अगर बन्दा रखना है तो हमारे मुस्लिम भीर हिंदू भाइयोकी खुद बहा सफाई रखनी है। मैंने वे पडे है ऐसे ही पडे रहें, उन्हें हम कुछ न कहे तो हम उनके हुसन बगते हैं। अगर हम उनके शोस्त हैं, उनके मेवक है तो हमें उन्हें साफ कहना है कि घाव बहा घाव है, साधारन बनें। अगर पाकिस्तानमे हिंदू घरवाली का बाप तो क्या उनको कुएमें डाल दें। क्या बहा रखें नहीं भीर देखनास न करें। हम उनको ऐसा कहें कि घाव बुझी है इसलिए घावको बखू नहीं लगानी है, यह बलनेबाला नहीं है। घावको सफाई करनी है। हम घावको साफ, भी बेंगे, पानी भी बेंगे अगर मगी नहीं बेंगे। मैं तो बहुत कठिन हुसमका आदमी हू।

हरिद्वारमें जब मूनका मेला था तो मैंने कूदागी बसाई। हमारे पास बहा कैप 'सिन्टिजम' के सब काम थे। वहाके जो कैप-कमांडर वे वे बाद-बाद आर्यमियोकी टोली करके भिक्क खाते थे भीर सब काब कछे वे भीर मिली पंखी होती थी उसको साफ कछे थे। इसके बिध सबको राखीन ही बई थी। तो मैं तो यह कहूँगा कि वहाके जो कैपके कमांडर हैं, कोई भी हो, मुसलमान हो, हिंदू हो,

^१ सफाई।

मुझे परवाह नहीं है, उनका पहला काम है अपने कैपको निष्कुल साफ रखना । उसने कोई पैसा तो खर्च नहीं होता । अगर कैपके पास फावड़े नहीं हैं तो हलूमतका काम है कि वह उस चीजको सफाई करने-के लिए दे । अगर नहीं देती, उसके पास इतने काम पड़े हैं कि उसमेंसे उसे फुर्सत नहीं मिलती तो कमाडरको फावड़ा कहींसे पैदा करना है और जोशको देना है । जिस तरहसे हलूमतका काम कैपने खाना पकवानेका है, उसी तरहसे सफाईका इतनाम करनेका है । पीनेका पानी है और कपड़े साफ करनेका पानी है, ट्यूनिंग-साबका पानी है, भूकिस उसकी निकासीका इतनाम नहीं होता, इसलिए कानरा^१ हो जाता है । कभी कैप-सैनिटेशन बनुरा रहना ही नहीं चाहिए । मुझे कहना पड़ेगा कि यह चीज मैंने अग्नेयोंके पाससे सीखी । मुझे पता नहीं था कि कैप-सैनिटेशन कैसे चलाया जा सकता है । जिस तरहसे ह्यूरो-नाथो भावनी रहते हैं, उनको जिस तरहसे काम दे कि जिससे वह सैनिटेशनका काम करें । और जो कुछ उनको काम करनेको दिया जाना वह करे । मिसिडरीयाने यह सब करते हैं । मिमटोमें सारा कहुर जग हो जाता है । तन्मू, डेरे जग जाते हैं । कैपका पहला काम वह है कि पहली पार्टी जो पक़ब जाती है, उसको पानी कहा है, यह देख लेना है । जिस तरीकेसे पानी इस्तेमाल करें । दूसरी जो पार्टी है उसको ट्रेन्^२ खोलना है, जिससे पेशाब न पाखाना बाहर न जा सके । बाहिर है, ऐसा करे तो पीछे कहा कानरा नहीं हो सकता । डिसेन्ट्री^३ नहीं हो सकती ? वे आरामसे रह सकते हैं । बाकी चीजोंको मैं छोड़ देना चाहता हूँ । यहाँ तो अभावपुत्र पड़े हैं । सब जैसे-तैसे पड़े हैं । कैपको कोई साफ-मुथरा नहीं रहता ।

मैं जिसका मुनाह निकालूँ । मुस्लिम सरनार्थी कैपका जो कमाडर है वह मुस्लिम है । वह उनको कह सकता है, उनको समझ सकता है कि उनको यह करना है । उनको समझाकर काम लेना है । उनको कहा जाय कि तुम अगर ऐसे रहोगे तो तुम मर जाओगे । तुम्हारे बच्चे

^१ ह्यूरा; ^२ जाहर्वा; ^३ नेकिह ।

साफ-सुथरे नहीं रह सकते हैं, इससे ज़ेहतर है कि कैंपको साफ रखो। वहाँ हम सफाई सिखा दें तो क्या काम कर सकते हैं। हिन्दू कैंप देखें तो क्या भी सैदा पडा रहता है और कचरा पडा रहता है। मगर कुछ फर्क तो है। नये पैर बाधो तो नै तो वहाँ पच हो नहीं सकता। साताबमें कुछ पानी ही नहीं बा, सूखा पडा बा। कहासे पानी निकले उसका इस्तेमाल नहीं। बाधिरमें बामबर तो मुसलमान भी नहीं हैं, और हिन्दू भी नहीं। प्रायः हम बामबर-जैसे मन गए हैं। तो मुझको यह सब बडा बुरा लगा। पीछे मेरा बयाब दूसरी चीजकी तरफ चला गया। ऐसे तो हम हैं, लेकिन ऐसे हम क्यों बनें? क्यों पाकिस्तानसे बरके नारे हिन्दू माने, सिख माने। ठीक है, हिन्दूने यह कुछ बुरा किया। मगर क्या तो नहीं किया। पकिनी पचाबमें हिन्दू क्या बुरा करने, सिख क्या करने? उन्हें बहासे क्यों मानना पडे? किसीने गुनाह किया है तो उसकी सजा करो। यह तो हकूमतका काम है। इसी तरह मैं कहूंगा कि किसीको बहासे मानना क्यों पडे? मुसलमान है तो क्या मुसलमान होनेका गुनाह उसने किया है? मुसलमान है तो भी हमारा है, हमारी हकूमतमें पडा है। उस मुसलमानको मानना क्यों पडे? वे सरकारी हैं तो खुशी बात है कि यह किसीके लिए भर्नकी बात है। वो मुसलमान क्या पडे है वे बाहरसे नहीं आए हैं। लेकिन वे करीब-करीब सब यह किसीके मोहलोसे आए हैं। बोले बाहरसे आए होंगे। किसीनेसे हमने उनको मारकर मगा लिया है। वे आपको कहवा, क्या भी सुनावा बा कि यह हमारे लिए तो बडे भर्नकी बात है। पीछे मेरा विचार चला कि हम दोनों पापब क्यों बनें। पाकिस्तानकी हकूमतकी यह कमबोरी है कि वो बहासे बलमत है उनको बहाने मानना पडा। वे उनकी रजा न कर सके, पाकिस्तानकी हकूमत उनकी रजा नहीं कर सकी, इसलिये उनको मापकर बहा माना पडा। पाकिस्तानकी हकूमतका फर्क है कि उनकी मिलात करे कि नाई, पाप कहा जाते हैं, क्यों जाते हैं? आपको कोई हवाक करता है तो हमको बनावे, हम उनकी मारेंगे, जेलमें जेबेंगे, सजा करेंगे। लेकिन आपको तो मारा रहता है। प्रायः तो बहा ऐसा बन गया है कि जरीफ प्रायकी

भी भाग रहे हैं। साहीर छाड़ी हो गया है। जिस साहीरको हिंदुधोने बनाया, उस साहीरमें बड़ा हिंदुधोके बड़े-बड़े महत्वात् मैंने देखे, इसनी साहीरकी बगलें देखी। इसने कासेब और कहा है? मैं तो मक्को पहिचाननेवाला ठहरा। भाब ने कासेब कीर फिसके कब्जे-में है? यह सब बहुत बुरा लगता है और मुझको शर्म आती है कि पाकिस्तानकी हकूमत ऐसे कैसे बन सकती है। पीछे महा देखा है तो भी मुझको शर्म आती है कि हमारी हकूमत होते हुए और ऐसा बंदर बसाहरलात होते हुए ऐसे सरकारकी-जैसे महा होम मिनिस्टर होते हुए, दिल्ली क्यों बिकले और उनकी हकूमत क्यों न बने? उनका हुक्म निकले कि एक बच्चेको बड़ा रक्षित बड़ा रहना है तो बच्चेको सुरक्षित रहना चाहिए। सब तो हमारी हकूमत बनी। लेकिन भाब तो उनके पाम मिनिटरी पड़ी हुई है, पुलिस पड़ी हुई है, उसकी मार्केट में बांति करवा रहे हैं। लेकिन बांतिर हकूमत है किसकी? आपकी है। आपने बनाई है। यह बलाना बला गया सब असेब कीजसे राज्य करते थे। भाब सच्ची हकूमत आप ही है। आपने उनकी बला बनाया, आप उनकी छोटा बना सकते हैं।

आम भी, कि महा सब मुसलमान बिगडे हैं, सबके पास हथियार पडे हैं, बारूक-बोला पडा है। उनके पास स्टीमर पडी है, त्रेन पडी है, मशीन पडी है। सब मारनेको तैयार है। लेकिन फिर भी आपको हक नहीं है कि आप उन्हें मारें। हर एक आदमी हकूमत बन जाता है तो किसीकी हकूमत नहीं रहती। अगर हर एक आदमी अपनी बनाई हुई हकूमतका हुक्म लागता है तो पीछे सब काम हो सकता है। नहीं तो बुनिया हईसेगी, अरे बेचो, बुन्दारी दिल्ली। दूसरी बोक्की कोई ताकत किसी ताकत हो, फास हो, असेब हो, अमरीका हो सब मिलकर हुक्मो बिठा सकते हैं, आप आबादी रखना कहा जानते हो, आप तो मुसलमान बनना ही जानते हो। बसा होना नहीं चाहिए। इसलिए मैं मुसलमानोंको कहता कि जिसने हथियार उनके पास महा पडे है वह सब

हमिषार उनको धपने-आप दे देना चाहिए। किसीको डरते नहीं। लेकिन वे हिन्दुस्तानके हैं और हिन्दुस्तानमें पड़े हैं और आई-वगैर प्रवर-वहा रहना चाहते हैं तो हमिषार दे दें। पीछे वे बतला दें कि हम तो बचपार हैं, हिन्दुस्तानके हैं और हम कभी बेवका नहीं हो सकते हैं, हिंदू क्या, मुसलमान क्या, सब आपके हैं। मुसलमानोंको यह भी कहना है कि अगर पश्चिमी बनावट, छप्पर, बिजो-पिस्तान, बिजने मुसलमान बिलकुल हैं और क्या हिंदू और सिख भी-वे और आधामने नहीं रह पाते हैं तो पीछे हमारे लिए क्या दुस्वारी हो जाती है। आखिरने जब इन्सान हैं, इन्सानियतको समझे। हम कहाँ तक समझते रहें। इन्सान बिगड़ भी जाता है, बचक भी होता है। बच्चे तरीकेसे रह सकते हैं तो क्या बच्चे तरीकेसे रहें। कोई बच्चा ऐसा बिगड़ जाता है कि वह ईशान बन जाता है। तब वे किसीको हिंदुओंकी क्यूँ आप खतरा रहें, बहादुर बनें, बुद्धिमान न बनें। मुसलमानोंके हमिषारोसे डरना बुद्धिहीनता काय है। हमें क्या परवाह है कि मुसलमान कभी हमिषार लेकर बैठें हैं। उनसे हमिषार सेवा हकूमतका काम है। निमित्तीका काम है उनके पाससे हमिषार छीन ले। अगर वे करीफ बनते हैं, अगर वे हिन्दुस्तानके बच्चे हैं और हिंदुओंके पास सब आई-आईसी छह मिलकर नहाना चाहते हैं तो हमिषार दे दें। और मुसलमान को कि हमने गलती की, हम ऐसा बचकने के कि हम किसी तरफ कर दें और नारे हिन्दुस्तानको पाकिस्तान बना दें, लेकिन अब हम समझ गए हैं कि हिन्दुस्तानको पाकिस्तान बनाना है तो यह ऐसे नहीं हो सकता। हमारे पास पाकिस्तान तो है उससे हमें इतनीमात्र होना चाहिए। हम नहाना हिंदुओंको क्या सकते हैं। कुछ रह सकते हैं। जब तो यह होना कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों बनें होतें नूतनता करने अपने और नकलनीने कीज जाया खुदापरस्त है, उनमें नूतनता बने। मस्केकी तरफ देखें, या पूरबकी तरफ देखें, मन्माई मां हम मांगते बिगड़ पड़ी है, नफाई तो बिलने होनी चाहिए। हम एक-दूसरेका बसाईमें नूतनता करे तो हम सब ऊंचे गीतर नाम कर मरने हैं।

मैं यहाँ आया हूँ, तो मैंने आपको कह दिया है कि मैं तो यहाँ मरना चाहूँगा। अगर हम बीबाने बनते रहें और गुस्सेमें आ जाए और मुसलमानोंको मारें तो वह काम तो मेरा नहीं है। उसका गवाह मैं नहीं बनना चाहता हूँ। मुसलमान माने कि हिंदू सब गुनहवार हैं, सिख सब गुनहवार हैं और हिंदू और सिख कहें कि मुसलमान गुनहवार हैं, तो दोनों गलती करते हैं। मैं तो सबको एक जानता हूँ। मेरे लक्ष्यकी हिंदू हो, मुसलमान हो सब एक वर्ण रखते हैं। इसमें जो सच्चे हैं वे ईस्वरको मान्य हैं। जो घुरे हैं उनकी घुराईकी सजा आप क्या देनेवाले हैं? वे अपने आप सजा पानेवाले हैं। इसमें मुझे कोई जक नहीं है। सारी दुनियाके बर्णोंका वह मैंने निचोड़ निकाला है। इसलिए मैं कहूँगा कि मुसलमान कैसा भी घुरा करें, लेकिन आपको तो मसाई ही करनी है। घुराईका बदला देना है सचमुच तो वह मसाई हो सकता है। ऐसा मैं कम-से-कम आपको करते देखना चाहता हूँ। इसका हम करें तो हिंदुस्तानकी अपनी हज़ूमतको अच्छा रख सकते हैं। अगर नहीं तो हम सब गवा बने हैं।

१ ८६ १

गौनवार, १५ सितम्बर १९४७

(निश्चित संदेश)

रास्तेमें जब मैंने बीरे-बीरे निरजेवाले जीवनप्रद पानीकी आवाज सुनी—जो और मीकोपर जीवनको बुझ करनेवाली होती—तो मेरा मन दिल्लीकी कुली जाबनियोमे पडे हुए हज़ारों निराश्रितोंकी तरफ़ खींच गया। मैं चारों तरफ़से अपनेको पानीसे बचानेवाले बरामदेमें घासमसे खो रहा था। अगर इन्सान बेरहम बनकर अपने आईपर जुल्म न करता तो वे हज़ारों मर्द, औरतें और मासूम बच्चे आज बेघासरा और उनमेंसे बहुतसे मूखे न रहते। कुछ जगहोंमें तो वे घुटने-घुटने पानीमें ही होते। इसके सिवा उनके लिए कोई चारा नहीं।

क्या वह सब धर्मियों है? मेरे भीतरने मन्त्रों का वाक्य था—नहीं।
 क्या वह धर्मियों की आकाशीय पट्टा बन है? उन पिछले २०
 ब्रह्मों के ही विचार मुझे लगातार आते रहे हैं। वेग वीर मेरे
 लिए बरदान बन गया है। उनमें मुझे अपने दिलों की छोटो-छोटो
 प्रेरणा दी है। क्या किसीके नागरिक पावन हो गए हैं? क्या उनके
 घर-नी भी इलायत बाकी नहीं रही है? क्या वेगका प्रेम और
 सबकी आकाशी उन्हें विनम्र करीब नहीं करती? इसका अपना
 ही हिस्सा और सिरोंकी देनेके लिए मुझे भाग्य कम दिया था।
 क्या वे मन्त्रोंकी बातों को रोकने लायक इलाक नहीं बन सके? वे
 किसीके मुखमार्गोंसे और वेगका वह झटका कि वे मार्ग डर
 छोड़ दें, भगवानपर नरोत्तम करें और अपने धर्म-हथियार सरकारों
 नीचे हैं। क्योंकि हिस्सों और सिरोंकी वह डर है कि मुखमार्गों
 पास हथियार हैं। इसका वह मतलब नहीं कि हिस्सों और सिरोंकी
 पास कोई हथियार नहीं है। सचाय सिर्फ सिरीका है। किसीके पास
 कम होना, किसीके पास क्या। या तो धर्ममन्त्रोंको त्याग करनेके
 लिए भगवानपर या उनके पैरों के लिए हुए इलाकपर नरोत्तम रखा होगा,
 या फिर सोलोपरके विचारोंकी नहीं करके अपने अपनी हिस्सागत करनेके
 लिए उन्हें अपने बहुत, किसीके नहीं हथियारोंपर नरोत्तम करना
 होगा।

मेरी सचाय विनम्र विनम्र और बनत है। उसकी सचाय
 बाहिर है। मैं अपनी सरकारपर वह नरोत्तम रखिए कि वह धर्म
 करनेवालोंके हुए नागरिकों रखा करने, फिर उनके पास किसी ही
 धर्म और अपने हथियारोंको व ही। मैं अपनी सरकारपर वह भी
 नरोत्तम रखिए कि वह धर्मोंके वेगका कि वह धर्ममन्त्रोंके हुए
 नेवरके लिए इलाकाला नालेनी और बनूत करेगी। दोनों सरकारों
 सिर्फ एक ही बात नहीं कर सकती। वे नरे हुए लोगोंको बिना
 नहीं करती। किसीके धर्म अपनी करणोंसे शाकिस्तान सरकारों
 त्याग भगवानका नाम मुक्ति क्या देने (को त्याग चाहते हैं, उन्हें
 त्याग करना भी होगा। उन्हें नेनुताह और करने होगा चाहिए।) कि

धीर निम्न नहीं कदम उठाए और उन मुसलमानोंसे लौट आनेको फहे, जिन्हें अपने घरोंमें लौटाना दिया गया है।

अगर हिंदू धीर निम्न हर तरफ़से यह उचित कदम उठानेकी हिम्मत दिला भके, तो वे निराश्रितोंकी नमस्वाको एकदम आमान-में-आमान कर देंगे। सब पाकिस्तान ही नहीं, सारी दुनिया उनके बावोंको मजूर करेगी। वे दिल्ली धीर, हिंदुस्तानकी बबनामी धीर बरबादीसे बचा देंगे। वे तो सान्नी हिंदुधो, मिथो और मृतममानोंकी आबादीके फेरबदलके बारेमें मोच भी नहीं सकता। यह बात भी है। पाकिस्तानकी बुराईको हम हिंदुस्तानमें आबादीका फेरबदल न करनेका पक्का और मही डरावा करके ही मिटा सकते हैं। मेरा खयाल है कि मैं आभिरणक हिम्मतके साथ इस बातकी हिमायत करता, फिर चाहे मैं अकेला ही इसे माननेवाला क्यों न होऊ।

॥ ६० ॥

१७ सितम्बर १९४७

माइयो धीर बहनों,

कल शामको मेरे अनुभवके बाद मैंने यह तय कर लिया है कि जबतक समाका एक-एक आदमी प्रार्थना करनेके लिए राजी न हो, तबतक आम प्रार्थना न करना। मैंने कभी कोई भी व्यक्तिपर अव-ग्न नहीं की। सब फिर प्रार्थना-वैसी ऊंची साम्प्रदायिक या स्थानी बीच तो मैं साद ही कैसे सकता हूँ ? प्रार्थना करने या न करनेका जबाब दिलके भीतरने मिलना चाहिए। हममें मुझे कुछ करनेका तो कोई मवास ही नहीं उठ सकता। मेरी प्रार्थना-सभाएँ सचमुच जन-प्रिय बन गई हैं। माझूम होता है कि उनसे साधो आदमियोंको फायदा पहुँचा है। लेकिन इस आपसी विचारके समय मैं उन लोगोंके गुस्सेको समझ सकता हूँ, जिन्होंने बड़ी-बड़ी मुसीबतें सही हैं। मेरी प्रार्थना करने-की शर्त यही है कि उसका जो भाग किसीको एतरावके भावक माझूम

हो, उसे छोड़नेकी मुझे क्षमा न रही काम। ना तो प्रार्थना ही
है वही ही बिना स्वीकार की काम ना उसे नामधुर कर दिया काम।
मेरे लिए कुरानकी यादत पढ़ना प्रार्थनाका पैदा हिस्सा है, बिना छोड़ा
नहीं जा सकता।

मेरे आपके मुझे और सबसे पैदा होनेवाले ज्ञानसेपनको समझने
लिए तैयार हू। लेकिन अगर आप अपनी भावनाके बावक बना
जाते हैं, तो आपको अपना मुझ बना हुआ और न्याय पानेकी
जरूरत कोशिश करनेके लिए अपनी सरकारपर निश्चय रखना
होना। मेरे आपके सामने अपना अधिकार छोड़ना नहीं रख रहा हू।
होना कि मेरे रखना बहुत पसंद करना। लेकिन मेरे जानता हू कि
आप मेरी अधिकारकी बात कोई नहीं मुनेवा। इसलिए मेरे आपको यह
पसंद अपनातेकी बात मुझाई है, बिना जोरझाड़ी बहुतपसंदे बारे
रहना अपनाते हैं। जोरझाड़ीमें हर बातकीकी समझी इच्छा वाली
राजकी इच्छाके मुताबिक चलना होता है और उसीके मुताबिक अपनी
इच्छाकीकी हब बावनी होती है। स्पष्ट, जोरझाड़ीके द्वारा और जोर-
झाड़ीके लिए राज बनती है। अगर हर बातकी कामना करने
होयने से से, तो स्पष्ट नहीं रह जायगी। यह सपनाका ही बावनी,
बागी समझी नियम या स्पष्टकी हस्ती भिन्न बावनी। यह भावनाकीकी
मिठा होनेका पसंद है। इसलिए आपको अपने मुझेपर काम पाना
बाहिए और राजकी न्याय पानेका बीका देना बाहिए। मेरी समझने
अगर आप सरकारको अपना काम करने देंगे, तो इसमें कोई शक
नहीं कि हर हिस्से और सिद्ध विपक्षित नाम और इनकारके साथ
अपने बरकी नींद बावना। मेरे यह कहना कसता हू कि आप जोरझाड़ी
पाकिस्तानमें बहुतमुठ सपना पडा है, कई बार उबार और बरबाद
हो गए हैं, मैंने-उमारी जाने गई है, नश्वीया भवाई गई है, जबल
नीलाका धर्म करना बना है। लेकिन आप अपनेपर काम रखें और
अपनी बुद्धिपर मुझेकी हानी न होने दें, तो नश्वीया नींद की बावनी,
नश्वीयते बर्न-परिजर्नकी मृत कपार दिया बावना, और बावनी
नमीन-न्यायदाह नी बावनी नींद की बावनी। लेकिन अगर आप

जातिसे न्याय पानेके काममें इच्छा करें और अपना मामला ब्यापक लेगे तो यह सब नहीं हो सकेगा। अगर आप यह आकांक्ष रखें हैं कि आपके मुसलमान भाई-बहनोंकी हिंसे-व्यवस्थासे निकाल देना चाहिए, तो आप इन सब चीजोंके होनेकी आकांक्षा नहीं रख सकते। मैं तो ऐसी किसी बातकी बहुत गहनतक समझता हूँ। आप मुसलमानोंके साथ अन्धधाय करके न्याय नहीं पा सकते। इसके अलावा, अगर यह सब है कि पाकिस्तानमें अल्पमतवाली बानी हिंदुओं और सिखोंके साथ बहुत बुरा बरताव किया गया, तो यह भी सच है कि पूर्वी पञ्जाबमें भी अल्पमतवाली बानी मुसलमानोंके साथ बुरा बरताव किया गया है। अपराधकी दृष्टिकोण से नहीं सोचा जा सकता। दोनों तरफके अपराधको आपनेका मेरे पास कोई खूब नहीं है। यह जान लेना सचमुच काफ़ी होगा कि दोनों पार्टियाँ दोषी हैं। दोनों राज्योंके लिए ठीक-ठीक समझौता करनेका ध्यान रास्ता यह है कि दोनों पार्टियाँ साफ बिलसे अपना पूरा-पूरा दोष स्वीकार करे और समझौता कर लें। अगर दोनोंमें कोई समझौता न हो सके, तो सामान्य तरीकेसे पंच-फैसलेका सहारा लें। इससे दूसरा बगली रास्ता और है लडाईका, मुझे तो लडाईके बिचारसे ही नफरत होती है। लेकिन आपसी समझौते या पंच-फैसलेके अभावमें लडाईके सिवा कोई चारा नहीं रह जायगा। फिर भी इस बीच मुझे आकांक्षा है कि जोन अपना पागलपन छोड़कर समझदार बनने और बिना मुसलमानोंमें अपनी इच्छासे पाकिस्तान जानेका चुनाव नहीं किया है, उन्हें उनके पड़ोसी सुरक्षा या सजामतीसे पक्के विश्वासके साथ अपने बरोको बाँट देनेके लिए कहेंगे। यह काम फौजकी मददसे नहीं किया जा सकता। यह तो लोगोंके समझदार बननेसे ही हो सकता है। मैं अपना आखिरी फैसला कर लिया है कि मैं भाई-भाईकी लडाईमें हिंसे-व्यवस्थाकी बरबादीको देखनेके लिए बिदा नहीं रहना चाहता। मैं लगातार मनमानेसे प्रार्थना किया करता हूँ कि हमारी इस पवित्र और सुंदर बरखीवर इस तरहका कोई संकट आए उसके पहले ही यह मुझे गहरासे छटा ले। आप सब इस प्रार्थनामें मेरा साथ दें।

मैं हिंदू और मुसलमान भवदूरोको एक साथ मिल-जुलकर काम

करनेके लिए बन्धबाध होता है। अगर आप पूरे एकेसे काम करेंगे, तो बेचके मामले एक उन्हा मिलाव रहेंगे। मजदूरीको अपने बीच साम-
यिकताको कोई बगहू नहीं देने चाहिए। क्या मैंने यह नहीं कहा है कि
अगर आप अपनी तात्त्विकी पहचान में और समझारीके उन्हा
रक्तात्मक कामोंमें उन्हा बगाए, तो आप उन्हा साक्षिक और साक्षक
न बगाए और आपकी रोजी देनेवाले आपके दूरी और मुसीबतोंमें
उन्हा देनेवाले दोस्त न बगाए। यह सुखकी बड़ी तनी बाएनी, न
ये यह जान लेंगे कि सोने और चांदीकी पूजीके बलिस्तव, जिसे मजदूर
कर्मियोंके भीतरने निकालते हैं, मजदूर ही बगाए अपनी पूजी हैं।

१६१ :

१८ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनों,

आज हम सब बीबाने न बगाए हैं, मूरख न बगाए हैं, ऐसा नहीं
है कि सिद्ध ही बीबाने न, हिंदू ही वा मुसलमान ही बीबाने न
बगाए हैं। मुझे कहा जाता है कि बारा बारन तो मुसलमानोंमें
मिया। यह ठीक है, मैं तो जानता हू कि उन्होंने बारन किया,
उन्हा कोई मक नहीं है। लेकिन वह याद करने में कसबा क्या?
आज क्या करना है, मुझे तो यह बेलना है। हिंदुस्तानी नगर-
को हो न तो मुसलमान बगाए हू। मुझे क्या करना चाहिए? मुझे
तो ईश्वरना बारा बेलना चाहिए। मेरा पराक्रम बूझ कर लें
तो मुझे मुसीबत है। पर मेरा भारी तो बोझी हुई है, बोझी नहीं। ऐसा
बादनी क्या कर लेंगा है? किन्तो मय्य न बगाए है? लेकिन ईश्वर
न बूझ न बगाए है। तो मैं राग-दिग ईश्वरको पकड़ता हू। हे नगरान,
मू नगरान, नगरान दू न बगाए है। हिंदुस्तान दू न बगाए है, उन्हा बगा।

हिंदुस्तानमें मिया हिंदूने कोई र्हे ही नहीं, मुसलमान र्हे तो मुसल-
मान र्हे तो ऐसी बात ही नहीं है। आप देखें तो बाहरसाव न

कहता है। हम तो सगीमें पडे है। दूसरे जो काम करने है उन्हें नहीं कर सकते। इसी एक काममें पडे है। अगर मान ले कि सब मुसलमान गदे है, पाकिस्तानमें सब बिगड़ गए है तो उससे हमको क्या? पाकिस्तानमें सब गदे है तो क्या हुआ? मैं तो आपको कहूँ कि हम तो हिन्दुस्तानको समुबर ही रखे बिनासे सारी गवनी बह जाय। हमारा वह काम नहीं हो सकता कि कोई क्या करे तो हम भी गया करें। तो भाव मैं पर्याप्त बसा गया। मेरे पास मुसलमान माई भी आते है। उनसे बातें करता हूँ, मोहब्बत करता हूँ और उनको कहता हूँ कि आप क्यों डरते है। आप लगे बने जाय। आप क्यों घर-बार छोड़ते है। आप जाकर बैठिए अपने घरमें। वहाँ वे तो बरारत नहीं कर सकते। इसलिए मैं चाहता हूँ कि सब हिंदू भले हो जाय। सब सिख भले बने जाय। जो मुसलमान पडे है और जो पाकिस्तान नहीं जाना चाहते है उनसे सिख और हिंदू कहें कि आप अपने घरमें जाकर बैठो। वहाँ तो दुनियामें सबसे बड़ी मस्जिद, जुमा मस्जिद पड़ी है। हम बहुतसे मुसलमानोंको मार डालें और जो बाकी बचें वे आपके मारे पाकिस्तान चले जाय, तो फिर मस्जिदका क्या होना? आप मस्जिदको क्या पाकिस्तानमें भेजोगे, या मस्जिदको डाल दोगे या मस्जिदका शिवालय बनाओगे? मान लो कि कोई हिंदू ऐसा गुमान भी करे कि शिवालय बनाएँ, सिख ऐसा समझें कि हम तो वहाँ गुल्लार बनाएँगे। मैं तो कहूँ कि वह सिख-धर्म और हिंदू-धर्मको बफ़्तानेकी कोशिश करनी है। इस तरह तो धर्म बने नहीं सकता है।

पाकिस्तानमें जानेवाले जो जाना चाहते है वे वहाँसे चले जाय। अगर जो हिंदूओंके डरके मारे चले गए, पुराने किलेने है, हुमायूँके मकबरेमें है, वे क्यों वहाँ रहें? मैंने तो उनको कहा है कि जो अपने घरमें है वे वहीं पडे रहें और पीछे हिंदू मारे-पीटे, काट डाले तो भी न हटें। मैं आपको पीछे फट जाना। मेरी बात है, वह जान मैं फिदा कर दूँगा। या तो कर्ना या मरना। उनकी मृत हीससा प्राया और उन्होंने कहा कि हम यही मरेंगे, घर है वहाँसे हटेंगे नहीं। मेरा बयास

है कोई मुसलमान बहाने हटवा नहीं। अपने धरोमे पड़े हैं, ज़िन्दगी बहा है। उनको क्या हम निन्दा हैं? तैयार नही हो मरना। जो यझने वाले नए हैं उनका क्या करें? मैंने कहा कि उनको हम घनी नहीं माएंगे। पुलिसने मार्कन, मिनिटरीने मार्कन घोंटे ही जाना है? जब हिंदू पीर मिया उन्हें बड़े कि आप तो हमारे दोस्त हैं आप बादए अपने घरमें, आपके लिए कोई मिनिटरी नहीं चाहिए, कोई पुलिस नहीं चाहिए, हम आपकी मिनिटरी हैं, पुलिस हैं, हम सब आई-आई होकर रहेंगे सब उन्हें मानेंगे। हमने किसीमें ऐसा कर बसबाया, तो मैं आपको कहना हू कि पाकिस्तानमें हमारा रास्ता बिल्कुल साफ हो जायगा। पीर एक नया चीज पैदा हो जायगा। पाकिस्तानमें जाकर मैं उनको नहीं छोड़ूंगा। बहाके रिश्ते और रिश्तेके लिए जाकर जइसा। मुझे तो अच्छा लगे कि मैं बहा नक। मुझे तो बहा भी मरना अच्छा लगे, अगर यहा जो मैं कहना हू नहीं हो सकता है तो मुझे मरना है। मुझको भी बुझा जाता है, लेकिन इस्लाम तो ऐसा होना चाहिए कि मुझेको भी ज्ञान। मैंने मुला कि कभी पीरों को अपनी धर्मको बताना नहीं चाहनी थी मर गई। कभी नबोले खुद अपनी पीछोली मार जाता। मुझे तो यह बड़ा अच्छा लगता है। क्योंकि मैं समझता हू कि वे हिंदुस्तानको बुझादिन नहीं बताते हैं। बाहिर मरना-जीना यह तो बोले दिलोफन लेन है। क्या तो क्या, लेकिन बहाबुरीसे क्या। अपनी धर्म नहीं बेच जाती। यह नहीं था कि उनको धाम प्यारी न थी, लेकिन उनको मुसलमान बन-वैसी इस्लाममें जाए पीर उनकी मिट्टी स्वार करें, सबसे बेहतर वा बहाबुरीसे नर जाना। पीरों नर गई, रो-मार नहीं कभी पीरों मरी। यह सब सुनता हू। मेरी तो धाम खुशीसे जाचना शुरू कर देती है कि ऐसी बहाबुर पीरों हिंदुस्तानमें पड़ी है। लेकिन जो लोग जाने हैं वे लोग कहा जान ? उनको जापस जाना है और चलने साथ। हम अपने यहा तो जान ही करें। अपना धामब खुद रखे पीर अपने हाथ खुद रखे, सब हम नारी दुनियाको धामने आन जान सकते हैं। मैंने कहा कि मैं कि जो मुसलमान हकिवार रखते हैं, उन मुसलमानोंको हकि-

घार छोड़ देना चाहिए। परतो मैंने कहा है, सब लोग हथियारों को दे दें। मैं समझता हूँ कि उसमें कुछ बेर जनेगी, लेकिन बात कम गई है हथियार तो छोड़ना ही है। हथियार से कम नहीं सकते।

दूसरी, मेरे पास बड़ी शिकायत आती है जो हमारे सिपाही लोग, मिलिटरीवाले हैं, हिंदू हैं, सिख भी हैं, उसमें फिस्टी भी पड़े हैं, बोरसे पड़े हैं, वे सब एक ही घर नज़र बन गए हैं। यह कहाँ तक सच है और कहाँ तक झूठ है, मैं नहीं जानता हूँ। लेकिन मैं अपनी आवाज उन पुलिसवालों तक पहुँचाना चाहता हूँ कि आप धीरे-धीरे बनें। कहीं तो ऐसा सुना है कि वे खूब झूठ जेते हैं। मुझको आश सुनाया गया कि कनाट-प्रोसमें कुछ हो गया और कहा जो सिपाही और पुलिसके लोग वे उन्होंने झूठा झूठ कर दिया। मुझमें है कि यह सब गलत हो। लेकिन उसमें कुछ भी सच्चाई हो तो मैं सिपाही और मिलिटरीसे कहूँगा कि अंतर्जका बनाना बसा गया। तब जो कुछ करना चाहते थे वे कर सकते थे, लेकिन आज तो वे हिंदुस्तानके सिपाही बन गए हैं, उन्हें मुसलमानका दुस्मन नहीं बनना है, उनको तो इनम मिले कि उसकी रक्षा करो-तो यह करनी ही चाहिए।

: ६२ :

१६ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनों,

मुझे एक पत्र मिला है। यह पहले सरदारके पास पहुँचा, पीछे मेरे पास। उसमें कहते हैं, जबतक हम मुसलमानोंके बीच पड़े हैं, आरामसे रहनेवाले नहीं। पाकिस्तानसे हिंदुओंको भागना पड़ा। कृपा शाराबदे उनके बारे में सरल मुसलमान हैं, उन्हें डर रहता है कि मुसलमान कुछ मोताबारी करें तो? वे कहते हैं, अच्छा होगा कि सब मुसलमान यहांसे चले जाएँ। काफी तो चले गए हैं, पर काफी अभी बहा पड़े हैं। मैंने आपको सुनाया कि कम मैं गया था तो उससे उल्टी

बाप मैं मुसलमानोंको कहकर आया। सो, जो जोय वहा पड़े है उनकी आनका स्याम नहीं उठता। जो बसे गए है उनको भी मैं तो खी कह सकता हू कि आप या बाप। अबरवल्लीसे जानेकी बात नहीं। अब हम पचासका राज्य बसाते हैं तो अबरवल्लीसे बोले ही क्या सकते हैं। लोगोंको सनझाए, लोगोंको शाहीम हैं। ऐसे हम क्यों उरे? किन्तु मुसलमानोंके साथ इतने बखोसे रहे हैं वे ही मुसलमान आप ऐसे बियज गए हैं कि उन्हें रखा नहीं जा सकता? बिजज भी सकते है, मैं यह नहीं कह सकता कि वे नहीं बिजज सकते। लेकिन जो अच्छे वे मैं बिजज तो पीछे वे अच्छे भी हो सकते हैं। हम अगर अच्छे होते हैं और अच्छे होना ही काफी नहीं, बहापुर भी होना चाहिए और इसके साथ ज्ञान भी होना चाहिए, तो हमारे उपरमें जो घुरे पाकसी या बाते हैं वे भी भले हो जाते हैं। वह मेरा भ्याम नहीं है, वह बुनियाका भ्याम है। मैं अपनी बात आपसे नहीं कहता हू। तो मैंने जो कस बताया या आप भी खी झूगा कि मैं मजपनसे ऐसा ही सीखा हू। अब मैं क्या सबक नहीं वे सक्या। और मुझे अब बीना कितना है? मैंने कहा, आप मुझे यह सुनाते तो हैं, लेकिन उसे मैं बर्दाश नहीं कर सकता हू। बर्दाश नहीं कस्या तो किसीकी नाक्या, ऐसा नहीं। मैं मरवाक्या, ऐसा ही सकता है। इसकाफसे मेरे हाथमें एक हुनरा पर्चा या पत्र। यह भी रास्तेमें किसीने दिया। जो पर्चा रास्तेमें मिले यह मैं मोटरमें वह लेनेकी कोशिश करया हू। उस पर्चेमें लिखते हैं, पहिली पचासमें इतना अत्याचार हो गया, सभी भी दुस क्यों नहीं ममजने हो। उनमें साथ एक और पर्चा है, जिसमें न नाम है न ब्यवस्त। उसमें बीनवालोने कुछ कहा है, गदी बाते भरी है। जैसे सीमजाने करें तो पीछे पाकिस्तानका क्या होया और हिन्दुस्तानका क्या होना, उनका पना ही नहीं बस सपना। तो क्या हम भी बसे बने? यह मैंरी मजरमें भ्याम नहीं।

बहु दर्द-निर्दम मुसलमान रहने हैं। कुछ मुस्लिम कार्यकर्ताओंने नहीं गृत्ता पदद दिया। मुसलमानोंने वे नेक हैं। कोई बार बाज तो मैं बार हाने, मैं बहापुर है तो रहते हैं। मेरे पास बसे बाप।

काफी मुसलमान पड़े हैं। उनका कहना है कि बहुत लोग घर छोड़ चुके हैं। लेकिन मैंने देखा, काफी मुसलमान तो भी बहा थे, हिंदू बोधे ही थे। जिसने हिंदू भाई बहा माने हैं उनको मैंने सुनाया कि मैं तो कमपनसे ऐसा ही सीखा हू। पॉसिटिवस^१ में बासिन हुआ उससे पहलेसे मानता आया हू कि मुसलमान, हिंदू सबको मिल-जुलकर रहना है। ऐसे ही हिंदुस्तान बना है, ऐसे हिंदुस्तान रहना चाहिए। तो जो बाबरी मस्जिद बरसकी जगहसे यही काम करता आया है, तो आज उसकी बजानसे दूसरी चीज नहीं निकल सकती। मुझको तो यह पसंद होगा, कि कोई अपनी जगहसे हटे नहीं, नहीं नर जाने। यही मैं मुसलमानोंसे कहता हू और यही हिंदुओंको कहता हू।

हिंदू कहते हैं मुसलमानोंके पास छतने हथियार पड़े हैं, वे निकलें तो हम समझें, नहीं तो हम कहें माने कि वे पीछे हमका न करेंगे। मैं कहूंगा कि उसमें हम न पड़ें, यह हकूमतका काम है। किसीके पास परमाना नहीं है, बाइसेन्स नहीं है तो उसके पास हथियार नहीं रख सकते हैं, मने ही वे लोग अपनी रक्षाके लिए हथियार रखते हो। रखना है तो बाइसेन्स से जो। लेकिन हथियारसे रक्षा क्या करनी थी, पांच मुसलमान हैं, पांच ही हिंदू और सिख, उनका मुकाबला क्या? वे पड़े रहे। मने ही हिंदू, सिख उन्हें काट डालें। जो पांच ऐसे कट जायगे, बिना हथियार ईश्वरका नाम सेते मने जायगे, वे मने बहादुर हैं। वे कहते हैं, आज हमारे भाई हैं, मारना है तो मार डालें। यही मेरी सलाह सबके लिए है। आज मेरे पास काफी हिंदू पाकिस्तानके आ गए और सबने अपना कुछ मुझको सुनाया। कई हँसकर सुनाते थे, कई बहनों रो दिया। मैंने उन्हें सुनाया, आपकी मार्फत सबको सुना देना चाहता हू कि हम मुसलमान न बनें। पाकिस्तानमें मुसलमानोंने अत्याचार किया। इसलिए हम यहाँके मुसलमानोंसे न डरें, न उन्हें डरायें। ऐसे ही मुसलमान पड़े हैं जो पाकिस्तानमें रह ही नहीं सकते।

तो जो पर्चा मुझे भिजा है, उसमें लिखा है कि अब तो पाकिस्तानमें

^१ पॉसिटिविटी।

कोई पैर-मुसलमान खूनेवाला नहीं है। तो पीछे हिन्दुस्तानमें मुसल-
मान क्यों रहे? तो मैं कहता हूँ कि एक छावनी छाव गंजी बरसा
है तो वहीं भीखी हूँ नकल न करें। पाकिस्तानमें एक भी पैर-
मुसलमान नहीं रहे सच्चा। वह पाकिस्तानके जाने हो नहीं सकते
हैं, और इस्लामके भी नहीं हैं। इस्लामकी सत्तलत जैसी हुई है,
जैसी ऐसा जानूँ नहीं क्या है कि क्या कोई पैर-मुसलमान न रहे। पैर-
मुसलमान के और पारान्ते रहते थे, मुसलमान रहने के उनके पास
पैसा भी नहीं था। तो अब क्या गया इस्लाम हिन्दुस्तानमें बाकि
होनेवाला है? इस्लाम १३०० बरससे जब रहा है, उसने पीछे
कभी उपजियां हुईं कभी बुनियादें हुईं। पीछे कोई गया इस्लाम
निकले तो वह सच्चा इस्लाम नहीं, बिले सब मुसलमान कच्चा कह
सकते हैं। जोबो। इसका मतलब यह है कि सच्चा हिन्दुस्तान वह नहीं
है जिसमें हिन्दू सिवा कोई रहे न अपना ही सच्ची सिद्धिबन्धि^१
तो वह नहीं है जिसमें सिवा सिद्धिबन्धि कोई रहे ही नहीं सच्चा हो।
वह जैसा नहीं है, कबन है। इस तरहसे बुनियाद नहीं कही है, न
कभी है और न बननेवाली है। तो हूँ गया इतिहास सिक्खोंके
प्रवचन की पंक्ति^२ ऐसा करने हूँ हिन्दुस्तानको उवाह न करें और
पाकिस्तानको उवाह होले न हों। कहा जाये नाटे पार करोड़ मुसलमान
हैं, वे सब कहा कने जायें? और पीछे कहा अन्विष्ट है कभी भी से
जाय, कभी-नूनिबन्धि है कभी भी से जायें। और समान मुस्लिम
नजदरेमें पड़े हैं वे सब पाकिस्तानमें कने जायें, पीछे की पुरझारे हैं
क्या वेन्ट^३ पञ्जाबमें है उन्हें ईन्ट^४ पञ्जाबमें से जायें? वहाँ जिनमें
हिन्दू रहने के उनके मंदिर बस पड़े हैं, वे पाकिस्तानमें रहे नहीं सच्चे
भी मंदिरोंके बस जाया चाहिए? इसका मतलब यह होगा कि कभी
गया होता है, कभी कने है कभी उवाह करता है। मैं तो इसका
मतलब इतना ही नहीं कहना हूँ। कभी रहने ईन्टर बुझनी सदा से।
पीछे मैं तो हूँ कि जो पीछे सब भीखवाले पड़े हैं, वे कने-कने करें।

उनके रस्ते हुए हिंदुस्तान बेहान न हो। यह मैं देखना नहीं चाहता हूँ।
देखना चाहता हूँ तो यह कि साराबीको साफ करनेमें हम सब मर पाय।

१ ६३ :

२० सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप ईश्वरका जलन करें और उसीका जरोसा करें। यह सबकी समझमें नहीं आता। वे कहते हैं कि ईश्वर कहा पड़ा है? ईश्वर रहे तो इतने कमजोरों हम क्यों पड़े? अगर मुखलमान कह-
मने^१ पक जाते हैं तो वे कहें ईश्वर कहा है, अल्लाह कहा है, खुदा कहा है, गुरान करीफ कहा है। बहुत लोग कहते हैं, लेकिन वे सब गमती करते हैं। खुदा है, अल्लाह है, ईश्वर है, राम है, उसे याद करनेके लिए ऐसे गीते हैं। यह हमको मकर बेता ही है। यह हमें बोले पूछनेवाला है कि हम उसको पहिचानते हैं या नहीं। यह हमारे हाथोंमें नहीं आता, उसे याचोसे नहीं देख सकते हैं, कानोंमें नहीं सुन सकते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि इत्रियोंने बाहर पड़ा है। ऐसी एक वह हस्ती है, हमारे सब नास्ति है। हम सब नास्ति है। हम कहीं जब हम बिदा रहते हैं तो नास्ति कैसे हो सकते हैं? आज-
तक तो मैं बिदा रहा, लेकिन कमके लिए थुम्मे कोई नहीं बता सकता कि रूखा या नहीं। ऐसे ही, कम-कम करके ७८ वर्ष निकाल दिए। और भी सायब दो-चार दिन निकाल दू जा वर्ष निकाल दू। लेकिन हम क्या जानें, मैं कैसे कह सकता हूँ कि कोई धायनी धयी बिदा है तो वह एक भिन्नत बाब भी बिदा रहेगा या नहीं। कोई नहीं कह सकता। इसलिए मैं कहता हूँ कि हम तो नास्ति हैं, जिसका कोई ठिकाना नहीं है। हमेंसाके लिए नहीं रह सकते।

^१ मुसीबत।

‘अग्नि’ वह तो एक ही हो सकता है। इसी मन्त्र अग्निने निकला है। अग्निको जाने, है ‘आदि है, अगामि है, धीर आगवा रहेगा। ऐसा होनेवाला अग्नि है, जिसने हमको बताया है धीर वो हमको विवाह सकता है, महासे उठा सकता है। मेरे नजदीक तो वह बिगाड़ता नहीं, हमको बताया ही है। इसलिए अगर आप हम मानें कि वह नहीं मित्र सकता, धीर किसे तो वह मूर्खता होगी। लेकिन वह तो है धीर स्व कुछ कर सकता है। वह खीन है धीर उसके लिए सब एक है। वह किसीका विवाहेगा नहीं, न किसीको मारेगा, न किसीको मारी देगा। वही उसका कानून है।

मुसलमान भी मेरे पास आ जाते हैं। वे सहाकी बात मुवाते हैं कि हम दिल्लीमें अनीसक रहे हैं लेकिन सब तो हम रह नहीं पा रहे और नाम रहे हैं। तो मैं उनको कहता हू कि जब तक मैं बिना पडा हू तब तक आपको यही रहना चाहिए, बिवाहसके समानेमें हिंदू, मुसलमान, सिख-जब नाम-साथ रहे थे। मैं तो बुझारेमें गया हू और मुसलमान भी मेरे साथ आए हैं। नलकाना साहबका वो बका किस्सा बन गया, उस बका मौलाना साहब थे, मसीमाई ने धीर मैं था। सब ऐसा जानते थे कि मित्र हो, मुसलमान हो, हिंदू हो, वे तीनों एक हैं। अग्नि-आवा नाममें क्या हुआ ? सब पुकार-पुकारकर धीर बीस-बीसकर कहते थे कि यहा तो सबका बून मित्र गया। क्योंकि उसने सब थे। हिंदू ने, मुसलमान ने धीर सिख ने, सबका बून मित्रा। उस बका तो बडे बोरोते करते थे कि अब तो हमारा बून एक हो गया। उसको कील बुरा कर सकता है ? तो आप फिर वह बुरा बन गया ? मुसलमान कहता है कि सिख है वह तो हमारे साथ मित्र नहीं सकता है। सिख कहते हैं कि मुसलमानोके साथ क्या मिलना था। क्या गुनाह किया है एम्-हूकरेका, वो एम्-हूकरेके दुस्मान बन गए। तो मैं सोईएल हो जाता हू। मैं पडा हू, बिना रहता हू, तो मैं तो तीनोंका बून साथ भी एक है, यही नामकर। ही सकता है तो उसे सिख करनेके लिए। ऐसा बीसते-बीसते, ईसरके पास रोते-रोते। इन्सानके पास तो मैं रोता नहीं हू, लेकिन ईसरके पास तो मैं रो सकता हूँ,

उसकी मिलावट कर सकता हूँ, क्योंकि उसका तो गुलाम मैं हूँ। सबको उसका गुलाम बनना चाहिए। पीछे किसी इंसानको किसीके गुलाम रहनेकी आवश्यकता नहीं रहती। कहता हूँ कि अगर मैं ऐसा कर सकूँ तो बिबा रहना चाहता हूँ, नहीं तो ईश्वर मुझको महाने सजावे।

मेरा सिर गर्मसे झुक जाता है और मैं समझता हूँ कि नहीं हिंदू, नहीं सिख, नहीं मुसलमान जो कलक एक दूसरेको भाई-भाई कहते वे आज एक दूसरेके दुश्मन हो गए हैं। कोई तो समझे कि यह हमारे दुश्मन नहीं हो सकते। बार-बार भाई आए, उन्होंने मुझे कहा कि यहाँ जो सारे साबे बार करोड़ मुसलमान पड़े हैं वे ऐन मीकेपर बाणी हो जायेंगे। वे तो बाहिर मुसलमान हैं, पाकिस्तानमें भी मुसलमान हैं। मानो कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें लड़ाई हो गई या कुछ और ऐसा हो गया तो क्या वे पाकिस्तानको बुझिया तीरछे मरव नहीं देंगे? तो मैंने उनसे कहा कि माना कि कोई है, अगर सब-कुछ तो ऐसा कर नहीं सकते। मैं आपको कहना चाहता हूँ कि साबे बार करोड़ मुसलमान ऐसे बन नहीं सकते हैं। मैंने उन भाइयोंको कहा कि अगर आप बरीफ रहें, हम बरीफ रहें, जितने यहाँ अक्सरियतमें^१ हिंदू पड़े हैं, सिख पड़े हैं वे सब बरीफ बनें, वे अगर किसी मुसलमानकी दुश्मनी नहीं करते हैं तो मैं बोरोसे कहना कि साबे बार करोड़ मुसलमानोंमेंसे एक भी बेवफा नहीं बन सकता है। हमको बहादुर बनना चाहिए। अक्सरियतमें होते हुए हम बुजबिल न बनें। साबे बार करोड़ मुसलमान हिंदुस्तानमें हैं अगर सब तो ४० करोड़ हैं। वे ऐसे बुजबिल बने कि साबे बार करोड़ मुसलमानोंसे डरे? मैं कहता हूँ कि साबे बार करोड़ अगर हिंदुस्तानके बेवफा बनते हैं तो वे इस्लामसे बेवफाईका काम करेंगे और इस्लामकी जल्द कर देंगे। लेकिन अगर हम भी ऐसे ही बनें, बुजबिल बनें, बगवान बन और उनका अरोसा बिल्कुल न करें और यहाँ एक भी मुसलमानको न रहने दें तो मैं आपको कहता हूँ कि

^१ बहुसंख्यक।

हिन्दुस्तानमें हिंदू धर्मोपासी तो कुछ का नहीं सकते। उनका रोटी खाना पीछे बहुर-सा हो जायगा।

हिन्दुस्तानमें बाहर कोई भी मुसलमान या दूसरी सत्तमण हो, या भी पाकिस्तानमें जो मुसलमान है वे हिन्दुस्तानपर हमला करते हैं तो मैं जानको कहता हू कि साठे बार करोड़ मुसलमान जो वहा पडे हैं उनको हिन्दुस्तानकी बकाबारी करनी है। अगर नहीं करते हैं तो उनको घुट कर दो, वह तो कानूनमें पडा है। मेरा कानून तो दूसरा है, जो मैंने बसाया किया। लेकिन उसको कौन मानेगा? लेकिन जो बुनियादी कानून बना है, उसमें तो जो ट्रेडर^१ होता है, फ्रिन्ड कौन्सिलिट^२ होता है—वित्त मुक्तमें रहता है अगर उस मुक्तको बुनियादी काम करता है, तो वह ट्रेडर^१ है, वह बेवफा है। उसके लिए एक ही सचा है कि उसको मार डालो। मैं कहता हू कि बाकिर इसनी नहीं सत्तमण नहीं है, साठे बार करोड़ मुसलमान सब-से-सब तो बेवफा हो गयी करते। साठे बार करोड़ मुसलमानोंको किसने बेवफा है? वे तो ७ लाख बेवफाओंमें पडे रहते हैं, बीस लाखोंमें पडे हैं। यू० पी० में पडे हैं, विहारोंमें पडे हैं, सब बेवफाओंमें पडे हुए हैं। मैं तो बेवफाओंमें रहा हू और उन सबको जानता हू। वे कभी बेवफा नहीं हो सकते हैं। सेनाधाममें जो मुसलमान पडे हैं। वे सेनाधाममें काम करते हैं। वे सेनाधामके लिए बकाबार रहते, उनके लिए मर जायने। वे क्या जानें कि दूसरी क्या मुसलमान क्या करते हैं। वे तो सेनाधाममें रहते हैं, वे सेनाधामके प्रामाणिकी रखा करते हैं और सबको भाई-भाई समझकर रहते हैं। कोई वहे कि नारे-से-नारे नाडे बार करोड़ मुसलमान जो यहाँके रहनेवाले हैं बेवफा हो सकते हैं, तो वह नहीं होनेवाला। और बेवफासे हम क्यों डरे? मैं तो नहीं डरता हू। अगर वे हिन्दुस्तानमें पडे हैं और बेवफाई करते हैं तो मैं कहना कि उनकी मरना है और हमनामको मार डालना है।

मर्ने काकिर भी वे हैं जो हमारी रोटी खाए, हमारे महा नीकर मर्ने, मेडिन मान हमारे दुम्न बगडन करें और हमारा बसा काटें।

ऐसे हिंदू भी बने हैं, सिख भी बने हैं, मुसलमान भी बने हैं। दुनियामें हर फिस्सके लोग रहते हैं, लेकिन ऐसा समझना कि साठे बार करोड़ मुसलमान जो महा पडे हैं इस तरहसे बनावक बनेगे हमारी बुबदिली है, और इसने यह पता चलता है कि हम अपने हिंदू नहीं हैं, हम अपने सिख नहीं हैं। हमारी बराफत, जितने बरफत पडे हैं उनकी बराफत, हिंदू हैं, सिख हैं उन सबकी बराफत और बहा-दुरी इसीने पडी है कि कहे कि तुमको जाना ही नहीं चाहिए। उनकी विज्ञप्त करना चाहिए कि आपको कोई छू नहीं सकता। जोरिए, हमने काफ़ी बुरा काम किया है, पर धाने नहीं करनेवाले। क्यों जाते हो, पाकिस्तान पहुँचो तो बहा क्या होगा और बहा जाकर क्या करोगे, उनका क्या पता है? यहाँ तो तुम्हारा घर पका है, सब कुछ है। ऐसी मोह-व्यतसे हम उनको रखें तो सरहसी सुवेने, बेराइस्ताइल का बहाके जो मुसलमान अफ़ीदी लोग हैं वे भी हमारे सोचोको कहेंगे कि आपको भागना नहीं है। यह बराफतका असर है। अगर हम फिस्सीने ज़ाति काममें रखें, उसके बारे नहीं था बाबी कहता है इसलिए नहीं, लेकिन अगर अपने दिलसे आप इस तरह बनें तो ये आपको मौल बे सकता है कि कोई मुसलमान आपको ईजा^१ नहीं कर सकता है, और अगर करेगा तो ईस्वर तो पका है। यह सर्वमवित्तमान है, सबको पूजनेवाला है, वह हमारी रक्षा करेगा, हममें मेरे दिलमें कोई नका नहीं है।

१ ६४ १

२१ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

जिस तरहसे आज हिंदू, सिख और मुसलमान रह रहे हैं इस तरीकेसे नहीं रह सकते हैं। मुझको यह बड़ा बुरा लगता है और एक

^१ पीड़ित।

इन्माल बिजनी कोषिका कर सकता है उसनी मैं इस बीबनो हृदयेनी
 बन्ना। धापनो मैं कहूँ कि मुझको विसर्गें सुनी नहीं हो सकती
 हैं कि मैं बिना यह धीर को मैं चाहता हूँ वह न कर सकूँ। फिर मेरे
 धापने वह काम लेता है, उस तो मन्त्र है, अन्तर है, मेजिन धर
 ऐसा नहीं होता तो मैं समझता हूँ कि मेरा काम खरम हो गया। मैं
 कोई धात्महत्या करके मरना चाहता हूँ ऐसा नहीं। यह उही है कि
 को धपने बीबनको बुरोकी ही सेवामें काटना चाहते हैं उनके लिए
 बुरी परीक्षा नहीं हो सकती है। को ये करते हैं उसमेंसे कुछ भी
 फल नहीं मिलते उसके लिए ये ईश्वर न हो। मेजिन जब फल नहीं
 मिलता है तो विसर रहने एक मूल, विसर्गें फल नहीं पाते धीर वह
 मूल जाता है, उही रहने मनुष्य भी एक मूल-बीबा है, उसको मूल
 जाना चाहिए, धीर वह मूल जाता है, वह धृष्टिका नियम है। हिं-
 सर्मर्गें मुदाविक जाता तो अनर है, वह मरती नहीं, एक मरीर को
 पिछ्छा हो गया है धीर उसनी कोई उपयोषिता नहीं है, उसको तो कल
 होना चाहिए। उसकी जगह गया था जाता है। परतु जाता धर होती
 है धीर नेवारी द्वारा अपनी मुक्तिके लिए नए-नए चोले धारण करती है।

तो आज मैं क्या गया कहा एक धीर बहाने हिं धीर बूछी
 धीर बहाने मूलनान एक साथ पड़े थे। उन्होंने कहा—'महात्मा
 गांधी विचारण'। उसने क्या जानी? हिंदू भी वैसे कहें, वह भी क्या
 जानी एगना है, धर बीबीने विस अलग-अलग है धीर मैं एक-
 दूसरेके साथ गालिने नहीं रहूँ मरने। तो मुझको वह अवधोष
 मरने-ना मना। मैंने उन मूलनानोंने कहा कि आप लोगोंको बहराहड
 क्या करनी थी? आजियमें मरना है तो मर जायने। मरने अपने
 गदगदों रापने, दूसरेके हापने मरनेवाले नहीं है। आप ऊपर
 होर भी न करें, उननी गालेनी चेष्टा भी न करें, मुद मर जाय,
 मरिन बगने आप दग्गे मारे न पायें धीर न मराने हूँ। मैं तो
 समस्त मयम हूँ। मरिन एक जान मैंने पाया मुनी कि वह महात्मा
 वेग बुर जाती है? न देना कर रहा है कि हमने जिन मूलन-
 नानों के द्वारा मरनेके दया दिया, उनकी उही चोरोमें फिर बापि

- जाना चाहता है। बात सच्ची है, मैं उनको वापिस जाना चाहता हूँ, लेकिन किस तरहसे जाना चाहता हूँ ? मैंने तो उनको कहा, और आप भी उनको कहकर आया हूँ कि जो डरते जागे हैं उन्हें वापिस जाना चाहता हूँ। जो खुशीसे अपने आप पाकिस्तान जाना चाहते हैं, उनको तो जानेनें कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। लेकिन डरके मारे, डुबके मारे और हकूमत आपकी रक्षा नहीं कर सकती है, हिंदू, सिख, तो रक्षा करते ही नहीं हैं, ऐसा समझकर आप जाना चाहते हैं तो मुझको बड़ा दुःख होगा। जो लोग पाकिस्तान नहीं जाना चाहते हैं और यही रचना चाहते हैं मैं कहूँगा उनको कि पुन्हे महासे नहीं जाना है। मैंने उनको कहा कि जो लोग बाहर बसे गए हैं वे तो लगी आ सकते हैं, और तब ही जाना चाहिए जब महाके हिंदू और सिख खुशीसे कहें कि आप आइए। पुलिस और मिजिटरी—उनके जरिएसे उन्हें जाना मुझको तो अच्छा भी नहीं लगता। मैं तो कहता हूँ कि यह सब ठोड है। पुलिस नहीं चाहिए, मिजिटरी नहीं चाहिए। जो कूट होने लगता है, हम कर लेते। मरता है तो मर जायगे। अगर कोई किसीको मारता नहीं है तो वह मरता नहीं है। लेकिन अगर एक मारता है, बीबाना बन गया है तो उसके सामने मैं क्यों बीबाना बनूँ ? मैं तो उसके हाथसे मर जाऊँ, बहुतो मुझे क्या प्रिय लगेगा। वह मुझे काट दे, वह अच्छा लगेगा। मैं हकूमतकी तरहसे कह नहीं सकता हूँ। मेरे हाथमें हकूमत है नहीं। मैं बीसा बना हूँ, वह तो आप जानते हैं। एक आवामी पागल बनता है और वह बुरा करता है, तो मैं बीसा नहीं कर सकता। पीछे वह भी मुझसे ज्यादा सीख लेता है। जानीस करोड़ हिंदू-मुसलमान पडे हैं, उसमेंसे पाकिस्तानमें बोडे करोड बसे गए, लेकिन तब भी बाडे चार करोड मुसलमान तो यही हिंदुस्तानमें पडे हैं, बाकी तो सब-से-सब हिंदू ही हैं। बोडे पारसी, बोडे क्रिस्टी, बोडे यहूदी भी पडे हैं, उसकी तो गिनती नहीं हो सकती है। तो वे आपसमें मरकर मर जाव तो जसे मर जाय, लेकिन पुलिस-मिजिटरीकी मार-फट बिबा रचना वह बिबनी नहीं। दोनों अच्छे हैं तो हकूमत क्या करे ? हकूमत कहे कि हम तो इन तरहसे रह सकते हैं, नहीं तो हम हकूमत

कोय बेठे हैं। पीछे जो ऐसा मानते हो कि हिन्दुस्तानमें तो हिंदू ही रहें, क्योंकि पाकिस्तानमें मुसलमान ही रहते हैं, सो वे हठमत्त बनते हैं। इसका मतलब यह होना कि पाकिस्तानमें वे निकम्मे बन जाते हैं बीबाना बन जाते हैं, ऐसे श्री हम जी क्या बीबाना बनें ? हम जाहे सो ऐसा कर सकते हैं। मेरा एक दोस्त है, उसको मैं गाली देता हूँ सो वह मुझको बो जायी वे, वह ठीक है। वह गाली देता है, उसे सहन कर लिया, सो वह कष्टाक्त जाती देगा ? माफ़ा है, वह भी मैं सहन कर लेता हूँ, मैं उसको मुझके सामने मुक्का नहीं देता हूँ। तब पीछे क्या होगा है, धापने देखा है ? मैंने तो देखा है कि कोई आदमी ऐसा हमारे मुक्का माफ़ा है तो उसके हाथ-पैर बाँधते हैं। जो बालिस्त्र^१ करता है, वह भी खैर भोटा सवा गद्ग-सा होता है, उसपर मुक्का पसारा है, तब तो उसको कुछ सम्भवता पाली है। लेकिन अगर बालसर^२ कोई पीछे सामने नहीं रखता है तो वह निकम्मा बन जाता है और कुछ नहीं कर सकता है। मैंने तो आपको समझान सत्य बताया कि। मैं उसपर अपने आत्म हूँ। और तो आप ऊपर नहीं बन रहे हैं। मैं बालिस्त्रक उस सत्य परवर पडा रह सकता कि नहीं, वह तो ईश्वर ही जानता है। मैं तो आप बीबी बात करता हूँ कि जो बाहर पते गए हैं, उनको बाहर रहने दें। लेकिन बाहर रहने दें, पीछे उनकी खाना-पानी तो देना है। मुक्ति मैं बाहर पते गए हैं, उनको मुक्त रहने दें और उनको कहें कि तुम पाकिस्तान जाय जाओ, ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा करके हम सच्चाईका सामान तैयार करते हैं। कावेस हठमत्त, अगर वह हठमत्त सबमुन देसकी सेवा करनेके लिए है, पीछेके लिए नहीं है, सत्ताके लिए नहीं है, लेकिन सबकी खिदमत करनेके लिए है—एक कीमती नहीं, दो कीमती नहीं, सबकी है। अगर वे खिदमत करते हैं और और विगमते हैं और उन्हें खिदमत करने नहीं देते तो उन्हें हट जाना है। पीछे जो लायक है, जो हिन्दुस्तानमें हिंदुओंको ही रखना चाहते हैं, वे उनकी बगल में, हस्तगतमें। वह हिंदुधर्मको पुनर्जीवानी बीच में,

^१ मुझके बाबा^२ मुझके बाबा ।

हिन्दुस्तानकी भी डुबोनेवासी थी। हम छोड़ दे, वह जो कुछ भी चाहें करे। हम तो हिन्दुस्तानकी ही देखें। उसका गतीबा यह था जाता है कि सारी दुनिया हमारी तारीफ करेगी, हमारे साथ होगी। नहीं तो दुनिया जो अवसर भारतकी ओर देखती आई है, अब उसकी ओर देखना बंद कर देवी। वे मानते थे कि हिन्दुस्तान एक बड़ा मुस्क है, उसमें अच्छे भावनी रहते हैं, वे बुरे होने-वाले नहीं, यह विश्वास जट्म हो जायगा। आपको इस तरहने करना है तो कर सकते हैं। लेकिन अवसर मेरे सास-में-सास है तबतक नै सबको सावधान करवा ही रहूंगा और सबको कहता रहूंगा कि अगर इस तरहसे करोगे तो इसमेंसे कोई भलाई निकलनेवासी नहीं है।

३ ६५ ३

जीलघार, २२ सितम्बर १९४७

(लिखित संदेश)

एक सत्य समाजमें मूल अधिकारोपर अमल करनेके लिए बहुतोंसे राजाकी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, वह सबको जान लेना चाहिए। कांग्रेसके वार्षिक अधिवेशनोमें प्रवर्धनीकी भूमिपर अन्य जनों, सम्प्रदायो और राजनैतिक संस्थाओंकी बैठकें होती देखकर मुझे अत्यंत दुर्ल होता था। क्या बिना पुलिसकी सहायताके विरोधी विचार प्रकट किए जा सकते थे। अब लोग इस रास्तेसे हट गए हैं और जनतामें इस रास्तेको अच्छी निगाहसे भी नहीं देखा जाता। अब वह अनुकूल वातावरण और बरदाश्तकी मायना कहा जती गई? क्या यह इसलिए हुआ कि हमने राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है? क्या हम स्वतंत्रताका दुरुपयोग करके उसकी शान्तिनाश कर रहे हैं? याददा रखें कि यह मनोवृत्ति अधिक दिन नहीं रहेगी। अगर रही तो यह हिन्दुस्तानके लिए अत्यंत दुःखदायक होगी। हमारे टीकाकारोंके लिए, जो बहुत हैं, हम यह कहनेका मौका न दें कि हम स्वतंत्रताके सामक

गयी वे। इन आशीषकोके सिद्ध मेरे दिलमें कदै उत्तर 'उठे हाँसे हैं। लेकिन इनने कुछ नसोप नहीं होता। आरसर्वर्गके करोड़ों जन्म-समुदायों प्रेम करनेवालेके नाते मेरे स्वामिमानको हाथि पकड़ी है कि हमारी महामहिमका बीबासा निश्चय। इन आशा करते हैं कि हमारी बीबी जिन्दगीका यह एक गुजरता हुआ नवान्न है। मुझे फिर यह न कहा था, जैसा कि कहा जाता है कि यह सब मुस्लिम मीमने पुरे कामका परिणाम है। इसको हम सब नाम ने तो बना हमारी सहजबीबता हमनी कमबोर हो गई है कि यह नामुसीते बोझके समकें बुझें देके दे ? बिच्छाबार और सहजबिबता तो इन तरहनी होनी चाहिए कि हमारी सहजबिबता अपने स्वयं परिचय है। यदि नारणवर्ग सहज न हुआ तो परिचय नष्टा है। ठीक ही तो कहा गया है कि सिद्धने अपने सहजबिबता और सहजबिबताको छाता है। ईश्वर करे कि हिंदू नसारने उन सब बेसो-का—बाई वे परिचयके हो या आशीषकाके—आशा-स्वयं बना रहे।

अब मैं बिना जाइल्लेके और छुने हुए हथियारोंके नयकी बाधपर आता हू। इसमें नयेह नहीं कि कुछका तो पता चल गया है। कुछ अपनी हथियारों के लिए या रहे हैं। ऐसे सब हथियारोंको निष्काश देना चाहिए। जिसका कुछ नुके मासुम हैं उनमें दिल्लीमेंसे सभी भी बहुत कम निष्काश पाए हैं। मगर इन हथियारोंसे हम डरे क्यों ? अरेबी राजवर्ग भी कुछ छुने हुए हथियार रखते थे। उन समय हमकी कोई बिना नहीं करता था। अब तुमको विश्वास हो जाय कि अस्त्रोंके मुदान किसी अथवा छिने हुए हैं तो उन सबकी जरूर जरूर नो। ऐसा न हो कि लोग तो ज्यादा ही और निश्चय कुछ भी नहीं। रक्तम होनेपर हम एक कामल अरेबोंके लिए और दूसरा अपने लिए मायु न करे। लुटेरी नारोंका कारण बनानेके लिए उसको बुरा नाम न दें। इसका सब करने और कहनेके पन्नाएँ अस्त्रों के छाने के परिचयमें पाई हुई अस्त्रगताके जानक होनेके लिए कभी ही कठिनाइया नहीं न हों, इनको दीखाते उनका मुकाबला करना चाहिए। यदि इन उनका जानना अथवाईते करें तो इन ज्यादा लोग बन सकते हैं। ऐसा सबभर कि मुसलमान अकारिजाने बेवफा कौने उनकी मार डालें या जहा-

कतन करे तो हमने क्याया बुझसि नही ?

अधिनियमके लिए सम्मान रखना अक्सरियतका भूपन है। उसका निरस्तार करनेसे अक्सरियतपर बुनिया हूँसेगी। अपनेमें विश्वास, और जिसको दुश्मन माने उसका उच्चार करनेमें हमारी रक्षा होती है। इसी-लिए मैं बोरोसे कहता हूँ कि हिंदू, सिख और मुस्लिम जो बेहसीमें हैं वे दोस्ताना सीरसे एक-दूसरेमें मिमें और सारे मुल्कमें बैना करनेके लिए कहें। आप बुनियाके लिए जमूना बने। दूसरे हिस्सेमें हमारे लोग क्या करते हैं सो बेहसी भूल जाय। तब ही बेहसीको इस बहरीने बामुबलको दूर करनेका बीरब हासिल हो सकता है। अगर बैरका बबबा सेना मुनामिह हो सो यह हकूमत हीके जरिए हो सकता है, हर एक आधमीको जरिए हरगिब नही।

१ ६६ १

२३ सितम्बर १९४७

माझी और बहलो,

प्रार्थना कोई मामूली चीज नहीं है, वह बड़ी मुसब चीज है। बीकनमरने हम सब तरफकी बात करते हैं, २४ घंटेमें काफी बातें करने हैं, गुनाह करते हैं, पैसेके लिए जारे-जारे फिरते हैं, सो कम-से-कम प्रार्थना सो कर ने। समाजमें अगर प्रार्थना करे तो यह बहुत बड़ी चीज हो जाती है। ४० करोड़ आधमी ऐसा मानकर कि ईश्वर एक है अपनी मायामे प्रार्थना करे तो यह एक बहुत मुसब बात हो जाती है। और पीछे हमने कुरान बरीफकी कोई धायत धाय सो हमने भी न बबरारें। जो आई ऐसा कहते हैं कि कुरानमें कुछ भी प्रार्थनामें न पका जाय, वे तो मुस्सेमें ऐसा कहते हैं। मुसलमान कूफि हिंदुओंको लग करते हैं, सिखोंको लग करते हैं, उनको माग्ते हैं, इसलिए क्या हम कुरानपर गुस्सा करें? मुसलमानोंने जो कुछ किया यह भण्डा नहीं किया, लेकिन कुरान बरीफने क्या बुराई की? गण-

बाबूका एक भयान पाप करना है तो इसलिए हम क्या भयवाना नाम नहीं लेते? भयवान तो एक ही है। जो भयवानने भयान है वे ऐसा कहें कि हिन्दुओंने भी बुरा किया है तो क्या बीता बुरी है? सिखोंने अगर बुरा किया तो क्या हम मुसलमानाहम न करें? मुसलमानने क्या गुनाह किया? सिख सिखों, हिन्दू सिखों, मुसलमान सिखों, पारसी सिखों उसने क्या हुआ? उनमें जो धर्म है और उनके पीछे जो तपस्वियाँ ही गई हैं वह तो कायम ही रहेगी।

मेरे पास राजस्थानीसे जो भाई साहब का घर ने तो उसके थे, बहादुर के पीर बड़ी सिखारत करनेवाले थे। राजस्थानी बगल ही तो हिन्दुओंने और सिखोंने, साहीर भी उन्हीं लोगोंने बनाया। पाकिस्तान सारे-का-सारा मुसलमानोंने छोड़े ही बनाया है, तो पाकिस्तान जो है, उसके बनानेमें सबसे हिस्सा सिखा, किसी एक कीमने नहीं। हिन्दुस्तानको कहें कि यहाँ हिन्दुओंकी सत्ता ब्यादा है इसलिए हमने हिन्दुओंने ही जमाया है तो यह बात ठीक नहीं। उनको हिन्दुओंने, मुसलमानोंने और सिखोंने बनाया, पारसियोंने बनाया, ईसाईयोंने बनाया। ऐसा नाम हिन्दुस्तान बना है उसके बनानेमें सबसे हिस्सा सिखा है। मैंने तो उन भाईसे कहा, नाम बात रहे और साक्षरता तो ईस्वर पठा है। ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ ईस्वर नहीं। उसका भजन करो और उसका नाम लो, सब अच्छा हो जायगा। उन्होंने कहा, वहाँ पाकिस्तानमें जो पड़े हैं उनका क्या करे? मैंने उनको कहा, नाम बड़ा धाय करो, बहुत मर करो नहीं गए? मैं तो अभी बीचपर काममें हूँ कि हमपर कुछ होखी तो हम बहुत पड़े हैं वहींपर पड़े रहें, मर जाय। जीय भार ठाँवें तो मर जाय। अगर ईश्वरका नाम लेते हुए जहाँ-बुरीसे मरें। यही मैंने सबकीको सिखाया है। मरनेका इस्म तो हाजिर कर से और ईश्वरका नाम लेती रहें। कोई इन्साफ है, बुरा धारनी है, उसकी सत्ता बंद हो जाती है, वह हिन्दू हो, सिख हो, पारसी हो, कोई भी हो, हम वह तो कर सकें कि उसके मनमें न हों। यह फल कि नहीं, ऐसा सेते हैं तो उसको नहीं कहना चाहिए कि ५ मिनट बाद मारना है तो बूझनी मारने, लेकिन हम तेरे अपने जानेवाली

नहीं है। ऐसे बेकर छूटनेवाली नहीं। मैं तो, जबतक मेरेमे साध है, यही सिखा दूंगा। दूसरी बात मैं नहीं कर सकूंगा। मैं ईश्वरको नहीं भूखना चाहता। इसलिए मैं सब लोगोंको कहता हू कि सबसे बड़ी बहादुरी और सबसे बड़ी समझ बुनियादी इसीमे पड़ी है कि मरनेका इन्त्य सीखो तब बिना रहोमे। अगर मरनेका इन्त्य नहीं सीखते हो तो बिना नीत मारे जाओगे। मैं नहीं चाहता कि कोई बेनीत भरे। मैंने मुसलमानोंको भी कहा, आप क्यों जाना चाहते हैं, यही पढ़े रहो और मरो। मैंने राज-पिंडीके लोगोंको भी यही कहा। मैं उन लोगोंकी निमत करता हू। हकूमत-बाने जो कुछ कर सकते हैं करें। मैंने उन लोगोंको कहा है कि गृहा आप है जो आप कैमोमे जावे, वहा मेहमत करें। आप लोग सगडे हैं, हिम्मत न हारे। वह न कहें कि हम सब क्या कर सकते हैं, मकान नहीं, कुछ नहीं। मकान तो पडा है, बरनी माता हमारा मकान है, ऊपर आकाश है। जो मुसलमान डरते भाग गए, उनके मकान पडे हैं, खनीन पडी है। तो क्या मैं कहू कि आप मुसलमानोंके घरोंमें चले जाय ? मेरी जुबानसे ऐसा नहीं निकल सकता। मुसलमानोंके घर जो कततक वे वे भाग भी उनके हैं। वे भाग गए डरके मारे। अगर वे अपने-आप भाग गए हैं और उनको ऐसा लगता है कि वे पाकिस्तान-में बूझ रहेंगे तो चले जाय, वहा बूझ रहें। उनकी ईबा^१ न पकवाओ, आपमसे जाने दो। उनकी जायदाद और खेवर जो है वे ले जाय। पीछे जो घर वे छोड जाते हैं वह तो हकूमतके कब्जेमे रहता है, वह जो चाहिए कर सकती है। उसमें जो हमारे खरणाई हैं वे अपने-आप चले जाय, यह तो अच्छा नहीं। मैं एक चीज जानता हू कि आप सगडे बने और जो मैं आपको कहता हू उसको आप करे ताकि आप मुझको यहांसे जेब सकें। मैं पचाव जाना चाहता हू, चाहीर बाऊगा। मैं पुलिस और मिनिस्टरीकी इस्कोर्ट^२ लेकर नहीं जाना चाहता हू, मैं तो मजबानके गरोखे अकेले जाना चाहता हू और वहाके जो मुसलमान हैं उनके गरोखेपर जाना चाहता हू। अगर उनको मारना है

^१ कपड;

^२ बस्ता ।

तो मार डालें। मैं दूँगे-हैमसे मर जाऊँगा और दिलमें झूठा जि नापाय
 उनका बता करें। जन्मा बना भगवान बने कर सकता है? उनको
 बता बनाकर। ईश्वरके पास जन्मा करनेका यही तरीका है—दिलके
 मीनको गुप्त कर देना। वह मेरा जन्म बने तो भी मैं उनका धनु नहीं हूँ,
 मैं उनका धुरा नहीं चाहता तो ईश्वर मेरी बात सुनेगा। उस
 साक्षीके दिलमें सवेरा मैंने मारकर क्या दिया, हमने मेरा क्या
 भुलाह दिया था? मुझे मैं मारे तो मारनेका उन्हें अधिकार है।
 इसलिए मैं बाहोर जाना चाहता हूँ, राक्षसपित्री जाना चाहता हूँ। हट्ट-
 मण मुझे रोके। तो रोके लेकिन मुझे रोक कैसे सकती है? रोकना चाहे
 तो मुझे मार डाले। अगर मुझको मार डाले तो आप बीवीको एक
 पाठ लेकर मैं बना जाऊँगा। वह मुझको बड़ा प्रच्छा करेगा। वह
 पाठ क्या है, दूँ मरेगा, लेकिन किसीका धुरा बचाना भी नहीं करेगा।

धुरा बचक था, बच्चा था। उनमें भगवानकी प्रायश्चा की। प्रश्नार
 क्या था? १२ वर्षका लड़का। उन सबने यही किया, तो हम तो
 उनके भाँति हैं। मुझसे, जानक चाहते, जो कुछ-कम जानने
 चाहें हैं मैं सब जानने हों, कि उन्होंने यही सिखाया है कि किसीका
 धुरा नहीं मोचना, किसीको सतकार नहीं लगाना। मरनेकी हिम्मत
 रखना वह तो सबने बड़ी बहादुरी है। अगर हमारे जोन इस तरहने
 आप धर्म तो किसीपर मुन्हा नहीं करता है। आपको समझना है कि
 मैं क्या हूँ, तो डीक मए, मने मए। ऐसा ही ईश्वर हमको भी कर दे।
 ऐसी हमारी होनेका हार्दिक प्रार्थना रहे। मैं आपसे वह कहूँगा, राक्षस-
 पित्रीवालोसे भी क्या कि आप बड़ा जान और जो भिन्न और हिंस्र
 मरणाधी हैं उनको भिन्न, उनसे कहें कि मारें, आप बापित आप और
 अपने-आप—पुनिसके मारण नहीं, मिष्टिरीके मारण नहीं।
 किसीमें आप ऐसा करें कि हम जमड़ा नहीं करें तो मैं समझूँगा कि
 ईश्वर मेरी मुखा है। उस बीचको लेकर मैं पचाव क्या जाऊँगा, मैं
 एक पिन भी क्या उनके बाप न रखूँगा, वह मैं आपको कहना चाहता
 हूँ। मैं क्या कोई चीज नहीं पका हूँ, क्या सेवा करनेके लिए पका हूँ।
 जो जान गया मरकती है उसको मुझसे एक इच्छा विसर्ग कर सकूँगा।

है वह करनेके लिए मैं यहाँ पड़ा हूँ। तो मैं आपको, राजनियोगीके जो भाई भाए हैं उनको, बतला देता हूँ कि उनको किस तरहसे रहना है और किस तरहसे वे काम करे कि उनकी खुशमिस्ती, सारी दुनियामें, फैल जाय।

१ ६७ १

२४ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनों,

आज जो मजल आप लोगोंने सुना वह हमारे लिए आज ठीक है। हम सब आज कह सकते हैं—“मेरी टूटी-सी किस्ती है।” और पीछे भगवानको हम कहते हैं कि—“कृपा करके हमको पार उतारिए, अगर आपकी कृपा नहीं रहनेवाली है तो वह किसी पार उतर नहीं सकती।” यही आज हिन्दुस्तानका हाल है, इसे मैं प्रतिपादित करना चाहता हूँ। हमने, किसी-न-किसी तरहसे कहा लेकिन और-आज का क्या है। हिन्दु-मुसलमान दोनोंके दिलोंमें इतना गुस्सा था गया है कि दिल्लीमें मुसलमानोंको हम रहने नहीं देंगे। हिन्दु-सिखोंको पाकिस्तानसे भगाया गया है। मैं सुनता हूँ कि छोटे-छोटे बच्चोंको भी यह सिखाया गया है। यह ठीक है कि यह सब प्रकार मुस्लिम लोगका है। मुस्लिम लोगने यह सिखाया और इसका मैं डरता हूँ कि हम तो सबकर पाकिस्तान लेनेवाले हैं, यहिरा करके नहीं, हिन्दु और जितने औरमुसलमान हैं उनके साथ मिलकर करके नहीं। यह तो हमारा दुर्भाग्य था कि क्योंकि यह बतला रहा कि वे हमारे साथ आने। लेकिन यह कभी चल नहीं सकता। सबकर क्या लेना था ? तो एक तरहसे तो कह सकते हैं कि सबकर नहीं लिया है। लेकिन हमने पाकिस्तान माना, हमने कबूल कर लिया, अंग्रेजोंने कबूल कर लिया। अगर अंग्रेज कबूल न करके तो पाकिस्तान ही नहीं सकता था। कांग्रेस किन्तु ही, कबूल करे; लेकिन आखिरमें तो सत्ता अंग्रेजोंके हाथमें थी। उनको उसे छोड़ना

या। क्यों? क्या अब यहाँ सब नहीं मरनी थी। हम ऊँचे समथाले नहीं गये थे। हमारा निशान्य कुछ था। हम भी कहने हैं कि हमारा पहिनालन कुछ था। जो हिन्दुस्तानको आबादी मिली। हिन्दुस्तानने हमसे हुए। कठमेने उसमें विरक्त थी। काँतेने मोचा कि माई-माई एक-एक इन तरफने लगे रहीं, जिन को बचता है जलो जो जो मरते हैं। पाकिस्तान चाहिए? ई हो। हो पाकिस्तान तो दिया। मुक्तता पूरा-पूरा हिस्सा हुआ, पाकिस्तान मिला। अगर कश्मीरको लपटाई पूरा नहीं मिला, पूरी रोटी नहीं मिली, घाबी-पीपी ही मिली, तो इसे तो खा लो, पीके देखेंगे। जो आबादी तो मिली, पर उसे हम हजम न कर सकें, बाहर जो बरा था। जो हमारे बीचकी लड़ाई छल नहीं हुई। तीसराबोले बहरीली सकरीरें ली। वे लोग जो पाकिस्तानमें एते हैं, सब मुसलमान पीछे हैं? कहा कि एते हैं, पारसी एते हैं, सिख एते हैं, ईसाई एते हैं। सब उनकी कुछ करें, बताते कि उनका एक एक-सा होना, हजूम तो हमारी होगी, इसमें शक नहीं है; क्योंकि हमारी धनारिज हैं। वह ठीक है, लेकिन हजूम बाकिर हजूमसे बचाना है। ऐसा कहा तो नहीं; लेकिन हो रही सजा। क्यों नहीं हो सजा, इसमें तो मैंको पाक। मुन्नी सब गया है, कहा क्या-क्या हुआ। मुसलमान सब हलते बाहर बसे गए। उन्होंने मोचा कि अब तो हमारा राज हो गया है, तो फटो-भारी। बहाने कुछ हुआ। अब कुछ हुआ तो पीछे सिख भी तो बलनेवाले हैं। वे कैसे बरबात करनेवाले थे। उन्होंने नी फाटमा-भाला कुछ कर दिया। वह हमारा किरण है और बली वह बलन नहीं हुआ।

हजारों माई मेरे पास धाते हैं कि हम यहाँ नहीं रह सकते, कहा हमारे लिए यह है कि हमारा कबूल करो, नहीं कबूल कर सकते तो बिन राख हम लगे हैं कैसे रहें, बली पुकार होकर रहें। वह हम कैसे कबूल कर सकते हैं? मजबूर होकर बहाने जाते हैं। हमको फर्क पडे तो हम मुसलमान बने ही जाय। बरके मारे मुसलमान होना फुलरी बात है। पेट पालनेके लिए कोई बर्न नहीं छोड़ सकता है। मजबूर होकर बर्न छोड़ना बर्न नहीं समर्थ है। जो दुख या स्त्री अपना नाम को बोला है—धीर मान बर्नने ही है, उनका बचना क्या?

क्योंकि पैसा चाहिए, खेबर चाहिए, नौकरी चाहिए, इसलिए जो धर्म जो होता है, मैं कहता हूँ कि उसके पास कोई धर्म ही नहीं। न वह हिन्दू धर्मके भाग्य है, न वह अच्छा मुसलमान ही बन सकता है। धीरे-धीरे करके हमें कसमा पड़ाएँ तो हम बोले ही मुसलमान हो सकते हैं ? मैं यहाँ कसना नहीं पड़ता हूँ, मैं तो फातेहा पड़ता हूँ। दोनोंमें मूर्खी पड़ी है। कसमाने तो ऐसा है कि बिना बुद्धि बूझा नहीं है, ऐसा नहीं। धीरे-धीरे उनके रसूल तो मोहम्मद साहब थे। बाकी जो रसूल हो गए हैं, वे कोई नहीं हैं। लेकिन फातेहानें तो बिल्कुल साफ हैं, दूधाले हैं, सबको बसा सकता है तो हमको भी बसा। लेकिन अच्छा हो तो भी जबरदस्ती क्या पड़ना। उसे हम पडे तो मुसीबत पडे। लेकिन कोई कहे—यह यह चीज पडे, पडेना या नहीं, पड़ना होगा, नहीं पड़ेगा तो बहुत कसेगी। तो मैं नहीं पड़ना चाहूँगा। मेरे पास मुट्ठीभर धुई है, लेकिन दिन तो मेरे पास है, वह दिन आपके पास है, वह दिन सबकिसमें भी पास है। वे कह सकते हैं कि अपना धर्म नहीं छोड़ेगी। लेकिन आप तो हम एक बाजी खेब रहे हैं। आप ऐसी हालतमें हिन्दुस्तानमें, हमें क्या करना चाहिए ? वह बड़ा प्रश्न आप दोनोंके सामने है। आप पाकिस्तानसे जो ट्रेन नरकर आती है, पाकिस्तानसे तो मुसलमान नहीं आते हैं, हिन्दू आते हैं, सिख आते हैं, तो उस ट्रेनमें कुछ-न-कुछ फल ही आते हैं। वहाँसे आते हैं तो, वहाँसे मुसलमान आये, उनका कल हो जाता है। उसमें मुझको कहा जाता है कि हिसाब तो सुनो। मैं क्या हिसाब सुनूँ ? मेरे पास हिसाब तो है नहीं। हिसाब सुनकर क्या कहना ? मैं तो यह कहूँगा कि एक सादगी है वह जराबकी एक बौतल पीठा है, बीबाना बन जाता है, दूसरा सादगी जराबकी दो बौतल पीठा है, वह बिल्कुल बीबाना बन जाता है। दोनों बीबाने बन आते हैं। एक पीनेकी चीज ऐसी पीठा है कि वह बीबाना नहीं बन सकता, जैसे कि साफ नदीका पानी है। उसको जराबका नाम नसे दे दो, लेकिन वह किसीको बीबाना नहीं बना सकती है। उसको जराब कौन कहनेवाला है ? जराब तो वह है जो हमारी धरतको से जाय और हमको बीबाना बना वे। बात यह है कि आप

हमको क्या कह रहा है। मान लो कि आज मुस्लिम बीसवें
 बरस का है, क्योंकि उसने अपने बाप को मरवा दिया। तो हम सोचें
 कि यह कर सकते हैं तो हम भी ऐसा करें। हम सोचें कि हम तो
 सारे हिन्दुस्तानमें राज्य बनाएँ और पाकिस्तानको मिटा दें, मैं आपको
 कहता हूँ कि पाकिस्तानको हमने कबूल कर लिया, पीछे उनकी मिटाना
 क्या है? मिटा नहीं सकते हैं। ताकतसे, अपनी सत्कारकी ताकतसे तो
 नहीं मिटा सकते। और मिटानेकी चेष्टा करें तो हम दोनों डूबने-
 वाले हैं। हमारी किसी मूट्टी किसी है। आज हम डूब रहे
 हैं। आज बाहे आप हम सोचते हैं कि जहाँ और पीछे भीत लेकर
 आओ। तो मैं कहूँ कि भीत लेकर आओगे उसने पहिले ही दुनियाकी
 दूसरी ताकत आपको का जानेवाली है, दोनोंको का जाएगी।
 इसकी भीत मेरे सब दोस्त को समझदार आदमी है, किसीने
 इसने कभी ऐसे कामोंमें काटे हैं उनका हैं, तो हमारी और हो सकती
 है। अगर सब दोनों हिस्सोंकी दोस्त भी रहे हो और उसमें सम्भव
 भावी हो सब कैसे होगा? मैं कहूँ कि हाँ, दू हिस्सोंकी दोस्त
 होके है, उसने हमारे लिए किए कर है, तो इसलिए हम इसे दरिद्रोंमें
 बाँट दें। मुसलमानोंको हम इस बात ईश्वर नहीं पहुँचायेंगे। उन्हें
 जाना हो तो उनकी राखी-पुसीसे लेब देते, लेकिन उनकी बदबूली
 और गन्धिल करने नहीं देते। वे अपने करमें पड़े हैं, महा अन्ध-
 रियत उनकी है नहीं, हम क्यों ऐसे बुद्धिमान बनें कि उन्हें सतायें?
 हम आकाश हैं, साग हिन्दुस्तान आकाश है, वे ऐसा क्यों मान लें
 कि हम उन्हें का जाएँ? क्या वे ऐसा हैं कि हिन्दु उन्हें पाएँ तो
 का मरते हैं? कावेसने इसकी कुरबानिया की, सर्व-प्रतिपद आकाश-
 व्याध कुरबानी करनी गई, उसने काँची हिन्दु-मुसलमान से, तो क्या
 अन्ध-अन्ध मित्रोंपर वे पागल हो गए हैं। हम कुरबानियोंसे, एक-
 सीके मरनेमें हिन्दुस्तानकी आकाशी मिली, उसकी सगलके मनेमें फँक
 देते क्या? यह ज़िन्दा बुरी बात है। मैं तो आपको यह कहूँ कि
 अन्धकारमें आप गहर पड़ें हैं और बुद्धि काटे हैं, यह समझने लगते
 हैं कि वे हमारे नहीं नहीं बनें तो मैं आपको यह बात नहीं सुनाता हूँ।

मैंने कम भी कहा था कि यह सब बर हो सकता है। किस तरहसे ? हम साफ बन जाय। साफ बने उसके मतलब यह है कि हम बहादुर बन जाय। जो आदमी बहादुर बनता है वह ऐसी हरकतें नहीं करेगा। आपके पीछे आपकी हकूमत है, हकूमत बदला लेगी। हकूमतको कहो। राज्य तो हकूमत बसाती है। वह जमाना बना गया जब अंग्रेजोंकी हकूमत थी और जब हम उनको कुछ पूछ नहीं सकते थे। आज आपकी हकूमत है, उसको पूछो। सबको पूछना है। उनको हम कह सकते हैं कि इस तरहसे करो और इस तरहसे न करो। आखिर साठे बार करोड़ मुसलमानोंसे क्या करना था। मानो कि साठे बार करोड़ मुसलमानोंको मार डाला, अब पीछे क्या करोगे ? पाकिस्तानमें तो बहुत मुसलमान पड़े हैं, वहां किसको मारोगे ? पाकिस्तानवाने आपके पाससे साठे बार करोड़का हिसाब लेने और वह हिसाब आप नहीं ले सकेंगे, क्योंकि उसके साथ सारी दुनिया होगी। इसलिए मैं कहता हू कि हम पाक रहे, हमारी जो किताब है, वहींखाता है, अमलनामा है, उसको हम साफ रखें। हम कभी कर्मचार नहीं बनेंगे, लेनदार बनेंगे। ऐसा हम कर ले और पीछे मैं कहूंगा कि आपकी जो हकूमत है उनको तो पाकिस्तानकी अस्टीमेटम^१ देना है। जिसने हिंदू, सिख कहासे बने आए हैं उनको सबको वापस आना है और उनकी हिफाजत पाकिस्तानको करनी है। पाकिस्तानने तो अब कह भी दिया है कि जिसनी अफिगनयत पाकिस्तानने है उनको वहीं एक होने जो मुसलमानोंकी है। उनको बोलनेका, रहनेका, अपने मदिरोंमें जानेका, गुल्लारोंमें जानेका, सब हक रहेगा। हकूमत उनके हाथने नहीं आ जायगी। आज एक-दूसरेका एवबार टूट गया है, वह मैं समझ सकता हू। लेकिन इलाज क्या यह है कि मेरे पास वहां मुसलमान पड़े हैं, उनकी बायबाब पड़ी है, घर पड़े हैं, उनके बच्चे हैं, उनको हम मारें और भगवाना धूस कर दें ? ऐसा नहीं होना चाहिए। इसमें कभी बुझविली है। हम कभी बुझविल क्यों ? ऐसी सीधी-सीधी बात

^१ अस्टिल बेताबगी ।

में प्रायश्चित्त करने का आदेश है। मैं तो नहीं कहता हूँ कि हम हिन्दु-स्थानमें बचना बेना मुसलमान और जिसकी ऐसा बहाना है कि हिन्दुस्थान देकर लगे कि दिल्लीमें कुछ होनेवाला नहीं है। दिल्लीमें हमने कुछ कर दिया है, मुसलमानोंको निकाल दिया है। मैं नहीं कहता हूँ कि जो बने गए हैं उनको प्रायश्चित्त करवा दिया। लेकिन जिसने कहा पते है उनसे कहें कि जहाँ प्रायश्चित्त है। बादमें जो पीछे पते गए हैं उनको प्रायश्चित्त करवा दिया। जो कोई मुसलमान बुराई करे उसको सिर्फ हकूमतकी कमी। प्रायश्चित्त करना चाहिए वह करने नहीं देते। वह प्रायश्चित्त है, ईसाई बजावले भी प्रायश्चित्त है और वह तो हिन्दु-स्थानमें है। तो हिन्दुस्थानमें जो पते हैं वे तो हिन्दुस्थानकी हकूमतमें पते हैं। उनकी हकूमत बीना कहे करना है। अगर हकूमत कहे कि मारो, हमारे पास तो बन्दूक नहीं है, तो पीछे हकूमत भर जाती है। तब तो पीछे मुसलमान बन जाता है और वह तो हकूमतका नाम ही नहीं है। मैं प्रायश्चित्त कहना चाहता हूँ कि हकूमतको प्रायश्चित्त और वे लगे हैं हैं, लेकिन प्रायश्चित्त हमने हाथमें काबू न करें, बहूत न वे और किसीको मारें नहीं। इसका करो तो हम बीना जाते हैं और हमारी किसी भी प्रायश्चित्त नहीं है वह बन प्रायश्चित्त। और पीछे जो लगे हैं उसमें प्रायश्चित्त तो होनेवाला ईश्वर है ही। ईश्वर हमको कभी छोड़ नहीं सकता है। हम अगर ईश्वरको छोड़ दें, उसको मुसलमान और लगे रहता छोड़ दें तो ईश्वर क्या कर सकता है?

१ ६८ :

२१ सितम्बर १९४७

आदमी और बहो,

वह सब प्रायश्चित्त हमारे सिस्टर ब्रह्मचर्य का पती है। हमारी प्रायश्चित्त

^१ पुत्री ।

आमी बो-बेड महीनेकी नही हुई। १५ अगस्तसे १५ सितम्बर तक और आज २५ तारीख है, तो एक महीना १० दिन हुआ। वह आबादी अभी तो एक छोटी-सी बच्ची है। एक महीना १० दिन का बच्चा क्या कर सकता है? उसके तो हाथ-पैर बजने चाहिए। एक महीने १० दिन के बच्चे ने वह दिया नहीं हो सकता। लेकिन हम तो तय है और अंग्रेजी सत्तनतसे आमतक बजते आए हैं, तो हम बोडे ही भुलीयतके सामने मुकनेवाले थे। आबादी के बावकी ही बात करें। यह तो हो नहीं सकता कि हम तैयार नहीं थे। आबाद तो हम बन गए, लेकिन हमारे भी लोग हैं उन्होंने आबादी के यह माने माग लिए कि अब हम भी कुछ बाहें वह करे। इससे हिंदकी हकूमतका काम हमने बहुत ही मुश्किल कर दिया है। जो आबमी अपने हाथ साफ नहीं रखता वह साफ बीच क्या बेबेना और उसकी कहानक कबर करेगा? आज हमने बबमाथ आबमी पडे हैं तो उसमें किन आबमी किसके कहे कि तू बुरा है? अगर तुमरा उसका बबाव है कि तू बबमाथ है तो इससे वह समान और पेचीदा हो जाता है। यह स्वराज्य नहीं है और न यह स्वराज्य लेनेका रास्ता है। इसलिए मैं कहूंगा कि हमें तो जिसना हो सकता है हमारी हकूमतको कटना चाहिए, उसको हमें मजबूत लेनी चाहिए। मानो कि यह मजबूत नहीं मिलती, तो क्या जो पाकिस्तानने होना है और हो रहा है ऐसा हम भी करने लगे? इससे उनको पाठ मिल जायगा? मैं आपको कहूंगा कि उनको पाठ देने नहीं मिल सकता। दुनियाका काम हम तरह नहीं बनना। कुछ आबमी बजते-बजते हैं तो हकूमत कहती है कि तुम आपसमें क्यों लड़ते हो, पुलिस पडी है उसको कहना चाहिए। पुलिस नहीं सुनती है तो मजिस्ट्रेटका मकान तो है, आप वहा मिलेदन कर सकते हैं। वहा जो कुछ हो सकता है, वह होगा। एक-दो आबमी आपसने लडे तब तो मजिस्ट्रेट पीसना करे, लेकिन वहा तो दो बडी कीमें आपसने लडी। हकूमत क्या करे? यह अंग्रेजी हकूमत नहीं है जिसकी इन्तेजसे तुम आते थे। आज तो हकूमत आपकी है। उसके माने हुए कि आप हुकूमत मिक्कात सकते हैं। आप हकूमतको कह सकते हैं, यह मत करो। उसे हटाना चाहे तो हटा सकते हैं। ऐसी आपकी

साक्षर है। ध्यान उन नामोंका ध्यान करना हमें नाम न करें तो बड़े स्तरमें यह बाधों और नें बहुत। नि हय धार बड़े स्तरमें पड़े हैं। पानिमान तो करनेमें पड़ा ही है और हम भी मनमें पड़े हैं। मैं हमके बचावमें नहीं करता कि हमारी भरण है, मलमल है, हृदय है, उसको जो बला चाहिए, बर रही है। और धनर कुछ बाकी रह गया तो उनको भी करना है। मैंने ध्यानमें बला दिया है कि ध्यान करने का है, बाकी मैं करता नहीं चाहता। आप लोगोंका मन क्या है? मित्र-मुक्तकर रहे, मुक्तमानोंको मुक्त न समझें। जो ध्यान है वे अपने-आप नर बाधों। लेकिन हम एक ध्यानको मुक्त समझें, उसको बाधों-पीठों तो उसमें हमारी बुद्धिहीन है। हमने हममें बुद्धिहीन बाधों है। जो हिम्मत रखते हैं, बहादुर हैं उनका यह काम नहीं है कि मैं किमीने लड़ें-मिहें। क्योंकि किमीपर हम समिपता रखते हैं, उनमें हम लड़ते हैं, यह सब कार्य है। लड़ाया गया था। उसमें जीवने हमारे जीवने भयानक है। मैंने ध्यानमें मुनामा था कि वह सब दुम्हारे हाथमें नहीं (?) है, हममें हाथमें है। वह हमारी बाध रहे तो रखी है, यही रखें तो नहीं रखी है। उनको करो, अनुपमको नहीं। जो पतिव्रता बहार करेवाला है उसको करो। वह हमारे जीवने है। वह हमारा बहार करनेवाला है। तो हम क्यों किमीसे विपक्ष बा करें? मने ही मुक्तमान कुछ भी करे मने ही किमीने हथियार रखे, मने वह बदमाश बन बाध, नेवका मने। तो बेवकाईका बला हममें सेगी। हममें से सिध तो वह जानू बाकी बुद्धिमानें पड़ा है कि बेवकाईको गौरी मार कर उठा लेगी है। मगर कोई बेवकाई करे तो वह स्टेजके लिए बड़ा भारी मुनाह हो जाता है। वह एक बूतसे की क्लास मुनाह हो जाता है। हमसिध उसको उठा लेते हैं। तो वे ऐसा करें यह मैं समझ सकता हूँ। लेकिन वे बेवका हो गए हैं, ऐसा एक करके उन्हें मारना अत्यन्त काम नहीं है, वह बुद्धिमान नाम है। मैं करता हूँ ऐसा न करें।

अब मैंने कहा और ध्यान फिर करता हूँ कि हमारी दूरी-दूरी किमी है। उसको हटा करके दूर ही पार जगह लड़ते हैं। नहीं तो किमी बरितानें नहीं है। उसको हटा है, उसमें दूर बड़ा किमी हो

गया है। पानी उसमें फक-फक करके भर जायगा और जो लोग उसमें बैठे वे भी डूब जायगे। मजबूत कहा है कि मेरी दूटी हुई किस्ती है उसको हे प्रभु, तुझ्पा करके पार उतार। यह बिलकुल ठीक बात है कि हमारी ऐसी दूटी हुई किस्तीको यमजान ही पार उतारेगा। लेकिन हमें प्रयत्न करना चाहिए। अगर किसी जगहपर किस्ती टूट गई है तो हमारे पास बौधायान हो सकता है वह लेकर उसमें पानी भरने न दे। पानी भर जाता है तो जेने देना है कि चितने जोरसे पानी बदर जाना है जने ही जोरसे उसे निकाल फेंकते हैं। सब छिन्न होते हुए भी वह नम्या बसती है, लेकिन कब कब नक्ती है जब ईश्वरका उसमें हाथ हो। ईश्वर कृपा करे तो वह नम्या बसनेवाली है और वह पार ऊपर जाती है, नहीं तो डूब जाती है। इसलिए मैं कहूंगा कि अनुपम्यको प्रयत्न करना चाहिए और ईश्वरका सहारा रहना चाहिए।

दिल्लीमें प्राय मजक रही है, दूसरी जगह हिन्दुस्तानमें प्राय सग रही है, हर जगह प्राय प्राय बस रही है तो हमारा बर्न हो जाता है कि हम उनको मिटा दें, उसपर पानी डालें, नहीं तो वह प्राय बुझ नहीं सकती। हमारा पहला काम यह हो जाता है कि हम लोगोंको समझाए। जनको, प्राय लोगोंको, सबको मैं बरी चीज समझता हू। जब सब मुझमें साह है, मैं सारी दुनियाको वही चीज कहनेवाला हू। हिन्दुस्तान इतना आसीनान मुल्क, प्राय बिलकुल एक स्मजान-सा हो गया है। ऐसा हैवान हो गया है।

मुझमें तबुर्बा है और मैं कहता हू कि हमारी पुलिस, मिसिटरी जो जालोका सेवक बनकर रहना है, लोगोंका अनसवार बनकर नहीं। अनसवारीका जमाना बसा गया। मेरा तो उसमें यह है कि मुहूर्तसे काम जेना चाहिए। अगर हम ऐसा कहें कि हिंदू मिसिटरी है, पञ्जाबी मिसिटरी है, हिंदू पुलिस मुखलमानको कटवा देगी—यह सब मैं गुनवा हू तो मुझको डूब भी होता है, हँसी भी आती है। अगर यह बात मन्गी है तो मैं समझता हू कि पुलिस-मिसिटरी दोनों हिन्दुस्तानको बसा देंगी और हिन्दुस्तानकी किस्ती डूब जायगी। प्राय तो हमारी मिसिटरी है। मैं ऐसा नहीं मानता कि अश्वेक सब निकम्मे हैं। अगर अश्वेक

तो उसमेंसे काफ़ी बचे गए हैं, अप्पर होल है। माना कि वे सब निकम्मे हैं। मैं तो ऐसा मान नहीं सकता, अगर ऐसा है तो वे भा सकते हैं। माला कि पाकिस्तानमें मिनिटरी कोई क्या काम करे तो क्या हिन्दुस्तानमें भी मिनिटरी है वह भी क्या काम करे? वहाँकी पुलिस क्या काम करती है तो वहाँकी पुलिस भी क्या काम करे? मैं आपनो फ़ला बाहूँ हूँ और उसका फ़तीबा लगाता हूँ। सब ऐसे बनें तो हमारा हिन्दुस्तान बिल्कुल ख़ार हो जायगा और हमारी आबादी भी एक ग़ादीना १० मिली है वह भी ग़ादीने भी ग़ादी बन सकेगी। ऐसा हज़ न करे। ऐसा न करनेके लिए हमें क्या करना चाहिए? हमनो बहुत कुछ होना चाहिए। किसीसे न करें। सिर्फ़ अपनासे हम करें। अब मानते हम आर्यना करें कि जो हमारी किसी है उसको पार ज़ार है। हमारी और उसकी कर्न वह हो जाती है कि पाकिस्तानमें कुछ भी हो, दूसरे कुछ भी करें, हमें साफ़ ख़ाना है। हम बिल कुछ रमैं। अगर ऐसा नहीं करते तो पीछे हम राज़ बनते, वह समझनेकी बात है। मुसलमान नहीं भी हो, सारी दुनियामें से कुछ करें, उससे हमें क्या पता है? हम तो अपने हिन्दुस्तानको स्वच्छ रमते, बूट रमते, नहिज़् रमते। मुसलमानोंको हिन्दुस्तानका बकायार बनवा है। अगर वे बकायार नहीं रहते हैं तो वे बूट होतें हैं। हम बोले ही बोली नार सके हैं? वह हमारा काम नहीं। लेकिन अगर सामित हो जाता है कि उन्होंने हिन्दुस्तानकी बेवक़ाई की है तो उनसे लिए एक ही इलाक़ है कि उनको बोलीसे बूट किया जाय या फ़ानीपर बनाना होना। हमारा तरीका नहीं। वह सच है उन लोगोंके लिए जो हिन्दुस्तानमें रहते हैं। मुसलमान तो हमारे जाई हैं, मुसलमानोंका तो सब बर-बार यहाँ पठा है। हमलिए हमको समझ लेना चाहिए कि जो कहा ख़ाना जाई वे मुधीने ख़ै। हमको एक-दूसरेका डर न हो। मैं तो मान को बटूना कि प्राय निश्चास रमिए, क्योंकि निश्चासने निश्चास बन सकता है और बनावानीने बनावानी। तो निश्चासको बहाते रहो।

‘मोती मारना।

३ ६६ ३

२६ सितम्बर १९४७

बाइयो और बहनो,

यह जो बल रहा है वह न सिख-धर्म है, न इस्लाम है, न हिन्दू-धर्म। सबको थोड़ा-थोड़ा हम जानते हैं। ऐसा कोई धर्म रह सकता है कि जो न करनेका काम करे? गुप्त मानकसे सिख पब बना। गुप्त मानकने क्या सिखाया है? वे कहते हैं कि ईश्वरको तो बहुत नामने हम पहिचानते हैं, उनकी कमानसे आस्ताह आ जाता है, रहीम आ जाता है, खुदा आ जाता है, सब धर्मोंने यह है। मानक साहबने भी यह बतल किया कि सबको मिला देने। कबीर साहबने भी नहीं कहा। यह बतलाना बला गया। यह हमारे लिए दुःखी बात है।

आज एक जाई मेरे पास आ गए—मुकरत। वे बड़े बड़े हैं। अपनी कथा सुनाते-सुनाते वे रो दिए। उन्होंने यह कबूल किया कि तुम्हारी शिक्षा यह थी कि मुझे जहा मर जाना था, लेकिन उनकी हिम्मत मुझमें नहीं थी। उन्होंने कहा कि 'मैंने तुम्हारा नया सम्मान लिया है और मैं समझता आया हू कि जो तुम बताते हो नहीं सच्ची बात है। लेकिन मन्वी बातके मुताबिक बचना दूसरी बात है। सच बात है कि वह मुझसे नहीं बना। अभी मुझसे कहो तो मैं—'बापिष बना बाऊ।' मैंने कहा कि अगर हम समझे, हमको बिलकुल साबित हो जाता है कि पाकिस्तान वर्कमेंटसे हम कभी इन्साफ नहीं ले सकते हैं—वह धपने-धप कबूल नहीं करते कि उन्होंने कुछ गुनाह किया है—अगर उनको आप समझ न सकें तो आपकी कौन्सिल है, बटी कौन्सिल है, उसने बहादुरखान है, सरदार पटेल है, दूसरे अच्छे आदमी पड़े हैं, वे भी उनको समझ न सके कि ऐसा मत करो, तो बाहिर मटना होना। हम आपसमें दोस्ताना सीखें सब कर लें। क्यों न ऐसा कर सकें? हम हिन्दू-मुसलमान कलमक दोस्त वे तो क्या आज ऐसे दुश्मन बन गए कि

^१ भविष्यतः।

एक हज़ारेला भरोसा ही नहीं करोगे ? अगर आप नहीं विश्वसित करते तो भी भरोसा नहीं ही करनेवाले हैं तो पीछे दोनों ही सच्चा पड़ेगा। मॉरिशस^१ बनाती है दिवस पान की रसदारी, पुनिम^२ की भी भिन्न-भिन्न प्रकार के मांस का काम करना पड़ता है वह ऐसा न करें तो क्या करें। अगर यही करने हैं तो वे पानि-स्नानमें, एक ही बार में ही तो हम दोनों करने, तो भी ही स्नाना गया ? अगर हमको इन्साफ सेना है तो हम यह मन्त्र में कि यह मेरा और आपका काम नहीं है। वह हमारी हक़मती काम है। हक़मती नहीं है वह तो हमारी मदद के लिए पड़ी है। हमें समझा नहीं गया है। लेकिन हमने लिए संवार रहे, क्योंकि लड़ाई जब आती है तो हमें मोटिव देकर नहीं जाती है। किसीको हमने के लिए जाने करव बनाना नहीं है, लेकिन अगर कोई कबल बनाता है तो पीछे दोनों हक़मती सच्चापान ही जाता है। लड़ाई कोई आयुली भी नहीं है। मैं प्राणिक बनकर यह बताऊंगा। अगर दोनों के बीच समझौता नहीं हो सकता तो हमारे लिए हक़मती कोई बाधा नहीं। पीछे मिलने हिंदू हैं वे लड़ते-लड़ते बग़ार ही था, या नर-बाध तो मुझे इसमें कोई दुःख नहीं। लेकिन हमें इन्साफ़ पसंद आता है। मुझे कोई परवाह नहीं है कि सब-के-सब मुसलमान या हिंदू इन्साफ़ के पक्ष में नर-बाध है। पीछे जो भी करोड़ मुसलमान हैं अगर वह साबित होता है कि वे ही क्रिष्ण कॉन्सिस्टेंट हैं, वचन स्थापित है तो उन्हें ही बोलीपर जाना है, छापीपर जाना है, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। तो पीछे उनको जाना है वेने हिंदूको, सिखको जाना है। अगर वे पाकिस्तानमें रहकर पाकिस्तानमें नेमकाई करते हैं तो हम एक तरफ़ से बाध नहीं कर सकते। अगर हम यहाँ मिलने मुसलमान रहते हैं उनको वचन स्थापित बना देते हैं तो यहाँ पाकिस्तानमें भी हिंदू, सिख रहते हैं यहाँ उन सबको भी वचन स्थापित बनानेवाले हैं ? यह बनानेवाली बाध नहीं है। जो यहाँ रहते हैं अगर वे यहाँ नहीं रहना चाहते तो यहाँ छूटते या जाय। उनको काम देना, उनको धारणसे रखना हमारी बुनियाद सरकारका परम धर्म हो जाता है।

^१ मॉरिशस ।

लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि वे बड़ा नैठे रहे और छोटे जासूस बने, काम पाकिस्तानका नहीं, हमारा करे। यह बननेवाली बात नहीं है और इसमें मैं शरीक नहीं हो सकता। मेरे पास कोई जादूकी तकदी नहीं है, उसबार नहीं है। मेरे पास एक ही बात रखी है, ईश्वरका नाम सेना, ईश्वरका काम करना। उससे हमारे सब काम निबट जाते हैं। यह भाषण मेरे ही पाम बोडे है, यह भाषण के पास भी है, और जो छोटी मक्की खड़ी है उनके पास भी है। जो जादू है वह ईश्वरके पास पड़ा है। ईश्वरकी कृपा न हो तो मैं क्या करनेवाला हूँ ? लेकिन इतना समझ सकता हूँ मैं तो बहुत बर्षोंसे, ६० बर्ष हो गए, कम करनेवाला हूँ, उसबारसे नहीं, बल्कि सत्य और प्रार्थनाके सत्यसे। भाष भी वह सत्य हमारे पास है, लेकिन वह मेरी भफेलेकी शक्ति नहीं। अगर भाष सब मेरा साध न वे तो मैं बेकार हो जाता हूँ।

हमको जिन शक्तिये यह साक्षाती मिली है उसी शक्तिये हम उसे रखनेवाले हैं। इस शक्तिये हमने अनेकोंको हरा दिया। जन-गोबली नहीं हुएया। लेकिन जो कुछ हमारी शक्ति रखी वह निश्चय भी, उससे हमने उनको हरा दिया। हिंदू हो, सिख हो, पारसी हो, किन्दी ही अगर हिन्दुस्तानमें बसना चाहते हैं तो उनको हिन्दुस्तानके लिए तबना है और भरना है। सब हिन्दुस्तानी अपने वेगके लिए खड़े तो हमारे पास जकड़ हो या न हो, हमने कोई ताकत नहीं हरा सकती और न हटा ही सकती है। उन्होंने कहा है वे हिन्दुस्तानके बफादार रहेंगे हम उनका विश्वास करे और विश्वास करे। याद रखें कि 'सत्यमेव जयते' सत्यकी जय होती है। सत्य हमेशा जय पाता है। 'जानुतम्' अर्थात् झूठ कभी नहीं। यह महान् वाक्य है। इसमें हमारे वर्मका निचोड़ है। उसको भाष कठ कर से, धिसमें रख से। तो मैं कहूंगा और जोरोसे कहूंगा कि अगर सारी दुनिया हमारा सामना करे तो हम खड़े रहनेवाले हैं, हमको कोई नहीं मार सकता है। हिन्दू-वर्मका कोई नाम नहीं कर सकता। अगर उसका नाम हुआ तो हम ही करेंगे। इसी तरह इस्लामका हिन्दुस्तानमें नाम होता है तो पाकिस्तानमें जो मुसल-मान रहते हैं वे कर सकते हैं, हिंदू नहीं कर सकते हैं।

: १०० :

२० सितम्बर १९४७

माझो घोर व्हलो,

मेरा बात बीच कीन है वह मैं आपको बताऊँ ? वह मेरे लिए भी अच्छा है और आपके लिए भी अच्छा है। भाव मेरा बीच, मनसे, मुँहसे और कर्मसे राम है, ईश्वर है, खीम है। वह बीच कैसे बन सकता है ? एक भवन सुनाया।—'दीन दुखहरण नाम' दुखने— सब दुख भा जाते हैं, कारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक जितने दुख एक आधमीको मुँहसे पड़ते हैं। कारीरके जितने दुख हैं उनका हरण करनेवाला राम है, यह भवनने कहा है। सो मैंने समझ लिया कि सबसे बड़ा धक्का इसाब या उपचार है रामनाम। जो जोन मेरे पास भा जाते हैं उनके लिए मेरे पास तो हूनरी बनाई ही नहीं है। हा, रामनाम है। पीछे बोरी मिट्टी से जो, पानीका उपचार कर जो। मैं जानता हूँ कि जिसके हृदयमें रामनाम अक्षिप्त हो गया है उसको तो मिट्टी भी नहीं, बाहिए और पानीका उपचार की नहीं। बिना रहते हैं तो बिना रहने, नर बाधने तो बने नर बाध। जो बोरी-पर कोई छपाई नहीं कर सकता। अगर मुझको रामनाममें विश्वास है तो मुझकी जमीनपर कायन रहना चाहिए। उससे डरे तो मरे। राम तो सारमहार है। जो मनुष्य रामनामको अपने हृदयमें अक्षिप्त करता है उसको मरना ही ही कहा। वह करीर जगजगूर है। भाव है, कर्म नहीं, धनी है दुखरे जगमें नहीं। सो इसका मैं आश्चर्य कर ? नामका समय या जानेपर उसको बिना रहनेकी चेष्टा करना वह अर्थ है। उन मनुष्यका क्या होना जो करीरपर इतना आश्चर्य करता था ? नामक मुँह बड़े मुँह हो गए हैं। उनके पीछे जितने मुँह भाए उन्हींने जगजगूर्मिण लिले तो नहीं, लेकिन बाहिरसे उन्हींने मुँह नामक नाम दिया। वह हमारी हिंसात्मकता सम्मता है। मैं ऐसा जानता हूँ कि बहुतने दोनोंने ऐसा होता होना। कुछ भी हो, मैं तो महा हिंसात्मकता को सम्मता है उसकी ही बात कर सकता हूँ।

मीरासाई बड़ी भक्त थी। बहुत मन्त्रोंके अन्तमें मीराका नाम आता है। उसने अपना नाम नहीं दिया, लेकिन अपने भक्तोंमें मीराका शब्द लगानेसे मीराके भक्तोंको सतोष मिला। वह बड़ी सुबसूरत थी। कहते हैं कि अर्जुनदेव बहुत बड़े गुह हो गए हैं और कवि भी वे। वे लिखते हैं—“कोई बोले रामनाम, कोई खुदाई, कोई सेवे गोस-हमा कोई यत्नाह।” वह देखने जायक बात है, यह सुनकरने दिया है। भाव जो लिखते बारेमें कहा जाता है वह तो जानक पुत्की जो लिखा थी उसको बरानेकी बात है। ऐसी भीषोसे गुलब साहिबकी प्रसिद्धा वह नहीं सकती, लिख भी वह नहीं सकते। कुछ सिद्ध भावोंने ऐसे सारे भावने मुझे बात की। यह अर्जुनदेवने ऐसा नहीं कहा है कि रामने साव खीमका क्या लिखना था, कृष्णके साव करीमका क्या लिखना था? और उन्होंने पीछे मुझे और मनाया कि कोई जावे दीर्घ और कोई हज जाय, तो सब एक है। कोई पूजा करे कोई मिर नबाए, पूजा कोई मरिदोंमें करता है और कोई अपना करीर है वह ईश्वरके नामपर जुका होता है। पीछे कहते हैं कि कोई पढे वेद, कोई किताब। किताबके भावे कुरानखरीकते हैं। कोई नीला कपडा पहनता था कोई सफेद। मुसलमान नीला कपडा पहनता है और जो चाहा हिन्दू रहता है वह मफेद पहनता है। पीछे कोई कहे दुर्ग, कोई कहे हिन्दू। दुर्गके गाने मुसलमान हैं। प्रभु और साहब इनके बीचने नेद रहा, रहस्य रहा वह जान सेते हैं। अगर भक्त मिले तो हिन्दू मन्त्रोंसे, कीर्तनोंसे इमनी चीजें में सुना सकता हू कि आप हैरान हो जायने कि यह हिन्दू-धर्म है या सिक्ख-धर्म है। आप हम ऐसा क्यों कहते हैं कि वह मुसलमानोंको बहासे जाना ही है, मुसलमानोंको हिन्दुओंके साव बसानेकी जो बीजना रबी या रही है वह भूल है और कावेसकी यह भीषी भूल है। कावेस इसको करे या न करे, लेकिन यह मेरी बीजना है और भूल है तो वह मेरी भूल है। दूसरे पाते हैं, वे कहते हैं कि स महात्मा कहाका रहा? महात्मा होकर हिन्दू-धर्मका नाम करनेमें पडा है। लेकिन मैं तो कहता हू कि जो मेरी भूल बरसाते हैं वह भूल नहीं है। सही बात यह है कि भाव हम बीजाने बन गए हैं और

बीबावेपनमें जम्दी-सीबी बातें करते हैं। जब हमारा बीबाबापन निरुक्त था तब हम भी उही बातें ही कहते थे। इसलिए मैं कहता हूँ कि मेरी बात ग़लत नहीं हो सकती। जो लोग ऐसा मानते हैं, कि मैं ग़लत करता हूँ वे कुछ ग़लत करते हैं। अगर ५॥ करोड़ मुसलमानोंको यहाँसे निकाल दोने तो सारा जगत बूकेगा। तब क्या यह कहोने कि पाकिस्तान ब्या कर रहा है ? पाकिस्तान अपना धर्म नहीं पाकता, इसलिए मैं हिन्दुओंको सिखाता हूँ कि तुम भी धर्म छोड़ो ? यह तो मैंने सीखा नहीं। हम तो अगर यहाँ भी मुसलमान आई है इसकी प्या कर लेते हैं और कुछ साफ़ रहते हैं तो पाकिस्तानमें भी उसका घर होना। यह मेरा जमान है।

आज मैं सोचता हूँ और यह समझनेकी बात है कि एक किस्ती बहुत बड़े आप बागते हैं, राजकुमारी अमृतकीर, यह तो हेल्प मिनिस्टर है, जिसने लोग कैपले पडे हैं, हिन्दू-मुसलमान, सबके लिए यह कुछ करना चाहती हैं। अगर उसे किसीका सहारा न मिले तो यह क्या कर सकती है ? यह पक्षपात तो कर नहीं सकती। जो कुछ हो सकता है सबके लिए करती है। वह बोली किस्ती भी है, बोली मुसलमान भी है, बोली हिन्दू भी, इसलिए उसके सामने सब धर्म एक समान हैं। वह नहीं गई और उसके मान लड़किना भी गई, वे सब तो सेवाके लिए गई थी। सेवामें डर क्या ? लेकिन उन्होंने मुझको सुनाया कि यहाँ भी हिन्दू, सिख पडे हैं वे कहते हैं कि जबरबाद, तुम मुसलमानोंकी सेवा करनेके लिए जाती हो तो यहाँसे जानना होगा। जब मैंने यह सुना तो हँस दिया। यह कहनेकी बात थी, कुछ करना बोले ही बा। लेकिन आखिरमें तो जो बेचारे मुसलमान पडे हैं वा बोले किस्ती पडे हैं, वे कोई नारबाद करनेवाले बोले ही हैं। कहाने नारबाद करेने ? उनके पास हैं क्या ? उनकी तो आज दुर्दशा है। उन्हें उनकी ब्या देना बा ? इसलिए मैंने सोचा कि आपनी यह ग़लत विमने हव मानवान बनें और ऐसी बातें न करें।

आखिरमें जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि मैंने खडाईकी

^१ स्वास्थमनिषी ।

बात की थी तो समझ-बूझकर की थी। लेकिन हमारे प्रबन्धकारजीस है उनका काम है बातको बढ़ाना। उन्होंने हेब माइन^१ की कि गांधी तो सबाई करना चाहते हैं। कमकसेसे तार घासा है कि गांधी भी सबाईकी बात कहते हैं। क्या सबाई होगी? मैंने जो बात कही वह तो यह है कि मेरे मनमें स्वप्नमें भी, स्वाप्नमें भी सबाईकी बात हो नहीं सकती। क्या आखिर मैं एक ऐन मौकेपर अपना बर्न छोड़ दूंगा? मेरा बर्न तो अहिंसा है। मैंने तो कभी सबाई नहीं की और न किसीको सजना चाहिए। जो काम हमें करना है वह सबकर हम कैसे कर सकते हैं? मैंने तो बताया है कि अगर पाकिस्तान गुनाह करता है और हिन्दुस्तान भी गुनाह करता है, क्योंकि दोनों हकूमतें सलग हो गईं, आचार्य हो गईं, तो एक हकूमत दूसरी हकूमतसे इन्साफ करवाना चाहे तो कैसे करवा सकती है? हा, मिल-जुमकर काम करें तो वह दूसरी बात है। अगर मिल-जुमकर नहीं कर सकते हैं तो पच रजें। वह भी नहीं करते तो हम साधार बन जायेंगे। यह कहना कि आप मेहरबानी करके आपसमें मिलकर कोई फैसला करें, अगर वह नहीं कर सकते तो पच रजें और अगर वह भी नहीं करते हैं तो हम साधार बन जायेंगे और सबाई होगी, क्या सबाईकी हिमायत करना है? मुझे तो हिन्दुस्तानको यही कहना है, और पाकिस्तानको भी यही कहना है कि आपसमें मिल-जुमकर फैसला करें वा पच रजें। लेकिन पाकिस्तानवाले कहें कि नहीं, 'हम तो सबकर जेंगे हिन्दुस्तान' तो मैंने कम सुनाया कि अगर ऐसा गुमान रखे तो यहा हिन्दुस्तानकी हकूमत सजेगी नहीं तो क्या करेगी? अगर हकूमतका चार्ज मेरे पास रहे तो मेरे पास तो कोई मिमिटरी नहीं है, न कोई पुलिस है, मेरा तो खैया दूसरा है। अगर उसमें तो मैं अकेला हू, मेरा साथ कौन देगा? जो हकूमत आपकी है, जो सत्तनत आपकी है वह सब ऐन मौका आपका तो जो कुछ कर सकती है सो करेगी। मैं तो एक ही बात कहता रहूंगा। अगर अहिंसाको अगर लोग नहीं समझते हैं तो मैं किसीको सुनाऊं ?

^१ सुर्भी।

: १०१ :

२८ मिनम्बर १९४७

बाक्यो और कहूँ

समान कोई ऐसा आदमी है जिसे कुरानकी खाम कामों परनेपर खतरा हो? (ननाने हो आदमियोंने विरोधने अपने हाथ उठाए। याकीजीने कहा—) मैं आपने विरोधकी कहर कहा। हाँ कि मैं बलता हूँ कि प्रार्थना न करनेने बाकीने सोचोकी बड़ी मिसाल होती। यहिमाने अपना विश्वास रखनेने कारण इसके बिना हमरा कुछ न कर नहीं सकता, फिर भी वह जो बिना नहीं रह सकता कि आपने अपना विरोध करनेबाबे हमने जो बहुतसकी उम्माओंग प्रभाव नहीं करना चाहिए। आपका वह बलता हर तरफ़ें समुचित है। मैं आपने जो बल कहा। उसने आपने वह मजबूत होना चाहिए कि जिनकी बलानेमें आकर आपने जो रीत-रफावाही दिखाई है, वह उन बिडबिडेपर और गुप्तेकी मिसाली है जो आज नारेदेमने दिखाई देती है, और जिसने नि० विन्स्टन चर्चिलने हिंदुस्तानने बारेमें बहुत बड़ी बातें कहावाई हैं। आज मुझको बलबारीमें उम्माओंग तासो मेरा हुआ नि० चर्चिलने आपका जो सार कहा है, उसे मैं हिंदुस्तानीमें आपकी समझता हूँ। यह सार इस तरह है:

“आज राजनीति आपने एक नएपर्वने नि० चर्चिलने कहा—‘हिंदुस्तानने जो नएकर बुरेकी कम रही है, उससे मुझे कोई समझ नहीं होता।

‘उन्होंने कहा—‘अभी तो इन बेरफ़ीनरी हवाओं कीर जने-कर बुलौली भूतभाव ही है। वह राजनीति बुरेकी ने जालिया कर रही है, वे बुलौली एक-दूसरीपर ने जालिया टा रही हैं, जिनमें ऊँची-ऊँची सन्धिया और सन्धियाने बल देलेकी जालिया है और जो बिडबिडे आज कीर बिडबिडे पाविगनेउम्मे रवाचार और रीत-रफावाचार आपनेमें पीटिगने आप-आप पूरी पाविगे रही हैं। मुझे डर है कि मुनिबाना जो हिन्दा पिछने ६० या ७० बरसों तकने जालिया पावि रहा है-उसकी आवाजी अपिजनेमें अब कहा बहुत जालिया बनेगाली है। और,

भावार्थीके बटावके साथ ही उस विद्याय वेद्यमें सम्मत्ताका भी पतन होगा, यह एशियाकी सबसे बड़ी निराशापूर्ण और दुःखमयी बात होगी।”

घाय सब जानते हैं कि मि० बर्चिल खुद एक बड़े भावमी हैं। वे इंग्लैंडके ऊने फूलमें पैदा हुए हैं। मार्सबरो-परिवार इंग्लैंडके इति-हासमें मशहूर है। दूसरे विश्व-युद्धके शुरू होनेपर जब ग्रेट ब्रिटेन खतरेमें था, तब मि० बर्चिलने उसकी सन्तुष्टकी भावबोध समझी थी। वेचक, उन्होंने उस समयके ब्रिटिश साम्राज्यको खतरेसे बचा लिया। यह बलीक गलत होगी कि अमेरिका या दूसरे मित्र-राष्ट्रोंकी मददके बिना ग्रेट ब्रिटेन जबाई नहीं जीत सकता था। मि० बर्चिलकी सेवा सियासी बुद्धिके सिवा मित्र-राष्ट्रोंको एक साथ कौन मिला सकता था ? मि० बर्चिलने जिस महान् राष्ट्रकी जबाईके किलोमें इतनी ज्ञानसे गुमा-इस्वी की, उसने उनकी सेवाधोकी कदर की। लेकिन जबाई जीत लेनेके बाद उस राष्ट्रने ब्रिटिश हीरोको, जिन्होंने जबाईने जन-जनका भारी मुकदमा उठाया था, नया जीवन देनेके लिए बर्चिल-सरकारकी कमर मजदूर-सरकारकी तरफसे देनेमें कोई हिपकिनाहट नहीं दिखाई। अमेरिकी समर्थको पहचानकर अपनी इच्छासे साम्राज्यको तोड़ देने और उसकी जगह बाहरसे न दिखाई देनेवाला दिल्का ज्वाला मजदूर साम्राज्य कायम करनेका फैसला कर लिया। हिन्दुस्तान जो हिस्सेमें बँट गया है, फिर भी दोनों हिस्सोंने अपनी गरजीसे ब्रिटिश कामनवेल्थके मेंबर बननेका ऐलान किया है। हिन्दुस्तानको आबाव करनेका गौरव-जय कदम पूरे ब्रिटिश राष्ट्रकी जारी पार्टियोंने उठाया था। इस कामके करनेमें मि० बर्चिल और उनकी पार्टीके लोग शरीक थे। बर्चिल अमेरिकीद्वारा उठाए गए इस कदमको सही समझ करेगा या नहीं, यह भय वात है। और इसका मेरी इस बातसे कोई सम्बन्ध नहीं है कि मुक्ति मि० बर्चिल सत्ताके जेरबन्धके काममें शरीक रहें हैं, इसलिए उन्हें उम्मीद की जाती है कि वे ऐसी कोई बात नहीं कहें या करें, जिससे इस कामकी कीमत कम हो। यकीनन आधु-

लिए काफ़ी होगा कि मि० बचिसको इस विषयपर ज्यादा सावधानीसे बोलनेकी जरूरत क्यों थी। परिस्थितिकी कुछ जांच करनेके पहले ही उन्होंने अपने साधियोंके कामकी निंदा की है।

आप लोगोमेंसे बहुतसोने मि० बचिसको ऐसा कहनेका मौका दिया है। अभी भी आपके लिए अपने तरीकोको सुधारने और मि० बचिसकी विधिव्यवधानीको भूठ साबित करनेके लिए काफी कम है। मैं जानता हूँ कि मेरी बात ध्यान कोई नहीं सुनता। अगर ऐसा नहीं होता और जोय उसी तरह मेरी बातोंको मानते होते, जिस तरह धाबावीकी कर्वाँ बंद होनेसे पहले मानते थे, तो मैं जानता हूँ कि जिस अगलीपनका मि० बचिसने बड़ा रस लेते हुए बड़ा-बड़ाकर क्या किया है, वह कभी नहीं हो पाता और आप लोग अपनी मांसी और बुरी बरेलू मुश्किलोंकी सुनझनेके ठीक रास्तेपर होते।

१ १०२ १

मीलवार, २६ सितम्बर १९४०

(लिखित संवेन)

सुनता हूँ कि मेरे जापानमें पाकिस्तान और तुनियनमें लवाईकी शक्यताके विषये पश्चिममें खोर-सा हो गया है। मैं नहीं जानता कि अखबारवालोंने बाहर क्या रिपोर्टें भेजी हैं। किसी क्याणका सार बनानेमें माली बल जानेका खतरा रहता है। १८१६ में दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें मैंने हिंदुस्तानमें कुछ लिखा था। उसका छोटा-सा सार दक्षिण अफ्रीकाके अखबारोंमें छपा। वहींसे मेरी तो जान ही जानेवाली थी। सार इतना बल्ल था कि मुझे मार-पीट करनेके बाद २४ घंटोंके अंदर वहाँके गोरीका गुस्सा फलवासापने बल्ल गया। उन्हें अफसोस हुआ कि एक बेगुनाह आबसीपर उन्होंने बिना कारण जुल्म किया। यह कहानी याद करनेका मेरा मतलब इतना ही है कि किसीपर जो उसने नहीं कहा था नहीं किया, उसकी जिम्मेदारी न आती जाय।

मे बुझतासे कहना चाहता हू कि मेरे किसी अपराधमेंसे वह भ्रम नहीं निकाला जा सकता कि मैंने सवाईकी उच्छेदन किया है वा सवाईकी हिमायत की है। क्या सवाईका नाम लेना ही बुराहू है? गुजरातमें एक बहम है कि अगर किसी घरमें सापका नाम लिया जाय तो भाटे किसी बच्चेके मुहमें ही यह क्यो न निकला हो, साप निकलकर रहता है। मैं उन्मीद रखता हू कि हिन्दुस्तानके ग्राम लोगोंमें सवाईके बारेमें ऐसा कोई बहम नहीं है।

मेरा यह दावा है कि सापकी परिस्थितिपर अच्छी तरह गौर करके और साफ-साफ कहकर कि किन हालातमें सवाई हो सकती है, मैंने लोगों हिस्सेकी सेवा की है। मेरे कहनेका हेतु सवाई कराना नहीं था, बल्कि यह सवाईकी रोकना था—मैंने यह बतानेकी कोशिश की है कि अगर लोगोंले पापसपनमें बूट-मार, ग्राम जलाना, कत्ल करना वगैरह बंद न किया तो उसका परिणाम सवाई होगा। एकमेंसे एक निकलनेवाली बीबीकी तरह भ्रम खींचनेमें क्या बुराई है?

हिन्दुस्तान जानता है और दुनियाको भी जानना चाहिए कि मैं अपनी पूरी साफ़सते यह कोशिश कर रहा हू कि सवाई सवाई करना न चाहे। अगर यह न करे तो उसका परिणाम सवाई ही हो सकता है। जब एक ऐसा इन्सान जो अहिंसाकी जिसकीका कानून जानता है, सवाईका भिक करता है तो उसका हेतु सवाईकी रोकना ही हो सकता है। मेरी उन्मीद है कि मेरे इन बुनियादी विचारोंमें मेरी मृत्यु तक फर्क नहीं आने-वाला है।

: १०३ :

३० सितम्बर १९४७

भाऊजी और बहनो,

मेरा ऐसा ग़मान है कि हम सोईवान बन गए हैं। आज हिंदू और मुसलमान दोनों ईमान बन गए हैं। कौन किसको कहे कि किसने कम दिया और किसने ज्यादा दिया। जिसने कम माग और जिसने ज्यादा

माया। उसने हम नहीं था सकते। हकूमतको वहाँसे उखाड़ियेको बुझानेकी चेष्टा करनी चाहिए, और वह ऐसा दूसरी हकूमतसे निक-
करही कर सकती है। वे सब पेचीदमिया पड़ी हैं। पेचीदमिया तो है,
लेकिन हकूमत बनी है तो वह पेचीदमिया रफा करनेके लिए है। हकूमत-
के जो अपने मातहत^१ रहते हैं उसे उनकी हिरासत करनेका बर्न
पासन करता है और नहीं तो हकूमत छोड़ देना है। इसमें मुझे
तनिक भी संदेह नहीं है। हमारी हकूमत बाब तो ऐसी ही है कि
जिसको हम बना सकते हैं और उसको मिटा सकते हैं। इसका नाम
डेमोक्रेसी^२ है। लोगोंको सब ऐसा होना चाहिए कि जो कामसे रहते
हैं, जो समयसे रहते हैं, नियमन क्या चीज है उसे जानते हैं, पासन
करते हैं। ऐसा न करे तो पीछे वे निकम्मे बन जाते हैं। हमको अगर
अपने बर्नपर कायम रहना है तो वह सीख लेना चाहिए। हमारे
बच्चोंको सबसे समझ पा जाती है सबसे उनको यह समझाना है।
बाप उनको ऐसी सलीम हैं कि बर्न पुम्हारे दिममें है, उसकी
रक्षा में नहीं कर सकता हूँ। मैं तो पिता हूँ, लेकिन पिताको अपने
बच्चोंको, अपनी सबकियोंको सिखाना है। मैंने तो सिखाया है कि
अपने बर्नकी रक्षा सब करो। मेरा बच्चा एक जगूबी^३ अफीकामे पड़ा
है। एक कहीं खराब पीठा है। कहा पड़ा है, मुझको पता भी नहीं है।
एक बेचारा मुसीबतसे अपनी रोटी कमा लेता है। वह नागपुरमें पड़ा
है। एक बच्चा पड़ा पड़ा है। वह मुसीबतसे कमाता है ऐसा तो
नहीं। तो क्या उन सबके बर्नका स्वाध में कक ? मैं तो करता नहीं
हूँ। और क्यों कक ? वे बड़े हो गए हैं। अगर छोटे हो तो उनके बर्नकी
रक्षा मैं कर सकता हूँ। वह भी कैसे ? बच्चोंको सिखा दिया कि
अगर सबभूष सेरा हिंज बर्न है तो पुम्हारे उसके लिए मरनेकी ताकत होनी
चाहिए, मारकर दूँ नहीं बच सकता। जानो कि बच्चा है उसके
पास एक माँ है, दूसरेके पास रिवास्वर पड़ी है तो रिवास्वर-
बाबा बाठीबासेको मार डालेगा। ऐसे, बर्नकी रक्षा नहीं हो सकती।

^१ नीचे; ^२ जनतज, ^३ दक्षिण।

क्यों नहीं हो सकती? बाड़ीवाला सबका बाप गया। उसका रिश्ते-
दार था। रिवाज-रवाजा सबका एक है। एकसे दो नहीं बन
सकता है। वह एक रिवाज-रवाजा है। या एक स्तेन-
पन खाता है तो सामनेके भी १० स्तेनपन खावे। उनको कहें,
बोन हस्तानने खाता है या नहीं, या भिस्ती करता है या नहीं, नहीं
तो बेच हूँ १० पावनी हैं, तेरे हाथों जितने हथियार पड़े हैं वे सब
बरबाद हो जायेंगे। बोस, बस्ती कर, नहीं तो हूँ तुझे धूँट कर
दे। तो वह डरके मारे कहें कि आप मुझे सबसूर करो, अगर
मेरा बर्न तो ऐसा है कि वह अपनी बेहने मुझे प्यारा है। बर्नका पालन
करना उसके माने है कि हूँ डरके बर्न। ब्रह्माके नाम नहीं हूँ।
वह तो रामका नाम लेता था। पिताने कहा, तू रामका नाम लेता है,
कोस दे इसे। तो वह कहता है कि मैं ब्रह्म नाम नहीं लेता। इसपर
एक नज्म है, लिखा गुरु है। ब्रह्माके पाटीपर लिखा है रामान
भीर गुरु लिखा है हूँ। तो कहता है कि मेरी पाटीपर रामका
ही नाम लिखा था करता है, ब्रह्म नाम मेरे पास नहीं है। वह
बड़ा सीका बचन है। ब्रह्मा कहता है कि रामानके बिना उसकी कलम
कुछ लिख ही नहीं सकती। कहा तो वह खाता है कि वह १९
वर्षका बड़का था। १२ वर्षके बड़केने अपने बापका सामना करके
अपने बर्नकी रखा की। कैसे बर्नकी रखा की उसको छोड़ता हूँ। उसे
सब दिख जायते हैं। लेकिन बात यह है कि ब्रह्मा अपने बर्नकी रखा
अपने आप कर सका। ऐसे हजारों दुष्टाव हर नज्ममें पड़े हैं।
तो हमारे बड़के-बड़किया हैं, कोई बड़कीको ऐसा मानकर बैठे कि वह
हमेशाने दिए भवता है तो मैं कहता हूँ कि जयन्त कोई भवता
ही नहीं, सब सबका है। जिसके बिलमें अपने बर्नकी पोट पसी
हैं वे सब सबक हैं, वे दुर्लभ नहीं हैं। इसलिए मैं कहूँ कि हूँ पहली
छापीय अपने बड़के-बड़कियोंको यह है कि वे सबक नहीं हैं। नज्मेका
बर्न नज्मेके पास है। हमारे माई सब माते हैं मैं उनको कहता हूँ कि
हमेशा बिलना कर सकती है करे, लेकिन अगर आप ऐसा मानते
होगे कि हमेशा कुछ न करे तो सब-के-सब हस्तानमें भले जायेंगे, तो

यह शराब बात है। हिन्दुस्तानमें धाव करोड़ो मुसलमान हैं, यह बहुत सोचनेकी चीज है, वे है कौन? वे कोई शरबिस्तानसे नहीं आए। शरबिस्तानसे वो आए वे करोड़ोकी ताबाबसे नहीं वे। करोड़ोकी ताबाबसे वो मुसलमान बने वे सब-से-सब हिन्दू वे। या कहो कि वे बुद्धिस्ट^१ वे। तो बुद्धिस्ट और हिन्दूमें फर्क क्या पता है? मेरे पास तो कोई फर्क है नहीं। अफगानिस्तानमें कौन वे, उसका तो सबको पुरा पता होना चाहिए या नहीं? बाबगाह खानने मुझसे कहा कि हम तो पहले बीड़ थे, पीछे इस्लाममें आए। इसलिए वो हमारी पुरानी सम्मता भी उसे हम भूल बोधे ही गए हैं। उसे भूल कैसे सकते हैं? उन्होंने बताया कि हमारे वो बेटास पडे हैं उनके नाम भी पहले सत्सङ्गमें थे। अब हमने उनका नाम बदल दिया है। यह सब किया, सिबास बदला, सब कुछ बदला, लेकिन वो बीज हममें पड़ी वो उसको हम नहीं बदल सकते हैं। उसे कैसे भूल सकते हैं? और पीछे महा मद्रासमें, बंगालमें क्या, सब जगह, निबर जायो बहा, सब-से-सब आपकी हिन्दू पडे थे। आप पूछो, वैसा कि मैं आपने दिलको पूछा हूँ, वे खुद इस्लाममें आए। क्यों आए? वे इस्लाममें आए उसके लिए गुलामार नै। प्रार्थनित्त आपकी करना है, मुझको करना है। हा, अगर उन्होंने अच्छा काम किया और हिन्दू-धर्मसे जी बुरान्त धर्म से लिया तो पीछे हम जी उसके साथ बनें और सबकसमापडे, इस्लामकानामसे और इस्लामका अवधोप करें। लेकिन ऐसा हमारा तो नहीं। तो धाव हम किससे आरपीड करने? किसको बहासे निकाल देंगे? वे हमारे ही लोग हैं। हमारे ही बाधा परमाबाके जपस, पार पीडी कहो, पाव पीडी कहो, छ पीडी पहले कहो, लेकिन वे हमारे लोग थे। वे सब हिन्दू थे और मुसलमान बने। मैंने हिन्दू-धर्मियोंको सारे हिन्दुस्तानमें घूमकर बताया है कि याद रखो आप लोगोंमें बड़ी दुष्टता है, आपने अस्वस्थताको धर्मका हिस्सा मान लिया है, उसका गतीबा क्या हुआ? एक हिस्सा हमारा पंचम धर्म बन गया। धर्म पार, हमने पाव बनाए और वह पावबा अति भूख कहा

^१ बीड़ ।

जाता है। वे हमसे बाहर रहे। उसका खाना भी भक्षण। हमारे बीचमें नहीं रह सकते उन्हें तो हमारा मुक्तान खाना चाहिए। उसनेने पीछे वे मुक्तमान बने। तो सब ऐसे नहीं थे। पीछे तो काफ़ी ब्राह्मण भी मुक्तमान बने। काफ़ी साधारण भी बने और वैश्य भी बने। लेकिन वे बोझी-बोझी साधारण ही बने। भाव करोड़ोंकी साधारण जो मुक्तमान बन गए हैं, उसका हिमाय तो यह है जो मैंने बताया। वे अत्युत्साहानेसे मुक्तमान बने। भाव हम किसना सुफ़ान हिन्दुस्तानमें करते हैं और कहते हैं कि मुक्तमानोंकी यहासे आर-पीटकर, छिनी-न-भिनी तरफ़से उनको रज पड़वाकर हटा दें। कहा हटाए, फिर बग़इसे हटाए इसका कोई जबाबदार नहीं करता। हमको सोचना चाहिए जब हमपर कोई हमला करता है और कहता है कि तू हस्तानमें था, पीछे हमारा खाना हो जाता है। मैं जानता हू कि हस्तानमें जबसेस्ती मुक्तमान बनाना कभी नहीं सिखाया। मैं तो मुक्तमानोंकि साथ बैठेबासा हू। मेरे जो दोस्त हैं वे कहते हैं कि हस्तान कभी नहीं भिखाराता है कि किसीपर धूम करने उसको हस्तानमें खाना। वह अपने-आप भागा चाहते हैं तो भाए। उसके पास हस्तानकी बुनिया रसखी। लेकिन यह नहीं कि फुनवाकर, बोझा बेकर, पैसा बेकर वा जाससे हस्तानमें खाना। लेकिन हमारे जो मुक्तमान पड़े हैं वे हमारे सगे भाई हैं। इसलिए मैं कहूँ कि हम सोच-विचारकर काम करें। हम सोचें, वे सोच क्यों हस्तानमें गए? पैसेके लिए। भरे, पैसा कमाना है, कुछ भी करता है, बाधो, कही भी बुनियामें, लेकिन अपने बर्नको साथ लेकर जाओ। अगर वह जोड़ देते हैं तो आपने सब कुछ जोड़ दिया। मैं तो आपसे एक ही बात कहना चाहता हू, हम किसी मुक्तमानको मारनेकी चेष्टा न करें। मुक्तमान मारें तो मारें। मारें तो यह बुरा है, उसको हम बुरा मानेंगे लेकिन अगर यह बुरा है तो हम उसके बुरेका बुरा बुराईसे कैसे दें। बुराईका बुराया जसाईसे वे सकते हैं। वह सराब पीता है तो हम सराब पीते? रबीबाबी करता है तो रबीबाबी करें? वह बुवा खेतता है तो हम बुवा खेतें? एक भावनी लक्ष्यार बसाता है तो

हम भी तबबार बसाए, और बन्धोंको मार जाता है तो हम भी बन्धोंको मार डालें ? वह अगर मरफियोंको से जाता है तो हम उसकी मरफियोंको से बाम ? तो उसमें और हममें फर्क क्या हुआ ? मैं तो कोई फर्क नहीं पाता हूँ। मैं तो कहता हूँ, "ये मुसलमान, हिंदू और सिख, कुछ समझो तो सही, मजहब क्या सिखाता है ?" इकबालने कहा— "मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर करना।" इकबालने ऐसा कहा उस वक्त वह बदनमें रखता था। वह बड़ा कवि था। उस वक्त वह एडमंड टेम्पल कान्फ्रेंसमें आया हुआ था। वहाँ उसके लिए सबने एक खाना किया तो मुझको भी बुलाया गया। मैं गया गया। उसने कहा कि मैं तो ब्राह्मण हूँ। क्यों ब्राह्मण हूँ ? क्योंकि मेरे बापबाबे ब्राह्मण थे। कहाँ ? काश्मीरके। मैं तो काश्मीरका हूँ। ब्राह्मण हूँ और अब मैं इस्लाममें आबो हूँ। यही नहीं बहुत पीछे हम इस्लाममें आए। तो भी हममें ब्राह्मण बन पडा है, और इस्लामका तमहुन^१ हमारेमें पडा है। तो इकबालने कहा "मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर करना।" पीछे उसने दूसरा-तीसरा भी लिखा है। वह दूसरी बात है। इकबाल तो बने गए, लेकिन हम इतना तो सीख लें कि इसको हमारा बर्न नहीं सिखाता है कि हम किसीसे बैर करें। इसलिए मैं कहूंगा कि हम इस्लाम बनें। इस्लाम बनें तो हम हिन्दुस्तानको ऊबा से बाते हैं। आब तो हम हिन्दुस्तानको गिरा रहे हैं। इसवर करे कि हम हिन्दुस्तानको कभी गिराए नहीं।

७

: १०४ :

१ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनों,

एक बहनने मुझको कब बात लिखा है, उसने वह लिखती है

^१ सलूति ।

कि मैं कुछ सेवा करना चाहती हूँ और मेरे परिवार भी कुछ सेवा करना चाहते हैं। लेकिन हमको कोई बताता नहीं कि क्या करें। यह प्रश्न बहुत सीम करत है, लेकिन मैंने ऐसे प्रश्नोंका एक ही जवाब दिया है कि हकूमतका क्षेत्र, सरकारका क्षेत्र, वह तो छोटा रहता है लेकिन सेवाका क्षेत्र बहुत बड़ा रहता है। इसने दुःखी और पीड़ित मूखे और गरीबों, सदा-बीबा सेवाका क्षेत्र पड़ा है। इसमें किसीको पूछने-की गुणाद्वय ही नहीं रहती है। जो सेवा करना चाहता है वह करे। लेकिन हम ऐसे पगु बन गए हैं कि हमको किसीको पूछना पड़ता है। तो मैं बता दूँ क्या करें? यादिरमें बेहूनी स्वच्छताके लिए किसी नगरकर है? उसमें इसने कंप पड़े हैं और उनमें किसी स्वच्छता है, वह मैं जानता हूँ। जोय वहा बीमार हो जाते हैं वहा बिलने धिपिर पड़े हैं उनमें इसनी नकनी मरी रहती है कि उसका क्या करना बनी मूसीबतका काम है। वहा बून-बराबा ही गया है, वहा भी बस ऐसा ही पड़ा है। किसीकी म्युनिसिपैलिटी कमी भी सफाईके लिए नगरकर नहीं रही। बेहूनी नहरकी म्युनिसिपैलिटीने नहरको साफ-मुपरा कमी रखा हो और मुनियानेंसे जोय साकर बेहूनी देखें और कहें कि अगर कोई स्वच्छ नहर देखना चाहें तो बेहूनी देखें, ऐसी तो बात नहीं है। सफाई हो तो सोपोके मकान साफ हो, सोपोके पाखाने साफ हो, सोपोके मैलनेका, सोनेका स्थान साफ हो। ऐसे ही सोपोके दिस भी साफ हो। तो अगर दूसरा काम न मिल सके तो मैं कहूँ कि इतना काम तो है ही। वह हो सकता है कि वह कैपोने न जा सके तो और भी जगहें हैं। कड़ी भी हम पूरी सफाई रखें तो उनका अगर भारे दिल्लीके नहरपर पड़ता है। ऐसा मानकर हर एक घादनी अपने मकानको, और अपने दिसको, आत्माको साफ ही रखें। उनका नतीजा मुझे बतानेकी जरूरत नहीं। मैं तो उन बहानों कहता हूँ कि अगर वह नमसुन सेवा करना चाहती है, सेवा-भावने—नामके लिए नहीं, तो सेवा करनेके लिए आपके लिए बहुत बड़ा क्षेत्र दिल्लीमें पड़ा है। उनको मुझे कुछ भी बतानेकी आवश्यकता नहीं और अगर वह कर सकें, दिल्लीवासीको लिए दिस माफ हो जाय, वहा बिलने आभित

सोम आते हैं वह भी साफ हो सकें तो वह तो एक बहुत बुरा काम होगा और वे आदर्श स्ति बन जायेंगे। दूसरे उनकी नकल करेंगे।

अभी मेरे पास दो सार आए हैं। एक निश्चय है कि हमको तो ऐसा समझना था कि हिन्दुस्तानके लोग बहुत भ्रष्ट हैं और वहाँ हिन्दू-मुसलमान सब मिले-जुले ही रहते हैं। यह सार मुसलमान भाईका है। अब हिन्दुस्तानमें क्या हो गया है कि हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरेके साथ बैठ नी नहीं बैठते। एक-दूसरेके साथ मजबूत हैं, एक-दूसरेको काटते हैं और अपनी पसु-से बल गए हैं। दिल्लीको ले। दिल्लीके हिन्दू, सिख, मुसलमानोंको अपनाया चाहते हैं, और उनको भाई बनाकर रखना चाहते हैं, मन्ते कि वे अपनी बफ्तवारी भूमिगतके प्रति अपने मिलसे बाहिर कर दें। जो भूमिगतमें रहना चाहते हैं, मैं हूँ या आप है या कोई भी, ऐसा तो सबको करना ही चाहिए। यह मुसलमानोंके लिए बाध नहीं है, सबके लिए है और बरपी है। फिर मुसलमानोंके पास कान्ति हथियार पड़े हैं, बहुतसे मिल गए हैं, लेकिन सब नहीं आए। पुलिसके बरिप सहलीकात बल रही है, लेकिन पुलिसके बरिपसे सब तो आ नहीं सकते हैं। तो वे अगर साफ-सिख हैं और हिन्दुस्तानके साथ बचना नहीं चाहते तो वे हिन्दुस्तानके बफ्तवार बने। कोई मुसलमान-साफ हो और हिन्दुस्तानपर हमला करे तो उससे भी बचना चाहिए। वह ठीक है कि अगर उन्हें हिन्दुस्तानके साथ बचना नहीं है, तो उन्हें हथियारोंकी क्या बकरत है? हमारे वहाँ फिल्टी बहुत बोले हैं, लेकिन अगर किसी फिल्टी-मुक्तके साथ, बर्नके साथ भलाई कि नई तो उन्हें उसके साथ हमारी ओरसे बचना होगा और भूमिगतका बफ्तवार रहना होगा। यह तो ठीक है कि अगर मुसलमान बफ्तवार है, उनकी हिन्दुस्तानसे बचना नहीं है तो फिर हथियारोंकी बकरत क्या है? उनको हथियार अपने-आप में देना चाहिए। यह तो सब ठीक है लेकिन सिख तरह यह बात नहीं गई उसमें बहर गया था। प्राय तो शाम ५० हजार या इससे ज्यादा मुसलमान कैमोंमें पड़े हैं, उनको दिल्लीमेंसे हमने निकाल दिया है। मुक्तों बल कर दिया है। कैंसा ही बहादुर भावनी हो, लेकिन नीत तो कोई पसब नहीं करता। कोई

मित्राल करना चाहता है, कोई और कुछ करना चाहता है वह नोपते हैं, बसो, बिना सो रखें, वहाने नाग-नामकर कहा जाए ? तो उन्होंने पनाह ले ली है पुराने किल्ले में, और हुनायूकी बचके मजदीक जो बचीबा है उनमें। उनपर पानी धारा है, सब कुछ होता है। पूरी डाक्टरों मरव नहीं मिल सकती है। यह डाक्टर नैवर मुन्को बहाली हासल मुनासी हैं। बार बड़े रोम उनको बेटी हैं। बहा काफ़ी गर्नवती पकी हैं। उनके बच्चे पैदा कराने हैं। उसके लिए बच्चे चाहिए, कुछ दवा भी चाहिए, सब कुछ चाहिए। यह सब बाहिल्ले-बाहिल्ले होता है। वे ऐसी हासलमें पड़े हैं तो क्यों पड़े हैं ? हिंदू कहते हैं कि हमने उन्हें निकास दिया है उसमें हमने कोई मुनाह नहीं किया। बोप कहते हैं कि उन्हें हम बापिन् नी ला सकते हैं जब, जब वे बेमने लिए बप-धार हो जाय। मैं कहता हू कि उनको लनी बापिन् लाया जा सकता है जब उनके लिए बिल साफ हो जाय। मान लो, वे बफ़ावार भी नहीं रहे मान लो कि वे असला^१ भी नहीं बेने, क्या इसीलिए हम मुसल-मानोंको मारें-काटें ? बार करोड या साठे बार करोड मुसलमान पड़े हैं, अगर उसमें एक करोड या एक लाख भी कहे, वह अपने बरोने कुपा-कर भन्व रखने हैं तो आपकी मिस्टरि है, पुसिस है, यह सब उनको बरसे बाहर आ नहीं सकती ? आप पुसिस धरेंबोके बनानेकी नहीं है। अगर हम मुसलमानोंको मारें, उनके बच्चोंको काटें, बहनोंकी काटें, तो उसका मरीवा क्या होगा, यह आप बेब नें। मैंने कहा है कि हम गिर गए हैं। जब १५ अगस्तको आजादीका बिल बनाया गया, हम आजाद बन गए, सब दो-बार बिलके लिए तो सब मारि-मार्ई होकर रहे, तो उन बिल कोई अम्नोंके लिए कुछ नहीं कहा था। उन बिल बफ़ावारीकी भी बात नहीं थी। सब बिलकुल ठीक था। आज सब भूल गए हैं कि वे नाई हैं। वे हमें, आपको मारने हैं, उनमें मुहम्मद^२ तो मुस्लिम भी नहीं। बिलने मुस्लाजरा था। लेकिन आजादीका एन नेब था बहा और बटीबर हम भूल गए कि वे कनी मुस्लम

^१ नडाकि इबिगार ।

ने। वह नबारा मैंने कमकत्तेमें देखा। सारे हिंदुस्तानभरमें ऐसा हो गया। लेकिन बाबने वह गुस्सा निकल आया और उन्होंने कहा कि अब तो हिंदुओं, सिखोंको काटना चाहिए। काटो, मिकल दो। तो अब हम क्या करें। हम और घाय मुसलमानोंके साथ घात करें? हम करेंगी तो वह काम हमारा नहीं है। लेकिन हमारे नामसे हमारे लिए, वो हमारे गुमाहरे^१ हकूमत बना रहे हैं उनको करना है। वे नहीं कर्यें तो ऐसा नहीं है। आप देख नें, वे कोशिश कर रहे हैं और मोठे-बहुत प्रसवा से भी मिले हैं। ऊंचे पट्टाकर हम एकदम नीचे गिर गए और रोम-मरोम गिर्यो जा रहे हैं। मैंने कहा है कि दोनों कर्यें नवे कायम रखो लेकिन इसको साथ एक और घात भी लगा दो तो पीछे आप धारामसे काट कर सकते हैं। वह घात यह है कि हम कानून अपने हाथमें नहीं लेने। उन्हें सजा करना हमारा काम नहीं था, हम कनून कर्यें हैं कि हम बेकनून बने। मैं मानता हू कि मुस्लिम बीगने पहिले बेकनूनी थी, लेकिन एक शासनी बोडेभी सवारी करता है और दूसरा भी सवारी करता है, तो पहिला शासनी बोडेपरसे किसी कारणसे गिर जाता है, तो क्या वो दूसरा बुरसवार है वह भी गिर जाय? पीछे बोलीका नाक हो जाता है। हमें इस तरह उनका मुकाबला क्या करना था? हम मुकाबला करेंगे किस्ती भीजमें? वैसे कि मैंने बताया है, बिना क्याथा मलापन उनमें है उससे क्याथा हम जाय। लेकिन बिना ही बुझता उनमें है, उसनी ही बुझता हम करने ऐसा मुकाबला करें तो हम दोनों गिर्यें हैं। वे बुराई कर्यें हैं तो इस नीजकी हमारी हकूमत हुक्म करेगी। हमारी हकूमत देखेंगी कि हमारा कोई भी शासनी पाकिस्तानमें पका है, हिंदू हो, सिख या क्रिस्ती हो, वह वहा माइनाखिदी^२ हैं और उसकी बेखनात प्रगर पूरी तरह नहीं होती है, उनको बहा काट्यें हैं, उनकी मजकियोंको उठा लें जाते हैं, उनकी कार्यवाय से सेते हैं और उन्हें बजबेस्तीसे इस्लाममें लाते हैं तो उसका बनाव हमारी हकूमत बेगी। हम कौन बनाव

^१ प्रतिनिधि

^२ शत्रु सन्ध्या

देनेवाले हैं? जबाब देनेकी कोशिश करके हम चाहिये^१ बन जाते हैं। हम कभी चाहित नहीं बनने। वह आजादीकी बड़ी घाटी निशानी है। उसमें हम बिलकुल नापाक शामिल हुए हैं। उसका जतीबा क्या हुआ? मेरे दिलमें छाता है कि हममेंसे जो सचमुच काचित बने हैं, वे कीन हैं यह तो मैं जानता नहीं हूँ, लेकिन हैं तो सही और वे सबबीजसे काम कर रहे हैं कि आब इतना बून करे, आब इतने बर बला हैं, इतने मकान छाती करवा दे। वे करनेवाले कहा है, वह मैं जानता नहीं, लेकिन ऐसा होता है तो हम तो गिरते ही हैं। इसलिए हमको बचल कर लेना है कि यह हमारी बेकसूकी है। उस बेकसूकीको हम निकाल देंगे और पीछे बितने पडे हैं उनको जाएँ। मस्तनको और हकूमतकी वह देखना है कि बितने लोगोंको पाकिस्तानने डेना हुई है, बितने सबाह कर दिए गए हैं उन सबको पाकिस्तान मिला करके बुलावे और बिनकी जाय-बाय जाहीरने हैं, वह जायबाय उनको बापित भिजे। उनमें मकान जो वे लिए गए हैं उनको वापस लेना है। कितने बुराब मकानाठ मैंने देखे हैं। सरकिलोकी कितनी लासीमबाह^२ कहा है। लासीमका भी इतनाब जाहीरने रखा, वह हिन्दुस्तानमें किसी जगहपर नहीं रखा। जाहीर लासीमके बारेमें पहिले कबपर ना। वह जाहीर आब कहा है? जाहीरको, बहाली मस्याओको बनानेमें जाहीरकी हकूमतने हिस्सा नहीं दिया है, पैसा नहीं दिया है। मस्याओके लोग समझे हैं, बड़ी सिबाय्य करनेवाले हैं, पैसा, पैसा कर लेते हैं, बडे-बडे लेकर पडे हैं, वे लोग पैसा पैसा पैसा करनेमें होखियार हैं पैसे पैसा खर्च करनेमें हैं। मैंने यह सब घाबोंसे देखा है। उन्होंने इतने मकानाठ बनाए, इतने मसलेब औरगो और मर्दोंके लिए रखे और पीछे ऐसे आसीमाम मस्यामाम बनाए, वे मज उनको वापस करना चाहिये। ५० मील सबा कारजा ना रखा है, वैहास पडा है। हकूमतके हाथमें अगर हम अपने हुक्का बदला लेना छोड दें तो हम चाहित नहीं बनने। वह मैंने जतनाया। मेरे पास बिदेगने भुसलमान गार्डका तार थावा है। लोग ऐसे क्यों बन

^१ जून^२ सिमामान

नर है, आई-आई करें, हम तो मुसलमान हैं मगर हम नहीं चाहते हैं कि आपसने नई, इस्लाम ऐसा नहीं सिखाता। मैंने कहा ही है कि आप सोच जायें। इसना मैं कहूँ, आप मेरी न मानें तो न मानें, मगर मैं ऐसी नीबोका गवाह तो नहीं बनना चाहता हूँ। मैं यह गिराफत देखना नहीं चाहता हूँ। मेरी तो बड़ी ईश्वरने प्रार्थना है कि मुझे इससे पहले उठा ले। मगर हासल न सुबरी तो मेरे दिलने ऐसा प्रचार पैदा हो जायगा कि मुझे नत्म कर जायेगा। मेरा दिल कहता है तू यह देखकर क्या करेगा। हिन्दुस्तानकी आबादीके लिए तुने अपनी जान कुद-जान करनेकी कोशिश की, जान तो नहीं गई लेकिन आबादी तो मिल गई। लेकिन आबादीके साथ-साथ तू यह गतीया देखनेके लिए बिना रखकर क्या करेगा? तो मेरी तो बिन-रत ईश्वरसे यह प्रार्थना रखती है कि मुझको तू यहासे बख्सी उठा ले। या मेरे हाथने एक बाखी^१ रख दें ताकि उसके माफूस इस प्रचारको मुझ हूँ।

यहा एक अस्पताल है। अस्पतालने बहुतसे पापक मुसलमान पड़े हैं, सब मुसलमान नहीं हैं बोबे हिंदू भी पड़े हैं। उनको पापक पीर कत्त करनेकी किसीने कोशिश की। ऐसी कोई पार्टी पकी है, बेहालसे आई है। उन्होंने बिलकुल एक ज़ापा मारा, दरवाजेसे नहीं, लेकिन छोटी-छोटी थिगकिया रखी है उसनेसे पीतर दूरे, पीर बार वा पाप मरीचोको जल करने जाये। इससे ज्यादा कोई बहानस^२की बहियाना^३ बात नही जानता। किसी सवाईने भी ऐसा नहीं होता। सवाईनेमें काफी अस्पतालोंने गोभिया जनी है लेकिन इस तपछे तो कनी नहीं हुआ।

पीर एक बात सुनाता हूँ। डूंग भाती है जो उसने पाप आबनी एक आबनीको थिगकीमके फेक बैठे हैं, जैसे सामान फेंक दिया। तो यह तो मरही जायगा। यह आबकी बात है पीर अस्पतालका किस्सा यह कत्तकी बात है या परबोकी होनी। इसमें समिया होगा किसको है? सिर फुगना किसको है? आपको, मुझको। बिलने हम पड़े हैं हिंदू, उनको।

^१ पानी की बाखी

^२ मुसलमान

^३ जगती

पीछे ऐसा कहते हैं कि मुसलमान जी ऐसे हैं। मैं वह समझता हूँ
वहा परिचय पचावने को होता है उसका बनाव हकूमत भाव।

: १०५ :

२ मगसुवर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज एक सिख भाई मेरे पास आए थे। उन्होंने कहा कि मुझसे
किसीने पूछा कि आपने गुरु अर्जुनदेवजी बाबीं तो सुनाई, परंतु कबसे
गुरु गोबिंदसिंहजीने उसने लवलीची कर दी, इस बारेमें आप क्या कहेंगे ?
इतिहास सिखाया जाता है कि गुरु गोबिंदसिंह जी मुसलमानोंसे दुश्मनजी
हैसियतसे पैदा हुए। लेकिन ऐसा माननेका कोई सबब नहीं, क्योंकि कबसे
गुरु साहबने करीब-करीब नहीं कहा है जो गुरु अर्जुनदेवने कहा था। गुरु
मानकजी बात ही क्या। वह तो कहते हैं कि मेरे मनकी क्षिप्त, मुसलमान,
सिखने कोई अंतर नहीं है। कोई पूजा करे, कोई नमाज पढ़े, सब एक
है। एक ब्राह्मण पूजा करता है तो दूसरे बर्मबाला भगवानको
कोसता है, ऐसा नहीं, मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। पूजा और नमाज
दोनों एक ही चीज हैं। मानूस सब एक हैं, बाबीं भूखरी-भूखरी हैं।
गुरु गोबिंदसिंहने कहा है कि मानूस सब एक हैं और एक हीके
अनेक प्रभाव हैं तो पीछे मैं माने सोचा हूँ कि हम सब एक हैं, अनेक हैं।
और देखनेमें तो अनेक जेब हैं, लेकिन बैसे सब एक हैं। व्यक्तित्व तो
करोड़ों हैं, लेकिन स्वभावसे एक हैं। गुरु गोबिंदसिंहने कहा है, "एक
काम, एक वेद, एक मूल।" पीछे कहा, "बेवता कहो, अवेव करो,
यस कहो, गवर्न कहो, सुर्क कहो" वह सब न्यारे-न्यारे हैं, वहीं गुरु
गोबिंदसिंहजी कहते हैं—"बेवता तो अनेक जेब हैं, उसका प्रभाव एक
है।" मैंने माने बाबीं हैं, बाबीं तो एक हैं, बवाल एक हैं। और आदिम^१

वह एक है। क्या मुसलमानों के यहाँ एक सूरज है और हम और आप दोनों के लिए कोई दूसरा सूरज है? वह तो सब के लिए एक ही है। वह कहते हैं धाग, पानी भी एक है। गंगा नहती है तो गंगा नहीं कही है कि खबरदार, कोई दुर्क हो तो मेरा बल नहीं पी सकता है, बाकलोंमेंसे बल भाता है तब बाहल नहीं कहते हैं कि मे भाता हू पर मुसलमानों के लिए नहीं, पारसियों के लिए नहीं, मैं तो सिर्फ हिन्दुओं के लिए हू। मुस्लिम सरकार हिन्दुओं के ही लिए हो, ऐसा नहीं, यह हो नहीं सकता। कुरान कहो, बीता कहो, पुरान कहो, सब एक ही है, लेकिन विवाह भक्षण-भक्षण पहना दिया है। सरनी अमानने लियो तो पीके जयको कहो कुरान है, गानरी त्रिपिने लियो, सस्कयने लियो, मगर समझकर पको तो बीज एक ही है। तो वह कहते हैं कि सब एक है, और ऐसा कहकर बल करते हैं। गुरु गोविन्दसिंहने वह सिखाया है। मैं पूछ कि पश्चिमी, अगर गुरु गोविन्दसिंहजीने, आप कहते हैं कैसे किया तो हो, तो वह भक्त बात भी। अब बताई होती भी तो हिन्दू-मुसलमान बराबरी करते थे, बावत भी होते थे और बखनी भी, लेकिन जो विद्या होते थे उनको गुरु साहबका एक समझदार सिख पानी देनेका काम करता था। उसने मुसलमानोंको भी पानी पिलाया, हिन्दुओंको भी और सिखोंको भी। उसने कहा, मुझको गुरु महाराजने ऐसा ही सिखाया है कि तेरे लकीर न कोई मुसलमान है, न कोई सिख है, न कोई हिन्दू है, सब-के-सब इन्सान है और जिसको पानीकी आवश्यकता हो तो उसको पानी देना है। वह ऐसा बोले ही कहते थे कि अगर कोई हिन्दू बखनी हो क्या है तो गुरुनगरी गंगा से लेकिन अगर कोई मुसलमान बखनी पडा है तो उसको कैसे ही छोड दो। उन्होंने पूछा, लेकिन गुरुजी तो मुसलमानों के साथ लडे थे? तो लडे तो सही, लेकिन उन मुसलमानों के साथ लडे जिन्होंने इस्लामियत और इन्साफ के रास्तेको छोड दिया था, जिन्होंने अपने गुरुनगरी छोड दिया था। वह दानी पुरुष थे, गिरीष्ट थे, भवतारी पुरुष थे, उनके लिए मेरे-तेरेका सम्बन्ध नहीं था। लेकिन हा, वह अपनी रक्षा तो करते थे, बताई करते थे, इसने कोई बल नहीं। सिख दया करे कि नहीं, हम तो माहिरक है तो वह तो बसत बात होती। वह कृपाण रखते हैं,

लेकिन गुरुजीने सिखाया कि कृपाव रखाके लिए है, वह कृपाव तो मासूम^१की रखाके लिए है। जो दूसरोंको सब करता है उस बाधिमके साथ सबके लिए वह कृपाव है। कृपाव बूढ़ी भीखीको काटनेके लिए नहीं है, बच्चोंको काटनेके लिए नहीं है, भीखीको काटनेके लिए नहीं है, जो निर्धन नेबुनाह पावनी है उनको काटनेके लिए नहीं है। कृपावकी तो वह काम नहीं है। जो गुनहवार है और जिसपर इस्लाम लाति हो गया है कि वह गुनहवार है, पीछे वह मुसलमान हो, कोई भी हो, सिख भी क्यों न हो, उसके पेटमें वह कृपाव नहीं आएगी। भाव जोय कृपाव जिस तरीकेसे भाव जोसते हैं वह तो बहामतकी बात है। ऐसे बोलनेके पाससे कृपाव छीनी जाए तो कोई गुनाह नहीं माना जायगा, क्योंकि उन्होंने बर्न^२ तो छोड़ दिया है, सिखने कृपावका बुझयोग किया है।

भाव तो मेरी जन्मसिधि है। मैं तो कोई अपनी जन्मसिधि इस तरहसे मनाया नहीं हूँ। मैं तो कहता हूँ कि पाका^३ करो, बर्बा नलाओ, ईश्वरका भजन करो, यही जन्मसिधि मनालेका मेरे बचावमें सच्चा तरीका है। मेरे लिए तो भाव यह मासूम^१ मनालेका धिन है। मैं भावतक बिना पका हूँ। इस-पर मुझको कुछ भावबर्न होता है, बर्न जगती है, मैं नहीं जात्स हूँ कि जिसकी बचानसे एक बीज निकलती थी कि ऐसा करो तो करोगे उसको मानते थे। पर भाव तो मेरी कोई गुनता ही नहीं है। मैं कहूँ कि तुम ऐसा करो "नहीं, ऐसा नहीं करेंगे"—ऐसा कहते हैं। "हम तो बस हिन्दुस्तानमें हिंदू ही रहने देंगे और बाकी किसीको पीछे रहनेकी जरूरत नहीं है।" भाव तो ठीक है कि मुसलमानोंको मार डालेंगे, कल पीछे क्या करोगे? पारसीका क्या होगा और क्रिस्तीका क्या होगा और पीछे कहीं अश्वेथीका क्या होगा? क्योंकि वह भी तो क्रिस्ती है? बाखिर वह भी क्राइस्टको मानते हैं, वह हिंदू बोले हैं? भाव तो हमारे पास ऐसे मुसलमान पड़े हैं जो हमारे ही हैं, भाव उनको भी मारनेके लिए हम तैयार हो जाते हैं तो मैं यह कहूँगा कि मैं तो ऐसे बना नहीं हूँ। जबसे हिन्दुस्तान आया हूँ मैंने तो यही पेशा किया कि जिससे हिंदू, मुसलमान सब

एक बन जाए। धर्मसे एक नहीं, लेकिन सब मिलकर भाई-भाई होकर रहने लगे। लेकिन आज तो हम एक-दूसरेको दुश्मनकी नजरसे देखते हैं। कोई मुसलमान कैसा भी खरीफ हो तो हम ऐसा समझते हैं कि कोई मुसलमान खरीफ हो ही नहीं सकता। वह तो हमेशा नासायक ही रहता है। ऐसी हालतमें हिंदुस्तानमें मेरे लिए बगह कहा है और मैं उसमें बिना रहकर क्या करूँगा ? आज मेरेसे १२५ वर्षकी बात छूट गई है। १०० वर्षकी भी छूट गई है और ६० वर्षकी भी। आज मैं ७६ वर्षमें तो पहुँच जाता हूँ, लेकिन वह भी मुझको नुमता है। मैं तो आप लोगोंको, जो मुझको समझते हैं, और मुझको समझनेवाले काफी पढ़े हैं, कहूँगा कि हम वह ईबानियस छोड़ दें। मुझे उसकी परवाह नहीं कि पाकिस्तानमें मुसलमान क्या करते हैं। मुसलमान वहाँ हिंदुओंको मार डाले, उससे बे चढ़े होते हैं, ऐसा नहीं, वह तो चाहिये हो जाते हैं, ईबान हो जाते हैं तो क्या मैं उसका मुकाबला करूँ, ईबान बन जाऊँ, पशु बन जाऊँ, बड़ बन जाऊँ ? मैं तो ऐसा करनेसे साफ इन्कार करूँगा और मैं आपसे भी कहूँगा कि आप भी साफ इन्कार करें। अगर आप सबमुख मेरी जन्म-तिथिकी मनानेवाले हैं तो आपका तो धर्म वह हो जाता है कि अबसे हम किसीकी बीबाना बनने नहीं देंगे, हमारे दिलमें अगर कोई गुस्सा हो तो हम उसको निकाल देंगे। मैं तो जोतोसे कहूँगा जाई, आप कानूनको अपने हाथमें न ले, हज़ूमतको इसका फैसला करने दें। इसी बीच आप याद रख सकें तो मैं समझूँगा कि आपने काम ठीक किया है। वस इतना ही मैं आपसे कहना चाहता हूँ।

१ १०६ १

३ अक्तूबर १९५७

माइयो और बहनों,

मैं देख रहा हूँ कि हमारे मुँहमें काफी बगहपर आज सत्याग्रह चलता है। मुझको बड़ा शक है कि जिस बगहपर वह कहते हैं कि

नस्पाग्रह जलता है वहा सबभूष वह सत्पाग्रह है या दुराग्रह है। ऐसा हमारे नुस्खे में हो गया है कि एक बीबिका नाम से लिया, लेकिन काम करने उत्साह किया। धीरे धीरे अब कोई भी भावनी, चाहे वह पोस्टमार्किशका हो, टेसीयाक धात्रिस्तका हो, रेनवेका हो या तो बेसी राज्यमें हो, जिस मयहवर वह सत्पाग्रह करनेकी कोशिश कर रहा है इन सबको इतना ममल लेना चाहिए कि यह काम जो वे कर रहे हैं उत्तम है या अमल। अगर असत्य है तो उनका धाग्रह क्या करना या धीरे धीरे सत्य है तो नस्पाका धाग्रह हमें धीरे धीरे हासिल करना ही चाहिए। 'हमको कुछ निब बाम', इन उद्देश्यसे जो सत्पाग्रह करते हैं वह सत्पाग्रह नहीं हो सकता। वह तो असत्यका धाग्रह होगा। सत्पाग्रहके लिए मैंने बहुत-सी चीजें बतला दी हैं। जो चीजें तो धर्मिणार्थ बतलाई हैं। एक तो यह कि बिना बीबिके लिए बताने हैं वह सबभूष सत्य है धीरे धीरे यह कि उसका धाग्रह रखनेमें बहिस्ताका ही उपयोग हो सकता है।

बितने लोग धाग्रह सत्पाग्रह बता रहे हैं वे समझ-बुझकर काम कर। अगर भूष बीब असत्य है धीरे उनके धाग्रहमें बर्बरती भी जाती है तो उनको छोड़ना अच्छा होगा। अगर उन्हें कहें सरा है, अगर वह दुराग्रह है धीरे अमल है, जो वह जगती है वह हक उनको मिल नहीं सकता, जो भी वह नापला धुक करते हैं, तो मैं कट्टा कि ऐसी बीब बापनेमें बहिस्ता इन्नेमाक हो नहीं सकती। वह बहिस्ता नहीं हुई; वह तो हिमा हुई। जो भावनी इन असत्य बीब बापता है धीरे पीछे बहना है कि बहिस्ताने कर लेना, वह कर नहीं सकता है।

अगर कैपोंको बतानेका काम नरे हाथमें हो तो कैपोंमें रखेबासोंको मैं कट्टा कि कैपोंकी सफाईका काम तो धाग्रह ही करना है। क्या कैपोंमें जो लोग पडे हैं वे राम सेवेने, बीपक सेवेने, बुधा सेवेने धीरे पडे रह्ये या तो नोते रह्ये? बाला तो पूरा नहीं मिलता है, पानी नहीं मिलता है यह मैं जानता हूं। 'तो पीछे मैं क्यों काम करूं? ऐसा करते हैं तो इन ऐसी बन जाते हैं। वहा कोई ५ या ७ भावनी बोडे ही है, हमारेकी ताबादमें पडे हैं। इन पट्टोंमें अपने घरमें, यह भी पता नहीं। बाला तो इन उनको मैं, लेकिन जब जानेके लिए वे कुछ काम तो

करे। कम-से-कम सफाई करनेसे बूक करें, पीछे कह दें कि हम दूसरा भी काम कर सकते हैं, सूत कात सकते हैं, बुन सकते हैं, बर्तिका काम कर सकते हैं, सुहारका काम कर सकते हैं, दर्जीका काम कर सकते हैं। या तो हम खटीकका काम करें वह निकम्मी भीव नहीं है। इतने काम हिन्दुस्तानमें पड़े हैं। फस वह भले ही करोड़पति बने, भाव तो करोड़ बने गए। ऐसा बुनियामें हो जाता है। अब सबको नए धिरेसे काममें जुट जाना ठीक है। कोई कहे कि हम करोड़पति बने हम इन्को वह काम करें, तो हमारा काम बिगड़ जाता है। हम जो काम करना चाहते हैं वह बन नहीं सकता। मैं बड़े घरबसे कहूंगा इस तरह हमारा काम बन नहीं सकता। हरदृष्टिसे बिलना काम हमारा बनता है वह तो प्रार्थना होना चाहिए। उसमें सफाई हो, नवगी बिलकुल नहीं। भोग पड़े हैं उन्होंने अपना सब काम खूब किया है। ऐसा करें तो मैं आपको कहता हू कि हमें भाव जो तकसीफ हो रही है वह काफी हदतक रफ्त होनेवाली है। और अगर हम इस तरह काम करनेवाले बन जाते हैं तो पीछे हमारा गुस्ता भी घात हो जायगा। हमारे बिलोंमें जो बैर-भाव पड़ा है वह भी घात हो जायगा। नभाई तो इसीमें है कि बुरे कामको बुरा समझना और पीछे उसका बदला लेना है वह नभाईसे लेना। उसका नाम नभाई है। ऐसा नहीं कि कोई पागल बन जाय, तो हम भी मूर्ख बन जाय। नभाईकी निश्चानी यह है कि हम दुष्टताका बदला दुष्टतासे न दें, दुष्टताका बदला हम साधुतासे दें। हमारे मुल्कका तो इसीमें कस्माव है। हम किसीको रज नहीं पहुँचाएंगे लेकिन बुरे दुष्टको बदला करके दूसरोको सुखी करनेकी कोशिश करेंगे। अगर यह किता तो पीछे हिन्दुस्तानका तो मचा होता ही है भाव बगसका भी मचा कर सकते हैं। भाव तो हिन्दुस्तानकी धोर भोग बेख रहे हैं कि हिन्दुस्तान क्या करता है? धनी तो हमारे सच्चे इम्तहानका बन्त भा गया है। भावाधी मिली है। अब हम क्या करेंगे।

: १०७ :

४ अक्टूबर १९४७

मादो धीर रहो,

मैं आप लोगों को कैसे बताना चाहता हूँ कि अगर हम जो पागल नहीं बनते तो वह सब जो प्राय हो रहा है होनेवाला नहीं था। हमने मुझको कोई सबेह नहीं, बल्कि जो कि मुसलमान पागल बने, इसलिए वे सरकारी जो पाकिस्तानसे भागकर आते हैं। इन्हें क्या पैस मिले तो हिंदू बहासे क्यों भावेंगे ? पश्चिमी पक्षासे क्यों भागेगे ? दूसरा पाकिस्तानका हिस्सा है, बहासे भी जो भाग-भागकर आते हैं, यह दुःखी क्या है। लेकिन बहासे क्यों आते हैं वे, यह समझने लायक चीज है। बहासे जो आशियाने हैं ऐसा हम जानें, लेकिन उसके सामने क्या हम भी आशियाने बन जायें ? क्या हम हमनसे अपने हाथोंमें ले लें; कमल अपने हाथोंमें ले ले कि बसो, वह माखें हैं तो हम भी मारेंगे, वे बूढ़ोंको मारेंगे हैं तो हम भी मारेंगे, बीखोंको मारेंगे हैं तो हम भी मारेंगे, बच्चोंको मारेंगे हैं तो हम भी मारेंगे, बहानोंको मारेंगे हैं तो हम भी मारेंगे ? मैंने बहुत बड़ा कहा कि यह बहाना कानून है। यह कानून बने धीर साव-साव मेरा जीवन बने, तो मैं ही काम नहीं बना सकेंगे। तो आखिरक मेरी प्रार्थना इसरते यही रहती थी कि मुझको १२५ वर्ष बिना एक निमसे मैं कुछ-न-कुछ धीर भी देखनी देना कर सकूँ। धीर हिंदुस्तानमें सुबाई राज, राज-राज, जिसका नाम ईश्वरीय राज्य है, वह स्थापित हो सब मुझको पैस आ सकता है। सब मैं कह सकता हूँ कि हिंदु-स्थान मनुष्य आजाद बन गया है। लेकिन आप तो यह बनाव-सा हो गया है। रामराज तो छोट बों, आप तो किसीका राज्य नहीं। ऐसी हालतमें मेरा-जीना आसानी क्या करे ? अगर यह सब नहीं सुनकर लम्हा तो मेरा हृदय पुकार करता है कि हे ईश्वर ! तू मुझको आज

क्यों नहीं उठा जाता ? मैं हम चीजों को क्यों देखता हूँ ? अगर तू नहीं उठाता और चाहता है कि मुझको बिठा रहना है तो कम-से-कम यह ताकत तो मुझको दे दे जो मैं एक वस्तु रखता था। मुझे ऐसा गुमान था कि मैं लोगोंको समझ सकूँगा। लोगोंके पास आया और कहा, खबरदार, इस तरहसे न करना, तो वे समझ जाते थे। उनके दिलमें मेरे प्रति इतनी मुहम्मद थी। मैं नहीं कहूँ कि आज मेरे लिए लोगोंके दिलमें मुहम्मद कम हो गई है। अगर कम हो या बेसी, उसके पीछे तो अमन होना चाहिए। वह नहीं है। तो मैं कहूँ कि मेरा असर बसा गया है। जब हम गुलाबीमें थे तब तो मेरा काम अच्छा चलता था, लेकिन अब जब हम आबाद हो गए हैं, तब मेरा काम नहीं चलता। जो पाठ मैंने प्रजाको उतरे वस्तु सिखाया था मैं तो वहीं पाठ आज भी दे सकता हूँ। अगर वह पाठ आज आप से मैं तो हम खूब आगे बढ़ जाते हैं।

मैं कहूँ तो यह चाहता था कि आप लोगोंके लिए अब जाड़े के दिन आते हैं। मेरे लिए तो आप देखते हैं यह गरम बाहर में लडकिया लेकर आई है कि आजकल मुझको ठंड लगे। सादी भी है। इस वस्तु कम है, तो यह सूती बाहर कासी है। लेकिन वे जो यहाँ कैपोंमें पड़े हैं, पूराने किलेमें पड़े हैं उनका क्या ? आप कह सकते हैं कि मुसलमानोंको हम क्यों हैं ? मैं तो ऐसा नहीं बना हूँ। मेरे लिए तो मुसलमान भी बही है, सिख भी बही है, पारसी भी बही है, ईसाई भी बही है। मैं ऐसा भेद नहीं कर सकूँगा। इन जाड़ेके दिनोंमें उन सबका क्या होगा ? अगर हम यह कहें कि वह तो हकूमतका काम है, हकूमत उन्हें जाड़ेके दिनोंमें कबल दे देगी, तो मैं आपको कहूँ कि हकूमत नहीं दे सकती। हकूमत कोशिश तो करेगी, लेकिन आज हमारे पास वह स्टॉक कहा है ? हकूमत कबल कहासे निकालेगी ? हकूमत करके उनके पास आ जाता हो, ऐसे नहीं बनते। आज सारे यूरोपमें, अमरीकामें भी यह चीज नहीं मिलती। हमको वहाँसे कोई वस्तु भेज नहीं सकते। कुछ रहस्य करके कोई भेजे भी तो उस-बीस हजार कबलसे क्या होगा ? यहाँ तो साखी लोग पड़े हैं, ऐसे हर एकको बोले/ही मिल सकते हैं। मैं जिसने आप लोग हैं सबसे

कहना कि जातेके बिनोमें वे सर्वोको बर्बाद करते हैं वह ठीक नहीं। इसके साथ साथ अपने सब कबल भी नहीं दे सकते। लेकिन मैं जानता हू कि हमारे पास बहुतसे लोग ऐसे पडे हैं जो अपने लिए कबल रखते हैं और बितने चाहिए उससे ज्यादा रखते हैं। दिल्लीमें काफी गरीब पडे हैं, बिन्दू मुनीबतसे कमल मिलते हैं। बितने कमल आप बना सकते हैं उन्हें दे दें।

मैंने देखा है, मैं दिल्लीमें रहा हू और जातेके बिनोमें रहा हू। मैं समझता हू कि दिल्लीमें काफी गरीब लोग भी पडे हैं, लेकिन मैं तो इसना ही कहना कि जो ऐसे गरीब नहीं हैं, बिनके पास एक कबलसे काम चल सकता हो, और उनके पास दो हों तो एक मुझे दे दें। इसी तरहसे आप आपसे पीले देना शुरू करें। आप ऐसा न सोचें कि यहां हस्तगत करती है तो आपको कुछ करना नहीं। ठह तो शुरू हो गई है, लेकिन इसी बर्बाद हो सकती है। लेकिन एक सप्ताहके बाद मैं बाइसरायके घर गया था, एक बड़ा भाव आती थी। क्योंकि ठह हो गई थी और बहाकी ठह ऐसी होती है कि बाइसीकी बर्बादके बाहर हो जाती है। सप्ताहके वह बर्बाद-बर्बाद करने लगती है और ठेक हो जाती है। नवबर, दिसबर, जनवरी, फरवरी वह सब जातेके बुझना कि है। बिनके पास सामा है, कपड़ा है, काफी फूलकर बसते हैं, बडे बूट पहने हैं, मोले पहने हैं, वह तो जातेको बुझना कह सकते हैं, लेकिन बिनके पास नहीं है उनका क्या हाथ होता है, उसका मैं गवाह हू। आप भी हो सकते हैं। इसलिए मैं कहना कि इसना तो हम करें कि बिनकेको हम बना सकते हैं, बना से। बिनके पास जातेमें पहनने चायक कपडे हैं, वह भी हो सकता है कि आपके पास ऊनी कपड़ा न हो, ऊनी कमकिया नहीं तो सिहाफ तो रहता है, सिहाफ काफी हो जाता है, अगर वह बर्बाद हो तो आप सिहाफ भी जा सकते हैं। अगर भी रहती है, जो अगर पुराने बनानेकी मोटे कपडेकी, मोटे सहरकी रहती है वह काफी गरम रहती है, मुझे और कपडे नहीं चाहिए। लेकिन वह अगरही सफलता ऊनी हो, सिहाफ हो, या तो मोटी अगर पडी हो, उन तीनों चीजोंमेंसे जो आपके पास आरामसे बन सके,

आप अपने-आप मुझे दे दे। अगर आप मेचना शुरू कर दें तो इस-
 -बाम हो जायगा कि कौन उसका कच्चा बने। मैं आप से करनेवाला
 नहीं हूँ। ऐसा भी नहीं होगा कि बीच भा गई तो सब गोबामने पकी
 सब जायगी या नासायक आदमीको भिन्न जायगी। जिसनी चाहरे आप
 बेने, जिसने ऐसे कपड़े आप देने, मैं आपको इसना कह सकता हूँ कि ये
 सब योग्य पुरुष और योग्य स्त्रीके पास जानेवाली है। मैं उम्मीद तो
 करता कि आप मुझको ऐसा न कहें कि यह तो हम हिन्दुओंके लिए देते
 हैं, यह सिद्धके लिए देते हैं। इन्सान सब एक है। पीछे कोई न कहे
 कि इसने मुसलमानोंको न देना। यहा काफी मुसलमान तो मारे
 गए, काफी भाग गए। हमने जवा दिया। जो बाकी रहे हैं, उनके पास
 कितनी जायबाद पकी है वह मुझको पता नहीं। जो मुसलमान हिन्दु-
 -स्तानमें पड़े हैं वे भी अगर कबल बरीरह भेजे और-कहें कि हम तो
 मुसलमानोंको ही देंगे, तो मैं मुसलमानोंको दे दूंगा। लेकिन मैं यह
 उम्मीद करता कि जिसने लोग मेरी बात सुनते हैं और दूसरे जो इस
 रेडियोकी मार्फत सुननेवाले हैं, वे सब मुझे परेशान न करें, और
 कहें कि हमने तुम्हको यह बीच कुज्जार्व^१ की, तो जो उसके जामक
 है उसकी भिन्न जायगा। इसलिए मेरी उम्मीद है, बिस्वास है कि
 इसना आप करेगे। तो मैं यह कहूंगा कि आपने बहुत बड़ा काम किया
 है। ऐसा न करे कि बलो, जो टूटा-झूटा निकम्मा हो, मीठा पका हो, वह
 लाकर मुझको दे दे कि मैं बोझ, रद्द करूँ। मीठा कपडा है तो आप बोलनेकी
 कोशिश करें, इसनी अपनेको तकलीफ दें, बोलीको देनेकी कोई जरूरत
 नहीं रहती है। आरामसे बोला जानी तो भिन्न जायगा, तो उसको अच्छा
 साफ करके सपेट करके आप मुझे दे दें। तो मुझको बड़ा भज्जा लगेगा।

^१ बाल।

: १०८ :

५ अमृतपुर १९४७

माझो घोर बहानो,

पहले तो मैं अपनी सविनयता के बारे में आपसे कुछ कहूँ, क्योंकि मैं भी अक्षवारों में मेरी बीमारी की बाधा कुछ खबर घाई है। मैंने भी है, मुझको पता नहीं है। जो डाक्टर मेरे दर्द-मिर्द रखते हैं, उनकी तो यह खबर भी हुई नहीं हो सकती। लेकिन बहुत आसानी यहाँ पाते पाते हैं, वे बोलते हैं कि मुझे कुछ खासी कमी है, बोला हुआ भी था जाता है और फिर वे रक्का सब क्या बोलते हैं। ऐसा क्यों? कुछ मेरी सपुस्तकी के बारे में लिखें तो, क्योंकि मैं महात्मा माना जाता हूँ इसलिए यह भी सारी दुनिया में फैल जाती है। घापी घर जायगा तो क्या होगा? सब मरनेवाले हैं तो गांधीजी भी मरना है। कोई समुत्पन्न आकर तो पाया नहीं है। मुझे कुछ दुर्बलता और खामी तो है, पर पहले अक्षवारों में बेनेसे क्या बात? मैं यह कहूँगा कि जिन्होंने यह खबर दी उन्होंने न तो मेरा और न किसी सम्बन्ध की मत्ता किया। आप तो बोलते हैं, मैं जाता हूँ बात भी करता हूँ, इनमें कोई बकायत नहीं होती है। हा, बोली दुर्बलता है, खाली है, लेकिन उनकी बाहिर क्या करना था? मेरी इच्छा है कि लोग ऐसा न करें।

दूसरे, मैंने तो सब आप लोगों से कहा था, प्रायश्चित्त की ची कि अगर वे सचने हों, तो गरीबी के लिए, सभी बावेंके दिन पाते हैं, तो कबन है, रगत है, और दूसरी ओरने सावक पीछे हो, उनकी भी दें। प्राय तीन मरगर्गों कबन मैंने है। उनमेंसे दो सम्जन हैं वे तो यही दर्द-मिर्दने 'रने' है। नाम तो मैं उनका भूत गया हूँ। उन्होंने दो कबल मुझे मेने है, अच्छे-बाने हैं। एक मरग है, उनका भी नाम तो मैं भूत गया हूँ, उन्होंने हम कबन दिए हैं और वे तो गए ही हो सकते हैं। यह सब नीचा मैंने आपकी कहा है, सुनिश्चित रने का रहे है और मेना घराने उन तर्ग या उनका दर्पेनाम बोम भाई और मूलोको

देनेमें होनेवाला है। मेरी उम्मीद है कि याच अगर याप सब लोग समझ गए हैं तो जो कोई भी याप दे सकते हैं, मुझको दीजिए।

अभी एक तार मेरे पास आ गया है, जिसे कई आदमियोंने मिलकर साप भेजा है। तार मेरे सामने पड़ा है। उसमें जो लिखा है, वह मुझे अच्छा नहीं लगता। लिखनेका तो उनको अधिकार है। तार भेजनेवाले लिखते हैं कि जैसा हिंदुओंने किया है यदि वे जैसा न करों तो चायद तुम भी बिवा नहीं रह सकते थे। वह बहुत बड़ी बात हो गई। मुझको बिवा रखनेवाली कोई ताकत मैं जानता ही नहीं हू, सिवा एक ईश्वरके। वह जबतक चाहता है जबतक मैं बिवा हू, और उस जबतक मेरा कोई नाश नहीं कर सकता है। जो मेरे लिए सही है, वह सबके लिए सही है। तो ऐसी बात वे क्यों लिखें? मुझको कहना पड़ेगा कि लिखा तो मुहम्मदसे है वह, पर मेरा वह विश्वास है कि मुझे या किसीको भी बिवा रखना सिर्फ मगवानके हाथमें है।

मे पीछे लिखते हैं कि याद रखो, (कुछ नाम भी दिये हैं उनको मैं जोड़ना चाहता हू) तुम बहुत धोले हो, जो अबतक मुसलमानोंका विश्वास करते हो। कोई एक नहीं जो मुझको ऐसा बतलाते हैं, सब मिलकर मुझको सुनाते हैं कि यहा मुसलमान ऐन भीकेपर दबा देनेवाले हैं, वे पाकिस्तानका साथ देनेवाले हैं और वे पाकिस्तानके लिए हिंदुस्तानके सामने खड़ेवाले हैं। वे लिखते हैं कि १०० मेंसे ९५ मुसलमान बग़ाबाब है। मुझको कहना पड़ेगा मैं वह नहीं मानता। यहाके साठे बार करोड़ मुसलमान तो ज्यादातर देहातोंमें पड़े हैं, और जो थोड़े मुसलमान शहरोंमें पड़े हैं, वे हममेंसे ही मुसलमान बने हैं, वे सब-के-सब बग़ाबाब नहीं हो सकते। तो क्या सब मुसलमान बग़ाबाब हैं, वह मानकर प्रत्येक मुसलमानके घरमें प्रवेश करो और उन्हें तबाह कर दो? हर एकके पास हथियार है, उनको छीन लो? उनको कहनेका निस्कृत ऐसा ही मतलब हो जाता है कि उनको तबाह करो और सबके सबको महासे हटा दो। मैं उन भाइयोंको कहूंगा कि यह तो कायरीकी बातें हैं। मैं तो एक ही चीज कहूंगा कि मान लो यदि मुसलमान ऐसे हैं तो वह चीज हकूमतको सौंपित कर दो।

हृदयमन्त्रो कहो कि इसका फलवा करे। ऐसा ही करें जैसा कि वे माई कहते हैं तो उससे तो हम दोनों दुस्मन बनेने और फिर उसका गलीबा होगा दोनोंकी सबाई। दोनों कहते हैं तो पीछे दोनोंका नाश होने-वाला है या यह कहो कि हम पाई हुई आवाहीका नाम करेंगे। कोई हिंदू दूसरेके मातहत आकर अपना हिंदुत्व नहीं रख सकता है। अश्वेत ने तो हम उनकी गुलामीने सोचते थे कि हमारे बर्मकी रक्षा होती है, वह भूल गी।

अब मैं बच्चा था तो मैंने एक अश्वेत कविकी, जो एक अच्छे कवि थे, कविता पढ़ी थी, जिसके अर्थ यह होते हैं 'धीर, अथ तो धीर गया, हमें आरामसे रहना है, अश्वेत था गए हैं।' एक बच्चा था कि हम अश्वेतोंपर भुक्त हो गए थे और सोचते थे कि इनके नीचे हम सुरक्षित हैं। वह भूल सुधारो। अब यदि हम ऐसे बुद्धिमान बनें कि साठे बार करोड़ मुसलमानोंको मार भगानेकी सोचें तो उससे तो हम कायर सिद्ध होंगे। ऐसी बातोंसे हम अपने बर्मको कभी भी बचा नहीं सकते। मैं तो ऐसा नहीं मानता कि हिंदू, मुसलमान अन्तर्से एक दूसरेके दुस्मन पैदा हुए हैं। धीर अगर ऐसे बनें तो पीछे हिंदुस्तान कैसे बिना रह सकता है? क्या बोलो, हिंदू धीर मुसलमान गुलाम बनने-वाले हैं और दोनों अपने बर्मको भूल जानेवाले हैं? यह कैसे हो सकता है? हमारा-आपका तो बर्म हो जाता है कि हम इस सबबर्मे सब बातें सरकारको पढ़ा दें।

आज मैं आपको कहूँ कि मैं तो यशिवोके साथ बैठता-उठता हूँ। पश्चिमी तो हस्तेषा करीब-करीब रोड मेरे पास आते हैं, सरदार जी करीब-करीब रोड आते रहते हैं, हाथा कि उसना नहीं बिछना पश्चिमी आते हैं। लेकिन दोनों आते हैं, दोनों मित्र हैं, दोनों मेरे साथ रहते हैं। दोनोंने बड़ी खूबीसे मेरे साथ सबाई की की है। तो मैं ऐसा नहीं कहता चाहता हूँ कि मैं उनको कुछ कह नहीं सकता। सरकारको हिंदू, मुसलमान, पाखी और ईसाई सबकी रक्षा करनी है, उनी ने कह सकते हैं कि वे अपने कावेसी हैं। हिंदू-जनाई—तो उनका काय तो हिंदू-बर्मकी रक्षा करना है। सिबो धीर

हिंदुओंके धर्मकी रक्षा करना, बुराईयों और बर्बियोंको हटाना, उनका अपना काम है। दूसरा बोधे ही कोई मिटानेवाला है? हम दूसरोंको कहें कि आप मेहरबानी करके हमारा धर्म बचा दें, तो इस तरह धर्म बचता नहीं है। मेहरबानीसे कहीं धर्म बचता है? यदि हम कहें कि हमारा धर्म बचाओ तो वह तो धर्मका सीधा दुश्मा। हमें जान प्यारी है इसीलिए हम ऐसा कहते हैं। हम कभी एक मोसा पहिले, कभी दूसरा, तो वह भी कोई धर्म होता है? इस कारण मैं कहूंगा कि मे जो तार देनेवाले हैं, उन्होंने कोई बड़ा सयानापन नहीं किया है।

वह चीज कहकर मैं आपको दूसरी बात बतलाना चाहता हू। हमारे बर्बिस साहबने दुबारा भी वही चीज कही है और बढाकर, बढाकर कही है। वह मुझको बुझता है। क्योंकि मैं तो अशेष जीवोंका दोस्त हू। मुझको किसीके साथ दुस्मनी तो है ही नहीं। उनमें बहुत मजे लोग पडे हैं और अभी उन्होंने माछोंको आजादी देकर बहादुरीका काम किया है। पीछे उसका कुछ भी असर हो, मुझे उसकी परवाह नहीं। बर्बिस साहब उसपर हमला करते हैं और कहते हैं कि जैसा उन्होंने पहले जापानने भी कहा था, "मैं तो हमेशासे जागत आया हू। हिन्दो-स्तानी ऐसे हैं, वैसे हैं"। अगर हमेशा जागते आए हैं तो अब पीछे उसको दोबारा दुहरानेकी क्या जरूरत थी?

लेकिन ऐसा जगता है कि उन्होंने केवल अपनी पार्टीके लिए ही मजदूर सरकारपर हमला किया है, ताकि लेबर पार्टीकी मिनिस्ट्री मिट जाय और फिर उनकी पार्टीकी हकूमत हो जाय। इससेउमे आश मजदूरोंका राज्य है। वह एक छोटा-सा टापू है, लेकिन मजदूरोंकी शक्ति-पर वह इतना बढा है और अपने उद्योगके कारण दुनियामें मजदूर हो गया है। जो मजदूर सरकार अब बढा गयी है, उसको हटा दो, यह बर्बिस साहबकी मथा है। और उसको हटा देनेके लिए वे कहते हैं कि इस लेबर मिनिस्ट्रीने बेकफूजी की है, उसने वह बड़ा काम किया, एम्पायरको^१ मलियामेट कर दिया, हिंदुस्तान जो एम्पायरने था,

^१ साम्राज्य।

उसको क्या दिया और अब वर्नाका नी बही हास होनेवाला है जो हिरण्य हुआ। अब मैं कैसे कहूँ चर्चिव माह्वको कि आपका उद्दिष्ट्य बहुत बेसा, वर्ना किन तरफ़ों आप भोगने लिया, सिमुनानमें कैसे आपने धरोबोकी हकूमन कायम की, उस इतिहासपर कोई आसनी प्रमिमान कर मके यह मैं नहीं मानता हूँ।

हम आज जो कर रहे हैं, यह कहमियावा काम करने हैं, और हमारे हाथमें जो हकूमत घाई है, उसकी भिटानेकी चेष्टा कर रहे हैं। मैं कहूँ करता हूँ कि आज आपके नजदीक मैं एक नासि^१ आसनी बन गया हूँ, मेरी आपके पास आज नहीं बनती, लेकिन मैं आपको कहूँ कि अगर चर्चिव साहबकी बात भरोबोने मान ली, जिसकी कि कजरवेडि^२ पक्ष कहते हैं, उसने नजदूरोकी हयाया और नजदूरोके राज्यको भिकस्त दे दी तो यह बुरा होगा। मैं आपको कहूँ कि हम किसी धर्मिके मार्फत आचार हुए हैं, ऐसा सारी दुनिया कहती है। यह चर्चित कौनी है? हम वक्त सत्ता नजदूरकी के हाथमें थी, सौमसिन्ध हकूमत उस वक्त इज्जतने थी और उसने हमें आबावी दी। सौमसिन्ध^३को कौन भिटा सकता है? उसको न तो चर्चित साहब भिटा सकते हैं और न कोई और ही भिटा सकते हैं। उनका राज्य हमरी तरफ़ों बस ही नहीं सकता, यह तो मैं देख चुका। लेकिन माना कि भरोबी प्रबाने अपनापन क्या दिया और नजदूरोकी भिकस्त हो गई और चर्चिव साहबके हाथ फिर सत्ता आ गई, तो क्या वे हमें आस्टीमेटन दे हने कि नहीं, हम तुमको फिरने गुलाम बनानेवाले हैं, हमला करनेवाले हैं? वे तो सही। किन तरफ़ों वे वे सकते हैं, मेरी भक्त काम नहीं करती। कैसे नी हम हिंजुस्तानी बुरे हो, नसे हो, हम बदमर्न बन जाते हैं, हम बीबाने बन जाते हैं, तो नी उन्ही लोगोंने तुमको सिखाया है कि आबावी सबसे बड़ी चीज है। ऐसी नहीं आबावीनें भिटनी नजदिया हो यह सब करनेका तुमको हक है। आबावीका मतलब यह नहीं है कि हम नसे करें, हम तो आबावी भिलेगी और अगर सुटेरे रहते हैं, बुरे रहते हैं तो

^१ जराब;^२ कजरवेडी;^३ सवाधवार।

आबादी न मिले। यह कहाँ की बात है? अंग्रेजोंके लिए तो यह कानून नहीं हुआ। कोई भी प्रजा-विरुद्धी दुनियामें नहीं है, इनके लिए यह कानून नहीं था और अगर ऐसा रहता कि जो मरता रहता है, उसके पास ही आबादी रह सकती है, तो भाव सारी दुनियामें जो हो रहा है, उसे देखकर कहीं भी आबादी कैसे रह सकती है? अंग्रेजोंने ही हमें सिखाया है कि आबादी गुलामीकी अपेक्षा नहीं है। एक अंग्रेज जेम्स कहता है कि हम चाहें सराब दिए पड़े रहे पर आबाद रहे, परन्तु गुलाम होकर सुखरत्ना स्वीकार नहीं। पर हम उनकी मुरादमा नें मते हैं, मनाइया नहीं।

हिन्दुस्तानमें तो सात लाख बेहात पड़े हैं, सात लाख बेहातके लोग तो भाव पागल नहीं हो गए। सात लाख बेहातके लोग अगर पागल बन जाते हैं तो हिन्दुस्तानका लम्बा बचन जायगा। लेकिन सात लाख बेहात हिन्दुस्तानके हैं, वे सब-कुछ पागल बन जाय, लेकिन आबाद बने रहें तो मुझको बड़ा मीठा लगेगा। लेकिन चूँकि वे पागल बन गए हैं, इसलिए कोई हिन्दुस्तानपर लक्ष-लक्ष कर और कब्जा लेनेकी कोशिश करे तो वह बननेवाली चीज नहीं है।

मैंने यह किया है और भाव फिर कहता हूँ कि अगर हम पागल रहे तो उसका नतीजा यह आनेवाला है कि अंग्रेज तो अब यहाँ आने-वाले हैं नहीं, वे अब यहाँ नहीं आ सकते हैं, उन्होंने एक चीज जगत् की तो पीछे दुबारा बोले ही वापिस लेनेवाले हैं, अगर दुनियाके सामने तो सब है, वह तो देखेंगी कि क्या हो रहा है? दुनिया उसको यह नहीं करने देगी और न हिन्दुस्तान ही करने देगा। लेकिन दूसरी जो ताकतें हैं, जिसको यू० एन० प्रो० कहते हैं, जिसके पास बड़ी ताकत नहीं है, यदि वह यहाँ आत्म-प्रवृत्तिके लिए आए तो हम उसे रोक नहीं सकेंगे। पीछे हम ऐसे पागल बन जाते हैं कि अपनापन छोड़ देते हैं तो हम आबादीको छोड़कर उनको ले लेते।

मैं चाहें बिल्कुल अकेला रह जाऊँ, लेकिन मेरी जवान तो यही सुनाएगी कि खबरदार, सारी दुनिया भी आए, वह हमारा बिल्कुल नाश करना चाहती है, तो कर सकती है, लेकिन हमको दुबारा गुलाम बनाकर

नहीं रख सकती। मेरी सो ऐनी प्रतिज्ञा है कि हम पुनरा मुसाम न करें।
 उन प्रतिज्ञाका धाय पालन करेंगे, उसकी सम्भा बनाना वह तो धाय
 मौनोंका काम है, मेरे धकेलेना नहीं है। मैं धकेला तो मासको क्या
 नहीं सकता। मेरा क्या ठिकाना है? कौन जाने कब तक बसता हू।
 ईश्वर मुझे उठा लेता है तो हिन्दुस्तानका क्या होनेवाला है? मैं धकेला
 बोडे ही हिन्दुस्तानको क्या सकता हू। वह तो ईश्वरपर निर्भर है और धर
 वह साथ रहेगा और उसकी नेहरानी रही तो हिन्दुस्तान बच सकेगा।
 बकना मैं बिबा हू मैं समझता हू कि कोई ऐसा नहीं कर सकता कि
 पत्नी, हिन्दुस्तानमे कुछ सुफल हो रहा है, इसलिये उसको मुसाम
 बनाओ और कब्जा करो। ईश्वर मेरी इन प्रतिज्ञाका पालन आपनी
 मार्चना कराए। यही मेरी इच्छा है।

: १०६ :

मीनवाट, ६ अक्तूबर १९४७

(लिखित संदेश)

जिन मौनोंको हमारी बुराफकी नमन्यापर जानकारी होनी चाहिए
 वे डा० राजेंद्रप्रसादके निमन्त्रणपर, उनको बुराफके बारेमे, बताहू देनेके
 लिए यहां बना हुए हैं। इन बकरी मामलोंमें यदि कोई भूल हो जाए तो
 समझा परिणाम यह हो सकता है कि उन भूलने, जिसने क्या जा सकता
 है, जानी सादनी नर जाए। हिन्दुस्तानके, भूखे रहनेसे, करोड़ों नहीं तो
 लाखोंजीवनजानें, कुबली तथा इन्सानके बचाए हुए दुष्कालसे मरनेमे कुछ
 परिधिनि नहीं है। मैं कहता हू कि किसी धक्के संगठित समाजमें हमेशा
 पानीकी बनीमें और अनाजकी कमल निवडनेमे होनेवाली आपत्तिने बचने-
 का मायदाव इलाज वहनेमे ही योग्य रहा जाता है। इन बातकी वर्षा
 उम्मेदा यह जांग नहीं है। इन वनन तो हमें यही देखना है कि भावा^१

^१ अथवा।

हम मीनूरा खुराककी नक़द परिस्थितिसे बचनेकी उम्मीद रख सकते हैं या नहीं।

मेरा खयाल है कि हम ऐसी उम्मीद रख सकते हैं। पहला पाठ जो हमें सीखना चाहिए वह है खुदकी नक़द और स्वायत्त। अगर हम इस पाठको हضم कर लें तो दुरत ही अपनेको विदेशी मुल्कोंकी मददपर बरोसा रखनेसे और आखिरमें विवाधियाफ़्तसे बचा लेंगे। यह बात कुछ अविमानके लीयर नहीं कही जा रही, बल्कि यह तो एक हकीकत है। हमारा कोई छोटा मुल्क नहीं है जो अपनी खुराकके लिए बाहरकी मददपर निर्भर रहे। हमारी जनसंख्या तो बालीन करोड़ है जो एक बर-माजमके^१ हिल्नेमें रहते हैं। हमारे देशमें बाकी दरिया है और आति-आतिकी फ़सलें होती हैं और अन्नक नबेनी है। यह तो हमारा ही कसूर है कि वह नबेनी हमारी बलरतसे भी कम दूध देते हैं, अगर हमने इतनी धनित या सकती हैं कि वह हमारी बलरतके मुताबिक दूध दे सकें। यदि गत बर सवियोंमें हमारे देशको मुनाया नगया होता तो वह न सिर्फ़ अपने लिए पूरी खुराकका प्रबन्ध कर सकता बल्कि वह बाहरके देशोंको भी कुछ खुराक पहुँचा सकता, जिसकी कमी दुर्मायवण पिछली सत्राईके कारण ख़ास नकारमें हो गई है। इसमें भारतवर्ष भी शामिल है। मनीबल बटनेके ख़ास बहती ही जा रही है। मेरी ख़ासका यह अर्थ नहीं है कि यदि कोई देश हमें खुशीके साथ खुराक देना चाहे तो हम उसे मानबूर कर लें। मेरे कहनेका आशय तो केवल यही है कि हम नीब मागते न फ़िरे। हमने हममें बिराबट आती है। इसके अलावा यह ख़ास करो कि खुराकको एक बग़ाह पहुँचानेमें किसनी कठिनाइया आती है। हमें यह भी बर रहना चाहिए कि विदेशों को अनाब आवेगा वह जानब अन्ध नहीं होगा। हम इस बातको नजर-अबाब नहीं कर सकते कि अनुज्य-स्वभाव हर मुल्कमें ख़ुबखी लीयर कमजोर है। वह कही भी न पूर्व हुआ है न पूर्वताके नबरीक पहुँचा है। अब हमें यह देखना है कि हमें विदेशी सहायता क्या मिल सकती है। मुझे बताया गया है कि अकरतका केवल तीन

^१ महादीप।

धी-धी बाहर खे धा सकता है। यदि वह बाध सच है और मैंने कई नियुक्त बानकारों ने इस सत्यापकी सच्चाई जानून कर ली है, तो विवेचनपर भरोसा रखनेके कोई मानी नहीं रहते हैं, क्योंकि विवेचनपर जोड़ा-सा भी भरोसा रहे तो इसका परिणाम यह था सकता है कि हमें अपनी हर एक हथ जोड़ी जानेवाली जमीनपर बितना ध्यान देनेको है, वह नहीं देने। अगर हम स्वाभवी बननेका निर्णय करें वा धन पैदा करनेवाली फसलकी बजाय जुराककी फसलपर ध्यान दें तो जो जमीन बेकार पड़ी है उसे हमें कुछ कामने जाना चाहिए।

जुराकके केंद्रीकरणको मैं नुकसानवेह मानता हू। विकेंद्रीकरणसे काले बाजारपर बड़ी आसानीसे आघात पहुँचता है तथा जुराककी इतर-उपर से जानेमें जो समय और पैसा खर्च होता है वह कमता है। इसके अलावा किसान तो हिंदुस्तानका अनाज और बाबे पैदा करता है। वह जानता है कि अपनी फसलको जूझों बर्बादसे कैसे बचाए। अनाज जब एक स्टेजमें पहुँचे स्टेजपर जाता है तो जूझोंको नुकसान करनेका मौका मिलता है। पैसोंको करोड़ोंका नुकसान उठाना पड़ता है और लाखों टन अनाजकी कमी पड़ जाती है जिसकी हर एक छटाक हमारे लिए कीमती है। अगर हर एक हिंदुस्तानी जुराक पैदा करनेकी, बड़ा-बड़ा वह पैदा किया जा सकता है, अल्पतः महसूस करने लगे तो बहुत मुश्किल है कि इस वह जून बाद कि देशमें अनाजकी कमी है। मैंने अनाज अधिक पैदा करनेके लिए सुरर आकर्षक विषयको पूरी तरह खान नहीं किया, लेकिन बितना मैंने क्या किया है उसने मुझिना इस बातकी ओर ध्यान देने कि हर एक आदमी इस जून कामने किस प्रकार मदद दे सकता है।

अब मैं यह मताना चाहता हू कि जो चीज धी-धी अनाज हम बाहर खे धायद हानित कर सकते हैं वह बाटा कैसे रहें। हिंदू हर एकालीको वा बरह रोज बाद उपवास वा धर्म-उपवास करते हैं, मुसलमान और दूसरे लोगोंको इन बातकी मनाही नहीं है कि कमी-कमी जीवनका त्याग कर दे, साधक जब कि लाखों जूझोंके लिए उनकी जरूरत है। अगर समान मुक्त इस बातकी जूझोंको महसूस कर ले तो हिंदुस्तान विदेशी अनाजकी कमीको भरकरने ज्यादा मिला देगा। मेरा अपना खयाल है

कि रागनियका अगर कुछ खान है भी, तो वह बहुत कम है। यदि फाइनकारीको उनकी मर्जीपर जोर दिया जाय तो वे अपनी पैदावारको बाजारमें से धाएंगे और हर एकको अच्छा जाने जायक अनाज मिलने लगेगा जो आवश्यक सामानिने नहीं मिलता। मैं बुराफकी कमीके इस मुल्गमिर^१ बयानको सत्य करता हुआ ग्रेनीवेट दूधनकी सूचनाकी ओर ध्यान दिनासा हूँ जो उन्होंने अमेरिकन लोगोंको दी है कि उन्हें रोटी कम खानी चाहिए, ताकि यूरोपवासियोंके लिए अनाज बचा सके, जिसकी उन्हें सपना बकरत है। ग्रेनीवेटने यह भी कहा है कि इस त्यागसे अमेरिकन लोगोंकी नेह्र खराब नहीं हो जायगी। मैं ग्रेनीवेट दूधनको उनके पार-वार्यिक बयानके लिए बर्बाद बेता हूँ। मैं नहीं मान सकता कि इस बानके विचारके पीछे अमेरिकाको पैसा बनानेका खयाल रहा होना। मनुष्यको उनके कार्वने जाचना चाहिए न कि उस भावनासे जिससे वह प्रेरित हुआ है। केवल परमात्मा ही मनुष्यके हृदयको जानता है। यदि अमेरिका यूरोपके लिए बुराफका त्याग कर सकता है तो क्या हम अपने ही लिए यह छोटा-सा त्याग नहीं कर सकते? अगर बहुतको यूरोप नहीं है तो कम-से-कम हम इतना खेन तो न कि हमने अपनी मरव करनेके लिए जो न कर सकता था वह किया। यह मेहनत हमारे देशको ऊँचा उठाती है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि डा० राजेप्रसादने जो कमेटी बुलाई है वह जबतक कोई अमली^२ इस इस बुराफकी स्थितिको सुधारनेका न निवास लेगी, काम न छोड़ेगी।

: ११० :

७ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कम जो मैंने कहा उसमें तो एक सत्य भी, थाज जो हिन्दू-मुसलमानके

^१ सविस्त;

^२ व्यावहारिक।

बीपमें बस रहा है उस बारेमें नहीं था। लेकिन थाव ऐसा कुछ हो गया है कि मुझको विलक्षण खामोश रहना नहीं चाहिए। यहाँ नहीं हुआ है, वह हुआ तो है बेहराबूनमें। बाबा सम्मन मुसलमान था; उसको कत्ल कर दिया। यद्वातक मुझको पता है, उसने कुछ गुनाह नहीं किया था, और कोई कानून हाथमें लिया हो ऐसा भी नहीं है। लेकिन चूँकि वह मुसलमान था, इसलिये उसको काट डाला। मुझको बुरा लगा कि ऐसा ही हम करते रहे तो आखिरसे हम क्या बाकर बहरेँगे। थाव तो मैं देखता हूँ कि मेरे पास काफ़ी मुसलमान मारि-बध पड़े हैं। मेरा दिल किम्वद्वता है। अगर मैं उनको कहूँ कि थाव यहाँसे जाओ, उस जगहपर गया था—वह कैसे जाए? थाव मैं पाता हूँ कि ट्रेनों में मुसलमान सही-सलामत हैं, ऐसा भी नहीं। जिसको जो चाहें क्वार्टमेंटसे उठाकर फेंक देने हैं या बूखी तरह कत्ल कर डालते हैं। मैं वह समझता हूँ कि पाकिस्तानमें ऐसी ही चीज हो रही है, लेकिन ऐसा हम करते रहे तो उसने हमको क्या कायदा पहुँचानेवाला है। आखिरसे हम अपने-आपको पहुँचाने लगे हैं। अपने बर्नको भी तो पहिचानें। सबका बर्न सबके पास रहता है। हमारा बर्न क्या सिखाता है? क्या हम बर्नको छोड़कर काम कर रहे हैं? क्या कावेस पावल भी? आखिर ६० वर्षतक कावेस क्या करती आई? अगर कावेसने थावतक गलती की तो वह मुल्ककी दुस्मन थी, और मैं कहूँ कि पीछे कावेसको हटा देना चाहिए। थाव जो अपनेको कावेसी मानते हैं वे भी साफ़-भास कह दें कि हम कावेसको छोड़ देते हैं, बूखी कोई पार्टी बना लेते हैं। उसने कोई थिफ़ा-यत नहीं ही मकरी है। लेकिन कुछ भी करो, सारी दुनियाके सामने और हमारे लोगोंके सामने, मैं इसका तो कह सकता हूँ कि हम अपने हाथोंमें नागून न लें। मैं लेंगे तो हम अपनेको मार डालनेकी कोशिश करेंगे और आवाधी गया बैठे, तो पीछे जब दूसरा कोई आकर हिन्दुस्तानपर कब्जा कर लेता तो हम हाथ मलना शुरू कर देंगे कि हमने क्या गजब कर दिया। वह कोई बग़डी बात नहीं है। ऐसी बातोंमें एक पाठ हमें लिखाया जाना है। एन नेपसा था। उसने बर्नको बचानेके लिए एक सान बार डाला। उनका बूँद गूलने नास हो गया। या तो प्राची है

बेचारी बाहरसे। सरपर पानीका बर्तन है। कुएँपर गई थी, पानी लेने। मिट्टीका बर्तन था। वह नेवला तो नाचता-नाचता थाया कि मैंने तुम्हारे बच्चेको बचा लिया, पर वह समझी कि उसने बच्चेको मार डाला है। मूढ़ बर्तन उसपर डाँच दिया। बर्तनका पानी गया, बर्तन टूटा, नेवला भर गया। नीतर जाकर देखती है बच्चा तो पसनेमें पड़ा था और खेत रहा था। वह भी खुशीसे अपनी माँको मिलना चाहता था। और सामने साप मरा पड़ा है। तो वह समझ गई कि नेवला उसका दोस्त था। अफसोस हुआ। कहा, मैंने बामबाह उसे मार डाला। तो ऐसा हम न करे कि बाहिरने हम, जैसे उस माँको पछाना पड़ा जैसे पछताए कि भरे, हमने अपनी हठमत्तका कहना न माना। हठमत्त हमने बनाई है, क्या हम उसे बिगाड़ेंगे?

हमारे हाथोंने साथ हठमत्त आ गई है, अपने प्रवान आ गए हैं। आप मुख्य प्रवान यहाँ बजाहरमाज है। वह तो सच्चा बजाहर है और उसने काफी मोतोकी सेवा की है। सरदार है, दूसरे है। क्या वे हमको नापसब है? आप कहे बजाहरमाज तो निकम्मा है, वह ऐसा हिंदू कहा है, और हमको तो जैसा हम कहते हैं ऐसा ही करनेवाला चाहिए कि जो मुसलमानोंको छोड़ दे, उनको निकास दे, तो ऐसा बजाहरमाज नहीं है, न मैं ही हूँ, वह मैं कबूल करता हूँ। मैं अपनेको सनातनी हिंदू मानता हूँ, तो मैं ऐसा सनातनी नहीं कि सिवा हिंदूके और किसीको हिंदुस्तानमें रहने नहीं दूँ। कोई किसी बर्गका हो, लेकिन हिंदुस्तानका नफादार है तो वह हिंदुस्तानी है और उसको यहाँ रहनेका सतना ही हक है जिसना मुझको है। भले ही उसके जातिवासीकी टाबाब बहुत छोटी हो। बर्ग मुझको यही सिखाता है। बचपनसे मुझको सिखाया गया कि इसकी राजराज्य कहो या ईस्वीय राज्य कहो। कभी हो नहीं सकता है कि एक प्राचीन इस वक्त बिबर्नी है इसलिए वह नासायक है, नापाक है। तो आप समझे कि यानी जी तो कैसा हिंदू है। यात्रीके हाथने टाकल नहीं है, वह प्रवान नहीं है। बजाहरमाज है, तो उसे चाहो तो हटा सकते हो। सरदार है। कौन सरदार? वह बारोलीका सरदार है। उसकी मानते हो? तो उसके भी मुसलमान दोस्त पडे हैं। उनके

दोस्त इमान साहब को बुझातमें हमारी काहेसके सदर^१ थे, मर गए । अब इमान साहबके बानाब अहनबागदमें है । मेरा खयाल है वे डिस्ट्रिक्ट-जज के प्रधान हैं । बाबा भादनी हैं, बडा नडा है । मैं तो उसे भू-जाला ह । उनसे इमान साहबकी सङ्गतीसे बाबी की । वे इमान साहब को बहिष्य अजीफाने मेरे नाम आए थे, अपना आखार छोड़कर म^१ बीबीको साथ लेकर आए और मेरे साथ रहे । वे मर नी, गद, अन^१ खान मरनी पैठी हैं । क्या मैं उसे छोड़ दू और कहूँ कि अब तुम्हारे जानकी नहीं है क्योंकि बाकिरजें तुम सुखवानाई ? सुखवाना है इसमें कोई शक नहीं, लेकिन वह सनी है अन्धी है ऐसा मैं कह सकता हू । उसको पता नहीं है कि उसको जाना पड़ेगा । अगर सरदार उसे जाने दें तो पीछे वह कहा रहनेवाली है ? हम अपने हाथोंमें जानून न करें । और जो जानून होलेबासा है वह मरदार या बधाहरसाक करें, भाकिरजें बधावें और पीछे वह अबापर छोड दें, ऐसा प्रबाल प्राक हो नहीं सकता जाना कि अजेदीके मन्त्र वह सब करने बता बा, उन्होंने जो नि-मो हन् नी करे क्या ? हम जिसकी भिलापन आचरक करते रहे हैं वही भिलापन हमारे भिर नी जाए ? ऐसा हम बर्बाद न करें । मर मैं तो कहा बाहना बा ।

: १११ :

= अमनूवर, १२४७

बाबो और बहनी,

एक मन्त्रन मेरे पास प्राते हैं, अच्छे हैं । वे देहपुत्रने बा ग्हे से ट्रेनमें जागी प्रादनी थे । तो किसी स्टेशनपर, मैं स्टेशनका नाम तो पू. गया उनके टिकेमें एक बादनी बा गया । बाकी मो उस टिकेमें न हिद दें, मिक दें । किसीके हाथमें उनबार थी, किसीके छुग बा

^१ प्रधान ।

उन्होंने नए आनेवालेको देखा । किसीने पूछा कि आप कौन हैं । वह तो बेचारा धकेला आदमी था, उसने कहा भाई मैं तो चमार हूँ । लेकिन उसको शक हुआ । उसका हाथ देखते हैं तो उसका नाम हाथोने गुदा हुआ है । कभी जोन हाथोने अपना नाम लिखवा लेते हैं । तो वह तो मुसलमान साबित हो गया और किसीने उसके घुरा भोक दिया और पीछे बगुनामे को बीचमें रास्तेमें धाती है उठाकर फेंक दिया । यह कारंवाई तो की एक ही आदमीने, लेकिन इतने आदमी थे, वे भी उनके गवाह रहे । मुझसे बात करनेवाले सम्मन यह सब देख न सके और मुह झुसरी और फेर लिया । मैंने तो उनको कहा कि अगर आपके दिमने रहम था गया था और आप उस पीछको ठीक नहीं समझते थे तो आपने क्यों नहीं उस आदमीको कहा कि अरे ऐसी बहमियाना बात न करो । पचास साठ हिंदू, सिख उस दिमने थे, उनमें एक बेचारा मुसलमान । वह कहाकी इन्सानियत है कि उसको कोई मार डाले और बगुनामे फेंक दे । वह विल्कुल नर गया था ऐसा तो न था, उसके घुरा जोका गया था और वैसा ही फेंक दिया गया था । आपने इतना रहम था तो इतना आपने क्यों नहीं किया, क्यों नहीं उसको मरनेसे बचाया ? उसने कहा कि मुझको कुछ तो हुआ, लेकिन मैं अपना कर्म भूल गया । मुझको सूझा नहीं कि क्या करना चाहिए तो मैंने कहा वह तो कोई अच्छी बात नहीं है, यह कोई इन्सानियत नहीं है । हम इतने योग पडे हैं, एक हमारा मुसलमान भाई आता है, उसका इस तरहसे खून कर देते हैं, फेंक देते हैं, ऐसा करनेवालेका हाथ पकड़ो और रहमसे मुहम्मदसे कहो कि आप यह क्या करते हैं, किसकी मारते हैं, उसने तो कोई गुनाह नहीं किया है, उसको आप न मारें । और अगर वह न मारे तो उस भाईकी जान बचानेके लिए आप अपनी जान कुर्बान कर दें, तो मुझे क्या अच्छा लगेगा । एक आदमीको पचास साठ मिलकर मार डालें, इसने क्या बहादुरी है ? लेकिन इतने आदमी जमा हुए हैं उसनेसे एक आदमीको किसीने मारनेका डरावा कर लिया और वह उसको मार डालता है तो सब बैठे देख रहे हैं, उनके दिमने था तो यह बयास होता है कि जसो, मार डाला अच्छा है, हमने बात क्या है । मैं कहूंगा कि जो लोग इस तरह मोचते हैं वे बहुत भारी

गलती कर रहे हैं। वे मारनेवाले ऐसे भी खोज होते हैं जिनके दिलोंमें रहम तो है और वे मारनेको अच्छा काम नहीं समझते, लेकिन थूकि उनको अपनी बेहू ध्यारी है, इसलिए वे कुछ नहीं कर सकते और वे मृत जाने हैं कि उनको ऐसे जीकेमर क्या करना चाहिए था। इसमें भूखना क्या था, एक आदमी इस तरहकी बहुमिमाना हरकत करे तो आप उनसे कहें कि ऐसा मत करो। यह किसनी बुरी बात है कि बिना आदमियोंको यह नाम पसन्द नहीं था वे भी उसके गवाह होते हैं। मैं आपको कहना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने नजरोंने देखा है कि एक आदमी ऐसा बुरा काम करना है तो हमारे आदमी जो बड़े रहते हैं वे उसको पसन्द भी नहीं करते लेकिन हिम्मत नहीं कर सकते कि भागे बचकर रोकें। एक भी आई हिम्मत करके उठ खड़ा होता है और उसे रोक्ता है और कहता है कि अगर उसे मारो तो मैं तुम्हारा हाथ पकड़ दूँगा, नहीं मानो तो खुद मरूँगा लेकिन उसको नहीं मरने दूँगा, तो वह तो मैं समझूँगा। लेकिन अगर मेरे बीना आदमी हैं वह तो अहिंसापर रहेगा, कुछ नर बामबा, मार तो मरता नहीं, लेकिन उसकी जान अपनी जान देकर बचाएगा। मुझे तो इसमें कोई शक नहीं है कि अगर कोई इस तरह हिम्मत करता तो वह आदमी बच जानेवाला था। और अगर उसे बचानेकी कोशिशने अपना पून हो जाता तो वह तो सच्चा बहादुर आदमी साबित हो जाता। इसीका नाम मन्गी अहिंसा है। सच्ची अहिंसा यह नहीं है कि कमजोरके सामने तो हम अहिंसाका उपयोग करें, लेकिन कमजोरपर हिंसा करें।

अमेरिकी सिद्ध अपने अहिंसाका इस्तेमाल किया लेकिन आज हम हिंसा अपना रहे हैं। किनके साथ ? अपने बाइबेलिके साथ। तो अमेरिकी माथ जो हमने अहिंसाको अपनाया वह बहादुरीकी अहिंसा नहीं थी। उनका गलीला हिन्दुस्तान आज वा रहा है और उनका गलीला आज मैं भी वा रहा हूँ, आप भी वा रहे हैं। मैं कहूँ करता हूँ कि मैं आपको मन्गी अहिंसा नहीं निम्ना मका। मैं तो आपकी बहादुरीकी अहिंसा सतमाना हूँ। आज यहाँ मुसलमान मटे हैं, पाकिस्तान बहा हिन्दुओंके साथ जुग करना है, तो हम नी यहा बही करें ? वे क्या कोई बहादुरीका काम करने हैं ? मैं तो कहता हूँ कि पाकिस्तान को मरना है वह बुरा करना

हैं और हम धुनियाँ ने अगर उसकी मर्यादा करते हैं तो वह भी बुरा है। पीछे यह कहना कि किसने, पहले किया, किसने बाधने किया, किसने कम किया, किसने ज्यादा किया, वह तरीका दोस्त बनानेका नहीं है। सच्चा तरीका दोस्तीका तो यह है कि हम हमेशा इन्साफ़र रहे और बरीफ़ बने रहें। इस तरह करनेसे जगती और बीबाना भी आखिरमें सुखर जाता है। हम इसमें नहीं जाना चाहते कि किसका गुनाह बड़ा है और किसका छोटा और किसने पहले शुरू किया। ऐसा कहेँ तो यह सब मैं महाजल समझता हूँ। वह दोस्तीका तरीका नहीं है। जो कमजोर दुश्मन के उनको दोस्त बनना है तो उसे ही कमजोर अपने दुश्मनी रखी हो, लेकिन भाव जब उन्होंने दोस्ती कर ली है तो पीछे के सब कमकी बात भूल जाते हैं। उसको याद क्या रखना था? दोस्तीका यह तरीका नहीं है कि बचना हीगा तो मजेसे, उसके लिए भी तैयारी कर लें और अगर दोस्ती हो गई तो दोस्त बनकर रहने। इसमेंसे सच्ची दोस्ती पैदा नहीं हो सकती।

अब मैं दूसरी चीज़पर आ जाता हूँ और इस बारेमें थोड़ासा कह दूँ तो अच्छा है। आज दुनियाँने अखबारोंकी ताकत बहुत बढ गई है जब एक मुक्त आबाद हो जाता है तब पीछे उनकी ताकत और भी बढ जाती है। आबादीके बनानेमें यह नहीं हो सकता है कि जो अखबार निकालनेवाले हैं उनको सिर्फ़ इतनी रिपोर्ट देनी है और यह खबर नहीं देनी है, वह सब बन नहीं सकता। अगर लोकमत ऐसे बनते बढा काम कर सकता है। अखबार जो गरी बात कहते हैं या झूठी बात कहते हैं या दूसरोंकी उकसानेवाली बात लिखते हैं या तो हकूमत उनको बर करे और उनपर कानून लगावे, कोर्टमें पसी जाय। लेकिन वहाँ जानेसे हुल्लाह मच जाता है, और काम बढ जाता है। हकूमत ऐसा भी नहीं कर सकती। अमेरिका जमाना दूसरा था। उनको क्या पड़ी थी? तिनक महाराज-जैसे आसानीको पकड़कर छः बरसके लिए सजा कर दी। अखबारने उन्होंने कुछ दिया था। ऐसी कोई आस बात भी नहीं मिली थी। तो भी उनको छः बरसकी सजा मिली। और पूरी सजा मुग़्तगी पड़ी। इस तरहसे बहुतेरी जेल जाना पडा। मुझको भी छः बरसकी सजा हो गई थी। छः वर्ष रहा नहीं यह दूसरी बात है। लेकिन सजा हुई छः बरस की, क्योंकि

जैसे यह इतिहास में एक संघ निरुद्ध था। जोट्टा वृत्त नहीं मिलता था, लेकिन समा नुस्खों की गई। इस आवासीय जगहों में यह सब नहीं हो सकता। साथ ही जो व्यवस्थित भी है एडीटर है और जो व्यवस्थाओं के माध्यम से उनको मजबूत करना है, तोलोका में बनना है। इसकारणों पर हम और मूढ़ी सबको तो न माने देना चाहिए और न लोगों को उकसाने वाली बातें सापनी चाहिए। इस आवासीय जगहों में तो यह पश्चिमात्मा उन्हें हो जाता है कि यह व्यवस्थाओं न पड़े, उनको फेंक दें। जब उन्हें जोट्टा देना नहीं तो वे अपने-आप ही एक रास्ते पर चलते लगते। साथ मुझे बहुत दर्द लगती है यह देखकर कि गरीबी और गरीब सबको तो देने की सोचनी चाहिए नहीं हो गई है। ऐसे अवसर साथ चलते हैं। एक चीज मैं देखी, यह रिवाजीय सिद्धांत है। एक व्यवस्था के सिद्धांत कि रिवाजीय के मेम लोकोने, जो कहा पड़े थे। नारे हिंदुओं को मार डाला, मजदूर बना बाले और नाच मनेगी लूट लिए। मेकोने इतना बुरा काम किया यह सब देखकर मुझे बड़ी चोट लगी। हमारे दोस व्यवस्थाओं रिवाजीय के बारे में कोई खबर ही न थी। यह सब बनाई हुई बात थी। मैं परेशान था कि इन व्यवस्थाओं रिवाजीय बात कैसे आ गई। मैं तो कहूँ कि जिस व्यवस्था में रिवाजीय बातें मिली थीं उसे यह फाट कर देना चाहिए। अगर चलनी की चीज थी और अगर बाव-नुस्कर ऐसा सिद्धांत दिया था तो भी उसको फाट देना चाहिए। उनमें खुद के मानने बड़ा गुनाह कर लिया है, ऐसा नहीं होना चाहिए था। ऐसा वह करे तो हमारा काम छोड़ देना ही पड़ सकता है। लेकिन तो साथ व्यवस्थाओं को भी नहीं कर सकती वह चीजों को मुन्को करनी चाहिए, साथ ही करनी चाहिए। इन अपने व्यवस्थाओं फाट कर नही चीजों को पसंद न करें। गरीबी को प्यार छोड़ दें। अगर इन ऐसा करें तो व्यवस्था बदल सकती बर्न पास न करेंगे। एक बात और कहकर मैं खतम करता हूँ।

जैसे व्यवस्था है वैसे ही हमारी निमित्ति है और पुष्पि है। निमित्ति और पुष्पि सबके दो हिस्से हो गए। यह उन्होंने नहीं किया यह मैं कहूँ करता हूँ लेकिन हो गया। तो कहानी जो निमित्ति है, उनमें हिंदू है निमित्त है। और मुसलमान भी पश्चिमात्मा में नहीं गई है। अगर

हिंदू, सिख फौज और पुलिस अपने दिमने ऐसा समझे कि हम तो हिंदू हैं, सिख हैं, इसलिए हिंदूकी ही रक्षा करेंगे, हिंदू हैं, उसने एक भुनाह किया है तो उसको छिपाएंगे, जो मुसलमान है तो उनके लिए हम सिपाही कहा है, मिनिटरी कहा है, उनकी हम रक्षा क्यों करें ? ऐसा हमारे लोग समझें हैं, और पाकिस्तानमें जो मुसलमान फौज हैं, पुलिस हैं वह ऐसा समझे कि जो हिंदू हैं उसको मारो, उसकी रक्षा करना हमारा बर्न नहीं है । ऐसा अगर हो तो हिंदुस्तानका भना नहीं हो सकेगा । हुकूमतके पास तो पुलिस हैं, फौज हैं । लेकिन मुझे न तो पुलिस चाहिए न मिनिटरी चाहिए । मैं तो जोमोसे कहूंगा कि आप हमारी पुलिस बन जाइए, फौज बन जाइए । हिंदू अगर वहा मुसलमानोंको मारते हैं तो उन्हें बचाना है । हमें उस कामसे हटना नहीं है । मैं मर भी जाऊ लेकिन पीछे नहीं हटूंगा । तो मेरी हुकूमत तो ऐसी है । वह कोई मैं हममें बात नहीं कर रहा हूँ, सच्ची बात है सो कहता हूँ । जो वही बात मैं हुकूमतकी मिनिटरी और पुलिससे कहता हूँ । उनका पहला बर्न वह हो जाता है कि मुट्ठी मर भी मुसलमान अगर वहा पड़े हैं तो उनकी रक्षा करनी है । अगर उनपर, जो वहा पड़े हैं, हिंदू हमला करते हैं, सिख हमला करते हैं, तो पुलिस और फौजको उनको बचाना चाहिए । अपनी जानको सतरेमें डालकर भी उनको बचाना चाहिए । तब वह सच्ची पुलिस है, सच्ची मिनिटरी है । हिंदुस्तानको जो आजादी मिली है, वह भी एक अजीब किस्मकी है । सारी दुनिया ऐसा कहती है और मैं भी कहता हूँ कि इस तरहसे किसी भी हुकूमतने किसी मुल्ककी आजादी वहाके लोगोंको नहीं दी है । बिना किसी अडार्ड-फ्रमडेके और बलवादीके हमने अपनी आजादी पाई है । तो जरूरी है कि हमारी मिनिटरी हो, पुलिस हो, वह ऐसी न हो कि बेब करनेके लिए काम करे । उनको बिचना मिलता है, उससे सतोक रखना चाहिए । उनको यह नहीं सोचना कि मिछाई मिले, असेबी मिले और दूसरे स्वादिष्ट भोजन मिले । सिपाही तो वह है जो सूखी रोटी नमक मिलता है उसको जाकर पेट मर सेता है और अपने बर्नका पालन करता है । लेकिन अगर वह समझे कि दूसरे आदमी-का सबका तो काबिल-मदरसेमें जाता है, उसके लिए तो मोटर रखी

हैं बाह्यमित्रक रहनी हैं और क्या-क्या चीजें नहीं रहती हैं, और हमारे पास तो कुछ भी नहीं है, इसलिए रिक्त सेना है, प्रवाको खाना है, उस वह प्रवाके सेवन नहीं रहते। इस कारण मैं कहता हूँ कि रोटीका दुश्मन साकर जो निम्ने लहमें राखी रहकर अपना काम बिना बर्तके भेदनायके भरे नहीं लम्बा भीनी और निपाही है। वह कभी ऐसा न सोचे कि मैं हिंदू हूँ इसलिए मुसलमानको मारू। मुसलमान अगर बहमासी करे तो उसे पकड़े और सजा दितबाए वह दूसरी बात है। लेकिन क्या जो नेपुणा प्रायनी है अगर मुसलमान है, उसको हम यहा इसलिए मारें कि दूसरे मुसलमान जो बहा है वे बिलकुल बहमास है ? अगर कोई भी हिंदू ऐसा करता है तो सिपाहीका बर्त हो जाता है कि वह उस मुसलमानकी रक्षा करे। तब मैं कहूँ कि वह जो हिंदुस्तानका मरक बाछा है उसको सही भवा बछा है। और अगर हमारी पुलिस और गिलिटरी ऐसा नहीं करती तो वह मरकद्वारा बनती है।

ऐसा मैं पाकिस्तानकी गिलिटरी और पुलिसके लिए भी कहूँगा। लेकिन यहा तो मेरी कुछ बनती नहीं है। मैं किमको कहूँ किसको न कहूँ। लेकिन मैं जो बहा कहता हूँ अगर यहा वैसा होता है, तो बहा अपने-आप बायें वैसा होता है, इस बारेमें मुझे कोई शक नहीं है। तो प्राय तो गाँवाने बिना लिये गए हैं, वे कहते हैं कि बहा हमारे माइमोपर ऐसा होता है तो हम यहा भी वैसा क्यों न करें ? लेकिन ऐसा कहना इन्सा-नियन नहीं है। इसलिए मैं तो जबतक मेरेमें शक है, नील-नीलकर मरी कहना ग्रवा कि हम अपनेको माफ़ रखें, धरीक बने रहें, हमारे अन्धकारीनी जरीक ग्रवा है, गिलिटरी और पुलिस है उसको धरीक ग्रवा है। वह नील आरनही रहनी है तो हमारी हकूमत बन नहीं सकनी है और पीछे हम बंशान ही मारने। पाकिस्तानमें कुछ भी हो, हमें धरीक ग्रवा है। वह शीवाना करें, तो नी हवे तो धरीक ही रहना है। तो मैं कहना हूँ हमें प्रायम हम हालमें अपनेमें रखनी है। जना तो करो। मैं मेरी न मुनी, तो मैं कहना हूँ कि अब बंशान होनेवाले है।

: ११२ :

६ अक्टूबर, १९४०

भाइयो और बहनो,

हमें जहाँ किसी न किसी रूप में वही बात कह देता हूँ। आपार बैठा हूँ। इसी कामके लिए तो यहाँ पड़ा हूँ। मुझे कहना चाहिए कि क्योंकि आप उबार रहे हैं, मंजूर है, इसलिए जामिने मेरी बात सुन लेते हैं, इसलिए मैं आपका उपकार मानता हूँ। अन्यथा ही दे सकता हूँ। लेकिन मेरे जेबे में ऐसा तो है नहीं कि किसी ने सुना दिया और लोगों ने जामिने सुन लिया और बहुत दुःख। उसने मेरा पेट नहीं भरया। हमारे इसने लोग परेमान पड़े हैं, हिन्दुस्तान में बहुत काम ही है, उनके लिए क्या करना चाहिए ? उन लोगों का धर्म क्या है ? इस्लाम का धर्म क्या है ? जो लोग एक किस्म की खराब आदतों का पालन करते हैं उन्हें हमें समझना है, समझना है, सब तो पीछे जो लोग दूसरी तरह पड़े हैं उनका भी मेरी आवाज पहुँचेगी।

मेरे पास कुछ लोग, जो लोग परेमान हैं, वे आ गए वे। वे लोग बड़े अच्छे हैं। पाकिस्तान के पश्चिमी पाकिस्तान के हैं। मेरे पास इस-बारह रोज पहले आ गए वे। पहले मैंने कहा, मुझे सब कुछ लिखकर दो। उन्होंने लिखकर बयान दे दिया, ताकि मुझसे कुछ हो सकता है तो कर। उनका कहना यह था कि जो पाकिस्तान में पड़े हैं, उन लोगों के जाने का कुछ अवसर ही, नहीं तो वे आ नहीं सकते। रास्ते में खतरा रहता है। उनके पास अनाज है, पर अनाज साबुतों के तेल का सकते हैं ? रखने की जगह क्या ? इन्हीं बहानों में आ जाय, मोटरों में आ जाय ऐसा ही रास्ता आब हो सकता है। ट्रेनों में आब नहीं दुश्मनिया है। जैसे पहले बसती थी ऐसे ट्रेनों में बसती भी नहीं। जो अब तक आ नहीं पाए हैं उनका पीछे क्या हाल हुआ वह भी पता नहीं। ऐसी हालत में वे आ जाय तो अच्छा है। लेकिन मैं सोचता हूँ कि हम हैं क्या, और कहा जा रहे हैं ?

अब मैं खराब मन की बलाशकी और ले जाऊँ। वहाँ भी तो मैंने काफी

काम किया है। पूर्वी बवालमे भी थीर पश्चिमी बवालमे भी। पू
बवालमे तो बवालवाही है, जो बाब पाकिस्तानमें है। वहा में बवाल
या थीर बहा बड़ी बड़ी पैदाश बाग की। रोब असल-असल बवाल
बवाल जाता बा। बहाके बोलोले बालबीठ करता बा। हिंदू बहल
बाइयोमे जो बर बरा बा उसे बिकालता बा। राम नामसे बवाल
ठहरा। राम नाम मेंते हुए कोई बर बाले तो बर बाए। ऐसा ह
बवाल बीनेका मोह पडा है? बवाल किया रखनेके लिए राम नामको के
है? बरके बारे राम नाम न बें? भीखें बवाल कुमकुम बवालही है
बह न बवाल? बहा जो भीख बिलबा नही होसी बह बलकी बूझ
पहनती है, बह बीबायकी बिलानी है। जो बिलबा बल बाठी है बें बह
पहनती। तो बवाल बरके बारे बलकी बूझ न पहने, बाबकि बें बवाल
नही है? जो बूम बिलकुले बलबलकी बूझिया पहनती बी बें बाब बहलने
बिलबलकी बी तो बेंने बलकी बलबाला कि ऐसे नही करना बाबिए
बें बलबल बई भीर बहा कि बल पहनेगी। बल बें बूम रहा ह कि बहा
बाबिले-बाबिले बोल बल बाते है। बलका बूझ पता नही बवाल, बहा
तो मेरे बाबली पडे है। बाबल बेंने बाबली कहा है कि जो बलके बाबली
मेरे बाब बें बें बल बहा पडे है। बाबलाल बहा पडे है, बाबी बलबालने
बोल बहा पडे है, बल बाबी बहा पडे है। ऐसे बाबल बोल बहा पडे
है। बलीबल भी बहा पडे है। बें बल बोलोको बिलबल बेंते है।
बेंकि बर भी बोल बाबे बल बाते है। बहा बोलोको बरबाली है।
होनी भी बाबिए। बेंकि बहलने बाबल बवाल बा? कहाले बाबले
भीर बाबल बें करेबे बवाल? बें बोलें। बहारे बहा बलबलने २५०००
बलबाली पडे है, भीखें है, बल है। बल भीखें है बिलके बलने होनेवाले
हैं। बलने कोई बर बाब तो बड़ी बाब नही होनी, बलीकि बहा बलका
बवाल बाब भीर बरगा? बहा बलाल भी नही है, बोल बरबाल है,
बलीकि बें बवालने बाबल बाब है। तो बें बलने बिलने बोलता ह कि
बूझे उन बोलोको बवाल बवाल बेंनी बाबिए? बिलने बाब है बलने
बवाल तो बल भी पडे है। बल कोई बल-बीमकी बाबलने हो, बाब
बी बाबली बाबलने हो तो बलने बलबल बल, बवाल बल। बलीकी

साधारण, इस बड़े मुल्कमें जीव पड़े हैं, वहा लोगोंको तबदील^१ करना, एक बगहने बूझरी बगहपर से जाना छोटी बात मर समझो। इसमें परेशानी इतनी है कि वे बिचारे बगैर मीसके मर जाते हैं, सूखो मर जाते हैं। हुकूमत सबको नब चीज पहुचानेकी कोशिश करे तो भी पहुचा नहीं सकती है, पाट्टे किसनी भी कोशिश करे। हुकूमतके पास भाव जो सिपाही है, मिमिटरी है, सबका इतनाम भरोबोके पास बैसा बा बैसा तो हो नहीं सकता। होना नहीं चाहिए। हुकूमतके पास जो चीज है वह लोगोंकी मारफत काम नका सकती है। जोन चाहें तो वे हुकूमतके हाथ है, पैर है। मगर वे उन लोगोंको मरव न वे और उनके पाससे मरवकी जम्मीब करे तो वह मिल नहीं सकती। यह ने कभीरोसे भी कहला हू। मैं देखता हू कि हुकूमत बेफिकर नहीं है। मैं करीब-करीब हमेशा उनको मिलता हू। वे लोग भी परवान हैं यह मैं आपकी कहना चाहता हू। मगर वे करे क्या? बाहिरसे हुकूमत तो वे जागते वही वे। काग्रेस बसाई मगर वह तो मुट्ठी मरकी थी। हमारे बफतरने बितने नाम रजिस्टर है उतने भी तो कभी बाहिर नहीं हुए और हमारेबफतरमें बितने है वह तो मुट्ठी-मर भावनी है, बोडे वैद्योने काम करना रहा। भाव करोडोका काम करना है। करोडो क्या पका है और हमारी साधारण जो भावनी पड़े है उनका बोडोकी मारफत काम करना है।

यह काम कैसे हो सकता है। और कैसे पचीस हजार प्राधमियोंको समझपर जाना पहुचा सकते है, वह सोचना है। हमारी नए भावनी रोज भाते हैं, तो वे सूखो रहते हैं। कमरा पूरा नहीं है और जाके किन भा रहे हैं। जो हाल बहाका है वही हाल भाप समझें कि पाकिस्तानमें है। पाकिस्तानमें कोई बलत है और हमारे बहा बोवक है ऐसा नहीं है। वा यह कही हमारे बहा बलत है तो वह है नहीं, यह मैं मचरोसे देखता हू और पाकिस्तानमें बोवक हो ऐसा भी नहीं। बाहिरसे बोडो बगहोने बन्धाम है, कोई बन्धक है, कोई बुरा है लेकिन, उस बन्धकाम और बुराम-का हिसाब कौन निकाले? निकासकर हम क्या पाएंगे? मेरे सामने

^१ बलसला।

तो क्या प्रश्न ही यह हो जाता है और आपके सामने भी नहीं होना चाहिए कि ऐसे लोग भी पड़े हैं, जिन्हें धाना है या जो धान पत है, उनकी भी हमें हिंसा करे। लेकिन जो धान है उनके लिए जो हमारी भी नहीं होनी चाहिए कि वे बाहर अपने घर चले जाए। मैं आपको कहता हूँ कि उन्हें अपनी जगह पर जाना है। मैं तो जानता हूँ कि जो वे खड़ेवाना चाहती है वह अपने वेहातको छोड़कर नहीं जायगा। एकदम नील हो तो उसके पीछे बहलार हो जायगा। हमारोकी ताबाबमें जाबोकी ताबाबमें लोग चले जाए तो कहा जाए, कैसे रहे। बाटे-न तो रास्तेमें मरते बाटे हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि हमें मरना है तो हम मरेंगे। किसी जगह पर पड़े हैं तो वहां पड़े रहेंगे। पीछे क्या होता है देखेंगे। पाकिस्तानमें रहते हैं तो वह देखनेवाला नहीं है, ऐसा नहीं है देखनेवाला ईश्वर तो है और दूसरा कोई है या नहीं, हमारा तो है।

धनी बगलमें मैंने कहा हमारे दोस्त सब पड़े हैं। तो जो हमारा पश्चिमी बगलमें है वह पूर्वी बगलकी हकूमतको लियो, कि यहाँ क्या है। लेकिन वहाँके लोग, वहाँ भी क्या, हर जगह पर, जो हकूमत कहे उसकी सामील नहीं करते। अफसर लोग उसकी सामील नहीं करते। उनके दिल-बिलमें ऐसा गुमान था क्या है, अब तो आबादी था यह है अब कीम है हमें पूछनेवाला। अरेब ने, वह तो गए। उनकी बात साबे देखकर तो यह काय उठते थे। अब क्या हो गया है? अरेबोंकि सामने कापते थे इनका मैं गवाह हूँ। लेकिन आज सबको मने कि हमको कीम पूछनेवाला है, हम अपने अमरक हैं, निपारी हैं, ऐसी आबादी हम पा गए हैं, सब आबादीमें अच्छा सने नो करेंगे, तो मैं आपको कहना चाहता हूँ कि इस तरह नाम नहीं चल सकता।

जोनों हकूमतें जानती हैं कि हमें इन्साफ करना ही है, तो पीछे और था जाना है। लेकिन जाना कि हकूमत इन्साफ नहीं करना चाहती तो क्या होगा? बाहर हो बना मरता है? मैं तो सडाई करनेवाला चाहती हूँ नहीं, मैं भी सडाई जायगा। लेकिन जिसके नाम इन्साफ रहते

है, सिपाही वा पुलिस रहती है, मिहिटरी रहती है, उसको लज्जा नहीं तो दूसरा क्या करना है ? मैं तो कुछ कर नहीं सकता हूँ, लेकिन जिसको करना है उसे तो करना ही है । सब लज्जा होगा । मेरे बर्तकें आदमी बहा पड़े हैं, बहा वे परेशान पड़े नहीं रह सकते हैं । तो हमको कुछ करना होगा । वह तो दोनों हकूमतके लिए मैं बात करता हूँ । दोनों हकूमतके लिए होगा है । उसमें जो आशिय है उसको यह हक नहीं कि दूसरे आशियको नवावे । जो हकूमत लोगोंको अच्छी लग्हेवे नहीं रखती वा नहीं रख सकती वे दूसरी हकूमतका इसी बोपके लिए सामना करने क्या ? ऐसा कोई कर सकता है ? इन्साफके लिए लड़ते-लड़ते हम मर गए, हकूमत मर गई तो मैं समझ नकूना । लेकिन हम आत्म इस तरह डरके मारे मर जाए मरते-मरते बहासे आग आवे ? आवे तो आते-आते मर जाते हैं, पीछे आते हैं तो, लेकिन रखना कहा ? उनको खाना कहासे दोगे ? मैं क्या बेकार बैठे रहूँगे ? बेकार न बैठें तो उनको काम-बचा देना होगा । इस बेगमें आपके करोड़ों लोग मूखसे मरते हैं, करोड़ों बेकार बैठे हैं, उनके लिए तो हम कुछ कर नहीं पाते, तो जो लोग बाहरसे आते हैं, बाहरसे नहीं किसी दूसरे प्रांतसे आते हैं, परेशानीमें पड़े हैं, उनके लिए काम कहासे निकालोगे ? वह जो पेसा करते थे, वह कैसे होगा, वे कैसे करेंगे, धीर क्या करने ? कष्ट यह बड़ी है, इसमेंसे जराभी रीबा होती है, वह जराभी जो मैं बताता हूँ, उसमें ही नहीं सकती और पीछे लोग बहादुर बनते हैं । लोग मरनेका इत्तम सीख आते हैं । मरनेका इत्तम सीख वे तो हमारा भी बताई हैं और जगत्का भी बताई हैं । मैंने आपको जो उपाम बताया है वह हम हिन्दुस्तानीकी समझा है तो सबका बताई है । हम बहादुर बनते हैं और पीछे सारा जगत् हमारी सारीफ करनेवाला है, उसमें मेरे दिलमें कोई संदेह नहीं ।

: ११३ :

१० अक्टूबर, १९४७

माइगे धीर बहनी,

आज जी काफी कबलिया बरैरु आ गई है। जोड़े माई पेस जी मय है। कबीलासे एक सार जी आया है कि हम काफी कबलिया नह नेक सकते हैं। मेरा ज्ञान है कि जूहीने सिखा है कि भाठ सी नम तो तैयार है, लेकिन यहा रेतवाले से नहीं सकते। ठीक है कि आब रेतम इनवा बोझ पडा है कि हर कोई कुछ नेकना चाहें तो यह नहीं हो सकता हो सकेगा तो मैं बहाकी हूँ उसके पासले पिछड़ी से जूया कि बहुति न बलिया या जाय। सब हमारे पास ठीक-ठीक सामान तैयार हो जायगा।^१ तो अभी नहीं हुआ है, लेकिन मेरी उम्मीद ऐसी है कि जयजान निती किनी तरह से यह पूरा कर देगा और कोई ठाके मारे परेमास न होमा अभी एक बहाने भगूडी बेबी है, उसका जी आब तो मैं यही जयजान कर गऊना हू कि भगूडीनी अभी काममें जया हू और ऐसा ही करने पेट्या होगी।

मन हमारे सामने एक बहरा प्रण है जिसके बारेमें मैंने तो न कह दिया है। बुराफकी लयी है और इनलिए परेमाणी होती है। आज तो निजी लेकिन आबादी मिलते ही हमारी परेमागिया बह गई है, पेच हम महसूस करते हैं। मुझे लगता है कि अगर हम अपनी आबादीको हल कर लेंगे तो ऐसी परेमाणी नहीं होगी चाहिए। मन्ने आबाद को जिन सङ्गने चर्चें ? हमारी आबादी जी कैंनी कीमती आबादी है। जिनमें हमको निजीके साथ मोलवर^२ बेस मकते हैं ऐसी सडाई नहीं करने पडी। सडाई तो एक निम्नकी जी, लेकिन उस सडाईकी सारी गुणम सारीक बगती है। उस सडाईके सचमें हमको आबादी निजी तो न आबादीकी कीमत हमारे पान बहुत ज्यादा होगी चाहिए। लेकिन न नहीं। यह हमारी कमजोरी है। तो मैं क्या पाता हू कि जो मैंने बा

^१ निवाही।

कही है वह तो बड़ी सीधी है और बिल्कुल व्यवहारकी बात है। यानी बाहरसे ज़राफ़ नहीं लगवाना। ऐसी व्यवहार की बात सुनते ही लोग काफ़ी क्यों सठते हैं? कहते हैं भावस पड़ गई है। भावस तो पड़ी है पर वह तो कई बरसोंकी नहीं। वह हमारी भावस कही भी नहीं जा सकती है कि हमको कोई रोटी खिलाने तो हम जाए। हमारे लिए ऐसा इतना बने कि हमें छ भावस, आठ भावस, बारह भावस बनाव, जो कुछ भी हो उसना बनाव, हमें मिले सब हम खा सकते हैं, और उसके लिए नहीं-नहीं थिठिया मिले। वह तो व्यवहारके बाहरकी बात हो गई। जो मैं कहता हूँ वह बिल्कुल व्यवहारकी बात है। और उनमें परेशान क्या होना था। हिंदुस्तान जैसा बड़ा मुल्क जिसमें करोड़ोंकी तादादमें हम पड़े हैं, जमीन भी हमारे पास काफी पड़ी है, ईश्वरकी कृपामें पानी भी बहुत है। ऐसे स्थान हैं हिंदुस्तानमें कि जिस जगह पानी नहीं मिलता। ऐसे रेगिस्तान पड़े हैं वह मैं जानता हूँ, लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि हिंदुस्तानमें किसी जगह पानी मिलता ही नहीं है। तो हमारे पास पानी पड़ा है, जमीन पड़ी है, करोड़ोंकी तादादमें लोग पड़े हैं, हम क्यों परेशान बनें।

मेरा तो कहना इतना ही है कि लोग हमके लिए तैयार हो जाय कि हम अपने परिवारमें अपनी रोटी पैदा कर लेंगे। रोटी जानेंके लिए बनाव पैदा कर लेंगे। इससे लोगोंमें एक किस्मका तेज पैदा हो जाता है और उस तेजसे ही आधा काम हो जाता है। कहा जाता है और वह सच्ची बात है कि नीतके ऊपरसे जितने आदमी मरते हैं उससे बहुत कम सच्ची नीतसे मरते हैं। एक आदमीको ऐसा हो गया कि मैं तो आब बसा कम बसा। किसी आदमीको क्यों, मुझको ही क्यों। मुझे खासी हो गई तो खासीके कारण मैं समझू कि मैं तो अब मर जाऊंगा, तो मरना तो अब है सब मक्या, वह तो मगवानके हाथमें पड़ा है, लेकिन मैं अगर आजमें परेशान हो जाऊ और ऐसा मान लू कि मैं तो अब मरा तो वह बेगनी मरना है। और रोज़ मरना अब बसा हाय। अब क्या होगा, तो यह तरह जो मेरे समीपमें लोग पड़े हैं उनको भी परेशान करना और मैं भी परेशान हूँ और हमेंका खुशता जाऊंगा। हमेंका रोता ही रूगा कि

अब मैं गया। उसने धक्का तो यह है कि जबतक हमको नीत नहीं था तबतक हम आरामसे पड़े रहें और समझें कि कोई हमको आरामसे नहीं है कोई आरामसे है तो ईश्वर है। अब उसका भी चाहेंगे। तो एक तो यह भी कि हम नीतका डर छोड़ देते हैं तो हम हमारी परेशानी भी छोड़ देती है। इस तरहसे मैं कहता हूँ कि जब मैं कह करूँ, तब हम परेशान न होंगे। किसीको यह नहीं मोलना चाहिए। हम किसीकी मेहरबानीसे अपनी सुराक पावें। बल्कि हम अपनी मेहरबानीसे पैदा करें। उसी मैं कह रहा हूँ कि हम बर्बर नीतके न करें। न जो भिड़ें मिलती हैं। रामलिल होती है और इसी तरहसे जो तरीके हैं वेनीस आरामके हैं, उनको हम छोड़ दें। यह तो सुराककी बात है।

ऐसीही बात कपड़ोंकी है। मैंने तो यह दिया है कि अब बिलना-कपड़ा मिलता है, उसने बाँधना मिल सकता है। हमारे मूलकमें कपड़ोंकी क्या कमी? मेरा तो ऐसा विश्वास है कि सुराककी लगी तो पोसी-सी है भी नकली है, लेकिन कपड़ोंकी लगी हम हिन्दुस्तानमें नहीं होती चाहिए जो नहीं होती चाहिए? क्योंकि हिन्दुस्तानमें बिलनी रई पैदा होना है वह हमको बिलनी कपड़ोंके लिए बर्त चाहिए उसने बहुत अधिक है हिन्दुस्तानमें कातनेवाले, बुननेवाले, उतनेवाली पड़े हैं कि अपने-आप का नकले हैं और नूतकी बुन नकले हैं और आरामसे पहन सकते हैं, तब तो पीछे हम बिल्कुल आबाद बन जाते हैं। खानेके लिए, कपड़ोंके लिए, मीन-मिन्ने भी हम आबादी पा सकते हैं। आब तो नहीं पाई और अभी न नहीं नकले तो उनमें हमारा मनबालन है। मेरा खयाल था कि मैं ऐसा करूँ। लेकिन आज तो यह नहीं है, वह बगलाना तो क्या गया कि अब मैं आरे हिन्दुस्तानमें बूम-बूमकर सहरका अपार करता था। वहनोने कहा था कि कानी, बिलना कात नकली हो उतना कातो। उन्हें क्वाट की भी, लेकिन काता बिना नकले। उन्हें मजदूरीकी १५० नमी थी, वह काननी थी और कपड़े बनवा लेती थी। यह होना था लेकिन आज तो मकल दूरी है। आज तो तुम्हारे पास कपड़ा ही नह है। नो मैं तो कहता हूँ कि अब हम अपने कपड़ोंके लिए नूत पैदा करें कानों और उतरी बुनवा मैं और बुन। अपने-आप बुननेमें कोई तनना-

तो ही नहीं। लेकिन वह भी न करें तो क्या करें? हा, तो जो ने बात कर रहा था उसमें से मतीया वह भासा है कि जोय तो जो कपड़ेकी दुकानें पड़ी हैं वहा चले जाय, कपडा बे लें। हनुमत है वह भी भिन्नकि पाससे कपडा ले और पीछे लोभोमे बाटना शुरू कर दे। इसके पलाया जो लोग कर सकते हो वह एक, जो महीनेके लिए, बार महीनेके लिए, यह वत से लें कि हम कुछ कपडा लेनेवाले नहीं हैं। कपड़ेके लिए बाहर चाहिए। छोट करीब जो महीन कपडे है वह न ले। हम इतने महीने तक वह न लेंगे, इसका मतलब तो यह होता ही नहीं कि हम नगे रहनेवाले हैं। इतनेमें जादी तैयार कर लेने तो बाड़ेके बिलोने कम्पटसे छूट जानगे। यहा कबलकी बात तो नहीं है। यहा तो इतनी ही बात है कि हमें पहननेके लिए जो बाहर चाहिए वह खुब बना लेंगे, बाजारसे नहीं खरीदना चाहते हैं। इसना हम करें तो कपड़ेका नाम एकदम गिर जाता है। बाज जो कपड़ेका बाजार भी सरम होता जाता है। सभी बाजार बर्न होता जाता है। बोडा कपडा तो हमें चाहिए, कमीज बनवाना है, कुर्ता बनवाना है, उसके लिए बोडा गज कपडा तो चाहिए। तो बाहर लो। और मने कहा है कि चाहिए तो यह कि वह बाहर हम अपन हाथसे बना लें। तब कर लें कि कपड़ेकी दुकानपर न जाएने। ऐसा हम बस लेकर बैठ जाय कि इतने महीनेतक नहीं खरीदेंगे, तो मैं कहता हू कि सब कम्पट निकल जाता है और कपड़ोके लिए और बुराकोके लिए हम आबाव हो जाते हैं। दूसरा क्या होगा है कि लोभोमे मेरी समझने आत्म-विश्वास भा जाता है और जोय स्वावलंबी बन जाते हैं और वह समझते हैं कि कपड़ेकी लगी हमें क्या होनेवाली है। हम तो कपडा अपने लिए खुद पैदा कर लेंगे, करना लेंगे। हमारी अपनी बुराक है वह पैदा कर लेने वा तो करना लेंगे। यह सब करे तो उसमेंसे एक बडा भारी मुसब मतीया भा जाता है। हम आबाव तो बने अगर राजनीतिक बर्बोमें आबाव बने। हमारी करोड़ोमी आर्थिक स्थिति बाज सही गरी हो गई। वह हम महसूस नहीं करते। पीछे महसूस करेंगे जब यह समझे कि सब हमारे यहा हम बुराक पैदा कर लेते हैं, उसका बाज हम बिठवा बाहें उठना से लेते हैं, कपडा हम अपने-आप बना लेते हैं। कई तो पड़ी है। या तो कही मिलोसे ले लेते

है। कपड़ा मिलोने मिलनेकी कोई गुंथाइय नहीं है ऐसा समझ लेना चाहिए। कुछ भी हो, लेकिन कम-से-कम इतना तो समझ कि हम परेशानी उठानेवाले नहीं हैं। तो हम कम-से-कम धार्मिक आबादी या चाते हैं। और जो गरीब लोग हैं उनको भी पता चलता है कि हमनी आबादी भिन्न नहीं है। अपना काम हम करें पीछे इसका दूसरा गतीया खुद ही आ जायगा।

आज हम आपस-आपसमें भगवते हैं लेकिन भगवत् करनेके लिए प्रयत्न तो होनी चाहिए। अब हम काममें निरपत्ता हो जायने और सब व्यवस्था-वैधे सब बाधोंसे सब एक मिनट भी हमको न आना करनेको रहेगा न किसीसे मार-पीट करनेको। खाना तो हमारे पास है। पहिनावा, उमका भी हमारे पास इतना है। हम भगवत्कोरी छोड़ दें, कुछा खेला छोड़ दें। इस तरहसे विमलसिखेवार हम सीने चलते चाते हैं तो न कहता हू पीछे कोई दोष ही हममें नहीं रहता। ऐसा अपने-आप हम नहसुस कर लेते हैं कि अब हम आपस-आपसमें लड़ेंगे ही नहीं। न कोई मुसलमान रहाना हिंदू रहा। कोई बपतामी करेगा तो उसका अपाव हम से देंगे। उसके साथ चलना है तो लड़ेंगे। लेकिन आज हम नवी बगीर भीतसे मरना शुरू कर दें ?

इसलिए मैं तो कहता कि जो चीज मैंने आपको सिखा दी है और मुनानेकी चेन्दा की है वह सबर अच्छी तरहसे आपके दिलोंमें अब जाव और उसपर चलनेका फैसला हम करें तो मैं कहता हू कि हम बहुत ऊंचे चलनेवाले हैं। और हमें किसीकी ओर देखना नहीं पड़ेगा कि चीज हमें मरद देता है। हमें मरद किसकी चाहिए ? मरद तो हमको ईश्वर देनेवाला है और वह किसको मरद देता है ? जो आपनी अपने-आपकी मरद केनेके लिए खुद तैयार रहता है उसीको ईश्वर मरद देता है।

: ११४ :

११ मन्त्रपुर, १२४७

मादनी और बहो,

आज आपकी कल्पनाकी हावली है। यह दिन गुंथारामे यानी

काठियावाड़ने कच्छमें रेंदिया बरसके नामसे समझा जाता है और उस वक्त सोनोका ध्यान रेंदियाकी ओर यानी चबूकी ओर और चबूके पूर्व-पश्चिम में जो चीजे समझी जाती हैं उनकी ओर बिच जाता है। एक सिन-सिना बसता है तो पीछे उसको कोई छोड़ता नहीं, लेकिन मैं भाव ऐसा नहीं पाता हू कि रेंदिया हाथकीका हूय कोई उत्साहसे पालन करे। रेंदिया-का विस्तृत अर्थ भी मैंने किया है और हिन्दुस्तानने मान लिया है कि चबूकी बाहुका प्रतीक है। उसकी निशानी है। भाव वह निशानी तो गुन हो गई है। अगर वह निशानी रखती तो भाव हमारे सामने जो चीजे बन रही हैं वह बननेवाली नहीं थी। लेकिन बनती है तो भी उस निशानी-का स्वरूप तो मैं आपकी करा हू। मेरा कल्प दिन दो अक्षरको मनावा था वो काफी था। लेकिन कई वर्षोंसे अंग्रेजी टारीफ भी मानी जाती है और जो हिंदी लिखि है उसको भी माना जाता है। इस तरहसे वह भी दिन है और उनके बीचने बिसमा फर्क रह जाता है वह सबका सब समय उत्साहसे चबूकी उत्सव मनावेने दिया जाता है। लेकिन भाव जैसा मैंने कहा ऐसा कोई जीका मैं पाता नहीं हू। तो भी अगर वैभवोगसे कोई भी चबूकी ओर बिसपर वह निशानी है उस बाहुका नाम से तो अन्ध हो है। पाव भावमी भी उसे मानें तो अन्ध हो है। और करोड़ फरें तो और भी अन्ध है। लेकिन एक ही करे तो भी वह अन्ध है। इसलिए मैंने भाव सोनोका ध्यान इस ओर चीका है।

कराचीमें हमारे मन्त्र साहब है और वे पाकिस्तानका जो प्रवाल पकल है उसने कोई प्रवाल है। ऐसा कहा जाता है कि वे हरिजन हैं और बनावके हैं। तो भी कायसे भावमने उन्हें पाकिस्तानके प्रवाल मन्त्रने स्थान दे दिया है। उन्हीकी सूचनासे एक बात बन गई है। उसने दूसरे दो-तीनका नाम मैं मूल गया हू, वे भी सही हो गए हैं। सबके सब सही हैं, ऐसा तो नहीं हो सकता। लेकिन वो हुए तो भी क्या, एक हुआ तो भी क्या। लेकिन एक सरकपुलर निम्न भवा है कि बिसने हरिजन की स्थिति रखते हैं उनको हाथपर एक पट्टी रखनी चाहिए। उस पट्टीपर ऐसा लिखा जायगा कि यह हरिजन है, जाने फाट्ट है अस्पृश्य है। बिसने उन्हें कोई ह्माक न करे, कोई निकास न दे। उसका बावमी गरीबा मेरी समझमें यह

माना है—(यह अगर मेरे एकही ही बात है तो सम्झी ही बात है लेकिन मैंना एक था ही जाता है) कि वह हरिजनको आज तो नीकरी १५५ जायगी और पीछे जान सें कि वे हरिजन बहा ही रहें तो (जबके १५५ रहनेवाले तो नहीं हैं आज तो बहाने निकल भी गए हैं और १५५ जानेवाले हैं, ऐसा मैंने सुना है। मेरे पास बहुत खत था गए हैं, लेकिन जिनने ५५५ एड बाय) उनको पीछे आगिमें इम्मान कबूल करना है। ऐसा १५५५ था जाता है, मेरे सामने तो यह बनकर गतीया है। एक सादसी २५५ जानकर कि वह सभी भीज है अपना मजहब छोड़ देता है और कोई नो बर्ग कबूल कर लेता है तो उन बीबका मैं बहुतों कि सबको एक है। आज मैं अपनेको सनातनी हिंदू मानता हू, कम मुझमें ऐसा जगें कि सनातन हिंदू क्या है इन बर्गको मैं पच नहीं करता, तो उसे छोड़ मरना हू। लेकिन यह बहुत भारी बात है। मैं अपने बर्गको कबूल नहीं कर तो मुझे कौन रोख सकता है? मेरे दिलमें कोई सानन नहीं है कि मैं किसी ही जातया तो मेरी प्रायिक स्थिति को दुस्त करना या और कोई भी प्रयास उठाऊया। मैंने तो अपने ईश्वरके आज हिमाव कर लिया फिर दुनिया इनकी मुखाविरुद्ध करे तो भी मैं नहीं करता। मैं जानता हू कि यह ज्ञानत आज एक ही हरिजनकी नहीं होगी। यह बात मैं शायदे कहना चाहता हू क्योंकि मैं हरिजन बन गया हू, बहुत बन गया हू, उनका बर्ग मैंने कबूल कर लिया है। मैं यह उम्मीद करता हू कि आज पाकिस्तानमें जिसने हरिजन पड़े हैं या कोई दूसरे पड़े हैं उनके लिए इतना ऐसाग कर देना चाहिए कि वे सुरक्षित हैं। पीछेने यह विस्था मयानेकी जरूरत नहीं पड़ी। जबके लिए ऐसा ऐसाग होना चाहिए कि कोई भी जरूर आज ऐसा करेगा कि मैंने बर्गका परिवर्तन राखीसे कर लिया है तो वह माना नहीं जायगा। बर्ग अपने दिखती बात है। इन्सान जाने और उसका ईश्वर जाने। लेकिन पाकिस्तानकी हकूमतमें कोई भी सादसी ऐसा दावा आज नहीं कर सकता कि उसने अपने बर्गका परिवर्तन जान-बूझकर लिया है। ऐसा ही जना जायगा कि उसने किसी उरकी बजहसे

‘विशेष ।

या मजबूर होकर ऐसा किया है इसलिए भाव ऐसा उनको कहना है किसीके बर्गका परिवर्तन हो ही नहीं सकता।

दूसरी एक बात यह जाती है। हमारे सामने इसी महीने दो त्योहार आ रहे हैं। एक तो वसहरा है। वह बड़ा मुजब त्योहार है। उसको बहुत लोग मानते हैं, सारे हिन्दुस्तानमें हिन्दु लोग मानते हैं। लेकिन उसकी महिमा बगलमें बहुत अधिक है। मैं बगलमें रहा हूँ, इसलिए मैं जानता हूँ कि वसहराकी क्या महिमा बड़ा मानी जाती है। वह त्योहार आता है उससे ठीक दो बिनके बाद बकरीद आती है। पहले जब बकरीद होती थी तो हिन्दु-मुसलमानने कोई बड़ा बैमनस्व नहीं था। भावकी तरह लड़ाई नहीं करते थे तो भी बिलमें लड़का रहता था। और जो अग्रेजी सलतनत थी उसको भी कुछ तैयारी रखनी पड़ती थी कि बकरीदके दिन कुछ हो न जाय, हिन्दु-मुसलमानोंके बीचमें लड़ाई न चल जाय। कोई भी मीका मिला सकता था चाय को काटे, गावको सबाबटके साथ में चाय, और हिन्दुओंको जफानाके लिए ऐसा करें। वसहरामें तो सब जगह सबाबट करते हैं बाबा तो बबाला है, औरतो-मर्दोंकी सबाबट होनेवाली है, गए कपडे पहनकर कोई गाडीपर सवार होंगे, कोई मोटोपर सवार होंगे, वह सब करनेमें तो क्या, वह भी एक लड़ाईका मीका हो जायगा और बकरीद भी लड़ाईका मीका हो जायगा। मैं तो कहूँगा कि जो हिन्दु और मुसलमान दोस्ताना तरीके साथ-साथ रहना चाहते हैं उनका यह बर्न हो जाता है कि वे मर्यादासे इन त्योहारोंका पालन करें। ऐसी भीज कोई न करें जिससे सामनेका भावनी गुस्सेमें आ जाय। बर्रर इस सबके भाव हम गुस्सेसे मरे हैं और गुस्सेमें जब आ जाते हैं तो एकभी इस बना देते हैं। ऐसी हालतमें ऐसी कोई बात हम न करें जिससे गुस्सा बढे।

अग्रेजी हकूमतने चाते हुए जो काम किया उसने एक शौब यह था। हिन्दुस्तानके दो दुकाने कर भागे और दो हकूमतें बन गई। भाव तो दोनों दुश्मन-मैत्रे बन गए हैं। समझ है कि आपस-आपसमें कभी भी लड़ाई न करें। लेकिन ऐसा सामान बन रहा है कि जिससे यह कोई समझ नहीं सकता है कि भावे क्या होगा। लेकिन आशा रखें कि हम दोनों समझ जाय और अगर नहीं समझने तो अपनी आबादी हार बैठेंगे। मुल्कको

हार बैठना बर्नकी जानी है, उसको गवाकर बैठ जाना यह बड़ी भारी बलाही होगी। मेरी तो यह प्रार्थना है ईश्वर सबको क्षान दे और हम सब बुरा हो जाय। यह बड़ी प्रार्थना बात होगी।

एक और चीज मैंने कह दी है, बहिन भक्तिकार्य हमारे जो जो पडे है उन्हें सावधान होकर काम करना है और वहा जो दो हकूमते उन दोनोंको हमारे जो आई वहा पडे है उन्हें पूरी सहायता देना चाहिए और उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए।

: ११५ :

१२ जनवरी, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी काफ़ी कबजिया बा गई। रजाई जी। और रजाई बारेमें तो मैं बहालक कह सकता हू कि मिलनी सरफसे भी अब बन तैयार हो रही है। यह रजाइया भी भा बावणी। मेरे दिलमें इतने आभा बकर हो गई है कि जिस रफ्तारसे ये रजाई और कबजिया बन रही है उससे इस बाबके बिनोमें जो जीव महा झट्टे हो गए है यह नामे बिल्लीमें और उसके बर्गिर्ब, उनको तकलीफ नहीं होगी चाहिए यह तबवीब जी हो रही है कि यह सबकी सब रजाइया बिलको मिलनी चाहिए या कबजिया या जो दूसरी चीजें पहिलेको भा जाती है यह सब बकरखमबोली मिले। एक बात उसमें समझनेके साथक है कि जो कबाल। जाती है यह बाबिलने फट जावनी, अगर आज यह पानीसे और ओससे बचा सक्ती है। लेकिन रजाई भा गई तो बतरा रहता है कि यह पानीसे नहीं बचती। बाकी तो ईश्वरकी कृपा रहेगी तो बाबोके बिनोमें पानी नहीं आना चाहिए लेकिन बाब काफ़ी पक्की है और सबको कबजिया बाबद न मिल सके, नवको सब भी जिस सक्ते या नहीं तो मेरे दिलमें आता है। एक चीज है, मैं आज बात कर रहा था सब बता दिया था। यह मैं वहा भी बता देना चाहता हू कि बिन लोगोंके हाथोंमें रजाइया

पानी जानी है ॥ २७ ॥ ममकीं कि न्यून पेंवर जाकी पडे है, यह मिल जाय तो रजार्जिपर अमर न्यून पेंवर रने नो पीछे सोस रजार्जि मे होकर नही या मानी । दूसरी गृही रजार्जि यह है कि उसमे काफी रई या बासी है श्रीर उममे जाकी घरमी गयी है । जब रई दूट जानी है तब रजार्जि को गोन मरने है । रजार्जि का पपन सोकर रईको धुनकर किरने मर मरते है । मो यह रई पीन बन मानी है । जो देगभान करके उस पीनको दुम्भमान रग्नेवाने है उनके लिए यह बड़ी कामकी पीन है । हमारेपर यह पत बड़ी भारी आपत्ति या पटी है, लेकिन जो ईश्वरका स्मरण करते है श्रीर ईश्वरका नाम का मते है उनको ऐसी आपत्तिमे भी सील मिल जानी है । दो विन्मयी बाने हो मरती है । एक तो जब आपत्ति या रई तो आदमी पबराहटमे पड जाता है या तो गुस्सेमें या जाता है, तब पीछे यह क्यादा दुग पाता है । लेकिन आपत्तिमे यह सोचे कि हम बेगुनाह है तो भी आपत्ति आती है, लेकिन तो भी हम इन बस ईश्वरकी भूलने-वाने नही है, उनकी मदद मागनेवाने है । ऐसे लोग उस आपत्तिमेंसे भी मुगरो पैदा कर मरते है । काफी लोग जो डबर या गए है और आश्रित बन गए है वह साजिर लोग थे, उनके पास काफी पैसा था, दूसरे प्रकारका बन था । बड़ी-बड़ी हुनेलिया थी वे सब बली गई, दी गई । मेने तो कइ दिया है जो बहाने या क्या है जबतक बहा बापिस पहुंच नही मरना है, और बहा सही मलामत नही रह सकता है तबतक हमारी दोनों हकूमतोके लिए कष्टकी बास है । अगर हम लोग जिवा रहना चाहते है, आबाव रहना चाहते है तो कभी न कभी हमे इस सबाबलेके पापका पन्थासाप करना है । पन्थासाप उसका नाम है कि हमने जो भूल की उसको दुस्त करे । तब वह सच्चा प्रायश्चित्त है । दूसरा नही हो सकता । जो सचमुच गलतीको दुस्त कर लेता है उसका पन्थासाप काफी हो गया । गलतिया दुस्त करना है तब तो जो लोब बाव भाए है जान लेकर, जान बचाकर भाग भाए है, उनको बापस जाना है । वह जब होनेवाला है तब होगा, लेकिन दरमियानमें क्या करोने ? मे यह कहना चाहता हू कि दरमियानमे लोगोंको अगर अच्छे डाक्टर लोग मिल जाय—जो मिराबार बन गए है उनमें डाक्टर भी रहते है, बकील भी रहते है सब किस्मके

योग रखते हैं—वे शायदर सेवाका ही काम करें और दूसरे भी जो उन बातों पर पडे हैं वे भी ऐसा करें, सब बहुत कुछ काम कर सकते हैं भी हम उस धारणामेंसे एक नया पाठ सीख लेते हैं।

जै शरणागिओंके बीच गया तो मुझे बताया गया है कि उनमें कर ७५ फी सदी प्रायनी साधिर है। तो मैं भीक उठा कि इतने साधिर के महा विचार करने कर सकेंगे। साधोकी साधारण साधिर भा गए - वे सब एकाएक विचार करने लगेंगे तो सब जगह धोतमास हो जायगा अगर ऐसे मनमें रखें कि हम तो कुछ-न-कुछ मेहनत करेंगे, हम नई ची चीखेंगे और यह सीख लें कि सब तो काम चल सकता है। योंसे भी साधिर रहे हैं वे अपनी विचार मूल बात। जगतने ऐसा होता है अगर एक ची नहीं मिल सकती है तो पीछे दूसरी चीख डूबो। हम बेकार नहीं बैठे बुझा नहीं लेवेंगे, बरकरार अपना समय बचाना नहीं चाहते हैं कुछ का तो करेंगे ही। मेहनत करेंगे। जो साधिर है लेकिन जिसका भी प्रकाश है, हाथ-पैर अच्छे चल सकते हैं वे बीड़ी मेहनतका काम करें ऐसी जगहों का भी रखती हैं जिसमें बहुत सीखनेकी जरूरत नहीं रखती ऐसी चीखें वह करें और सब मिलजुलकर काम करे। साधनें कैसे का होता है यह सीख लें। सब हमारे लिए जो यह एक तरक-मैदी भी पैदा हो गई उसमेंसे हम स्वर्ग बना सकते हैं।

जै समझ रहा था और मैंने सोचा कि साथ तो यह भी बात - रखते साथ तोयेंकि सामने रखूँगा और आपकी मार्फत सबको बुझा। जो विचारों में पडे हैं वे यह सुनें और करें तो उनको ब फायदा होगा और मुल्कों भी बड़ा फायदा होगा। और जो हमारे कुछ का गया है उस दुकमेंसे हम कुछ पैसा कर लेते।

इस विचारमें मैं यह कहना चाहता था कि जो रखाइया हुआ पाठ अभी नहीं आई है लेकिन हर जगहसे जानेवाली है उसका हम न करें? उसमें जो कपड़ा रखा है वह पैसा बन गया हो तो उसको निकाल कर भी सकते हैं। उसकी जो रई नहीं है उसको हम रख लेते हैं। तो निगडती ही नहीं। उसको बुझा लेते हैं और उसको हाथसे धा कर लेते हैं, बुनकीनी भी जरूरत नहीं। हा, उसे काटना हो, सब कुछ

बात है। उस बर्तके द्वारा गढ़ने बनाना है या खोदने बनाना है तो वह आरामसे हो सकता है। मेरी समझने दृष्टिसे वह सस्ते कामसे बन सकती है, और बल्की बन सकती है। जिसके पास काफी कपास पड़ा है। यहाँ ने खाली पीचकी बात नहीं करना चाहता। काफी कपास पड़ी है। उसमेंसे खोदने बहुत सीधेसे बन जाती है और लोगोंको वह वे ही तो बातेसे वे बन जाएंगे। इसलिए वह पीच किस तरहसे हो सकती है वह लोगोंको बनाना है और पीछे जो एक निराशा फैल गई है उसमेंसे हमें आशा खींच करनी है। एक मजन है कि आशा तो जाओ निराशानेसे पैदा होती है। वह बात सच्ची है। वह कविका वाक्य है। जाओ निराशाने किन्हीं दुर्द आशाको हम देख लेना चाहते हैं। उसको देखनेके लिए हमको क्या करना है? जिसने निराधार लोग बन गए हैं उनको पहले तो वह समझ लेना चाहिए कि वे सारे हिन्दुस्तानके हैं, पञ्जाबके ही नहीं, सरस्वती सूबेके नहीं या सिक्के ही नहीं। जिसने सूबे हैं वे हिन्दुस्तानमें पड़े हैं जो वहाँके लोग हिन्दुस्तानके हैं। एक शर्तसे हम सब हिन्दुस्तानी बन सकते हैं और रह सकते हैं, हम किसीपर बोझ न पड़े। जैसे दूधमें मिश्री बाखिल करो तो वह दूधको गीठा बनाती है और दूधमें मिला जाती है और दूधमेंसे निकासी नहीं आ सकती है, दूध बैसाफा बैसा रह जाता है, इसी तरहसे मिश्रीकी तरह वे लोग बिबर बसे जाय वहाँ एक-दूसरेके साथ लड़ते नहीं रहें, द्वेष नहीं करें, मिलजुलकर रहें, आपस-आपसने सहयोग बना लें और सबके सब मेहनती आदमी बन जाते हैं। तब होता यह है कि जिस सूबेने वे बने जाते हैं उसे पुस्तक कर लेते हैं। तब सूबेके लोग ऐसा कहेंगे कि हमारे यहाँ ऐसे चाहे जिसने आदमी धा धाव उनको हम समा सकते हैं।

मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि किन्हीं मेरी आवाज पट्टन सकती है ऐसे जो निराधार लोग पड़े हैं उनमें जो काम करनेवाले हैं वे उन लोगोंको यह पीच बता दें कि आप सब आदमी बने। किसी जगह भी जाकर बोझ न बनें और हर जगह पर रहें तो जैसे मैंने बता दिया है इस तरह मुहम्मदसे रहें, साथ-साथ मिलजुलकर रहें। किसीको बोझ न दें। हमको अपना बन्ध बनाना नहीं चाहिए। एक-एक मिनट ईश्वरके

सिए हो, ईश्वरके कामके सिए, सेवाके सिए हो। हम तो सेवाके नि-
 पैदा हुए हैं। पीछे हम भूल जायने कि हम कुछ करने विरक्त होकर
 ने, थोके हैं। हमारे पास रहने बाबोकी साबाबने जोय पडे हैं, वे लेन
 करें। हम पैदा हुए हैं सेवा करनेके सिए। हम सब करें कि हम ५५
 मूलको ऊचा से जायने, गिराएने नहीं। रहना अगर हम सीख लें त
 न समझना ह कि हमारी बन्ध बड़ी होगी और पीछे हमें कोई फिक न रहेगी।
 गलती तो होती है, इन्साव गलतियोका पुरसा है। अगर साबिरमें बस
 दिया बुरस्त करना भी इन्सावका काम है। हम अपनी गलतियो १९९९
 कर लेते हैं तो हम इन्साव मन पाते हैं।

॥ ११६ ॥

११ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनों,

कम मैने करपायी कैपोंके बारेमें कुछ बातें कही थी। सबेरी तुमिमें
 कुछ छूट गया था, बाब उसे विस्तारसे कहता हू, क्योंकि मैं उस चीजको
 बहुत महत्त्व देता हू। अगरचे हमारे महा बार्मिक और दूसरे भेले होते
 हैं, कातेस भिखती हैं, काफ़ीतें होती हैं अगर काम तीरपर हमें कैप जीवनकी
 भावत नहीं। मैं १९१५में छुट्टार कुछ मेलेपर गया था। मुझे और
 मेरे साबिबोंकी जायत सेवक सब (सर्वेन्ट्स आफ़ इंडिया)के कैपने काम
 फलेका जीका मिला था। अगरचे मेरी और मेरे साबिबोंकी छाप्पी
 तरह सेवकाय की गई, अगर मेरे मनपर वह असर पडा कि हमारे लोपोकी
 कैपने रहना नहीं आता। हमें सार्वभूमिक सफ़ाईकी तरह ध्यान देनेकी
 भावत नहीं। परिणाममें अभावक गवनी पैदा होती है और दूसरी बीमा-
 रिया भूट निकलनेका सतरा रहता है। हमारे पाछाले इस अगर बने
 होते हैं कि क्या बाव करना। बावब यह कहता ज्वावा सही होया कि
 पाछाले ज्वावा ही नहीं पाते। जीव समझते हैं कि पाछाले तो कही भी
 बैठ जा सकता है। और ज्वाबी या ज्वावाकी फिमारा इस कामके

लिए सास पसब किया जाता है। पड़ोसियोंका ध्यान किये बिना, जहाँ-तहाँ बूझना तो अपना एक समझा जाता है। खाना पकानेका इतना ही समझा नहीं होता। गन्धिया तो हर जगह हमारी साधिन होती है। हम भूल जाते हैं कि गन्धी एक सग पड़से बगगीपर बैठी होगी और किसी छूतकी बीमारीके बीजे उससे बिपके हुए होंगे। रखनेकी जगह, सबू बगैर भी ठीक तरीकेसे नहीं लगाए जाते। न कोई चीज बड़ा-बड़ाकर नहीं कह रहा। कैमोने जो खोर होता है उसकी तो बात ही क्या करना।

तरीकेसे कैप बनाने और पूरी तरहसे सफाई रखनेके लिए किसी मिमिटरी कैपको देखिए। न मिमिटरीकी जरूरत नहीं समझता। अगर उसका यह मतसब नहीं कि मिमिटरीमें खुबिया नहीं। वे हमें नियमनमें, साथ रखने, सार्वजनिक सफाई, समयपर काम करना, हर एक जरूरी कामके लिए बतल रहना, इन सब चीजोंमें पाठ सिखा सकते हैं। उनके कैमोमें पूर्ण साति रहती है। वे बटोमें कैमबसका सहर सड़ा कर लेते हैं। न बाह्या हू हमारे सरगार्थी कैप उस सफाईको पढ़ें। सब बर्षा भावे या ना भावे उन्हें एकजीव नहीं होगी।

अगर सब काम करे तो ऐसे कैप सहे करनेमें बहुत खर्च नहीं होता। सरगार्थियोंको खुद खेमें लगाने चाहिए। खुद सफाई करना, सड़ा बगाना, सबके बनाना, सबके खोबना, खाना पकाना, कपड़े धोना बगैर कोई काम ऐसा नहीं, जो उनकी सानके सिसाफ समझा जाय। कैपका हर एक काम हर एकके करने सायक है। ध्यानपूर्वक और समझपूर्वक काम किया जाय तो जगताके जगोसाकने यह सबदीखी जरूर साई जा सकती है। सब भावकी बिपत्तिको जी ईश्वरकी छिपी प्रसादी समझा जा सकता है। सब कोई सरगार्थी कही नो बोक रूप नहीं होगा। यह कमी अकेले अपने-आपका खयाल नहीं करेगा। बल्कि अपने सब मुसीबत-बधा^१ भाइयोंका खयाल रखेगा और जो दूसरोंको नहीं मिल सकता वह अपने लिए नहीं मागेगा। यह बात सिर्फ बिचार करते रहनेसे नहीं

^१ बिपत्ति प्रसन्न।

बल्कि जानकार प्राध्यापिकाँ रेवारेब और खुलुमारि कान भरले
मन्ती है।

रजादारी और कपड़ों का रहे हैं। माया ही बाली ही सचि सचि नये काफ़ी सामान उपहा हो बावला ।

: ११७ :

१४ अक्तुबर, १९५०

माइयो धीर बहनों,

भाग बी बाकी बचलिया बा गई। वहा एक धार्मिक-विभाग
 है, जवनी दो शिक्षाएँ थीर शिक्षाविनिष्ठा बा गई थी। उन्होंने पत्
 फका दिया है, वह बी बचलिया लेनेके लिए। वह विपारी निष्ठा
 ना बचनी थी। बोडी बचलिया आई। लेकिन एक बड़ी बात मुझे
 मुताई मुझे वह धन्डी लगी। उन्होंने मुताया कि जब वह प्रथम रत्न
 काग निकली अने कहा कि उन्होंने हृदय सब थीर मुक्त पत्र होते ही ह
 ती एक पत्रमें एक दिन सब निष्ठा है थीर उक्त रीत काग जोड़ है वो
 विनिष्ठा बाहुने काग बाता है वह सबका सब हर्ष निष्ठा बाता है, न्यायि
 दाना सब बाता है। पैसा बैर बाहरने सब सेवा में एक बड़ा दोष
 बचलिया है। उन दोषने हृदय सब बाते हैं, वह मुक्त शिक्षासयनी शिक्षा
 ने विद्याविनिर्जित नाम अधिरा किया। उन्होंने किनीको जम्बूर नहीं
 किया। बार बचने गय गया कि हन हन मुक्तारको बत रखने थीर
 उनके बी दय बाता है वह बात है वेंगे। उनके पाल जो बना करता है
 वह देखने कीलिय करती है। उन्होंने वह बी कहा कि बोडी बनील
 है उनके हृदय बाता बी पैसा बरेंगी। दोनों काग जुगल बचावा थीर
 धर्म पैसा बना हर्षने करने बापर ने दिया है। वह सब मुक्तो
 उनकी बी बचलिया थीर पैने बा था है उनके ज्ञाना जिय बा। पीछे
 एक ज्ञाने एकनी बाता थीर उनकी बचपली बा। बोडा बडे लेकिन
 एक ज्ञाने बचलिया है बा। कहा, यह बचलिया किनीकी है मुक्त

हो तो वो । मैंने कहा, मैं तो एक भिक्षुक हूँ, बितना मुझको मिल जायगा नूना और उसकी बिसे बरकार है उसे वे दूंगा ।

मेरे पास काफ़ी सिख जाई था गए थे । बो-सीन हिस्तेने धाए थे । उनसे काफ़ी बातें हुई । बाते क्या हुई वह तो मैं आपको बताकर क्या करना उसने कोई ऐसी बुझिया^१ बात नहीं थी लेकिन बावोका निबोस मैंने निकाल लिया है और वह वह है कि वह भी पूरा-पूरा समझ जाय और इसी तरहसे दूसरे भी समझ जाय कि हम इस तरहसे आपस-आपसने सबकर कुछ हासिल नहीं करनेवाले । न्याय देना, सजा देना, बदला लेना इत्यादि काम करना है तो हकूमत करे । हकूमतके मार्गसे बितना हो सकता है उसना हम करें । मेरा ऐसा समझ है कि वह सबके सब इस बातपर राबी है । बाकी हिस्तेको मैं छोड़ देता हूँ ।

पीछे एक तीसरी बात मैंने सुन ली । कुछ आदमीको गिरफ्तार किया गया है । हमारी हकूमत है, गिरफ्तार करे तो वह हकूमतके हाथ है । बाब बफा उनसे निर्दोष आदमी भी गिरफ्तार हो सकते हैं । जान-बूझकर बेगुनाहको गिरफ्तार करें, ऐसी गलती तो हमारी हकूमतसे होनी नहीं चाहिए । और स्वच्छतासे किसीको गिरफ्तार करे ऐसा भी नहीं होना चाहिए । लेकिन कुछ भी करें बाबिर इम्मान तो इम्मान है, बलसिबोसे गए हुआ पुतला है, वह कोई फरिस्ता नहीं है, वह ईश्वर तो है ही नहीं । तो गलतियां करेगा । बलसीने कुछ बेगुनाह आदमियोंको पकड़ लिया तो उसने क्या आबोजन करना था ? लेकिन मैं सुनता हूँ कि कुछ आबोजन हो रहा है कि ऐसे आदमियोंको क्यों पकड़ा, वह तो बेगुनाह आदमी है । बेगुनाह आदमी है या नहीं वह तो हकूमतको देखना है । हकूमतके पास अगर कोई सामान पैदा करके रखे कि फसा आदमी बेगुनाह है वह तो मैं समझ सकूंगा । लेकिन हकूमतको इस तरह हलाक करें, आबोजनके बलसे किसीको छुड़ा ले, तो वह ठीक नहीं है । जब धरोषी सलतनतसे लड़ते थे और बाब बफा वो खेल चलीरहें नेंवे जाते थे उनके लिए कहते थे कि उनको क्यों नहीं छोड़ते, वे बेगुनाह हैं । वह तो

^१ गुप्त ।

या सेमिन राज्यकी मरम्मे वह कुम्हार बे, हमारी मरम्मे नहीं - उस बना तो हमने अथेनी हकूमतके सामने आबोलन किया कि अगर हमारे नेताओंको क्यो पकड़ लिया। सेमिन भाव किसके सामने भावो करें। अपनी सारी मरकार पचायती राज है। पचायतके वह अधिक है, उन्हें नेता भी तो हमने बनाया है। इसलिए मैं कहूंगा कि भाव वह भी नहीं कि आबोलनके बजायने हम हमारी हकूमतको बचाने। एक तो हमारी हकूमत है, उसके पास वह भिखिरी साक्ष्य नहीं है जो अथेनीकी पड़ी थी। अथेनीके पान सारी नीका-सेना पड़ी थी। जिस नीका-सेनाके एक पक्ष कहा गया था कि वह अधिक है, बेबोड है। भाव तो वह भी नहीं बल सपना, वह झुमरी बात है। सेमिन कौन भी हो उसके पान पडा था। उसके बल हमारे ऊपर राज्य बलता था। भाव हम ऊपर हम राज्य बलाते है। अगर हमको मायूस है कि कोई दूसरी या हमारे ऊपर राज्य नहीं बलाती है और जो राज्य करते है उनको ह बनाया है तो बिनको हम बनाते है उसको हम ठा भी सकते है इसलिए मैं कहूंगा कि ऐसा आबोलन हमें नहीं करना चाहिए।

बीबी बाग मैं आपनों मुनामा बाहला हू वह यह है, मैंने इस बारे बाकी गो कहा है कि दिन मरम्मे हिंदुस्थानमें पूरी-पूरी भावि मैं हो मरनी है। यह बेबीबा मरम्मे है। मैं कोई झुम नहीं होता हूँ कि भाव बिन्नीमें टुट गड-गड चलनी ही नहीं। कही एकाव आदमी मार उन मरम्मे कुछ बने भी सेमिन जैसा मिलमिलेवार पहले बलता था मैं नहीं है। यह सच है। हमसे हकूमत तो झुम गह सपनी है, सेमिन नहीं मरगना। क्योंकि मैं हकूमत करनेके लिए नहीं आया हूँ। इसलिए मैं कहूंगा। मैं तो हम उम्मीदमें रहा कि जोमेंकि दिन पट गये है, जन दुग्म बना है और जैसा बर्जमें मदर बना है। हमने पहिले भी भा मानमें जाने थे, मार मार दिया तो पीछे एज हो गए। भाव तो हम जिन जगहों में हो गए कि मारी मर-हमने अधिकसे दुग्म है, हम सच माना मर-म दिया है। अगर मैं बनी मायुमानि बाग है। हीला

यह चाहिए कि हम कोई कुछ बिल न रहें, न मुस्लिम, न सिख और न हिंदू। तो पीछे हमको किसीका डर न रहे। मुसलमानोंको सिखोंका डर डोहना चाहिए, और डरके मारे नाम जाते हैं उसे बन्ध करे। हिंदुओंको और सिखोंको मुसलमानोंका डर डोह देना चाहिए। तब, जब हम आपस-आपसका डर डोह देंगे और सिख, हिंदू, मुसलमान, जब एक दूसरोसे नहीं डरेंगे तब पीछे हम जाते तो एक बड़ी भारी मिनिटरी ताकत बन सकते हैं। और हम चाहें तो हिन्दुस्तान एक बड़ी अहिंसक और प्रवीत सैन्य बन सकता है। वो रास्ते हमारे पास पड़े हैं, तीसरा नहीं है। आज जो चलते हैं वह कोई रास्ता नहीं है। वह तो ईरानियतका रास्ता है। उसमें जाने बढनेका रास्ता नहीं है। तो मैं बतलाना चाहता हू कि किस तरफसे हम एक-दूसरोके नजदीक आ सकते हैं। सबसे बड़ी नीज तो यह है कि मुसलमान, हिंदू, सिख एक-दूसरोकी गलतिया निकालते रहे जैसे आज निकालते हैं, वह डोह दे। सब अपनी गलतिया देखें और अपनी गलतियोंको पहचान-सा बनाकर देखें। ऐसा नहीं कि मुसलमान कहे कि हमने भी एक जमानेमें गलतिया की लेकिन उसमें क्या हुआ, देखो तो सही हिंदू और सिखोंकी जो पहचान-सी गलतिया हैं उनके सामने हमारी गलतिया कुछ भी नहीं हैं। और ऐसा ही हम कहना शुरू करें कि अच्छा नहीं हिंदू, सिख हैं उन्होंने गलतिया की हैं लेकिन मुसलमानोंने किया उसके सामने यह कुछ नहीं। यह जबाब नहीं। गलतियोंका जबाब गलतियोंसे दे दिया इसमें कौनसी बड़ी बहादुरी है ? यह तो जगतमें होता आया है। ऐसा कहकर हम हिंदू और सिख अपने दिलको फुसला ने, मैं कहूंगा कि यह कोई तरीका ही नहीं है। इस तरह हम कभी आपस-आपसमें दिव साफ करके बैठ नहीं सकते। आज तो नीजत महात्तक या यदि है कि पाकिस्तान सरकार कहती है कि इसने मुसलमानोंको हम नहीं जेंगे, तो हमारे दिलमें एक पैदा हो जाता है कि उसमें भी कुछ बनेकी बात है। उसमें बनेकी बात क्या होगी भी। और अगर है तो क्या उसके दिलमें पडा है उससे हमें क्या ? हम इसने बहादुर नहीं रहेंगे कि सकते कुछ न करें, तो पीछे मरनेवाले हैं। इस बातको मैं डोह दू। मैं तो इसकी बात कहता हू मुसलमानोंको, हिंदुओंको और सिखोंको कि दूसरेकी गुनाहकी तरह

इयाप चीज करें। अपने ही गुनाहको कबूल करे। अगर मानते हैं वह गुनाह हुआ है तो उसको कबूल कर लेना चाहिए। मैंने कहा कि एक बड़ी बात है कि वह हिंदू है वह तो हमारे दुश्मन है। ऐसे दुश्मन बनें तो उनका नतीजा बुरा ही मानेबाधा है। पाकिस्तान तो क्या उससे क्या? लेकिन हम पागल नहीं बनेंगे। कसबतक दुश्मन घाब होस्त बनें। लेकिन जब होस्त बनें सब हर्ने ऐसा कहना है कि जिन्नी जाननेमें दुश्मन से सब हमने दुश्मनी की लेकिन अब तो होस्त गए हैं। दुश्मनी बूझ गए हैं। हममें से हिंदू, सिख और मुस्लिम को कोई भी खतरा है उनको साफ-साफ बिलाने कहना है कि हमने भी तो हमसे ही गई, आपकी बतली हुई है तो आप जानें। अगर हम - बतली करें? नहीं करेंगे। ऐसा अगर दोनों आपसमें सच्चा मुना-ज करें, एक मुनाबधा तो यह है कोई अगर एक मुकका से तो हम उसके बारे, लेकिन उनके बचनेमें वह मुकाबला करें कि हम तो बचनेमें नेपुन ही खड़े और बचे बनेंगे। मुकाबला करेंगे भरोषामें, सम्मान होनेमें, मैं कहता हू कि हमारे लिए और है। सब मैं आपसमें किसी कोरु है। मेरे मनमें अगर किसीमें, वही पडा रहता है और किसी ह मरता है तो मर जाऊगा। ऐसा करना मैं जानता हू, दूसरा मैंने भी नहीं है। मरता तो एक विष है ही, कर नहीं सकते हो तो मरो तो धर लेकिन मारना नहीं है। मैं तो सबको वही कहता हू कि धरे डरना भीज जो। करेंगे या मरेंगे। सीखी चीज बही है। अब हमें जान गरी। हमारे मसीबमें जो होना वह दूसरा तो बन नहीं सकता। विनीति दुश्मनी नहीं करली, वह हिन्दुस्तानी आतिका नार्ब नहीं है हिन्दुस्तानी आतिका नार्ब सब हो सकता है जब हम किसीसे बडे ही नर सब डर डोड देने हैं। मुसलमान कहा रहते हैं तो खूँ। क्या हमें ने - बानेने, मैंने मारने, क्यों मारने? क्या सब यहमे हट जाय? क्यों - जाय और क्या हट जाय? आज पाकिस्तानवाले कहते हैं कि हम हमने मुसलमानोंकी हजम कर सकते हैं। मुसलमान तो सारे हिन्दुस्तान पर है। एक छोटा पाकिस्तान पडा है, हममें कौन सब करें? वह - हम और नहीं ने सकते तो मुना होना। उनमें क्या करेब पडा है

पडा या नहीं पडा है, उससे हमें क्या ? लेकिन हम इस चीजको तो समझें कि हमारे पास हमारे भाई भी पड़े हैं। मुसलमान अगर बरमावा है तो उसको मारो, फागून करो जो आधमी बगावत साबित होगा, हिंदुस्तानका बेवफा साबित होगा, उसको घूट करना है तो करो। पाचको करो, पचासको करो, चार करोड़को करो, मुझे कोई परवाह नहीं है, वह तो मैं समझ सकता हूँ, लेकिन एक आधमी को ही मारकर उसको मार जाने वह कैसे बरदास्त हो सकता है ? नहीं करना चाहिए। और हम खुद भी ऐसे पायल क्यों बने ? ऐसे मूखियन क्यों बने ? इसलिए मैंने आपको बतला दिया है कि अगर दोनों हुकूमतोंको अच्छी तरहसे रखा है तो एक-दूसरेके साथ भलाईमें मुकाबला करें। दुम्हारी बसती ज्यादा है वह बताते रहनेसे हमारी बय नहीं होनेवाली है। लेकिन हम समझ जाय कि हा, यह सब बसतिया हुई है इनको हम दुस्त करेगे। और सब साफ कर देने को और है। कह तो काफी सकता हूँ लेकिन आजके लिए मैंने आपको काफी कह दिया उतना हमन कर मैं तो बस है।

: ११८ :

१५ अक्टूबर, १९४७

साइमो और बहानो,

मेरे पास काफी लोग हमेशा आते हैं। उनमेंसे कई लोग शरया-यियोंके लिए कबलिया और कुछ पैसा भी दे आते हैं। एक बहाने आया जो हजार रुपया केक भेज दिया है। दो भाई मुसलमानोंकी तरफने भी आए हैं। उन्होंने इकट्ठा करके कुछ कबलिया और कुछ पैसा भी दिए हैं। मैं कारीगर बोन हूँ। उन्होंने अपने मामलत भी नहीं बताए। मैंने उनसे इन चीजोंको अपने-आप अपने पीछि आइयोंमें बाट देनेको कहा था। अगर उन्होंने कहा कि हम दे बीवें गाबीके हाथमें ही मुपुर्द करना चाहते हैं, क्योंकि पश्चिमी पजाबमें जो हिंदू और सिख बर्बाद हुए हैं उनको वे बीवें बटनी चाहिए। मुझको यह बहुत अच्छा

यहासे न जाए और दूसरी तरफ उनकी सीढ़ीन^१ करता यह और उनकी गुलाम बनाकर रखनेकी कोशिश करू तो फिर वे खुद ही मजबूर होकर चले जाएंगे। अगर मेरी साराब यहा बहुत ज्यादा है तो क्या मैं इसला बमबी बन जाऊ कि दूसरे लोगोंकी बर्बाद ही न करू। ऐसा तो हमने होना ही नहीं चाहिए। सबको हिंदी और उर्दू दोनों लिपियोंमें सिखना सीखना चाहिए। अगर मुसलमान अपनी कुसीसे जाय तो जाने दिया जाय, अगर हमें तो अपना फर्ज पालन करना चाहिए। आखिर यू० पी०में हर जगह मुसलमानोंकी निशानिया पड़ी हैं। आगरा, लखनऊ, बेंगलूर, आबमगढ आदि शहरोंमें उनकी आबादी बहुत बढे हैं। यहा काफी राष्ट्रीय मुसलमान हैं। इसके अलावा हिंदू भी ऐसे कितने ही हैं जो केवल उर्दू जानते हैं। सर सेवकहापुर समू तो एक बड़े उर्दूवा है। क्या उनको बेंगलागरी लिपिमें सिखानेके लिए मजबूर किया जायगा? क्या उनसे यह कहा जायगा कि तुम उर्दूको भूल जाओ? क्या हम अपने हाथसे ही अपने हाथोंको काटनेवाले हैं? अगर हमने ऐसा किया तो हमारी ज्यादातीकी इच्छा^२ होनेवाली है। हम इस तरहसे हिंदू-धर्मकी रक्षा नहीं कर सकते, इसमें मुझे कोई شک नहीं है। हमने पाकिस्तानकी नकल नहीं करनी है। अतः यहाकी इस्लामको, यद्यपि यह मेरे हाथमें नहीं है, अगर मुहम्मदसे मैं उससे कह सकता हू कि जो सर्वजन उन्होंने जारी किया है उसे वे बापिस ले लें।

१ ११६ :

१६ अक्टूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

अब तक मैंसूरको तो मैं भूल ही जाता था। यहा क्या हुआ यह तो आप लोगोंने देखा होगा। श्रीरामास्वामी मुवाविजर मैंसूरके बीवान

^१ अग्रतिष्ठा;

^२ ईश्वर ।

पचाससे आठ हुए सोम भी रहते हैं। मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि कुछ लोग बूझोके फल टोट लेते हैं। किसीको पेड़का एक भी फल छूना नहीं चाहिए। फल तो क्या एक पत्तीतक नहीं छोखनी चाहिए। यदि सोम इस तरहसे छोखने लगे तो बागके भागीको अच्छा नहीं लगेगा। फल काटनेका भी एक समय होता है। अतः उनके साथ किसीको जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए। यहाँ जो लोग आते हैं वे ईश्वरका नाम लेनेको आते हैं। कम-से-कम प्रार्थना-सभामें तो हम सोम पवित्र धीर पाक बनकर रहें। सिवाय भगवानके धीर कोई भीज दिलमें होनी ही नहीं चाहिए। तो फिर बोरी हम कैसे करें। हम सब लोग दुःखमें पड़े हैं, यह एक दूसरी बात है। परन्तु हम अपनी सज्जनताको कमी न छोड़ें।

एक शिक्षायात धीर येरे पास आई है। सारे दिनभर सोम येरे पास आते रहते हैं। उनमेंसे कोई कहते हैं कि प्रार्थना-सभामें सुमने सरकारी अफसरों, पुलिस और मिलिटरीकी प्रशंसा करके उनकी योग्यताका प्रमाण-पत्र दे दिया है। ऐसा मैंने कहा तो है नहीं। यदि कह नी दिया तो बेवकूफी की या अज्ञानताकी मैंने कह दिया। अगर मैंने कहा ही नहीं। मैंने यह कहा था कि उन्हें ऐसा होना चाहिए। यह नहीं कि मैं ऐसे हूँ। यह भावनी ऐसा था, एक बात है और यह ऐसा होना चाहिए विलम्बित दूसरी बात है। प्रमाण-पत्र तो मैं दे ही कैसे सकता था, क्योंकि मैं तो किसीको पहचानता ही नहीं। मुझे क्या पता कि वे सब जाकाबजा काम करते हैं। हमारा धर्म तो है कि जो पुलिस और मिलिटरी कहे, क्योंकि वे अधिकारके साथ कहते हैं, उसका पालन करें।

यदि हम पचासत राज्ज चाहते हैं तो उसका पहला नियम यह है कि वह जो हुक्म करे उसको हम पालन करें। हमने अपनी पचासत राज्जका पूरा नतीजा नहीं पाया है। यदि हम विलसे अधिकृत होते तो बागका यह नजारा हमें देखनेको नहीं मिलता। फिर भी धर्मजी हकूमत तो यहाँसे हट गई। यहाँ जो यवर्नर-जनरल है, वे नी सेनाके एक बड़े अफसर और बागबाही कटुबके होनेपर भी आज हमारे नीकर बनकर रह रहे हैं। हमारा जो प्रधान मन्त्र कहें उसपर उनकी बसना पड़ता है। वे हमारे हाकिम नहीं, बल्कि हम उनके हाकिम हैं। इस

प्रकार जो हमारी हकूमत हो गई है वह बनावत राज्य है और हुकूमत सबको बताना चाहिए। अगर किसीको इस सरकारी सरोके खिलाफ कोई शिकायत है तो उसका इनाम यह है कि वे ६० पाउंड पैसे जाम या बख्शबारी में डूबा दें। यदि किसी भफतरने। या भी है या वह निकम्मा है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जो ज़ीम रिफत में है वे अपने और अपने मुल्क के साथ गुनाह है। धनी कुछ मिलिटरी के बोमोने स्टेशन पर कोरा मारना शुरू कर कि किसी भफतरको कोरा मारने का अधिकार ही नहीं है। अगर हम भी उसके बनावने कोरा मारें तो हम भी वही पीछ छोड़ जाते हैं। १९५५ पहले तो सरकारी भफतर हमारे नीकर नहीं, बल्कि हाकिम बनकर गए थे। वे अपने ही हकूमत के प्रति बफ़ादार थे और यदि उस वक़्त में खाते थे तो अपने ही हकूमत का गुनाह करते थे। अगर आज भी यदि वे करें तो हिन्दुस्तान के साथ गुनाह करते हैं। इतना बड़ा फर्क हो गया है नज़ाबाती के लोग मेरे पास आ गए हैं। पूर्व का पाकिस्तान छोटा मुल्क बोला ही है। उसमें डाका और भिप्लु-मैले पड़े हैं। उन कहना है कि डाका से हिंदू लोग भाग रहे हैं। उनको ऐसा लगता है कि कुछ ब्यापारी होनेवाली है। इस बनावी जाइने में मुझसे कुछ कह लिए कहा है। मैं तो नहीं कह सकता हूँ जो कहता था कि किसीको इस तरह से अपना बतन या अपना स्थान नहीं छोड़ना चाहिए जो बहादुर लोग होते हैं वे किसीसे डरते नहीं। यदि डरते हैं तो वे ईश्वर से। उन्हें बुझा दिया बनकर मतलब नहीं चाहिए। मरने की ता। समझें होती चाहिए। पाकिस्तान हकूमतको वे कहें हैं कि आप ५५५ पाउंड तो मारो, हम आपको तकलीफ़ देना नहीं चाहते। किन्तु बफ़ादार बनकर हम बहा रहना चाहते हैं। इस बहा पाकिस्तान की न काटने की बेवफ़ाई नहीं करने। अगर हकूमत यदि चाहे तो हमको न सकती है, हमारी तकलीफ़ उठा या जीन नहीं सकती। यदि हकूमत न कहे कि राजनाम मत लो, तो उसे तो हम सेवि। यदि वह कहे कि बख्शबारी न नकारा न बनावी, तो नकारा हमारा बख्तर बनेगा नहीं वह हमारे वर्ग का भय बन गया है। अगर वह बात सच है कि बडे-बडे

आवनी तो अपनी जान बचानेके लिए भाग जाए और बेचारे मिस्कीन^१ आवनी वहा पड़े रहे। वहा कुछ लोग काफी ताबावने पड़े हैं। वे इतनी बहादुरी कैसे दिखाएंगे। अगर मैं तिवारत करता हू और मेरे पास काफी पैसे पड़े हैं तो क्या मैं भाग जाऊँ? वह मेरा धर्म नहीं है। जो डाक्टर, भकीव और व्यापारी वहा हैं वे इस बातको देखे कि यदि वहासे छोड़कर जाना ही है तो गरीब लोग उनसे पहले जाएँ। गरीब लोगोंको वही छोड़कर कुछ भाग आनेमें कोई इन्सानियत नहीं है। इस तरहसे वे हिंदू, सिख या इस्लाम-धर्मको बचा नहीं सकते। आप वहा भी जाएँ गरीबोंको अपने साथ रखें। कश्किस्मतीसे मैं आध-पूर्वी पाकिस्तानमें नहीं हूँ। ईश्वरने मुझको कहा ऐसा बताया कि मैं हर जगह हो सकूँ। मैं तो इन्सान पड़ा हूँ और वह भी बहुत मिस्कीन हूँ। अगर आवाज तो वहातक पहुँचा ही सकता हूँ और वह पहुँचा देता हूँ।

इन बगानी आदमोंने कहा है कि मैं हमारे सपिन डा० अम्बेदकर साहबसे भी कहूँ कि वे इस बारेमें कुछ करे। उन्होंने दलित जातियोंमें काफी काम किया है। उनको भी इस मौकेपर वहाके लोगोंको कुछ कहना चाहिए। वे उनको यह सुना दें कि अपना धर्म छोड़कर बिना रहना पाप समझना चाहिए। ऐसा कहनेसे उनमें एक ताकत आ जाएगी।

मुझसे सुहरावर्षी साहबको भी वहा सेजनेके लिए कहा गया है। उनका जाना भी ठीक ही होगा। अगर सुहरावर्षी साहब वहा हैं नहीं। एक-दो दिनमें वहा आ जायेंगे। अगर स्वाजा नाबिमुरीन तो वहा है। वे भी तो ऐसा कहते हैं कि पूर्वी पाकिस्तानमें किसी हिंदू या सिखको हवाक नहीं किया जायगा। सुहरावर्षी साहब भी उनकी मदद करनेके लिए वहा पड़े जायेंगे। नहीं जायेंगे तो करेंगे क्या? आज सबका स्वार्थ इसीमें है कि हिंदू-मुसलमान और सिख सब मिलकर रहें। अगर ऐसा नहीं होता तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों मर जाते हैं।

: १६० :

१७ फरवरी १९१३

भाइयो धीरे-धीरे,

मेरे पास कुछ गलती भी नहीं है और मैं भी जो भी गलती
 है वे बताते हैं कि मेरी गलती भ्रमण नहीं है। मैं प्रार्थना
 अब कुछ रहना है तो भी रागी भी जानती है। मैं जाहिर बां
 बर्बाद नहीं रहना है। जाहिर करने है कि जो भी दिनमें गलती
 वाली चीज है उसको तीन मिनट तक दूँ। लेकिन तीन मिनट
 दिनमें डीक हो जाती है। लेकिन मैं समझता हूँ कि गलती
 अभी है। यह समझना है। मैं गलती बां गलती
 और बाहर नहीं निकलती है। मैं ही दूँ उपा
 निकलती नहीं जाती। लेकिन और तो चाहिए। इन भ्रमणों
 प्रार्थना करने के बाद मुझे भी बन रहा है उसने मैं
 लिए हुए कोई बाधा नहीं पाता। बिना देखी गलती और
 बाधा ही नहीं है। मैं भ्रमण की है गलती ही जो गलती कर
 सब निकलती होती है। मैं एक एक करने में गलती
 बां वे नहीं रहते। तो क्या मैं कोई गलती हो गया हूँ या पहले
 बां करता या बां करने नहीं करता? मैं तो करने ही करता
 और बां भी सुनते हैं। लेकिन अब बदल गया है। मुझे समझने
 है, होनी चाहिए और होनी नहीं है। लेकिन मुझे नहीं होना
 है। मैं नहीं होने देता। मैं तो बां या बां ही हूँ। मैं जानता हूँ
 मैं बां बां करता या नहीं बां बां भी करता हूँ। मेरी सब भी
 बां बां पर पहले भी गलती थी, वह सब भी है और हो सकता है
 बां बां है। मुझे समझना है गलती मैं तो नहीं करता हूँ।
 जो प्रार्थना सुनते हैं उनपर गलती होता है। बां बां स्वभाव में गलती
 है बां ही कर सकता है। इनमें गलती को कोई स्थान नहीं है।

१ बां बां।

आज जो काम कर रहा हू वह रामका नाम लेकर कर रहा हू। उसपर मेरी भ्रष्टा है। तो क्या जबहू है कि इस नामूनी व्यापिके लिए जोर दू। या तो यह व्यापि दूर हो जाती है या मुझको दूर कर देती है। आखरी मर जाता है तो कौन-सी बड़ी बात है? सबके जन्मके साथ मरण भी निश्चय है। अगर रामको मुझसे काम लेना है तो निश्चय रखेगा और अगर नहीं लेना है तो मुझे इसी खासीसे मार डालेगा। अभी मजकीने जो राम-नामका मकान बना है उसने कहा है कि तू रामनाम ले, तू कामको मूल जा, कोषको मूल जा, रामको मूल जा, मोहको मूल जा, लेकिन रामनामको मत मूल, बही ठेरा सहाय है। मजानको गाना और चिंतन करना ठेरा काम है। लेकिन ऐसे भीकेपर जब खासी खासी है तो डाक्टर या वैद्य बताते हैं कि तू पेनिसिलीन ले। वहा रामनाम कहा आया। जब इसी छोटे काममें रामनामपर भ्रष्टा नहीं होती तो बड़े काममें उससे मैं कैसे सफल होऊंगा। इसमें मैं अपने पुस्कार्बसे काम न करू तो हीन बन जाऊंगा, निक्कमा बन जाऊंगा। दूसरे बाहे न समझे मैं अपनी दृष्टिसे बहुत हीन बन जाऊंगा। इस नामूनी-सी खासीको छुटानेमें रामनामको क्यों मूल बाळ।

इमेसा धैने आते हैं आज भी कबलिया आ गई। कुछ चेक भी आ गए। बड़े धीकड़े एक मूसलमान भी निहाफ दे गए। उसमें डारि रसक गई है। बिनके पास नहीं है उनके पास मे पहुचनी चाहिए और उनके पास पहुचानेकी चेष्टा की जा रही है। कहते हैं कि लोगोको बितने उत्साहसे भेजनी चाहिए उसने उत्साहसे नहीं भेज रहे हैं। मैं तो लोगोको बन्धबाव ही लेना चाहता हू कि वे इसनी ठेकीसे कबलिया भेज रहे हैं और पैसे भी भेज रहे हैं। कुछ लोग पैसा इसलिए भेजते हैं कि वे कबलिया सस्ते नहीं खरीद सकते और कहते हैं कि घुम सस्ते खरीद लो।

रावेप्रवानुने बुराकके बारेमें एक कमेटी बुलाई थी। कपडेके बारेमें उसने कुछ नहीं हुआ। कपडे और बुराकके बारेमें महीनेसे बिस चीजको मैं मानता आया हू उसीपर मैं आज भी कायम हू। मैं मानता हू कि गरीब लोग उन्हें परेशान होते हैं और वह परेशानी और भी बढ़ जायगी। मुझको कोई बात निश्चय है और जो किसानोंमें काम करते

हैं वे कह गए हैं कि जो दुग्धने कहा है उससे किसान बोध बहुत हो गए हैं। उनपर जो अकृष बाधा क्या है उसने तो वे झूठ का उनको कुछ तो गीका मिल जाएगा। उनके कहा अनाज तो घरा है। वे सारा अनाज क्या बाएने? पैसा भी उनको पैसा करना है क्या वे अनाजपर अर्क मारकेट करेंगे? किसान बेचारे स्वभावसे होते हैं, उन्हें अर्क मारकेट क्या करना है। मोठा बस-बीस क्या ७ मिल जाय, इसीलिए वे कुछ ही रहे हैं। उनको अर्क मारकेट या ५ क्या करना है। इसीलिए वे फिर कहना और आपसे मारकेट हटू भी कहना कि बाहिर इतनी मछा तो खोलोपर रखो। इतनी हि क्यो नहीं करते कि राधनिको छोड़ दो। उसका मतीया कमी बुरा हो सकता। लोग बसमान हो गए हैं और अनाजको छिया बैठे हैं २ मानकर आप क्यों बैठ गए हैं। बाहिर हकूमत तो आपसे हायने है। कुबारा करना हो तो फिर करो। इतनी भी हिममत आप न २ और उसके कारण बोध इतने परेशान हो कि उसका कुछ हिसाब न मिलता। जो पंचायतका स्वभाव है वही होना चाहिए।

विश्व-मामिक कहते हैं कि उनके पास कपड़ेका डेर लय क्या है, ७५५ अकूम है, वे कैसे निकालें? वे अपने कपड़ेकी बात नहीं करते ये न मानता हू। बिल्कुल बोधोकी बुद्धिसे ही बात करते हैं। अगर बू वे ही जाय तो जो कपड़ा पड़ा है वह खोलोतक बहुत तो बाए। ५ निरुनी मयानक बात है कि हिन्दुस्तानमें अनाज तो पड़ा है, लेकिन निज-पास पहुँचना चाहिए उनके पास पहुँच नहीं रहा है। मुझे ऐसा अनाज है कि इसमें कोई बड़ा बोध है। हमारे विभिन्न सपिसके लोग चुर्बोप बैठे-बैठे काम करना चाहते हैं। उनके सामने टेबुल है, डेस्क है, चाय पड़ी है, बैकन है और नाच पड़ी लगाना, फाइन लगाना नहीं उनका काम रहता है। कम वे फिमालोंके बीच रहे हैं? किसानोंका कम उन्होंने परितय किया है? बडे अकर्मसे न उनसे कहना कि आप ऐसा क्यो मान बैठे हैं कि लोग मर बाएने? आपसे अकृषने बोध मर रहे हैं वह तो हम अपनी खुशी आशोने देख सकते हैं। जो लोग बसमासी और पायसपन करेवाले हैं वे अब भी कर रहे हैं, लेकिन उनकी मच्छी नीचे छिप

जाती है। मैं तो कहूँगा कि दोनों नीचे बितनी जल्दी हो सके निकास देनी चाहिए। अगर स्टॉक बोझ भी पड़ा है तो भी खोप बाध हो जाएगे। कपड़ा, धनाज और सब चीजोंके बाग जो बाध बंध गए हैं वे गिर जाएंगे। अब तो अब है नहीं और हिन्दुस्तानसे बाहर कूट जाता नहीं है, लेकिन काम बढ़ता ही जाता है। यह बड़ी नामोर्धी की बात है। हमारा सिर झुक जाता है। ऐसा मैं मानता हूँ। सरकारको जोयोर बढ़ा रखना चाहिए और हिम्मत रखनी चाहिए। हिम्मतके साथ हम बितनी जल्दी हटा सके हटाना चाहिए। ऐसा मेरा विश्वास है और यह विश्वास मेरा दिन-पर-दिन बढ़ता जाता है।

आज तो हम बेचैनीसे बैठे हैं। क्लिअर हम यही बात सोचते रहते हैं कि मुसलमान मार डालेंगे, हिंदू मार डालेंगे, सिख मार डालेंगे। यही काम रहता है और कोई बेहतर काम बीछता ही नहीं। मैंमनस्य तो है अगर उसका विचार करनेसे हम उसे भूलनेवाले नहीं हैं। हमारा धास्व भी कहता है कि जो उसका विचार करता रहता है वह उस समय बन जाता है। उसका बहुर बड़ जाता है। उसका गया हमको भी हो जाता है और हम भी यही सोचने लगते हैं कि मुसलमानोंको काटो और मुसलमान सोचते हैं कि हिंदुओं और सिखोंको काटो। अगर हम ऐसा ही सोचते रहे तो यह हमारा स्वभाव बन जाएगा। क्या भाषावीरों हमारा यही हाथ होनेवाला है? इसका नाम पचावती राज में कभी नहीं कह सकता।

बलिज अफ्रीकासे मेरे पास छार आया है। छारसे वे लिखते हैं कि तुमने (गांधीजी) हमपर बड़ा उपकार किया है। मैंने क्या उपकार किया; जो मुझे अच्छा भाग्य हुआ उसे कह दिया। सत्ताग्रहमे यह बड़ा गुण तो पड़ा है। अब पचावमे मार्शल-ना चलता था तो उसमें बड़ी आदरिया होती थी। जाओ आदमियोंको पेटके बल चलना पड़ता था। पेटके बल वे चलते थे, क्योंकि उनको अपनी जान प्यारी थी। वे चले। उस गलीका नाम मैं भूल गया—वह छोटी-सी गली अमृतसरमे है। पेटके

‘अब भामूरी’ है जिसके जाने हूँ बहानीयों।

बलने मित्र बिबा रहनेके लिए बचते थे। वही बचोने तो मार डाले जायोगे, ऐसा उनमें कहा जाता था। सिर्फ बिबा रहनेके लिए उन्हें ऐसा क्या करना था, वे खड़े होकर कहते कि हम ऐसा नहीं करेंगे—'वही नहीं हारना जाने लगी थाव थावे।' यह सत्वावृत्ति में विस्फुट रही है कि बाहे जान नहीं जाए, पैसा नसा जाए, लेकिन हारना नहीं। उसमें सत्य था जाता है। असत्य काम करनेसे उसमें असत्य था जाता है। दक्षिण अफ्रीका में बाहे सोम मुहूनीनर क्यो न हो उसके क्या हुआ—ऐसा करनेवाले करोड़ों ही होते सफने हैं। वही जाबोंकी तो आबादी ही है। यदि मैकडो क्या, इस भी ऐसे मिल जाए तो वे हिंदुस्तानका नाम करनेवाले हैं। वे कहते हैं कि हम वहाँके लोगोंको यह भी क्यो नहीं कहते कि वे वैसे नेंगे। यह मुझको भुमता है। वे मिन्कीन नहीं हैं। दक्षिण अफ्रीका में वे पैना कमाने गए हैं; लेकिन हमपर उपकार करने नहीं गए। जो महा लखनेवाले सोम पडे हैं उनके पास वैसे क्याथा नहीं है और पैनेवाले उनको पैने नहीं देते। जो वैसेवाले होते हैं उनको पैना ही दिय हो जाता है। वे सपना मान और सम्मान पैसेमें ही समझते हैं। हम नो लखनेवाले हैं, लेकिन पैने बोडे हैं; लेकिन पैने नहीं तो धनक कौन बचता रहा।

पूर्वी अफ्रीका में हमारे सोम बहुत हैं और पूर्वी किनारा तो हमारे लोगोंने जप पडा है। मैं उनसे कहूंगा कि वे वैसे नेंगे। हमारा हिंदुस्तान तो आज मिन्कीन-ना बन गया है। किन्तु मुझे मैं वहाँ किसीसे कहूँ। वहाँ करोड़पति तो हैं और करोड़ों क्या भी रहे हैं, किन्तु उनपर ईश्वर बरस रहा होनेसे उनके पास भी कम पैसा रह गया है। हमारी कम-मन्दीनीने सटार्ड भी कर रहे हैं। उसमें भी करोड़ोंका पुस्तान हो जाता है। मैं ऊँने कहूँ कि दक्षिण अफ्रीका में जेजनेके लिए पैने दो। दक्षिण अफ्रीका में मैं जब था उस समय सोम पैने सेवते थे—मोखसे महाराज वैसे संभने थे। पन्नाम और भारे हिंदुस्तानमें मेरे पास ५५ ने ७ लाख रुपये-तक पैना। आज तो मैं ऐसा नहीं समझता कि मैं ऐसा कह सकता हूँ। यारोसममें बहुत हिंदी पडे हैं—मैं वहाँ कभी हूँ। वहाँ हिंदु-मुस्लिम-मनास नहीं हैं। मुवासानों भी बाकी हिंदी पडे हैं। उनके पास पैने भी है।

वे बराब पीते नहीं हैं, रबीबाबी भी नहीं करते। उन्हें खानेके लिए देने चाहिए। खानेमें फिटना वैसा जगता है? वे कह सकते हैं कि हम अपने लिए थोड़े सब रहे हैं—हिन्दुस्तानके लिए सब रहे हैं। हा, मैं यहासे देने जेबनेबाबोपर सकाष्ट नहीं बाल सकता, लेकिन कह नहीं सकता कि आप लोग देने जेबें।

: १२१ :

१८ अक्टूबर १९४७

भाबो और बहनो,

कल और चेक था तो अब भी रहे हैं, किन्तु उनकी गति सतोप-जनक नहीं है।

मैंने देखा है कि सरदार फटेमने भी एक निवेशन निकाला है, जिसमें उन्होंने भी लोभसे मिला था। वह बताता है कि अगर हकूमतकी ओर बैठकर बैठे तो काम निपट नहीं सकता। हकूमत उसतक पहुच नहीं सकती है। अच्छा है उन्होंने भी निवेशन निकाल दिया। जो लोग धान बाटेको बर्बाद नहीं कर सकते उनके पास किसी-न-किसी तरह मोहन और पहननेको कुछ पहुचाना या सके तो बड़ी अच्छी बात है।

डाक्टर सुनीला नायर भी वही काम कर रही हैं। वह हमेशा पुराने किलेमें जाती हैं और इयर-उबर भी जाती हैं। धान कृस्तेन बसी गई है, क्योंकि वहा एक नया लिबिर बन गया है। वहा सब नोन इतजाम तो कर रहे हैं, लेकिन वह बड़ी डाक्टर हैं। उनके साथ दूसरी जेडी डाक्टर भी गई हैं। दूसरे लोग भी गए हैं। श्रीमती बान मर्पाट भी गई हैं। उन लोगोंको बितनी मदद पहुचार्ड या सकती है पहुचार्ड जाए।

कल मैंने आपने हिन्दुस्तानीके बारेमें बातचीत की थी। अब उसके बारेमें काफी लोग नूने सिख रहे हैं कि धान वह कैसा बड़ा काम कर रहे हैं। मैं मानता हू कि वह बड़ा काम नहीं है। मैं समझता हू कि

ये हिन्दुस्तान और सबके लिए बड़ा अच्छा काम कर रहा हूँ। उससे
 खबरगत होती है। वे लिखते हैं कि आखिरमें हिन्दुस्तानीका जो रिज
 बना वह ऐसे बनानेमें बना जब कि हम कुछ गिरे हुए थे, कुछ
 थे। हम वह भूल जाते हैं कि जो लोग आए वे वे आए तो वे
 करनेके लिए; लेकिन यह गढ़ इसी भूखमें। इस भूखमें जिस तरह
 बसर हो सकता है वह उन लोगोंके लोभा। सब भूखिए तो उसीमेंसे
 उर्दू निकली और उसे देखकर पड़ुंवा दिया गया। सबसे-सबसे
 उन्होंने दूसर-दूसकर अपनी और फारसीके साथ साथ दिए। उसकी
 भी पहना दिया। उसका व्याकरण भी नहीं है। हिन्दुस्तानीमें तो
 नहीं है, उसका व्याकरण भी नहीं है। उर्दू जो फारसीके
 है वे बर्तते हैं। उनको भूल-भूलकर निकाल केना हमारा बर्त बोड़े
 हो जाता है। जो कहा आए पीछे वे नहीं रह गए। उन्होंने यहाँके
 रिजान सब से लिए। उससे हमारा साथ होव करना तो निधी होव
 जाता है, ऐसा मैं मानता हूँ। लेकिन भाव जो करता हूँ उसका
 दूसरा सब है। मैंने काफी लिखा है। मस्तेबीका तो ऐसा है कि मैं
 बड़ा बलवतके लिए आए थे। उनका विनाय ऐसा नहीं बलवत था।
 हिन्दुस्तानके तो होकर बैठे नहीं। वे बड़ा बलवतके लिए बोड़े आए
 वे हमेशा ऐसा सोचते थे कि वे बाहरके हैं, बाहर ही रहेंगे, बाहर
 पत्ते और बाहर ही उनके बच्चे पत्ते। पीछे उन्होंने मस्तेबी नामा
 बाखिश कर दी। उन्होंने पीरे-पीरे उसका हाथ भी बनाया। बड़ा
 ऐसी कोई बात नहीं हुई जो उर्दूमें हुई। उर्दू तो सबकी या उस वक्त
 और दूसरी चीनरी नामाएँ बलवती थीं उनमेंसे निकली। लेकिन मस्तेबी
 यह हाथ नहीं है। भाव तो यह ठीक है कि मस्तेबी हदूमत हमारे प-
 नहीं गई है, लेकिन सबर-मस्तेबी नामाकी हदूमत हमपर पत्ते, यह ह
 पर काम करे, हम उसके बिना फारोवार बना न सकें तो हमारा यह
 हाथ होना? क्या करोड़ों लोग मस्तेबी सीखेंगे? क्या मस्तेबी हमारे
 राष्ट्रभाषा होनेवाली है? बहुत साफ-साफ मैं कहना चाहता हूँ कि मैं
 तो कभी ही ही नहीं बननी। इसमें मस्तेबी कोविषयक न करें। मस्तेबी
 करने हैं तो इसमें हमें हारना है।

एक सम्जन लिखते हैं कि तुम तो मूल जाते हो। हिंदुस्तानमें जो लोग काम करनेवाले हैं वे सब अंग्रेजी पढे-लिखे हैं। अंग्रेजी पढे-लिखे मुट्ठीभर हैं। ठीक है कि वे कोर्ट दरबारमें चले जाते वे भीर बहा अंग्रेजीमें काम करते थे, क्योंकि उनका उनपर प्रभाव चलता था। जो मुलासीमें रहता है उसकी तो यह भावना हो जाती है कि वह राज्यभाषाको पसंद करे। यह तो हुमा, अगर वे बेचारे बिनाकी मातृभाषा हिंदुस्तानी या हिंदी है, वे अगर कहीं कोर्ट दरबारमें जाए भीर अंग्रेजीमें सब काम चले तो वे समझेंगे ही नहीं। वह तो हमारा अक्सका दिवाजा निकालना हो गया। हम विस्फुल समझना नहीं चाहते। हमारा स्वार्थ किसमें है वह भी हम समझना नहीं चाहते। अब अंग्रेजी सत्तनत तो चली गई। उसके साथ ही अंग्रेजी बच्चोंको भी उस जगहसे निकालना होगा जो हमने उसे दे दी है, और जिस जगहके लिए वह हो नहीं सकती। एक नई मुझ्को लिखते हैं कि वह जो दुग कहते हो उसनेसे तो एक चीज और निकल जाएगी। लोग तो ठीक-ठीक मतलब लगाते नहीं हैं।

आज हम बीवाने जो बन गए हैं। हिंदू मुसलमानसे जडाई करें, उसके साथ न बैठे, उसका गला काटें, यही रह गया है। राजकुमारी अमृतकीर, जो कम या परतो ही क्षमनेसे सीटी है, मुझ्को सुनाती थी कि क्षमनेमें जो गरीब लोग क्योंसे पडे हैं उन्हें बहासे हटना है, क्योंकि वे लोग मुसलमान हैं। हम ऐसे बाहिल बन गए हैं। उनको हटनेमें कितनी तकलीफ बर्दास्त करनी पडी। पाकिस्तानमें काफ़ी हिंदू पडे हैं—वे भी यही शिक्षा-वश करते हैं। यह सब सिलसिलेवार चलता गया।

कुछ लोग कहते हैं कि सत्तनतभी जो हिंदी है वह राष्ट्रकी बचान है। अंग्रेजी तो अब जानेवाली है। अगर लोग सूबेकी भाषाने अपना काम चलाएंगे। बहा भगडा होनेवाला है ऐसा डर है, और सही है। उसने आपसमें गुणा पैदा हो जाएगी। अंग्रेजी तो रह नहीं सकती क्योंकि अंग्रेज तो अब मुट्ठीभर हैं। वे हकूमत तो चला नहीं सकते।

देवी हो जाती है तो उसमें दूसरोका दोष है, हमारा तो है ही नहीं, ऐसा मानना गलत है। जिसने भक्त हो गए हैं उन्होंने यही कहा है। तुलसीदासजी भी यही कहते हैं, या कहो कि मुरदासजी भी यही कहते हैं 'भो सन कौन कुटिल मन कामी', मेरे-जैसा कुटिल कौन है, गलत कौन है, कामी कौन है? तुलसीदासजी या मुरदासजी ऐसे नहीं थे हमारी दृष्टिमें, अब वे अपनी दृष्टिमें ऐसा मानते थे। जिसमें ईश्वरमें दूर रहते थे उससे कुछ गुस्सा होता था, पीछे बाहे भाई, बहन, भइये, दोस्त सब क्यों न पाए हो। उसके बिलमेंने यह आह निकलती है कि कुटिल, लज्ज, कामी कौन होगा? ऐसा उन्होंने कह दिया और यह अच्छा है कि वे हमेशा अपना दोष अपनेमें ही ढूँढते रहे। ऐसा ही यह भजन है—'भजहु न निकने प्राण कठोर'। यह कहता है कि भक्त ईश्वरके ध्यान न हुए तो भक्तिक प्राण क्यों न निकले? हमेशा तो इस भजनकी वगैरह आत्मी गाते थे, लेकिन बाज बजा जब वह हानिर न होता या बीमार पड़ जाता तो मगनमान उसकी गाता था। वह मनीष-आत्मी तो नहीं था लेकिन उसका कठ अच्छा था। उसेका वह भजन अब भी मेरे कानोंमें गूँजता है। वह तो आत्मिका स्तन था। आत्मिकी बलानेमें वह पहाड़-सा था, बहुत मजबूत। कुबाली अपने प्राण बलाता था तो सबसे धाने बला जाता था। दक्षिण धनीकाने तो उसका शरीर बहुत मजबूत था। यहा उसकी कोई बीमारी तो नहीं थी, लेकिन शरीर बीम हो गया था, क्योंकि उसपर सारा बोझ तो वहापर भी था, लेकिन वहा तो एक अनोखी चीज यह है कि करोड़ों आधमियोंमें काम करना पड़ता था। रचनात्मक कामका भी बोझ उसपर पड़ता था। रचनात्मक कामके बिना हम रह भी कैसे सकते हैं! उसके और स्वराज भीज हो भी क्या सकती है? प्राण स्वराज तो मिला, लेकिन उसकी फ़िस्ती कीमत है? मिला तो भी क्या, प्राण हम खिन्न करते हैं कि अगर हम रचनात्मक काम उस वक्त कर लेते तो हमें यह वक्त नहीं देखना पड़ता जो हम प्राण प्रत्यक्षमें देख रहे हैं। स्वराजकी जो कल्पना हमने की थी और वह कल्पना बड़ भी गई थी, क्या वह यही है? अगर उस वक्त हम इतना कर लेते

यह भनी आया नहीं है। हिन्दुस्तानमें क्या मुसलमान हिन्दूके दुस्मन बने और हिन्दू मुसलमानके दुस्मन बने? क्या हमारे भाई आपस-आपसमें दुस्मन बनेगे? तो मैं यह क्यों कहता हूँ, एक बच्चा तो बोझ-सा कह दिया था लेकिन मैं बार-बार यही कहना चाहता हूँ कि अगर हम सबमुझ ऊपर आना चाहते हैं तो हम भाई-भाई बनकर रहें। भाष तो हम गिर गए हैं और भनी भी सामने गिरते जा रहे हैं। हमारे दिलमें खून भरपूर है, रेष भरपूर है, हम मुसलमानको देखकर मटक जाते हैं, उसको मस्जिदमें ईश्वरकी मक़ामता हुमा देखते हैं तो उसको मार डालते हैं, उसको अपना दुस्मन मानते हैं और सोचते हैं कि कब उसको यहांसे निकाल दें, उसकी मस्जिदको मरिद बना लें। और उसमें क्या गुनाह हो गया है, वैसा मरिद है, वैसी ही मस्जिद है, फिर क्या बीज है इसमें कि मुसलमान मरिदको डा दें और हिन्दू मस्जिदको डा दें। ईश्वरकी दृष्टिमें दोनों ही गुनह-गार हैं। जो हम करे वह मुसलमानको बुरा बने और जो मुसलमान करे वह हमें बुरा बने तो वह स्वराज्य कैसे हो सकता है? भाष तो हम ऐसा बन गए हैं, लेकिन हम इस अंगारमेंसे निकलना चाहते हैं।

यह तो मैंने कह दिया कि दिल्लीमें मैं 'करू या मरू', ऐसा कहकर आया था। किया तो नहीं, हा यह ठीक है कि जब हमेशा नवाईकी खबर आती नहीं और जो जगता है कि हम भाई-भाई-बैसे पडे हैं, लेकिन यह तो मनको बीजा देनेकी बात है। जो भिमिस्टी और पुलिस यहां पड़ी है, यह तो उसकी वजहसे है। जो जब मुसलमान है क्या उनके दिलमें ऐसा होना, क्या मेरे दिलमें भी ऐसा होना। मैं तो ऐसा नहीं समझता। मेरे पास भी यहा मुसलमान है। क्या आप यहां भी उनका अपमान करेंगे? क्या आप मेरे देखते उनको मार डालेंगे? उनके मारनेके पहले आपको मुझे मारना होगा। खेब अम्बुत्सा साहब फल यहां पीछे बैठे थे। कुछ कास्मीरी पक्षि भी उनके साथ थे। खेब साहब हमारे दोस्त हैं। हमारे एली साहबके भाईको भी फिरीने फाट डाला मचूरीने। फिरीना बेनुनाह आकमी था। हमारा तो वह खादिम^१

^१ सेवक।

था। उनकी विधवा बेवस रहा आकर बैठी है। सोमोके दिवसे न हो इसलिए मैं इस कसब कमाको छोड़ना नहीं चाहता। बहुत न है मेरे दिवसे। बहुत कुछ बालता भी है; लेकिन मैं उस कमाको नहीं चाहता। लेकिन निचोड़ तो बता दू। अगर हम ऐसा को पाते हैं कि जब हम भगवानका काम नहीं करते हैं तब वह न। नहीं निकल जाता, ऐसी भाव दिवसे निकले तो उसका पहला न है कि हम अपने दोषोंको पहचानने से डरे और दूसरोंके दोषोंको अगर हम सारी दुनियाके सामने वह बाहर करे कि हमारा दोष है, दूसरे सब मने साधनी है तो वह बुद्धिहीन नहीं है, न निरते नहीं है, हम सबसे ही है। हम बहादुर बनते हैं।

अगर हम रामराज्य वा ईश्वरका राज्य हिन्दुत्वाने स्थापित चाहते हैं तो मैं कहूँ कि हमारा प्रथम कार्य यह है कि हम दोषोंको पहचानने से डरे और दूसरोंके दोषोंको कुछ नहीं। नहीं कहना कि दूसरोंके दोष कुछ नहीं किया। बहुत किया है। कि राजा वा उसे मैं नहीं जानता, ऐसी बात नहीं है। लेकिन हम मैं ऐसा नहीं देखूँ। देखूँ तो बीबला का बाईसा, हिन्दु विद्वान नहीं कर सकूँ। अब मैं यह समझू कि मेरा कोई दुःख नहीं है और अपना सारा दोष दुनियाके सामने रख और दूसरोंको न देखूँ। तो क्या हुआ, भगवान तो देखने ही वाले हैं। मेरेको कोई बचक नारे, काग काट से, कर्तव्य काट से तो न जान-सी बात है। मरना तो है ही। इन्साफ करनेवाला ईश्वर तो लेकिन मैं भी कुछ कर उसको न भूलूँ। इसलिए मैं अपनी पीठको बारमुला भाँसा हूँ कि आप अपने दिनोंको ऐसा साफ करे कि न दुनियामें मुझे कोई चुनानेवाला न हो। भाव मैं यथा वा तो मुझने कि किसीमें कैसा है? तो मेरा फिर झुक गया। क्योंकि मनी हिन्दु-मुसलमानोंका विष एक नहीं हुआ है। विष तो जब भी बुझा यह तो ठीक है कि कोई एक-दूसरेका नभा तो नहीं पाठना - क्योंकि पुष्टि नहीं है, निमित्त नहीं है, सदाश्री नभ इतना न. है, बहादुरताही नहीं है। इसलिए एक-दूसरेको जाटते नहीं हैं।

उससे क्या हुआ, अश्वेत भी तो ऐसा ही करते थे। जो विस्तीर्ण हम देख रहे हैं, वह बेचना नहीं चाहते। आब मेरी पाख फट गई है। अगर वह पाख फिर आ आब तो उठकर पाकिस्तान बना जाऊंगा और वहा भी बेचूंगा कि हिंदू या सिखने क्या मुनाह किया है और अगर किया भी है तो उससे क्या। उनका वहा मकान है उसमें वे क्यों न रहें? लेकिन आब मैं किसको किस मुहसे कह सकता हू। मैं तो सबको यही समझता हू कि अगर ईश्वरका कर्शन करना है और वहा सच्चे स्वराज्यकी स्थापना करना है तो एक बिल होकर सारी दुनियाको कह दो कि हिंदुस्तान कोई गिरा हुआ मुल्क नहीं है। इसका क्या गतीबा आता है? यही कि एक तो हम ऊंचे जाते हैं दूसरे हमारे मुल्कमें जो मूल है, व्यास है उसे दूर करनेके लिए बल मिलेगा।

आब सारी दुनिया हमारी ओर वह देख रही है कि अगर एशियाको ऊंचा जाना है, अगर अफ्रीकाके हम्मीको ऊंचा बनना है तो हिंदुस्तानको उठाना चाहिए। हिंदुस्तान तो एशियाका या अफ्रीका और कहो कि यूरोपका भी मध्य-बिंदु बना हुआ है। अगर हिंदुस्तान कुछ कर पाए तो सारी दुनिया उससे आश्वासन लेगी।

दुनिया तो ठीकसे काप उठी है। अगर दुनियाको नहीं आनेवाली है तो हिंदुस्तानसे ही। मेरी तो मनबानसे प्रार्थना है और आप जोयोसे भी कि हम इस तरफका बताने रहे कि हमको नहीं मिले और हमारी मार्फत सारी दुनियाको नहीं मिले। सारे एशियाके जोब और अफ्रीकाके जोब हमारी ओर देख रहे हैं। उन सबको ऐसा बने कि वहा अभी तो कुछ होगा तो फिर सारी दुनिया मानना शुरू कर देगी।

१ १२३ :

गौनवार २० अक्टूबर १९४०

(विविध संदेश)

राजकुमारीने प्रार्थनाके बाद कब खबर दी कि एक मुस्लिम

मार्ड जो हेल्थ माफिटर थे, वह जब कामवर थे, उनको किया गया। वे कहती हैं कि वह माफिटर मज्जे थे, अपना बराबर धवा करते थे। उनके पीछे विषया है और मज्जे विषयाका फल यह है कि सुनीके हावसे उनका और मज्जेका भी खून हो। उनका बीहर सब कुछ था, रोटी नहीं करते थे।

मैंने कम ही थापको कहा था कि जैसे वेखनेमें जाता है, ऐसे ि खनमूच जाता नहीं हुई है। जबतक इस तरहके दुःख किस्से न- हन देखीकी ऊपर-ऊपरकी सातिपर खुशी नहीं मना सकते। वह कमरकी साति है। जब मार्ड इकिन, जो धन मार्ड है निरुत्त है, वे- बाइसपाय थे, सब ऊहोने ऊपर-ऊपरकी हिस्टोरानी सातिकी न- साति कहा था। राजकुमारीने मुझे यह भी बताया कि कुरान में मुसाबिक धक्की बल करनेके लिए कासी मुसलमान मिम ६ कला भी कलि हो गया था।

इस किस्सेकी सुनकर मेरी तरह हरेक खमबिख स्त्री-पुरुष न- उठेंगे। देखीकी यह हावत। बहुतसे लिए मरुपमत्ते डरना, नाहे किना ही ताफवर कमी न हो, मुनिलीकी पकी मिमानी है। थाथा खसा हू कि बसालासे गुनहाराको हूठ निकालेंगे और न- सना देंगे। अगर यह साबिरी गुनाह है, तो मुझे कुछ कहना नहीं, म- इस किस्सेके गुनाह हनेसा जर्मनाक वो होतें ही है। अगर मुझे न- डर है कि यह तो एक मिमानी है, इतने किस्सीकी खीरकी न- होना चाहिए।

कबलके लिए मैंने था ही रहे हैं। सब सातामोका बहुत- प्रामार मानसा हू। यह खुशीकी बात है कि किडीने भी यह नहीं कहा हमार बाग हिस्से वा मुसलमानको दिया थावे।

मुझे कुछसे एक और खतरेकी तरह भी थापका ध्यान चीन है। मैं नहीं जानता, यह खतरा खनमूच है ना नहीं। एक मजेव न-

एक खुली बिट्ठीमें, जो जिनके साथ उसका खन हो उनके लिए है, निकले है—

“हम कुछ लोग एक निर्जनसे बने-कटाववाले इलाकेमें पड़े हैं। हम ब्रिटिश हैं और बरखोसे खुद तकसीफें सहन करके भी हमने इस मुल्कके लोगोंकी सेवा की है। हमें पता भला है कि खुफिया सबेस भेजा गया है कि हिंदुस्तानमें जितने अंग्रेज बच गए हैं, उन्हें कत्ल कर दिया जाने। मैंने अखबारोंमें प० नेहरूका यह वक्तव्य पढ़ा है, जिसमें उन्होंने कहा था कि सरकार हरेक बफादार शासकके नाम और मानकी हिफाजत करेगी। अगर देहातोमें पड़े लोगोंकी रक्षाका करीब-करीब कोई सामन नहीं। हमारी रक्षाका तो बिसकुन नहीं।”

इस खुली बिट्ठीके और भी कई हिस्से यहा दिए जा सकते हैं। मैंने कतरेने आगाह होनेके लिए यहा काफी दे दिया है। हो सकता है कि यह झूठ बरही हो। अगर ऐसी चीजोंकी तरफ सापरवाही रजना ही अफसमवी है। मुझे आशा तो यह है कि पत्र निजनेवालेका डर सर्वथा निर्मूल होगा। मैं उनके साथ सहमत हू कि दूर-दूर देहाती इलाकोंमें पड़े लोगोंकी हिफाजत करनेका सरकारका बायदा कुछ भानी नहीं रहता। सरकार यह कर नहीं सकती, फिर चाहें मेरा और पुलिस पितनी ही होमियार क्यों न हो। और हमारी मेरा और पुलिस तो दगनी होमियार है भी नहीं। रक्षाका पश्मा माधन तो अपने हृदयमें पड़ा है। यह है दरमने अटन अज्ञा। दूसरा है पड़ोसियोंकी मददगना। अगर यह दो गरी है तो अफस यही है कि हिंदुस्तानमें जहा मेहमानोंकी ऐसी बंकरती है, ठोठ दिया जाने। अगर फलन इतनी गराब भ्राज है नहीं। उन भवा कर्म है कि जो अंग्रेज हिंदके बफादार नोकर बा-बर गता चाहें उनकी मरक उन गाल ध्यान दे। उनका निमी तरफा अफमान नहीं होना चाहिए। उनकी मरक जग भी सापरवाही नहीं होनी चाहिए। अगर हमें अफमानगना आगरे गान्ध बनकर दिगना है तो वेनी और माधमिष अफाओंकी न्य करेने भी दूनी बर्षी अंग्रेजी मरक मर बागता रहता है। अगर हम अपने पड़ोसियोंका अफमान

नहीं रखते, बाहे में गिनतीमें फिटने ही बोटे क्यों न हो, तो हम रखनेका बाधा नहीं कर सकते ।

: १२४ :

२१ फरवरी १९४०

भाइयो धीर बहानो,

आज भी मैंने एक किस्सेकी बात सुन ली । उसमें यह कोई चाईसा बत्त नहीं हुआ, लेकिन यादव यह हिंदू या धीर व गवर्नमेंटकी नीकरीमें था । यह अपना काम कर रहा था । व गया था । कहा कोई होगा जिसके हावमें बहुत पसीबी, तो उस मार डाला । उसने कोई गुनाह किया था, ऐसा मैं नहीं बन, डारने दिवमें आया कि यह भाइयो ऐसा है कि हम नै ऐना नहीं करता, इसलिए मार डाला । तो मैं इसनेमें कहला ही पाहला था कि यह भी हमारेमें आहत हो गई है धीर गुप्ती आजादी है, धीर आजादी शुरू करते ही हमारे बन गया कि हमारे पास बहुत है, इसलिए उसको मार डालो । भाइयो उम्मे पसीबी मारता है, उसका मिथाना बनाता मिथाना बना है जो उम्मे पसीबी मिथाना बनाता है । ऐसे दम्भार है, जो धम्भार है, उनको भी मिथाना बना लेना है जो नग नाम ननेता हुम हुआ है । बन दिवमें आ गया तो कि उम्मे मारो, मैंने इन बन आय जो हिन्दुआनमें वे लाग लाउ बहुत ही गुन रोनेवाना है । मोई भाइयो भा। भाइयो है । मैंने है कि ऐसे तो जारी गुन बंद पड़े है, । भाइयो भाइयो नहीं मरना । क्योंकि जिसके पास बहुत पसीबी गुन बना है जो उम्मे दिवमें ऐसा नहीं कि दम्भारता गुन नै, गुन बना है जो जिना भी नग ही नहीं मरना । हीनता है जो भाइयो भी ऐसा है कि जिसके दम्भारता बनाया है, यह

भाव। वह तो ईश्वरका काम हुआ। जो आदमी जीवको बना नहीं सकता उसको सेनेका अधिकार कैसे आया? इन्सान जीवको बना पीछे ही सकता है। लेकिन हिंस्रके बिलसे होता है मुसलमानका शिकार करना, मुसलमानके बिलसे होता है सिखका शिकार करो और सिखके बिलमें मुसलमानका। भाव तो यह करे, लेकिन बिलका शिकार करना या वे जब बिले जायें तो पीछे इन्सान आपस-आपसमें शिकार करे, यही कानून दुनियाका बना आया है। यही कानून हमने शुरू कर दिया है। तो मैंने सोचा कि यह बात तो कर नू।

दुसरी बात यह है कि काफी लोगोंको हकूमतने पकड़ा। उस बनानेमें हमारे हाथमें तो आजादी थी नहीं। भाव भी मानो कि आजादी नहीं पाई। जो आदमी पकड़े, वे तो पकड़ लिए गए। बहुत कर सकते हैं तो बाइसराय साहबके पास अभी करो। यह कहें कि छोड़ना है तो छोड़ें। लेकिन बाइसराय साहब खुद नहीं छोड़ सकते। वे बाका-नून काम करते थे। मार्शल या नसे तो भी बाकानून काम करते। उनके कानूनमें अपसर रहते हैं तो बिलको वे कहें बेटे कि छोड़ो तो छोड़ दिया जाता। बाकीको वे कहते कि तहकीकात करनेके बाद ही छोड़ सकता हूँ। यह तो ठीक कानूनी बात है। जिसको पुलिसने पकड़ा है और बाका-नून पकड़ा है, उसको पीछे जो सजावार होगा तो सजा हो जायगी। लेकिन भाव तो हमारे हाथमें हकूमत या नहीं है। हमने तो हकूमत बसाई नहीं थी। कोई यह ठान ले कि मैं तो वहाँका प्रधान हूँ और प्रधान-की हैसियतसे बनो, उसको छोड़ देते हैं, ऐसा हम अगर शुरू कर दें तो हमारा बाला हो जायगा। कभी लोगोंको पकड़ लेते हैं, क्योंकि वे पूर करते हैं और पीछे छोड़ दिया, यह होना नहीं चाहिए। कभी भी मैं यह द्या कि यह हकूमतका काम नहीं है कि एक आदमीको पकड़ लिया, बाकानून पकड़ा है, पुलिसने पकड़ा है, पीछे शिकायत आई या कि फरियाद आई तो हकूमत किस कारणसे और कैसे छोड़े। हमने पुलिस बनाई है, कोर्ट बनाए हैं, प्रोसीक्यूटर^१ बनाए हैं, तो क्या वे

^१ अभियोच बनानेवाला।

सब क्रिश्च हैं ? मेरे दिलमें आता कि एक रिस्तेदार है, दोस्त है, सिध मिशरिय थार्ड तो मैंने उनको छोड़ दिया। वह कैसे छूट है ? मेरे दिमागमें तो छूट नहीं सकता। अगर बेगुनाह है तो उनको ही ही नहीं सकती। इस तरहने हमारा जो त्यागका बफर है साफ रनें। अब भी हमारे पास येने होने चाहिए। जो पुतिव है जो प्रोमीसपूटर है वे सामका केन बचाए और वह सोरें कि केन तो कोर्टने मनायापता हीं ही, ऐसा नहीं होना चाहिए। भिन्को होनी चाहिए उनको ही हो। लेकिन वह सब कानूनमें न काय रहा। माना कि एक मादमीने करियाव भी कि इसने पु हुमका किया, उसको दफ्तो। पण्ड किया। क्या उनको कुडालेने में प्रबलके पाम बाऊ ? प्रबल कहेंगे कि कोर्टके पाम जायो। - फरियादी पीछे यह जहे कि पकडकर क्या करें, हमारी कुमवी न- उनको छोड़ी तो पीछे यह छूट जायगा। यह कहे कि मैंने करियाव की, लेकिन उन वारेनें मैं मुताबादेगा नही बाह्या कि मैं उसको देना चाहता हू। पीछे कोर्टं उनें छोड़ सन्या है। पीछे मोचो- रहा, उसकी भी यह वही सम्मति दे सकता है। तो फिर यह ही ज- है। अगर कोई क्षुभी है और उनमें खुश किया है और उसको सुझावों तो यह करियादीकें कहनेपर भी छूट नहीं सकता। वह छूटे तो हम- काय नहीं कम सकता। मैंने तो बरामन की है और मादमी भू- है। तो मैंने ? जो क्षुभी है उनकी कहना है और यह सन्या कि गन तो मैंने किया, लेकिन सब दित पाफ है, समा न ही अकल है। भिन् मादमीने करियाव भी है या मिशरिय की है यह पू- करें कि जायो गन नहीं होना चाहिए, एम तो उनमें दोष न- मुन्नें सावर उनमें गुन-क दिया तो सब उनका गुन न-ले मुक्तो बना जायगा। अब यह दोष सन्या है, मिशरिय की व- सन- है, मुदरगन ११ सन्या, सन्या की भिन् अरेया, तो फिर स- अरेया में उनका मादमी की व- ? गृही भी कोर्टने रहेगा कि-

‘कमिन्।

तो किया, गुनाह किया, लेकिन इस वक़्त तो माफ़ करो, जो धिकायत करता है वह तो मुझको माफ़ करता है। पीछे हो सकता है कि मैं अच्छा काम करना और सारी समाजकी सेवा करना, इसलिए मुझे छोटा था। वह तरीका है ख़ुलीको छोड़नेका। वह तरीका बाकानून हो सकता है। लेकिन हमारे हाथमें जो हथियार थाई है उसका गैरइस्तेमाल न करें। अगर भाव हम गैर-उपयोग कर लेगे तो सब कहेंगे कि इसकी छोड़ो, उसकी छोड़ो। बेचारा वह प्रमाण भी क्या करेगा? गलतीसे किसीको छोड़नेका हुक्म कर दिया। हुक्म तो कर सकता है, लेकिन वह करेला नहीं। उसका भाई है, बोलता है, पत्नी है, कुछ भी है अगर उसने गुनाह किया है तो भी वह यही कहेगा कि वह मेरा काम नहीं है, कोर्टके पास जाओ, प्रोसीक्यूटर है उसके पास जाओ, धिकायत करनेवाला है उसके पास जाओ। मेरे पास कुछ हो नहीं सकता। प्रमाण जबतक ऐसा साफ़ नहीं होता जबतक हम अपना काम नहीं कर सकते।

मुझको, ऐसा ही कहो, एक शिष्यायत मित्री है कि मुझे १५ मिनटसे ज्यादा कहना नहीं चाहिए। मैं इससे ज्यादा कहना भी नहीं चाहता। मैं काफ़ी बोलता हूँ। मुझको शौक तो है नहीं कि बोलता ही रहूँ। बोलना है तो कामसे बोलना। लेकिन मुझसे कहा गया है कि १५ मिनटसे ज्यादा न बोलू तो उससे लोगोका ज्यादा कल्याण होगा, लोग ज्यादा सुन लेंगे, दुम्हारी बात तो सुनना चाहते ही है। इससे मेरी भाव हो जायगी कि १५ मिनटसे आगे बढ़ना ही नहीं।

१ १२५ :

२२ अक्टूबर १९४७

माझो धीर बहो,

पहले तो मैं आपकी यह ख़बर से हूँ कि कबल अभी भी आ रहे हैं। मुझको अभी पता लगा है कि जो सी कबल भाव था गए। ऐसे ही आते रहते हैं और ऐसे भी आते रहते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ जो

बहुतेरे प्राचीन पंडे हैं, उनकी खोजनेकी भीज बिना जायकी थीर ।
बाबी है । यह प्रमाण है कि इन्हीं उपायों हमारे सोचनेमें रही है ।

एक बार मेरे पास था यह वे । मैं कोई हमेशा, हमेशा
आमद ही उन्हें प्रसन्नवार पड़ता हूँ । उन्हें यह तो होता हूँ, लेकिन
पढ़नेमें बोली निकलती होती है । अब एक बच्चा बारह-बड़ी यह लेता
थीर आहिस्ता-आहिस्ता पढ़ने लगता है, ऐसा ही मेरा हाथ ।
बच्चेसे कुछ बोला गया जानता हूँ, लेकिन धीमे-धीमे पढ़ता ही
गया यह सकता हूँ । तो उस भाईने मुझको एक उन्हें प्रसन्नवारनेसे,
उन्होंने जो भीज भाई है उसे पढ़कर सुनाया । उसको सुना -
मुझको कुछ हुआ । सब चीजोंका पूरा ज्ञान तो मैं कहा करता
आता हूँ । उनमें लिखा है कि अब तो हमने सब कर लिया है
यह जो प्रसन्नवार-नवीन है, यह एडीटर साहब, उसने अपने
सब कर लिया है, लेकिन उम्मीद है कि सारे हिन्दुस्तानमें ऐसा
नहीं किया है, कि नव-नव मुसलमान पाकिस्तान बने आए,
ऐसा है उसको कह जाता है । या तो उसको काटो या पाकिस्तान
जाओ । यह प्रसन्नवार या एडीटर साहब को लिखता है अगर यह
पढ़े तो यह बड़ी धर्मकी बात है । उसकी कलमसे ऐसी चीज नहीं
जानी चाहिए । ऐसे प्रसन्नवार तो लिखने ही नहीं चाहिए । अगर
मनमान ऐसा लगते हैं तो वे जोजोरो अपनी राय बता सकते हैं
लेकिन जब ऐसा वे कहते हैं तो यह दुष्टी पीटकर कहनेकी-जी
होती कि या तो मैं पारितोषिक बने आए या उनको मारो । तो मैं
नेने कहा दिया था कि जब मैं पारितोषिक बने आऊँ तो पीछे
आऊँगे ? आपन-आपनमें आऊँगे ? तब उन्होंने तो मुझको यह
दिया कि आपन-आपनमें आऊँगे मुझको भी तो नहीं । वह तब तो आप
आपनमें आऊँगे ही है । जब वह बच्चा मुझसे आर ने निगाही पीछे
छूट नहीं जाता । वे तो आपन आर होमजाया है । लेकिन आपन
नहीं आऊँगे दिया हीर उन्हें आता है नोकीर ही है, आर तो
तो ऐसे आऊँगे हीर आपन आर है । पीछेआर की, आरिज
को छोड़ो, कहा-आरिज। मेरे, मैं आर आर हीर आरिज,

धीर-उपनें भी थाता है उसको हम बहुत-भास्य मान लेते हैं। लोग जो इस तरहसे पापमं बन गए हैं धीर-अवधार उस पापमपनका नाम उठाकर ऐसा ऊर्ध्वतो यह बहुत बुरी बात है। ये इस बारेमें इससे अधिक नहीं कहना चाहता।

हृदयी बात तो यह है कि हर जगहसे शिकायतें आ रही हैं। यह ठीक था कि अघेभी बनानेमें तो जो बेबी दियासले भी वे अपने दिलमें भाव पैदा करती थी। बोझ-सा अकृष्ट तो अघेभी सस्तनत रहती थी। उसको तो रहना ही था, क्योंकि उसको सस्तनत बनानी थी। भाव तो यह क्यों नहीं है। हा, यह तो है कि भाव सरदार पडेन है—उनको हमने उनका महकमा है, इसलिए यह तो कुछ करे? लेकिन वे बेचारे क्या कर सकते हैं? उनकी तो अपनी बबान पड़ी है—हिस्टुरागनी सेवा कर भी है, इसलिए सरदार कने है। लेकिन उनके पास उखवार नहीं, बहुत नहीं, सकर नहीं। वे कुछ बोडे सकरी हैं, वे कमाडर भी नहीं हैं कि उनका हुक्म चले। जबतक सिपाही लोग समझते हैं कि वे तो हिस्टुरागका मनक खाते है और उनके सामने वे हाकिम है—मनम यह कि वे बडे सेबक हैं, ऐसा मानकर वे चले तो कान बड़ा सीमा-सीमा चले।

भाव दियासलमाने कहते हैं कि हमने अवेन-ममपर बस्तकत तो कर दिया, उससे क्या हुआ? इससे क्या हमारे पाससे कुछ छील बोडे ही दिया? हमारे पास भी तो सिपाही हैं। अब अघेभी सस्तनत भी तब वे दिलीने-से थे, लेकिन अब बोडे ही हैं? बेबी दियासलें को कुछ करना चाहती है, कर सकती है। मैं कुछ भी तो बेबी दियासलका हूँ। इसलिए मैं जानता हूँ कि वे क्या कर सकती है, फिलाना बसा कर मचती है। मैं बेबी दियासलको राबाघोसे बडे मचते कहूँ कि अगर भाव उसना यहकार रखेने कि जो रैयत पड़ी है, उसको नार सकते हैं, काड बनने है, तो वे यह नहीं सकते हैं। मैंने तो यह दिया है कि जो राजा लोग हैं उनका त्याग है अगर वे रैयतको द्रुस्ती बन खाते हैं। अगर वे रैयतका

हकिम बनकर रहना चाहते हैं, उसको बूझना चाहते हैं और चाहते हैं, तो उनका कोई स्थान नहीं रह सकता, इसमें मुझे कुछ नहीं है। हिन्दुस्तानका क्या हाल होगा, यह तो ईश्वर ही जानता है। वो राजा सोम पडे हैं उनके पास तो कोई भाग्य नष्ट ने कभी हिन्दुस्तानका राज नसा नहीं सकते। पीछे जाइए हम पुन बन जाए तो हम बनैये। तो क्या राजा सोम भी गुलाम बनैये ? बनाना क्या गया। यह एक मुन बा। भगवती सस्तनत भी, उसने कि वो महा राजा सोम हैं वे भी भगवते हैं; उनके मार्फत राज न- यह वो उन्होंने अपना स्वार्थ समझकर ही किया। तो फिर उसमें न सोम क्या निकालना ? लेकिन साथ हम ऐसे कमजोरी है कि दोनों पापक बनें और आपस-आपसमें लड़ें, अन्यथा कोई एक या दोनोंको कोई बुरी या हीनरी शक्ति या दो-बार शक्तों । जुनकर हिन्दुस्तानको बा बायवी। तो फिर उसके साथ ही राजा ने को भी बा बायवे। अगर वे हिन्दुस्तानके बलवार रहते हैं और रैन नीकर बनते हैं तो और हैं। वे तो रैनपते भी कहूंगा कि यह पुन क्यों बनें। अगर राजाओंके पास हथियार हैं और वे बेहथियार हैं तो न हम भी तो सस्तनतके सामने लड़ते थे, हम भी बेहथियार थे। न कुपकर भी हथियार रहे ही, ऐसा नहीं था। अगर होते तो मुन तो इनका हस्त होना ही चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं था। करे लोगोंने उसका हथियारसे सामना किया। हमने सोचा कि अगर न तो एक बाबको काटेंगे, दो बाबको काटेंगे, तीन बाबको काटेंगे, भा- निपतोंको काटेंगे, हम ४० करोड़की आबादी हैं, काटेंगे-काटेंगे उस हाथ काप बायवे। ऐनी वो रैनत पड़ी है, उसको बाबायी तो मिलनी चाहिए भी और यह निती। उस आबायीका हम क्या करते हैं, न सत्य बात है।

वे तो कहूंगा कि राजा दोनोंको पापक नहीं बनना चाहिए। न समझना चाहिए कि वे स्वेच्छावारी नहीं बन सकते, अनिवारी न बन सकते। वे घराबमें छाप दिन पडे रहें, ऐसा नहीं हो सकता। न तो वेने आप लोगोंको और आपकी मार्फत राजा लोगोंको कह दिया।

एक वस्तु तो मैंने कह दिया था कि जब ब्रह्मरूप था रहा है और पीछे एक दिन छोड़कर बकरीब था रही है। दोनों करीब-करीब एक साथ मिलते हैं। हम हिंदू और मुसलमान दोनों समनीय रहते हैं, हमेशा रहते हैं, साथ तो ज्यादा समनीय हैं। क्योंकि साथ तो एक-तरफ ही हो सकता है। अगर हिंदू पावन बन जाय और समने कि चीज मिल गया—क्योंकि बकरीब है, तो मुसलमानोंको फाटो। हमारा ब्रह्म भी हो गया है। ब्रह्म क्या है ? रामजीकी बीत मगानेके लिए ही ब्रह्म है। पीछे कहते हैं कि एकादशी है, उस दिन तो रामका मछने साथ मिलाव होगा। उसने तो हमें सबब सीखना है, मन-मनसाह सीखना है, बर्न क्या चीज है उसको सीखना है। अगर वह हम सीख दें तो हम ब्रह्मरूप अपने धर्ममें मगाते हैं। ब्रह्मरेके दिन कुर्गी-पूजा भी होती है। वह क्या चीज है ? हम सब धूमके आगे रहें, वह कुर्गीका धर्म नहीं है। कुर्गीका धर्म यह है कि वह एक-दुई व्यक्ति नहीं है, उसकी उपासना करते हम अपने सब सकते हैं।

दूसरी तरफसे ब्रह्मरूपका यह मतलब नहीं है कि हम सारे मिलकर एक, दस, दस बनाए। उसको हमारे बुधरात्मने नवरामि कहते हैं। जब हम अपने वे सब नेरी मा कहती थी कि नवरामिकी जाना नहीं जाना चाहिए। अगर जाना ही है तो फल ज्ञानी, ज्यादा-ने-ज्यादा हुए पीछी, लेकिन अभाव न जानो। अगर सबमूख पूरा-का-पूरा उपवास करो तो सबसे अच्छा है। नेरी मा तो बड़ी उपवास करनेवाली थी, बिचका मैं तो कोई मुकाबला नहीं कर सकता था। नेरे बडे माई तो मुकाबला कर ही नहीं सकते थे—मैं बोझ-सा मुकाबला करता था। लेकिन उसने उपवास करनेकी जो शक्ति थी उसके सामने मैं एक दिप्रीमा हूँ, ब्रह्माहू। ब्रह्मरूपको हम इस तरफमें मगाते हैं। हा, पीछे वो विषादी है उसमें जानी सकते हैं, बोझा नीव कर सकते हैं, लेकिन ब्रह्मरूपकी बिलकुल नहीं। यह जो नवरामिका धर्म है, क्या उसको टोड़कर हम काट-झूट करने ? पीछे बकरीब है। वो मुसलमान माई है उनकी हमने बरा दिया है। अपने हमारे धर्मों माई है। वो राष्ट्रवादी माई है वो भी साथ मरोमान पड़े हैं। वे भी भागते हैं, लेकिन बरा जाय ?

हम ऐसे बेरहम बन जाय कि उनको भी भया बने। तब वह धाति कैसे हो सकती है ?

क्या ४ या ३॥ करोड़ मुसलमानोंका साथ करोने बोलने या हिंसा करना सोचने ? अरे, वह भी तो नाम ही अगर तुमपर भी ऐसी बबरखस्ती हो तो क्या तुम ५ बन जाओगे ? तुमसे कहा जाय कि कमया पड़ते हो ॥ नहीं तो मार डाले जाओगे। मैं तो पहला आदमी हूँ कहूँ कि आप पहले हमारा सबका गला काट लो, पीछे इतनी तो हमारेने हिम्मत होगी ही चाहिए। इस तरह हिंसा करनेको कहना बेकार बात है। मुसलमानों को ऐसा हिंसा ऐसे हिंस्रों क्या मैं हिंसा-धर्मको बना सकता हूँ। मुसलमानों को हिंसा चाहिए जो स्वयं रखे। मैं ऐसा बमझी और आसिम आसिम बनना और धर्मका पावन करना बोलो बीच ही तो मैं जो दो दिन हूँ अपने हम डरें नहीं, सामोरीने रहे भी-पूनाह हो गए हैं उनका हम प्रार्थनास वा पश्चात्ताप करें भाई बनकर बैठ करें। इतना अगर आप कर सकते हैं तो मुसलमानों को भी आप नहीं पाओगे।

एक हिंसा भाईने मुझने पूछा कि पचास जाओगे ? मैं पचास भेजो ? हा, जाऊंगा तो उनमें भी लड़ूंगा। बेटी होगी है वह तो आप जानते ही हैं। उनसे बैठ बरबर ५॥ नामों आदमी को बराने कहा जाने है, हिंसा और मिला है जगजगत् में नहीं बैठ अपने ? जगजगत् यह नहीं होना मुसलमानों को नहीं। तो पीछे मुसलमानोंको क्या जाना है ? तो हिंसा तो होनेवाला नहीं है। मैं जाना कि यह तो जाना उनको नहीं तो हिंसा नहीं है। उम्मीद तो ऐसी है कि जो जाने है उनका नाम कि वह हिंसा-मुसलमानों की नहीं है, दोनो हिंसा-मुसलमानों की नहीं है।

१ १२६ :

२३ अक्टूबर १९४७

बादलो और बहनी,

तो भाई मित्रते हैं, "हम मरजापी हैं। अपने मित्रोंकी शरणमें रह रहे हैं। सर्वोके कारण हम बहुत दुःखी हैं। कृपा कर हमें बताइए कि कबन उभा खाई कहाने प्राप्त करें। क्या ऐसे सरजाधियोंके लिए कोई प्रवच है ?" वे राजपिंडीके हैं ऐसा उन्होंने मित्राई है। अब इस तरहसे तो और काफी लोग पड़े होंगे। जो खाईका और कबल मकट्टे किने जा रहे हैं वे तो समस्त जन लोगोंने लिए हैं जो कौनों पड़े हैं और बिनके पास यह तो बाहिर ही है कि कोई भी भोड़नेको नहीं है। उनके लिए यह सब प्रवच हो रहा है। काफी बाटा गया है, और भी बाटा जायगा। खाईकी ताबाकने ऐसे लोग पड़े हैं, कोई बच हों, ऐसा बोधे ही है। ही सकता है कि भाबो भी हो बिनको वे भी मित्रनी चाहिए। एक बिबिर हो, जो खुलनेने है, मरजापी^१ सरकारने अपने प्रवचने से किया है। बहा काफी ताबाकने लोग पड़े हैं और रोच नए भाटे रहते हैं।

किन्ही सहजने भी ऐसे बिबिर है। तीन तो हैं कम-से-कम, चायन पार है। पूर्वी पचावने भी पड़े हैं। बहा भी उनको वे भीने मित्रनी चाहिए, जो यहाके जोयोको भिने। वे भी तो सरजापी हैं। लेकिन जो सरजापी मित्रोंके यहा रहते हैं उनको भोड़नेके लिए कुछ देना, यह तो मित्रोंका काम रहता है, ऐसा मेरा समझ है। लेकिन ही सकता है कि जो लोग बेचारे अपने घरपर रहते हैं वे खुद अपने लिए भुसीकचने खाई या कबलका प्रवच कर सकें, तो उनको, बिनको वे खा वेते हैं, कहावे वे ? यह नहीं हो सकता, ऐसा मैं नहीं कहता। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि बिनको खाईकी सरकार है उसीको वे ही जाय तो सबको पकच नहीं सकती; क्योंकि ऐसे आपनेबाने सब शरीर ही हैं, ऐसा मानकर मैं नहीं चलता। बिनको चाहिए ही

^१ शैलीय।

इसलिए भाग लेते हैं, ऐसी बात नहीं है। मैंने बहुत-से हैं। ऐसा काम मैं करता ही आया हूँ। सब बनूँगी^५।
 महा भी मुझे ऐसा ही करता पड़ा था, इसलिए मैं
 कि इस काममें किसी मूढीमत है। वे भी नहीं हैं।
 तो कोई भिक्कावत मेरे पास नहीं है, उनके बारेमें तो मु
 नहीं है। लेकिन जो सम्मुख परीच है और मिलने
 नहीं, उनको पहचाना ही चाहिए, इसमें मुझे कुछ भी है।
 है। लेकिन मुझे ऐसे आश्चर्योंके बारेमें पता कैसे चलेंगा ?
 कोशिस तो करता हूँ। बिलकुल ही खबर नहीं होता, ऐसा
 और न मैं यह जान लेता हूँ कि मुझे कोई बोला होगा।
 भी जाने से से। क्या वे नहीं कुछ ऐसा बता सकेंगे ? मैं तो
 सचता, लेकिन मेरा खयाल है कि कहीं भी उन्हें भिन्न
 पाल तो करता है, नहीं है ऐसी बात नहीं है। वे सब कबल
 लेनेके लिए पड़े हैं। दूसरे भी तो जमा कर रहे हैं, वे मेरे
 सभी महा रोज सौम खाते हैं। वे बिठला-भदिरमें जाते
 वह घर गया है। महा कोई जगह ही नहीं है, भिन्ना से
 लेने हैं। उनका तो काम ही रहा है दूसरोंके दुर्गम हिम्मा
 पोखानी पड़े हैं, जो रात-दिन वही काम करते हैं। लोगों
 है, वहाने कबल खाते हैं, जाला जानें हैं और उनकी देते
 घर रोज सौम खाते हैं सब उनकी भी यकाम होनी है।
 उनकी देते नरें ? यही हमारा हाल है। तो इन लोगोंको मैं
 जगता कि जो लोग नरें हैं वे अपने लिए भी कुछ करें। ५.
 है कि जब नरें लिए होना है तो उनके लिए भी होना
 नरें लिए घर ही जानूँगे तो सचता है। अगर उनके लिए
 और दूसरे लिए दूसरा, जो कि इस बड़े पैमानेपर काम
 करने। अर्थात् हमें भी वे पैमानेपर काम करना है। अर्थात्
 हममें से हमें हमारा काम मैं दिया। सब जगह भी भिन्न-

क्या ही भावना, उसको बर्दाश्त कैसे करेंगे ? मैं नहीं चाहता कि एक दिनके लिए भी किसीको बर्दाश्त करना पड़े। एक तो यह बात है।

इसरी बात यह है कि भाव भी मैंने सुन लिया है कि बूफि काफी दुर्गम हुआ गई है, तो एक बेचारे नरीम मुसलमानके भी दिमने आया कि मैं भी अपनी दुकान खोलू। भाव यह चला गया था अपनी दुकान खोलने। ऐनकका यह काम करता था। ऐसे आदमी तो मुस्लिमोंसे आमतो ही दिमने दो-चार कमए करताते होते। मैं नहीं जानता कि यह कील था ? उसका नाम भी मुझे पता नहीं है। जब यह दुकान खोलने का रहा था तो उसको काट काया। यह सारी दिल्लीके लिए कमकी बात है। किसीने काटा होया, एकने या दोने ? लेकिन दो आदमी कैसे काट सकते हैं ? जो मिस्टर है, पुलिस है, कहा कहा भी ? दुकान कोई कोनेमें तो थी नहीं ? रात में थी नहीं थी। कोई बूफिवा सीरले तो दुकान होती नहीं है। सब आदमी आते-जाते रहते हैं। हमसे किसीने रोक्नेकी भी चेष्टा नहीं की ? उसको काटनेकी हिम्मत कैसे हो गई ? मैं इस बारेमें बेपरवाह रहते हैं कि जाने दो, एक मुसलमानकी मार किया तो अच्छा ही है। जब ये हिंदुको मारते हैं, दिल्लीको मारते हैं तो हम मुसलमानको मारें। ऐसा बबला सेनेका क्या दिमने पैदा हो जाता है। इसको रोक्ना चाहिए। अगर न रोके तो दिल्ली निकम्मी होनेवाली है। दिल्लीमें क्या थाप ऐसा मानते हैं कि यहा हिंदु और सिख ही रहते ? अगर ऐसा है तो फिर दिल्ली मिह कायमी। उसने सारी पुलिस बर्दाश्त नहीं करनेवाली है। दिल्लीने पीछे एक क्या क्या-बीका इतिहास पत्र है। उस इतिहासको पिटानेकी चेष्टा करना भी पागलपन होया।

भाव मुझे, जो कुछ रोगसे पीड़ित है, उनके बारेमें कहता है। हिंदुस्तानमें भी ऐसे काफी लोग पड़े हैं। वे रास्तेमें बिछाई नहीं रखते हैं, क्योंकि उनकी बेचनेसे जुना पैसा हो जाती है। किसी को कौन है वे समझ पायी है और जो धनरे नरीम है वे पायी नहीं है, ऐसी बात नहीं है। यह तो ठीक है कि किसीको बर्बाद है उसने कोई-न-कोई लोग तो किया ही है। जब मुझको खाली हो गई थी तो मैं समझता हू कि

कुछ-न-कुछ शोक तो मैंने किया ही होया। बीवको मैं पाप न खासी तो हर एकको ही हो जाती है, उसने कोई यह मैं माननेवाला नहीं हू। तो मैं जो मेरे लिए कानून सारी दुनियाके लिए है। कोठ भगडीका रोग है। यह मैंने उसके लिए काफी क्या है। मैं तो मानता हू कि यह होता है। और कोठ और खासीमें कोई रोग नहीं है। होता है उसको बोला रोग व्याधा होता है, लेकिन जाता है, हाव बना जाता है, नाक बचा जाता है, ऐसा बन जाता है। लेकिन यह असुरक्षित है इसलिए बचा जाता नहीं है। मैं तो कहूँ कि इससे व्याधा नफरत होनी न जो नम मसीन रखता है। जिसका शरीर मसीन है, नम। ममकी मसीनतासे ही होता है, और साव ही जिसकी पृथ्वी है, जो भववानका ममन न सुनकर कुष्ठोका इतिहास पृथ्वी कोही है। ऐसे मर्मबाधे तो बहुत पडे हैं, क्योंकि पृथ्वी है, इसलिये कीम परमाह करया है। लेकिन भूमि को नहीं होता है इसलिये हमारे बिलमें उनके बारेमें, बिलको है, नफरत होती है। हमारे पास काफी ईसाई लोग थे। हिन्दु कोष्ठ-मस्मदाज थे वे सब ईसाई लोगोंके हावमें थे और थे। वे लोग परोपकारकी दृष्टिसे उनकी सेवा करते हैं। आज भी ऐसे लोग पैदा हो गए हैं जो परोपकारकी दृष्टिसे जगते हैं। एक परोपकारी पुरुष, मैं तो उनकी महात्मा ही कहूँगा, मने हैं। वे बर्गमें रहते हैं और विनोदा जानेके बडे विषय है। तो बहुत बडे आदमी हैं। तो जगहोंके बिलमें हुआ कि न-कुछ करें। तो उन्होंने कोष्ठियोंकी सेवा करनेका काम विनोदाने भी उनकी ऐसा करनेके लिए प्रेरणा दी। वे ले हैं। पैसेकी उनकी परफार नहीं। वे डाक्टर तो नहीं हैं, जो उसका काफी सम्मान कर लिया है। काफी लोग उनकी मदद करती बर्गमें एक छोटे पैमानेपर, एक समितिनी सारफ्त एक होनेवाला है। जो लोग इस काममें लगे हुए हैं वे ३०

वहा मिलेगे। हा० सुनीला नायर भी उसी कामके लिए जानेवाली है। वो तो जाना या हा० जीवरामको, रामदुमारीको भी, उसको पता भी है, क्योंकि वह मेरे साथ सेवाश्रममें रही है। लेकिन वे तो वहा काममें फंसी हैं, इसलिए जा नहीं सकती। उनसे कोई आग्रह तोकर नहीं सकता कि आपकी जाना ही होना। और आग्रह करे कौन ? सेवाका काम है, जिसकी जाना है, वे जाय। लेकिन उनकी फुरसत नहीं है, इसलिए नहीं जायगे। एक और भाई है बिनका नाम जगदीशचन्द्र है। उनकी खुद भी कोठ हो गया था। वे मद्रासके रहनेवाले हैं। वे बड़े सम्मान और विद्वान पुरुष हैं। वे श्रीनिवास शास्त्रीजीके भक्त थे। तो उन्होंने अपना जीवन इस काममें बना दिया है। वे भी जानेवाले हैं, और भी जो दूसरे हैं वे भी जमा हो जायगे। वह कष्ट कष्ट है, परिक भी है और उसने काफी लोग काम भी किये हैं। कलकत्तामें भी एक बहुत बड़ा कोठ-अस्पताल है, जो बड़े पैमानेपर काम करता है। परोपकारकी दृष्टिसे सब काम होता है और आहिस्ता-आहिस्ता बढ रहा है। जब मैं कलकत्तेमें था तब मुझको से गए और कहा कि बोझ-सा भिज तो दो। लेकिन मैं वहा जानेकी परीक्षा कर रहा था। और भी हिन्दु-स्थानमें इधर-उधर काफी कोठ-अस्पताल पड़े हुए हैं, लेकिन जितने पैमानेपर वह काम होना चाहिए उसने पैमानेपर नहीं हो रहा है। मैं यह नहीं कहता कि जबको इसने विलम्बी सेवा चाहिए, लेकिन हम धुनें तो सही कि जब हम ऐसे जाली पड़े हैं तो इस तरहके कामोंमें रहें। क्या हम एक-दूसरेको भाव करनेमें ही फंसे रहेंगे ? मैं तो कहता कि वह सबसे बड़ी व्याधि है, सबसे बड़ा कोठ है। हम अच्छे कामोंको भूलने हैं और हम आपस-आपसमें नर बाघे हैं। हिन्दू मुसलमानको मारता है, मुसलमान हिन्दू व सिक्खों को मारता है। हम कबतक आपस-आपसमें एक-दूसरेको मारते रहेंगे ? क्या ही बेहतर हो कि हमारे पास जो समय है उसका उपयोग करें और उसकी ऐसे कामोंमें दे दें, जिससे प्रेमभाव कायम हो।

^१ कोशिका।

: १२७ :

२४ अक्टूबर १९४७

आइसो और बहलो,

असवारोंमें कुछ बार-बार रोम पहले घानव यह ७
 कि वहाँ जो अबदूर-सम्मेलन होनेवाला है उसमें एम्बिआके
 आयेगे। वह सम्मेलन २७ तारीखको होगा। असवारोंमें ५
 या कि मैं उसकी कार्रवाई शुरू करनेके लिए जाऊंगा। मुझे
 पता ही नहीं था और किसीसे मैंने शायद ऐसा कहा भी
 असवारानवीस था। मैंने उसको कहा कि वह खबर कहाँसे
 उसका विरोध कीविए और कहिए, ऐसी बात नहीं है।
 जीवनजीवन राम आए थे। मैंने उनसे भी कहा। उन्हें
 आपकी तो भाषा ही है; लेकिन उस दिन तो सोनवार
 सब घायल हुए हैं सब पुछनेकी कोई बात ही नहीं रखी
 बारोंमें तो ऐसा ही है। मैंने अपाहरणवासीसे भी कहा कि
 नवासीसे वह किया हो, तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। ५.
 जानेकी कोई जरूरत है नहीं, क्योंकि मैं और किसी कामका
 नहीं। शायद तो मेरा एक ही काम है और नहीं काफीसे
 ऐसा मैं महसूस करता हूँ कि अगर वह सफल हो जाता है तो
 जीवनजलका कार्य है। हम सब एक मुस्को है और सब ५
 रहे। क्या जो हिन्दु-सिक्ख-मुसलमान, पारसी और ईसाई हैं
 सब मिलकर रहे तो मुझे और किसी बातकी परवाह नहीं
 हिन्दुस्तानमें है, उनको नहीं रहता है, फिर वे कहाँमें क्यों ५७

जो आपकी वनपनदे ऐसा स्वयं देखता थावा है ५७
 आपका प्यारता है। उनसे आपापीके लिए मेहनत की और
 मिल भी गई; लेकिन उसने साथ यह बाहर कीव गया।
 दूर सगता है। इससे दूर काम और क्या हो सकता है?
 दूरे कामकी रोकना है। प्रयत्न मेरा काम है। अगर वह हो
 हो, नहीं होता है तो न हो। समयमें आवा है 'कोई निबो कोई

यह तो सब एक ही है, क्योंकि यह तो रामचन्द्रका मजन करना है, और सब उसको प्रतिष्ठा कर दिया है, लेकिन प्रवचन तो करना चाहिए, उन फिर उसमें सारा जीवन व्यतीत करना है।

हमें चाही तरह भाषा की कल्पना आ जाए है। बिनाको नेचना चाहिए उनको सेवा जाता है। बकसत बहुत है, इसने कल्पना चाहिए कि सबको कैसे पहुँचाए जाय ? सबको पहुँचाना बहुत बड़ा काम है। ईश्वर सबको पहुँचा देना। बी मिराबार है और करोड़पतिसे मिचारी बन गए हैं, क्या उनको क्या और बूझा रहना पड़ेगा ? अगर हम मन्त्रे हैं तो ईश्वर जाना देना और अगर हम नासायक बने रहते हैं तो मूखा और नया रहना पड़ेगा।

बिनाको कुछ रोग रहता है उनके बारेमें मैंने कल एक बात कही थी। जगदीश्वरका भी नाम दिया था। वे बड़े मित्रान् भावनी हैं। उनको यह रोग था। यह बिलकुल गामूह^१ तो नहीं हुआ है, लेकिन काफ़ी अकृष्यने सा गया है। वे इसमें काफ़ी काम करते हैं, काफ़ी बिचस्पनी लेते हैं, उनसे मिलते-जुलते हैं। नेहनती तो बबरदस्त है ही। वे महासर्प रहते हैं, बर्षामें नहीं, लेकिन कई दिनोंसे ज्वरि^२ हैं। उन्होंने इस बारेमें मुझसे बात-फिरावत की थी। उनका मन मिले कई दिन हो गए। उसको भाषा मैंने पढ लिया। मैंने उसमें एक बात देखी है, बिसे मैं यहाँ साफ़ कर देना चाहता हूँ। वे कहते हैं कि बिसेको कुछ रोग हो गया है उसको कोड़ी मत कहो। लोग उससे बुरा अर्थ निकाल लेते हैं—उसको वे अकृष्यसे भी बबरत मान लेते हैं। अकृष्य बड़ी बोझा कपटा है। उनको खूनेसे हम परित हो जाते हैं, ऐसा हम मान लेते हैं। मैं कह चुका हूँ कि खन्ना कोठ तो उनकी मजिना है। अपने माद्योंने घुमा करना, किनी जाति या कर्क के लोगोंको बुरा कहना, रोगी मनका बिन्दु है, और वह कोठने भी बुरा है। ऐसे लोग उनमें भी बबरत हैं, तो फिर ऐसा नाम क्यों देना चाहिए ? कुछ लोगने पीटिन कहो, लेकिन कोड़ी मत कहो। अगर बुरा कहनेने बुरा मन मान

^१ मन्द ।

तो नहीं कहना चाहिए। गुलाबके पुष्पको आप बाहरे नि-
कटें, लेकिन उसमें जो सुवास या सुगंध भरी है उन-
नहीं छोड़ेगा, बुरे-से-बुरा नाम हो तो भी नहीं। यदि
ऐसा कहता हूँ, ठीक हूँ; पर जो छूतकी बीमारी है
तो है नहीं। किसीको छूतकी हो जाती है, उसको जो
उसको छूतकी हो जायगी। सही है, ईबा है, प्लेग है,
कुष्ठ रोग है। फिर उसके प्रति नृणा क्या करनी? एक
मनुष्य कुष्ठ रोगी बन जाता है तो लोग उसका सि-
हैं। वे कहते हैं कि वह तो कमवात है। कमवात त
तिरस्कार करते हैं। वह नृणा करनेका जो कोश है
जाना चाहिए। इसलिए मैंने सोचा कि आज भी मैं इस
बोहरा हूँ।

१०. ठाटीयको कर्माँ की सम्मेलन होनेवाला है
कुमारी जानेवाली थी, जाना चाहिए, डाक्टर बीयरज
ने, जाना चाहिए, लेकिन जाए कैसे? वे अपने कह-
हैं। उसको छोड़कर एक दिलके लिए तो जा सकते हैं।
तो दिल सर्वे; क्योंकि जिस दिन बाग्ये उस दिन तो मीठ
जहाँ हवाई बहाव तो जाता नहीं। गानपुर जाता है। वे तो
जा सकते हैं।

हा, एक और बुरी बात मैं आपको कहना चाहूँ
किमनवीने तो कह दिया, कम मैं खेचने जाकर प्रार्थ-
नार्थके लोग चाहते हैं कि मैं वहाँ प्रार्थना करूँ। मु-
जानेगा और आपको भी मज्जत लानेगा; लेकिन आप लोग
जा सकते, वह तो कैमबाना है। वहाँ कैदी ही जा सकते
तो मैं मुजाते हूँ, इसलिए जाता हूँ। परन्तु इन बातों
जाते हैं।

: १२८ :

२५ अक्टूबर १९४७

बादलों और बहनों,

मुझको जब इस जेलमें कैदियोंके सामने प्रार्थना करनेका निमन्त्रण मिला और प्रार्थनाके बाद जो कहता हूँ वह कहनेको नी, तो मैं यही हुआ और मुझको वह निमन्त्रण बहुत मीठा लगा। चाहे सब कैदियोंको तो पता नहीं होता कि मैं खुद बहुत पुराना कैदी हूँ। 'बन्दी' शब्दका है। और यह मैं कह सकता हूँ कि मेरी निगाहमें तो मैं बेगुनाह था, लेकिन सरकारके नज़दीक तो बेगुनाह नहीं कहा जा सकता था। कई फिल्मकी जेल मुझमें मिली है और कई जेलें घेरे देखी हैं। बन्दी शब्दकाफी जेल तो बहुत करी रखी है, और पीछे हिंदीकी तो बड़ा कोई मिलती ही नहीं। वह तो बाह्य कैरिक्टर ही क्यों न हो, तो भी क्या हुआ? सब-कुछ कुली ही मानें जाते थे। तो बड़ा तो एक तरह हिंदी, दूसरी तरह बहाने हल्की नीम और पीछे धोख, सब अलग-अलग थे। जब सरकारकी कैदी बनें, क्योंकि सरकारकी एक-दो तो रखते नहीं, दूसरोंकी नाचावने की बनें बाब, और यही वह सब जेल हुई तो हम डेढ़-ही ही थे। शुरूमें तो ऐसा नहीं था, मैं जो और कार-माच दूसरे थे। पीछे जब सरकारकी दिलासिमा शुरू हुआ तो हम डेढ़-ही ही गए और बड़ा हल्की भरे जाते हैं कभी कभी हम जेल भर दिये गए। इसलिये बड़ा तो हम कुछ कम जा गए थे। तो मैं यह बताता हूँ कि बहाने जेल कैदी रखी है और कैदी सबकी बहाने काम लिया जाता है। बड़ा तो हम सब एक सुकन-का भवा बने हैं कि हम तो राजनीतिक कैदी हैं और दूसरे सरकारी। बन्दी शब्दकाफ़ी जेल तो बहुत ऐसा कर रहा नहीं है। बहाने सब सरकारी कैदी मानें जाते हैं। मैं तो यह मानता नहीं कि कैदियोंके बीचमें जो राजनीतिक कैदी हैं, वह भी अच्छा है

‘दिल्ली’

‘हिंदुस्तानी’

‘नैर-राजनीति’।

धीर जो भयनाकी कँधी हैं वह बुरा हैं। कानूनके सामने तो ।
 कानून भग किया है वे सब एक ही तरहके अपराधी हैं। तो
 उन अपराधियोंके फाँक क्या करना ? लेकिन यहाँ तो हम अपने
 कँधी को धीर कहते भी हैं, जो धीर ही के कँधी बने; तो
 इसलिए न कि हमारा एक बहुत बड़बूत आशयन था। जैसे
 की तादात्म्य हन पड़े हैं धीर जगमें बड़े-बड़े लोग भी हैं। तो
 वहाँ वेभारे लोग बड़े लोग थे। सब छोटे-छोटे बाहिर लोग थे
 जगमें हूँ, मुसलमान, पारसी मनी थे। वहाँ तो कोई यह फाँक भी
 करता था कि यह हिंदू हैं, यह मुसलमान हैं धीर यह पारसी
 सब कूची थे या ऐसा कहो कि नब हिंदू थे। तो वहाँ हम ऐसा
 कर ही नहीं सकते थे कि हम बड़े हैं तो हमारे लिए 'ए' कर्त बना
 हनमें छोटे हैं उनके लिए 'बी' धीर जो सबसे छोटे हैं, उनका 'बी'
 मैं तो उसकी मानता नहीं हूँ। लेकिन यह हमने यह सब किया।
 तो यह माननेवाला हूँ कि जो कँधी गण, वह कँधी हैं। तो
 एक कँधी हैं तो उनसे असुखन पुनाह किया है धीर जो बाहर अपने न
 पहनकर बैठे हैं, वे पुनश्चकार नहीं हैं, ऐसा मैं नहीं मानता। मैं
 सब दफा जैस बवा, पूरा-पूरा तो बाब भी नहीं धीर काफ़ी न
 जगमें काटे हैं, इसलिए मुझको तो इसका पता है। जो वहाँ जैस
 सुपरिस्टेंट बवैरा थे, वे तो मेरे दोस्त बन गए थे। तो वहाँ ५
 बड़ा बरोगा था, आसा आदमी था धीर बड़ा जेसर था। उसने मु
 कहा कि बेडो, मैं तो इन कँधियोंका भक्त बन गया हूँ, लेकिन पुनश्चकार
 क्या पता कि मैंने किसका पुनाह किया है। वे या तो कोई बादशाह या
 जैस काटने आए हैं या फासीकी सजा पाकर जाते हैं धीर जो
 फासी नाक हो गई हैं लेकिन ऐसे मिलते हैं जो यह जानते हैं
 कि मैंने क्या पुनाह किया है। बाबर मेरा सपना ही जानता हो। इसलिए
 मुझको यह भयान नहीं लगता कि मैं तो बीच जेसर हूँ धीर
 वे कँधी हैं। मैं भी नहीं माननेवाला हूँ। इसलिए मैंने सोचा कि

१ जाह करके।

मुझे आपके सामने किस तरहने धाना चाहिए। अब अग्रेसरी वस्तु-
तब तो हट गई, उसने अपनेको उठा लिया। अच्छा किया। लेकिन
अब इन अपनी ओरसे क्या करे? अब अग्रेसरी वस्तुतब भी तो उस वस्तु
केसमें जो बसता था—किताब अच्छा था या किताब बुरा था,
उसका तो मैं बताहूँ, लेकिन अब बुकि हकूमतकी बातबोर हमारे
हाथमें आ गई है, तो हमारी ओर, एक ओर न रहकर, सम्पत्ता
कली चाहिए। किसीने अगर खून किया है, गोरी की है या काहू
का है या कानूनकी पुस्तकमें बिलने गुनाह पड़े है, जमनेसे कोई
एक किया है, तो मैं तो इन सबको एक किस्मकी व्याधि मानता
हूँ। यह एक मर्ज है। कोई गुनाह करनेकी खातिर गुनाह पीछे ही
कहा है। अगर कोई व्यभिचार करता है या शराब पीकर कोई
घोर अपराध करता है तो वह कोई शोकसे ऐसा नहीं करता। मैं तो
बुकि बुरा हो गया हूँ और मुझे अनुभव भी हो गया है, इसलिए मैं
तो यह धीक गया हूँ कि बीसा आधुनिक स्वभाव का जाता है बीसा
ही वह करता है। बीसियोंको क्या करना चाहिए, यह उन्हें सिखाया
जाय। कहा जो सुपरिटेण्डेंट साहब है या डिप्टी कमिशनर है, वे
बीसियोंकी देखभाल करने हैं या ऊपर हुक्म बताते हैं कि इसको
कोसा मारी, इसकी यह काम जो और उसकी यह काम दो, तो वे
सजाके दीपर ऐसा करते हैं। लेकिन मैं तो यह कहूँ कि जो
सुपरिटेण्डेंट, डिप्टी कमिशनर या दरोगा है, वे सब ऐसे नरें कि
जैसे सम्पत्तामें सर्वन का बीज होते हैं। और बीज होकर उस
आधुनिक, जो शराब पीता है, मर्ज मिटानेकी कोशिश करें। उसको
यह बताया जाय कि शराब पीनेसे क्या-क्या बुराई आई। अगर
किसीने सबकीको उठा लिया है, वह तो बड़ा गुनाह हुआ न, लेकिन
उसको भी बताया चाहिए, क्योंकि यह भी एक किस्मका मर्ज है।
अगर ऐसा जेसमें ही जाय तो बहुत अच्छा जेगा और बीबी भी सब पुरा
ही जायगे। पूरा होकर वे ऐसा पीछे ही मान लेंगे कि हमें जे-नहीं
ही रहता म-छा है। सम्पत्तामें जो व्याधि-मल्ल बीज बसे जाते हैं, वे
हमसे नहीं रहना पीछे ही कपट करने हैं। फिर सम्पत्ताको तो आली-

धाम नगम होते हैं, महा ह्मारी बेहो तो ऐसी है जी नहीं। हम -
 नी कहाँसे? हमारा तो एक गरीब मुक्त पड़ा है। अगर हम -
 ताबो-बैसी बेहो बनाने लें तो हमारा दिवाला निकल जायगा। ऐसी
 तो नगरी मकीनामें। ओ नोवेना मुक्त है, वहाँ जी नहीं है। महा
 प्रत्येक नैवियोंने किए कोठरियाँ या अन्ये करते हैं, वे कोई मह-बैहो
 ही हैं। इन्हेंहके पास इतना पैसा है ओ ऐसी बेहो बना सके, न
 कहाँकी बेहो तो मैंने देखी है। हाँ, मजदूरीकी बेहो मैंने नहीं -
 नेकिल इतना तो हो, कि हमारी बेहो सम्पत्ता-बैसी हों, जैसे १८७०
 में कांस्टर रखा है और रोवियोंने जिम्मेदार किया है। जब
 रोमी स्वस्थ होकर अस्पतालमें बाहर जाता है तो वह हमेशाके
 मजदूरी हो जाता है। मैंने ही महा हमारी बेहोमें होना चाहिए। ओ
 ओ बैसी रने हैं वे ऐसा न करनेवाले हो कि महा बड़ी सस्तिवाँ
 म्यादिया होती है, सुपरिस्टैंड या बरोगा खराब हैं। सब न-
 ही-खराब है, ऐसा वे न करने पाए। वे कहें कि सम्पत्ता-बैसी
 हमारी बड़ी बेहो-रेज रखते हैं, हमको खाना देने के, और यह कि
 वे कि जीवन जैसे अच्छी होना चाहिए। यह तो मैंने बताया कि
 मोगीको क्या करना चाहिए ओ बेहोका कारोबार बनाते हैं। मैंने
 उनको क्या, आतिरमें वह करना तो उनमें हादमें जी नहीं है। न
 तो हममेंको करना है। ना तो बहिर्जीवी कहाँ है या १८७०-१८७१
 या गरी, मारी हममेंको, जिसे हम बेहोनेड कहते हैं, करना है
 लेकिन हममेंको तो यही कहा है कि मुझे ऐसे बनना है। ओ
 ओ हममेंके बाहर और आतिर बन जाना है वह हमारी न।
 रही। ओहमेंहारा बरोगा, सुपरिस्टैंड या मिल्मर तो आत्मन होना
 नहीं। आतिर इतना तो हम नीच गए हैं, और वे हममें- १८७१
 बन गये हैं। हममेंमें सब ओहें कहा नहीं है, और न
 वह बाहरों ओहें मदद बना मग्नी है बिजने कि वह हमनी डग
 सके। वे तो हममेंमें अपनी हदमेंहमा हदमें मानते हैं। अगर मुसीब
 न नानें तो हममेंमें मग नग नग नग है और मुलमें मयादनी
 हो मगी है। ओ नग तो मैंने मयादनीमें कि नग दिया कि वे मुल-

भार तो न बने। धीरे धीरे तो वे धाप भी हलूमसके कहे बिना ही कर सकते हैं। जैसे नैबियोंके हाथ रहस्यविन बनना है, तो उसने उनकी सीखनेकी क्या भीष है? जिसको वे बरसवान समझे और उसमें जो कैंदी है वे रोगग्रस्त हैं, ऐसा मानें। तो एक काम तो निपट गया।

दूसरा यह कि जो कैंदी लोग हैं, उनको एक कैंदीकी हैसियतसे न मानना चाहता हू। मैं भी तो एक सत्याग्रही कैंदी रहा हू। सत्याग्रही कैंदी बान-गुमहार तो गुनाह कर नहीं सकता। जिसके जो सुपरिन्डेंट या बरोदा हैं, उनको यह कभी परेशान नहीं करेगा और न कभी उनका अपमान करेगा। उसको तो धावर्ष कैंदी बनकर रहना है। तबो यह अपने सत्याग्रहको अच्छी तरहसे बसा सकता है। जो कैंदी वनभूष गुमहार बनकर भाए हैं, उनको भी वहां सत्याग्रही बन जाना चाहिए। उन्हें जेलके कानूनोंसे कभी बाहर नहीं जाना चाहिए। जेलकी यादगिरियों रहकर जो कुछ उसको मिलता है उसमें उसको संतुष्ट रहना चाहिए। अगर कोई कभी देखे तो सुपरिन्डेंट या बरोदासे कह दे कि मुझको जो जाना मिलता है वह थोड़ा है या अच्छा नहीं रहता, या पूरा पकाया नहीं जाता या ऊपर पत्थर रखते हैं या जपु होते हैं। यह सब रहता है, मैंने तो अपनी आँखोंसे देखा है, क्योंकि मैं तो वहां रहा हू। लेकिन इसके लिए भी उनके पास क्या जाना था? यह सब तो कैंदियोंके ही हाथसे रहता है, वहां कोई रसोइने तो होने नहीं। अगर रसोइने रखें तो जेल नहीं बना सकते। जो कैंदी लोग हैं वे ही तो अपना खाना बनाते हैं। वे अपने दिलसे काम करें। जो भावक बनाए वह साफ करके बनाए और जो रोटी पकाए वह कच्ची न रखें। यह सब तो आपके हाथसे रहता है। आप अपने घरका काम समझकर इनको करें, सब तो मैं मनमत्ता हू कि आप लोग जेलमें जाए और आपसे गुनाह भी हो गया—गुनाह तो जब करते हैं, किसीना गुनाह बाहिर ही जाता है, मतला है और कोई गुमहार नहीं होगा, सब जी उसको गुमहार बनाया जाता है—तो आप इस तरहसे आर्ज्य कैंदी बन जाते हैं।

एक काम आप कर भवने हैं। आप बीन जो मरु हैं उनमें फिर, जूनन-

मान, सिद्ध सबी है, मुसलमानों ने भी कई किसके होने, तो यहाँ सब बाई-बाई चलकर रहे। साथ ही हमारे देशमें फैल गया है। मेरी सम्झना है कि कम-से-कम इस क्षेत्रमें तो यह फैलेगा नहीं। तो कहाने आप लोग मार्क्स सहरी बनकर १९१० तक तो भी डिप्टी कमिस्तर और जेल सुपरिन्टेंडेंट साहब है, वे मुझे सुनाएने कि तुमने क्या अच्छा काम किया। उससे हमारा काम आ हो गया है, कोई हमें बिक नहीं कराना, जेलमें कानूनकी सब करते हैं और सारे फीदी रोब-न-रोब अच्छा बननेकी कोशिश करते हैं तो ईश्वर का कृपाने यही मायूषा कि आप लोग मार्क्स फीदी और कहते अच्छे सहरी बनकर निकले और बाहर निकलने सोचते हैं कि यह क्या बात आप कर रहे हैं? हिंदू मुसलमान दुश्मन हैं और मुसलमान हिंदुका, सब कुछ बात इन बातोंमें परसिमा तो खचने होती है।

कस चूकि ईश्वर है, इसलिए यहाँ बितने मुसलमान बाई है, उनकी ईश्वर सुधारक कहता है। मैं चाहता हू कि बितने हिंदू और सिद्ध फीदी ने भी अपने मुसलमान भाइयोंको, बितने भी वे ही, ईश्वर मुबारक करेंगे। सबसे बस यही कहता हू कि होनेका सब भित्त-मुसकर रहे।

: १२६ :

२६ अगस्त १९४७

भाइयो और बहनों,

पहले तो एक भाईने जो प्रश्न पूछा है, उनका मैं उत्तर दे दू। यह पूछने है—“आप कहने तो है कि बदलेकी भावना अच्छी नहीं होती, परंतु आपने राम-भजन तो हर साल रामचक्रा वृत्त बनाकर बदलेकी भावनाको उम्माने हैं।” इसमें जो कसिया है। एक तो यह कि मेरे राम-भक्त नील है, यह मैं जानता ही नहीं। मेरा राम-भक्त घरर मैं हूँ तो अच्छा है, उनका भी मुझको तो पता नहीं। राम-भजन बनना कोई

राक्षसी नाम बोले ही हैं। इसलिए आपके राम-मन्त्र कहना एक बड़ी बली है। मेरे राममन्त्र तो कोई है ही नहीं। लेकिन ऐसा होता है कि तीन राक्षसका बुल बना सेते हैं और राम उसको परास्त करे हैं। मन्त्री तो राम परास्त करते हैं राक्षसको, लेकिन हमने तीन राक्षस होना और तीन राम बनेवा? अगर हर कोई आदमी राम का अपना है तो पीछे राक्षस कीन बनेवा? यह तो क्या है, लेकिन कर्मों की ऐसा बातों है कि राम तो ईश्वर है और राक्षस उसका दुश्मन। शीघ्र ही उसको मरुत कहा, राक्षस कहा और निष्ठावर कहा। जोकि उसका काम ही यह था कि रामको न मानना और ईश्वरको न मानते हुए ही मर जाना। पीछे तपस्वानके हाथोंसे ही उसकी मृत्यु हुई। यह तो एक कमलक है। इसका यह मतलब नहीं है कि राक्षसका बुल काते है तो वे बरसा जेनेके लिए उकसाते हैं। मैं तो उसमेंसे यह सीखता हू कि वे यह बताते हैं कि आदमी दूसरोंसे बरसा न से। मैं यह न मान हू कि महा जो नाई बैठे हैं, वे तो राक्षस हैं और वे राम हैं। उन तो मेरे बीसा उकसा और मुझे आदमी और तीन का सकता है। मुझको क्या पता कि मैं राम हू, तीन जानता है कि मुझमें किसी की दुष्टता भरी है। ईश्वरके बरबारमें मैं महात्मा हू या दुष्ट हू, उसको कोई नहीं जानता। मुझको भी पुरा पता नहीं चलेंगा कि मुझमें किसी की दुष्टता भरी है या किसी कापुता है। यह जाननेवाला तो रामजी ही है। यह ऊपर पता है और उसको देखता है। कोई भीज उससे किसी हुई नहीं है। इन्सान किसीसे बरसा से नहीं सकता। अगर किसीसे पुरा भी हुआ है, तो भी उससे बरसा क्या होगा? अगर एक इन्सान सम्पूर्ण है, कबलि हुआ है, तो भी उससे बरसा क्या होगा? कबलि सम्पूर्ण तो केवल ईश्वर ही हो सकता है, फिर भी जाना कि एक इन्सान सम्पूर्ण है और ग्रन्थ सम्पूर्ण है, तो क्या यह दूसरोंको बचा दे या उनका सहार करे? यह जो पुरता बताते हैं विनवाइसनीके बीच, उसका मेरी निराहमें तो नहीं मतलब है कि बरसा लेना इन्सान, मनुष्य या आदमीका काम नहीं है। उसको बरसा लेना भी न कहा जाय तो भी जो महार वा हिता इत्यादि करती है, यह ईश्वर ही कर सकता है। तो क्या ईश्वरने ही

यह गृह है कि हिना नी बही करे और अहिंसा नी बही ? यह निम
और गुवालीत है। उनके लिए ये सब चीजें कुछ नहीं। लेकिन यह
तो ऐसा है कि जिसने राक्षस इस दुनियामें है उनका नष्टार करने
मेवम ईश्वर ही है। कुछ लोग ऐसा भी मान लेते हैं कि निम
तो यह निहाली है कि वे तो पूर्ण और हमारे अपूर्ण हैं। इसलिए
को अपने हाथों से अपने-आप बाधनाह बन जाते हैं और निम
प्रापात करना और नितीकी कत्त करना, यह सब करने लगते हैं।

यह हिंसात्मक हो नी रहा है; क्योंकि हम पापक हो गए हैं।
जबकि मैंने किया है उसको पाप लोग क्या बिना जाने प्रक
यह नी समझ गए होने कि राक्ष-राक्षसका दृष्टि से हम
न बनें। हमें पुण्यवान बनना चाहिए। एक ओर राक्षस नाम
और दूसरी ओर पापाचारी बनना, ईश्वरकी निंदा करना है।

अभी आप सोचेंगे कि कुछ करने हैं कि कुछ इसकी संबंधी
बातें तो करने हो लेकिन काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है उसका भी
पता है ? हाँ, पता है मुझको। लेकिन इसका पता है किना कि
बातोंमें आया है। अगर यह सब नहीं है तो यह एक बहुत बुरी बात
यह मैं कह सकता हूँ कि इस तरह तो न बर्तनी रहा हो सके
है और न बर्तनी। उनमें इश्वर तो वाकिफानपर ही सदाया ५५
न, कि वह काश्मीरको मजबूर करनेकी चेष्टा कर रहा है। यह होना
चाहिए। अगर कोई किसीको हमलिए मजबूर करे कि उसके ५५
कुछ नेने, तो वह हो नहीं सकता, इसमें तो मुझे बरा भी अदेह नहीं
जान तो काश्मीर है, पीछे हो सक्ता है कि हैदराबादको मजबूर
मुनाबइको करो या जिन्दी और पैदाउनको। मैं कोई जायगी पुत्र
करना नहीं चाहता; लेकिन मैं तो एक समूह मानकर बनना
कि कोई जिन्दी मजबूर नहीं कर सकता। पीछे, बाहें उनमें कुछ
ही मुझने तो कोई परमाह नहीं, बाहें काश्मीर तो, हैदराबाद ही
मुनाबइ ही। कोई जिन्दी मजबूर न करे और जिन्दी के पाप ५५
न करे। लेकिन भावनी दुनियामें जो काश्मीर के कहराग है,
वहाँ तो गया न है ५५ के महरने पाप बनना पना है। इस

रियासतों में भी जो राजा माना जाता है, वह नहीं है। उसको तो स्वामेवाले श्रेयस चीज थे, वे बने गए। वे तो इसलिए उनको राजा-महाराजा बना देते थे, कि उनकी मार्केट राबिडन बसता था और राजबट भिखता था। काश्मीरको अपनी अपने महा प्रजासतन स्थापित करना है। इसी तरहसे दूसरी रियासतों में भी, हैराबाद और जूना-बर्मे भी। मेरे नब्दीक तो उनमें कोई भेद ही नहीं है। रियासतकी भवती राजा तो उसकी प्रजा हैं। अगर काश्मीरकी प्रजा यह कहें कि यह पाकिस्तानमें जाना चाहती है तो कोई ताकत नहीं दुनिया में जो उसको पाकिस्तानमें जाने से रोक सके। लेकिन उससे पूरी भाषावी और भारातमें बाध पूजा बाध। उसपर आक्रमण नहीं कर सकते और उससे बेहतरों को बनाकर उसको मजबूर नहीं कर सकते। अगर वहाँकी प्रजा यह कहें, मैंने ही महा मुसलमानोंकी भाषावी धर्मिक हो, कि उसकी तो हिन्दुत्वकी दुनिया में रहना है, तो उसको कोई रोक नहीं सकता।

अगर पाकिस्तानके लोग उन्हें मजबूर करने के लिए वहाँ जाते हैं तो पाकिस्तानकी हुकूमतकी उन्हें रोकना चाहिए। अगर वह नहीं रोकती है तो सारे-का-सारा इस्लाम उसको अपने ऊपर प्रोडना होगा। अगर मुनियनके लोग उसको मजबूर करने जाते हैं तो उनको रोकना है और उन्हें रुक जाना चाहिए, इसने मुझे कोई सबेह नहीं है।

काश्मीरकी बात तो मैंने आपको कह दी। लेकिन एक दूसरी चीजकी बात भी मैं आपको सुना दू। कलकत्ता में मेरे पास एक सार जाता है। मेरा खयाल है कि मैंने आपको यह बात दिया था कि कलकत्ता में एक भाषि-मेवा, जब मैं कहा था, तब बन गई थी। ईश्वरकी ऐसी ही कृपा हो गई थी। कलकत्ता में भाषि स्थापित करना बड़ा कठिन-सा लगता था, लेकिन भाषि-मेवा उनके बाद यह बड़ी आसानी से हो गया और हिंदू या मुसलमान किसीको भी कोई बात मुकलान नहीं हुआ। उससे पहले तो जो बड़े मुहल्ले थे उनमें मुसलमान बनकर बैठ गए थे और हिंदुओंको बहाल मना रहे थे। पीछे हिंदुओंने भी कई जगह मुसलमानोंकी, जो ओपनिया थी वा कुछ और था, उनको बनाया और उनपर आस्थावार भी किया। वह नहीं होना चाहिए था। इन

सारे किन्हेमें तो मैं जाना नहीं चाहता। लेकिन जब मैं कहाँ जाकर मैं गया तो गणवानकी कृपासे वह शांति-सेना बनी और जो विधायी गण या दूसरे लोग थे, वे उसमें शामिल हो गए। सबने मिलते हैं। वहाँ बसहरा और ईश दोनों बड़े बड़े हुए हैं। हिन्दू-मुसलमान आदि-आदि-आदि बनकर रह रहे हैं। कलकत्तामें ईश कम मलाई गई थी, लेकिन दिल्लीमें थाव है। तो बसहरा और ईश दोनोंका विक्र करते हुए न तार मुझको देना है। वे विश्वास हैं कि शांति-सेना सब जगह फैल गई थी। कहीं किसीका मुसलमान नहीं हुआ, न हूयानामें और न कलकत्तामें। कोई किसीको सता नहीं सका और दोनों मिल सब लोग आरामसे रहे। वे तो पूर्वी बंगालमें भी डाकाही और चले गए थे।

तो मैंने सोचा कि आपकी वह बात भी सच है, क्योंकि मुझको अच्छा लगता है कि जब हिन्दुस्तानमें कहीं भी हिन्दू-मुसलमान-बैंगलस सब होना हो और एक-दूसरेके दुस्मन न रहकर सब भाई-भाई बनकर रहते हों। फिर कलकत्ता तो कोई छोटा-मोटा बेहास बोरे ही है। वहाँ करोड़ोंका व्यापार चलता है, उसमें बड़े-बड़े बहाना आते हैं, वहाँ हिन्दू-मुसलमान दोनों रहते हैं और व्यापार करते हैं। अगर वहाँ हम एक-दूसरेके दुस्मन बन जाए तो क्या वह सारा व्यापार गठिमागेट नहीं हो जायगा ? अगर शांति-सेनाने वहाँ सबको भाई-भाई बनकर रहना सिखा दिया तो वह बहुत ही अच्छी बात है। कलकत्तासे कौन हम भी सकल चीजें और वहाँ भी कौन न एक शांति-सेना बन जाए ? थाव तो कहाँ ईश है न, इसलिए कुछ मुसलमान भाई मेरे पास आए थे। वे मुझको पहचानते हैं कि मैं उनका दुस्मन नहीं, दोस्त हूँ। मैं एक हिन्दू हूँ और वह भी एक सनातनी हिन्दू, इसलिए मुझमें मुसलमानपन भी उत्पन्न हो गया है जिसका कि हिन्दुपन। इसलिए वे मुझको अपना दोस्त मानकर आ गए थे। मैंने उनकी ईश सुनारक कहा तो सही, लेकिन मैंने कहा कि मैं किन मुझने आपकी ईश सुनारक कहा। वे धाव भी मेनारे सम-धीर पडे हैं। सोचते हैं कि न जाने हिन्दू उनकी रहने हों या नहीं, या मारेंगे कि नहीं। कोई सब बोला ही गायते हैं। लेकिन मुक्ति काफ़ी कम हो गए, इसलिए अगली है। बोली सामान्य है। तो क्या

जिस जगह जो लोग बड़ी तादात्म्य हैं वे बड़ी तादात्म्यताओपर आक्रमण और अत्याचार करे? इस अत्याचारको मिट जाना चाहिए। नहीं तो हमको मिट जाना है।

जो कलकत्तेमें हुआ, वही अगर हम वहा कर सके तो कितना अच्छा हो। मेरा दिल तो सब नाच उठेगा। आज तो मेरा दिल रोता है। धाखोसे आसू तो नहीं गिरा सकता हूँ, क्योंकि अगर ऐसा कर तो मेरा काम नहीं चल सकता। अगर दिल तो रोता है। क्या आजादीमें हिंदू और मुसलमान ऐसे करने? अगर बड़ी तादात्म्यता छोटी तादात्म्यताओपर हमला करे तो वह आशिमय है। उससे कोई बर्न बन नहीं सकता। अत्याचारसे कभी कोई बर्न नहीं बनता। बर्न तो केवल बर्नकी मार्फत ही बन सकता है। और कोई दूसरा चारा है ही नहीं।

राज्यामसे यह तार आया है कि महाके जो महाराजा हैं उन्होंने ऐसा ऐलान निकाल दिया है कि अब वहा बिन्नेबार प्रजातन्त्र स्थापित होगा और उसकी मार्फत राज्य चलेगा। राजा तो उसके एक ट्रस्टीकी तरह बनकर रहेंगे। वहा जो हरिजन-सेवक-सचके मंत्री हैं, वे मुझको भिन्नसे हैं कि इस राज्यमें अब हरिजनो और दूसरे लोगोंमें कोई भेद नहीं रहेगा। जो महाराजाका भविर है, उसमें वे गए और एक बड़ी जमात तथा हरिजन लोग भी उनके साथ गए। राज्यके कितने भविर हैं उनमें आजसे अस्पृश्यता नहीं रहेगी। जो कुछ है उनसे हरिजन पानी भी भर सकते हैं। ये सब बातें जानकर मुझे बहुत अच्छा लगा। अगर हिंदू-बर्नको मारने बडाना है तो उसमें चूना और अस्पृश्यता कैसे रह सकती है? अस्पृश्य तो वे हैं जो पापात्मा होते हैं। एक सारी जातिको अस्पृश्य बनाना एक बड़ा कलक है। अस्पृश्यताकी जब हरेक हिंदूके दिलसे निकल जानी चाहिए। जैसा राज्याममें हुआ है, वैसा और सब जगह भी, जहापर कि हिंदुओंकी तरफसे राजतन्त्र चलता है, अस्पृश्यताको मिटा देना चाहिए। तब तो हिंदू-बर्नको हम बहुत ऊंचे ले जाएंगे। अगर अस्पृश्यताकी जब बनी गई तो क्या पीछे हम मुसलमानोंको या दूसरे बर्नवालोंको अस्पृश्य बताएंगे? जो अस्पृश्यताका मूल

हमने भग है, यह तो जमी मेलना मरीजा है जो प्रायः हम मुक्त रहे-
 इन्हीं रक्षामने जो हुआ है वह मुझको मन्त्रा दिया और
 मोक्ष कि कलकत्ता और रक्षामनी दोनों मन्त्री बातें भी मैं भवि-
 मुक्त हूँ।

अनुक्रमणिका

अकसरियत १३७, १६०, ३३६	—मत्त १४३, १४५,
अकवार ४६, ६२, ६६, ४०१	२१५, २४३, २६५, ३०५
—नवीस ४५६	अस्तोपनिषद् १७, १३८
अकूत १८६	असवर २६६
अकमलता, हकीम ३०६, ३७८	अवनी ४४२
अकर्णवेद २१, १३८	अवाहमाई १८
अनसन १२४, १२७ (देखिये 'अपवास' और 'आका')	अस्तेय १८
अपरिग्रह १८	असुखता १८, ३६७, ४७६
अश्रीका, बलिन, १६, ३०, ६६, १८६, २५७, २५९, २८१,	असहयोग ५६, १३०
—पूर्वी ४४०	अशोक ३६२
अमुस्ता, मोक्ष मुहम्मद ४४७	अहिंसा ५, ११, १८, ३०, ३६, १५, ८१, ६३, १६१, १६५— ६६, २१८, २३१, २४६—४७, २६८, २७०, २७५, २७६, ४००
अमुस्समवत्ता १०२	अकुल ४३८
अमुस्सवान ३३	अनेक ५
अम्येककर, डा० ४३५	अनेजी ४४२
अमृतकीर, रामकुमारी २४७, २६४, ३५८, ४४३, ४४६, ४६८	अनुमन सरस्की-यन्त्र २१३
अर्जुनवेद ३५७, ३७६	अतरिम सरकार ६४, ११३
अय्यर, सर सी० पी० रामस्वामी १५२, १५६, १७१, १६१, २५७	असारी (बिहार के मंत्री) २६२
अल्प-संख्यक ८३	—डाक्टर ३०६
	—श्रीकृत सा ३०६

आद्याह, नीलाना प्रभुन आनान २२,

२१३, २८६

आननननन १८३

आना ११ ३६

आयनर, सर गोतासतानी २८८

आमिन् १७८ (हेमिने विद्यामिन्)

आनना, अनरन २० २३५

इन्नाह, सर अन्नाह ३६६

इन्ने, साह १७३

इन्निन्, साह २७३, ४५०

इन्नेमिया २७७

इन्नेम ३०८

इन् ४७४

—अन्नाह ४७८

इन्नेर ४, ७ २०—२१, २३, २८,

५५, ७२, ७५, १६०, २७२,

२७८, ४७४

इन्नेमिन् ३५, ५०, ६६

इन्नेमिन् १७, २१, ८२

इन्नेम २३—२४, २५, १७६

(हेमिने अन्नाह अन्नाह)

इन् २१३, २७५, ४७२

इन्नेम ८६, १३५, १६६ २१६

इन्नेम २४५, २५६

इन्नेम ३०—३१, ३२, २१८

इन्नेम, अन्नाह २०

इन्नेम १५०

इन्नेम २, १७ २०, २२,

२५, ३५, ५१, ६०, ६५,

७३ ६७

इन्नेम १३४

इन्नेम २५२

इन्नेम १३५

इन्नेमिन् २६

इन्नेम ४७७

इन्नेम ३७५

इन्नेमानी, अन्नेम ४६

—अन्नेम ३७ १६०

इन्नेम २६१

—अन्नेम ६

इन्नेम ३३२

इन्नेम १८३, १६२

इन्नेम २८८, २६०, ४७५—४७

इन्नेम २५७

इन्नेम ५, ७ ८३, ११६, १२७,

१३४ २३६, २६१ २७५, २८७

इन्नेम, अन्नेम ४४७

इन्नेम (अन्नेम) ७६७

इन्नेम १ २१, २६, ३५, ५१, ७१,

८६, १८१, ३७०, ३८६,

४५६

इन्नेम, अन्नेम ११५ ११८

इन्नेम ४७३ ४७७—६८ (अन्नेम)

४६४

इन्नेम ३१२

इन्नेम ४७० ४७३

इन्नेम ८५ २२२

इन्नेम ८३

कौरव २६	कुसनार ११५
कौसम्बी, बर्मानिब १२३, १२५, १३५, १७३	गोखले ४४०
कलीकुञ्जमा २७१-७२	गोविन्दसिंह, गुरु ३०, ८२, ३७६
कादी २४, १८२, ४१३	गो-कुशी २७८
-प्रतिष्ठान ८१, ४०६	-रक्षा २२४
कान, डाक्टर ५५, ७३, १४६	-सेवा २७७
-बाबसाहू ६, ५५, ७६, १०२, १४६, १७४-७६, २०२	-हत्या २६१, २७७
कियाफत २२	गर्मा १०७-०८, ११२, ११५
कुवाँडि खिबमतगार २०८, २२४	गर्मा २४, १६२, २७१, ४१५
कुराक ४१०	-सब २७४
गणेश-मोक्ष १५८	गर्भिल, विष्टन १४१, ३६०-६१, ३८२
गणेश, बाली ४४४-४५	गुरुमुख (गुरुि) ४४६
गडमुक्तेवर २५६	गेम्बरसेन २३४
गवर (१८५७) २७५	गोरवानार ११६
गवर्नर-जनरल २५८, ४३३	गौरी, राममन्दा १५४
गवा ३२, ६२	छात्रा अस्टिस २५६
गवसाहू ११, २११, २२१, २२८	जगदीशराम ४६६
गायत्री-मन्त्र १८१	जगदीशन् ४६५, ४६७-६८
गापी, कनु ३६, ४०६	जडवा १२२
-भगनसाल ४४४-४६	जन्म-तिथि ३७८
गिल्डर, डाक्टर ३६	जलसन ११६
गीता २२, ३५, ४५, ७४, ८२, १२४, ४५६	जयवा, विद्यासकार ११२, १४६
-रहस्य १७२	जमियाबासा बाग ४७, ४३०
गुडगान २८, १२४	जाकिरुद्दीन, डाक्टर २२७
गुस्वत ३५३	जामिया-मिलिया २२७
	जिन्ना, मुहम्मदजली २६, ३१, ३६, ५४, ५८, ७०, ७६, १०५, १२४, १४६ १७३,

१७६, २१४, २३४, २६७,	१०३, १०८, १८१, २१३
२७६	तेलक २५२
वीथीसिंह ३३	तैयब, रेहाना ६५
बुना-मस्जिद ३०१, ३०३, ३०६	तैयबजी, प्रभात ३५
बेन्दाबस्ता २१, ३५	बख्शगारायन ४४३
बूनागढ ४७६	बख्शरा ४१७, ४५६, ४७८
बोहरा ३०६	ब्राह्मिस्तान २५२-२३
बोहान्तवर्ग २७६	दिल्ली ४, २६४, ३०६, ३०८-०९.
बडा २०१, २७५,	३१४, ३३०, ४६३
—राष्ट्रीय २६२	दिवाली ४५६
ढक, मुस्लीमबाग १५३, १६३	दीवान, बनोहर ४६४
—६४	—हॉल (कैप) २६७
झास्ता १४१	देवनागरी २७६
झुलबाग २५६	देवीपञ्च २८५
झूमेन ३६५	डीनसाला, साहब २३५
‘जोन’ २५८-६६, २६०, २६६	जर्न ५७-६५, ६०, ६५, ७२, ७६,
जलीकूच २७३	३६५
जेनोफ्रेट २१८	जुन ३४२
जोमीमियन स्टेट्स २१७, २२६	जम्हानार, सय १८
२४१, २५७	जमकाना साहब २३५, ३३०
जफरी २२	जयक २७३
जामनहल २३५	जबरानि ४५६
जामिन २५२	जामियुद्दीन, टपाना ४३५
जारासिंह, मास्टर ४६, १२०	जालक मुक ३४२ ३५३
जिसक, जोकमान १७२, २२५,	जामक, सरोजिनी १८३
४०१,	जामर, डा० सुधीला ३६, १८७,
—स्वराज्यक २६१	४४१, ४६५
जुलबोली २१०	जिरामित २६५, २६७, ३१७,
जुलबीबाग, मोल्नानी १२, ८२,	३१६, ३५० (देखिये ‘जामित’)

निष्क्रिय प्रतिरोध २१८-१९, २२५

नेताजी, सुभाषचन्द्र बोस २३६

नेहरू, जवाहरलाल ६, ७, २७, ४४,

४९, ६३, ७६, ११०, ११५

१४९, १७८, १९९, २६०,

२८९, ३०९

—मोतीलाल १८३

नोवाखानी २, ४, ७, ९, १३, १७,

२०, २६, ३२, ४३, ४६, ५१,

७४-७५, ८२, १०२, १११,

११५, १४५, १५२, १९३,

२३६-३७, २६४, २७१,

२९०, ४३४

नीरोजी, बाबासाहेब २२५

‘पगडी’ १९७

पट्टणी साहब २४

पटेल, जलमसाहि ३६, ४९, २९४

३०५, ३०९, ४५७

पतञ्जलि १५

प्रह्लाद ३४२, ३६७

पचमस्तम्भ ३०९, ३५४

पचायत राज ४३३

पचाव ३-५, ९, ३१, १८४, २७०

पत, गोविन्द बल्लभ २५९

पद्महंमस्त २६४, २६६-६७, २७५

—७६, २८५-८६, २९१, ४४६

पाकिस्तान २५, ३१, ३८, ५८,

७७, ९३, १०३, १२७, १६८,

२६४, २८५, ३२३-२४, ३४६

प्यारेलाल ३२-३३, ४०६

पालमेड १८८

प्रार्थना १, ८, १२, १९, ५६, ६४,

८०, ८४, ९१, १७८, ३१९, ३३९

पाठक २६, ३०८

पिताजी २०१, २३८, (बाप) २९९

पुस्तक ४०२

पोखर १४३

फाका १६९ (देखिये ‘उपवास’ और

‘अनसन’)

फातेहा ३४५

मकरीच ४१७, ४५९

मजकिल ४६८

महाधर्म १८

महावेश २६४

मवाल १४४, २७०, ४०५

मर्ह २९३

माडविल २०, २५, ९८, ४५६

मारी, श्री० अन्जुल २०, २५२

‘माममिब’ २५१

मिडला, जुगलकिशोर ३, १०, २७

मिडला-मार्ड २९५

—मदिर ४६२

मिहार ३, ५, ७, ९, ३१, ७५, ८२,

८७, १०२, १११, १४५, १९३,

२३८, २७०, २९२

मोहर २५६

मगी ८, ११२, २८०, २८३,

—मस्ती २९४

मार्च २२२,

—मार्च ४५६

भारत सेवक संघ ४२०

भावे, विनोबा ४६४

भोपाळ, नवान १०६

भवीव, हवावा समुल २८, १४८,
१७५

भद्र १, १८१, २६८

भद्रसूक्ति १०२

भद्रवोद, नवान १६३-१४

भद्रवाली २५२

भक्तिव ८८

भद्रगुप्त, डाक्टर नयव ४

भद्रसेव २३

भद्रावाला २६, १०८

भद्रि ३, १७, ६४, २०६

—राजेश्वरमका २४६

—विष्णुसिका २४६

भाउटवैल, मार्च ४२, २४१-४२,
२५६, २६३, २६६-७०

—प्रिसिप २५७

भावा २०१, (मी) ४५६

भावावीव, भद्रावाला १०७, १५१,
४६०

भावेयू २१६

भिवन-भोवना ६६

भीर भावन १०५

भीरवादी ३५७

भुवाविनद, नद रावावाली-४३१

भुवुभु ७०

भुक्तिम वीग ११६, १७८, ३४३

भुनलवाल ३३४, ३५०

भुनम्मद भनी, भीलाला ०२, १४८

भुवो, डाक्टर १७

भेराले ०२१

भेव २६६

भेहला, भयोव ०६३

—डा० बीवराम ४६५, ४६८

भेहला, भीरोववाह २२५

भोहम्मद, पैगम्मद ५८

भीग ३१८

भीत ४

भक्तुवै १०, २१

भरवदा २३६

‘भयवडिया’ ४०२

भूमियन भैक २६२-६३

भूमियन, भाषीय २८५

रचनात्मक कार्य ४४५

रत्नाल ४७६-८०

रवीन्द्रनाथ, डाक्टर ४८

राउड टेवव वागवैव २६६

राजगीपावावादी, वाक्वरी २६,
४६

राव ४४६

राव-भावा ४३०

रावा ४५८

राजेश्वरमका, डाक्टर ४५, ४६,

११७, २८७, ३६२

राम ११, २६, ३५, ३०१, ३५६, ४३७, ४७५-७६, -मंत्र २०६, ४६७	बाइसराय ५, ७, १४, २१, ४४, ६६, ८८, ११०, ११४, १२६, १४०, १६४, २८३, ४५३
राम-बुल २, १३, १६, २०, ३३, १०२	विक्टोरिया, महारानी २७५ विजयरावबाचार्य, २३
-नाम १३७, १७७, ३५६, ४३६-३७	विजय-स्तन १३६, १५० विजयावसनी ४७५-७६
राम-भक्त ४७४	विधान-परिषद् ८७-८८, १६६, २७१, २७६
-रहीम ६, २०, २७, ३३०	विभीषण २०६
-राज्य २१७, २७३, ४४८	वेद ८२, ११४, १२६, १४०, १६४, २८३, ४५३
रामायण १८१	वेपथु, मार्क, ११०, २८६, -कैटीन २६७
रावण ४७४-७५	वरजाधी ३८२, ४६१
रावणपिंडी ३०, ३४०	वरगुण्डू (वरगुण्डू बोस) १३७
राज ५२	वहुरियार ६१, २७७
राजनिम ३६५	वक्रपाचार्य ७२, १२३
राष्ट्रपति २७	जा, मार्क क्लर्क २२६
-भाषा २७६	वाल्मी, श्रीनिवास ४६५
राष्ट्रीय सप्ताह २७, ४७	वाल्मीक, जनरल ५२, ६६
रियासत ४५७	वासुकी वरकमास्त ७८, १०२
रजवाह २२	वैकुण्ठजी, मीनाना २२, १४८
रेंटिवावारस ४१५	स्मट्स, जनरल १०५, २५६
रोका २४	स्टीफेंस कालेज २२
रावकर २२६, २५४, २७०	स्वराज्य ४१, ११०, १४२, ४४६
राजपुत्राय, बाला १८४	-श्रीपतिवैदिक १४२
राहीर ३१५	स्वल्प (विजयावसनी पत्रि) २५६
सिवाकसमी २६५	सत्यजी अकाश ६०
सुकान ४६	
सोकस १४१-४२	
सुमारोपण २७६	

अथ ३०	हरिजन २५५, ४१६
अथर्ववेद, स्वामी २८, १४८	हरिहार २५७
अथात्रह ४०, २३८, २६४, ३३६, ४३६, ४६६	हुनेन बाबू ३२-३३
अतीतबाबू (अतीतबाबूबाबू) ३२- ३३, ४०६	हिन्दी २१३, २७६
अथ, अथ वेद, १४६, १६१, २१३, ४३१	-साहित्य सम्मेलन २१३, २५ २७६
आवधलोका ५०	हिन्दुस्तान २५, १५० २६४, ३२ ३३२, ४४६
आवधला, मोहम्मद २७१-७२	हिन्दुस्तानी १५१, २१०, २११ १४, २२६, २५२-५३, ४४१
आवधला-विषय २५८	४२
अथ २११, २२१, २६६, ३०१	-अथार मना (मन्त्रालय) २५
अथर्व वेद ५६	हिन्दू-धर्म ३, ७७
अथर्व ३२५	-मुसलमान २४, २८, ४० ४४, ४८, ३७१, ४२७, ४६०, ४७८
अथर्व २७१	हिन्दु २३४
अथर्व २००	हिमाचल ३२, २८८
अथर्व ३४, ३६, ८२, ८३	हुजरा ३५
अथर्व २५५, ४४५	हुजराबाद १५६, ४७६
अथर्व ३३०	हुजराबाद १५६, ४७६
अथर्व ३२२, १३५, ४६५	अथर्व, स्वामी ३०६, ३०६
अथर्व २०४, २१५	अथर्व २६२
अथर्व २८१-८२	
अथर्व १७७	

•

•